सूचना पत्रिका

८०० वर्ष लाइपज़िक मेला

११६५ १९६५

जर्मन जनवादी गणतंत्र

लाइपज़िक व्यापार मेला विशेषांक

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

१ वर्ष १० जनवरी १९६५

वर्ष १०
अंक १ | जनवरी, १९६५

संकेत

मुख पृष्ठ : लाइपज़िक मेला तथा नगर का संयुक्त चिन्ह

अंतिम पृष्ठ : गत वर्ष के लाइपज़िक मेले में दो भारतीय दर्शक श्रीमती क्लेयर ब्रोहे और श्री जयचन्द्रन, ज.ज.ग. के सुन्दर तथा कोमल वस्त्रों की सराहना कर रहे हैं

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और यूनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

लाइपज़िक व्यापार मेले की ८००वीं जयन्ती

| राल्फ लेमज़र

दुनिया के सबसे [illegible] दोहरी जयन्ती म[illegible] में इस वर्ष के वसन[illegible] व्यापार मेला, दोनों [illegible]

लाइपज़िक व्य[illegible] भी जो विश्व प्रसिद्धि [illegible] लाइपज़िक की अ[illegible] के मान-चित्र को [illegible] के ठीक बीच में [illegible] पश्चिम का संगम [illegible]

प्राचीन काल से ही [illegible] चौराहा र[illegible] मार्ग मिलते थे जो स्पेन [illegible] फ्रांस को पोलैण्ड और रूस [illegible] नेदरलैण्ड्स और नॉरडिक देशों से मिलाते थे। आज भी लाइपज़िक की इस [illegible] कोई [illegible] परिवर्तन नहीं आया है।... आज भी यहाँ, विभिन्न अर्थतन्त्रों वाले अनेकानेक देशों के हज़ारों व्यापारी, व्यापार संस्थायें, प्रदर्शक आदि अपनी वस्तुएँ लेकर साल में दो बार आते हैं और क्रय-विक्रय तथा व्यापार-करार करते हैं।

१६वीं शताब्दी तक आते आते लाइपज़िक, यूरोप में, व्यापार का एक महत्वपू[illegible]ार बन चुका था। अमरीका की खोज के बाद उत्तरी यूरोप व्या[illegible] का केन्द्र बना। इस स्थिति से भी लाइपज़िक को वैसा ही फायदा हुआ जैसा सैक्सनी में कच्चे लोहे की खदानों और पुस्तक-व्यापार से।

इस तथ्य के दस्तावेज़ी प्रमाण मौजूद हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि यूरोप के लगभग सभी देशों जैसे इंग्लैण्ड, रूस, फ्रांस, नेदरलैण्ड्स, आस्ट्रिया, इटली, पोलैण्ड, हंगरी, बलगेरिया, रूमानिया, स्पेन, और ग्रीस आदि के व्यापारी लाइपज़िक के व्यापार मेलों में भाग लिया करते थे।

लाइपज़िक मेले की परम्परायें

लाइपज़िक की उत्तम परम्पराओं में एक यह तथ्य उल्लखनीय है कि यहाँ का व्यापार मेला, पिछले ८०० वर्षों से, और प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था में बिना किसी बड़ी रुकावट के, धीरे-धीरे विकसित होता रहा है। इस नगर की दूसरी भव्य परम्परा यह है कि दुनिया का सर्वप्रथम आधुनिक नमूना मेला (साम्पल्स फेयर) यहीं आयोजित हुआ। यह मेला लाइपज़िक में पिछली शताब्दी के अन्त में शरू किया गया, और तब से इस तरह के मेले दुनिया के अन्य देशों में भी आयोजित होने लगे। इस प्रकार लाइपज़िक का उक्त [illegible] मेला एक पथप्रदर्शक की हैसियत रखता है।...

लाइपज़िक ने एक अन्य महत्वपूर्ण मेले को भी जन्म दिया। यह मेला था तकनीकी मेला, जो दुनिया में इस तरह का सर्वप्रथम मेला था। यह लाइपज़िक की एक और शानदार पर[illegible] है। त[illegible]नीकी

... जयन्ती

दुनिया के सबसे पुराने मेला-नगरों में से एक नगर, ... शहरी जयन्ती मनाने की तैयारियां कर रहा है। दूसरे ... में इस वर्ष के वसन्त में, लाइपज़िक और यहां लगता चला आ ... व्यापार मेला, दोनों, ... ८०... ी मनायेंगे।

लाइपज़िक व्यापार मेला और लाइपज़िक नगर दोनों को आज जो विश्व प्रसिद्धि तथा सम्मान प्राप्त हुआ है उस का मूल कारण है ...पज़िक की अनुकूल और लाभदायक भूगोलिक स्थिति। यूरोप के मान-चित्र को देखने से आप देख लेंगे कि लाइपज़िक इस महाद्वीप ... ठीक बीच में स्थित है। यह यूरोप का हृदय, और पूर्व तथा ...म का संगमस्थल है।....

प्राचीन काल से ही लाइपज़िक एक चोराहा रहा है जहाँ वे सभी मार्ग मिलते थे जो स्पेन ... फ्रांस को पोलैण्ड और रूस से, इटली को ...दरलैण्ड्स और नॉरडिक देशों से मिलाते थे। आज भी लाइपज़िक की इस ... विशेष परिवर्तन नहीं आया है।... आज भी यहाँ, विभिन्न अर्थतन्त्रों वाले अनेकानेक देशों के हजारों व्यापारी, व्यापार संस्थायें, प्रदर्शक आदि अपनी वस्तुएँ लेकर साल में दो बार आते हैं और क्रय-विक्रय तथा व्यापार-करार करते हैं।

१६वीं शताब्दी तक आते आते लाइपज़िक, यूरोप में, व्यापार का एक महत्वपूर्ण नगर बन चुका था। अमरीका की खोज के बाद उत्तरी यूरोप व्यापार का केन्द्र बना। इस स्थिति से भी लाइपज़िक को वैसा ही फायदा हुआ जैसा सैक्सनी में कच्चे लोहे की खदानों और पुस्तक-व्यापार से।

इस तथ्य के दस्तावेज़ी प्रमाण मौजूद हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि यूरोप के लगभग सभी देशों जैसे इंग्लैण्ड, रूस, फ्रांस, नेदरलैण्ड्स, आस्ट्रिया, इटली, पोलैण्ड, हंगरी, बलगेरिया, रूमानिया, स्पेन, और ग्रीस आदि के व्यापारी लाइपज़िक के व्यापार मेलों में भाग लिया करते थे।

लाइपज़िक मेले की परम्परायें

लाइपज़िक की उत्तम परम्पराओं में एक यह तथ्य उल्लखनीय है कि यहाँ का व्यापार मेला, पिछले ८०० वर्षों से, और प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था में बिना किसी बड़ी रुकावट के, धीरे-धीरे विकसित होता रहा है। इस नगर की दूसरी भव्य परम्परा यह है कि दुनिया का सर्वप्रथम आधुनिक नमूना मेला (साम्पल्स फेयर) यहीं आयोजित हुआ। यह मेला लाइपज़िक में पिछली शताब्दी के अन्त में शरू किया गया, और तब से इस तरह के मेले दुनिया के अन्य देशों में भी आयोजित होने लगे। इस प्रकार लाइपज़िक का उक्त ... मेला एक पथप्रदर्शक की हैसियत रखता है।...

लाइपज़िक ने एक अन्य महत्वपूर्ण मेले को भी जन्म दिया। यह मेला था तकनीकी मेला, जो दुनिया में इस तरह का सर्वप्रथम मेला था। यह लाइपज़िक की एक और शानदार पर...रा है। तकनीकी

मेले का जन्म हुआ पहले महायुद्ध के बाद, और इसमें यन्त्रों तथा मशीनों आदि का प्रदर्शन होने लगा ।

सन् १९२२ में, सोवियत संघ ने प्रथम बार लाइपजिक व्यापार मेले में भाग लिया । अपने प्रदर्शन मण्डप के द्वार पर सोवियत-संघ ने यह महत्वपूर्ण घोषणा लिखी थी :—"जर्मनी—सोवियत संघ : हमारा सहयोग सीमायें नहीं जानता" . . . .

यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि सन् १९२५ में जिस "यूनियन दे फोयरे इन्तरनेशनाले" (यू. एफ. आई.) की स्थापना हुई, लाइपजिक मेला उसके संस्थापकों में से एक था । तब से लेकर आज तक, लाइपजिक मेला प्रशासन के प्रतिनिधियों ने इस अन्तर्राष्ट्रीय मेला संस्था के विकास में हर प्रकार का सहयोग प्रदान किया है ।

१९४५ के बाद का लाइपजिक मेला

दूसरे महायुद्ध के बाद, लाइपजिक व्यापार मेले के इतिहास में एक नया अध्याय आरंभ हुआ । इस महायुद्ध के विनाशकारी ध्वंस की चपेट में लाइपजिक भी बुरी तरह ध्वस्त हुआ था । लेकिन युद्ध समाप्त होने के तुरन्त बाद जब पुनर्निर्माण शुरू हुआ तो मेले की इमारतों आदि की ओर विशेष ध्यान दिया गया । युद्ध की ज्वालाओं में, लाइपजिक मेले की लगभग ८० प्रतिशत सामग्री—भवन, रेलें, मण्डप आदि—नष्ट हुई थी । युद्ध के बाद अक्तूबर, १९४५ में प्रथम "लाइपजिक उत्पादनों की नमूना प्रदर्शनी" का आयोजन हुआ । यह प्रदर्शनी, युद्धोत्तर लाइपजिक व्यापार मेला की पूर्व पीठिका थी । इसके बाद ही मई, सन् १९४६ में युद्धोत्तर काल का प्रथम लाइपजिक मेला आयोजित हुआ । लेकिन इस मेले में केवल २६,००० घन मीटर क्षेत्र को उपयोग में लाया गया और इस मेले में केवल एक ही देश—अर्थात् सोवियत संघ ने भाग लिया ।

इन प्रथम कठिनाइयों के बाद, लाइपजिक व्यापार मेले की सफलता उत्तरोत्तर बढ़ती गयी । पूर्वी जर्मनी का राष्ट्रीय अर्थतन्त्र धीरे-धीरे व्यवस्थित और दृढ़ होता जा रहा था । आखिर सन् १९४९ में जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना हुई, और इस ऐतिहासिक घटना ने लाइपजिक मेले के आशु विकास के कई द्वार खोल दिये ।

सन् १९४९ के लाइपजिक मेले में केवल ११ देशों ने भाग लिया, लेकिन सन् १९६४ तक आते आते वसन्तकालीन लाइपजिक मेले में दुनिया के ६४ देशों ने शिरकत की । . . . . जर्मन जनवादी गणतंत्र के वजूद में आने से पहले—अर्थात् १५ साल पहले—मेले के पास केवल १०१,००० वर्ग मीटर क्षेत्र की जगह थी वस्तु-प्रदर्शन के लिये । लेकिन आज, देश देशान्तरों के विभिन्न मण्डप यहाँ ३२०,००० वर्ग मीटर से भी अधिक क्षेत्रफल को घेर लेते हैं ।

आज का लाइपजिक मेला

सन् १९४५ के बाद से लाइपजिक मेला, सही अर्थ में एक महत्वपूर्ण व्यापार मेले के रूप में विकसित हुआ । इस मेले का प्रमुख उद्देश्य है अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वस्तुओं का आदान प्रदान । आजकल, एक ही लाइपजिक वसन्तकालीन मेलेमें करोड़ों मार्कों की रकम की चीजें बेची खरीदी जाती हैं । सन् १९६४ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार की कुल रकम २२ अरब मार्क (२२,०००,०००,०००) थी । इसमें से विदेश संस्थाओं ने लगभग ४० प्रतिशत रकम के व्यापारिक करार लाइपजिक के दो व्यापार मेलों में ही कर लिये । ये आंकड़े इस तथ्य को भी सिद्ध करते हैं कि ज. ज. ग. (दुनिया के १०० से अधिक राज्यों के साथ जिसके व्यापारिक संबंध हैं) एक विश्वस्त साझीदार है व्यापार करने में, और दुनिया के प्रमुख औद्योगिक देशों में से एक है ।

समाजवादी देशों की [illegible] आर्थिक सहायता परिषद् (कोमेकान) के आपसी सहयोग में लाइपजिक का महत्वपूर्ण स्थान है । वे यहां, व्यापार मेलों के अवसर पर, न केवल आपस में ही बल्कि अन्य देशों के साथ भी व्यापार समझौते करते हैं और व्यापार संबंधी समस्याओं तथा अनुभवों का आदान प्रदान करते हैं ।

पूर्व और पश्चिम के व्यापार में भी लाइपजिक मेलों की महत्वपूर्ण भूमिका है । अफ्रीका तथा एशिया के नवोदित राज्यों के लिए, लाइपजिक व्यापार मेला, उनके व्यापारिक विकास के कई द्वार उन्मुक्त करता है और उनको अन्य देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करने में पर्याप्त सहायता देता है ।

पूंजीवादी देश भी यहां काफी व्यापार करते हैं । लाइपजिक के एक व्यापार मेले में आये हुए एक प्रमुख फ्रांच अर्थ-शास्त्री ने निम्न शब्दों में लाइपजिक मेले की प्रशंसा की "मेरे लिये लाइपजिक मेले का अर्थ है सब से ज्यादा व्यापार—कम से कम खर्च और कम से कम समय में ।" इन शब्दों में आज हम बहुत आसानी से ये शब्द जोड़ सकते हैं '—और व्यापार संबंधी संपर्क स्थापित करने और जानकारी प्राप्त करने का सब से दिलचस्प तथा अनोखा केन्द्र' ।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

नये वर्ष की शुभकामनायें

भारत में जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के कर्मचारियों की ओर से, मैं *सूचना पत्रिका* के पाठकों, और उनके माध्यम से, समस्त भारतीय जनता के लिये मंगलमय और समृद्धशाली नव वर्ष की शुभकामना करता हूं ।

कूर्ट बोट्टकर
भारत स्थित ज. ज. ग. के
व्यापार-दूतावास के प्रमुख

८००वें लाइपज़िक मेले की तैयारियां

यह है वह स्वर्ण पदक जो मेले में प्रदर्शित सर्वश्रेष्ठ वस्तुओं को दिया जाता है

सन् १९६५ में फरवरी २८ से मार्च ९ तक वसंतकालीन लाइपज़िक मेला जयन्ती मेला होगा। लाइपजिक के इस मेले को ८०० वर्षीय जयंती मेले के रूप में मनाया जा रहा है। इसे लाइपजिक नगर के अष्टशतीय समारोहों की प्रस्तावना भी कहा जा सकता है। जयन्ती मेले का ध्येय इन शब्दों में घोषित किया गया है :

अष्टशतीय लाइपजिक मेलाः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा तकनीकी उन्नति के लिए

लाइपजिक नगर और मेले की ८००वीं वर्षगांठ से संबंधित समारोहों का उद्घाटन करेंगे ज. ज. ग. की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उलिब्रख्त।

वस्तुओं का एक विशिष्ट अन्तर्राष्ट्रीय विन्यास, उच्च स्तरीय वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास का प्रदर्शन, पूर्व तथा पश्चिम के आर्थिक व राजनैतिक क्षेत्र से सम्बन्धित प्रमुख व्यक्तियों की उपस्थिति, अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसायिक क्रय-विक्रय, वस्तुओं का प्रतियोगी प्रदर्शन और फिर उसके साथ विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन, ऐसी विशेषताएं हैं जो १९६५ के उक्त जयंती मेले को स्वतन्त्र विश्व व्यापार के क्षेत्र में एक विशेष घटना बना देंगे। मेले में वस्तुओं के प्रदर्शन का परास बहुत विस्तृत होगा। सभी प्रकार की औद्योगिक वस्तुएं प्रदर्शन में सम्मिलित होंगी। मूल उद्योग की अर्धपूर्ण वस्तुओं से लेकर उपभोगीय सामान और टिकाऊ तथा विलास खाद्यपदार्थों तक सभी का प्रदर्शन इस अवसर पर किया जाएगा। यह अवसर उद्योग की उन शाखाओं के लिए तो विशेष रूप से महान है जो उत्पादन के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं जैसे रसायन, रासायनिक संयंत्र मशीनी औज़ार और इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, विशेष रूप से इलैक्ट्रानिक्स की वस्तुएँ।

विशिष्ट अन्तर्राष्ट्रीयता

समाजवादी राज्य उन वस्तुओं के प्रदर्शन को प्रधानता देंगे जो औद्योगिक-तकनीकी उन्नति के उच्च स्तर को प्रस्तुत करेंगी। अपने उद्योगों की क्षमता के प्रमाण स्वरूप वे प्रभावशाली सामूहिक प्रदर्शनियां करेंगे तथा इस बार विभिन्न व्यापार ग्रुपों में उनका प्रतिनिधित्व भी पहले से बड़े पैमाने पर होगा।

जयंती मेले में भाग लेने के लिये यूरोप के पूंजीपति देशों की रुचि अत्यंत तीव्र है। अब तक मिलने वाले सभी प्रार्थना पत्रों में जो विशेष बात है वह प्रदर्शन-स्थान में पहले की अपेक्षा पांच से दस गुना वृद्धि करने की प्रार्थना है। इंग्लैण्ड से बहुत से प्रार्थना-पत्र मिले हैं जिनमें उस देश के सामूहिक प्रदर्शन में स्थान की प्रार्थना की गई है तथा व्यापार समूहों में भाग लेने का वर्णन है। ये समूह विशेषकर रसायनिक संयंत्र, धातुकर्म, रसायन, इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग तथा इमारती सामान के हैं। फ्रांस की रुचि मेले के जिन समूहों पर केन्द्रित है वे हैं धातुकर्म, मशीनी औज़ार तथा इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग। बेल्जियम से मिलने वाले अनेक प्रार्थना-पत्र धातुकर्म तथा बिजली के सामान के लिए हैं, तथा डच फर्मों की रुचि कार्यालय मशीनों, स्वचालित पैकिंग मशीनों, मैडिकल व सर्जिकल सामान तथा रसायन पदार्थों में है। उत्तर योरोप के देशों का प्रदर्शन-परास प्रधानतः इलैक्ट्रानिक्स के सामान, धातुकर्म तथा प्लास्टिक पदार्थों से सम्बन्धित है। मेले के धातुकर्म समूह में आस्ट्रेलिया के कई प्रदर्शनकर्त्ता होंगे। अफ्रीका, एशिया तथा लैटिन अमेरिका के नव-स्वतंत्र राज्य भी मेले में अत्यंत रुचि रखते हैं। इस बार उन के प्रदर्शन-स्थान में भी वृद्धि हुई है तथा वे इस अवसर के लिए विशेष अनुदेशन प्रदर्शनियों की तैयारियां भी कर रहे हैं। छंटाव

लाइपजिक मेले का एक सुप्रसिद्ध केन्द्रः मायेडलर - पास्सेजे

की दृष्टि से विस्तृत प्रदर्शन की आशाएं विशेषत: इन्डोनेशिया, भारत, मोराको, सूडान, [illegible]शिया, अर्जेन्टाइना तथा कोलुम्बिया से सम्बद्ध हैं । आशा है कि इन देशों से आने वाले लोग तकनीकी तथा वैज्ञानिक विकास के लाइपजिक द्वारा प्रस्तुत इस अवसर का पूरा-पूरा लाभ उठायेंगे और अपने नवीन औद्योगिक उद्यमों के लिए नये परामर्श ग्रहण करेंगे ।'

संयुक्त राष्ट्र इस बार फिर "मैस्सेहाउस एम मार्कट" के अन्तर्गत अपनी पुस्तकों तथा प्रकाशनों का प्रदर्शन करेगा ।

ज.ज.ग. के उद्योग की ओर से उत्पादन के सभी क्षेत्रों के लिए शक्तिशाली मशीनें तथा उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त है । ये मशीनें निर्माण तथा संग्रहण से लेकर क्षमता तक इन्जीनियरिंग की हर कसौटी पर पूरी उतरती हैं । उच्च कोटि के सुन्दर पदार्थों के निर्माण तथा विस्तृत निर्यात के विषय में, ज. ज. ग. का हल्का-उद्योग व्यापार समझौतों की उचित मूल शर्तें प्रस्तुत करता है । छंटाव, सुन्दर सज्जा सहित प्रस्तुत किया जा रहा है । पदार्थों को उनके ग्रुप नियमानुसार प्रदर्शित किया जाएगा । इन में प्रधानता नवीन अभिवृद्ध प्रतिरूपों को दी जा रही है । इसके अतिरिक्त अभिकल्प क्षेत्र में नवीनतम प्रगतियों का प्रदर्शन भी किया जाएगा ।

अवसरोचित विशेष कार्यक्रम

जयंती मेले के अवसर पर इसकी शोभा के अनुसार कुछ विशेष सहायक कार्यक्रम भी आयोजित किए गये हैं । उच्च कोटि के पदार्थ प्रदर्शन के साथ ही साथ औद्योगिक तथा तकनीकी समस्याओं पर कुछ परिसंवाद भी आयोजित किये गये हैं, जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विशेषज्ञ भाग लेंगे तथा मेले में आये हुए सभी देशों के मेहमान उपस्थित होंगे । व्यापार समूहों तथा अन्तर्राष्ट्रीय मेला फैशन परेड द्वारा आयोजित कार्यक्रम तथा प्रदर्शनियां कुछ ग्राहकों के लिये विशेष [illegible]षक होंगे ।
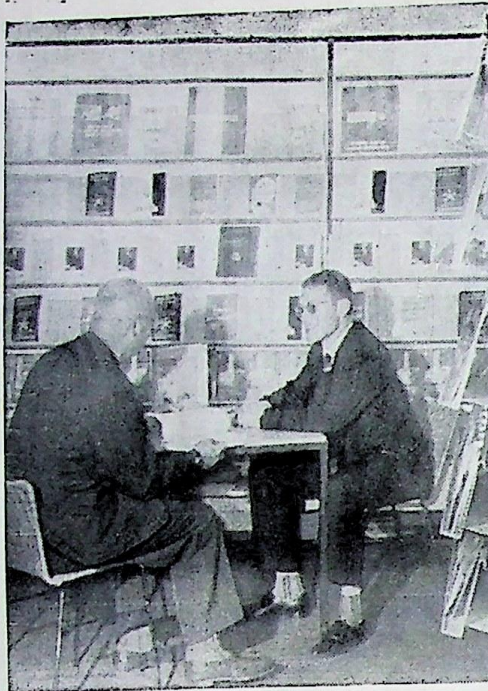
लाइपजिक मेले में भाग लेने वाले अनेकानेक देशों के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ भी यहां की अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लेता है

विश्व विख्यात कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम

२७ फरवरी १९६५ को जयंती मेले के महान उद्घाटन के अवसर पर लाइपजिक आपेरा में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के कलाकार भाग लेंगे । जयंती मेले के अवसर पर आयोजित सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मुख्य आकर्षण एक विशिष्ट मनोरंजन कार्यक्रम होगा । इसमें अन्य बातों के अतिरिक्त डैविड तथा आईगार ओवस्ट्राख का वायलन वादन, आमंत्रित अतिथियों के लिए आयोजित ग्रैण्ड आपेरा तथा मेला नृत्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं ।

विकसित मेला सुविधायें :

लाइपजिक के नवनिर्मित अन्य भवनों के साथ "स्टाड्ट सुम लोयवेन" "दुइत्शलैण्ड" और "स्टाड्ट लाइपजिग" नामक होटल तथा "जैन्नी मार्क्स" छात्रावास भी १५०० अतिरिक्त स्थानों की सुविधा सहित मेले के समय तक बन कर तैयार हो जाएगा ।

लाइपजिक मेले के अवसर पर जो विशेष सेवायें तथा सुविधायें आयोजित की जा रही हैं उन में **विदेशी दर्शक केन्द्र** तथा **मेला सेवा विभाग** भी सम्मिलित हैं । मेले में लाइपजिक में ग्राहक केन्द्र खोले जा रहे हैं तथा तकनीकी [illegible] बढ़ाया किया जा रहा है ताकि मेला-दर्शकों की भारी भीड़ के लिए स्थान हो सके । मेले में विदेशी दर्शकों की सहायता के लिए अनेक परिचारकायें होंगी ।

लाइपजिक मेला पुरस्कार

जयंती मेले में पहली बार "मेला पुरस्कार" दिया जा रहा है । यह पुरस्कार लाइपजिक मेले के आयोजन में जर्मन तथा विदेशी व्यक्तियों की विशिष्ट सहायता के लिए दिया जाएगा । सभी प्रदर्शकों को एक स्मारक दस्तावेज, जयंती बैज तथा कलात्मक तथा सुन्दर मेला कार्ड दिया जायेगा । इन कार्ड की अवश्य प्रशंसा होगी । विशेषतः संग्रहणकर्ता इसे बहुत पसंद करेंगे ।

आठ शताब्दियों के उत्कृष्ट नमूने

जयंती मेले के अवसर पर, दूसरी बातों के अतिरिक्त, उत्कृष्ट मेला सुविधाओं की एक प्रदर्शनी लाइपजिक के पुराने टाउन हाल में होगी । यह अपने प्रकार की प्रथम प्रदर्शनी है जिसमें कुछ विशेष दस्तावेजों

प्रदर्शन होगा । इनमें ११६० ई. का लाईपज़िक प्रपत्र भी सम्मिलित है, जो वास्तव में लाइपजिक नगर [illegible] "जन्म-पत्र" है । इसके अतिरिक्त १२६८ में जारी किया गया "गमनागमन का सुरक्षा-पत्र" १४६७ में जर्मन शासक मैक्सीमिलियन प्रथम द्वारा प्रदान की गई प्रसिद्ध 'मेला सुविधाएं' तथा १५१४ में पोप लियो दसवें [illegible] "रोमानस पोन्टीफेक्स" इत्यादि दस्तावेज़ें प्रदर्शन में रखी जायेंगी ।

जयंती मेले का स्मारक-प्रकाशन चार भाषाओं में छप रहा है । भारी संख्या में छपने वाली इस विवरणिका में लाइपजिक मेले के ऐतिहासिक विकास का सर्वेक्षण [illegible] एल्बम जिसमें 'बीडरमीयर' काल से आज तक के चित्र छः रंगों में छपे [illegible] हैं पुनः [illegible] गई है और जयंती [illegible] के अवसर पर प्राप्त होगी । मूर्ति [illegible] संग्रहणकर्ताओं तथा टिकट संकलनकर्ताओं [illegible] द्वारा [illegible] । [illegible] प्रदर्शनियां संग्रहणकर्ताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होंगी । मेले के इतिहास से सम्बन्धित अन्य विशेष प्रदर्शनों में माचिस के लेबलों का प्रदर्शन भी सम्मिलित है ।

पत्रकारों की संख्या में फिर वृद्धि

लाइपजिक मेले के पत्रकार केन्द्र में इस बार संसार भर के देशों से १२०० पत्रकारों के आने की आशा है । ये पत्रकार जयंती मेले के समाचार अपने देशों को भेजेंगे यहां ऐसी तैयारियां भी की जा रही हैं जिनके अन्तर्गत अतिरिक्त कार्य सुविधायें, विकसित लेख वितरण तथा विस्तृत सूचना सामग्री-संकलन के अतिरिक्त तकनीकी संवाददाताओं के लिए एक सामाजिक केन्द्र भी खोला जायेगा । जयंती मेले के अवसर पर ५० बहुमूल्य पुरस्कार विदेशों के तकनीकी तथा व्यापारिक पत्र-पत्रिकाओं में अग्रिम छपने वाली विशिष्ट रिपोर्टों पर दिये जायेंगे । इसमें पश्चिमी जर्मनी के पत्र भी सम्मिलित हैं ।

लाइपजिक मेला एजेंसी का पत्रकार विभाग इस समय भी सभी देशों के पत्रकारों को मेले की तैयारियों के विषय में तथा मेले के इतिहास सम्बन्धी रुचिकर सूचनायें जुटा रहा है ।
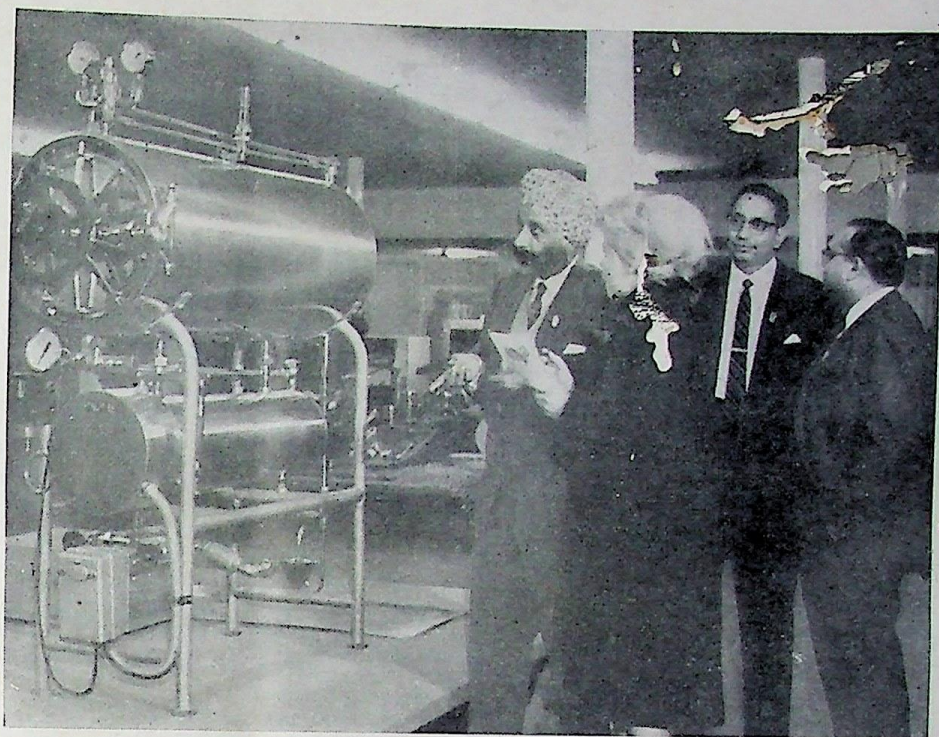
सन् १९६४ के लाइपज़िक व्यापार मेले में, भारत एक बार फिर, समुद्रपार के देशों में सबसे बड़ा प्रदर्शक देश रहा । चित्र में श्री पी. डी. कोमार (राज्य व्यापार निगम के मण्डलीय प्रबन्धक) भारतीय प्रदर्शन मण्डप में एक भारतीय मशीन के बारे में दर्शकों से बातचीत कर रहे हैं

भारतीय प्रदर्शन

भारतीय प्रदर्शकों ने पहली बार लाइपजिक मेले में १९५४ में भाग लिया था और तब से नियममित रूप से लाइपजिक के वसंत तथा शरद मेलों में प्रति वर्ष वह भाग ले रहा है ।

आगामी जयंती मेले में भी भारत अत्यंत प्रभावशाली ढंग से बड़े पैमाने पर भाग ले रहा है । भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय द्वारा स्थापित **भारतीय व्यापार मेला तथा प्रदर्शनी परिषद** इस मेले में अपने देश के प्रदर्शन का आयोजन, प्रदर्शन के कुल १६००० वर्ग फुट पर करेगी ।

इस चित्र में १७ वीं सदी के लाइपज़िक मेले का दृश्य है जब व्यापारी, घोड़ा-गाड़ियों में अपना माल लाद कर यहाँ आते थे · ·

लेकिन आज लाइपज़िक मेले में माल लाने के लिये यातायात के नवीनतम साधनों का उपयोग किया जाता है

१. लाइपजिक का जन्म पत्र

१. लाइपज़िक का जन्म-पत्र

लाइपज़िक मेला पिछले आठ सौ वर्षों से एक ऐसी परम्परा की भांति चला आ रहा है जिसके आधीन विभिन्न देशों के बीच शांतिपूर्ण वस्तु-विनिमय होता है । कहा जाता है कि सन ११०० ई. में लाइपज़िक के क्षेत्र में ऐसी मंडियां लगने लगी थीं जो केवल स्थानीय महत्व की ही नहीं थीं । ऐसी मंडियों का प्रथम दस्तावेजी प्रमाण सन् ११६५ का प्रपत्र है जो माइस्सेन के शासक 'मार्ग्वइस ओत्तो द रिच' ने लाइपजिक को प्रदान किया था । इस दस्तावेज में कहा गया है कि "लाइपज़िक से १ सैक्सन मील (लगभग पांच मील) की दूरी के अन्दर कोई ऐसी मंडी न लगाई जाये जिससे नगर को किसी प्रकार की क्षति पहुंचे ।" इस प्रकार लाइपज़िक को नगर का पद प्रदान करने वाला यह प्रपत्र इसका जन्म-पत्र माना जाने लगा । इसके साथ ही इस नगर से सम्बन्धित लाइपज़िक मेले का आरम्भ भी इसी प्रपत्र से हुआ ।

वर्षों पर वर्ष बीतने लगे और इस बीच लाइपज़िक प्रथम श्रेणी के जर्मन व्यापार केन्द्रों में पहुंच गया । लाइपज़िक से १२० किलोमीटर के क्षेत्र में सभी नगरों तथा ग्रामों के लिये व्यापार मेले तथा मंडिया

लगाना, वस्तु संग्रहण के लिये गोदा... अथवा भंडार बनाना निषिद्ध घोषित ... दिया गया ।

२. सन् १५७३ में प्रसिद्ध मेला ...

यह ... समान्य दृश्य है लाइपज़िक ... का सन् १५७३ में । यह चित्र ...

में प्रकाशित "नगरों की पुस्तक" में ... इस चित्र के नीचे रोमन भाषा में अंकित ... "विज्ञान तथा व्यापार का प्रसिद्ध नगर" ...

वैसे १६वीं शताब्दी के आरम्भ ... लाइपज़िक, यूरोपीय व्यापार का केन्द्र ... चुका था, परन्तु यह नगर पूर्वी तथा पश्चिमी ... व्यापार का संगम बना ३० वर्षीय युद्ध ...

३. १८वीं शताब्दी में लाइपज़िक मेला

२. सन् १६६३ में लाइपज़िक नगर का रुप

...चित्र इतिहास
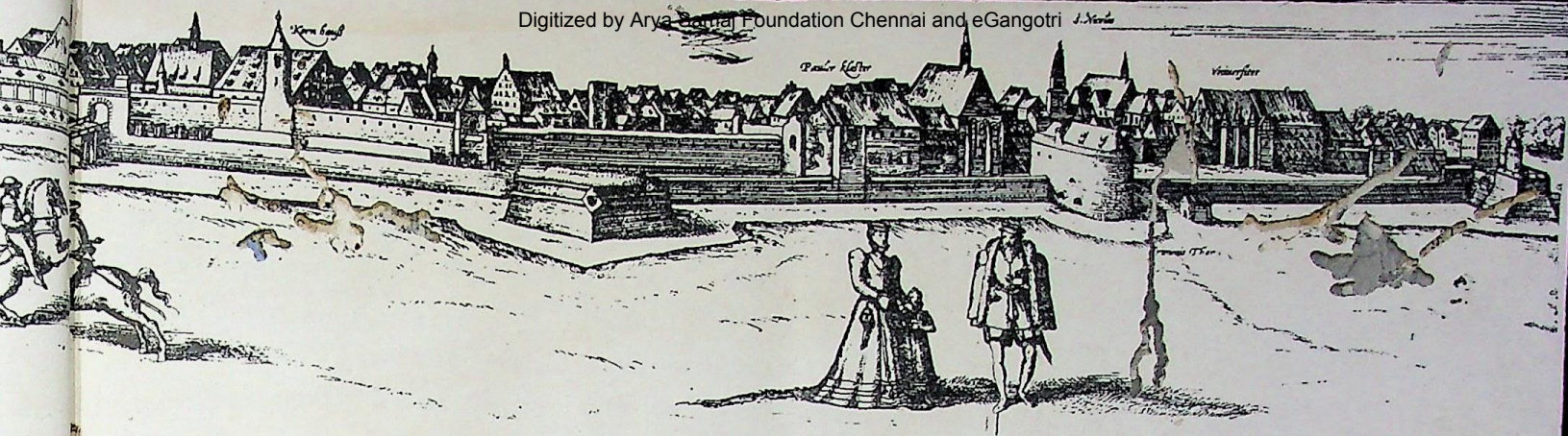
पश्चात ही । सन् १५७३ में व्यापार सम्बन्धों के दस्तावेज़ी प्रमाण भी मिलते हैं । रूस तथा पोलैण्ड के व्यापारी सदैव लाइपजिक मेलों में आते थे । उन्होंने यहां से निज्नी नोवगोर्द के रास्ते ... पूर्व से सम्बन्ध स्थापित किये । हालैण्ड, बेल्जियम फ्रांस, इंग्लैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल तथा इटली के व्यापारियों से लाइपजिक के सम्बन्ध पश्चिमी यूरोप तथा समुद्रपार देशों के साथ इसके व्यापार संबंधों के प्रमाण थे । पूर्वी तथा बल्कान देशों, तुर्की और इनसे भी दूर के देशों से बहुत अच्छे ग्राहक यहां आते थे ।

३. व्यापार का केन्द्र : लाइपजिक

पिछली कई शताब्दियों से लाइपजिक का नाम यहां के मेले से जुड़ गया है । जन्म-पत्र में तो मेले को लाइपजिक नगर का अभिन्न अंग कहा ही गया था । लाइपजिक की भूगोलिक स्थिति भी मेले के अवसर पर व्यापार विनिमय में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई है । अपनी इस स्थिति के अनुसार लाइपजिक यूरोपीय व्यापार मार्गों का मिलन स्थान है । चित्र में, विभिन्न देशों के व्यापाररियों को अपने माल और गाड़ियों सहित मेले में भाग लेने के लिए लाइपजिक में प्रवेश करते हुये दिखाया गया है ।

लाइपजिक मेले में व्यापार की उन्नति का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि सन् १७११ में इस मेले का व्यापार परिमाण, फ़ाँकफुर्ट-आन-मेन के व्यापार मेले से भी अधिक हो गया । उन दिनों यहाँ निम्न वस्तुओं का अधिक व्यापार होता था : हर प्रकार के वस्त्र, रेशम, ऊनी तथा सूती कपड़े, फर, किराना तथा शराबें, धातु-सामान, शीशे का सामान ,चीनी के बर्तन, सोने चांदी का सामान तथा विलास वस्तुयें ।

लाइपजिक में रोवों का व्यापार १२ वीं शताब्दी से होता चला आ रहा है और १६वीं शताब्दी से यह लाइपजिक मेले का प्रमुख व्यापार रहा है । लाइपजिक "पुस्तकों का नगर" नाम से भी प्रसिद्ध है । इस प्रसिद्धि का कारण भी इसका मेला ही है । नगर तथा मेले के लगातार विकास के कारण लाइपज़िक ने ऐसी स्थिति ग्रहण कर ली कि १६वीं शताब्दी में ही इसे जर्मन संस्कृति के प्रमुख केन्द्रों में से एक माना जाने लगा ।

४. नेपोलियन के विरुद्ध जनता की जंग

लाइपजिक में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रायः युद्धों के भयानक परिणामों से प्रभावित होता रहा है । परन्तु वस्तु विनिमय की आवश्यकता ने लाइपजिक मेले को बार-बार पुर्नस्थापित किया है ।

सन् १८१३ में १६ से १९ अक्तूबर तक नेपोलियन की सेना तथा रूस, आस्ट्रिया, प्रशिया तथा स्वीडन की संयुक्त सेना में प्रसिद्ध "जन युद्ध" लाइपजिक में लड़ा गया। यह उस दृश्य का चित्र है जब नेपोलियन विरोधी फौज की पहली टुकड़ी ने लाइपजिक में प्रवेश किया और दुश्मन को भागने पर मजबूर किया । इस लड़ाई में २२,०००

४. जनता के युद्ध का एक दृश्य
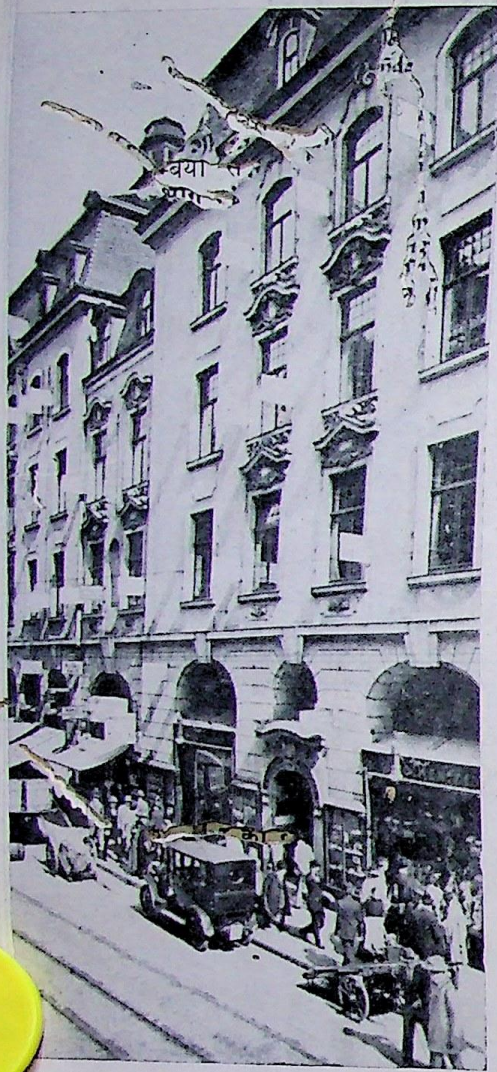
५. मेले का प्रथम आधुनिक भवन

रूसी, १६,००० प्रशियाई तथा १२,००० आस्ट्रियाई सैनिक मारे गये ।

अक्तूबर १८६३ में लाइपजिक की लड़ाई के पश्चात लाइपजिक मेला, विकास के एक नये युग में दाखिल हुआ । इस युग का प्रथम क्रांति से गहरा सम्बन्ध था ।

५. वस्तु मेले का स्थान नमूना मेला ने लिया

१९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लाइपजिक ही एक ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला था जिसने पुराने ढंग के वस्तु-मेले के रूप को त्याग कर नवीन अर्थात् नमूना मेले का ... प्रथम आधुनिक 'मेला ... दिर्वांट' सन् १८९६ में हुआ ... उसी के आधार पर ...

अपने प्रथम 'मेला भवन' के निर्माण द्वारा लाइपजिक ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया जिसे अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता मिली और इसका अनुसरण किया गया । आजकल यह 'मेला-भवन', रेडियो तथा टेलीविजन इन्जीनियरी उद्योग का प्रदर्शन-भवन है लाइपजिक मेले में ।

प्रथम महायुद्ध के पूर्व वर्षों में, लाइपजिक उपभोगीय वस्तुओं के क्रय विक्रय का एक अत्यंत महत्वपूर्ण राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र और पूर्व और पश्चिम के व्यापार का संगमस्थल बन चुका था । एक प्रमुख फ्रांसीसी अर्थशास्त्री ने मेले से सम्बन्धित अपने प्रभावों को इन शब्दों में रखा था जो आज भी सत्य है: "लाइपजिक मेले का अर्थ है न्यूनतम व्यय द्वारा, लघुतम स्थान पर, अल्पतम समय में महानतम व्यापार ।"

६. तकनीकी मेले का जन्म

सन् १९१८ के वसंतकाल में, जब प्रथम महायुद्ध चल ही रहा था, लाइपजिक नगर के कुछ प्रदर्शन-भवनों में पहला तकनीकी मेला आयोजित हुआ ।

प्रथम महायुद्ध के तुरंत पश्चात तकनीकी उत्पादन प्राथमिक स्थान ग्रहण करता जा रहा था । गैर-सरकारी प्रयत्नों द्वारा मार्च, १९१८ में एक तकनीकी मेला निगम स्थापित किया गया । इसी वर्ष के शरद-काल में नमूना ... पर उक्त निगम ने तकनीकी वस्तुओं की प्रथम प्रदर्शनी आयोजित की । प्रदर्शनी में तकनीकी सामान के साथ मशीनें भी सम्मिलित थीं । ४५० प्रदर्शक फर्मों के मण्डप कई प्रदर्शन भवनों में लगे हुये थे ।

नये ढंग पर तकनीकी प्रदर्शन करने का समय आ गया था । परिणामस्वरूप १४ मार्च, १९२० को लाइपजिक युद्ध-स्मारक के पास ...-क्षेत्र में प्रथम तकनीकी ... का उद्घाटन हुआ । १ लाख, ५० ... वर्ग फुट के क्षेत्र पर लगभग ५००० ... दिखायी गयीं ।

वर्तमान ... दशक ... लाइपजिक मेला एक सम्पूर्ण ... धारण कर चुका है ।

मेला: दूसरे महायुद्ध के बाद

हिटलर के ताकत संभालने के साथ-साथ लाइपजिक मेले की क्षति का समय आरम्भ हो गया था । अन्तिम उप-भोगीय वस्तु मेला १९४१ के शरद्-काल में हुआ ।

लाइपजिक में तकनीकी मेले के जन्म का एक दृश्य
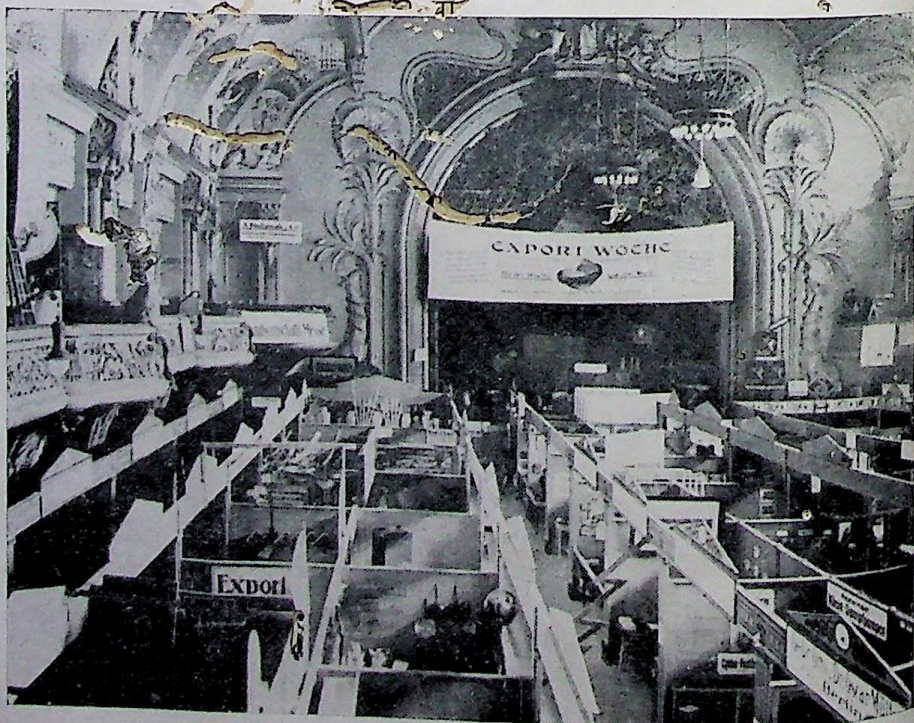
हिटलर और उसके फासिस्टवादी युद्ध ने केवल खंडहर पीछे छोड़े थे। लाइपज़िक के हर [illegible] ज़ख्मों से खून रिस रहा था। लगभग सभी इ[illegible] चकनाचूर हो गयी थीं। भयानक बम्बारी ने लाइपज़िक मेले की सभी सुविधायें नष्ट कर डाली थीं। मेले की इमारतों तथा संस्थापनों का ८० प्रतिशत भाग नष्ट भ्रष्ट हो चुका था। तकनीकी मेले का क्षेत्र मलबे का ढेर दिखाई देता था।

१९४५ में लाइपज़िक मेले के इतिहास का एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। मज़दूर वर्ग के नेतृत्व में फासिस्ट विरोधी लोकतन्त्रीय शक्तियों ने पुनर्निर्माण [illegible] आरम्भ [illegible]। सन् १९४५ में १८ से २० अक्तूबर [illegible] आयोजित "लाइपज़िक उत्पादकों की [illegible] व्यापारी [illegible]" लिये एक [illegible] कड़ी [illegible] गयी। इसके पश्चात [illegible] तर लाइपज़िक मेला लगा १९४६ [illegible] से १२ मई तक। इसका प्रदर्शन क्षेत्र २६,३५५ वर्ग-मीटर था। इस मेले में भाग लेने वाला पहला अन्य देशीय प्रदर्शक था सोवियत-संघ।

आगामी वर्षों में लाइपज़िक मेले ने अपनी विश्वव्यापी ख्याति तथा [illegible] पुनः प्राप्त कर ली। . . .

आज लाइपज़िक के बीचोंबीच स्थित प्रदर्शन-भवनों तथा तकनीकी प्रदर्शन क्षेत्र के नवनिर्मित हालों मंडपों तथा वसी क्षेत्र का उपयोग लाइपज़िक मेलों के लिये किया जा रहा है। प्रदर्शन के लिये ३० लाख, २५ हज़ार वर्ग-फुट से अधिक स्थान प्राप्य है।

लाइपज़िक मेला निस्संदेह पूर्व-पश्चिम व्यापार का संगमस्थल है। अपनी ८०० वर्षीय परम्परा के अनुकूल यह मेला, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के शक्तिशाली आधार, अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के विकास में संलग्न है। समाजवादी, गैर समाजवादी तथा पूंजीवादी विश्व-मंडियों का संगम होने के नाते लाइपज़िक मेला विश्वशांति के प्रति महान योग दे रहा है।

युद्ध में ध्वस्त हुआ तकनीकी मेले का प्रदर्शनी क्षेत्र

वही क्षेत्र पुनर्निर्माण के बाद

ज. ज. ग. की राज्य परिषद् के उपाध्यक्ष, और 'क्रिस्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन' के महा[illegible]ी श्री गेराल्ड गोइटिंग गत वर्ष के वसन्तकालीन लाइपज़िक मेले के अवसर पर भारतीय मण्डप में। बा[illegible] से दायें उनके साथ हैं : श्री वी. पी. पटेल (राज्य व्यापार निगम के अध्यक्ष); श्री आर. दयाल (वाणिज्य मंत्रालय में उप निदेशक) और श्री पो. डी. कुमार (राज्य व्यापार निगन के मण्डलीय प्रबन्धक).

१९६४ के शरद्कालीन लाइपजिक [illegible]

सर्वोत्तम वस्तु के लिये कलकत्ता की जय श्री टी. एण्ड इण्डस्ट्रीज़ लिमिटेड नामक फर्म को 'स्वर्ण पदक' दिया जा रहा है

लाइपजिक ... तथा हस्तकला की वस्तुएँ

ज. ज. ग. के विदेश मंत्री, डा० लोटार बोल्ज ने, गत वर्ष के लाइपजिक मेले में प्रदर्शित भारत की औद्योगिक वस्तुओं में गहरी दिलचस्पी दिखाई

मार्च सन् १९६५ में होने वाले ८००वें जयन्ती मेले के लिये भारतीय प्रदर्शन मण्डप को तैयार किया जा रहा है
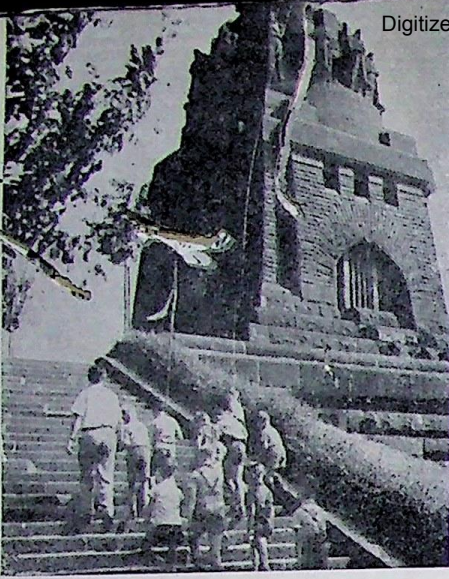
लाइपज़िक में 'नपोलियन के खिलाफ जनता की लड़ाई' नामक स्मारक

लाइपज़िक युद्ध की स्मृति में निर्मित किया हुआ महान स्मारक दूर, मध्य जर्मनी की तराई से भी साफ दिखायी देता है । यह उस विजय की याद दिलाता है जो रूस तथा जर्मनी की सेनाओं ने सन् १८१३ में नेपोलियन पर पाई थी । इस स्मारक को दूर से देखते ही यात्री समझ जाते हैं कि अब वे लाइपज़िक के करीब हैं ।

लाइपज़िक की जनसंख्या लगभग ६०,००० है, और यह जर्मन जनवादी गणतंत्र का दूसरा सबसे बड़ा नगर है । सम्भवतः लाइपज़िक व्यापार मेले के कारण ही यह नगर विश्व-विख्यात बन चुका है । सन् १९६५ के वसन्त में इस मेले की ८०० वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है । संसार भर के व्यापारी, एक-दूसरे से शान्तिपूर्वक व्यापार करने के लिए साल में दो बार, वसन्त और शरद्‌काल में--यहां पर मिलते हैं ।

इस मेले के तकनीकी मेला मैदान में संसारभर के परिश्रमी कारीगरों की बनाई हुई वस्तुओं का प्रद[illegible]५० हालों तथा मण्डपों और १७ मेले भवनों में किया जाता है । इस मेले के लिये उपलब्ध सुविधाओं का ८० प्रतिशत भाग दूसरे महायुद्ध में नष्ट हुआ था, परन्तु युद्ध समाप्ति के बाद तुरन्त ही इस सब का पुनः निर्माण किया गया और बहुत सारी नई इमारतें भी बनाई गयीं ।

लाइपज़िक में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन तथा गोष्ठियां भी आये दिन होती रहती हैं । इस वर्ष के पहले नौ महीनों में दूसरे देशों के १२५,००० मेहमानों ने लाइपज़िक का दौरा किया ।

यहां इस तथ्य का उल्लेख करना भी आवश्यक है कि लाइपज़िक शानदार क्रांति-कारी परम्पराओं का गढ़ रहा है और जर्मन श्रमिक आन्दोलन के जाने माने नेताओं ने यहां से मजदूर तहरीक चलायी थी ।

लाइपज़िक, जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र भी है । प्रति वर्ष यहां ३०० करोड़ मार्क मूल्य की वस्तुएं तैयार की जाती हैं ।

यहां के बनाये हुए खदान यंत्र, मशी[illegible] औजार, छापेखाने, दूरसंचा[illegible] इलेक्ट्रानिकी सामान संसार [illegible] को निर्यात कि[illegible]

गेटे ने एक बार क[illegible] था कि लाइपज़ि[illegible] एक छोटा पेरिस है जो अपनी जनता [illegible] शिक्षित करता है – उनका यह कथन आ[illegible] भी मान्य है । लाइपज़िक का विश्वविद्याल[illegible] जो जर्मनी का दूसरा सबसे पुराना विश्व[illegible] विद्यालय है, यहां का सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र है । यहां हर वर्ग के लगभग १३,०० विद्यार्थी और २००० वैज्ञानिक तथा शो[illegible] स्नातक, [illegible]५५ वर्ष पुराने इस विद्या[illegible]

[illegible]ें अपना अध्ययन अध्यापन करते हैं । [illegible] लास्संग तथा कलोपस्टोक जैसे मनोषियों [illegible] अपने ज्ञान का श्रीगणेश यहीं से किया [illegible] यहां के ३० अन्य तकनोको कालेजों त[illegible] संस्थानों ने--जिनमें करीब २४,००० छा[illegible] पढ़ते हैं--लाइपज़िक को वैज्ञानिक शि[illegible] का सम्मानित अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बना दि[illegible] है । अब तक यहां के "हर्डर संस्थान" से [illegible]

'स्टाड्ट लाइपज़िक' नामक नया होटल [illegible] उद्‌घाटन होगा जयन्ती मेले के अवसर पर
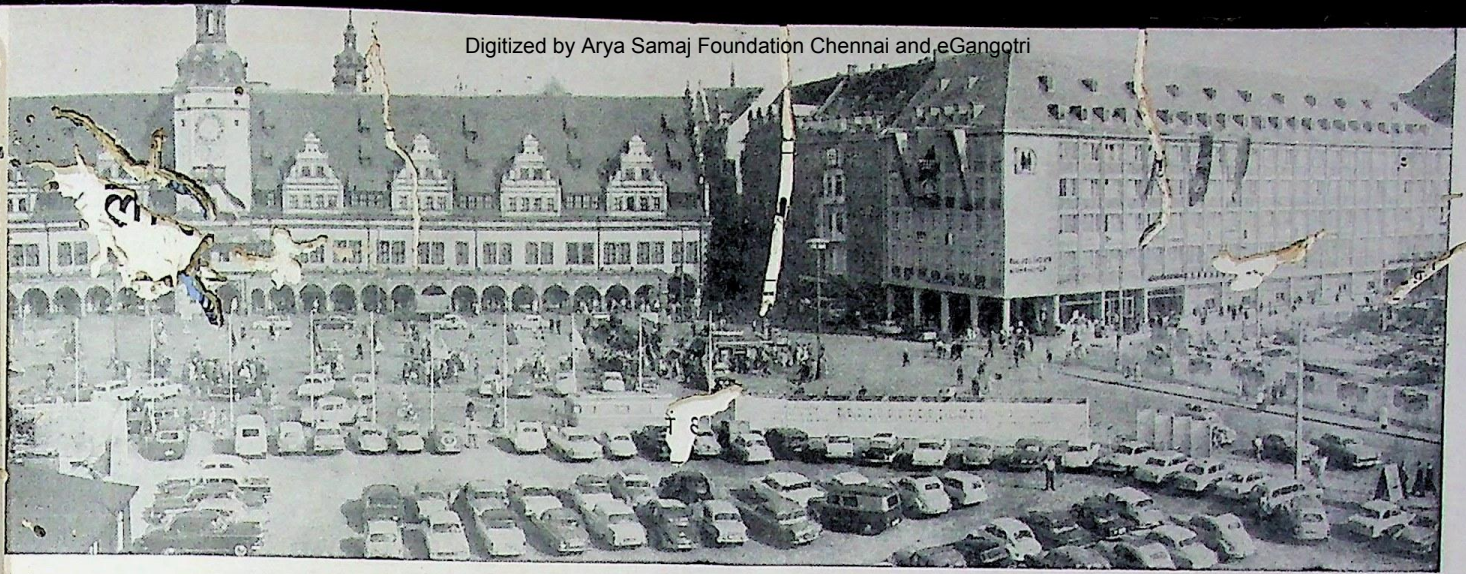
लाइपजिक का पुराना नगर हाल (बांये), और नया 'मेला भवन' (दायें)

लाइपजिक

एच. हेस

...शों के ४,७०० विदेशी छात्रों ने जर्मन भाषा तथा व्यवसाय सम्बंधी शिक्षा प्राप्त की है आज तक, और वे ज. ज. ग. के विश्वविद्यालयों तथा अन्य शिक्षा संस्थानों में आगे पढ़ रहे हैं।

लाइपजिक की यह कहानी, खेलकूद का उल्लेख किये बिना अधूरी रह जायेगी। "शरीर विज्ञान का जर्मन कालेज" की नींव १९५० में डाली गयी। आधुनिक ढंग का ... महाविद्यालय अपने प्रकार के सबसे ... महाविद्यालयों में से एक है। इस केन्द्र ... संसार की ऐसी ही ४० से भी अधिक संस्थाओं से संपर्क पैदा किये हैं। यहां १२०० छात्र शिक्षा पा रहे हैं जिन में से ६५ प्रतिशत किसान तथा श्रमिक परिवारों के हैं। लगभग इतनी ही संख्या के छात्रों को पत्र-विधि द्वारा शिक्षा दी जाती है। लाइपज़िक का भव्य क्रीडास्थल (स्टेडियम) उक्त कालेज के पास ही है। इसमें १००,००० दर्शकों के बैठने की व्यवस्था है। ज. ज. ग. की खेलकूद प्रतियोगिताओं के अवसर पर यह स्टेडियम खचाखच भरा रहता है।

नया "आपेरा हाऊस" नगर का सबसे उत्तम सांस्कृतिक केन्द्र है। इसके निर्माण पर ४ करोड़, ४६ लाख मार्क की लागत आई थी। इसका उद्घाटन १९६० में बड़ी धूमधाम से किया गया ... तब से लेकर आज तक लगभग २० लाख लोगों ने यहां कई आपेरा देखे हैं। "दुइत्शे ब्यूखेराइ" नामक जर्मन राष्ट्रीय पुस्तकालय भी लाइपज़िक का एक भव्य ... पुस्तकालय में ३ लाख से अधिक पुस्तकें ... और यह पुस्तकालय संसार के ७० से भी अधिक देशों के ऐसे ही पुस्तकालयों से सम्पर्क ... रखता है।

... लाइपजिक पुस्तकें छापने का केन्द्र भी है। संसार में बहुत कम ऐसे नगर होंगे जहां प्रतिदिन १ लाख पुस्तकें छापी जाती हों, जैसा कि यहां होता है।

बहुत सारे बाग-बगीचे तथा पार्क इस नगर के रहने वालों को यह भुला देते हैं कि लाइपज़िक में प्राकृतिक सौंदर्य नहीं है। यहां का लोकप्रिय स्थान है, 'क्लारा ज़ेटकिन पार्क'। यह १३३ हैक्टर क्षेत्रफल पर फैला हुआ है और इसमें तीन खुले ... खेलकूद के मैदान, एक पैराशूट टावर, कुछ ताल, बारादरी वाले ... और ... रेस्त्रां हैं। एक कहावत है कि कुछ लोग लाइपज़िक केवल यहां का चिड़ियाघर देखने के लिये आते हैं, विशेषकर यहां के प्रसिद्ध शेर-बबर देखने के लिए, जिन के लिए यह बहुत प्रसिद्ध है। कुछ लोग तो इन सिंह शावकों को खरीदना भी चाहते हैं—उन अफ्रीकी देशों के चिड़ियाघरों के लिये, जहां के रेगिस्तानों में कभी इनका एक छत्र राज हुआ करता था, परन्तु जहां अब वे अप्राप्य हो गये हैं।

लाइपजिक का बाजार सन् १८५० में

..और सन् १९६४ में
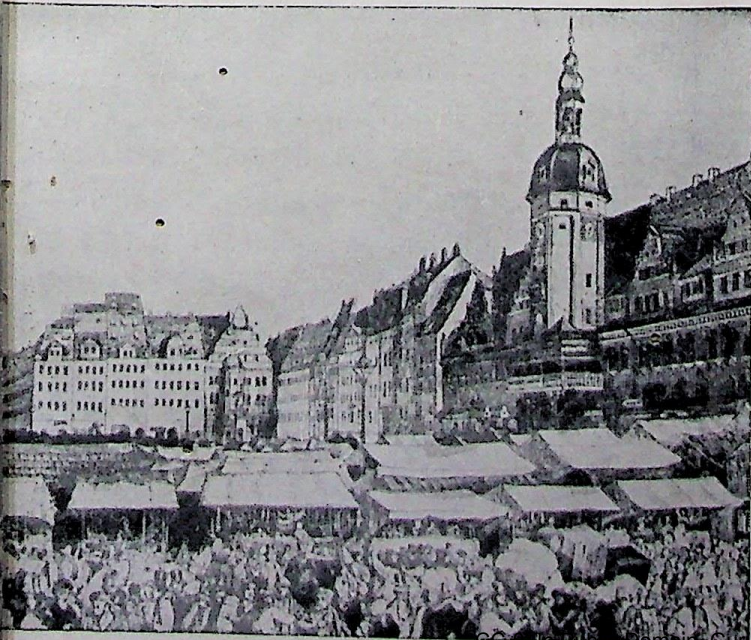
परिचारिका

'डोरिस' परिचारिकाओं का, गहरे नीले रंग का वेष पहनते-पहनते अपने आप पर काबू पाने का पूरा प्रयत्न करने पर भी, कुछ घबरा सी रही थी। वह लाइपज़िक कार्ल-मार्क्स विश्वविद्यालय के दुभाषिया संस्थान की छात्रा थी। उसके मन में एक साथ कई प्रश्न उठ रहे थे: क्या उसका विदेशी भाषाओं का ज्ञान काफी है? क्या यह ज्ञान उसे, मेले में आये हुये विदेशी मेहमानों के लिए एक योग्य परिचारिका प्रमाणित कर सकता है? क्या वह इन मेहमानों के काम में हाथ बटा सकेगी,—उन्हें ठीक ठीक परामर्श दे सकेगी?

... सीखी हुई विद्या पर पूरा विश्वास था, लेकिन ... वह इसे कार्यान्वित ... मैं इस परीक्षा में खरी उतरुंगी ... डोरिस सोच रही थी— लेकिन कुछ ही समय बाद जब वह विदेशी अतिथि-केन्द्र के दरवाजे पर पहले विदेशी मेहमान से मिली, तो उसकी सारी घबराहट न जाने कैसे और कहां गायब हुई।

अब मराको के इस व्यापारी को देखिये वह भी शायद कुछ अजीब सा अनुभव कर रहा था। वह पहली बार लाइपज़िक आया था, और जर्मन भाषा से अपरिचित था। उसे डर था कि उसे बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। वह किससे पूछे कि क्या करना है, कहां करना है? अपने आनेकी सूचना कहां दे वह? विदेशी मुद्रा का विनिमय कहां करे, कहां ठहरे? अजनबी मेहमान ... से परेशां था।

तभी एकदम ... बदल गया। डोरिस, जो फ्रांसीसी ... था रूसी भाषाओं को जानती थी, ... सामने प्रकट हुई और उसका ... डस्क पर ले गयी।

... लाइपज़िक मेले में ... का पहला

दिन आरम्भ हुआ। उसके साथ ... संस्थान की १७ अन्य छात्रायें भी थीं जो प्रतिदिन दस या उससे भी अधिक घंटे मेहमानों की सुविधा और देखभाल के लिए यहां बिताती हैं। ये १८ परिचारिकायें विभिन्न भाषाओं की जानकारी रखती थीं जो सन् १९६४ के वसन्तकालीन मेले जैसे अन्तर्राष्ट्रीय जमावड़ों के लिए अनिवार्य हैं। इन भाषाओं में उल्लेखनीय भाषाएं अंग्रेजी, फ्रांसीसी, स्वीडिश, अंग्रेजी-स्पेनी, अंग्रेजी-इंडोनेशयाई, अंग्रेजी-फ्रांसीसी,-इटेलियन, और फ्रांसीसी-रूसी हैं।

'डोरिस' और उसकी साथिनों को बहुत जल्द इस बात का ज्ञान हुआ कि उनके सहयोग और सहायता की कितनी आवश्यकता मेले में आये विदेशी मेहमानों को रहती है ... वे इनके काम को कितना सराहते हैं।

डोरिस, मराको के मेहमान के काम में प्रतिदिन पांच घंटे हाथ बटाने के लिये नियुक्त की गई थी, और इस सहयोग के लिये मेहमान को कुछ व्यय नहीं करना था। 'डोरिस' ... प्रारम्भिक औपचारिकताओं को निपटाने में और आयात-निर्यात संस्थाओं के साथ सम्पर्क कायम करने में उसकी सहायता की, उसके लिए टेलीफोन किये तथा लाइपज़िक घूमने में उसका साथ दिया। और इन पांच घंटों में ही मेहमान, डोरिस की सहायता

लाइपज़िक मेला . . .
भारतीय प्रतिनिधियों की दृष्टि में

विश्वस्त ... और बढ़ता व्यापार

बम्बई की "स्टैन्डर्ड बैटरीज लिमिटेड" के मैनेजर **श्री लोकनाथ डी. छार**, ने लाइपज़िक मेले के अपने अनुभवों को इन शब्दों में व्यक्त किया हैः

"मेले के प्रथम दिन भी बहुत सफल रहे। हमारी फर्म ने, जो हर प्रकार की बैटरियां तैयार करने की एक सबसे बड़ी फर्म है, जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ पांच लाख मार्क की मोटर बैटरियां ... बिजली से चलने वाली गाड़ियों ... लिए प्लेटें सप्लाई करने की क़रार ... दस्तखत किये। हमारी फर्म ने पांच ... मेले में भाग लिया है, ... यहां ... सफलताओं से हम सन्तुष्ट हैं। ...कालीन तथा वसंतकालीन दो मेलों के बीच हमारी फर्म ने ज. ज. ग. के साथ २५ लाख मार्क रक़म के व्यापार समझौते किये। आपका गणतंत्र व्यापार करने में एक विश्वस्त साझीदार है। ज. ज. ग. ने हमारे कारखाने में एक रबड़ बनाने का संयन्त्र (प्लांट), बैटरी-केस बनाने का एक द्रवचालित प्रेस और अन्य यन्त्र लगाये हैं जो सन्तोषप्रद काम करते हैं।"

लाइपज़िक मेलों में भारतीय सहयोग का एक दशक

लाइपज़िक ...जर्नल" को दिये गये एक इण्टरव्यू में ... वाणिज्य मंत्रालय में उप-निदेशक, और १९६४ के वसन्तकालीन लाइपज़िक मेले में संयुक्त भारतीय प्रदर्शनी के महा-निदेशक, **श्री रघुबीर दयाल** के विचार उल्लेखनीय हैं। उक्त मासिक पत्र के सम्पादक ने उनसे पूछाः "लाइपज़िक के विश्व व्यापार केन्द्र होने के बारे में आपकी क्या राय है?"

श्री रघुबीर दयालः "ज. ज. ग. की सरकार ने जो सही और बुद्धिमान व्यापार नीति अपनाई है उसकी हमें बहुत ज़रूरत है। लाइपज़िक में पूर्व-पश्चिम व्यापार को बढ़ाने के हर तरह के अवसर मौजूद हैं। भारत और ज. ज. ग. के बीच वस्तुओं के आयात निर्यात संबन्धी दीर्घावधि क़रारों पर ... जो एक दूसरे के हितानुकूल हों, दस्तखत करने के अनेक सुअवसर यहां प्राप्त हैं। इस वर्ष के वसन्तकालीन लाइपज़िक मेले में लगभग २०० भारतीय फर्मों ने अपनी वस्तुएं प्रदर्शित की हैं। यह तथ्य कि सन् १९६१ के मेले में केवल १०० भारतीय फर्में ही यहां आयी थीं; इस बात का प्रमाण है कि लाइपज़िक व्यापार मेले में भारत के वाणिज्य तथा आर्थिक तत्वों की रूचि बहुत बढ़ रही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आपका यह मेला नगर विश्व व्यापार का केन्द्र है।

"मैंने, टोकियो से शिकागो तक आयोजित व्यापार मेलों में भाग लिया है। लेकिन मैं आपको इस बात का विश्वास दिलाता हूं कि लाइपज़िक आने में मुझे एक खास आनन्द मिलता है। यहां मुझे वह गारण्टी मिलती है जो व्यापार के लिये अत्यन्त आवश्यक है–अर्थात् व्यापार में किसी भी प्रकार का भेदभाव और बन्धन नहीं होना ... और यह आपसी हित के लिये ... के आधार पर होना चाहिये। ...मैं इस बात पर ज़ोर डालना चाहता हूं कि भारत के लिये दीर्घकालीन क़रार ... आवश्यक हैं। इसके लिये हम ज. ज. ग. की सरकार के विशेष आभारी हैं।

"भारत, लाइपज़िक ...वसन्त तथा शरद् काल के दोनों व्यापार मेलों में, पिछले एक दशक से बराबर सम्मिलित हो रहा है। इस एक दशक में भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापारिक संबन्धों में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। आज हमारे प्रदर्शन-मण्डप में यहां न केवल भारत की पारंपरिक वस्तुएं ही प्रदर्शित होती हैं बल्कि इन वस्तुओं में मशीनी औज़ार, इंजन, स्वचालित करघे, मेडिकल तथा शल्य उपकरण और विद्युत यन्त्र आदि भी शामिल हैं।"

ज. ज. ग., भारत का सहायक

अखिल भारतीय विनिर्माता संघ, बम्बई के महा-मंत्री **श्री पी. एल. बादामी**, १९६४ के वसन्त मेले में पहली बार लाइपज़िक आये थे। लेकिन पहली बार ही वह उतने ही सन्तुष्ट हुये यहां जितने उनके वे अन्य भारतीय सहकर्मी जो लाइपज़िक मेले में दसवीं बार आये थे। श्री बादामी ने कहाः

"हम जल्द से जल्द अपने देश का औद्योगीकरण करना चाहते हैं। इस महान कार्य में, ज. ज. ग. हमारी काफी सहायता कर सकता है। आपके पास बहुत अच्छे इंजीनियर, विशेषज्ञ आदि के साथ साथ उत्तम मशीनी यन्त्र भी हैं।

"हमें इस ... है कि आपका देश, भारत ... औद्योगिक वस्तुओं का आयात बढ़ा रहा है। मैं इस बात का भरसक प्रयत्न करूंगा कि सन् १९६५ के वसन्त में आयोजित होने वाले लाइपज़िक के ८०० वें जयन्ती मेले में भारत का एक अच्छा खासा प्रतिनिधिमण्डल भाग लेने आये।..."

भारतीय इंजीनियर की राय

कलकत्ता की "बनसली एण्ड कम्पनी" नामक फर्म के एक इंजीनियर **श्री पी. गांधी** का निम्न अभिमत उल्लेखनीय हैः

"मुझे इस बात का गर्व है कि लाइपज़िक मेले में मैं भारत का एक प्रतिनिधि हूं और मैं यहां अपनी फर्म द्वारा विकसित की हुई एक नयी ...चालित मशीन का प्रदर्शन कर रहा ... नवीन यन्त्र मेरे देश की औद्योगिक योग्यता का परिचायक है। ...मैं ... झिझक के यह कह सकता हूं कि लाइपज़िक मेला, अपने प्रकार का सब से ... है। तकनीकी ज्ञान ... आदान प्रदान के ... प्राप्त हैं।...

चिट्ठी-पत्री

महोदय,

मैंने अपने एक मित्र के पास आपकी **सूचना पत्रिका** देखी, जो मुझे बहुत पसन्द आई। मेरे अनुरोध करने पर मेरे मित्र ने, जो मद्रास प्रेसीडेन्सी कालेज की हिन्दी परिषद के महा-सचिव हैं, आपका पता देकर, आपके साथ सीधे पत्र-व्यवहार करने का सुझाव दिया। अतः मेरा आपसे हार्दिक अनुरोध है कि कृपया आप हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित की जानेवाली पत्र पत्रिकाओं की सूची भेजें। साथ ही यह भी बताने की कृपा [illegible] कि उनके लिये कितना चन्दा कहां पर देना पड़ेगा? कृपया जवाब शीघ्र देकर मुझे अनुगृहीत करें।

आपके पत्र [illegible] में,

स. नवरतनमल रांका
मद्रास

श्रीमान सम्पादकजी,

आज मुझे आपकी **सूचना पत्रिका** जो कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन है, पढ़ने का सौभाग्य मिला। मुझे 'पत्रिका' के लेख, समाचार एवं आपके देश की प्रगति आदि के सम्बन्ध में पढ़कर बहुत खुशी हुई। निस्संदेह आपका **सम्पादन** प्रशंसनीय है। अतः मैं आपकी 'पत्रिका' का वार्षिक ग्राहक बनना चाहता हूं। कृपया उपरोक्त पते पर 'पत्रिका' अगले अंक से भेजना [illegible]। मैं आपका बड़ा आभारी हो[illegible] आपकी 'पत्रिका' का जो भी [illegible]क हो वह कृपया लिखें ता[illegible] भेज सकूं।

आप[illegible] के अंक ११, २० नवम्बर [illegible] पृष्ठ पर हमारे प्रधान मंत्री [illegible] **ग्रोटो** [illegible] है। इस-[illegible] जिसमें

पंडितजी के करीब दस हजार विभि[न्न] प्रकार के फोटोग्राफ हैं। यदि आपके पा[स] पं. नेहरू के आपके यहां के नेताओं [illegible] स[ाथ] और चित्र छपे हो, तो कृपया [illegible] लिखिये कि ये कहां [illegible] कब छपे हैं [illegible] प्राप्त किये जा सकते हैं।

वीरेन्द्र जै[न]
सागर (म. प्र.)

माननीय सम्पादकजी,

आज ही 'दयानन्द कालिज' के "लाजपतराय पुस्तकालय" में आप की **सूचना पत्रिका** को पढ़ने का सुअवसर मिला। पढ़कर बहुत प्रभावित हुआ। 'पत्रिका' का एक-एक पन्ना और एक-एक शब्द पढ़ डाला, पर कहीं भी इसका मूल्य नहीं मिला। अन्त में मजबूर होकर आपको पत्र लिख रहा हूं।

मुझे विदेशी साहित्य में अत्यन्त रुचि है और मैं आप की 'पत्रिका' का स्थायी सदस्य बनना चाहता हूं। इसलिए कृपा करके वार्षिक शुल्क कितना है, लिखें। अगर मुझमें क्षमता हुई तो मैं स्थायी सदस्य बन जाऊंगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप इस बारे में पूरा विवरण विस्तारपूर्वक देंगे।

सम्पादक जी, पढ़ने से ज्ञात हुआ कि ७ **अक्तूबर** की पत्रिका जो कि "जर्मन जन-स्वतन्त्रता दिसव" के उपलक्ष [illegible] **विशेषांक** के रूप में प्रकाशित हुई [illegible] है। क्या आप **विशेषांक** की एक प्रति मुझे भेंट कर सकते हैं।

मैं बी. ए. प्रथम वर्ष का छात्र हूं। मेरी उम्र १८ वर्ष है। [illegible] इच्छा है कि मैं किसी जर्मन वासी को अपना मित्र बनाऊं और पत्र व्यवहार करूं। अगर आपके पास कोई पता हो तो अवश्य भेजें। आशा है आप मेरे भविष्य में मेरे सहायक हो कर उसे उज्ज्वल बनायेंगे।

मेरी ओर से आपको तथा समस्त जर्मनवालों को नमस्कार।

अशोक कुमार वधावन
हिसार (पंजाब)

श्री सम्पादक जी,

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन **सूचना पत्रिका** की अमूल्य प्रतियां लगभग दो साल से मुझे प्राप्त हो रही हैं। इसके लिए मैं हमेशा आपका आभारी रहूंगा।

पत्रिका का रूप आकर्षक है [illegible] समाचार भी। 'पत्रिका' [illegible] की लिखी हुई **कविताओं** [illegible] हिन्दी में रूपान्तरित करा कर छापने [illegible] प्रबन्ध किया गया है इससे पत्रिका में साहित्यिक दृष्टिकोण से और ही आकर्षण और सजावट आ गई है। इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं क्योंकि मुझे कविता पढ़ने तथा लिखने का बहुत शौक है और दार्शनिक हृदयाकर्षक कहानियों के पढ़ने का भी। लेकिन इसके लिए आपसे मेरा यह सानुरोध निवेदन है कि **पत्रिका** में अच्छे-अच्छे लेखकों की लिखी हुई कहानियों को भी छापने [illegible] कष्ट करें जिससे पत्रिका साहित्यिक [illegible] कोण से और भी सुन्दर हो जाय। [illegible] हमारे यहां के पाठकगण **सूचना** [illegible] को पढ़ने में बहुत दिलचस्पी [illegible] हैं।

अगर आप समय [illegible] पर प्रकाशित पुस्तकों को भी भेजने का कष्ट करें [illegible] की बहुत कृपा होगी क्योंकि इससे हम लोगों को आपके यहां की आर्थिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक और सामाजिक विषयों का विस्तृत ज्ञान होगा।

सूर्यलाल मुनीम
गोंडा (उ. प्र.)

प्रिय सम्पादक जी,

मैं आपकी **सूचना पत्रिका** का ग्राहक हूं। यकीन करिये इस 'पत्रिका' से हमने जर्मनी के विषय में बहुत कुछ समझा है।

There are [illegible] journals such [illegible] your journal much

मैं चन्द दिनों तक बीमार था इसलिये जब मैं रीडिंग रूम गया तो मैंने आपकी पत्रिका मांगी, मगर उन्होंने कहा कि आई ही नहीं।

कृपया अपनी 'सूचना पत्रिका' भेजकर सबका दिल प्रसन्न कीजिये। कृपया 'सूचना पत्रिका' अंक १० अक्तूबर की प्रति भेजें और आगे से भी भेजते रहें।

मैनेजर
कमल रीडिंग रूम
श्रीनगर (काश्मीर)

प्रेस
लन्दन
ल
तथा
[illegible]
पजिक
किया
मेला
सरक
अध्यक्ष
अतिथि
कांस्ट
भारत
ल
सर्वश्री
नवम्ब
के प्र
के अ
वाणि
तथा
अनेक
लाइप
कई
बम्बई
गये

लाइपज़िक मेला : कुछ झलकियां

प्रेस कान्फ्रेंस और स्वागत समारोह

लन्दन :

लन्दन के ग्रासवेनर हाऊस में ८०० उद्योगपतियों, व्यवसायियों, अर्थशास्त्रियों तथा व्यापार विशेषज्ञों के लिये एक स्वागत समारोह का आयोजन और पैरिस में एक पत्रकार सम्मेलन, जिसमें फ्रांस के प्रमुख निष्पक्ष पत्रों के संपादकों ने भाग लिया—— ये घटनाएं जयन्ती मेले की तैयारियों के लिये आयोजित विशेष समारोहों का आरम्भ मात्र है। इन विशेष समारोहों का प्रचार संसार के सभी देशों में जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार प्रतिनिधियों तथा लाइपजिक मेला ऐजेन्सी की शाखाओं द्वारा किया गया है। इसके अतिरिक्त लाइपजिक मेला ऐजेन्सी के प्रमुख अधिकारियों ने विभिन्न सरकारी प्रतिनिधियों, व्यापार-मंडलों के अध्यक्षों और मास्को, वारसा व प्राग के अतिरिक्त कोलम्बिया, इक्वेडर, पनामा, कोस्टारिका, मैक्सिको तथा अन्य देशों के उच्च आयात-निर्यात कर्त्ताओं से मेले में भाग लेने के सिलसिले में बातचीत की।

भारत :

लाईपजिक मेला ऐजेन्सी के निदेशकों सर्वश्री एच. मेहनर्ट तथा ए. मर्कविट्शका नवम्बर १९६४ में वाणिज्य मंत्रालय के प्रदर्शनी निर्देशक श्री पी. के. पानीकर के अतिथियों के रूप में भारत आये। वे वाणिज्य मन्त्री, श्री मनुभाई शाह से मिले तथा मंत्रालय व अन्य आर्थिक संस्थाओं के अनेक प्रतिनिधियों से भी बातचीत की। लाइपजिक मेला ऐजेंसी के निदेशकों के लिए कई पत्रकार सम्मेलन नई दिल्ली, बम्बई तथा कलकत्ता में आयोजित किये गये।

७० देश भाग लेंगे

जयन्ती मेले में ९० देशों से ग्राहक आयेंगे तथा ३५ लाख वर्गफुट के क्षेत्रफल में ७० देशों के लगभग ९००० प्रदर्शक १० लाख वस्तुओं का प्रदर्शन करेंगे। ४० प्रतिशत से अधिक प्रदर्शनकर्त्ता विदेशी होंगे तथा कुल प्रदर्शन स्थान के एक तिहाई पर प्रदर्शन करेंगे। छंटाव की दृष्टि से ६० व्यापार ग्रुप बनाये गए हैं। प्रदर्शन वस्तुओं की विविधता, बड़े पैमाने पर अनेक देशों का भाग लेना तथा वस्तुओं का उच्च वैज्ञानिक तथा तकनीकी स्तर ऐसी विशेषताएं हैं जिनके आधार पर प्रत्येक व्यापार ग्रुप की तुलना किसी भी विशिष्ट प्रदर्शन से की जा सकती है। व्यापार ग्रुपों में प्रमुख हैं—रसायन, रसायन संयंत्र, मशीनी औज़ार तथा विद्युतीय (विशेषतः बिजली का सामान)

जयन्ती मेले में भाग लेने वाले दूरवर्ती देशों में वृद्धि

जयन्ती मेले में ३५ दूरवर्ती देशों के प्रदर्शन कर्ताओं के भाग लेने की आशा है। १९६४ के शरद मेले की तुलना में २५ प्रतिशत अधिक प्रदर्शन स्थान पर इन देशों का प्रदर्शन होगा। जयन्ती मेले के महत्व के विचार से इस बार भारत जो दूरवर्ती देशों में सबसे बड़ा प्रदर्शक है, अपने सामूहिक प्रदर्शन में एक तिहाई वृद्धि करेगा।

कई राज्यों जैसे अरब गणराज्य, लेबनान तथा कोलम्बिया के सम्बन्धित सरकारी कार्यालयों ने सामूहिक प्रदर्शन के लिए अपने स्थान कुछ समय पूर्व ही सुरक्षित करवा लिये हैं।

मोराक्को, इन्डोनेशिया, अमेरिका, जापान, पाकिस्तान, ईरान, अर्जेन्टाइना, उरुगुए, ब्राजील, इक्वेडर, सूडान, ट्युनिशिया तथा मेडगास्कर का प्रतिनिधित्व भी इस मेले में होगा।

दायें कोने पर हैं बेलजियम का एक व्यापारी श्री हेनरी क्वएस्टीने। सन १९४५ के बाद मेले में आने वाला यह १ करोड़ और २० लाखवां मेहमान था सन् १९६४ के लाइपजिक मेले में। इस नाते लाइपजिक मेला प्रशासन के महा निदेशक श्री क्वएस्टीने का भव्य स्वागत कर रहे हैं

चिट्ठी-पत्री

महोदय,

मैंने अपने एक मित्र के पास आपकी **सूचना पत्रिका** देखी, जो मुझे बहुत पसन्द आई। मेरे अनुरोध करने पर मेरे मित्र ने, जो मद्रास प्रेसीडेन्सी कालेज की हिन्दी परिषद के महा-सचिव हैं, आपका पता देकर, आपके साथ सीधे पत्र-व्यवहार करने का सुझाव दिया। अतः मेरा आपसे हार्दिक अनुरोध है कि कृपया आप हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित की जानेवाली पत्र पत्रिकाओं की सूची भेजें। साथ ही यह भी बताने की [illegible] उनके लिये कितना चन्दा कहां पर देना पड़ेगा। कृपया जवाब शीघ्र देकर मुझे अनुगृहीत [illegible]।

आपके पत्र [illegible] में,

स. नवरतनमल रांका
मद्रास

श्रीमान सम्पादकजी,

आज मुझे आपकी **सूचना पत्रिका** जो कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन है, पढ़ने का सौभाग्य मिला। मुझे 'पत्रिका' के लेख, समाचार एवं आपके देश की प्रगति आदि के सम्बन्ध में पढ़कर बहुत खुशी हुई। निस्संदेह आपका **सम्पादन** प्रशंसनीय है। अतः मैं आपकी 'पत्रिका' का वार्षिक ग्राहक बनना चाहता हूं। कृपया उपरोक्त पते पर 'पत्रिका' अगले अंक से भेजना [illegible]। मैं आपका बड़ा आभारी हो[illegible] आपकी 'पत्रिका' का जो भी [illegible] हो वह कृपया लिखें ता[illegible] सकूं।

आप[illegible] के अंक ११, २० नवम्बर [illegible] पृष्ठ पर हमारे प्रधान मंत्री [illegible] **ग्रोटो** [illegible] है। इस-[illegible] जिसमें पंडितजी के करीब दस हजार विभिन्न प्रकार के फोटोग्राफ है। यदि आपके पास पं. नेहरू के आपके यहां के नेताओं [illegible] और चित्र छपे हों तो कृपया [illegible] लिखिये कि ये कहां [illegible] कब छपे हैं [illegible] प्राप्त किये जा सकते हैं।

वीरेन्द्र [illegible]
सागर (म. प्र.)

माननीय सम्पादकजी,

आज ही 'दयानन्द कालिज' के "लाजपतराय पुस्तकालय" में आप की **सूचना पत्रिका** को पढ़ने का सुअवसर मिला। पढ़कर बहुत प्रभावित हुआ। 'पत्रिका' का एक-एक पन्ना और एक-एक शब्द पढ़ डाला, पर कहीं भी इसका मूल्य नहीं मिला। अन्त में मजबूर होकर आपको पत्र लिख रहा हूं।

मुझे विदेशी साहित्य में अत्यन्त रुचि है और मैं आप की 'पत्रिका' का स्थायी सदस्य बनना चाहता हूं। इसलिए कृपा करके वार्षिक शुल्क कितना है, लिखें। अगर मुझमें क्षमता हुई तो मैं स्थायी सदस्य बन जाऊंगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप इस बारे में पूरा विवरण विस्तारपूर्वक देंगे।

सम्पादक जी, पढ़ने से ज्ञात हुआ कि ७ **अक्तूबर** की पत्रिका जो कि "जर्मन जनस्वतन्त्रता दिसव" के उपलक्ष [illegible] **विशेषांक** के रूप में प्रकाशित हुई [illegible] है। क्या आप **विशेषांक** की एक प्रति मुझे भेंट कर सकते हैं।

मैं बी. ए. प्रथम वर्ष का छात्र हूं। मेरी उम्र १८ वर्ष है। [illegible] इच्छा है कि मैं किसी जर्मन वासी को अपना मित्र बनाऊं और पत्र व्यवहार करूं। अगर आपके पास कोई पता हो तो अवश्य भेजें। आशा है आप मेरे भविष्य में मेरे सहायक हो कर उसे उज्ज्वल बनायेंगे।

मेरी ओर से आपको तथा समस्त जर्मनवालों को नमस्कार।

अशोक कुमार वधावन
हिसार (पंजाब)

श्री सम्पादक जी,

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन **सूचना पत्रिका** की अमूल्य प्रतियां लगभग दो साल से मुझे प्राप्त हो रही हैं। इसके लिए मैं हमेशा आपका आभारी रहूंगा। पत्रिका का रूप आकर्षक है [illegible] समाचार भी। 'पत्रिका' [illegible] की लिखी हुई **कविताओं** [illegible] हिन्दी में रूपान्तरित करा कर छापने [illegible] प्रबन्ध किया गया है इससे पत्रिका में साहित्यिक दृष्टिकोण से और ही आकर्षण और सजावट आ गई है। इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं क्योंकि मुझे कविता पढ़ने तथा लिखने का बहुत शौक है और दार्शनिक हृदयाकर्षक कहानियों के पढ़ने का भी। लेकिन इसके लिए आपसे मेरा यह सानुरोध निवेदन है कि **पत्रिका** में अच्छे-अच्छे लेखकों की लिखी हुई कहानियों को भी छापने [illegible] कष्ट करें जिससे पत्रिका साहित्यिक [illegible] कोण से और भी सुन्दर हो जाय [illegible] हमारे यहां के पाठकगण **सूचना** [illegible] को पढ़ने में बहुत दिलचस्पी [illegible]।

अगर आप समय [illegible] पर प्रकाशित पुस्तकों को भी भेजने का कष्ट [illegible] की बहुत कृपा होगी क्योंकि इससे हम लोगों को आपके यहां की आर्थिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक और सामाजिक विषयों का विस्तृत ज्ञान होगा।

सूर्यलाल मुनीम
गोंडा (उ. प्र.)

प्रिय सम्पादक जी,

मैं आपकी **सूचना पत्रिका** का ग्राहक [illegible]। यकीन करिये इस 'पत्रिका' से हमने जर्मनी के विषय में बहुत कुछ समझा है।

There are [illegible] journals such [illegible] your journal much

मैं चन्द दिनों तक बीमार था इसलिये जब मैं रीडिंग रूम गया तो मैंने आपकी पत्रिका मांगी, मगर उन्होंने कहा कि आई ही नहीं।

कृपया अपनी 'सूचना पत्रिका' भेजकर सबका दिल प्रसन्न कीजिये। कृपया 'सूचना पत्रिका' अंक १० अक्तूबर की प्रति भेजें और आगे से भी भेजते रहें।

मैनेजर
कमल रीडिंग रूम
श्रीनगर (काश्मीर)

लाइपज़िक मेला : कुछ झलकियां

प्रेस कानफ्रेंसें और स्वागत समारोह

लन्दन :

लन्दन के ग्रासवेनर हाऊस में ८०० उद्योगपतियों, व्यवसायियों, अर्थशास्त्रियों तथा व्यापार विशेषज्ञों के लिये एक स्वागत समारोह का आयोजन और पैरिस में एक पत्रकार सम्मेलन, जिसमें फ्रांस के प्रमुख समाचार पत्रों के संपादकों ने भाग लिया—ये दोनों घटनाएं जयन्ती मेले की तैयारियों के प्रति प्रयोजित विशेष समारोहों का आरम्भ मात्र हैं। इन विशेष समारोहों का प्रबन्ध संसार के सभी देशों में जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार प्रतिनिधियों तथा लाइपजिक मेला ऐजेन्सी की शाखाओं द्वारा किया गया है। इसके अतिरिक्त लाइपजिक मेला ऐजेन्सी के प्रमुख अधिकारियों ने विभिन्न सरकारी प्रतिनिधियों, व्यापार-मंडलों के अध्यक्षों और मास्को, वारसा व प्राग के अतिरिक्त कोलम्बिया, इक्वेडर, पनामा, कोस्टारिका, मैक्सिको तथा अन्य देशों के उच्च आयात-निर्यात कर्त्ताओं से मेले में भाग लेने के सिलसिले में बातचीत की।

भारत :

लाईपजिक मेला ऐजेन्सी के निदेशकों सर्वश्री एच. मेहनर्ट तथा ए. मर्कविट्शका नवम्बर १९६४ में वाणिज्य मंत्रालय के प्रदर्शनी निर्देशक श्री पी. के. पानीकर के अतिथियों के रूप में भारत आये। वे वाणिज्य मन्त्री, श्री मनुभाई शाह से मिले तथा मंत्रालय व अन्य आर्थिक संस्थाओं के अनेक प्रतिनिधियों से भी बातचीत की। लाइपजिक मेला ऐजेंसी के निदेशकों के लिए कई पत्रकार सम्मेलन नई दिल्ली, बम्बई तथा कलकत्ता में आयोजित किये गये।

७० देश भाग लेंगे

जयन्ती मेले में ६० देशों से ग्राहक आयेंगे तथा ३५ लाख वर्गफुट के क्षेत्रफल में ७० देशों के लगभग ९००० प्रदर्शक १० लाख वस्तुओं का प्रदर्शन करेंगे। ४० प्रतिशत से अधिक प्रदर्शनकर्त्ता विदेशी होंगे तथा कुल प्रदर्शन स्थान के एक तिहाई पर प्रदर्शन करेंगे। छंटाव की दृष्टि से ६० व्यापार ग्रुप बनाये गए हैं। प्रदर्शन वस्तुओं की विविधता, बड़े पैमाने पर अनेक देशों का भाग लेना तथा वस्तुओं का उच्च वैज्ञानिक तथा तकनीकी स्तर ऐसी विशेषताएं हैं जिनके आधार पर प्रत्येक व्यापार ग्रुप की तुलना किसी भी विशिष्ट प्रदर्शन से की जा सकती है। व्यापार ग्रुपों में प्रमुख हैं—रसायन, रसायन संयंत्र, मशीनी औज़ार तथा विद्युतीय (विशेषतः बिजली का सामान)

जयन्ती मेले में भाग लेने वाले दूरवर्ती देशों में वृद्धि

जयन्ती मेले में ३५ दूरवर्ती देशों के प्रदर्शनकर्ताओं के भाग लेने की आशा है। १९६४ के शरद मेले की तुलना में २५ प्रतिशत अधिक प्रदर्शन स्थान पर इन देशों का प्रदर्शन होगा। जयन्ती मेले के महत्व के विचार से इस बार भारत जो दूरवर्ती देशों में सबसे बड़ा प्रदर्शक है, अपने सामूहिक प्रदर्शन में एक तिहाई वृद्धि करेगा।

कई राज्यों जैसे अरब गणराज्य, लेबनान तथा कोलम्बिया के सम्बन्धित सरकारी कार्यालयों ने सामूहिक प्रदर्शन के लिए अपने स्थान कुछ समय पूर्व ही सुरक्षित करवा लिये हैं।

मोराक्को, इन्डोनेशिया, अमेरिका, जापान, पाकिस्तान, ईरान, अर्जेंटाइना, उरुगुए, ब्राजील, इक्वेडर, सूडान, ट्यूनिशिया तथा मेडगास्कर का प्रतिनिधित्व भी इस मेले में होगा।

दायें कोने पर हैं बेलजियम का एक व्यापारी श्री हेनरी क्वएसटीने। सन १९४५ के बाद मेले में आने वाला यह १ करोड़ और २० लाखवां मेहमान था सन् १९६४ के लाइपजिक मेले में। इस नाते लाइपजिक मेला प्रशासन के महा निदेशक श्री क्वएसटीने का भव्य स्वागत कर रहे हैं

लाइपज़िक के नये नगर हाल में स्थित स्वागत-केंद्र जहां मेले में आये हुये दर्शकों, मेहमानों तथा व्यापारियों की सभी औपचारिकतायें देखते देखते पूरी कर दी जाती हैं

लाइपज़िक में मेहमानों की देखभाल

लाइपज़िक पहुंचने पर हर तरह की सुख-सुविधायें अतिथियों की प्रतीक्षा करती रहती हैं । इन सुविधाओं से लाभ उठा कर आगन्तुक और व्यापारी अपना लाइपज़िक आगमन आनन्दमय बनाते हैं । इन सुख-सुविधाओं का केन्द्र है लाइपज़िक के नये टाउनहाल में स्थित "विदेशी अतिथि केन्द्र" । सबसे पहले हर मेहमान यहीं पर आता है। उनकी सभी प्रारम्भिक समस्याओं का समाधान यहीं पर होता है जैसे ठहरनेकी समस्या विदेशी सिक्के की अदला बदली तथा आवश्यक सूचनायें आदि । इसी भवन में, ज.ज.ग. के "विदेशी व्यापार चैम्बर" का संपर्क-ब्यूरो भी है । यह ब्यूरो किन्हीं विशेष वस्तुओं के व्यापार में रुचि रखने वाले विभिन्न व्यापारियों को एक दूसरे से मिला देता है । फ़ान्ज़-मेरिंग-[illegible] निकट ही मेले का "सूचना तथा सहयोग केन्द्र" । यह 'केन्द्र' भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में व्यापारियों की सहायता करता है । मेले के दौरान यहां बहुत सी व्यापार फर्में, संस्थायें आदि अपने दफ्तर खोल देती हैं ।

अवकाश तथा शाम के समय, लाइपज़िक कई प्रकार से अपने मेहमानों का मन बहलाता है । अतिथिसत्कार यहां की भव्य परम्परा है । यहां के होटल, रेस्त्राँ, तथा मधुशालायें उत्तम प्रकार की शराबें तथा स्वादिष्ट भोजन अपने मेहमानों के लिये हाज़िर रखते हैं । लाइपज़िक खेल कूद का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र भी है । यहां का 'ओपेरा हाउस' यूरोप का नवीनतम ओपेरा हाऊस है । इसके अतिरिक्त यहां कई बढ़िया थियेटर तथा सेनिमाघर भी हैं । यहां का 'गेवान्दहाउस' वाद्यवृन्द विश्व विख्यात है । मन बहलाव के लिये यहां के 'नाईट क्लब' तथा 'कैबरे' अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के हैं ।

विशेष परिसंवादों, सम्मेलनों तथा गोष्ठियों का आयोजन

जयन्ती मेले के अवसर पर अनेक वैज्ञानिक समारोहों का आरम्भ "उच्च बहुलक" अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद से होगा तथा इसकी चरमसीमा एक वैज्ञानिक [illegible] होगी जिसका सम्बन्ध मानव समाज के विकास पर तकनीकी क्रांति के प्रभाव से है । यहां प्रमुख वैज्ञानिकों की प्रधानता में कई विभागों की सभाएं होंगी । इन सभाओं में अन्य बातों के अतिरिक्त जिन बातों पर विचार होगा वे हैं—मनुष्य के बनाये हुए रेशों के उपयोगीकरण से सम्बन्धित समस्याएं, धातु संरूप में प्रचलित आधुनिक प्रविधियां तथा माईक्रोइलैक्ट्रानिक्स का क्षेत्र । दो दिनों के एक सम्मेलन में संसार की दो पद्धतियों के राज्यों के परस्पर आर्थिक सहयोग की संभावनाओं तथा मूल समस्याओं पर विचार-विमर्श होगा ।

लगभग एक सौ ज्ञानवर्धक भाषण होंगे जिनके द्वारा प्रदर्शक अपनी विशिष्ट वस्तुओं के तकनीकी लाभों तथा नवीन प्रविधियों के विकास का परिचय देंगे । इन विशेष भाषणों का विषय पैट्रोल रसायन, रसायन संयंत्र निर्माण, इलैक्ट्रानिक्स, मशीनी औज़ार इंजीनियरिंग तथा मशीन इन्जीनियरिंग उपयोगीकरण इत्यादि होंगे ।

लाइपज़िक मेले में ज. ज. ग. के टेलिफोन, टेलिविजन एवं रेडियो प्रदर्शनी मण्डप में यहां के अत्याधुनिक ढंग के टी. वी. प्रदर्शन के लिये रखे गये हैं
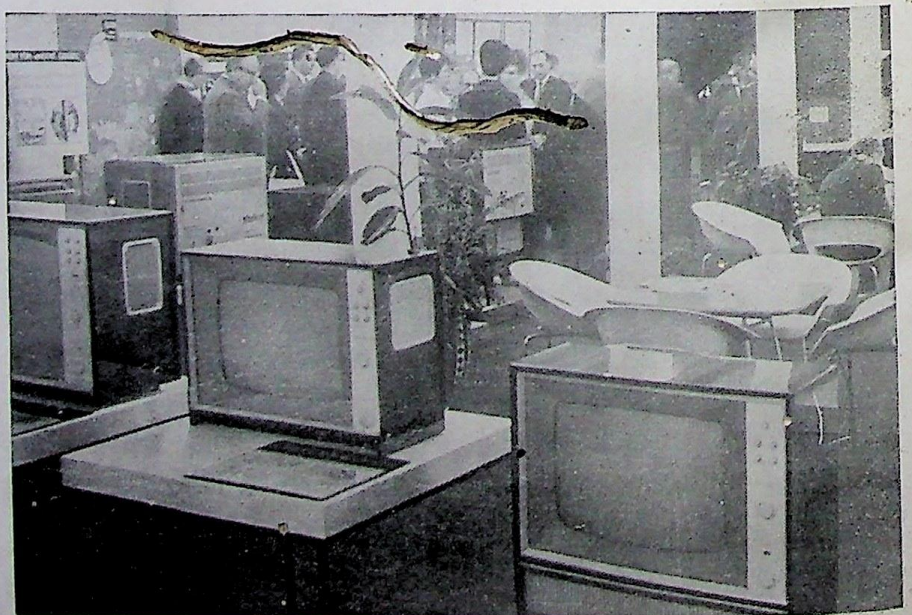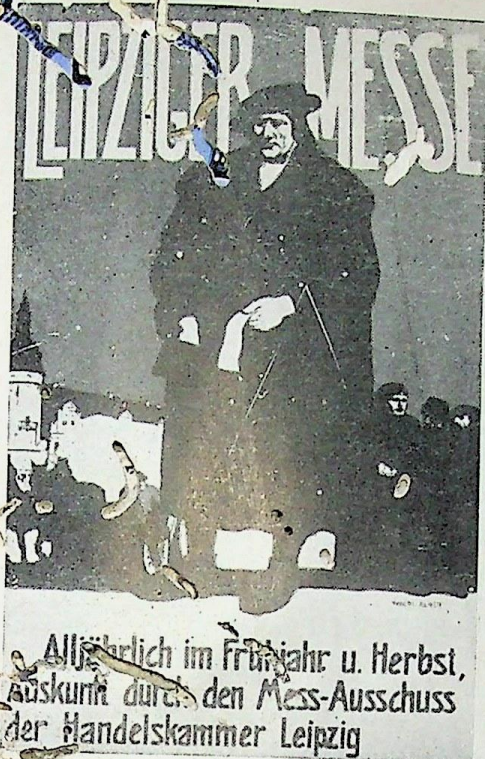
मेले का पहला पोस्टर जो सन् १९०८ में निकला था और जिसे श्री वाल्टर इल्लनर ने बनाया था

लाइपजिक में अन्तर्राष्ट्रीय मेला संघ निदेशालय की बैठक

१९६५ के वसंत काल में होने वाले जयन्ती मेले के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय मेला संघ की प्रबन्ध समिति की एक बैठक लाइपजिक में होगी। इसकी प्रधानता समितिके अध्यक्ष श्री रामो गोरडिल्लो कारान्जा (वेलेन्शिया व्यापार मेला) करेंगे। विश्व मेला संघ की प्रबन्ध समिति में लाइपजिक के अतिरिक्त जिन व्यापार मेलों का प्रतिनिधित्व है वे हैं: ब्रसल्ज, उतरेख्त, वारसेलल, वियाना, वरोना हैनोवर, जैगरेब, मिलान तथा फ्रैंकफुर्ट। अन्तर्राष्ट्रीय मेला संघ के ३१ वें अधिवेशन में लाइपजिक मेला ऐजेंसी के उप प्रधान निदेशक श्री हैरे रोल्फ लैम्सर पुनः अन्तर्राष्ट्रीय मेला संघ के उपाध्यक्ष चुन लिए गए।

विश्व विख्यात कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम

२८ फरवरी १९६५ को जयंती के उद्घाटन समारोह के अवसर पर लाइपजिक ग्रैण्ड आपेरा में जो विश्व विख्यात कलाकार भाग लेंगे उनमें सोवियत वायलनवादक डैविड तथा आइगोर ओयस्ट्राख भी सम्मिलित हैं। वे गेवांहाऊस वाद्यवृन्द द्वारा आयोजित विशेष संगीत गोष्ठियों में भी वायलन वादन प्रस्तुत करेंगे। सोवियत पियानो वादक एमिल गिलेल्स रेडियो सिम्फनी वाद्य-वृन्द द्वारा आयोजित एक विशेष गोष्ठी में भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त अनेक अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विशेष आयोजना होगा। लाइपजिक के थियेटरों के कार्यक्रम के आरंभ में शेक्सपियर का "मैकबेथ" अर्मानो वाल्फ फैरेरी का "बुद्धिमान मूर्ख नारी" तथा रिचर्ड स्ट्रास का "छायारहित नारी" इत्यादि प्रस्तुत किये जायेंगे।

मेले का बिक्री केन्द्र

१९६४ के लाइपज़िक वसन्त मेले के बिक्री केन्द्र ने बड़ी संख्या में व्यापारियों तथा अन्य विदेशी मेहमानों का ध्यान अपनी ओर आकर्शित किया। इस केन्द्र की स्थापना गत वर्ष में की गई थी। लगभग ३३ देशों के ६०० से लेकर ८०० तक व्यापारियों आदि ने इस केन्द्र की सेवायें प्राप्त कीं। वसन्त मेले के अवसर पर इस केन्द्र को विदेशी व्यापारियों तथा मेहमानों की सुविधा के लिये, और भी विस्तृत किया गया था। मेला आरम्भ होने से बहुत पहले इस केन्द्र की सूचना संसार की प्रमुख व्यापारिक संस्थाओं, फर्मों आदि को दी गयी थी। इसलिये लाइपज़िक आने से पहले ही वे 'बिक्री केन्द्र' से परिचित थे। इस नई सुविधा का लाभ उन्होंने उसी सहज रीति से उठाया जैसे वे 'विदेशी अतिथि केन्द्र' तथा 'मेला सेवा' आदि जैसे केन्द्रों से उठाते थे। 'बिक्री केन्द्र' द्वारा दी जाने वाली सभी सुविधायें ठीक वैसी ही लाभदायक सिद्ध हुयीं, जैसा हमने अनुमान किया था। इस बात की पुष्टि उन विदेशी मेहमानों से भी होती रही है जो यहां प्रायः आते रहे हैं। विदेशी मेहमानों की सर्वाधिक संख्या 'सूचना केन्द्र' में ही आई। पूछताछ के लिये प्रतिदिन यहां लगभग ७० व्यापार सस्थाओं में संपर्क कराया जाता था और पूछ ताछ के उत्तर तथा दूसरी सूचनायें दी जाती थीं।

इसके अतिरिक्त, व्यापारियों में उन कमरों को पहले ही से सुरक्षित करने की प्रथा भी अब बहुत बढ़ गयीं है, जो कमरे कारोबारी बातचीत के लिए ही बनाये गये हैं। टेलेक्स तथा टेलीफोन की घंटियां चारों पहर बजा करती थीं। टेलेक्स द्वारा ६५ देशों को लाइपजिक से मिलाया गया था। २१ देशों तक संदेश पहुंचाना तथा प्राप्त करना चन्द मिन्टों की बात थी। ऐसे पांच कांउटर भी यहां थे जहां से रेडियो द्वारा चित्र भेजे जा सकते थे। 'बिक्री-केन्द्र' का वातावरण हर प्रकार से व्यस्त और सुखद था। यहां हर एक मेहमान को लगा जैसे वह अपने ही देश में हो, अपने ही घर में।

.. मेले की ८वीं शताब्दी

(पृष्ठ ४ का शेष)

व्यापार-फर्में तथा व्यापारी, लाइपजिक मेले में अपनी सर्वश्रेष्ठ तथा नवीनतम वस्तुएं लायें, इसके लिये सर्वोत्तम वस्तुओं को स्वर्ण पदकों तथा डिप्लोमाओं से पुरस्कृत किया जाता है। तकनीकी ज्ञान और अनुभवों के आदान प्रदान के लिये, मेले के दिनों में विचार गोष्ठियां, परिसंवाद, सम्मेलन, फिल्म प्रदर्शन और वाद-विवाद आदि आयोजित किये जाते हैं।

व्यापार मेले का नगर, लाइपजिक, अपनी और अपने मेले की अष्ट शती मनाने की धूमधाम से तैयारियां कर रहा है। 'लाइपजिक मेला निदेशालय' को पश्चिमी जर्मनी, पश्चिमी बर्लिन और अन्य देशों की अनेकानेक व्यापार-संस्थाओं और प्रदर्शकों के ८०० वें जयन्ती मेले में भाग लेने के लिये इतने आवेदन पत्र मिल रहे हैं कि 'निदेशालय' को हर दिन प्रदर्शन क्षेत्र को बढ़ाना पड़ रहा है।

हमें इस बात की पूर्ण आशा है कि विश्व-प्रसिद्ध 'लाइपजिक का मेला नगर', अपने ८०० वें जयन्ती मेले द्वारा, सन् १९६५ में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के रिश्तों और सद्भावनाओं को अधिक गहरा बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

राष्ट्रपति डा० राधा कृष्णन, अन्तर्राष्ट्रीय भूविज्ञान सम्मेलन में आये हुये ज. ज. ग. के एक भूवैज्ञानिक डा० प्रो० रोइज़लर के साथ बातचीत कर रहे हैं

अन्तर्राष्ट्रीय भूविज्ञान सम्मेलन में ज. ज. ग. के प्रतिनिधि

हाल ही में, भारत की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित २२वें अन्तर्राष्ट्रीय भूविज्ञान सम्मेलन में, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने डा. ओ माइस्सेर के नेतृत्व में अपना एक प्रतिनिधि मंडल भेजा था। डा. महोदय ज. ज. ग. की शोध परिषद के सदस्य हैं। सम्मेलन में ज. ज. ग. के भूविज्ञानियों ने कई महत्वपूर्ण लेख पढ़े और इसकी गोष्ठियों में सक्रिय भाग लिया।

उक्त भूविज्ञान सम्मेलन के आरम्भ होने से पहले और बाद में, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आये हुये प्रतिनिधियों को काश्मीर से लेकर कन्यकुमारी तक और आसाम तक घुमाया गया ताकि वे भारत की भूवैज्ञानिक स्थिति और जनता के जीवन का परिचय प्राप्त कर सकें।

परिचारिका

(पृष्ठ १६ का शेष)

से इतना प्रभावित हुआ कि सारा दिन साथ रहने के लिए उसने आग्रह किया।

इस प्रकार दिन कारोबार की बातों में निकल गया और सांझ उतर आई।

शाम को अतिथियों के सम्मान में होने वाली एक पार्टी में मराको के मेहमान को भी आमंत्रित किया गया। परन्तु निमंत्रण पाकर जैसे हमारा यह मेहमान प्रसन्न नहीं लग रहा था। पार्टी में जाने का क्या लाभ ... कि वह जर्मन भाषा जानता ही नहीं यह सोचकर कि वहां जाने से वह फायदे में ही रहेगा, वह निमंत्रण में गया ही। अपराह्न उसकी समस्याओं का समाधान भी साथ ही लो... **डोरिस** के रूप में। विनम्र स्वभाव की इस परिचारिका के साहचर्य में शाम न केवल लाभदायक ... प्रमाणित हुई, बल्कि सुहावनी भी। ऐसी सुन्दर परिचारिका की उपस्थिति किस को आनंदित न करे।

आधी रात से पहले पहले अपने छात्रावास के कमरे में ... होकर **डोरिस** को सारे दिन की ... बहुत ... प्रतीत हो रही थीं, हालांकि वह बहुत थक भी चुकी थी। उसकी सहेली इंग्रिड (जो उसी की तरह एक परिचारिका थी) इतनी रात गये भी अभी जाग रही थी। दोनों सहेलियां बीते दिन की नई अनुभूतियां एक दूसरे को सुनाती रहीं। इंग्रिड ने भी इसी प्रकार एक स्पेनी मेहमान की सहायता की थी व्यापार संबंधी करारों आदि में, और एक अंग्रेज की खरीदारी करने में हाथ बटाया था। इसके बाद रात के शो में इंडोनेशियाई जोड़े के साथ वह आपेरा हाऊस गई थी।

इधर दो सहेलियां बातें कर रही थीं और उधर मराको का व्यापारी भी अपने होटल के कमरे में आराम कर रहा था। आरम्भ के वह क्षण जो समस्याओं से भरे लगे थे उसको अब कहीं नजर नहीं आ रहे थे। वह निश्चिंत सो रहा था। उसका आत्म-विश्वास लौट आया है। वह भविष्य को—अपने व्यापारिक आदान-प्रदान को—विश्वस्त होकर देख रहा है। और इस सफलता पर मनन करने के साथ ही साथ उसके मन में एक कोमल, सुन्दर और विनम्र आकार उभरता है। वह आकार है परिचारिका डोरिस का

प्रेस सेन्टर का १००० वाँ अतिथि

सन् १९६४ के बसन्तकालीन लाइपजिक मेले के अवसर पर, प्रेस सेन्टर ने अपनी दसवीं वर्षगांठ धूमधाम से मनाई। इस प्रेस सेन्टर ने ५६ देशों के १२५० पत्रकारों की देखभाल तथा सहायता की। इन पत्रकारों में अफ्रीका तथा एशिया के नवोदित राष्ट्रों के भी अनेक पत्रकार थे। वर्षगांठ के दिन प्रेस सेन्टर की पांच मंजिली इमारत ... से लेकर आधीरात तक चहल पहल और काम काज में बहुत व्यस्त रही ... एक भी पूछताछ, चाहे वह कितनी ही जटिल क्यों न थी, पूरी हुई बिना न रही।....

प्रेस सेन्टर में श्री क्वाटरा (बीच में) का स्वागत

प्रेस सेन्टर के उक्त समारोह की एक विशेष घटना थी इसके १००० वें अतिथि का 'सेन्टर' के निदेशक द्वारा भव्य स्वागत। इत्तेफाक से यह १००० वें अतिथि एक भारतीय पत्रकार **श्री आर. डी. क्वाट्रा** थे जो **नई दिल्ली** से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक **इण्डियन एक्सप्रेस** के सह-सम्पादक हैं। इस अवसर पर श्री क्वाट्रा ने, अप्रत्याशत रूप से अपने आपको छायाकारों के बीच में घिरा पाया।

ज. ज. ग. : निर्माण के सहयोगी
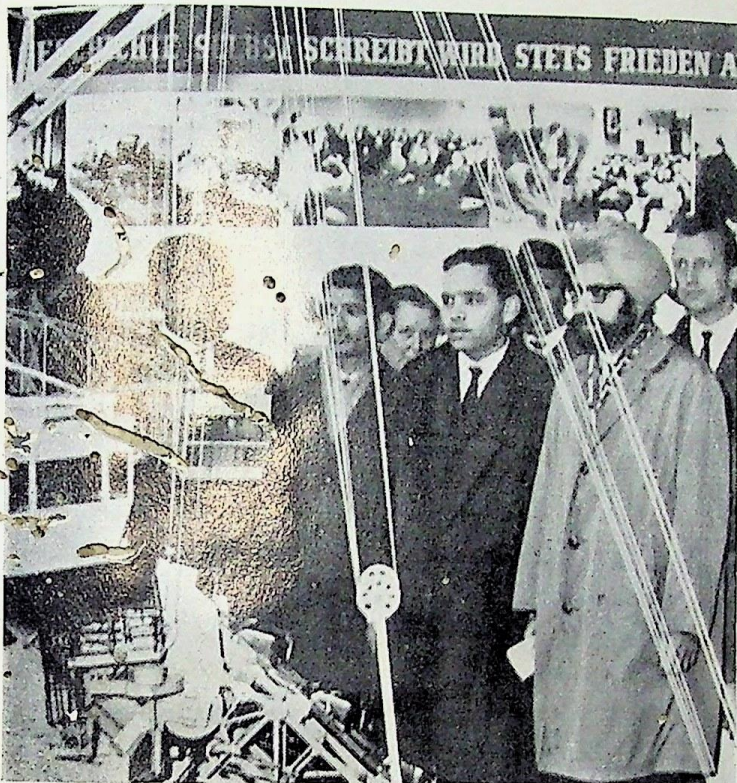
बर्लिन में ज. ज. ग. की १५वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित एक विशिष्ट प्रदर्शनी में ज.ज.ग. में रहने वाले भारतीय नागरिकों ने बहुत रूचि दिखाई

'शंकर्स वीकली' द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय बाल चित्र प्रतियोगिता में ज.ज.ग. के कई चित्रों को पुरस्कृत किया गया। भारत के प्रधान मन्त्री, श्री लाल बहादुर शास्त्री से, भारत स्थित ज.ज.ग. व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्ट बोट्टकर, विजेता जर्मन बच्चों की ओर से पुरस्कार ले रहे हैं

ज. ज. ग. के फिल्म-कलाकार

आन्ने काटरिन बूयेरगर

नई दिल्ली में आयोजित तीसरे अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में ज. ज. ग. ने **प्यारा सफेद चूहा** नामक फिल्म भेजी थी। एक और फिल्म भी (जो प्रतियोगिता के लिए नहीं थी) इस समारोह में दिखाई गई। इसका नाम था **भेड़ियों के घेरे में**

आरनिम म्यूलर-स्टाल

सूचना पत्रिका

जर्मन
जनवादी
गणतंत्र
के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष १०
अंक २

२० फरवरी, १९६५

संकेत

मुख पृष्ठ : भारत स्थित, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूत श्री कूर्ट बोट्टगर, भारत की स्वास्थ्य मंत्री, डा सुशीला नय्यर को धनुषकोटी के तूफान से पीड़ित जनों के लिये ज. ज. ग. से आये हुये कपड़े, दवाइयाँ, कम्बल आदि भेंट कर रहे हैं

अंतिम पृष्ठ : बर्लिन के मेट्रोपोल थियेटर की एक प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय अभिनेत्री सभी लोगों की समृद्धि और स्वास्थ्य के लिये 'जामे सेहत' पी रही हैं

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और यूनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

तटस्थ देश और जर्मनी

हांस योआखिम

गत वर्ष काहिरा में तटस्थ राज्यों का जो सम्मेलन हुआ, वह अब इतिहास का एक अंग बन चुका है। इन तटस्थ राज्यों और सरकारों के ४७ प्रमुख, इस सम्मेलन में शामिल हुये और उन्होंने कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये। इनमें एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रस्ताव था "शान्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिये कार्यक्रम।" यह प्रस्ताव कार्यक्रम, राष्ट्रों के सहअस्तित्व के लिये और साम्राज्यवाद तथा नव उपनिवेशवाद के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण देन है।

इस प्रस्ताव में, विभक्त देशों की समस्या के बारे में व्यक्त किये गये विचार, दोनों जर्मन राज्यों के लिये विशिष्ट महत्व रखते हैं, क्योंकि यह समस्या विभाजित जर्मनी की भी समस्या है। प्रस्ताव में वियतनाम, कोरिया और जर्मनी को शांतिपूर्ण ढंग से पुनः एक करने का एकमत से समर्थन किया गया है। जर्मन जनवादी गणतंत्र में इस प्रस्ताव का बहुत अच्छा स्वागत हुआ और इस पर सन्तोष प्रकट किया गया।

तटस्थ राष्ट्रों के उक्त सम्मेलन में घाना के राष्ट्रपति क्वामे एनक्रूमा ने, जर्मन समस्या के संबन्ध में ये शब्द कहे: "जर्मन समस्या शीत युद्ध की निरर्थकता का एक उदाहरण है। इस सम्मेलन में यह प्रश्न उठाना बहुत ज़रूरी है कि आखिर कब तक जर्मन समस्या, सभ्य संसार के सिर पर, एक नंगी तलवार बनकर लटकती रहेगी? इस जटिल प्रश्न को जल्दी और शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने का समय अब निश्चित रूप से आ गया है। चूंकि हम तटस्थ राज्य हैं और इस नाते हम इस समस्या में उलझ नहीं गये हैं, हमें अपने आपको जर्मनों की सेवा के लिये तैयार रखना चाहिये।...." यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन शब्दों में जर्मन जनता का हृदय बोलता है।

केन्द्रीय अफ्रीकी गणराज्य के राष्ट्रपति, श्री डाक्को ने इस बात पर बल दिया कि केवल जर्मन जनता का आत्मनिर्णय का अधिकार ही विभाजित जर्मनी को एक कर सकता है। विभाजित देशों की जनता के आत्म निर्णय के अधिकार का समर्थन करते हुये लाओस के प्रधान मंत्री, श्री सुवाना फूमा ने सम्मेलन में कहा: "इस विषय में हमारा यह निश्चित मत है कि विभाजित देशों की जटिल समस्या केवल वहां की जनता ही हल कर सकती है बिना किसी बाहरी दबाव के। जर्मनी, कोरिया और वियतनाम की जनता को अपनी मर्जी तथा फैसले के अनुसार ही अपने देशों को पुनः एक करना चाहिये"।

नाइजीरिया गणराज्य के परराष्ट्र मंत्री, श्री बारमली ने शीत युद्ध का विरोध किया और एकीकरण के रास्ते में इसको मुख्य बाधा घोषित किया। उन्होंने कहा: "हमारे विचार में, अगर शीत युद्ध के तनाव को कम किया जाये तो विभाजित देशों की समस्या अधिक जिम्मेदार तरीके से हल की जा सकती है। इस सिलसिले में नाइजीरिया, निम्न सिद्धान्तों का समर्थक है: (१) शांतिपूर्ण तरीकों से एकीकरण, (२) वास्तविक स्थिति को नजरअन्दाज न करना, और (३) विभाजित देशों की सरकारों के बीच आपसी बातचीत तथा सहयोग।...."

जहां तक जर्मन जनवादी गणतंत्र का संबंध है वह, विभाजित

(शेष अगले पृष्ठ पर)

भारत के १५ वें गणतंत्र-दिवस पर बधाई

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने भारत के राष्ट्रपति, डा. राधाकृष्णन को भारतीय गणराज्य के १५ वें गणतन्त्र दिवस के शुभ अवसर पर (२६ जनवरी पर) अपनी हार्दिक बधाइयाँ भेजी हैं। अपने इस शुभकामना सन्देश में श्री उल्ब्रिख्त ने लिखा है:

"महामहिम, मुझे इस बात का विश्वास है कि भारतीय गणराज्य, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की अपनी नीति पर यथावत अमल करते हुये, शांति को सुदृढ़ करने और क़ायम रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा"।

ज. ज. ग. की राज्य परिषद के अध्यक्ष के अलावा, वहाँ के प्रधान मंत्री, श्री विल्ली स्टोप ने भी प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री को इसी आशय का शुभकामना संदेश भेजा है।

इसी प्रकार, ज. ज. ग. के पर-राष्ट्र मंत्री, डा. लोटार बोल्स और वहाँ के पीपुल्स चैम्बर (लोक सभा) के अध्यक्ष डा. योहान्नेस डीकमन्न ने भी, क्रमशः भारत के परराष्ट्र मंत्री, श्री स्वर्णसिंह और लोक सभा के अध्यक्ष, श्री हुकुम सिंह को गणतंत्र दिवस की बधाइयाँ भेजी हैं।

देशों से संबंधित तटस्थ राज्यों की राय से बिलकुल सहमत है। इस बात का प्रमाण है जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार का वह स्पष्ट वक्तव्य जो इसने तटस्थ देशों के काहिरा सम्मेलन के नतीजों के बारे में दिया है। इस वक्तव्य में कहा गया है : "जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार (तटस्थ राष्ट्रों के) इस आह्वान का स्वागत करती है कि विभाजित देशों को, बिना किसी बाहरी दबाव या हस्तक्षेप के और शांतिपूर्ण तरीकों से, अपनी एकीकरण की समस्या का न्यायपूर्ण तथा स्थाई हल ढूंढना चाहिये। वह सम्मेलन की इस चेतावनी से भी सहमत है कि धमकियां देने या बल प्रयोग करने से समस्या हल नहीं होगी, बल्कि अधिक उलझ जायेगी और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा जबरदस्त खतरे में पड़ जायेगी।...."

ज. ज. ग. की सरकार ने अनेकानेक बार पश्चिम जर्मन फेडरल सरकार के नेताओं तथा अधिकारियों और वहां के संगठनों को, दो जर्मन राज्यों के बीच सहयोग करने तथा बातचीत चलाने की, पेशकश की है। गत वर्ष के मई मास में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, (प.) जर्मन फेडरल गणराज्य के चान्सल्लर, डा. एरहार्ड को इसी आशय का एक पत्र लिखा। इसमें, श्री उल्ब्रिख्त ने एक बार फिर इस बात का सुझाव दिया था कि ऐसी सभी बातों को अलग रखा जाये जो दो जर्मन राज्यों को एक दूसरे से दूर करती हों या उनके समझौते में बाधा डालती हों। उनके पत्र का मात्र विषय था युद्ध को रोकना, जर्मन शांति सन्धि पर विचार करना और दूसरे महा युद्ध के अभी तक बचेखुचे सवालों को खत्म करना। इस संदर्भ में श्री उल्ब्रिख्त ने समानता के आधार पर और हर तरह के बाहरी हस्तक्षेप के बिना, बातचीत शुरू करने की सलाह दी थी। लेकिन पश्चिमी जर्मनी के चान्सल्लर ने आज तक भी इन सुझावों का (पत्र का) जवाब नहीं दिया।

ज. ज. ग. ने, वास्तविक स्थितियों को ध्यान में रखते हुये समय समय पर, पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य को विभाजित जर्मनी के शांतिपूर्ण एकीकरण के लिये अनेक सुझाव दिये हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र केवल जर्मन जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी के कारण ही ये प्रयत्न नहीं करता, बल्कि इसलिये भी करता है क्योंकि जर्मनी के एक हो जाने से अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का एक बहुत [illegible] केन्द्र भी खत्म हो जायेगा। यदि दोनों जर्मन राज्य, समानता के आधार पर बातचीत शुरू करें तो वे इस तरह अपना अन्तर्राष्ट्रीय कर्तव्य पूरा करेंगे। [illegible] करना, तटस्थ राज्यों के काहिरा सम्मेलन के उदात्त उद्देश्यों तथा प्रस्तावों के भी अनुकूल होगा।

ज. ज. ग. का दक्षिणी अफ्रीका के साथ कोई संबन्ध नहीं

जर्मन जनवादी गणतंत्र की बढ़ती हुई लोकप्रियता से द्वेष रखने वाले और कुढ़ने वाले तत्त्व आजकल तरह तरह के मनगढ़न्त तथा भ्रमपूर्ण समाचार फैला रहे हैं। ऐसे ही समाचारों में एक समाचार है जर्मन जनवादी जणतंत्र और दक्षिण अफ्रीका के बीच तथाकथित व्यापारिक रिश्तों के बारे में।

२२ जुलाई, सन् १९६३ के दिन, ज. ज. ग. के परराष्ट्र मन्त्री, यूलियस बालोउ ने, वहां की प्रमुख समाचार एजन्सी, ए० डी० एन० को बताया था कि संयुक्त राष्ट्र संघ की ३२ अफ्रीकी राज्यों की इस प्रार्थना पर, कि वेरवोर्ड सरकार के खिलाफ़ कुछ निर्णयकारी क़दम उठाये जायें, उन्होंने स्वयं ज. ज. ग. की सभी विदेश व्यापार संस्थाओं को यह आदेश भेज दिया था कि वे दक्षिण अफ्रीका के साथ हर तरह के व्यापारिक तथा अन्य संबन्ध तोड़ दें। बाद में इस आदेश को एक सरकारी घोषणा का रूप दिया गया जिसको यहां की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) का समर्थन प्राप्त हुआ। ज. ज. ग. की इस सरकारी घोषणा को आदिस अबाबा में आयोजित अफ्रीकी राज्यों के शिखर-सम्मेलन को भी भेज दिया गया।

निहित स्वार्थों वाले तत्वों द्वारा ज.ज.ग. के सम्बन्ध में फैलाई जा रही इस तरह की झूठी ख़बरों का दोहरा उद्देश्य है: एक यह कि ज. ज. ग. की समाजवादी सरकार और नवोदित अफ्रीकी राज्यों में मनमुटाव पैदा करना; और दूसरा, अपने युद्ध उत्तेजक तथा उपनिवेशवादी कार्रवाईयों पर पर्दा डालना। वास्तव में ये तत्त्व और शक्तियां दक्षिण अफ्रीका तथा दक्षिण रोढ़ेशिया की नस्लवादी तथा फासिस्त सरकारों और पुर्तगाल की क्रूर, उपनिवेशवादी सरकार के हिमायती हैं, और ये जघन्य तत्त्व इन सरकारों की हर तरह से सहायता करते हैं।

इन गलत और बे बुनियाद अफ़वाहों के बावजूद, जर्मन जनवादी गणतंत्र और इसकी समाजवादी सरकार, अफ्रीका के साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद विरोधी मुक्ति संघर्ष की दृढ़ समर्थक है और आगे भी रहेगी।

बर्लिन प्रवेश-पत्र सन्धि

बातचीत को आगे बढ़ाने का नया आधार

२५ जनवरी, १९६५ के दिन जर्मन जनवादी गणतंत्र के राज्य सचिव श्री एरिक वेण्ड्ट और पश्चिम बर्लिन के प्रतिनिधि, श्री होर्ज़ट कोरबर, पश्चिम बर्लिन में बातचीत करने के लिए मिले । बातचीत का विषय था बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि की उन दो अवधियों पर विचार करना जिनके अनुसार पं० बर्लिन के निवासी, ज. ज. ग. की राजधानी जनवादी बर्लिन में जाकर अपने संबंधियों से मिलकर आ सकते हैं ।

उक्त प्रवेश-पत्र संधि पर सितम्बर, १९६४ में दस्तख़त हुए थे, और इस संधि के अनुसार यह तय पाया था कि पं० बर्लिन के लोग निर्धारित चार कालावधियों में, पांच बार जनवादी बर्लिन में जाकर अपने रिश्तेदारों से मिलने जा सकते हैं । इन कालावाधियों में से दो अवधियां गत वर्ष के नवम्बर और क्रिस्मस तथा नव वर्ष की छुट्टियों में पूरी हुयीं, जिनमें लाखों पं० बर्लिन वासी जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी में अपने नाते रिश्तेदारों से मिलकर आये । शेष दो यात्रा-अवधियां ईस्टर और विटुसून त्यौहारों पर पड़ेंगी । पं० बर्लिन में श्री वण्ड्ट तथा श्री कोरबर की उल्लिखित २५ जनवरी की मुलाकात बर्लिन-प्रवेश-पत्र संधि की इन ही दो कालावधियों की यात्राओं के सिलसिले में थीं ।

जहां तक जर्मन जनवादी गणतंत्र का संबंध है उसने प्रवेश-पत्र संधि में उल्लिखित सभी बातों को पूरा किया और पश्चिम बर्लिन से आये हुए लगभग ८००,००० व्यक्तियों को हर प्रकार की सुख-सुविधा दी अपनी राजधानी में । लेकिन, इसके विपरित, पं० बर्लिन में सक्रिय, जासूसी तथा तोड़-फोड़ करने वाली कुछ संस्थाओं के गलत काम के बारे में, श्री वेण्ड्ट ने, श्री कोरबर से शिकायत की । ये जासूसी संस्थायें प्रवेश-पत्र संधि का नाजायज़ इस्तेमाल करती हैं और जाली पार-पत्रों द्वारा समाज-विरोधी तत्वों तथा व्यक्तियों को गैर-कानूनी तरीकों से जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी में लुके-छिपे लाती हैं, और वहां के नागरिकों को बहला फुसला कर ऐसे ही निकाल कर पं० बर्लिन ले जाती हैं । स्पष्ट है कि ये खतरनाक कार्रवाई प्रवेश-पत्र संधि की सफलता के लिए घातक सिद्ध हो सकती है ।

पश्चिमी बर्लिन में, ज. ज. ग. के डाक अधिकारी वहां के नागरिकों को, ज. ज. ग. की राजधानी (बर्लिन) में आने के लिये प्रवेश-पत्र दे रहे हैं, ताकि वे अपने संबन्धियों से वहां मिल आयें

पैरिस के एक सुप्रसिद्ध अखबार ने बर्लिन को 'धरती पर एक ख़तरनाक बिन्दु' कहा है। यही वजह है कि यह खतरनाक बिन्दु, आजतक कई बार संसार का आकर्षण बिन्दु बन गया। लेकिन बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि ने यह सिद्ध किया है कि जर्मन भूमि पर पूर्व और पश्चिम के बीच बातचीत एकदम संभव है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि, पश्चिम बर्लिन के सेनेट और जर्मन गणतंत्र की सरकार के बीच हुई है। बर्लिन के दोनों भागों को राहत पहुंचाने वाली और हर्षित करने वाली इस संधि का प्रस्ताव जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने सामने लाया था।

अपने राज्य की सीमाओं को सुरक्षित करने के लिये, बर्लिन की 'दीवार' खड़ी करने के बाद से ही, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ज. ज. ग. की राजधानी (जनवादी बर्लिन) में, पं. बर्लिन के नागरिकों के आने जाने के लिए कोई रास्ता निकालने की कोशिश में लगी थी। इस दिशा में जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने, सन् १९६१ में, प्रवेश-पत्र देने के लिए पश्चिम बर्लिन में कुछ दफ्तर कायम किये थे। लेकिन वहां के अधिकारियों ने इन दफ्तरों को पं० बर्लिन सेनेट के आदेश से ज़बरदस्ती बन्द किया था। लेकिन अब बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि पर दस्तख़त होने से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो चूकी है कि

(शेष २० पृष्ठ पर)
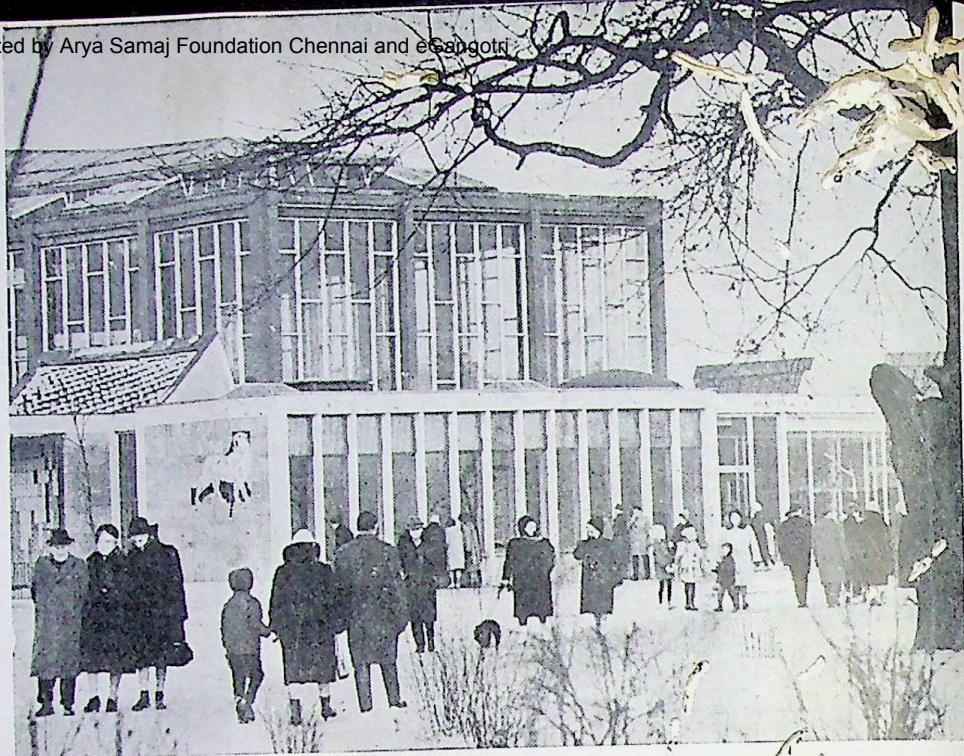
अपने संबंधियों से मिलने के बाद, प० बर्लिन के निवासी, ज. ज. ग. की राजधानी का भ्रमण करने गये। यह चित्र है ऐसे ही एक दल का राजधानी के एक प्राणि उद्यान में

राजधानी बर्लिन में पश्चिमी बर्लिन से आये हुये रिश्तेदारों के साथ खाना पीना, हंसी मज़ाक हो रहा है

गंभीर अध्ययन में व्यस्त विद्यार्थी

विश्व विद्यालय तक पहुंचने के विभिन्न मार्ग

डा. हेलमूट लेमन्न

किसी देश की शिक्षा प्रणाली की तुलना यदि कई मंजिलों वाली एक गगन-चुम्बी इमारत के साथ की जाये तो कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय और कालेज इस इमारत की ऊपरी मंजिलें हैं। शिक्षा प्रणाली की चर्चा करते समय, विज्ञान तथा तकनालोजी में होती हुई निरन्तर क्रांति के इस युग में दो सवाल सबसे अहम हैं: एक यह कि कितने लोग गगन-चुम्बी इमारत की इन ऊपरी मंजिलों (विश्वविद्यालयों तथा कालेजो) तक पहुंच पाते हैं, और दूसरा यह कि वहां तक पहुंचने के लिये उन्हें कितना खर्च करना पड़ता है?

इस समय, जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्रति १०,००० जनसंख्या में ५६ विद्यार्थी हैं। एक आयु-समूह विशेष में प्रति १०० व्यक्तियों में से लगभग १५ मैट्रिक परीक्षा पास करते हैं, और इस प्रकार विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के भागी बन जाते हैं। इसकी तुलना में फ्रांस में केवल १२ प्रतिशत छात्र मैट्रिक पास करते हैं। स्वीडन में यह दर लगभग १६.५ प्रतिशत है।

ज. ज. ग. में माध्यमिक स्कूलों, कालिजों अथवा विश्वविद्यालयों में दाखिला पाना विद्यार्थी की अपनी योग्यता और ज्ञान पर निर्भर है। जहां तक शिक्षा का सवाल है वह मुफ्त है। इतना ही नहीं, अधिकांश विद्यार्थियों को सरकार की ओर से छात्रवृत्तियां भी दी जाती हैं।

अब हम ज़रा यह देखें कि विश्वविद्यालय तक पहुंचने के लिए कितने द्वार उन्मुक्त हैं विद्यार्थियों के लिए। जर्मन जनवादी गणतंत्र में हर बालिग और नौजवान के लिये विश्वविद्यालय तक पहुंचने के कई रास्ते खुले हैं। लेकिन ये सभी रास्ते भिन्न होते हुए भी एक केन्द्र-बिन्दु—अर्थात् मैट्रिक परीक्षा से होकर ही गुज़रते हैं। उच्च अध्ययन तथा प्रशिक्षण के लिये, अर्थात् उच्च शिक्षा-संस्थानों में प्रवेश पाने के लिये मैट्रिक की परीक्षा में पास होना अनिवार्य है।

बर्लिन के एक मार्ग पर, नौजवान विद्यार्थी "ट्विस्ट" नृत्य कर रहे हैं

अवकाश में 'विद्यार्थी पेन्टो-मिमिक एनसाम्ब्ल' के विद्यार्थी लोगों के सामने नाटक प्रस्तुत करते हैं

संयकालीन 'जनता' कालिज स्थापित किये गये हैं। सामान्यतः इन कालिजों में वे चार वर्षीय पाठ्यक्रम के बाद मैट्रिक की परीक्षा देते हैं। सन् १९६३ में इन कालिजों में पढ़ने वाले, १,६०० व्यक्तियों में से लगभग ७०० ने ज. ज. ग. के विभिन्न विश्वविद्यालयों में दाखिला लिया। मजदूर, किसान तथा ऐसे ही अन्य श्रमिक समूह, निजी तौर पर तैयारी करके मैट्रिक की परीक्षा में बैठ सकते हैं (अन्य लोग ऐसा नहीं कर सकते—सं०)। लेकिन इस वर्ग के लिये मैट्रिक का पाठ्यक्रम कुछ भिन्न होता है सामान्य मैट्रिक के पाठ्यक्रम से। इस कोटि की मैट्रिक परीक्षा पास करके विद्यार्थी उच्चतर शिक्षा संस्थानों में केवल अर्थशास्त्र या अर्थतन्त्र का ही अध्ययन कर सकता है।

विज्ञान तथा तकनालोजी संबन्धी क्रांति और समाजवादी सांस्कृतिक क्रांति के तकाजों और आवश्यकताओं को देखते हुये, हमारे यहां की उक्त सुविधाएं भी अब कम पड़ रही हैं। इसीलिए ज. ज. ग. में, एक समरूप समाजवादी शिक्षा व्यवस्था को आकार देने के लिए जो प्रस्तावित मसौदा तैयार किया है उस में विश्वविद्यालय तक पहुंचने की सुविधाओं को बढ़ाने का संकेत दिया गया है। शिक्षा व्यवस्था संबन्धी इस योजना के आधार हैं १० वर्षीय पाठ्यक्रम वाले यहां के पोलितकनीकी स्कूल। इन स्कूलों में सभी स्वस्थ बच्चों को दाखिल किया जाता है। वैज्ञानिक आधार पर खड़े इन स्कूलों में किसी एक भाषा का अध्ययन और किसी व्यवसाय की ट्रेनिंग भी शामिल है। इनके माध्यम से मैट्रिक तक जल्दी पहुंचा जा सकता है।

विशेष प्रतिभा वाले छात्र-छात्राओं के प्रोत्साहन और सहायता के लिये विशिष्ट स्कूलों को क़ायम किया गया है। इन स्कूलों में मेधावी विद्यार्थियों को तकनालोजी, गणित, विज्ञान, भाषायें, ललित कलायें तथा अन्य विषय पढ़ाये जाते हैं। इनमें से अधिकांश विद्यार्थी, एक विशिष्ट तथा छोटे पाठ्यक्रम

ज. ज. ग. के कालिजों तथा विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की अधिकांश संख्या पोलितकनीकी उच्चतर (माध्यमिक) स्कूलों से आती है जिनकी आयु अवसतन १४ से १८ वर्ष की होती है। उदाहरण के लिये, सन् १९६३ में यहां के विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले १६,००० विद्यार्थियों में से लगभग ९,२०० लड़के सीधे इन्हीं पोलितकनीकी स्कूलों से निकलकर विश्वविद्यालयों में दाखिल हुये थे। उसी साल २०,००० नये छात्रों को पोलितकनीकी उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में दाखिला दिया गया।

विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षणों में व्यस्त नौजवानों के लिये भी, तीन साल में मैट्रिक परीक्षा पास करने की व्यवस्था है। ऐसा वे अपनी व्यावसायिक परीक्षाओं के साथ ही साथ कर सकते हैं। सन् १९६३ में, २,७०० व्यावसायिक विद्यार्थियों में से लगभग ८०० विद्यार्थी मैट्रिक करके सीधे विश्वविद्यालयों में दाखिल हुए। उसी वर्ष, १० वर्षीय पोलितकनीकी स्कूलों की ९ वीं कक्षाओं में १००,००० विद्यार्थी पढ़ रहे थे। इनमें से कई विद्यार्थी इस साल व्यावसायिक स्कूलों की तीन वर्षीय मैट्रिक क्लासों में दाखिला लेंगे और सन् १९६८ में मैट्रिक की परीक्षा में बैठेंगे।

ऐसे लोग जो विभिन्न उद्यमों या प्रशासनों में काम करते हैं, और जिनके पास विश्वविद्यालय में दाखिला लेने के लिए अनिवार्य —मैट्रिक की डिग्री नहीं, उनके लिये यहां

के द्वारा निर्धारित समय से पहले विश्वविद्यालयों में पहुंच जाते हैं । इस कोटि के स्कूलों में प्रतिभाशाली छात्रों को १४ साल की आयु से पहले पहले दाखिल किया जाता है । विश्वविद्यालय में आने से पहले भी, इन विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के प्राध्यापक पढ़ाते हैं ।

कारखानों और गांवों में भी शिक्षा संस्थाओं को कायम किया जा रहा, ताकि वहां काम करने वाले लोग भी नवीनतम ज्ञान से अनभिज्ञ न रहें । इन ग्राम तथा फैक्ट्री अकादमियों में मैट्रिक की पढ़ाई करने के लिये विशेष प्रबन्ध है ।

इस तरह, ज. ज. ग. में अधिक से अधिक लोगों को विश्वविद्यालय तक पहुंचाने के लिये लगातार कोशिश की जा रही है । इसमें सन्देह नहीं कि यह नयी शिक्षा-नीति भविष्य में हमारे लिए वैज्ञानिक तथा तकनालोजी संबन्धी प्रगति और खुशहाली का दृढ़ आधार सिद्ध होगी ।

ज. ज. ग. में विद्यार्थी खेतों, फैक्ट्रियों तथा अन्य संस्थानों में अमली ट्रेनिंग पाते हैं
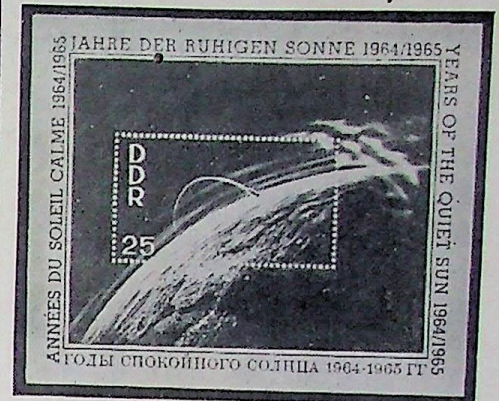
ज. ज. ग. के
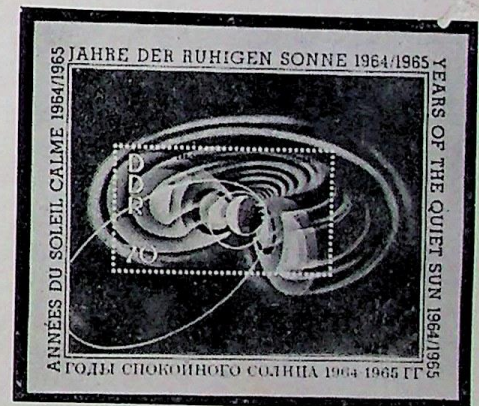
डाक टिकट

सुबह के भूले भटके... अब घर लौट रहे हैं

| यूरगेन बर्ग

बर्लिन के निकट 'ब्लानकेनफेल्डे' ग्राम में स्थित एक शरणार्थी स्वागत केन्द्र की एक बैरक के एक साधारण से कमरे में, मैं श्री तथा श्रीमती नीमाण्ड से बातें कर रहा हूं। खिड़की के बाहर खिले हुए फूलों की क्यारियां और पिछवाड़े में चहकता चकोर, इस तथ्य को छुपा नहीं सकते कि यह नये जीवन के लक्ष्य को पाने के पथ का केवल एक पड़ाव मात्र है। पश्चिमी जर्मनी तथा पश्चिमी बर्लिन से जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण लेने वाले शरणार्थी यहां ठहरते तो हैं पर केवल कुछ ही समय के लिए। बहुत से कमरों में कुछ और बिस्तरे लगाने पड़े क्योंकि ज. ज. ग. में बसने की इच्छा रखने वालों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती ही चली जा रही है।

१३ अगस्त, १९६१ में जर्मन जनवादी गणतंत्र की पश्चिम बर्लिन से सटी हुई सीमा भी सुरक्षित की गई, पर तब से ७०,००० शरणार्थियों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र में बसने के लिए प्रार्थना-पत्र भेजे हैं। मौत की आशंका, मकानों की ज़बरदस्त कमी अफ़सरों की मनमानियां, यही वे बुनियादी कारण हैं जो लाखों लोगों को फेडरल जर्मन रिपब्लिक (पं. जर्मनी) छोड़ने पर मजबूर करते हैं। इन लोगों में ऐसे व्यक्तियों की बहुतायत भी है जिन्होंने एक बार जर्मन जनवादी गणतंत्र को छोड़ा था और जो अब पश्चिमी जर्मनी तथा पश्चिमी बर्लिन का निराशाजनक वातावरण देख कर वापस जर्मन जनवादी गणतंत्र आना चाहते हैं।

श्री तथा श्रीमती नीमाण्ड ऐसे ही लोगों में हैं। हेल्मूट तथा एडिलगार्ड नीमाण्ड पश्चिमी जर्मनी के रेडियो तथा टेलिवीजन के कुप्रचार का शिकार हुए थे। उनकी बातों को उन्होंने सत्य समझा था। ज.ज.ग. से प० बर्लिन में शरणार्थियों के तथाकथित स्वागत केन्द्र में लाने के बाद उन्हें, किसी प्रकार से पश्चिमी जर्मनी के साउरलैन्ड प्रान्त के 'लिखट्रिन्ग हाउज़न' नामक गांव में भेज दिया गया था। वहां उन के साथ अजनबियों का सा व्यवहार किया जाने लगा। श्री नीमाण्ड के शब्दों में "केवल हम ही प्रोटेस्टेन्ट थे उस गांव में, और हमारे साथ वहां अछूतों का सा व्यवहार किया जाता था"। इस दुर्व्यवहार का केवल एक ही कारण था कि नीमाण्ड परिवार दूसरे धर्म के मानने वाले थे।

परन्तु उन्हें ज. ज. ग. वापस लाने का धार्मिक भेदभाव ही मात्र कारण नहीं था। वहां की बढ़ती हुई मंहगाई, विशेषकर बढ़ते हुये किराये तथा खाद्य पदार्थों के बढ़ते हुए दामों ने भी उनके इन निश्चय को और दृढ़ किया। वीज़बाडेन में स्थित आंकड़ों के फेडरल दफ्तर ने कीमतों की एक सूची छाप दी है जिसमें पश्चिमी जर्मनी तथा पश्चिम बर्लिन में १९६२ से जुलाई, १९६४ तक मंहगाई में १०५.७ प्रतिशत वृद्धि बतायी गई है। किरायों में ११२.४ प्रतिशत तथा खाद्य पदार्थों की कीमतों में १०५.८ प्रतिशत वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त कपड़ों, जूतों, बिजली, गैस आदि की कीमतें भी बहुत बढ़ गई हैं। १९४९ में फेडरल जर्मन गणराज्य की स्थापना से लेकर सन् १९६३ तक चार व्यक्तियों वाले एक परिवार का ख़र्चा ३०४.४ प्रतिशत बढ़ गया है। कीमतों में बढ़ौती के ये आंकड़े 'पश्चिम जर्मनी औद्योगिक संस्थान्' ने छापे हैं।

नीमाण्ड परिवार को ज. ज. ग. की वह सामाजिक सुरक्षा याद आयी जिसे उसने बिना सोचे-समझे कई वर्ष पहले छोड़ दिया था ज. ज. ग. छोड़कर। अब यह परिवार

वापस अपने घर लौट आया है। अब वे तीन व्यक्ति हैं क्योंकि अब उनका एक बालक भी है। "हमारे लिये पश्चिमी जर्मनी में बिताये हुये चार वर्ष एक चेतावनी है जिसे हम कभी नहीं भूल सकते", श्रीमती नीमाण्ड ने मुझ से कहा।

मैं केवल नीमाण्ड परिवार की ही बात नहीं करना चाहता। मैं नवम्बर के प्रारम्भ में, एक पुरानी तथा जानी मानी फर्म 'बर्थ के. जी.' देखने गया। यह संस्था, व्यापार के श्रेष्ठ नगर लाइपज़िक में स्थित है, और यहां संश्लिष्ट सांचे बनाये जाते हैं। इस फर्म के एक मालिक हैं कार्ल बर्थ जिसके सारे बाल पक गये हैं और जो क़रीब ५६ वर्ष की आयु के हैं। श्री बर्थ ने कुछ वर्ष पूर्व इसी प्रकार जर्मन जनवादी गणतंत्र को छोड़ दिया था। उनके कानों में यह गलत अफ़वाह पड़ी थी कि अब निजी तौर पर कारखाने चलाने वालों को मिलने वाले कच्चे माल में कटौती की जायेगी। यह सुनते ही श्री बर्थ ने जल्दी से अपने ६० कर्मचारियों, अपने कारखाने और अपने जन्मस्थान को छोड़ दिया। उन्होंने सोचा था कि पश्चिमी जर्मनी में वह अपना नया जीवन गढ़ सकते हैं। "पर वहां तो हर एक पड़ोसी एक दूसरे का शत्रु है। व्यापार में बेईमानी तथा छलकपट करना तो एक साधारण सी बात है, वहां और लोग एक दूसरे के प्रति कोई सहानभूति नहीं रखते। वे एक दूसरे को छलते हैं गला काट होड़ में। निर्बल को कुचल ही दिया जाता है। वहां एक ही वस्तु की मान्यता है; और वह है पैसा।—" फिर भी श्री बर्थ ने वहां काम पा ही लिया। उन्हें वहां हेड-क्लर्क की नौकरी मिली, पैसे भी अच्छे मिले, और वह अपने परिवार समेत एक अच्छे से घर में रहने लगे। लेकिन मकान का कियारा लाइपज़िक के मकान से दुगुना था। खैर वह माथे पर बल लाये बिना निर्वाह करने लगे। लेकिन नये वातावरण में वे संतुष्ट न थे हो सके। हृदयहीन लोगों तथा उस जीवन को देखकर जहां केवल पैसा ही सब कुछ है,

राटेनजन से ज. ज. ग. में आया हुआ एक शरणार्थी परिवार

वह दुखित हुये, और यह दुःख उनको कुरेदता ही रहा। यहां तक कि केवल दो ही वर्ष बाद वह पुनः लाइपज़िक वापस लौटे। श्री बार्थ को अपना कारखाना लौटा दिया गया, जिसकी देखरेख उनकी अनुपस्थिति में सरकारी तौर पर की जाती थी।

उल्लिखित दो व्यक्ति मैंने उन हजारों सुबह के भूलों में से चुने हैं जो अपने घर अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र वापस लौट रहे हैं। हज़ारों की संख्या में लोग जर्मन जर्मन जनवादी गणतंत्र में क्यों आना चाहते हैं—इसके बहुत से कारण हैं।

सितम्बर १९६४ के आरम्भ में जर्मन जनवादी गणतंत्र की लोक सभा (पीपुल्स चैम्बर) ने राज्य परिषद् द्वारा पेश किये गये इस प्रस्ताव को स्वीकार किया, कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के वे सभी नागरिक जो पहले ज. ज. ग. से चले गये हैं किसी भी समय वापस आकर जर्मन जनवादी गणतंत्र में फिर बस सकते हैं। ग़ैर क़ानूनी तौर पर भागे हुये उन व्यक्तियों को कोई दंड नहीं दिया जायेगा जिन्होंने १३ अगस्त १९६१ से पहले ज. ज. ग. को छोड़ दिया था, अर्थात् उस समय से पहले जब कि बर्लिन की सीमा को सुप्रसिद्ध 'दीवार' द्वारा सुरक्षित नहीं किया गया था।

पश्चिमी जर्मनी के झूठे प्रचार तथा मनगढंत कहानियों के बाद भी लोग सत्य को पहचान रहे हैं। बहुत से ऐसे लोग जो वापस घर लौटने की सोच ही रहे थे, अब पूरा निर्णय कर चुके हैं। यही कारण है कि बर्लिन- ब्लान्केफेल्डे का स्वमगत केन्द्र और इसी तरह के दूसरे केन्द्र आजकल, सुबह के भूले हुये और अब कई शामों के बाद घर लौट रहे लोगों की भीड़ से खचाखच भरे रहते हैं!...

पश्चिमी जर्मनी के साथ लगी हुई ज. ज. ग. की सीमा के निकट 'बारबी' नामक स्थान में शरणार्थियों का एक तात्कालिक आवास

'संयुक्त राष्ट्र संघ की भारतीय संस्था' की प्रधान, श्रीमती राजनवती नेहरू, प्रो० स्टाइनिगर का स्वागत कर रही हैं

संयुक्त राष्ट्र संघ की जर्मन लीग

हाल ही में, नई दिल्ली में आयोजित संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्थाओं के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की संस्था 'संयुक्त राष्ट्र संघ की जर्मन लीग' के दो प्रतिनिधि, प्रोफेसर स्टाइनिगर ('लीग' के प्रधान) और श्रीमती फेलिसिटास रिखटर ('लीग' की महामंत्री) भाग लेने आये थे। प्रोफेसर स्टाइनिगर अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के सुप्रसिद्ध विद्वान् हैं और इन्होंने 'इण्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर' के निमन्त्रण पर वहां "जर्मनी की प्रमुख समस्या: सैनिक तटस्थता" के विषय पर एक सारगर्भित भाषण दिया।

ज. ज. ग. का हिन्दी टाइप-रायटर

भारत स्थित, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्ट बोट्टगर, और 'गोदरिज एण्ड बोयसे, कम्पनी' के प्रतिनिधि, श्री गोदरिज ने मिल कर, हाल ही में, भारत के स्वराष्ट्र मंत्री, श्री गुलज़ारी लाल नन्दा को, ज. ज. ग. में बना एक हिन्दी टाइप-रायट भेंट किया। जल्द ही भारत में भी इस हिन्दी टाइप-रायटर का उत्पादन शुरू होगा। इसके लिये भारत की 'गोदरेज एण्ड बोयसे, कम्पनी' और ज. ज. ग. की एक फर्म में सहयोग की क़रार हो चुकी है।

भारत—ज. ज. ग.

निर्माण के सहयोगी

बर्लिन में 'भारत: आज और कल' प्रदर्शनी

स्वर्गीय, पं० जवाहरलाल नेहरू की ७५वीं वर्षगांठ के अवसर पर, ज.ज.ग. की राजधानी बर्लिन में "भारत: आज, और कल" नामक फोटो-प्रदर्शनी आयोजित हुई थी। नीचे का चित्र प्रदर्शनी में लगे हुये एक बहुत बड़े चित्र का फोटो है।

तीसरा अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह

भारत की राजधानी में आयोजित तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में आये हुये जर्मन जनवादी गणतन्त्र के फिल्म-कलाकारों के सम्मान में, ज. ज. ग. के व्यापार-दूत, श्री कूर्ट बोट्टगर ने, एक काकटेल पार्टी का आयोजन किया। इसमें २०० से अधिक मेहमान शरीक हुये। चित्र में, ज. ज. ग. फिल्म-प्रतिनिधिमण्डल के नेता, वहां के लोकप्रिय अभिनेता श्री आरमिन म्यूल्लर-स्टाल (दायें कोने पर), और भारत के लोकप्रिय एक्टर राजकपूर (बायें से दूसरे) भी देखे जा सकते हैं। उक्त अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में ज. ज. ग. ने "प्यारा सफेद चूहा" एक प्रहसन-फिल्म प्रतियोगिता के लिये भजी थी। इसके अतिरिक्त "भेडियों के घेरे में" (नेकेड अमंग वूल्व्ज़) नामक चित्र भी समारोह में दिखाया गया (यह प्रतियोगिता के लिये नहीं था)

धनुषकोटि के पीड़ितों के लिये ज. ज. ग. के रेडक्रास की सहायता

दक्षिण भारत में तूफान से धनुषकोटि के संहार की दुखभरी कहानी ज्यों ही जर्मन जनवादी गणतंत्र के अख़बारों में छपी, त्योंही वहां के दो प्रमुख संगठनों—रेडक्रास और 'फ्री जर्मन ट्रेड यूनियनों' ने, पीड़ितों के लिये १ लाख, १५ हज़ार रूपये की दवाइयां कम्बल तथा कपड़े इत्यादि भेज दिये।

१५ जनवरी, १९६५ के दिन ज. ज. ग. के व्यापार-दूत, श्री कूर्ट बोट्टगर ने उक्त वस्तुऐं भारत की स्वास्थ्य मंत्री, डा० सुशीला नय्यर को पेश किये धनुषकोटि के पीड़ितों में बांटने के लिए।

ज. ज. ग. का व्यापारिक नौपरिवहन
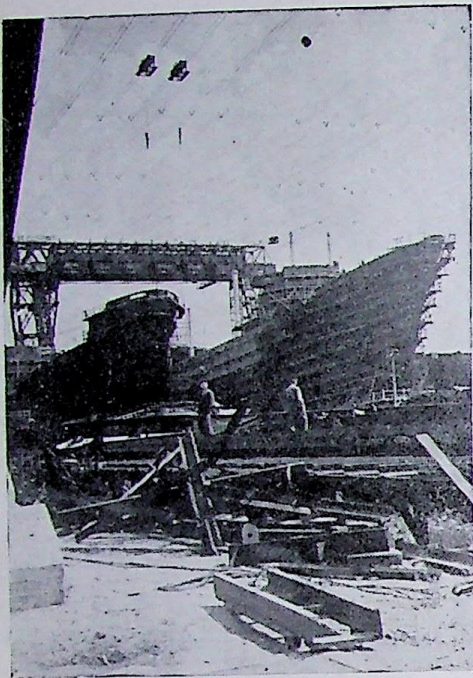
वारनो के पोत-निर्माण कारखाने का एक आंशिक दृश्य

जर्मन जनवादी गणतंत्र के अपने जहाज़ों और बंदरगाहों द्वारा, समुद्री परिवहन की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, जर्मन जनवादी गणतंत्र के अस्तित्व में आने के बाद ही एक राष्ट्रीय व्यापारी बेड़ा आरम्भ कर दिया गया । **दुइत्शे सीरीदराइ** नामक राष्ट्रीय नौपरिवहन फर्म की स्थापना रोस्टाक के पुराने हैंसियटिक नगर में १ जुलाई १९५२ को हुई । इस नई व्यापारी बेड़े के विकास तथा बढ़ते हुए महत्व की तुलना जर्मन जनवादी गणतंत्र की किसी भी अन्य औद्योगिक शाखा से नहीं की जा सकती । इस नौपरिवहन फर्म का पहला जहाज़ एक पुराना १,२५० टन का स्टीमर था । इस स्टीमर का निर्माण १९०३ में हुआ था और यह उस समय बाल्टिक क्षेत्र में माल-वाहन का काम करता था । दो वर्ष पश्चात, दो नये स्टीमर 'रोस्टोक' तथा 'विज़मार' भी चलने लगे और इन जहाज़ों ने पहली बार लेवां तथा मिश्र देश की यात्रा की । तत्पश्चात १६ तटवर्ती मोटर पोतों का एक नवनिर्मित बेड़ा भी चलने लगा जो आजकल बाल्टिक तथा उत्तर सागर में परिचालित है ।

व्यापार नौपरिवहन का वास्तविक विकास सन् १९५८ में आरम्भ हुआ । समुद्री फर्म के अनुवर्ती तथा विधिपूर्वक विस्तार के परिणाम स्वरूप १०,००० टन वाले नवीन भारवाहक जहाज़ यातायात में कार्य करने लगे । इन का निर्माण वार्नो के पोत-निर्माण कारखानों में हुआ था । सन् १९६१ तक इस प्रकार के १२ आधुनिक जहाज़ काम पर लगाये जा चुके थे । ये पोत, उक्त राष्ट्रीय व्यापारी बेड़े का आधार थे । परन्तु इस वृद्धि के बावजूद बढ़ती हुई टन भार वाहन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रस्तुत जलयान पर्याप्त नहीं थे । इसलिए नौपरिवहन फर्म ने अन्तर्राष्ट्रीय मंडी से पुराने भारवाहक जहाज़ खरीदे और अपने झंडे लगाकर चलाने लगी । इस प्रकार १९५८ से १९६२ तक के चार वर्षों में ही ज. ज. ग. का समुद्र पार यातायात चार महाद्वीपों के साथ होने लगा ।

अपनी १० वीं वर्षगांठ के समय तक जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार बेड़े के ६९ पोत काम करने लगे थे, जिनका कुल टन भार ३,०,००० था ।

दो वर्ष पश्चात सितम्बर, १९६४ तक कुल ६४४,१६० टन भार नौपरिवहन की क्षमता रखने वाले १०६ जलयान संसार के सभी सागरों के समुद्री मार्गों पर चलने लगे हैं । ये जलयान ८० देशों के लगभग ४०० बन्दरगाहों पर आते-जाते हैं । जर्मन जनवादी गणतंत्र का समुद्री यातायात हालैण्ड, बेल्जियम, इंग्लैण्ड, नार्वे, उत्तर भूमध्य-सागर, पूर्वी अफ्रीका, भारत तथा

सुदूर लातीनी अमरीका की एक बन्दरगाह ब्यूनोस एयर्स में ज. ज. ग. की नौ-परिवहन कम्पनी का 'फ्रेउण्डशाफ्ट' नामक जहाज़

क्यूबा आदि देशों के साथ है। सोवियत संघ फिनलैण्ड, संयुक्त अरब गणराज्य तथा पश्चिमी अफ्रीका के साथ समुद्री परविहन संयुक्त नौपरिवहन सेवाओं की देख रेख के अंतर्गत होता है।

आज "दुत्शे सीरीदराइ" सम्पूर्ण जर्मनी में सबसे बड़ी नौ-परिवहन संस्था है। इसने हापाग, उत्तर जर्मनी लॉयड्, दक्षिण हुम्बर्ग तथा हन्सा जैसी प्रारम्परिक नौपरिवहन संस्थाओं को बहुत पीछे छोड़ दिया है। हमारे व्यापारी बेड़े में हर प्रकार के पोत सम्मिलित हैं। आज कल आधुनिक ड्राई फ्रेटर, भारी माल-वहाक पोत, तेलपोत, फलों के जहाज तथा दो यात्री जलयान 'दुत्शे सीरिदेराइ' द्वारा परिचालित हैं।

सन् १९६३ में हमारे भारवाहक जहाज ४६ लाख टन माल अन्य देशों को ले गये। इसी समय में रोस्टाक की नई बन्दरगाह से ५० लाख टन से अधिक माल बाहर भेजा गया। सन् १९६४ के पहले छः महीनों में, इस बन्दरगाह द्वारा ३५ लाख टन माल ढोया गया है।

ज. ज. ग. के व्यापार बेड़े के विकास का पोत निर्माण कारखानों तथा बन्दरगाहों के विस्तार से गहरा सम्बन्ध है। विज़्मार, रोस्टाक तथा स्ट्रालजुण्ड की बन्दरगाहें माल लेने तथा लाने के अपने मुख्य कार्य में शीघ्र ही अपर्याप्त सिद्ध होने लगीं। इसलिए इनका विस्तार तथा आधुनिकीकरण आवश्यक हो गया। इसी प्रकार वार्नों में, वार्नेमुण्डे के सामने एक पूर्णतया नवीन बन्दरगाह का अत्यंत थोड़े समय में निर्माण कर लिया गया। अब भी इसका लगातार विस्तार किया जा रहा है। इसका घाट आज लम्बाई में चार किलोमीटर है और यह योरूप की अत्यन्त व्यस्त बन्दरगाहों में मानी जाती है।

ज. ज. ग. के पोत निर्माण कारखाने बड़े से बड़े जहाज़ों का निर्माण कर रहे हैं। विज़मार में माट्टियास टेजन पोत-प्रांगण में जर्मन जनवादी गणतंत्र द्वारा बनाया गया सबसे बड़ा जहाज़ तैयार किया जा रहा है। यह एक १६,००० टन भार वाला यात्रीपोत है जो निर्यात किया जायेगा।

अटलांटिक महासागर में, तूफान में घिरा हुआ 'बर्लिन' नामक जहाज़

हमारे गणतंत्र में इस विकास के साथ रोस्टाक के पुराने हैन्सियैटिक नगर ने न केवल एक बन्दरगाह तथा व्यापार प्रधान नगर के रूप में अपना पुराना महत्व पुनः प्राप्त कर लिया है, बल्कि अब संसार भर में इसकी ख्याति पहिले से अधिक फैल रही है।

ज. ज. ग. की विज़मार बन्दरगाह में 'थ्योडोर कोयेरनर' नामक ट्रेनिंग-पोत
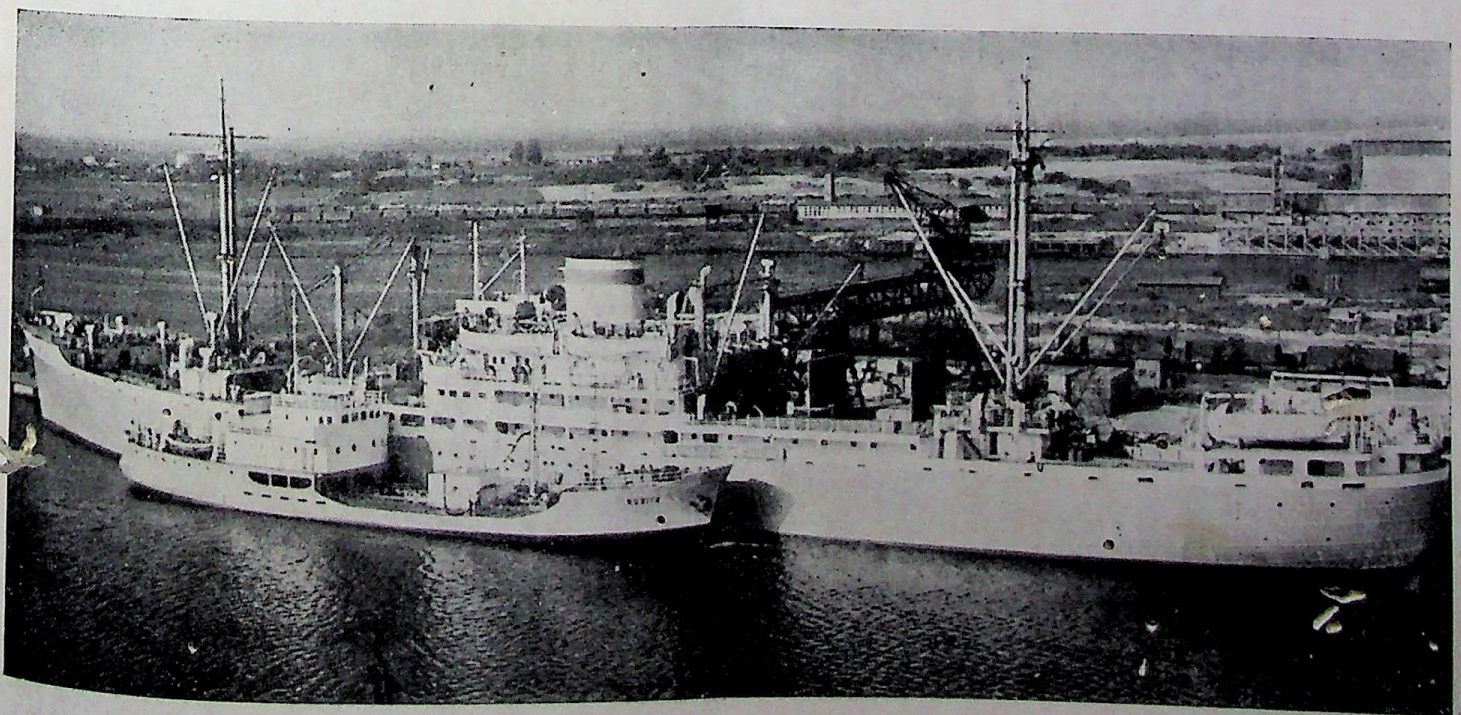
सेवन सीज़ प्रकाशन

एक आर्दश की पूर्ति

जर्मन जनवादी गणतंत्र में अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होने वाली **सेवन सीज पुस्तकों** की कहानी एक साहित्यिक प्रायोजना की कहानी है । इस प्रायोजना का आरम्भ एक महान उद्देश्य को सामने रख कर किया गया था । कई उत्साह भंग करने वाली कठिनाइयां रास्ते में आयीं, फिर भी उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघर्ष जारी रहा । आज 'सेवन सीज़' पुस्तकों की सफलता स्थापित हो चुकी है और सर्वत्र इनकी प्रशंसा हो रही है ।

'सेवन सीज़' पुस्तकों का आगमन उस समय हुआ जब संसार में ८० लाख कागज़ी जिल्दों वाली पुस्तकों की बाढ़ सी आई हुई थी । ये पुस्तकें निरर्थक वार्ताओं से भरी होती थीं । इन का विषय रहता था अपराध, रहस्य, कामोत्तेजना, युद्ध तथा जाति-घृणा । इनकी छपाई सस्ते कागज़ पर होती थी और आवरण भी अत्यंत अप्राकृतिक तथा अश्लील होते थे ।

ऐसे विभाजित तथा दूषित साहित्यिक वातावरण में, ऐसी पुस्तकें निकालने के लिये जो वास्तविक साहित्य हो तथा सामान्य ग्राहक की क्रय शक्ति के अन्दर हों, असाधारण साहस की आवश्यकता थी । 'सेवन सीज़' प्रकाशन की पुस्तकें ऐसी ही पुस्तकें थीं । ज.ज.ग. के इस अंग्रेजी भाषा प्रकाशन-घर का तिहरा लक्ष्य था : उच्चकोटि के आधुनिक उपन्यासों तथा अन्य साहित्य का प्रकाशन, ब्रिटिश तथा अमरीकी साहित्य की क्लासकी रचनायें छापना, और ज. जं. ग. के चुने हुए आधुनिक लेखकों की रचनाओं का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करना ।

साहित्यिक क्षेत्रों में कागजी जिल्द वाली पुस्तकों की अप्रियता के बावजूद 'सेवन सीज़' पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ कर दिया गया । प्रायोजना के रास्ते में कई अड़चनें थीं । सन् '५० के व्यापार-प्रतिबंध भी आड़े आये । इन प्रतिबन्धों के कारण महत्वपूर्ण मंडियां पहुंच से बाहर हो गयीं । इन प्रतिबन्धों ने उन वर्षों में व्यापार को बहुत क्षति पहुंचाई । लेकिन जोंही ये प्रतिबन्ध हटे 'सेवन सीज़' पुस्तकें प्रत्येक महाद्वीप में बिकने लगीं । . . . और आज हर उस देश में जहां बोल-चाल की अथवा सहायक भाषा अंग्रेज़ी है, 'सेवन सीज़' प्रकाशनों पर प्रशंसात्मक टिप्पणियां तथा समालोचनायें लिखी जा रहीं हैं और वे काफी लोकप्रिय हो रही हैं ।

'सेवन सीज़ प्रकाशनगृह' पाठकों को उच्च कोटि के उपन्यास, जीवनियां, आत्मकथायें, यात्रा-संस्मरण तथा कहानी संग्रह आदि उपलब्ध करता है । **हाकोन शेवेले** के विवादास्पद उपन्यास "दी मैन हू वुड बी गॉड" का मुख्य विषय है युद्ध तथा शांति और परमाणु-बम । "दी डीस्सेंट" **गिना बेरियाल** का अत्यंत प्रशंसित उपन्यास है जिसका विषय है अमरीकी जनता का शीत-युद्ध उत्पादित भय । दूसरे महा-युद्ध से सम्बन्धित **स्टेफन हेम** का सुप्रसिद्ध उपन्यास "दी क्रूसेडर्स" है । यह उपन्यास आज संसार की बारह भाषाओं में हाथों हाथ बिक रहा है । इसका अंग्रेज़ी भाषा संस्करण प्रथम बार केवल 'सेवन सीज़' ने ही छापा है ।

दक्षिण अफ्रीका के घृणित नसलवाद का चित्रण 'सेवन सीज़' की पुस्तकों में मिलता है । जैसे **हैरी ब्लूम** का "ट्रांसवाल एपिसोड," **एजेकील मालेले** का "डाउन सैकंड एवेन्यू" और **रालैक्स ला गूमा** का नया अनुपम उपन्यास, "ऐण्ड ए थ्रीफोल्ड कॉर्ड ।"

सेवन सीज़ प्रकाशन

अमरीका में गोरे काले का भेदभाव 'सेवन सीज़' प्रकाशनों की कुछ पुस्तकों का विषय है। इस प्रकार की पुस्तकें अन्य किसी प्रकाशन की सूची में देखने को नहीं मिल सकतीं। इनमें उल्लेखनीय हैं : स्व. डा. **डब्ल्यू. ई. बी. डू बोयस** द्वारा 'सेवन सीज़' के लिए संपादित पुस्तक "एन ए. बी. सी. ऑफ कलर", दास विद्रोह सम्बन्धी **अर्ना बोनटेम्पस** का उपन्यास, "ब्लैक थण्डर" और नीग्रो लोगों के १९६९ से १८६५ तक के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास "एण्ड वाई नाट एवरी मैन"।

जनता और जीवन के विषय पर लिखे गए इस प्रकाशनगृह के आधुनिक उपन्यास जो अत्यंत लोकप्रिय हुए हैं, वे हैं : पुरस्कार विजेता कवि उपन्यासकार **डोरोथी हैवेट** का लिखा, "अर्व वोबिन", ब्रिटिश युवा-वर्ग सम्बन्धी **मर्गोट हाइनेनन** अत्यंत प्रशंसित उपन्यास, "दी एडवेंचुरर्स," **एलैग्ज़ाण्डर सैक्सन** का अमरीका सम्बन्धी उपन्यास "ब्राईट वैव इन दी डार्कनेस" और **मेना काल्थोप** का प्रथम महान आस्ट्रेलियन उपन्यास "दी डाइ हाउस"।

कुछ व्यंग-प्रधान उपन्यास तथा नाटक भी प्रकाशित किये गये हैं जो अल्प संख्यक तथा आदिम जातियों की समस्याओं का चित्रण करते हैं।। इनमें उल्लेखनीय जातियां हैं : कैनेडा में एस्कीमो तथा आस्ट्रेलिया की आदिम जाति और न्यूयार्क में प्युर्टो रीकी जाति। इसके अतिरिक्त भारत, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका की कहानियां, इंग्लैण्ड के महान लेखकों की रचनायें, संसार के सातों सागरों से सम्बन्धित कथायें और जर्मन जनवादी गणतंत्र में वर्तमान जीवन के चित्रण इत्यादि जैसी 'सेवन सीज़' की कागज़ी जिल्द वाली पुस्तकों ने साहित्य को सम्पन्न बना दिया है।

अंग्रेजी के पाठकों के लिए कई आधुनिक जर्मन लेखकों की रचनाओं के अनुवाद 'सेवन सीज़' ने छाप दिये हैं। इन लेखकों में **एन्ना सेघर्स, स्टेफान हर्मलिन, एफ. सी. वीस्कोफ, बोडो ऊसे** तथा **एरनाल्ड स्वाइग** इत्यादि सम्मिलित हैं। ये अनुवाद देश के कुछ सफल युवा लेखकों का परिचय भी देते हैं।

'सेवन सीज़ प्रकाशन' की पूरी सूची तथा अन्य जानकारी प्राप्त करने का पता:
Seven Seas Publishers, Berlin West–8, Glinkatrasse 13-15
German Democratic Republic
अथवा : पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली।

व्यक्तित्व की झांकी

लोकप्रिय जर्मन महिला खिलाड़ी

इन्ग्रिड एन्जेले-क्रायमर

१९५५

ड्रेस्डन में दो व्यक्ति आपस में बातचीत कर रहे हैं। यह बातचीत बाद में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। ये दो व्यक्ति हैं— ड्रेस्डन की, 'यूनिटी' नामक खेलकूद क्लब के गोता प्रशिक्षक, श्री राइन कूर्नट तथा ड्रेस्डन के एक उद्यम के निदेशक श्री क्रायमर। इनकी बातचीत का विषय यह है कि श्री क्रायमर की फैक्ट्री, राइनहार्ड कूर्नट द्वारा रूपांकित एक गोता योजना की पूर्ति में कहां तक सहायक सिद्ध हो सकती है।

श्री क्रायमर प्रत्येक संभव सहायता का विश्वास दिलाते हैं। अपनी बेटी का ध्यान आने पर वह उसे क्लब में भेजने के लिए श्री कूर्नट की अनुमति मांगते हैं। उनका विचार है कि थोड़ा व्यायाम उनकी पुत्री इंग्रिड के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

१९५६

इंग्रिड अपने पिता द्वारा किये हुये प्रबंधानुसार क्लब जाने लगती है। वह इस आयोजन के प्रति न उत्साहित है न प्रसन्न; फिर भी सप्ताह में एक बार वह क्लब के गोता प्रशिक्षण में भाग लेने लगती है। उद्देश्य केवल 'तनिक व्यायाम' है।

प्रशिक्षक कूर्नट गोताखोरी के प्रति कुमारी क्रायमर के विचारों से भली भांति परिचित हैं। बल्कि वह कभी-कभी सोचते हैं कि इंग्रिड इस प्रशिक्षण कार्य से कितनी घृणा करती है। उसे स्प्रिंग बोर्ड अथवा हाइडाइविंग बोर्ड से कूदना बिल्कुल पसंद नहीं है।

आखिर वह दिन आ गया जब . . .

अत्यन्त लोकप्रिय जर्मन महिला खिलाड़ी इंग्रिड एंजेल-क्रायमर

१९५८

सन् १९५८ में, बुडापेस्ट में होने वाली योरूपीय गोताखोरी की प्रतियोगिता में इंग्रिड भाग लेती है। इस प्रतियोगिता में वह चौथा स्थान प्राप्त करती है। इंग्रिड के शब्दों में : "पहले पहल मैं भय के कारण मानसिक रूप से कुछ डगमगाई हुई थी। परन्तु फिर मैंने सोचा कि मैं ने योरुप के विशिष्ट खिलाड़ियों में अपना स्थान बना लिया है। इससे मुझे बहुत साहस मिला।....."

१९६०

रोम की ओलम्पिक ग्रीष्म खेलों में महान आश्चर्य : ज. ज. ग. की अज्ञात गोताखोर, इंग्रिड क्रायमर ने अमेरिका की उन लड़कियों को हरा दिया जिन्हें उस समय तक अजेय समझा जाता था। उसे दो बार गोताखोरी के लिये स्प्रिंग बोर्ड पर बुलाया गया। "जब मुझे पदक प्रस्तुत किए गये तो मैं अपने आंसू न रोक सकी। मैं समझी मैं सपना देख रही हूं—"

१९६३

दो ओलम्पिक स्वर्ण पदकोंको एक दायित्व समझा जाता है और इंग्रिड दो बार योरूपीय चैम्पियन बनी है। लाइपजिग में स्प्रिंगबोर्ड तथा हाईबोर्ड डाइविंग का नव पुरस्कार, यूरोपीय कप भी उसी ने जीता है।

ओलम्पिक स्वर्ण पदकों के साथ-साथ अनगिनत प्रशंसा-पत्र तथा विवाह सन्देश किसी भी युवती का सिर फिरा देने के लिए काफी हैं। इंग्रिड ने अपनी स्कूल शिक्षा सफलतापूर्वक समाप्त करके विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया है। विवाह के लिये इच्छुक सभी अज्ञात प्रशंसकों को उसने ठुकरा दिया है। इनमें वह व्यक्ति भी है जिसने इंग्रिड से विवाह का पूर्ण निश्चय कर रखा है और इंग्रिड के प्रति अपने को शब्द रूप में टेप रेकार्ड करवा कर भेजता रहता है। सौभाग्य ने उसका भी साथ नहीं दिया।

इंग्रिड ने अपने लिए साथी का चुनाव अपने खिलाड़ी साथियों में से ही कर लिया है। जब समाचार पत्रों ने घोषित किया कि इंग्रिड क्रायमर तथा वेट-लिफ्टर हाइन एन्जेल ने विवाह कर लिया है तो विवाह-सन्देश आने तो तुरंत रुक गए परन्तु युवा दम्पति पर शुभ-कामना पत्रों की वर्षा होने लगी है। २० वर्षीय इंग्रिड एंजेल-क्रायमर अपने पति के साथ ड्रेस्डन से रोस्टोक चली आई है। इस बाल्टिक नगर में ओलम्पिक चैम्पियन की देख रेख क्लब प्रशिक्षक मैक्स किनास्ट कर रहे हैं। यहां भी इंग्रिड ने अपना विश्वविद्यालय प्रशिक्षण जारी रखा है।

१९६४

टोकियो में इंग्रिड एंजेल-क्रायमर सबसे लोकप्रिय गोताखोर है। स्त्रियों के गोताफाइनल में वह चौथे नम्बर पर आई है। अब उसमें घबराहट के चिन्ह लुप्त हो चुके हैं। वह अपनी अमरीकन प्रतिद्वन्दी पैटसी विल्लर्ड तथा जेन्नी कोल्लियर पर अपना ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित किये हुये है। वह प्रत्येक गोते के बाद उनके समीपतर पहुंचती जाती है। उसके गोतों में एकाग्रता है और वे अनुक्रम में तेज़ होते चले जाते हैं। अन्त में वह उन से ७ प्वाइंट आगे निकल गई और स्त्रियों की गोताखोरी प्रतियोगिता में विजयी घोषित की गई है।

"अब मैं एक वर्ष के लिए विश्राम करूंगी। उसके पश्चात् मैं कुछ नये गोतों का अभ्यास करूंगी ताकि १९६८ में मैक्सिको में होने वाली ओलम्पिक खेलों में प्रत्येक संभव सफलता प्राप्त कर सकूं।"
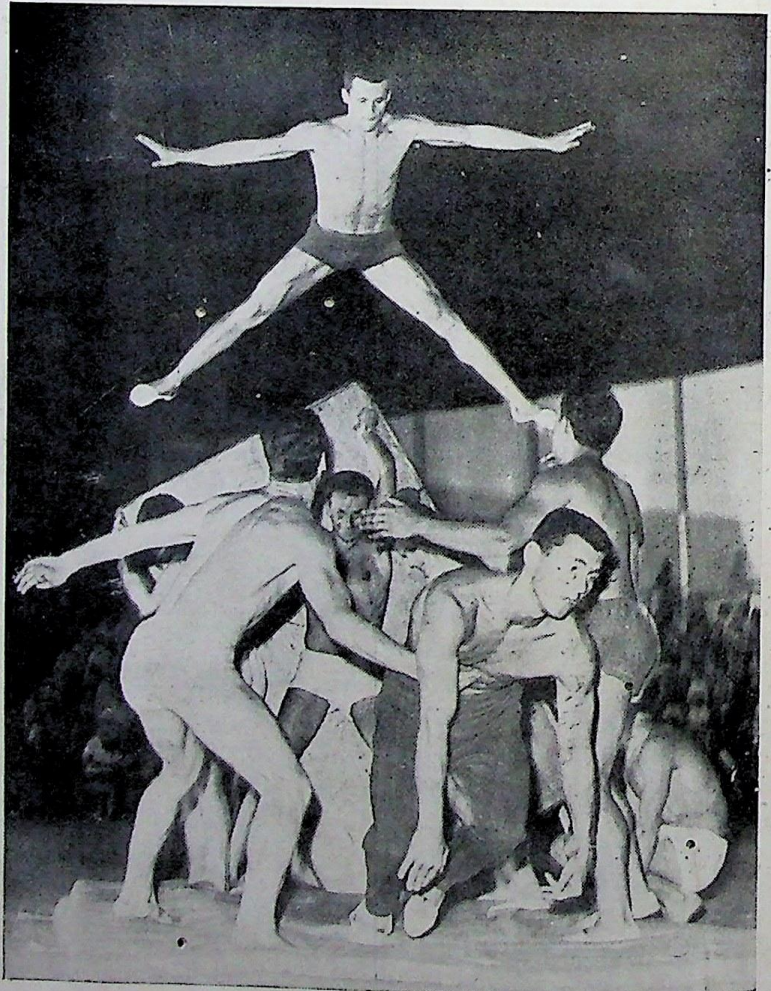
लाइपजिग के खेल कूद कालेज में, विद्यार्थीयों को व्यायाम और खिलाड़ी बनने की ट्रेनिंग दी जा रही है

1165 1965

८००वें लाइपज़िक मेले के विषय में . . .

इस महीने (फर्वरी) की अन्तिम तिथि से आरम्भ होने वाले, और ९ मार्च को ख़त्म होने वाले ८०० वें लाइपजिक व्यापार मेले के बारे में, २ फर्वरी के दिन, नई दिल्ली स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास में एक प्रेस-कानफ्रेंस का आयोजन हुआ। इस प्रेस-कान्फ्रेंस में, व्यापार दूतावास के वाणिज्य-सलाहाकार, श्री हांस लेमनित्सर द्वारा पढ़े गये एक भाषण के कुछ अंश हम नीचे उद्धृत कर रहे हैं —संपादक

लगभग २ करोड़ आबादी वाला जर्मन जनवादी गणतंत्र, जिसकी स्थापना केवल १५ साल पहले हुई, आज [illegible] के दस प्रमुख औद्योगिक राज्यों में से एक है।

गत वर्ष (१९६४) में ज. ज. ग. का कुल विदेश व्यापार २२ अरब मार्क (१ मार्क = १.१२ पैसे) तक पहुंच गया—अर्थात् सन् १९६३ से १० प्रतिशत अधिक। अनुमान है कि चालू वर्ष (१९६५) में यह व्यापार २५ अरब मार्क तक पहुंच जायेगा, और इसी वर्ष नवोदित राज्यों के साथ ज. ज. ग. का व्यापार दुगना हो जायेगा। अन्य राज्यों के साथ ज. ज. ग. की व्यवहृत् नीति के मुख्य सिद्धान्त बिलकुल स्पष्ट हैं। ये हैं: समानता, पारस्परिक लाभ और अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप न करना। इनकी ही सिद्धान्तों की बुनियाद पर ज. ज. ग. सन् १९६५ में, फ्रांस के साथ ८० प्रतिशत व्यापार बढ़ा सकेगा। इसीप्रकार बेलजियम, स्वीडन, ब्रिटेन और नार्वे के साथ भी, इस वर्ष, वस्तुओं के विनियम में काफ़ी वृद्धि होगी। इस सिलसिले में इन देशों के साथ कई करारों पर दस्तखत हुये हैं। आस्ट्रिया के साथ व्यापार में १९६५ में, १० प्रतिशत वृद्धि होगी। ये आंकड़े इस बात के सबूत हैं कि हमारी वस्तुएं तकनीकी दृष्टि से विश्व-स्तर की हैं।

यह बता देना आवश्यक है कि आनेवाले जयन्ती लाइपज़िग मेले में ७० देशों के लगभग ९,००० प्रदर्शक अपनी वस्तुएं लेकर आयेंगे। उन्होंने ३२०,००० वर्गमीटर जगह बुक की है जहां वे ६० समूहों में अपनी अपनी सर्वोत्तम वस्तुएं प्रदर्शित करेंगे। ४० प्रतिशत से अधिक प्रदर्शक अन्य देशों के होंगे, जिनके प्रदर्शन-मण्डप लगभग १०५,००० वर्ग मीटर स्थान पर फैले होंगे—अर्थात् सन् १९६४ के वसन्तकालीन मेले से १० प्रतिशत अधिक स्थान घेर लेंगे प्रदर्शन के लिये।

माली, कम्बोदिया तथा तांगानीका पहली बार इस मेले में भाग ले रहे हैं। ब्राज़िल ने अपने प्रदर्शन-स्थान को तिगुना कर दिया है। श्री लंका, जापान और संयुक्त अरब गणराज्य ने भी प्रदर्शन क्षेत्र को काफी बढ़ा दिया है।

लाइपज़िग के इस ८०० वें मेले में १५ देशों के ग्राहक तथा दर्शक आ रहे हैं। अनेक देश अपने सरकारी, संसदीय और बड़े बड़े प्रतिनिधि मण्डल इस अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यापार मेले में भाग लेने के लिये भेज रहे हैं। सोवियत संघ के प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व, स्वयं वहां के प्रधान मंत्री कोसिगिन करेंगे। जर्मन जनवादी गणतंत्र अपनी सर्वोत्तम वस्तुएं लेकर मेले में भाग ले रहा है।

बम्बई में, लाइपज़िग मेले से सम्बन्धित एक प्रेस कान्फ्रेंस

लाइपज़िग मेले में भारत

लाइपज़िग के उक्त जयन्ती मेले में भारत, समुद्र पार देशों में एक बार फिर, सब से बड़ा प्रदर्शक होगा। पिछले वर्ष के लाइपज़िक मेले में भारत का प्रदर्शन-स्थान १३,०० वर्ग मीटर था; लेकिन [illegible] साल जयन्ती मेले की अहमियत को देखते हुए भारत ने अपने प्रदर्शन क्षेत्र में ३० प्रतिशत की वृद्धि की है। पिछले वर्ष के बसन्तकालीन लाइपज़िग मेले में भारत की व्यापार फर्मों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की विदेश व्यापार संस्थाओं से ७ करोड़ रुपये की रक़म के आयात-निर्यात करार किये।

आइये... लाइपज़िग मेले में पधारिये...

ज. ज. ग. की विदेश-व्यापार संस्थायें रैडियेटर, फिटिंग औज़ार, खेलकूद सामान तथा अन्य औद्योगिक वस्तुएं निर्यात करने वाली भारतीय फर्मों के साथ व्यापार बढ़ाने के सिसिले में विशेष प्रयत्न कर रही हैं। इस प्रकार, जर्मन जनवादी गणतंत्र भारत, के विकासशील उद्योगों के उत्पादनों के आयात को अधिक से अधिक बढ़ाना चाहता है।

प्रवेश-पत्र संधि...

(पृष्ठ ६ का शेष)

जटिल समस्यायें बातचीत के द्वारा हल की जा सकती हैं। इसके साथ ही यह संधि, जर्मन जनवादी गणतंत्र की समझदार और सद्भावनापूर्ण नीति की सफलता को भी प्रकट करती है।

बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि, बातचीत को आगे बढ़ाने के लिये एक दृढ़ आधार प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त, यह संधि सम्पूर्ण जर्मनी को प्रभावित करने वाली समस्याओं को हल करने के लिये एक आदर्श बन सकती है। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और विश्व-शांति के हित को ध्यान में रखते हुये, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने दो जर्मन राज्यों के आपसी रिश्तों को सामान्य बनाने के सिलिले में आज तक कई सुझाव पेश किये हैं। लेकिन पश्चिमी जर्मनी ने हमेशा इनको टाल दिया। इसके बावजूद यह एक सचाई है कि सुझाव तथा प्रस्ताव समस्त शांति-प्रिय लोगों के हितानुकूल हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बर्लिन प्रवेश-प्रत्र संधि बातचीत को चालू रखने का एक अच्छा आधार है।

चिट्ठी-पत्री

महाशय,

सविनय निवेदन यह है कि बारा जिल्ले के प्रधान नगर, कलैया में एक नये "गांधी पुस्तकालय" की स्थापना की गई है। इस पुस्तकालय में अन्य कई दूतावासों से पुस्तकें एवं पत्रिकाएं आती रहती हैं। साथ ही आपके देश की आर्थिक प्रगति एवं उद्योगों का विकास, संस्कृति सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने के लिए पुस्तकों उपन्यासों एवं पत्रिकायों की आवश्यकता है। इस पुस्तकालय में मैट्रिक, आई ए., बी. ए. आदि सभी स्तर के लोग सदस्य हैं। इस पुस्तकालय की सदस्य संख्या ४२३ है। पुस्तकों की संख्या १५०० सौ है। इस पुस्तकालय का भविष्य अति सुन्दर है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्रीमान, **सूचना पत्रिका** तथा पुस्तकें भेजने का कष्ट करेंगे।

निवेदक
हरिशंकर चौगाई
कलैया (नेपाल)

महोदय,

मुझे आज ही 'सुमेर सार्वजनिक लायब्रेरी' में आपकी **सूचना पत्रिका** देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने पूरी 'पत्रिका' शुरू से आखिर तक पढ़ डाली, लेकिन कहीं पर भी इसके मूल्य के विषय में लिखा हुआ नहीं मिला। इसलिये मैं आपको पत्र लिख रहा हूं।

मैं आपकी 'पत्रिका' का स्थाई सदस्य बनना चाहता हूं, लेकिन आप इसका वार्षिक मूल्य लिखने की कृपा करें। यदि समय हुआ तो मैं स्थाई सदस्य बन जाऊंगा। आशा है आप इसके बारे में विस्तार पूर्वक विवरण लिख भेजेंगे।

सम्पादकजी, पढ़ने से ज्ञात हुआ कि ७अक्टूबर की पत्रिका जो कि "जर्मन स्वतंत्रता दिवस" के उपलक्ष में **विशेषांक** के रूप में प्रकाशित हुई है, सुन्दर व मनभावन है। क्या मैं इस विशेषांक की एक प्रति प्राप्त कर सकता हूं?

मैं इंजीनियरिंग का छात्र हूं। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि मैं किसी जर्मनवासी को अपना 'पत्र-मित्र' बनाऊं, और उसके साथ पत्र व्यवहार करूं। यदि आप कोई पता भेज सकें तो मैं बहुत आभारी रहूंगा।

उदयराम शर्मा
जोधपुर (राज.)

श्रीमान सम्पादकजी,

संयोगवश आज आपकी **सूचना पत्रिका** हमें 'जनहितकारिणी समिति' ममरखा के कार्यालय में मिली। 'पत्रिका' को शुरू से आखिर तक पढ़कर सचमुच मुझे आपके देश की तरक्की के बारे में सही जानकारी हुई, जिसके सम्बन्ध में मैं अबतक कुछ नहीं जानता था। निसन्देह यह पत्रिका बड़ी उपयोगी है; मैं चाहूंगा कि इस प्रकार की और पत्रिकायें यदि आपकी ओर से प्रकाशित की जाती हो तो उस सम्बन्ध में संभव हो तो सूचित करने का कष्ट करेंगे।

अतः मैं अपनी ओर से आपका तथा सम्पूर्ण जर्मनवासियों का सादर अभिनन्दन करता हूं।

आपका विश्वास्नीय

मोहनलाल सर्राफ
ममरखा (बिहार)

महोदय,

आपके विभाग द्वारा प्रकाशित **सूचना पत्रिका** कुछ दिन पूर्व मुझे किसी पुस्तकालय में देखने को मिली थी। मैं उसे पढ़ने की लालसा न रोक सका। 'पत्रिका' मुझे बहुत पसन्द आई। मैं इस पत्रिका का वार्षिक ग्राहक बनना चाहता हूं। कृपा कर इसका शुल्क बताने का कष्ट करें तथा एक नई प्रति को नमूने के लिये मेरे पते पर भेजने की कृपा करें। आशा करता हूं पत्र के मिलते ही 'पत्रिका' भेजे देंगे।

उमराव गोहाड़े
झांसी (उ. प्र.)

श्रीमान,

पहले तो आप इस बात का धन्यवाद लें कि आपकी **सूचना पत्रिका** मुझे नियमित रूप से प्राप्त होती है। इस में आपके देश का सचित्र विकास विवरण बड़े ही रोचक रूप में मिलता है। आपका जनवादी गणतंत्र अपने जन्मकाल से ही भारत का हितैषी एवं मित्र रहा है। इतना ही नहीं, भारतीय जनता के हृदय में जर्मनों के प्रति स्नेह एवं सौहार्द सर्वदा से सुरक्षित है। भारतविद् जर्मन साहित्यकारों ने भारतीय वांग्मय एवं दर्शन का दिग्दर्शन विश्व के अन्य साहित्य-[illegible]रों को कराया, जबकि भारत, ब्रिटिश साम्राज्य श्रृंखला में बन्धा था। उन पुनीत एवं ज्ञान पिपासु साहित्य शोधकों ने भारत की प्रतिष्ठा को यथास्थान प्रतिष्ठित किया। क्या भारतीय उस स्नेहसिक्त परंपरा को कभी विस्मृत कर सकते हैं? आपकी **सूचना पत्रिका** उन पुरातन अटूट संबंधों को और भी दृढ़ करती जा रही है। हमें आपकी भौतिक समृद्धि में निरंतर प्राप्त सफलताओं से हर्ष एवं प्रेरणा मिलती है। अतः मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि पुरातन स्नेह-परंपरा में आवद्ध इन दो देशों की मैत्री फौलाद की तरह दृढ़ हो।

आपके यहां से प्रकाशित अन्य साहित्य समय समय पर भिजवाने की कृपा करें।

आपका शुभचिन्तक

डा. ओमप्रकाश शर्मा
चूरू (राजस्थान)

'सूचना पत्रिका'

जो पाठक, मासिक **सूचना पत्रिका** को प्राप्त करना चाहते हों, वे **दो रुपये** वार्षिक चन्दा भेज दें। इसके बाद **पत्रिका** नियमित रूप से उनको मिलती रहेगी। चन्दे की दर इस प्रकार है :

वार्षिक : २)
अर्ध-वार्षिक : १)

समाचार

ज. ज. ग. द्वारा कांगों के मुक्ति आन्दोलन का दृढ़ समर्थन

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने, कांगो के देश-भक्तों पर बेलजियम फौज के हमले की जबरदस्त निन्दा की है। याद रहे कि यह फौज अमरीका के सैनिक हवाई जहाज़ों द्वारा बेलजियम से लाकर स्टानविल्ले में उतारी गयी थी, कांगों के मुक्ति आन्दोलन को कुचलने के लिये। जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रवक्ता ने इस घटना को नंगा साम्राज्यवादी हस्तक्षेप कहा।

प्रवक्ता के शब्दों में : "इस साम्राज्यवादी हमले का असली उद्देश्य है कांगों में उपनिवेशवाद को पुनः स्थापित करना मोयसे शोम्बे की क्रूर शासन सत्ता को जनता पर ठोस कर जो पैट्रिक लुमुम्बा और उनके साथी योद्धाओं की हत्या के लिये जिम्मेदार है।....."

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्रालय की ओर से प्रवक्ता ने साम्राज्यवादी आक्रमण तथा हस्तक्षेप की जबरदस्त निन्दा की। जर्मन जनवादी गणतंत्र ने बहुत जल्द "कांगो से तमाम विदेशी फौजों को हटाने और सैनिक हस्तक्षेप को बन्द करने की मांग की। जर्मन जनवादी गणतंत्र, कांगों की जनता के इस न्यायपूर्ण संघर्ष की हर प्रकार से सहायता करेगा।"

जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रवक्ता ने इस बात पर बल दिया कि "पश्चिमी जर्मनी के शासक भी कांगों की जनता के इस भयंकर संहार के जिम्मेदार हैं क्योंकि वे पश्चिमी जर्मनी में गोरों की भरती करने में सहायता देते तथा समर्थन करते हैं, और शोम्बे की सरकार को आर्थिक सहायता देते हैं।....."

बेलजियम तथा अमरीकी फौजों का कांगों में यह सैनिक हस्तक्षेप "न केवल कांगों के अन्दरूनी मामलों में जबरदस्ती हाथ डालना है," बल्कि यह "अफ्रीकी एकता संघ" (ओ. ए. यू.) के प्रस्तावों तथा नीतियों का उल्लंघन भी है और उनकी उपेक्षा भी।....

छः वर्षों में १०० रासायनिक कारखाने

जर्मन जनवादी गणतंत्र में सन् १९८० तक एक ज़बरदस्त रासायनिक उद्योग स्थापित करने की योजना का प्रथम सोपान पूरा किया जा चुका है। दूसरे शब्दों में पिछले छः वर्षों

पश्चिमी जर्मनी वेरवोर्ड की फासिस्ट सरकार को अधिक सहायता देगी

ए. डी. एन. नामक समाचार एजेंसी ने यह खबर दी है कि बोन (पश्चिमी जर्मनी) की सरकार, दक्षिण अफ्रीका की फासिस्ट वेरवोर्ड सरकार को हथियार और फौजी विमानों की सप्लाई तेज करेगी। इस तेजी का कारण ब्रिटेन के प्रधान मंत्री हेराल्ड विलसन की यह घोषणा है कि ब्रिटेन दक्षिण अफ्रीका को हर प्रकार के हथियारों का निर्यात करना बन्द करेगा। पश्चिमी जर्मनी द्वारा, दक्षिण अफ्रीका को सप्लाई होने वाले हथियार, दोनों देशों की सरकारों के बीच सन् १९६१ में हुई एक गुप्त संधि का परिणाम है।

इसी प्रकार पश्चिमी जर्मनी के बड़े-बड़े तेल-ट्रस्ट, दक्षिण अफ्रीका को तेल खोजने और शोधने में मदद दे रहे हैं ताकि वह अपने बम्बार जहाजों, राकेटों तथा जेट यानों के लिये स्वतंत्र रूप से ईंधन (तेल) प्राप्त कर सके।...

प. जर्मनी के सैनिक विशेषज्ञ, फासिस्ट वेरवोर्ड सरकार को शस्त्रास्त्र उद्योग–जिसमें राकेट हथियार भी शामिल हैं–विकसित करने में भी मदद कर रहे हैं।

में यहां १०० से अधिक रासायनिक कारखाने लगा दिये गये हैं ।

सन् १९५८ से, यहां के रासायनिक उद्योग में ५७ लाख मार्क की रकम लगाई जा चुकी है। सन् १९७० तक १ करोड़, ६० लाख मार्क की अतिरिक्त धनराशि इस उद्योग में लगाई जायेगी ।

ज. ज. ग. में प्रत्येक १५वां कारखाना एक रासायनिक कारखाना है । सन् १९५८ में इन कारखानों का कुल उत्पादन, ८७० करोड़ मार्क था (१ मार्क =१.१२ पैसे), जो पिछले वर्ष में बढ़कर १४०० करोड़ मार्क तक पहुंच गया । जर्मन जनवादी गणतंत्र के कुल औद्योगिक उत्पादन का १६ प्रतिशत भाग रासायनिक उत्पादन का है ।

रसायनों के प्रति-व्यक्ति उत्पादन में, अमरीका के बाद, ज. ज. ग. का दूसरा स्थान है दुनिया में । यहां के इस उद्योग में ३००,००० लोग काम करते हैं ।

लाइपज़िग मेले में २५० ब्रिटिश प्रदर्शक भाग लेंगे

लाइपजिग के ८०० वें जयन्ती व्यापार मेले में, ब्रिटेन के लगभग २५० प्रदर्शक भाग लेंगे । इस मेले में वे, अपने देश की वस्तुओं की एक सामूहिक प्रदर्शनी आयोजित करेंगे।.....मेले की समाप्ति पर, ये प्रदर्शक लाइपजिग मेला प्रशासन को सन् १७९२ का एक मूल्यवान रजत कप प्रदान करेंगे ।

सभी अन्तराष्ट्रीय मेलों के निदेशक लाइपज़िग आयेंगे

जर्मन जनवादी गणतंत्र के वसन्त- कालीन लाइपजिक व्यापार मेले की आंठवीं शताब्दी समारोह में सभी महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों के प्रतिनिधि बधाइयां देने के लिये पधारेंगे । इनमें एशिया तथा अफ्रीका के नवोदित राज्यों के प्रतिनिधियों की भी खासी संख्या होगी ।

लाइपज़िग मेला प्रशासन के महा-निदेशक, श्री कूर्ट श्मइस के निमंत्रण पर 'अन्तर्राष्ट्रीय मेलों की यूनियन' की कार्यकारिणी कमेटी की बैठक भी उक्त जयन्ती मेले के अवसर पर यहीं होगी । एक बातचीत के दौरान 'अत्तर्राष्ट्रीय मेला यूनियन' (यू. एफ. आइ.) के महा-निदेशक, श्री एम. ब्लानशे ने कहा कि . . . . "लाइपजिग व्यापार मेला सभी व्यापार मेलों की जननी है" ।

पश्चिमी जर्मनी के नाज़ी न्यायाधशी

हाल ही में जर्मन जनवादी गणतंत्र की राष्ट्रीय मोर्चा परिषद (नेशनल फ्रंट कौंसिल) ने अपनी एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ में पश्चिमी जर्मनी के १२० नाज़ी न्यायाधीशों के अपराध पूर्ण अतीत को नंगा कर दिया है। . . .

सन् १९५६ से लेकर सन् १९६२ तक ज. ज. ग. में १,११८ ऐसे नाज़ी न्यायाधीशों के नामों तथा क्रूर अपराधों को दस्तावेज़ी प्रमाण सहित, प्रकाशित किया गया है जो आज भी पश्चिमी जर्मनी में रह रहे हैं । लेकिन इनमें से एक भी न्यायाधीश को आज तक दंड नहीं दिया गया है, बल्कि उनमें से ७१४ जज ऊंचे पदों पर बिठाये गये हैं ।

उक्त दस्तावेज़ों में पश्चिमी जर्मनी में वकालत करने वाले उन अनेकानेक वकीलों की सूची भी प्रकाशित की गयी है जिन्होंने हिटलर-युग में भयंकर अपराध किये हैं । प्रमाण पेश करने वाले इन दस्तावेज़ों में, उच्चतम नाज़ी न्यायालय के एक भूतपूर्व जज डा. वोल्फगांग म्यूनस्टरमन्न का उल्लेख किया गया है जिसने पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, इटली फ्रांस, बेलजियम तथा जर्मनी के १५ नागरिकों को फांसी की सज़ा दी थी । आजकल यह नाज़ी अपराधी (डा. म्यूनस्टरमन्न) पश्चिमी जर्मनी के सेल्ले नामक शहर में खुले आम वकालत करता है ।

८००वें लाइपजिक मेले में आने वाले विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों के निदेशक इस महत्वपूर्ण अवसर का फायदा उठायेंगे और अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करेंगे ।

ज. ज. ग. में साढ़े सत्ताईस लाख टेलिविजन

जर्मन जनवादी गणतंत्र में २७ लाख, ५० हजार परिवारों के पास टेलिविजन हैं । गत वर्ष में, कुल ५००,००० टेलिविजनों की वृद्धि हुई । चालू वर्ष —अर्थात सन् १९६५ में टेलिविजन उत्पादन में, सन् १९६४ की तुलना में, १० प्रतिशत की वृद्धि होगी । जर्मन जनवादी गणतंत्र के टेलिविजनों का निर्यात (अन्य देशों को) दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में सन् १९७० तक हर पांच परिवारों में से चार परिवारों के पास टेलिविजन होगा, (ज. ज. ग. की आबादी १ करोड़, ७० लाख से कुछ अधिक है—सं.) । सन् १९६५ में यहां १६ प्रकार के टेलिविजन बाज़ार में होंगे खरीदने के लिये ।

सन् ६४ की कृषि योजना के लक्ष्य की अति-पूर्ति

जर्मन जनवादी गणतंत्र की कृषि परिषद के एक वक्तव्य में कहा गया है कि सन् १९६४ की कृषि योजना में निश्चित किये गये लक्ष्य न केवल पूरे किये गये, बल्कि उनमें से कुछ निश्चित लक्ष्य अधिक पूरे किये गये । इस सफलता के कारण हैं कृषि उत्पादन का अधिक विकास, और सहकारी खेतों का अधिक अच्छा संगठन ।

निर्धारित लक्ष्यों की अतिपूर्ति के कुछ आंकड़े ये हैं : १०.५ प्रतिशत गोश्त (११४,००० टन), १.२ प्रतिशत दूध (६०,००० टन), १५,१ प्रतिशत अण्डे (३६ करोड़ ३० लाख), और २५.९ प्रतिशत मुर्गी-पालन (१०,००० टन) ।

प. जर्मनी के १००० शरणार्थी ज.ज.ग. आये

सन् १९६४ के अन्तिम मास, यानी दिसम्बर में, पश्चिमी जर्मनी के ९४८ शरणार्थियों ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली । उन्होंने यहां के अधिकारियों से प्रार्थना की कि उनको ज. ज. ग. में रहने की अनुमति दी जाये ।

इस वर्ष के जनवरी मास के पहले कुछ ही दिनों में पश्चिमी जर्मनी के ११३ शरणागत जर्मन जनवादी गणतंत्र में आये । इनमें से ३४ कुशल मजदूर हैं ।

'हम शांति और निःशस्त्रीकरण के समर्थक हैं'

"जर्मन जनवादी गणतंत्र, हर उस प्रयत्न का समर्थन तथा स्वागत करता है जो शांति की रक्षा, पूर्ण निःशस्त्रीकरण और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिये किया जाता है" । ये उद्गार हैं जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त के, जो उन्होंने हाल ही में, बर्लिन में विश्व शांति परिषद के सम्मान में आयोजित एक स्वागत समारोह में प्रकट किये । उन्होंने विश्व शांति परिषद के प्रयत्नों को सराहा और कहा कि "इस के उद्देश्य और हमारे गणतंत्र की नीति समान है ।"

श्री उल्ब्रिख्त ने उक्त समारोह में एक बार फिर यह बात दोहराई कि जर्मन जनता तभी शांतिपूर्ण और खुशहाल जीवन बिता सकती है जब वह जर्मन सैनिकवाद को पूरी तरह खत्म करे । उन्होंने कहा : "इसलिये हमें जर्मनी में हथियारों की नहीं, बल्कि पूर्ण निःशस्त्रीकरण की आवश्यकता है ।.."

पश्चिमी जर्मनी की खतरनाक सैनिक नीति पर भी जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष ने प्रकाश डाला । इस प्रसंग में उन्होंने कहा कि पश्चिमी जर्मनी बहुपक्षी अणु सेना (मलटिलेटरल न्यूकलियर फोर्स) की आढ़ में, अणु हथियारों पर कब्जा करना चाहता है । यह नीति विश्व शांति के लिये घातक सिद्ध होगी । बहु-पक्षी अणु सेना के वजूद में आने का तात्पर्य होगा जर्मनी को हमेशा के लिये विभाजित रखना । इसलिये अच्छा तथा सही रास्ता एक ही है, और वह है दो जर्मन राज्यों के बीच सामान्य सम्बंधों की स्थापना तथा कदम-ब-कदम निःशस्त्रीकरण ।

गैस उत्पादन में वृद्धि

जर्मन जनवादी गणतंत्र के "ब्लैक पम्प" नामक गैस उत्पादक कारखाना जो यूरोप का इस तरह का सबसे बड़ा कारखाना है—हाल ही में एक दिन में १० लाख घन मीटर गैस पैदा करने में सफल हुआ । गैस का यह प्रतिदिन उत्पादन, ८३३,००० जन संख्या वाले कोट्टबुस नामक प्रान्त की तीन दिन की ज़रूरतों को पूरा कर सकेगा । सन् १९७० तक, यह गैस उत्पादक कारखाना अकेले ही जर्मन जनवादी गणतंत्र के आज के कुल गैस उत्पादन से अधिक गैस पैदा करेगा । . . . . .

हर्डेर भाषा संस्थान में ६०० नये विदेशी विद्यार्थी

सन् १९६४ के नये सत्र के लिये कार्लमार्क्स विश्वविद्यालय, लाइपजिक के "हर्डेर भाषा संस्थान" में ६०० विदेशी छात्रों को दाखिल किया गया है । एक वर्ष के पाठ्यक्रम में ये विद्यार्थी जर्मन भाषा सीख लेंगे, और उस के बाद जर्मन जनवादी गणतंत्र के विभिन्न शिक्षा संस्थानों, कालिजों आदि में वे अपने अपने विषयों का अध्ययन तथा प्रशिक्षण शुरू करेंगे ।

पिछले चन्द वर्षों में ९० देशों के लगभग ५००० विदेशी विद्यार्थियों ने उक्त संस्थान से जर्मन भाषा सीखी है और इसके बाद ट्रेनिंग आदि करके अपने देशों को लौट गये हैं ।

यह नवीनतम ऑफसेट मुद्रण यंत्र चार रंगों वाला मेला समाचार बुलेटिन छापेगा, ८००वें लाइपजिक व्यापार मेले के अवसर पर

सूचना पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

३
वर्ष १०
मार्च
१९६५

वर्ष १०
अंक ३

२० मार्च, १९६५

संकेत

मुख पृष्ठ : ज.ज.ग. के राज्य परिषद के अध्यक्ष वाल्टर उल्ब्रिख्त और संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति गमाल अब्दुल नासिर

अंतिम पृष्ठ : लाइपज़िक मेले की ८००वीं जयन्ती के अवसर पर लाइपज़िक की एक मुख्य सड़क

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और यूनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

यात्रा के परिणाम

वाल्टर उल्ब्रिख्त—संयुक्त अरब गणराज्य में

वाल्टर उल्ब्रिख्त जर्मन राज्य के पहले प्रधान हैं जिन्होंने संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति गमाल अब्दुल नासिर के निमंत्रण पर उस देश की यात्रा की है। इस सात दिन के राजकीय दौरे और जर्मन जनवादी गणतन्त्र व संयुक्त अरब गणराज्य की संयुक्त विज्ञप्ति पर हस्ताक्षरों ने जर्मन-अरब मैत्री के इतिहास में एक नये अध्याय का श्रीगणेश किया है। सात दिन तक विश्व का ध्यान काहिरा पर केन्द्रित रहा जहां आजाद मिस्र और प्रथम शान्ति प्रेमी व जनवादी जर्मन राज्य के प्रतिनिधियों की मुलाकात हुई। कहने की जरूरत नहीं कि इस राजकीय यात्रा का संयुक्त अरब गणराज्य तथा अन्य अरब देशों के साथ सम्बन्धों पर गहरा असर पड़ा है और पड़ेगा। साथ ही इस यात्रा का आम तौर पर गुट-निरपेक्ष राज्यों पर तथा दो जर्मन राज्यों और जर्मन प्रश्न के शान्तिपूर्ण समाधान पर गहरा असर पड़ेगा।

पहली बात तो यह कि हर वाल्टर उल्ब्रिख्त के स्वागत में मिस्र की जनता के अपार उल्लास और मेजबानी ने, संयुक्त विज्ञप्ति तथा अनेक क्षेत्रों में स्पष्टतर सहयोग के अनेक समझौतों पर हस्ताक्षरों ने, साथ ही इस यात्रा को रोकने की पश्चिम जर्मनी की निरर्थक और और सारहीन कोशिशों की असफलता ने तथाकथित 'हाल्स्टीन डाक्ट्रीन' पर करारी चोट की है। 'हाल्स्टीन डाक्ट्रीन' के मातहत पश्चिमी जर्मन उन राज्यों के खिलाफ धमकियों की कार्रवाईयां करता है जो जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ अपने सम्बन्धों को सुधारना चाहते हैं। काहिरा में एक प्रेस सम्मेलन में जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मन्त्री डा० लोथर बोल्स ने इस डाक्ट्रीन की इन शब्दों में व्याख्या की है: "यह एक लाश के समान है जो अभी ही सड़ना शुरू हो गई है।"

सचमुच, संयुक्त अरब गणराज्य को आर्थिक 'सहायता' देना बन्द करने की तमाम घुड़कियों और तिकड़मों के बावजूद पश्चिमी जर्मन सरकार स्वतन्त्रता प्रेमी अरब जनता को डरा सकने में नाकामयाब हुई। शुरू में बोन सरकार ने कोशिश की कि जैसे भी बने वाल्टर उल्ब्रिख्त की संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा रोक दी जाय। फिर उसने मांग की कि काहिरा पहुंचने पर हर वाल्टर उल्ब्रिख्त के स्वागत में वे सब राजनयिक शिष्टाचार न बरते जाएं जो किसी प्रभुसत्ता प्राप्त राज्य के प्रधान के स्वागत में बरते जाते हैं। अन्त में उसने अपने को इस मांग तक सीमित कर लिया कि ऐसी किसी विज्ञप्ति या समझौते पर हस्ताक्षर न किए जाएं जिसमें ज० ज० ग० और संयुक्त अरब गणराज्य के सम्बन्धों में सुधार की ओर इंगित किया गया हो।

इस तरह की मांगें उठाना किसी प्रभुसत्ता प्राप्त राज्य के घरेलू मामलों में खुला हस्तक्षेप ही कहा जा सकता है। किन्तु इन सब मांगों को राष्ट्रपति नासिर और संयुक्त अरब गणराज्य की सरकार ने उचित समय पर ठुकरा दिया। लाखों मिस्रवासियों ने वाल्टर उल्ब्रिख्त का बाहें फैलाकर स्वागत किया; संयुक्त अरब गणराज्य सरकार ने छोटी से छोटी बात तक में अपने राजकीय अतिथि के प्रति पूर्ण राजनयिक शिष्टाचार का व्यवहार किया। कई समझौतों पर हस्ताक्षर किये जाने से इन दो देशों के बीच निकटतर राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सहयोग समृद्ध हुए।

पश्चिमी जर्मन और पश्चिमी बर्लिन के समाचार पत्रों तक को यह मानने पर मजबूर होना पड़ा है कि वाल्टर उल्ब्रिख्त के लिए संयुक्त अरब गणराज्य के निमन्त्रण के बाद 'हाल्स्टीन डाक्ट्रीन', जो पहले से ही सड़ रहा था, अब पश्चिमी जर्मन कूटनीति के मुर्दा अजायबघर में रखने की चीज मात्र रह गया है। जनवरी ३०, १९६५ के 'टाइम्स' ने लिखा: "श्री उल्ब्रिख्त का काहिरा में यदि पूर्ण सम्मान किया जाता है तो यह हाल्स्टीन डाक्ट्रीन की जबरदस्त पराजय होगी।" "हाल्स्टीन डाक्ट्रीन महज एक खण्डहर सा बनता जा रहा है।" (न्यू जैरकिेर ज़ीटुंग, फरवरी २, १९६५)। "हाल्स्टीन डाक्ट्रीन ने लौट

वाल्टर उल्ब्रिख्त राष्ट्रपति नासिर को **जनगण के बीच मैत्री के महापदक** से सम्मानित कर रहे हैं। विदेशी विभूतियों के सम्मान के लिए ज. ज. ग. का यह उच्चतम पदक है।

कर खुद इस डाक्ट्रीन के निर्माताओं पर चोट की है ।" (स्टुटगार्टेर ज़ीटुंग, फरवरी ३, १९६५) । "हाल्स्टीन डाक्ट्रीन पूरी तरह बेमानी हाल्स्टीन डाक्ट्रीनवाद में बदल दिया गया है ।" (इस्पांडनर वोल्क्स-ब्लाट्ट, फरवरी २, १९६५) । अन्तर्राष्ट्रीय समाचार पत्रों से ये सिर्फ चन्द मिसालें हैं ।

पश्चिम जर्मनी ने घोषणा की थी कि राष्ट्रपति नासिर ने अगर उसकी धमकियों के सामने घुटने नहीं टेके तो वह संयुक्त अरब गणराज्य को आर्थिक 'सहायता' देना बन्द कर देगा । लेकिन यह घोषणा खुद पश्चिमी जर्मन सरकार क अलगाव का साधन साबित हुई । तमाम अरब देश तुरन्त ही संयुक्त अरब गणराज्य की रीति-नीति के समर्थन में आगे बढ़ आये, जब कि पश्चिम जर्मनी अपने पश्चिमी सहयोगियों

राष्ट्रपति नासिर और वाल्टर उल्ब्रिख्त खुली गाड़ी में कुब्बाह महल की ओर जाते हुए। सड़कों के दोनों ओर खड़े जन समूह ने भरपूर उल्लास से उनका स्वागत किया।

की किसी हद तक संकुचित और शकसुबह वाली स्थिति से बंधा रहा । फ्रांस ने तो उल्ब्रिख्त की यात्रा के समय ही एक अधिकृत प्रतिनिधि-मण्डल संयुक्त अरब गणराज्य भेजा ताकि वह फ्रांस और संयुक्त अरब गणराज्य के बीच सम्बन्धों को और अधिक व्यापक बनाने के लिए बातचीत करे ।

इतना ही नहीं । राष्ट्रपति नासिर ने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि संयुक्त अरब गणराज्य की कुछ आर्थिक परियोजनाओं में पश्चिम जर्मनी का हाथ बंटाना आर्थिक 'सहायता' नहीं कहा जा सकता । कारण कि मिस्र की जनता इन परियोजनाओं की पूरी कीमत अदा कर रही थी,—और एक ऐसी व्याज की दर पर जो ६ प्रतिशत तक पर था । राष्ट्रपति नासिर ने उचित ही बताया कि सोवियत संघ, ज०ज०ग० तथा अन्य समाजवादी देशों से मिलने वाले ऋण की दरों में लगभग २ प्रतिशत का भेद है ।

दूसरे, जर्मन जनवादी गणतन्त्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष की संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा ज. ज. ग. और सं. अ. ग. के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान है । जैसा कि राष्ट्रपति नासिर ने स्वयं कहा—हर वाल्टर उल्ब्रिख्त को दिया गया निमन्त्रण १९५३ से जब अधिकृत रूप से दोनों देशों के बीच सम्बन्ध शुरू हुए थे, अब तक सं० अ० ग० और ज०ज०ग० के बीच बढ़ती हुई मित्रता का मूर्त रूप है । ज० ज० ग० की यात्रा के निमन्त्रण की राष्ट्रपति नासिर द्वारा स्वीकृति, ज० ज० ग० और सं० अ० ग० के उप-प्रधान मन्त्रियों के बीच नये ऋण और आर्थिक सहयोग के समझौते, इस वर्ष १९६६-१९७० के काल के लिए दीर्घकालीन व्यापार और भुगतान का समझौता करने का फैसला, एक मिले-जुले आर्थिक कमीशन की स्थापना, एक संयुक्त वैज्ञानिक बोर्ड तथा अन्य संस्थाओं की स्थापना—ये सब ज० ज० ग० और सं० अ० ग० के बीच सम्बन्धों को और भी ज्यादा मजबूत बनाने की ओर बढ़ाये गये कदम हैं ।

संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा के सम्बन्ध में टिप्पणी करते हुए मई के मध्य में बर्लिन में वाल्टर उल्ब्रिख्त ने कहा, "संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा से मान्यता के प्रश्न का कोई सम्बन्ध नहीं है। अनेक राज्यों में ज०ज०ग० को अभी ही मान्यता मिली हुई है। केवल कुछ प्रश्न, जो राजनयिक मसलों से सम्बन्धित हैं, कुछ राज्यों में सुलझाने बाकी हैं ।" यात्रा से ठीक पहले हर वाल्टर उल्ब्रिख्त ने संयुक्त अरब गणराज्य के प्रमुख पत्र 'अल अहराम' से एक इन्टरव्यू में कहा कि उनका इरादा यह कतई नहीं कि अपनी यात्रा के दौरान वह संयुक्त अरब गणराज्य और पश्चिमी जर्मनी के बीच सम्बन्धों को बिगाड़ने की सिफारिश करें; कारण यह कि दोनों जर्मन राज्यों के साथ सामान्य सम्बन्धों को कायम रखना जीवन के वास्तविक तथ्यों से मेल खाता है। जहां तक संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति नासिर के सरकारी निमन्त्रण पर पश्चिमी जर्मन सरकार के हमलों की बात है, वाल्टर उल्ब्रिख्त ने कहा; "बेशक मैं यह नहीं चाहता कि काहिरा की वार्ताओं के समय में अपने मित्रों के दिमाग पर जर्मन राज्यों के झगड़ों का बोझ डालूं....... । संयुक्त अरब गणराज्य गुट-निरपेक्ष राज्य है। उसकी यह स्थिति दोनों जर्मन राज्यों के साथ सामान्य सम्बन्धों को समृद्ध करने के प्रयत्नों से मेल खाती है ।"

इस प्रश्न का जवाब देते हुए कि क्या जर्मन जनवादी गणतन्त्र काहिरा में अपना दूतावास खोलेगा ज०ज०ग० के परराष्ट्र मन्त्री ने काहिरा में प्रेस सम्मेलन में बताया कि ज०ज०ग०—सं०अ०ग० सम्बन्धों के विकास के स्वरूप की घोषणा दोनों राज्यों की सरकारी विज्ञप्ति में की जाएगी । उन्होंने जोर देकर कहा कि "हम बड़े सन्तोष के साथ यहां (काहिरा) आये थे । हम और भी ज्यादा सन्तुष्ट होकर अपने देश वापिस लौट रहे हैं ।" ज०ज०ग० और सं०अ०ग० के बीच बढ़ती हुई मैत्री के इतिहास को देखकर इस बात में कतई सन्देह नहीं रह जाता कि दोनों राज्यों के बीच राजकीय सम्बन्ध और ज्यादा विकसित होंगे ।

तीसरे, जर्मन समस्या के समाधान के मुख्य प्रश्न पर ज०ज०ग० और सं०अ०ग० ने पूर्ण समानता की अभिव्यक्ति की । दोनों पक्षों

इस विचार की पुष्टि की कि जर्मन एकता का प्रश्न जर्मन जनता द्वारा ही सुलझाया जाना चाहिए ।

समस्त संसार को विदित है कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र की सरकार ने अपने जन्मकाल से ही इस विचार पर बार-बार जोर दिया है कि जर्मन प्रश्न का समाधान जर्मन जनता ही कर सकती है; वही जर्मनी का पुनरेकीकरण कर सकती है । अतः ज०ज०ग० ने बार-बार यह सुझाव दिया है कि दोनों जर्मन राज्यों की सरकारों के बीच इस लक्ष्य को सामने रख कर समान वार्ताएं चलाई जाएं, जर्मन जनवादी गणतन्त्र और पश्चिम जर्मन फेडरल रिपब्लिक के बीच कदम-ब-कदम सहयोग स्थापित किया जाए ।

किन्तु बोन सरकार ने दोनों जर्मन राज्यों के बीच सीधी वार्ताओं के सभी सुझावों को ठुकरा दिया । उसका अजीबोगरीब और नितान्त भोंडा नजरिया यह है कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र का अस्तित्व है ही नहीं, कि वह एक ऐसे राज्य के साथ वार्ता चला ही नहीं सकती जो अस्तित्वहीन है । इस तरह दोनों जर्मन राज्यों के पुनरेकीकरण की जिम्मेदारी वह दूसरी ताकतों के हाथों में सौंप देती है । पश्चिमी जर्मन फेडरल रिपब्लिक सरकार ने समग्र रूप से जर्मनी से सम्बन्धित तमाम प्रश्नों और जर्मन पुनरेकीकरण के प्रश्न पर फैसला लेने के अधिकार को उसी वक्त तिलांजलि दे दी जब उसने १९५५ में पेरिस सन्धि पर हस्ताक्षर किए और इन प्रश्नों पर फैसला लेने का अधिकार पश्चिमी ताकतों के हाथ में सौंप दिया । बोन सरकार ने ज०ज०ग० सरकार के दोनों जर्मन राज्यों के बीच मैत्री और शान्तिपूर्ण वार्ताओं के हर सुझाव का नकारात्मक जवाब दिया है और बार-बार यह घोषणा की

वाल्टर उल्ब्रिख्त उनकी पत्नी श्रीमती लोट्टे (बायें) तथा प्रतिनिधिमंडल के अन्य सदस्य एक संग्रहालय में मिस्र की कलाकृतियों की सराहना करते हुए ।

वाल्टर उल्ब्रिख्त के शेबिन एल० कोम की कताई-बुनाई मिल में पहुँचने पर बड़ा जोरदार स्वागत किया गया ।

है कि इन समस्याओं को सुलझाने का हक पश्चिमी ताकतों को ही है ।

राष्ट्रपति नासिर ने जर्मन जनवादी गणतन्त्र के यथार्थवादी नजरिये का, जिसका लक्ष्य समान वार्ताओं के द्वारा दोनों जर्मन राज्यों की सरकारों के बीच मैत्री स्थापित करना है, समर्थन किया है । जर्मन राज्य के राष्ट्रीय प्रश्न पर पश्चिम जर्मनी की जो तर्कहीन और अड़ियल नीति है उसको इस समर्थन से और भी धक्का पहुंचा है ।

चौथे, राष्ट्रपति नासिर और अध्यक्ष वाल्टर उल्ब्रिख्त ने जिस संयुक्त विज्ञप्ति पर हस्ताक्षर किए हैं वह अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के सभी मूल प्रश्नों पर विचारों की पूर्ण एकता की देदीप्यमान मिसाल है । दोनों पक्षों ने शान्ति को कायम रखने की अडिग नीति के प्रति वफादारी जाहिर की है । दोनों ने शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों के आधार पर जनगण के बीच सहयोग और मैत्री का समर्थन किया है । दोनों पक्षों ने पूर्ण और आम निशस्त्रीकरण के अपने समर्थन पर जोर दिया है और मास्को में हुई आंशिक परीक्षण रोक संधि की सराहना की है । दोनों ने पारमाणविक अस्त्रों के विस्तार पर रोक लगाने और न्यूक्लिअर अस्त्रों से मुक्त क्षेत्रों के निर्माण की मांग उठाई है ।

दोनों पक्षों ने उन देशों की जनता के मुक्ति संग्राम के प्रति पूर्ण समर्थन व्यक्त किया है जो अब भी उपनिवेशवाद के जुए के नीचे कराह रहे हैं । ज०ज०ग० ने और आगे बढ़ कर "समस्त अरब जनता के आजादी, विकास और समृद्धि के अधिकार" का समर्थन किया है । उसने पैलस्टाइन के अरब जनगण के समस्त अधिकारों का, जिनमें आत्मनिर्णय का अक्षुण्ण अधिकार भी शामिल है, समर्थन किया है । साथ ही जोर्डन नदी के प्रति अरब दृष्टिकोण का भी समर्थन किया है । दोनों पक्षों ने अफ्रीकी एकता संगठन के प्रयत्नों की सराहना की है और दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति की निन्दा की है । ज०ज०ग० और सं०अ०ग० के बीच विचारों और पारस्परिक सहयोग की यह एकता सहज ही समझ में आने वाली चीज है। कारण कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र का स्वरूप ही जनवादी, शान्तिपूर्ण और साम्राज्यवाद-विरोधी है ।

लेकिन पश्चिम जर्मन सरकार की नीति के बारे में ऐसी कोई बात नहीं कही जा सकती। वाल्टर उल्ब्रिख्त की यात्रा के समय एक संयुक्त विज्ञप्ति में काहिरा के अफ्रीकी मुक्ति आन्दोलन के ब्यूरो ने घोषणा की कि "ज०ज०ग० की सरकार का स्वरूप जर्मन फेडरल रिपब्लिक सरकार के स्वरूप के ठीक विपरीत है, कारण कि जर्मन फेडरल रिपब्लिक सरकार साम्राज्यवादी, उपनिवेशवादी और नवउपनिवेशवादी है।" जैसा कि सर्वविदित है, पश्चिमी जर्मनी पारमाणविक अस्त्रों के वितरण का समर्थक है और एम०एल०एफ० के माध्यम से इन हथियारों को हासिल करने का प्रयत्न कर रहा है। मध्य योरप में न्यूक्लिअर हथियारों से मुक्त क्षेत्र के निर्माण का उसने विरोध किया है और पश्चिमी जर्मनी व ज०ज०ग० की सीमा पर न्यूक्लिअर अस्त्रों के क्षेत्र के निर्माण का सुझाव लेकर सामने आया है। पश्चिम जर्मनी दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति को भौतिक तथा आर्थिक सहायता पहुंचाता है। पश्चिम जर्मनी एक गुप्त समझौते के मातहत इज़राइल को हथियार पहुंचा रहा है और अलग-अलग छद्मवेशों में इजराइल को फौजी मदद जारी रखने की कोशिश कर रहा है। पश्चिम जर्मनी के प्रमुख पत्र 'डाइ वेल्ट' ने २४ फरवरी, १९६५ को खुलेआम स्वीकार किया कि इज़राइल के समर्थन में पश्चिम जर्मनी का मुख्य कारण यह है कि "यहूदियों का यह तरुण राज्य ही निकट-पूर्व में पश्चिमी ताकतों का एकमात्र विश्वसनीय आधार है।"

इसलिए संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा के आखिरी दि[illegible] पोर्ट सईद में जर्मन जनवादी गणतन्त्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष वाल्टर उल्ब्रिख्त ने निम्नलिखित बयान दिया। उन्होंने कहा कि :

"आज जर्मन साम्राज्यवादियों का, जो अब पश्चिम जर्मनी में सिमटे हुए हैं, लुटेरा और साम्राज्यवादी स्वरूप हरेक के सामने स्पष्ट हो गया है। कारण कि संयुक्त अरब गणराज्य और अरब जनता पर हर हमले या षड़यन्त्र में, अपनी आजादी के लिए जूझते अफ्रीकी और एशियाई जनगण के खिलाफ हर हमले और उनके अधिकारों को तहस-नहस करने में पश्चिमी जर्मन फेडरल रिपब्लिक की सरकार का, जो बड़े बड़े इजारेदारों और साम्राज्यवादियों की तरफ से पश्चिम जर्मनी की हुकूमत चला रहे हैं, हमले में हाथ रहता है। तो भी मैं तमाम मिस्रवासियों से और समूचे अरब राष्ट्र से यह दरख्वास्त करूंगा कि पश्चिम जर्मनी पर हुकूमत करने वाले साम्राज्यवादियों और जर्मन जनता के बीच के भेद को वे न भूलें।

"मैं आपको यक़ीन दिलाना चाहता हूं कि जर्मन जनता पूरे अरब राष्ट्र के साथ मैत्री और अच्छे सम्बन्धों की समर्थक है। जर्मन जनता की ओर से बोलने का अधिकार है हमको, प्रथम शान्तिपूर्ण जर्मन राज्य की सरकार को, मजदूरों और किसानों के पहले जर्मन राज्य को, जर्मन जनवादी गणतन्त्र को .....। जर्मन जनवादी गणतन्त्र आजादी और आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए जूझते जनगण का सच्चा दृढ़ समर्थक रहा है और रहेगा।"

: वाल्टर उल्ब्रिख्त की यात्रा पर विचार और सम्मतियाँ :

"उल्ब्रिख्त का स्वागत करके संयुक्त अरब गणराज्य के लोग बड़े पैमाने पर शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के सिद्धान्तों का दृढ़ता से पालन कर रहे हैं तथा अपने अधिकारों का पुष्टीकरण कर रहे हैं।" यह बात काहिरा के दैनिक "अल अखबार" ने २४-२-१९६५ की सम्पादकीय टिप्पणी में कही है।

काहिरा के पत्र "अल अहराम" से २३-२-६५ के इन्टरव्यू में वाल्टर उल्ब्रिख्त ने यह घोषणा की कि संयुक्त अरब गणराज्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकारों के विचारों में हमारे समय के खास मसलों पर समानता है।"

वाल्टर उल्ब्रिख्त ने बताया है कि संयुक्त अरब गणराज्य की उनकी यात्रा का उद्देश्य यह रहा है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र और संयुक्त अरब गणराज्य के बीच मित्रता तथा सहयोग को बढ़ाया जाय व मजबूत किया जाए तथा जर्मन व अरब जनता के दोस्ताना सम्बन्धों को गहरा बनाया जाय।

"हम संयुक्त अरब गणराज्य को धन्यवाद देते हैं कि उसने हमारी राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में हमें मदद दी है। शांति की सुरक्षा में, निशस्त्रीकरण में, योरप, अफ्रीका तथा विश्व के अन्य भागों में परमाणु अस्त्रों से अछूते इलाके कायम करने में तथा जर्मन प्रश्न के शांतिपूर्ण समाधान में उसने मदद की है।"

पश्चिमी जर्मन समाचार पत्र "डीर स्पीगल" से एक इन्टरव्यू में संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति नासिर ने घोषणा की कि पूर्वी जर्मनी से हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बंध १९५६ से हैं। पूर्वी बर्लिन से हमने आर्थिक तथा दूसरे अन्य समझौतों पर हस्ताक्षर किये हैं। ज. ज. ग. इजराइल का पक्ष नहीं लेता।

इस प्रश्न के उत्तर में कि संयुक्त अरब गणराज्य ने वाल्टर उल्ब्रिख्त के निमंत्रण के विषय में बोन को इत्तला क्यों नहीं दी राष्ट्रपति नासिर ने स्पष्ट कहा, "यह श्री उल्ब्रिख्त के सम्मान के खिलाफ होता। इस प्रकार के निमंत्रणों के मामले में राजनयिक खिल[illegible]वाड़ नहीं किया जा सकता। यह हमार[illegible] आदत नहीं।" राष्ट्रपति नासिर ने ए[illegible] भोज के दौरान कहा, "हम जर्मन राष्ट्र के बनावटी व झूठी सीमाओं के दोनों ओर [illegible] जनों से स्वस्थ तथा अच्छे सम्बंध काय[illegible] रखते हैं तथा अब भी कायम रखे हैं। हमा[illegible] आपके देश से अच्छे सम्बंध हैं तथा हम आ[illegible] करते हैं कि आपका यह भ्रमण हमें इस ब[illegible] का मौका देगा कि हम इन सम्बंधों को प्रगा[illegible] व स्थायी बनायें।"

राष्ट्रपति नासिर ने कहा कि संयुक्त अ[illegible] गणराज्य पश्चिम जर्मनी से भी अच्छे सम्ब[illegible] रखना चाहता है। उन्होंने यह भी बता[illegible] कि पश्चिम जर्मन सरकार के कार्य "निर[illegible] तथा गैर-जिम्मेदारी के" रहे हैं। संयु[illegible] अरब गणराज्य ने पश्चिम जर्मनी की [illegible] कार से अच्छे सम्बन्ध बनाने की बड़ी संजी[illegible] कोशिशें कीं और वह यह नहीं चाहता [illegible] उसकी इस इच्छा को कोई भी गलत [illegible]

में ले । संयुक्त अरब गणराज्य दूसरे देशों के साथ अपने सम्बन्धों के प्रति किसी प्रकार की धमकी बरदाश्त नहीं कर सकता । अपनी स्वतंत्रता में किसी तरह की विघ्न भी वह स्वीकार नहीं कर सकता ।

"मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता है कि संयुक्त अरब गणराज्य भी——अपनी ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुरूप ——उसी लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है जो हमारा लक्ष्य है । यह लक्ष्य है : जनगण के लिए शांति, सुख, समाजवाद, खुशहाली और समृद्धि । अपनी मजबूत भुजाओं से जनगण अपनी सत्ता को कभी दूर नहीं होने देंगे ।"——**वाल्टर उल्ब्रिख्त** ने एक भोज के समय कहा ।

अल्जीरिया की प्रेस अजेंसी ए.पी.एस. ने टिप्पणी की है: "पश्चिम जर्मनी की जनवादी जनता को नजरन्दाज करने और सिर्फ अपने को जर्मनी का प्रतिनिधि बताने की ख्वाहिश सूझबूझ से परे की चीज है ।"

"इतना ही नहीं । दूसरे राज्यों पर तथाकथित "हाल्स्टीन" डाक्ट्रीन को थोपने की कोशिश करना और जर्मन क्षेत्र के दूसरे भाग के जनगण से उनका सम्बंध न होने देने की तिकड़में रचना, दूसरों के मामलों में सीधा हस्तक्षेप है । इन स्थितियों पर बोन का अड़ियलपना और जिद का रवैया अख्तियार करना, संकट के समाधान में मदद नहीं करता । हाल्सटीन डाक्ट्रीन की दुहाई देकर फेडरल रिपब्लिक समस्त अरब जनगण की मैत्री से हाथ धोने का खतरा मोल ले रहा है ।"

वाल्टर उल्ब्रिख्त और उनके साथ के अतिथि २५-२-६५ को शेबिन एल-कोम की सूती मिलों को देखने गये । ये मिलें ज. ज. ग. की मशीनों से सज्जित हैं ।

कारखाने के लिये जाते समय एक घंटे तक और वापसी के समय डेढ़ घंटे तक संयुक्त अरब गणराज्य की जनता ने जर्मन अतिथियों का भव्य स्वागत किया । उस इलाके के हजारों लोग स्वागतार्थ आ पहुंचे और जिस मार्ग से अतिथि गुजर रहे थे उसके दोनों ओर कतारें बांधकर खड़े हो गये । उस पूरे क्षेत्र के लोगों ने यह सारा समय छुट्टी की खुशियों में बिताया । दफ्तर और स्कूल बन्द कर दिये गये थे । सड़कें और मकान झंडों और बन्दनवारों से सज उठे थे ।

काहिरा से शेबिन एल-कोम तक मुख्य मार्ग पर जन सेना के सदस्य तत्परता से उपस्थित थे । मुख्य मार्गों और गांवों में स्वागत-द्वार बनाये गये थे जिन पर शब्द अंकित थे "संयुक्त अरब गणराज्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र की मैत्री जिन्दाबाद" ।

सूती मिलों की यात्रा के समय जर्मन अतिथियों का जो भव्य स्वागत हुआ वह इतना अप्रत्याशित था कि पश्चिम के पत्र-प्रतिनिधियों की आंखें फटी की फटी रह गयीं । मिलों के दौरे के दौरान कई बार तो वे भीड़ में पिसते -पिसते बचे । वाल्टर उल्ब्रिख्त के स्वागत के लिए मजदूरों के उल्लास में अरब मेजबानी पूरी तरह छलछला आयी थी ।

अफ्रीकी मुक्ति आन्दोलनों के ब्यूरो ने भी, जो काहिरा में '**अफ्रीकन एसोसिएशन**' के नाम से संगठित है, वाल्टर उल्ब्रिख्त का स्वागत किया । स्वागत वक्तव्य में अंशतः कहा गया है : "हम श्री उल्ब्रिख्त के इस विचार का हृदय से समर्थन करते हैं कि राष्ट्रपति नासिर से उनकी मुलाकात संयुक्त अरब गणराज्य और ज. ज. ग. की जनता के बीच मैत्री की कड़ियों को निश्चय ही मजबूत बनायेगी । वह जर्मन और अरब जनता की मैत्री के लक्ष्य को निश्चय ही आगे बढ़ायेगी । जर्मन फेडरल रिपब्लिक सरकार के इस विचार को हम ठुकराते हैं कि यह यात्रा जर्मन जनता के प्रति शत्रुता की भावना की द्योतक है । हमारी मान्यता है कि श्री उल्ब्रिख्त की सरकार अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में सराहनीय भूमिका अदा कर रही है । हम उनकी यात्रा को जर्मन जनता के श्रेष्ठतम हितों के अनुकूल मानते हैं । हम इस बात से भली भांति परिचित हैं कि ज. ज. ग. सरकार का स्वरूप पूर्णतः साम्राज्यवाद विरोधी, उपनिवेशवाद विरोधी, व नव-उपनिवेशवाद विरोधी है । उसका स्वरूप पूर्णतः जनवादी और स्वातंत्र्य-प्रेमी है । यह स्वरूप जर्मन फेडरल रिपब्लिक सरकार के स्वरूप से पूर्णतः भिन्न है जोकि साम्राज्यवादी, उपनिवेशवादी और नव-उपनिवेशवादी है । वह राष्ट्रीय स्वाधीनता ,जनवाद और आजादी की कट्टर शत्रु है ।"

"संसार के नवोदित राज्यों की प्रभुसत्ता और आजादी के लिये पश्चिम जर्मनी में कोई लिहाज नहीं है । यह इसी बात से प्रकट हो जाता है कि इन देशों पर अपनी नीतियों को थोपने के लिये पश्चिम जर्मन सरकार आर्थिक सहायता को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करती है । जर्मन फेडरल रिपब्लिक ने संयुक्त अरब गणराज्य से आर्थिक सहयोग बन्द कर देने की अभी ही धमकी दी है ।"

"सवाल उठाया गया है कि उल्ब्रिख्त को संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा करनी चाहिये थी या नहीं । पश्चिम जर्मनी संयुक्त अरब गणराज्य के इस मौलिक अधिकार पर भी चोट करता है कि वह किन्हें अपना मित्र और किन्हें अपना शत्रु बनाये"—घोषणा में कहा गया है ।

अल्जीरिया की राजकीय सूचना एजेंसी ए. पी.एस. ने संयुक्त अरब गणराज्य को बोन सरकार की 'आर्थिक सहायता' बन्द करने पर टिप्पणी की है । इसमें कहा गया है कि "बोन सरकार के दबावों और आतंकपूर्ण कार्रवाइयों को सबसे बढ़िया जवाब संयुक्त अरब गणराज्य की जनता ने ज.ज.ग. की राष्ट्रीय परिषद के अध्यक्ष का मुक्त हृदय से स्वागत करके दिया है ।

"यह उल्लासपूर्ण स्वागत काहिरा के उस दृष्टिकोण का द्योतक है जो वह पश्चिम जर्मन फेडरल रिपब्लिक के प्रति अपने सम्बधों में, जो एक निर्णायक मंजिल में पहुंच चुके हैं, अपना सकता है ।"

"अल मिस्सा", काहिरा

"बोन सरकार की नीति वस्तुतः अरबों के खिलाफ ही नहीं है, वरन जन-स्वातंत्र्य के भी विरुद्ध है । दूसरी ओर साम्राज्यवादी देशों की नीति पर आधारित नस्लभेद की नीति को उसका समर्थन प्राप्त है । यह सभी जानते हैं कि यह सरकार (दक्षिणी अफ्रीका

से) १.२० लाख मार्क की आर्थिक सहायता और व्यापारिक लेन-देन करती है यद्यपि राष्ट्र संघ की जनरल असेम्बली में एक प्रस्ताव द्वारा दक्षिण अफ्रीकी सरकार की तथा उससे किसी भी प्रकार के सम्बन्ध की भर्त्सना की गयी है। इसके अलावा पुर्तगाली साम्राज्य के अधीनस्त देशों के खिलाफ तथा अंगोला और मोजाम्बिक के स्वतंत्रता आन्दोलनकारियों के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए बोन सरकार पुर्तगाल को हथियार दे रही है। इतना सब अफ्रीका के बारे में।

ऐशिया में बोन सरकार ही नाटो सदस्यों में एकमात्र ऐसी सरकार है जो साम्राज्यवादी अमरीका की उस नीति का समर्थन करती है जिसके द्वारा दक्षिण वियतनाम के स्वतंत्रता आन्दोलन को कुचला जा रहा है।"

संसद सदस्य जूनिस : संयुक्त अरब गणराज्य की संसद में

"आश्चर्य की बात है कि एक ऐसा देश जिस पर हमलावरों का कब्जा है तथा जो उन्हीं की सरकार द्वारा शासित है, एक स्वतंत्र व आत्मनिर्भर जनता पर अपनी नीति लादना चाहता है। आश्चर्य है कि एक ऐसी सरकार जो अपने मामलों को निर्धारित नहीं कर सकती, जिसे अपनी नीति के उद्देश्यों को निर्धारित करने तक हक नहीं है और जो किन्हीं दूसरे शासकों द्वारा आदेशित नीतियों तथा मशविरों पर चलती है, वह एक स्वतंत्र और जुझारू जनता से इस बात की मांग करे कि वह किसी विचार या कुछ खास सिद्धान्तों के आगे घुटने टेक दे। पश्चिम जर्मन सरकार हमसे ज. ज. ग. से हमारे सम्बन्धों का खुलासा करने की मांग करती है और इस सच्चाई की तरफ से आंख बंद कर लेती है कि ज. ज. ग. के उससे स्वयं ताल्लुकात हैं, और यह कि दोनों जर्मन राज्यों के आर्थिक सम्बन्ध दस वर्ष से भी ज्यादा पुराने हैं। यह वास्तव में विचित्र बात है कि पश्चिम जर्मनी हम पर एक खास नीति लादता है जबकि स्वयं वह इतना शक्तिशाली भी नहीं कि अपने मित्रों और सलाहकारों से उसी नीति पर चलने की मांग कर सके। ज. ज. ग. के बहुत से पश्चिमी राज्यों से सम्बन्ध हैं। हम पश्चिम जर्मनी के इशारों पर क्यों चलें ? क्या इसलिए कि पश्चिम जर्मनी हमें आर्थिक सहायता देता है ? वह हमारी जनता को सहायता नहीं देता, वरन भारी ब्याज पर ऋण देता है। फेडरल जर्मनी से पिछले दस वर्षों में जो कुछ भी प्राप्त हुआ है वह केवल ६८० लाख मिस्री पाउंड है जिस पर भारी ब्याज की दर लादी गई है। इसके मुकाबले में हमारी जनता ने ज. ज. ग. से ४०० लाख मिस्री पाउंड का ऋण लिया है जिस पर बहुत कम ब्याज की दर है। यह दर कभी-कभी २ प्रतिशत से भी कम होती है। ज. ज. ग. से हमारे सम्बन्धों का खुलासा पूछ कर **फेडरल जर्मनी साम्राज्यवादी नीति अपना रहा है।** यह अमरीकी हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्स के संयुक्त अरब गणराज्य को कर्ज के फैसले के अनुसार है। यह उस फैसले के अनुसार है जिसे हमारी जनता ने ठुकरा दिया है और जिसके बारे में हमारे राष्ट्रपति ने घोषणा की है कि हम अपनी शान के खिलाफ किसी भी मशविरे को न मानेंगे। हमें पश्चिम जर्मनी तथा साम्राज्यवादी राज्यों को ऐसा सबक सिखाना है जो वे कभी न भूल सकें।"

श्रीलंका के साप्ताहिक 'ट्रिब्यून' ने पश्चिम जर्मनी की उस नीति की, जो उसने सं. अ. ग. के प्रति अपनाई है, निन्दा की है। इसमें कहा गया है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र एक वास्तविकता है जिसे हाल्सटीन डाक्ट्रीन के मातहत छिपाया नहीं जा सकता। 'ट्रिब्यून' इस नतीजे पर पहुंचा है कि पश्चिम जर्मनी के लिए बुद्धिमानी यही होगी कि वह हाल्सटीन डाक्ट्रीन को दफना दे।

"डाय वैल्ट" में २४ फरवरी १९६५ को "काहिरा भ्रमण" शीर्षक के अन्तर्गत रूडोल्फ स्टीज लिखते हैं ; "नासिर बाल्टर उल्ब्रिख्त का स्वागत औपचारिक दरवाजे के पीछे महज हाथ मिलाकर नहीं करेंगे। वह उनका स्वागत एक विशिष्ट अतिथि के रूप में करेंगे। इस बात का हमारी वैदेशिक नीति को फख्र होना चाहिए कि उल्ब्रिख्त का नाइल में खुले दिल से स्वागत किया गया।"

काहिरा में उल्ब्रिख्त के शानदार स्वागत के समय बोन के खास दूत को इजराइल भेजा गया। पुराने फैडरल चांसलर अदन्योर, जो एक बड़े जोशीले घुमक्कड़ हैं आखिर इजराइल क्यों न पहुंचें। अदन्योर के लिए इजरालियों के हृदय में खास सम्मान है न !"

"विशेष दूत के इस प्रकार के खास भ्रमण निरर्थक साबित नहीं होंगें, बल्कि इनसे नासिर को पान्को से कूटनीतिग सम्बन्ध स्थापित करने का उत्साह मिलेगा तथा इससे हमारे काहिरा से सम्बन्ध खत्म होंगे ! तो भी क्या यह कोई ऐसी घटना होगी जिसे देखकर फेडरल जर्मनी के मंत्री बार-बार फेडरल चांसलर की बांह पकड़ कर रोते— वह भी ठीक ऐसे वक्त जब चांसलर ने एक फैसला कर डाला है। एक ऐसे देश के साथ राजनयिक सम्बन्धों की कीमत दो कौड़ी की भी नहीं जो उल्ब्रिख्त को राजकीय यात्रा का निमंत्रण देता है—खास तौर से हमारी सरकार की नजरों में! वह चाहती है कि जनता की एकमात्र प्रतिनिधि होने के उसके दावे को लोग सचमुच गम्भीरता से स्वीकार करें!

"इजराइल को हम खास स्थान देते हैं क्योंकि निकट पूर्व में पश्चिम का एक विश्वसनीय गढ़ है ! वह अरब के पड़ोस में इस समय सब से अधिक सैनिक शक्ति से सज्जित देश है। इसलिए इजराइल की तरफ होने की हिम्मत वैदेशिक नीति के आत्मघात की हिम्मत कहां!"

अल मिस्र: "अरब जनता ने राज्य परिषद के अध्यक्ष वाल्टर उल्ब्रिख्त का स्वागत प्यार व प्रशंसा भरे दिलों से किया। यह हमारी जनता की उस भावना का इजहार है जो वह ज. ज. ग. की जनता के संघर्ष के प्रति महसूस करती।

"जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान का उत्साहपूर्ण व शानदार स्वागत किया गया क्योंकि यह दो क्रांतिकारियों का सम्मेलन था। सभी बुराइयों की जड़ उपनिवेशवाद के कीटाणुओं का नाश करने के संघर्ष में यह उनकी मित्रता थी।"

ब्रूनो ल्यूश्नेर

एक श्रद्धांजलि

१० फरवरी १९६५ को, ज. ज. ग. मंत्रिपरिषद के उपाध्यक्ष और जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय सामिति के पौलिट ब्यूरो के सदस्य, ब्रूनो ल्यूश्नेर की ५४ वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी। उनकी मृत्यु से जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अपने एक वफादार पुत्र और एक प्रमुख राजनीतिज्ञ को खो दिया।

ब्रूनो ल्यूश्नेर का जन्म मजदूर परिवार में हुआ था। युवावस्था से ही मजदूर वर्ग के आन्दोलन से उनका लगाव था। १९३१ में वह जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए और हिटलरी फासिज्म के खतरे के खिलाफ संघर्ष में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया। हिटलर के सत्ता हथिया लेने के बाद ब्रूनो ल्यूश्नेर तीन वर्षों तक गैर-कानूनी हालत में रह कर इस संघर्ष को चलाते रहे। १९३६ में वह बर्लिन में गिरफ्तार कर लिये गये। फिर तो उन्हें लगातार लगभग १० वर्षों तक विभिन्न जेलों और साचशेनहौसेन तथा मौथहासेन जैसे फासिस्ट कन्सेन्ट्रेशन कैम्पों में नाजियों के भयानक अत्याचार का सामना करना पड़ा।

१९४५ में हिटलरी तानाशाही की समाप्ति के बाद वह जेल से रिहा हुए। उस समय उनका स्वास्थ्य बहुत बुरी हालत में था। लेकिन इसकी उन्होंने कोई परवाह नहीं की और वह फासिस्ट युद्ध के घातक परिणामों को दूर करने और शान्ति तथा समाजवाद के लिए जी-जान से काम में जुट गये। १९४५ के बाद से वह पार्टी और सरकार के महत्वपूर्ण पदों पर रह कर काम करते रहे। जर्मन जनवादी गणतंत्र की आर्थिक प्रगति और विकास के साथ उनका नाम अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। वह लगातार दस वर्षों तक ज. ज. ग. के राज्य योजना आयोग के प्रधान रहे। ज. ज. ग. के समाजवादी अर्थतंत्र और योजना के विकास में उनका महत्वपूर्ण योग रहा है।

उनके कार्यकलाप के कारण अनेक देशों में ज. ज.ग. की प्रतिष्ठा बढ़ी। समाजवादी देशों की परस्पर सहायता परिषद में वह ज. ज. ग. के पूर्णाधिकारी दूत थे।

ब्रूनो ल्यूश्नेर ने अपनी मृत्यु से लगभग एक साल पहले, १४–२१ फरवरी १९६४ को, भारत की यात्रा की थी। ज. ज. ग. के सद्भावना प्रतिनिधि-मंडल के नेता की हैसियत से उन्हें स्वर्गीय प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू से मिलने का सम्मान प्राप्त हुआ था, जो संभवतः किसी विदेशी राजनीतिज्ञ से स्वर्गीय नेहरू की अन्तिम मुलाकात थी। भारत की इस यात्रा के पहले उन्होंने श्रीलंका की भी यात्रा की थी। इसी यात्रा के मौके पर श्रीलंका की प्रधानमंत्री श्रीमती भंडारनायके ने उन्हें यह बताया था कि श्रीलंका की सरकार ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ वाणिज्य-दूतों के आदान-प्रदान का फैसला किया है।

ज. ज. ग. के अर्थतंत्र और मजदूरों व किसानों की सत्ता को मजबूत बनाने में ब्रूनो ल्यूश्नेर ने जो योग दिया, उसके लिए उन्हें राज्य की ओर से अनेक सम्मानों से विभूषित किया गया। अन्य पुरस्कारों के अलावा उन्हें सोने का "देशभक्ति का पदक" दिया गया जो ज. ज. ग. का एक सर्वोच्च पुरस्कार है।

ज. ज. ग. सरकार की ओर से उन्हें अर्पित श्रद्धांजलि के अन्त में यह उद्गार प्रकट किया गया है : "ब्रूनो ल्यूश्नेर की असामयिक मृत्यु से हमारे बीच से एक ऐसा साथी उठ गया है जो मजदूर वर्ग की पार्टी और मजदूरों और किसानों के राज्य के प्रति बहुत ही वफादार था, जो भारी जिम्मेदारी के कामों को पूरी लगन और विनम्रता से पूरा करता था और पार्टी तथा राज्य के नेतृत्व के काम में सृजनात्मक सहयोग देता था। हमारे देश के बाहर भी उनका बहुत ज्यादा सम्मान किया जाता था। कामरेड ल्यूश्नेर को हम कभी नहीं भूल सकेंगे। हम उन्हें सम्मान के साथ सदा याद करते रहेंगे।"

बीस साल पहले लाखों जर्मनों ने प्रण किया था :

युद्ध कभी नहीं होने देंगे !

८ मई १९६५ को फासिज्म के जुये से जर्मन जनता की मुक्ति की २०वीं वर्षगांठ मनायी जायेगी। इस दिन का न सिर्फ जर्मन जनता के लिये, बल्कि समस्त संसार की जनता के लिये ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि इसी दिन मानव जाति के एक सबसे अधिक क्रूर युद्ध का अन्त हुआ था।

जर्मन जनवादी गणतंत्र राष्ट्रीय मोर्चा परिषद ने अपनी हाल की बैठक में फासिज्म से मुक्ति की बीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर निम्नलिखित अपील प्रकाशित की है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिको !

८ मई १९६५ के दिन हम जर्मन फासिज्म से अपनी जनता और सभी देशों की जनता की मुक्ति की २०वीं वर्षगांठ मनायेंगे। सोवियत संघ और अन्य हिटलर-विरोधी मित्र देशों की जनता के कुर्बानी भरे संघर्षों की बदौलत विश्व ऐतिहासिक महत्व की यह विजय हासिल हुई है। फासिस्ट जर्मन साम्राज्यवाद की हार एक न्यायपूर्ण हार थी, क्योंकि उसने जो युद्ध छेड़ा था वह पूरी तरह अन्यायपूर्ण था। विश्व पर अपना नेतृत्व जमाने की उसकी योजनायें जनता के हितों और उसकी सीमित राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक संभावनाओं के पूरी तरह खिलाफ थीं।

हम साहसी सोवियत जनता को धन्यवाद देते हैं जिसका हमारी मुक्ति में निर्णायक हाथ था। हम उसके वीरों के सम्मान में अपना सिर झुकाते हैं।

हम उन जर्मन प्रतिरोधी सैनिकों के सम्मान में अपना माथा झुकाते हैं जिन्होंने फासिज्म के खिलाफ निरन्तर लड़ाई चलाकर जर्मन जनता का नाम बचा लिया। ये प्रतिरोधी सैनिक अपने जीवन को जोखिम में डालकर जर्मनी में या जर्मनी से बाहर गैर-कानूनी हा[illegible]त में रहे, कन्सेन्ट्रेन्शन कैम्पों और जेलों [illegible] भयानक अत्याचारों का सामना किया, "[illegible]तंत्र जर्मनी" की राष्ट्रीय समिति में काम कर[illegible]े, युद्ध के [illegible]ोर्चों पर लड़े और इस प्रकार फासिज्म के खिलाफ संघर्ष चलाते रहे।

हम लुटेरे फासिस्ट युद्ध में आहत उन सभी लोगों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिन्हें अनेक देशों के युद्ध-मोर्चों पर अपनी जिन्दगी से हाथ धोना पड़ा, या जो अपने विनष्ट घरों में ही मलवे के नीचे दब गये।

बीस वर्षों में अनेक बातें विस्मृति के गर्भ में दब जाती हैं : कब्रें, बरबादी, भुखमरी और मुसीबतें इसी तरह की बातें हैं। विस्मृति के इन अम्बारों पर अभिशापों और दुआओं, संताप और निराशा की बेलें उग आती हैं। जनता को ठगनेवाले पुराने घाघ इस स्थिति से फायदा उठाने की कोशिश करते हैं। करोड़ों जर्मन जनता ने यह प्रण किया था कि हम भूखे रहेंगे, लेकिन जर्मन भूमि से फिर कभी युद्ध की ज्वाला नहीं धधकने देंगे। क्या हम इस प्रण को भूल जायेंगे?

हम बूढ़ों की कब्रों को भले विस्मृत कर दें, लेकिन नौनिहाल बच्चों के पालनों को कभी विस्मृत नहीं कर सकते!

अपने ऊपर आई राष्ट्रीय विपदा के बाद हमने प्रण किया था कि हम उन लोगों का साथ देंगे जिन्होंने इस विपदा के खिलाफ हमें चेतावनी दी थी और जो इस विपदा के खिलाफ लड़े थे। क्या हम इस प्रण को भी भूल जायेंगे?

जर्मन जनवादी गणतंत्र में हम लोगों ने आवश्यक कदम उठाया है। हमने मजदूर वर्ग की एकता कायम की[illegible], फासि[illegible]स्ट-विरो[illegible]धियों और जनवादियों की [illegible] पक्की [illegible] कायम की है। समस्त आबादी की राजनी[illegible]तिक और नैतिक एकता इसी तरीके से मज़[illegible]बूत होती है।

हमने फासिज्म का सफाया किया [illegible] उद्योगपतियों को सत्ता से वंचित किया [illegible] युद्ध-अपराधियों को सजा दी[illegible] [illegible] को जमीन का मालिक [illegible] जनता के बच्चों के लि[illegible] [illegible] वाजा खोल दिया है। हम[illegible] [illegible] जनता के साथ और सभी देशों की शांतिप्रि[illegible] जनता के साथ दोस्ती कायम की है। ह[illegible] अपने दिलो-दिमाग की पूरी ताकत का इस्[illegible]माल केवल एक मकसद के लिए किया है[illegible]

समृद्ध और शांतिपूर्ण जर्मनी के निर्माण [illegible] लिए! जनता का जर्मनी बनाने के लिए[illegible]

इस प्रकार हमने इतिहास से सबक ले[illegible] योरप में टिकाऊ शांति लाने के लिए भर[illegible] प्रयास करने की ज़िम्मेदारी को पूरा कि[illegible] है।

हमने ध्वस्त घरों को फिर से बसा लि[illegible] है, फैक्टरियों को फिर से चालू कर दिया [illegible] और नई-नई फैक्टरियों का निर्माण किया [illegible] हम शहरों और गांवों की एकता के रास्ते [illegible] चल पड़े हैं। हम एक आधुनिक औद्यो[illegible] राज्य बन गये हैं और मार्क्स तथा एंगेल्स [illegible] जन्मभूमि पर समाजवाद की स्थापना के [illegible] को पूरा कर रहे हैं।

हम किसी से भी बिना किसी झेंप के सीधे खड़े होकर बातें कर सकते हैं। हमने अपनी जिम्मेदारी को पूरा किया है। हमने जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना की है, जो शांति के ध्येय के लिए अर्पित पहला जर्मन राज्य है, जर्मनी के इतिहास में मजदूरों और किसानों का पहला राज्य है। हमने अपने कठोर परिश्रम से इस गणतंत्र को स्वस्थ और बलवान बनाया है। यह राज्य हमारा सुन्दर बसेरा, हमारी प्यारी पितृभूमि बन गया है। भविष्य इसके साथ है—वह भविष्य जिसकी ओर ८ मई १९४५ को हमने बढ़ना शुरू किया था।

पश्चिम जर्मनी के नागरिको !

याद कीजिए कि २० साल पहले आप भी शांतिपूर्ण और जनवादी रास्ते पर आगे बढ़ने की तमन्ना रखते थे। लेकिन इस बीच पश्चिम जर्मनी में एक नये दुखद नाटक की शुरुआत हो गयी है। पराजित उद्योगपति, बड़े भूमिपति और सैन्यवादी द्वितीय विश्व-युद्ध के परिणामों को भुगतना नहीं चाहते। उन्होंने अपनी सत्ता छोड़ी नहीं, बल्कि फिर से उसे हथिया लिया है। उन्हें उन साम्राज्य-वादी देशों का समर्थन प्राप्त हैं जिन्होंने हिट-लर-विरोधी मैत्री के उद्देश्य के साथ और स्वयं अपने देशों की जनता की मांगों के साथ गद्दारी की है। पूरे जर्मनी में जनवादी विकास की धारा को रोकने में असमर्थ होने के बाद जर्मन साम्राज्यवादियों ने एस.पी.डी. के दक्षिणपंथी नेताओं के सहयोग से देश का विभाजन करा दिया है।

उन्होंने जरूरी कामों को पूरा होने से रोक दिया है। उन्होंने मजदूर वर्ग की एकता के रास्ते को अवरुद्ध कर दिया है। उन्होंने अलग मुद्रा का प्रचलन किया है, अलग बोन राज्य बनाया है और उसे आक्रामक उत्तरी अटलांटिक गुट के साथ जोड़ दिया है। उन्होंने शस्त्रीकरण, कम्युनिज्म-विरोध और प्रति-शोध की नीति को राज्य-नीति बना लिया है। वे नाभिकीय शस्त्रों के सम्बन्ध में फैसला करने के अधिकार की मांग करते हैं और जर्मनी की भूमि पर परमाणविक सुरंग लगाना चाहते हैं। उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबंध लगा दिया है और अपने से असहमत सभी लोगों का दमन कर रहे हैं। वे औसविट्ज और रौटरडम के हत्यारों को सजा पाने से बचाना चाहते हैं क्योंकि वे नये युद्ध-अपराधों की तैयारियों में जुटे हुए हैं। वे जनता के दिल और दिमाग पर झूठ का पर्दा डाल रहे हैं। वे इस नारे को लेकर आगे बढ़ रहे हैं : पूरे जर्मनी पर अपना सिक्का नहीं जमा पाने पर हम इस देश को ही नरक बना देंगे।

पश्चिम जर्मनी के नागरिको !

लाखों जनगण ने २० वर्ष पहले प्रण किया था कि हम जन-हत्याकांड की पुनरावृत्ति कभी नहीं होने देंगे। उस प्रण को याद कीजिए और एरहार्ड सरकार की नई युद्ध योजनाओं को विफल बना दीजिये। आपमें इतनी शक्ति है कि आप इस काम को पूरा कर सकें। आप अपनी कतारों को जितनी ज्यादा मजबूती से एकजुट करेंगे, आपका प्रतिरोध जितना ज्यादा शक्तिशाली होगा, नया युद्ध विश्व छेड़ने की जर्मन साम्राज्य-वादियों की ताकत उतनी ही ज्यादा कम-जोर होगी।

उत्तरी सागर और आल्प्स के बीच, एल्बे और राइन के बीच रहने वाले नागरिक दिनोंदिन अधिकाधिक संख्या में यह सम-झने लगे हैं कि जर्मनी का एकीकरण शांति, तनावों में कमी और जर्मनी के निःशस्त्रीकरण के रास्ते से ही संभव है। इस रास्ते पर कदम रखने की पहली शर्त यह है कि दोनों जर्मन सरकारों के बीच समानता के आधार पर बातचीत चलायी जाय, दो जर्मन राज्यों के सम्बंधों को स्वाभाविक बनाया जाय।

एल्बे के पार की जनता दिनोंदिन यह समझने लगी है कि परमाणविक सुरंगें नवीन जर्मनी के निर्माण की हमारी आशाओं को धूल में मिला देंगी, शांतिमय वातावरण में हंसी-खुशी के साथ रहने की समस्त जर्मन जनता की आकांक्षा को बारूद से उड़ा देंगी।

२० साल पहले हमारी यही आकांक्षा थी। आज भी हमारा यही लक्ष्य है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिको !

अपने दिल, दिमाग और हाथों का इस तरह से उपयोग कीजिए जिससे कि हम और भी अच्छा उत्पादन कर सकें, और भी ज्यादा अच्छी फसलें काट सकें और ज्ञान तथा कला के क्षेत्र को और ज्यादा फैला सकें।

अपने गणतंत्र की हिफाजत के लिए दोस्त से दोस्ती बनाये रखिए, दुश्मन को किसी प्रकार का मौका मत दीजिये।

८ मई १९४५ को आशा की जो किरण फूटी थी, उसने जर्मन जनवादी गणतंत्र का रूप धारण कर लिया है। इसके साथ जर्मनी का भविष्य जुड़ा हुआ है। इसके उदाहरण से और करोड़ों जनता के संकल्प और कार्य-कलाप से जनता के सपने साकार होंगे और उनकी आशाएं फलीभूत होंगी! ... और शांतिपूर्ण जर्मनी के निर्माण ... !

वियतनाम जनवादी गणतंत्र पर अमरीकी हमले की ज.ज.ग. सरकार द्वारा निंदा

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने एक बयान निकाल कर वियतनाम जनवादी गण-तंत्र पर अमरीकी आक्रमण की निन्दा की है।

बयान में आक्रमण की कार्रवाइयों को तुरन्त रोक देने की मांग की गयी है। उसमें जोर देकर कहा गया है कि ज. ज. ग. की सरकार पूरी तरह से वियतनाम जनवादी गणतंत्र के साथ है और वह अपनी स्वतंत्रता के लिए बहादुरी से लड़नेवाली दक्षिण वियतनाम की जनता का समर्थन करती है।

वियतनाम स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र के राजदूत डब्ल्यू. बरगोल्ड ने वियतनाम जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्रालय को इस बयान की एक प्रति दे दी है।
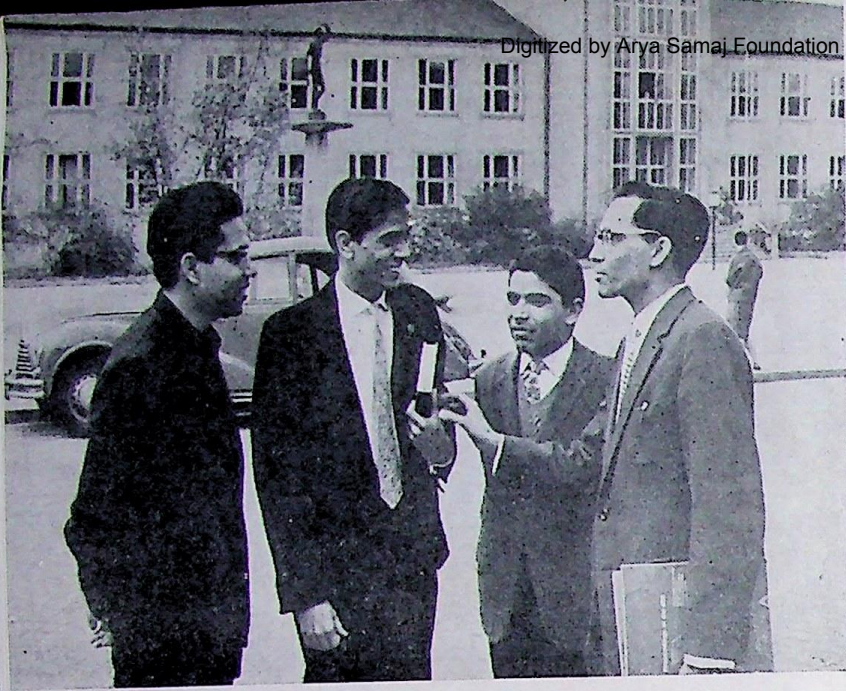
ड्रेस्डन तकनीकी विश्वविद्यालय में अध्ययन करने वाले ये भारतीय छात्र स्नातकोत्तर डिग्रियां ले कर लौटेंगे।

ज. ज. ग. में

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार तथा समस्त जनता नये स्वतन्त्र राज्यों की प्रगति में अत्यन्त रुचि लेती है। इस रुचि की स्पष्ट अभिव्यक्ति जर्मन जनवादी गणतंत्र के उन महान भाईचारे और सहायता कार्यों से ही हो गयी थी जो साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद से छुटकारे के लिए अफ़्रीका, एशिया तथा लैटिन अमरीका की जनता के संघर्ष के हित में किये गये थे। चाहे अल्जीरिया हो, मिश्र या क्यूबा हो, या आजकल का अंगोला, मोजाम्बिक या दक्षिण अफ़्रीका हो–जर्मन जनवादी गणतंत्र हमेशा स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने वाले लोगों के पक्ष में रहा है। अल्जीरिया, क्यूबा, तथा साईप्रस को जर्मन जनवादी गणतंत्र से दवाइयां, मशीनें तथा अन्य सामान इसी दृष्टिकोण से भेजे जा चुके हैं। साम्राज्यवादी आक्रमणकारियों के विरुद्ध लड़ाई में घायल होने वाले क्यूबाई सिपाहियों को जर्मन जनवादी गणतंत्र में हर संभव चिकित्सा द्वारा पुनः स्वस्थ किया गया। साईप्रस के घायल सिपाही आज भी जर्मन जनवादी गणतंत्र के अस्पतालों में चिकित्सा प्राप्त कर रहे हैं।

नवस्वतंत्र राज्यों को उपनिवेशवादी विरासत से मुक्ति दिलाने में जर्मन जनवादी गणतंत्र ने हमेशा निस्वार्थ मैत्रीपूर्ण सहायता दी है। उदाहरण के रूप में, बाहर भे[illegible] गए सम्पूर्ण कारखानों को लिया जा सकता है जैसे गिनी का राष्ट्रीय छापाखाना, जनजीवार में निवास-स्थान स्थापना तथा स्कूलों व अस्पतालों का निर्माण, इत्यादि। इसके साथ ही निरन्तर विस्तृत [illegible]ते औद्योगीकरण के लिए विशेषज्ञों के उच्चतर प्रशिक्षण में ज़. ज. [illegible]

ऊपर: भारतीय अमली शिक्षार्थी ज.ज.ग. के प्रशिक्षक के कुशल निर्देशों को ध्यान से सुन रहे हैं।

नीचे: भारतीय अनुसंधान–छात्र जर्मन विशेषज्ञ [illegible] के परामर्श का लाभ उठाते हुए।
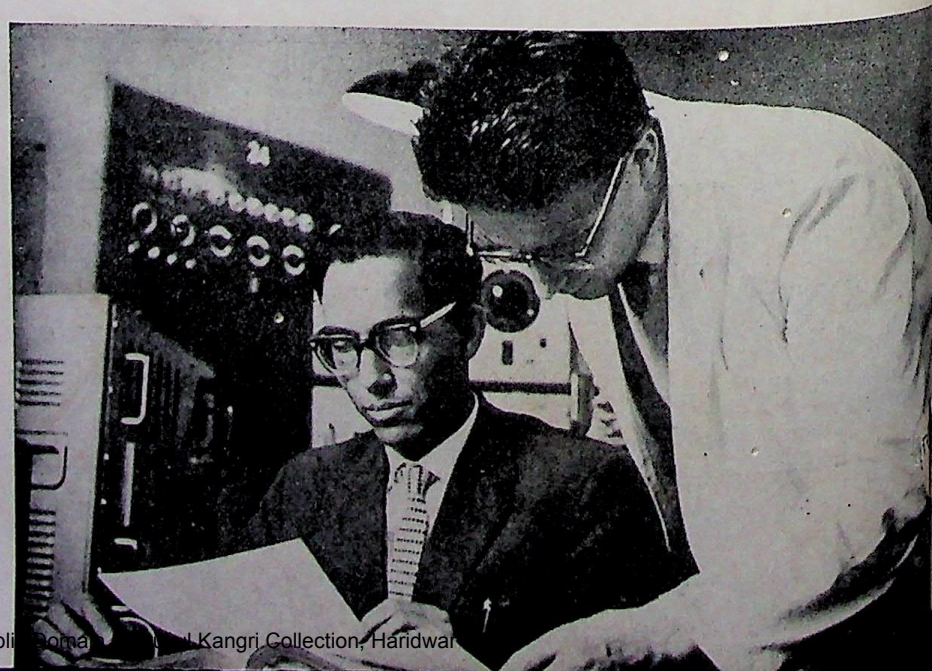
...के विद्यार्थीगण

नए स्वतंत्र राज्यों की हर प्रकार से सहायता करता है। ज. ज. ग. तथा सम्बद्ध देशों में सरकारी समझौतों के अन्तर्गत विद्यार्थी तथा दक्ष कारीगर जर्मन जनवादी गणतंत्र में पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं और अपने व्यवसायों में पूर्ण प्रवीण होकर अपने देशों को लौटते हैं।

उदाहरण के लिए, आजकल ९८ देशों के ३००० से ऊपर विद्यार्थी जर्मन जनवादी गणतंत्र के ४० से अधिक विश्वविद्यालयों तथा कालिजों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। निःशुल्क शिक्षा के अतिरिक्त इन विद्यार्थियों को अनुदान स्वरूप इतना धन मिल जाता है कि

ज. ज. ग. के डाक्टर के साथ अफ्रीकी नर्सें। यह डाक्टर इन नर्सों को प्रशिक्षित करती हैं।

वे शिक्षाकाल में समाजवादी ज. ज. ग. के विद्यार्थियों की भांति सभी सुविधाएं प्राप्त कर लेते हैं। मिसाल के लिए ७० से अधिक भारतीय वैज्ञानिकों ने ज. ज. ग. में डाक्टर की डिग्री प्राप्त की और आजकल वे अपने देश के वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक क्षेत्रों में विभिन्न पदों पर नियुक्त हैं।

कुशल कर्मचारियों को हर क्षेत्र में उनके देशों की आवश्यकता तथा इच्छानुसार सुशिक्षित किया जाता है। अनुभवी प्रवीण शिल्पी तथा इंजीनियर उन्हें प्रशिक्षित करते हैं और वे कुशल कारीगरों के रूप में राज्यीय प्रमाण-पत्रों सहित अपने देशों को वापिस लौटते हैं।

शिक्षा अथवा विशेष प्रशिक्षण काल में हमारे ये अतिथि अपने आपको कदाचित विदेश में अनुभव नहीं करते। जनता तथा सहपाठियों के साथ निकट मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के कारण वे बिल्कुल भूल जाते हैं कि वे अपने देश से हजारों किलोमिटर की दूरी पर वर्षों के लिए रहने आये हैं।

ऊपर : जंजीबार में ज.ज.ग. द्वारा निर्मित रिहायशी मकानों के निर्माण का काम संतोषपूर्ण ढंग से चल रहा है।

नीचे : अफ्रीका का एक अमली शिक्षार्थी प्रशिक्षक की बातें ध्यान से सुन रहा है।

रोस्टाक—वारनो नदी पर एक चमत्कार

बहुत से यात्री जो रोस्टाक में पहली बार आते हैं, उनके विचार म्यूनिख के पत्र सुअड्युत्शे जीटुंग के संवाददाता के विचारों से मिलते-जुलते हैं। रोस्टाक के बारे में इस संवाददाता ने हाल ही में "वारनो नदी पर समाजवादी एकता पार्टी (एस. ई. डी.) के चमत्कार" के विषय में लिखा था।

यह पुराना लोकप्रिय बन्दरगाह तथा प्रसिद्ध हैंसियाटिक नगर वारनो के मुहाने पर स्थित है। यहां तंग मैक्लेनबर्ग नदी की नाव के विशाल पेट में चली जाती है। इस घाट-नाव को वानमुएन्दे भी कहते हैं। इसका निर्माण रोस्टाक के नैपच्यून पोत-प्रांगण में हुआ था। ज. ज. ग. के सबसे बड़े इस बन्दरगाह तथा जलयान निर्माण के महान नगर की वर्तमान जनसंख्या लगभग १,६५,००० है। १९४५ में यहां के नागरिकों की कुल संख्या एक लाख से भी कम थी। आज एक सुन्दर, स्वच्छ तथा आधुनिक नगर के रूप में रोस्टाक का विकास हो चुका है।

बन्दरगाह के दृश्य सहित रोस्टाक का लांगे स्ट्रास

चौड़ाई फैलते-फैलते ड्रेस्डन के निकट बहने वाली एल्ब नदी के बराबर हो जाती है। रौस्टाक की नींव सन १२१८ में पड़ी थी।

ज. ज. ग. की राजधानी यहां से २५० किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में है। कोपेनहेगन को जाने वाली जर्मन रेलवे की अत्यंत आधुनिक डीजल गाड़ी नैपच्यून एक्सप्रेस इस [illegible]रा को केवल तीन घंटे में पार कर लेती है। [illegible] रोस्टाक मुख्य लाईन पर चलने वाली [illegible] वार्नेमुएन्दे पहुंच कर श्वेत घाट-[illegible]

१९६८ में रोस्टाक अपनी ७५०वीं वर्षगांठ मनायेगा। आज भी यह नगर हैंसियाटिक काल की विशेषताओं को सुरक्षित रखे हुए है। पिछले युद्ध के बम उत्तर जर्मनी की लाल ईंट के गौथिक शिल्प के इस नमूने की हैंसियाटिक विशेषताओं को समाप्त नहीं कर सके। १४वीं तथा १५वीं शताब्दी में भी रोस्टाक आर्थिक रूप से विकासमान अवस्था में था। उन दिनों इस हैंसियाटिक नगर रोस्टाक के सम्बन्ध में रुअगेन द्वीप, उत्तर में बर्गन तथा फ्लैण्डर्स में ब्रुगेस से लेकर लिस्बन तथा सेविले तक फैले हुये थे। लगभग उन्हीं दिनों १४१९ में स्थापित रोस्टाक विश्वविद्यालय की मानववादी शिक्षाओं का उत्तरी देशों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

मैक्लेनबर्ग के अभिजात वर्ग की लड़ाईयों तथा उनके राजवंशीय झगड़ों ने रोस्टाक को एक महत्वहीन बन्दरगाह बना डाला। १९वीं शताब्दी के मध्य में ३४४ [illegible]यानों वाले बेड़े के साथ रोस्टाक एक बा[illegible] फिर हैम्बर्ग के बाद जर्मनी का सबसे बड़ा बन्दरगाह [illegible] गया। नैपच्यून पोत-प्रांगण में कार्य, जिसकी नींव १८५० में पड़ी और जहां जर्मनी का पहला लौह-पेच स्टीमर तैयार हुआ, उन दिनों रोस्टाक का एकमात्र उद्योग था। तत्पश्चात नाजी काल में कुख्यात हीनकल वायुयान कारखाना खोला गया [illegible] परन्तु युद्ध में अंग्रेज-अमरीकी हवाई [illegible] हमलों के कारण यह उद्योग तथा ४० [illegible] तिशत नग[illegible] विस्फोटक बमों के शिकार हो [illegible] गये।

और फिर सचमुच एक चमत्कार हुआ। वे विकास कार्य जिन्हें पूरा करने में उत्तर-पश्चिम जर्मनी के नियोजकों को ५० वर्ष लगे, रोस्टाक तथा उत्तर-पूर्वी जर्मनी में केवल ८ वर्ष में सफलतापूर्वक सम्पूर्ण कर लिये गये। इस थोड़े से समय में जलयान-निर्माण, नौचालन तथा ज. ज. ग. के पूरे बाल्टिक प्रदेश के लिए समुद्री मत्स्यहरण की नींव डाली गई।

ज. ज. ग. के पांच बड़े पोत-प्रांगणों में से दो रोस्टाक में हैं। इन दोनों में बड़ा वार्नमुएन्दे स्थित वारनो पोत-प्रांगण है। यहां ६००० व्यक्ति काम करते हैं। इसकी ६५ मीटर ऊंची तार-क्रेनों को दूर ही से देखा जा सकता है। यहां का २०,००० वर्ग मीटर का जलयान निर्माण कारखाना योरप में सबसे बड़ा है। आरम्भ में २४००० जी. आर. टी. तक वाले जयलान यहां पुनर्निर्मित होते थे। पुनर्निर्माण काल का अंतिम ज[illegible]
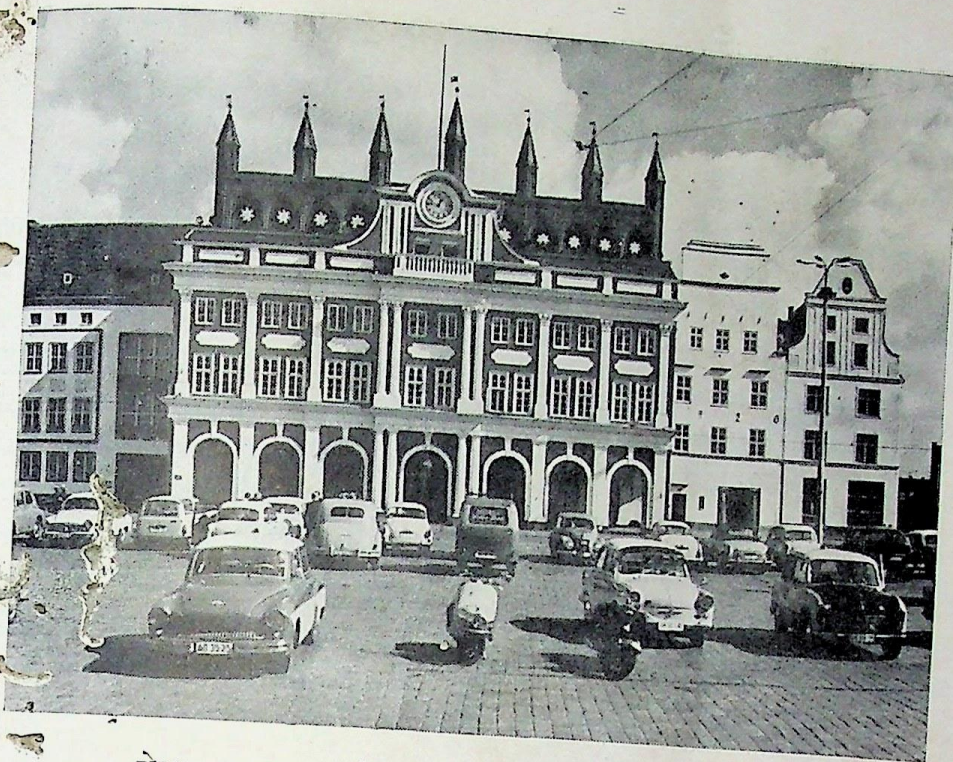
रोस्टाक का टाउनहाल जो अपने पुराने सौन्दर्य सहित फिर खड़ा हुआ है।

यान २२००० जी. आर. टी. का व्हेलर था।

१९५२ में दूसरे पोत-प्रांगण की पूर्ति पर यात्री-जलयानों, ७००० टन से १३००० टन सामान ले जाने वाले भारवाहक-जलयानों, का निर्माण आरम्भ हो गया। १२ से लेकर बारह इस्पाती भीमाकार जहाजों का निर्माण प्रति वर्ष चार जलावतरण स्थानों पर होता है। पुराने नैपच्युन पोत-प्रांगण का भी विस्तार तथा नवीनीकरण किया गया है। यहां ४००० से ५००० टन भार वाले भारवाहक-जहाजों को अवतरित किया जाता है तथा नाव-गाड़ियों, अनुसंधान-जलपोतों तथा अन्य विशेष जहाजों का निर्माण भी होता है। इन दोनों पोत-प्रांगणों पर निर्मित बड़े जलयान ज. ज. ग. के व्यापारी बेड़े की नींव हैं। ये जलयान सोवियत संघ, चीन, क्यूबा, नार्वे, पश्चिम जर्मनी तथा इंग्लैंड को निर्यात भी किये जाते हैं।

किसी समय रोस्टाक के सात चर्च शिखर यहां के सीमा चिन्ह समझे जाते थे। इनमें से युद्ध के पश्चात कुछ ही बचे। आज जर्मनी की नौविहार कम्पनी द्युत्शे सीरीदराई का नौचालन गृह, ऊंचाईयों को छूते हुए इस्पात, शीशे तथा कंक्रीट के अपने धुंधले छायाचित्र सहित तथा यहां की पुरानी बन्दरगाह, रोस्टाक के नये सीमा चिन्ह हैं। यह संसार के सभी देशों के जलयानस्वामियों तथा क्रय-दूतों के मिलने का स्थान है।

१२ वर्ष पूर्व, १९०३ का बना हुआ १२५० टन का केवल एक स्टीमर "वोखर्टस" ज.ज.ग. के झंडे तले चल रहा था। १ सितम्बर १९६४ को १०४वां जलयान दयुत्शे सीरीदराई के अन्तर्गत चलने लगा। ६,४४,८०६ टन के भारवाहक तथा २०,५६२ टन के दो यात्री जलयानों के साथ दयुत्शे सीरीदराई की गिनती इस समय योरप के सबसे बड़े जलयान उद्यमों में होती है। १९७० तक ज. ज. ग. का बेड़ा दुगना बड़ा हो जायगा तथा इसकी टन भार क्षमता १०,२०,००० होगी। इस समय तक ज. ज. ग. के झंडे तले चलने वाले जलयान संसार के ४२० बन्दरगाहों पर लंगर डालते हैं। सोवियत संघ, फिनलैण्ड, हालैण्ड, बैल्जियम, ग्रेट ब्रिटेन तथा भूमध्य सागर एवं काला सागर के देशों, पश्चिमी तथा पूर्वी अफ्रीका, क्यूबा तथा भारत, लैटिन अमरीका तथा दूर पूर्व के देशों के साथ हमारा नियमित यातायात है। दयुत्शे सीरीदराई के सम्बंध संसार की चारों दिशाओं में २५० नौचालन एजेंसियों के साथ हैं।

स्वभावतः ही रोस्टाक का पुराना बन्दरगाह अब पर्याप्त नहीं। नये बन्दरगाह का काम १९५७ में आरम्भ हुआ था और कुछ ही महीनों में बाल्टिक का नया मार्ग खुल गया तथा तीसरा पूर्वी बंगसार (पायर) सम्पूर्ण हो गया। अब ३५००० टन वाले जलयान सीधे

(शेष पृष्ठ १७ पर)
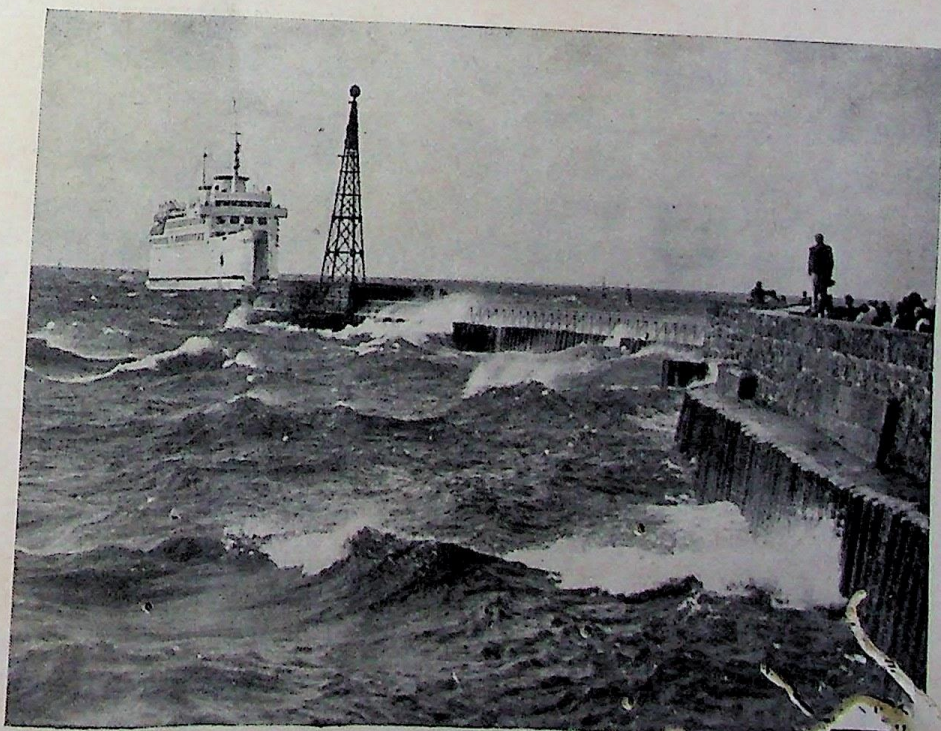
वेर्नेमुएन्दे का 'पायर'

ज. ज. ग. में संस्कृत का अध्ययन

प्रो० डॉक्टर डब्ल्यू रूबेन

ज. ज. ग. के अधिकतर युवा भारतविद अब आधुनिक भारतीय विषयों के विशेषज्ञ बन गये हैं। लेकिन ज. ज. ग. के पांचों विश्वविद्यालयों में संस्कृत का अध्ययन पहले की ही भांति बड़े पैमाने पर किया जाता है। इस तथ्य से सभी लोग परिचित हैं कि पिछले १५० वर्षों में संस्कृत के अध्ययन में जर्मनी का योग महत्वपूर्ण रहा है। लाइपजिक विश्वविद्यालय के प्रोफसर डाक्टर एफ. वेलेर संस्कृत पाठों के शोधन और कठोपनिषद जैसे ग्रंथों की टीका करने में विश्वप्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। इसी विश्वविद्यालय के डा. मेहलिग महाकाव्यों और आचारशास्त्र की पुस्तकों की सामग्री के आधार पर धार्मिक इतिहास की समस्या पर काम कर रहे हैं। हाले विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डाक्टर के. अम्मेर लगन के साथ अपने विद्यार्थियों को वैदिक संस्कृत से लेकर हिन्दी तक भारतीय भाषाएं पढ़ाते हैं। इसी तरह प्रोफेसर डा. आर. होसचाइल्ड ने प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान थुम्ब के संस्कृत पाठ्य का संशोधित संस्करण प्रकाशित कराया है। ग्रीफ्सवाल्ड विश्वविद्यालय में डाक्टर मार्गेनरौथ अपने विद्यार्थियों को भारतीय भाषाओं का इतिहास पढ़ाते हैं। छन्दोग्योपनिषद् पर उन्होंने विशेष काम किया है। रोस्टाक के प्रोफेसर डा. जेनसेन अब अवकाश ग्रहण कर चुके हैं, लेकिन उनके शिष्य डा. ए. फास पाली भाषा का एक वृहद कोश तैयार कर रहे हैं। बर्लिन के प्रोफेसर डा. डब्ल्यू. रूबेन ने दशकुमारचरित, मुद्राराक्षस और पंचतंत्र की नई टीका तैयार की है। उनके एक शिष्य सिलबस्टीन ने भाषा पर निबंध तैयार किया है और दूसरे दो शिष्य, ई. रिश्चल और एम. पूचेद्लिच कौटिल्य अर्थशास्त्र के आधार पर कृषि, शिल्प और [illegible]पार की समस्याओं के सम्बंध में निबंध तैय[illegible] कर रहे हैं। इनके अलावा, ऐनसिडे[illegible] के एक [illegible]चिकित्सा-शास्त्री डॉक्टर आर. मुलर के प्राचीन भारतीय औषधियों के सम्बंध में अनेक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। हाले विश्वविद्यालय में प्रोफेसर डॉ. एच. मोडे भारतीय पुरातत्व और कला के इतिहास पर अनुसंधान कर रहे हैं। इस विषय पर उनके दो शिष्यों के खोजपूर्ण लेख प्रकाशित हो चुके हैं। प्रोफेसर डॉ. आर. वाल्डश्चमिट और उनके शिष्य तुर्किस्तान से प्राप्त कुछ बौद्ध-कालीन पांडुलिपियों पर जर्मन विज्ञान अकादेमी की ओर से काम कर रहे हैं। ज. ज. ग. की राजधानी बर्लिन से उनकी शोधपूर्ण रचनाएं प्रकाशित हुई हैं।

संस्कृत साहित्य पर इन शोध-कार्यों के अलावा अब नये-नये विषयों को भी शोध के लिए चुना जाने लगा है। प्राचीन भारत की भाषा, साहित्य और इतिहास सम्बंधी कार्यों की विशालता को देखते हुए हमारे इस छोटे राज्य में संस्कृतविदों की संख्या काफी कम है। अतएव हमें विषयों का चुनाव करते समय इस बात को सदा ध्यान में रखना पड़ता है कि प्राचीन भारत के कौन से विषय आधुनिक भारत की समस्याओं को समझने और उसके प्रगतिशील विकास को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे।

उदाहरण के लिए, साहित्य के क्षेत्र में आधुनिक भारत के यथार्थवादी साहित्य की पृष्ठभूमि को समझने के लिए प्राचीन भारत के उन साहित्यक ग्रंथों का अध्ययन जरूरी है जिनमें खास ढंग की धार्मिक शैली में सामाजिक विषमताएं मुखरित हुई हैं। बौद्ध जातकों, भर्तृहरि के श्लोकों, प्रसिद्ध नाटक मृच्छकटिक और महाकाव्यों के कुछ स्थलों में हमें इसी प्रकार की यथार्थवादिता के दर्शन होते हैं। वामन ने इसे सैद्धान्तिक तौर पर सिद्ध भी कर दिया है। इसी तरह टैगोर साहित्य के मानवतावाद की कड़ियां कालिदास की रचनाओं के साथ जुड़ी हुई हैं (उसी तरह जैसे कि गेटे की रचनाओं की कड़ियां प्राचीन ग्रीक रचनाओं के साथ)। राम, युधिष्ठिर और कृष्ण सम्बंधी कथाओं में नगरों के अन्याय के खिलाफ वनवासी आदर्शवादी की रोमान्टिक विद्रोह भाव[illegible] अभिव्यक्त हुई है। मध्ययुग की अनेक कथाओं में अभिव्यक्त होती हुई विद्रोह की यह भावना बंकिम चटर्जी के उपन्यास **आनन्दमठ** (१८८२) और **देवी चौधरानी** (१८८४) तक पहुंच गयी [illegible]। इस प्रकार की कथा वस्तुओं के उपमा[illegible] हमें योरपीय साहित्य में दिखाई नहीं देते। इससे [illegible] सिद्ध हो जाता है कि ये कथावस्तु[illegible] भारत की अपनी विशेषताएं हैं।

धर्म और नैतिकता के क्षेत्र में हमें बुद्ध से लेकर गांधी तक एक अटूट श्रृंखला दिखाई देती हैं। उनकी रचनाओं में कमोवेश राजनीतिक परिधान में लोकप्रिय सुध[illegible] आन्दोलनों की गूंज सुनाई देती है। [illegible] वर्तमान भारत में गांधी, तिलक, विवेकानन्द और [illegible] अनुयाइयों की जनसेवा के [illegible]विचार [illegible]पकारी भावना से प्रभावित हैं। प्रसिद्ध राजा विक्रम

बर्लिन का हम्बोल्ट विश्वविद्यालय [illegible] संस्कृति के अध्यापन की पुरानी परम[illegible]

बोधिसत्वों और प्राचीन भारत के अन्य महापुरुषों की त्यागमय जीवन-कथाएं इस विचार के प्रेरणास्रोत हैं । भारत गण-राज्य के चिन्तन को नई दिशा प्रदान करने में इस विचारधारा की काफी महत्वपूर्ण भूमिका है ।

राजनीतिक क्षेत्र में प्राचीन भारत के जनपदों की समृद्ध परम्पराओं को आधुनिक भारत की जनतांत्रिक प्रणाली का प्रेरणा-स्रोत माना जा सकता है । प्रसिद्ध इतिहास-कार स्वर्गीय जायसवाल ने अपनी पुस्तक में इस पहलू पर प्रकाश डाला है । विभिन्न जन-पदों और राजघरानों के सदियों तक चलने-वाले संघर्ष के फलस्वरूप प्राचीन यूनानी इतिहास की रचना हुई । भारत के प्राचीन इतिहास की रचना प्रक्रिया भी कुछ इसी प्रकार की है । लेकिन इस प्रकार की तुलना करते समय हमें भारत और यूनान की परि-स्थितियों की भिन्नता को भुला नहीं देना चाहिए । सच तो यह है कि दोनों की समान बातों का अध्ययन करने से ही हमें भारत की विशिष्टता का पता चल सकता है । लेकिन यह काम भारतविदों का है । जिस तरह मैसेडोनि[illegible]न-पंथी केन्द्रीकृत राज्य में विकसित हुआ, उसी तरह भारत के इस्लामी राज्य भी शक्तिशाली मुगल साम्राज्य में विकसित हुए । प्राचीन भारत में मगध के शक्तिशाली राज्य और मौर्यवंश के साम्राज्य के उत्थान की कहानी भी इसी प्रकार की है । अतएव आधुनिक भारत में आर्थिक और राजनीतिक केन्द्रीकरण के लिए आज जो प्रयास हो रहा है, उसके पीछे महती परम्परा के सबल हाथों को देखा जा सकता है ।

हमारे विद्वान किस तरह के विषयों पर अनुसंधान कर रहे हैं, उसके ये दो-चार उदा-हरण हैं । उनके कुछ शोध-कार्य प्रकाशित हो चुके हैं और कुछ प्रकाशन के लिए तैयार हो रहे हैं । पर इतने से ही ज. ज. ग. में संस्कृत विद्या के अध्ययन की नई दिशा का स्पष्ट संकेत मिल जाता है । यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार के अध्ययन से दोनों देशों के बीच की सद्भावना उत्तरोत्तर बढ़ती जायगी ।

रोस्टाक—वारनो नदी पर एक चमत्कार

(शेष पृष्ठ १५ का)

समुद्री मार्ग से गोदियों को जा सकते हैं । ढाई वर्ष के अल्पतम निर्माण-समय के पश्चात १०,०००टन के पहले जलयान ने १ मई १९६० को गोदी "बी" पर लंगर डाला । सितम्बर १९६४ में १ लाखवीं वैगन इस नये बन्दरगाह पर खाली हुई तथा भरी गई । कुल टनभार यानान्तरण १९६० के ४,७१,००० टन से बढ़ कर १९६३ में ५०,१०,००० टन हो गया । १९७० में यह क्षमता ९० लाख टन से भी अधिक हो जायेगी ।

यहां १,२०,००० टन वार्षिक मत्स्यहरण होता है । इस समय मत्स्यहरण क्षमता को दुगना किया जा रहा है । इस बेड़े में कुछ आधार-पोत नये तथा रसदपोत सम्मिलित होने वाले हैं । तट-कम्बाइन में नवीन उतराई व्यवस्था, ठंडा गोदाम, स्टोर कारखाने तथा सामाजिक सुविधायें जुटाई जायेंगी ताकि १९७० में केवल रोस्टाक से लगभग ३००,००० टन मछली प्रशीतन गृहों, विधायन तथा डिब्बा-बन्दी स्थानों या ठंडे गोदामों में ले जाई जायें ।

यह आज का रोस्टाक है । एक जीवनमय और व्यस्त औद्योगिक नगर जो सारे संसार को आमंत्रण देता है । वह सब जो १९४५ में असम्भव जान पड़ता था आज वास्तविकता ग्रहण कर चुका है । रोस्टाक के विकास ने हैंसियाटिक काल के स्वर्ण-युग को भी मात कर दिया है । पोत-प्रांगणों, पोत-आश्रय, मत्स्यहरण कम्बाईन तथा व्यापारी बेड़े के अतिरिक्त सहायक उद्यमों का एक जाल सा बिछ गया है, जैसे बिजली के कारखाने तथा इलैक्ट्रानिक उद्योग, प्रशीतन, मत्स्य-विधायन तथा इंजिन फैक्टरियां आदि । शीशे की विशाल दीवारोंवाले इस्पात तथा कंक्रीट के बने डीजल इंजन बनाने वाले कारखानों ने १९५८ से १९६२ तक २,३४९ डीजल इंजन तैयार किये जिनकी कुल अश्व-शक्ति ५,११,००० है । इस समय ५००० से १०,००० अश्व-शक्ति वाले इंजिन जलयानों के लिए तैयार किये जा रहे हैं ।

और रोस्टाक की जनता ? यदि कोई यात्री साहसपूर्ण अभिकल्प के इस नमूने का चक्कर लगाये तो उसे पुरानी बमबारी का निशान तक न मिलेगा । नगर केन्द्र का पुनर्निर्माण किया गया है । पुरानी तंग गलियां अब कहीं दिखाई नहीं देती । उनकी जगह नई खुली दो-मार्गी सड़कों ने ले ली है । शहर की मुख्य सड़क—"लांगे स्ट्रास"—के दोनों ओर नये सुन्दर मकानों की कतारें खड़ी हैं । ये मकान यद्यपि आधुनिक हैं फिर भी इनमें उत्तर जर्मनी के गौथिक लालईंट शिल्प की विशेषताओं की झलकियां मौजूद हैं ।

तीन बिल्कुल नये रिहायशी क्षेत्र तैयार किये गये हैं । लगभग १५००० नये मकान बनाये गये जिन पर व्यावहारिक रूप में कुछ भी समय नहीं लगा । परन्तु इतने मकान भी पर्याप्त नहीं । इसलिए १९६५ के भवन निर्माण कार्यक्रम में ५६००० नागरिकों के लिये रोस्टाक के नये रिहायशी क्षेत्र वर्नेमुएन्दे आटो बाहन में मकान तैयार किये जायेंगे । और रोस्टाक में शिशुओं के जन्म की दर ज. ज. ग. में चूंकि सबसे अधिक है इसलिए समुचित संख्या में बाल-विहार, शिशुशालायें, स्कूलोपरांत क्लब, खेल के मैदान तथा स्कूल बनाये गये ।

अपने शासन के बारह वर्षों में नाजियों ने केवल एक स्कूल खोला था । परन्तु १९४५ से अब तक रोस्टाक में २४ नये स्कूल खुल चुके हैं ।

सुप्रसिद्ध एल्मा मातेर विश्वविद्यालय में नये विकास हुये हैं । १९४६ में जब यह विश्वविद्यालय दुबारा खुला उस समय इसमें ८८२ विद्यार्थी थे । इन्हें पढ़ानेवाले प्रोफेसरों व प्राध्यापकों आदि की संख्या ८३ थी । १९६३ में यहां ७ नये विभाग खोले गये जिनमें दो तो बिल्कुल नये थे । ये दो नये विभाग इंजीनियरिंग-विभाग तथा पोत-निर्माण-विभाग थे । छ्यािर्थियों की संख्या बढ़कर ४५०० तथा प्रोफेसरों व प्रध्यापकों की संख्या ३१९ हो गई ।

सरकार रोस्टाक विश्वविद्यालय को प्रति वर्ष ७,००,००,००० मार्क देती है । यहां १२ निदानगृह हैं तथा आठ चिकित्सा-संस्थान हैं । इनमें से अधिकतर तो बहुत बड़ी लागत से नये तैयार हुये हैं । इस विश्वविद्यालय की गणना जर्मनी के अत्यन्त महत्वपूर्ण विश्व-विद्यालयों में है । अन्य सुविधाओं के अति-रिक्त यहां इंजीनियरों तथा नौका कप्तानों के लिए प्रशिक्षण कालेज भी हैं ।

रोस्टोक में तीन थियेटर हैं जो रंगमंच-प्रेनिमयों का मनोरंजन करते हैं । वर्नस्टोर्फ वन में एक आकर्षक उपवन तथा एक चिड़ियाघर बनाया गया है । यहां एक स्टेडियम बनाया गया है जिसमें ३०,००० दर्शकों के बैठने की व्यवस्था है ।

रोस्टाक के नागरिक जानते हैं कि उन के आज के स्वप्न कल साकार हो जायेंगे । उन्हें अपने नगर तथा अपनी सरकार से प्रेम है जिसने "वारनो के चमत्कार" को साकार करने में उनकी सहायता की है ।

कैंसर का नियंत्रण और उपचार

डियेट्रिच हौप, एम. डी.

कैंसर जैसे भयानक रोग को नियंत्रण में रखने के लिए ज. ज. ग. में क्या किया जा रहा है ? इसके लिए शुरू में ही इस रोग का पता लगा लेना जरूरी है । अतएव पिछले दस वर्षों में ज. ज. ग. की फैक्टरियों, वर्कशापों और दफ्तरों में कैंसर रोग-निरोधक जांच केन्द्र खोले गये हैं, खास तौर से उन स्थानों में जहां अधिकतर संख्या में स्त्रियां काम करती हैं । साल में कम से कम एक बार यहां स्त्रियों की स्त्री-रोग सम्बंधी और स्तनीय ग्लैंडों की जांच की जाती है । अधिकतर स्त्रियों को कैंसर अमाशय में या स्तन पर ही होता है । आरम्भ में इस प्रकार की डॉक्टरी जांच को स्त्रियों ने पसन्द नहीं किया । उदाहरण के लिए, लाइपजिक लैम्प फैक्ट्री में ६०० स्त्रियां काम करती हैं, पर उनमें से केवल ७५ स्त्रियां पहली बार जांच कराने के लिए राजी हुईं । इस जांच में तीन ऐसी स्त्रियां मिलीं जिनकी गर्भाशय नली में नासूर पाया गया । सौभाग्य की बात यह थी कि वे स्त्रियां उपचार के बाद शीघ्र चंगी हो गयीं । लेकिन इस घटना के बाद दूसरी स्त्रियां डर गयीं और उन्होंने डाक्टरी जांच में पूरा सहयोग देना शुरू कर दिया ।

ज. ज. ग. में कैंसर के सभी रोगियों को जरूरी तौर पर अपने नामों को रजिस्टर कराना होता है । जिन्हें एक बार यह घातक रोग हो जाता है, उन्हें लगातार पांच वर्षों तक डाक्टरों की निगरानी में रहना होता है । प्रत्येक डॉक्टर के लिए भी यह जरूरी होता है कि वह इसकी सूचना तुरन्त उचित अधिकारियों के पास भेज दे । कैंसर के बड़े या छोटे फोड़ों के तरह-तरह से उपचार किये जाते हैं । सभी शहरी और ग्रामीण जिलों में कैंसर रोगियों की देखभाल के लिए केन्द्र स्थापित किये गये हैं । रोग की स्थिति की पूरी जानकारी के लिए अलग-अलग मरीजों की पूरी रिपोर्ट इन केन्द्रों में भेज दी जाती है । इन केन्द्रों में नियुक्त अफ़सर रोगियों के घर की स्थिति को देखते और अस्पताल से निकलने के बाद उन के निरन्तर उपचार की व्यवस्था करते हैं । कभी-कभी इन रोगियों को अधिक शारीरिक श्रम से बचाने के लिए एक काम से हटा कर दूसरे काम पर लगाने की व्यवस्था भी की जाती है ।

आरम्भ में ही इस रोग का पता लगा लेना ज. ज. ग. के स्वास्थ्य विभाग का मुख्य कर्तव्य माना जाता है । अनिवार्य वार्षिक सीना-परीक्षण से अब न सिर्फ यक्ष्मा रोग का, बल्कि प्रश्वास नली के नासूर का भी पता चल जाता है । खानों में, खास तौर से जमीन के नीचे काम करने वाले मजदूरों में, प्रश्वास सम्बंधी गड़बड़ी का अनुपात काफी ऊंचा होता है । धूल के प्रभाव के कारण यह गड़बड़ी होती है जो आगे चलकर प्रश्वास नली में कैंसर का कारण बनता है । ज. ज. ग. के खदान जिलों में स्थापित आधुनिक अस्पताल और ऊंचे दर्जे के सर्जिकल केन्द्र भी कैंसर-निरोध का कार्य करते हैं । विश्वविद्यालय के अस्पतालों और मेडिकल अकादमियों में एक्सरे केन्द्र स्थापित किये गये हैं, जहां एक्सरे रिपोर्ट को देख कर कैंसर के प्रभाव का पता लगाया जाता है । कई अस्पतालों में रेडियोलौजिस्टों, सर्जनों, आंख, नाक और गले के विशेषज्ञों और स्त्री-रोग विशेषज्ञों को मिलाकर कैंसर-जांच टोलियां बनायी गयी हैं । ज. ज. ग. की राजधानी बर्लिन में पिछले दस वर्षों से कैंसर रोग सम्बंधी दो विशेष केन्द्र काम कर रहे हैं । चारिटे और रौबर्ट रौसल अस्पताल में स्थापित इन केन्द्रों का पूरे योरप में अपना विशिष्ट स्थान है ।
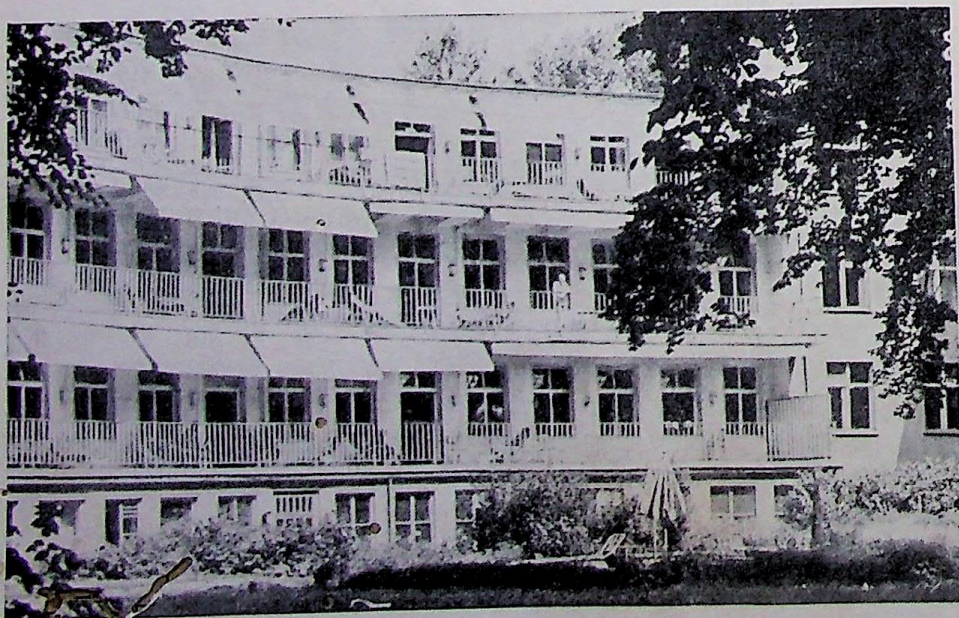
ज. ज. ग. की सरकार की उदार सहायता की बदौलत बर्लिन के कैंसर अस्पतालों को अत्यंत आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित करना संभव हुआ है । इन अस्पतालों में रश्मि-विकिरण के उपकरण, आपरेशन थियेटर और अनुसंधान प्रयोगशालाएं हैं । चारिटे अस्पताल से संलग्न कैंसर वार्ड में १७.३ मैगाइलेक्ट्रोन-वोल्ट का एक बेटाट्रोन यंत्र है जिससे कैंसर-ग्रस्त तंतुओं का तेज बीटा किरणों और गामा किरणों से उपचार किया जाता है । बर्लिन, लाइपजिक, ड्रेस्डन और जेना के कैंसर अस्पतालों में कोबाल्ट विभाग खोले गये हैं । चारिटे अस्पताल के कैंसर वार्ड में एक सोवियत रश्मि-विकिरण यंत्र

बर्लिन में विज्ञान अकादमी का रौबर्ट रौसल चिकित्सालय
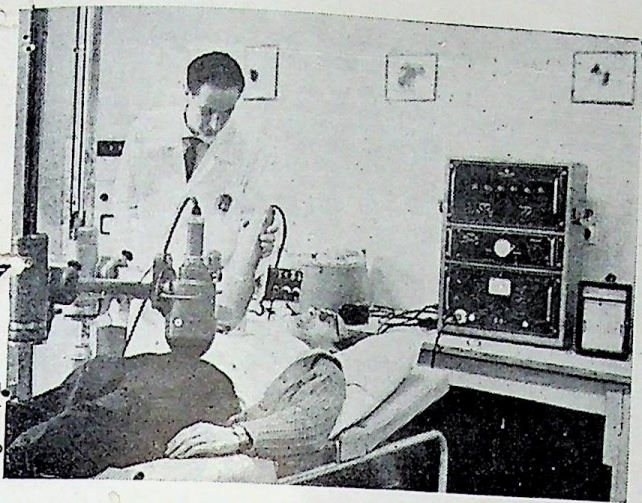
रौबर्ट रोसल चिकित्सालय केंसर के एक रोगी की चिकित्सा

और एक ब्रिटिश टेलीकोबाल्ट यंत्र का उपयोग किया जाता है । इसी तरह रौबर्ट रोसल अस्पताल का कैंसर वार्ड एक सोवियत कोबाल्ट युनिट और एक कैनाडियन थैराट्रोन यंत्र से सुसज्जित है । एक कोबाल्ट यंत्र लगाने में लगभग ५ लाख मार्क खर्च बैठता है ।

कोबाल्ट यंत्र के दोलायमान रश्मि-विकिरण से गर्भाशय नली के कैंसर का सफलता से उपचार किया जाता है । इस प्रकार के उपचार से ८० प्रतिशत रोगी चंगे होते देखे गये हैं ।

कैंसर अस्पतालों के साथ रेडियो-जैविकी विभाग खोले गये हैं जहां जानवरों पर परीक्षण करके कैंसर की उत्पति के सम्बंध में नयी-नयी जानकारी प्राप्त की जाती है । रश्मि-विकिरण के दुष्प्रभावों का पता लगाने और उन्हें दूर करने के उपायों के संम्बंध में भी यहां परीक्षण किये जाते हैं ।

इन अस्पतालों में चीर-फाड़ के लिए अपने अलग वार्ड होते हैं जहां कसर फोड़ों का आपरेशन किया जाता है । अनुभवी विशेषज्ञों की देखरेख में पूरा इलाज किया जाता है । विभिन्न प्रकार के कैंसरों के सम्बंध में जनता को जानकारी प्रदान करने के लिए इस देश में हर संभव कदम उठाया जाता है । अनुभवी प्रोफेसर और विशेषज्ञ फैक्टरियों, दफ्तरों और अस्पतालों में जाकर इस रोग से सम्बंधित विषयों पर भाषण देते हैं । अच्छे उपकरणों से सुसज्जित केन्द्रों में कैंसर का उपचार बहुत सावधानी से किया जाता है । छोटे फोड़ों का ठीक समय पर पता चल जाने से उनका उपचार सफलता से कर पाना संभव होता है ।

ज. ज. ग. के कैंसर केन्द्रों के अनुसंधान कार्यकर्त्ता कैंसर रोग की उत्पति के कारणों की खोज में लगे हुए हैं और इस प्रकार वे एक महान अन्तर्राष्ट्रीय गुत्थी को सुलझाने में योग दे रहे हैं । वे सोवियत संघ, फ़्रांस, इटली, ब्रिटेन, पोलैंड, चैकोस्लोवाकिया और यूगोस्लाविया के कैंसर केन्द्रों के निरन्तर सम्पर्क में रहते और उनसे विचार-विनिमय करते हैं । समाजवादी देशों और नव-स्वतंत्र अफ़्रीकी राज्यों के यात्री ज. ज. ग. के कैंसर केन्द्रों में आकर प्रायः काम करते रहते हैं ।

स्वामित्व का ब्योरा

प्रति वर्ष फरवरी की अंतिम तारीख के बाद प्रकाशित होने वाले **सूचना पत्रिका** के पहले अंक में पत्रिका के स्वामित्व और अन्य बातों का ब्यौरा ।

प्रपत्र ४

(नियम ८वां)

१. प्रकाशन का स्थान	नई दिल्ली
२. प्रकाशन की आवर्तिता	मासिक
३. मुद्रक का नाम	भारत में ज. ज. ग. व्यापार दूतावास
राष्ट्रीयता	जर्मन
पता	१२ कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली
४. प्रकाशक का नाम	ब्रूनो मे
राष्ट्रीयता	जर्मन
पता	१२ कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली
५. संपादक का नाम	ब्रूनो मे
राष्ट्रीयता	जर्मन
पता	१२ कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली
६. उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचारपत्र के मालिक और कुल चुकता पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक शेयर वाले या भागीदार हैं ।	

मैं, ब्रूनो मे, घोषित करता हूं कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं ।

दिनांक : २८-२-६५

ब्रूनो मे
प्रकाशक के हस्ताक्षर

कूर्ट बोट्टगर की गोआ यात्रा

भारत में जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का पांच सदस्यों का एक प्रतिनिधिमंडल, दूतावास के अध्यक्ष श्री कूर्ट बोट्टगर के नेतृत्व में, ७ फरवरी से १४ फरवरी १९६५ तक गोआ के औपचारिक पर्यटन पर गया। प्रतिनिधि-मंडल का स्वागत लार्ड मेयर टोनी डीसूजा, स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री श्रीमती बेर्टा मैनजीज तथा अन्य विशिष्ट व्यक्तियों ने किया।

अपनी यात्रा के दूसरे दिन प्रतिनिधि-मंडल ने गोआ के स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए फोर्ट अगुआदा पर फूल चढ़ाए।

श्री बोट्टगर अपनी गोआ यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री श्री डी. बी. बंदोका, उद्योग तथा श्रम मंत्री श्री टोनी वर्नान्डीज, सूचना तथा शिक्षा मंत्री श्री वी. एस. करमाले, तथा राज्य विधान सभा के अध्यक्ष श्री पी. पी. शिरोडकर से मिले। इन व्यक्तियों से हुई बातचीत का मुख्य विषय गोआ के साथ आर्थिक सम्बन्धों की स्थापना रहा। श्री बोट्टगर ने गोआ-व्यापार-मंडल तथा माइनिंग ओनर्स एसोसियेशन के सदस्यों की एक सभा में भी भाषण दिया और सभी क्षेत्रों में ज. ज. ग. की नीति पर प्रकाश डाला।

श्री बोट्टगर का मेनजेज ब्रगान्जा इंस्टीच्यूट की मैत्री-सभा ने बड़े उल्लास से स्वागत किया।

माइनिंग ओनर्स एसोसिएशन के आमन्त्रण पर प्रतिनिधिमंडल खनिज लोहे की कई बड़ी-बड़ी खानें देखने गया। जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास के प्रधान द्वारा आयोजित एक स्वागत समारोह में ३२० गोआनी सज्जन प्रस्तुत थे। इस समारोह का आयोजन मंडोवी होटल में किया गया था और इसमें राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र की बहुत सी महत्वपूर्ण विभूतियों ने भाग लिया।

श्री बोट्टगर दो बार प्रेस प्रतिनिधियों से मिले और उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र की नीति, भारत से जर्मन जनवादी गणतंत्र के सम्बन्ध, पारस्परिक हित के अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों तथा प्रतिनिधि-मंडल की गोआ यात्रा के उद्देश्यों और परिणामों पर प्रकाश डाला। प्रतिनिधि-मंडल के अन्य सदस्यों ने गोआ के अर्थतंत्र, उद्योग तथा व्यापारिक क्षेत्रों के प्रतिनिधियों से बातचीत की।
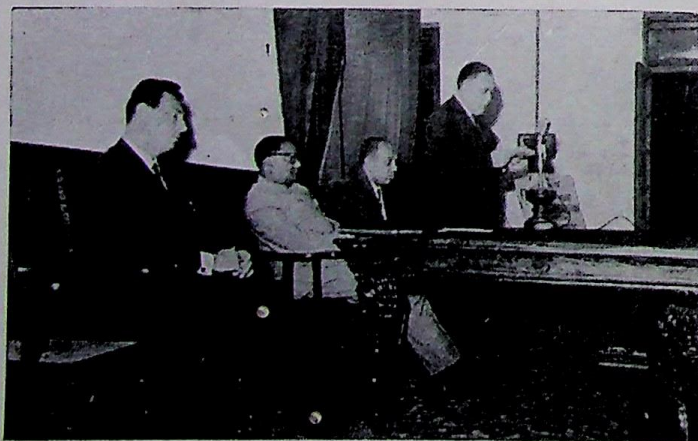
श्री बोट्टगर व्यापारमंडल तथा माइनिंग ओनर्स एसोसियेशन के सदस्यों के समक्ष भाषण देते हुए। बांये से दूसरे श्री पी. पी. शिरोडकर, राज्य विधान सभा के अध्यक्ष तथा श्री पी. टिम्बलो व्यापार मंडल के अध्यक्ष।
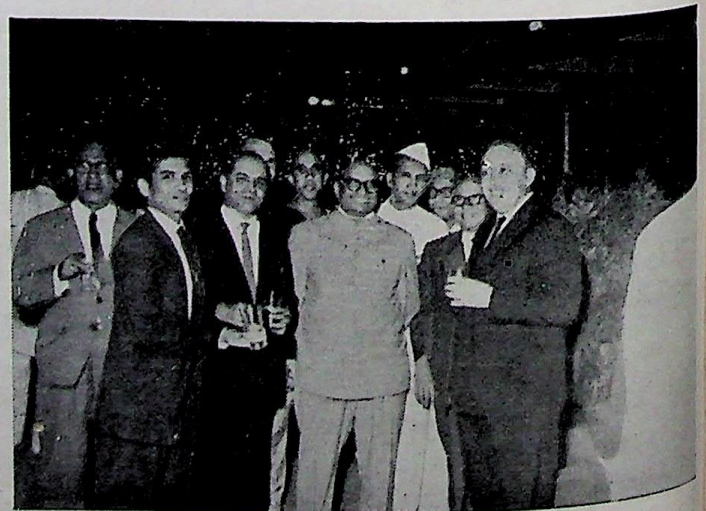
श्री बोट्टगर व श्री शिरोडर, विधान सभा के सदस्यों एवं व्यापारियों के साथ।

समाचार

ज. ज. ग. के सभी बच्चों के लिए दस वर्ष की अनिवार्य शिक्षा

सभी बच्चों के लिए दस वर्षीय अनिवार्य शिक्षा का सुझाव एकीकृत समाजवादी शिक्षा पद्धति पर बनाये गये एक विधान के नये प्रारूप में दिया गया है। दस वर्ष की बहुतकनीकी माध्यमिक शिक्षा हर प्रकार की व्यावसायिक तथा उच्च शिक्षा का आधार बन जायेगी।

विधान का यह प्रारूप हिटलरी फासिज्म के विनाश के बाद के बीस वर्षों की शिक्षा-पद्धति की अनूठी प्रगति पर आधारित है। जर्मनी में पहली बार सभी राष्ट्रीय तथा सामाजिक संस्थाओं में इतनी समग्रता से शिक्षा का विस्तार हो रहा है तथा शिक्षा के क्षेत्र में इतनी चेष्टाएं हो रही हैं।

जर्मनी के इस भाग में केवल कुछ लोगों के लिए शिक्षा सुविधाओं वाली पद्धति एक जमाना हुए खत्म हो चुकी। यहां सभी बच्चों के लिए शिक्षा की समान सुविधायें हैं चाहे उनके माता-पिता का सामाजिक स्तर और उनकी आमदनी कुछ भी हो। यह ऐसी व्यवस्था है जिसकी साम्राज्यवादी जर्मनी में कल्पना तक नहीं की जा सकती।

प्रकृति विज्ञान के विषयों, जर्मन भाषा तथा साहित्य, सामाजिक विज्ञान तथा विदेशी भाषाओं के शैक्षणिक स्तर में व्यवस्थित सुधार करने के अतिरिक्त स्कूलों में बहुतकनीकी शिक्षा का लागू किया जाना इसलिए और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे स्कूल तथा व्यावहारिक जीवन में गहरा सम्पर्क स्थापित हो जाता है।

पिछले दस वर्षों में अध्यापकों की संख्या दुगनी हो गई है। गांवों के पुराने एक कक्षा वाले स्कूल अब गुजरे जमाने की बात हो गये हैं। दूरस्थ क्षेत्रों से बच्चों को अब बसों द्वारा दसवीं कक्षा तक के केन्द्रीय स्कूलों में लाया जाता है।

कोलम्बो, श्रीलंका, में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय औद्योगिक प्रदर्शनी में ज. ज. ग. का मण्डप। प्रदर्शनी में भाग लेने वालों में ज. ज. ग. सबसे बड़ा विदेशी प्रदर्शनकारी था। ज. ज. ग. मण्डप ने हजारों आगन्तुकों को आकर्षित किया। प्रदर्शनी के उदघाटन के अवसर पर श्रीलंका की प्रधान मंत्री श्रीमावो भण्डारनायके मण्डप में पधारीं। ज. ज. ग. के उपविदेशव्यापार मंत्री श्री एरिक वेख्टर ने, जो अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी काल की अधिकांश अवधि में कोलम्बो में रहे, ज. ज. ग. और श्रीलंका के बीच १९६५-१९७० के लिए आर्थिक सहयोग के सरकारी समझौते पर हस्ताक्षर किये। समझौते के अन्तगर्त अनुकूल दीर्घकालीन ऋण पर श्रीलंका को ज. ज. ग. सूती कारखाने व रसायनिक उद्योग देगा। एक अन्य सरकारी समझौते से दोनों देशों के बीच वैज्ञानिक तकनीकी सहयोग की व्यवस्था की जायेगी।

शांति अविभाज्य है—वाल्टर उल्ब्रिख्त की घोषणा

जर्मन जनवादी गणतंत्र राष्ट्रीय मोर्चा देश की पांचों राजनीतिक पार्टियों तथा समस्त सामाजिक संगठनों की संयुक्त संस्था है। इस संस्था की एक मीटिंग फरवरी महीने में हुई। इस अवसर पर राज्य परिषद के अध्यक्ष श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने पिछले हिटलर-विरोधी मोर्चे के लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया जिनके कारण मई १९४५ में जर्मन जनता को फासिज्म से मुक्त प्राप्त हो सकी।

जर्मनी की युद्धोत्तर घटनाओं का विश्लेषण करते हुए श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने ज. ज. ग. की उन चेष्टाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की जिनके द्वारा जर्मन साम्राज्यवाद की प्रतिशोधवादी शक्तियों को पुनर्जीवित करके युद्धोत्तरकाल को एक नये युद्ध की तैयार के काल में बदलने से रोका जा सका।

राज्य परिषद के अध्यक्ष ने पश्चिमी शक्तियों से पोट्सडम समझौते के अनुसार एक शांति समझौता करने की अपील की। पोट्सडम समझौता जर्मन फास्सिटों की पराजय के पश्चात हिटलर-विरोधी मोर्चे की प्रमुख शक्तियों द्वारा किया गया था। एक जर्मन शांति समझौता शांतिमय आधार पर पुनरेकीकरण का मार्ग तैयार करेगा।

योरप में शांति तभी संभव है जब दोनों जर्मन राज्यों में पारस्परिक समझौता हो जाए तथा अन्य राज्यों के इन दोनों राज्यों के साथ सम्बन्ध सामान्य हो जाय।

पुरानी वस्त्रसज्जा की पृष्ठभूमि में नयी वस्त्रसज्जा

'मद्रास तथा रंगून के तट पर' ज.ज.ग. में प्रकाशित नवीन यात्रा-पुस्तकें

"मद्रास तथा रंगून के तट पर" तथा अन्य कई यात्रा संस्मरण व सचित्र पुस्तकें इस वर्ष लाइपजिक बूकहौस प्रकाशन ग्रह (ज.ज.ग.) द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पुस्तकों में सम्मिलित हैं। उक्त पुस्तक भारतीय तथा बर्मी बन्दरगाहों के जीवन का चित्रण प्रस्तुत करती है।

"बड़े शहरों की छोटी यात्रा" बड़े आकार की सचित्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित होगी। १५० पृष्ठों में ११२ सादे तथा ८ रंगीन चित्रों द्वारा इस पुस्तक के लेखकों ने योरप, एशिया तथा अमरीका के १४ बड़े-बड़े शहरों की अपनी यात्राओं का विवरण दिया है।

एक अन्य पत्रकार, उल्रिख्त मेकोश ने अपनी पुस्तक "श्रीलंका" में उस देश की सुन्दरता तथा सार्वजनिक जीवन का चित्रण किया है।

"डाक्टर, वापिस आओ"—कायचिकित्सक प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों द्वारा लिखे गए लेखों का संग्रह है। इस प्रतिनिधिमंडल ने अफ्रीका महाद्वीप में कांगो, गिनी, यमन तथा अन्य देशों की स्वास्थ्य व्यवस्थाओं के संगठन में सहायता की थी।

रेडियो तथा टेलीविजन सेटों का अधिक निर्यात

रेडियो तथा टेलीविजन सेटों के अधिक निर्यात का योजना-कार्य जर्मन जनवादी गणतंत्र की इस औद्योगिक शाखा द्वारा किया जा रहा है।

कुल निर्माण का १६ प्रतिशत लगभग ६० देशों को भेजा जाता है। ७७६,००० रेडियो सेट, ६४२,००० टेलीविजन सेट और ८६,००० टेप रिकार्डर तथा रेकार्ड बजाने की मशीनें इस वर्ष बाजार में भेजी जायेंगी।

प्रति मिनट एक रेडियो सेट तथा प्रति $\frac{१}{२}$ मिनट एक टेलीविजन सेट तैयार होता है। १९५८ से १९६३ तक लगभग ५०,००,००० रेडियो तथा २०,५०,००० टेलीविजन सेट जर्मन जनवादी गणतंत्र में तैयार हुये।

सात देशों के नेताओं की शांति के लिए अपील

कोवेन्ट्री, स्ट्रासबर्ग (फ्रांस), लेनिनग्राद, रॉक्लो (पोलैण्ड) पश्चिम जर्मनी, अमरीका तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र के म्युनिसिपल कौंसिलरों (नगरपालों) तथा अन्य नागरिक नेताओं ने एक संयुक्त अपील जारी की जिसमें संसार के लोगों से नया युद्ध न होने देने के लिए सभी प्रयत्न करने की अपील की है। नया युद्ध नगरों की तबाही तथा मानसिक जीवन की समाप्ति का कारण बनेगा।

यह अपील ड्रेस्डन में कई दिनों तक चलने वाली एक स्मारक सभा की—जो दूसरे विश्व युद्ध में हवाई हमलों से ड्रेस्डन के लगभग पूर्ण विनाश की बीसवीं वार्षिकी के उपलक्ष में की जा रही थी—समाप्ति पर जारी की गयी।

अपील में कहा गया है "वियतनाम के नगरों तथा ग्रामों पर फिर से बम गिराये जा रहे हैं और शांति प्रिय लोगों को मौत के घाट उतारा जा रहा है। इन हालातों में हमें संसार के उन लोगों के विरुद्ध अपनी सतर्कता सुदृढ़ कर देनी चाहिए जो नये युद्ध की योजनायें बनाते हैं और वर्तमान समय को ठीक समझ इन योजनाओं को कार्यान्वित करते हैं।"

कोवेन्ट्री नगर, जिसे युद्ध में नाजी बमों ने अत्यन्त क्षति पहुंचाई थी, पिछले कई वर्षों से मैत्रिक सम्बन्धों द्वारा ड्रेस्डन के सम्पर्क में आ चुका है। कोवेन्ट्री के भूतपूर्व मेयर विलियम केलो ने अपने नगर के प्रतिनिधि के रूप में ड्रेस्डन स्मारक सभा में भाग लिया।

सर्वश्री शिजो हमाई तथा बुक्कालोस्सी, की ओर से जो क्रमानुसार हिरोशिमा तथा मिलानो के लार्ड मेयर हैं, शुभकामना संदेश प्राप्त हुये।

इस वर्ष ज. ज. ग. के स्वागत शिविर में लगभग ३५० शरणार्थी आये

इस वर्ष १५ फरवरी तक केवल पश्चिम जर्मनी व पश्चिम बर्लिन से ३४८ शरणार्थी बर्लिन के निकट ब्लैंकेनफेल्डे नामक स्थान पर स्थित स्वागत शिविर में आये। इनमें से २४३ वे लोग हैं जो कुछ वर्ष पहले जर्मन जनवादी गणतंत्र छोड़ कर चले गये थे और अब फिर लौट आये हैं।

१९६१ से लेकर अबतक ८०,००० पश्चिम जर्मनी व पश्चिम बर्लिन निवासी जर्मन जनवादी गणतंत्र के ५ स्वागत शिविरों में शरण ले चुके हैं। इन स्वागत शिविरों में दो सप्ताह ठहरने के बाद ये शरणार्थी नये स्थानों को चले जाते हैं, जहां उन्हें रहने की जगह तथा नौकरियां मिल जाती हैं। नये जीवन के सुगम आरम्भ के लिए उन्हें ऋण भी प्रदान किये जाते हैं।

पश्चिम जर्मनी से लोगों के बड़ी संख्या में जर्मन जनवादी गणतंत्र में आने का एक कारण वहां के मकानों के किरायों की असामाजिक स्फीति है। उदाहरण के लिए १३ वर्ष पश्चात श्रमिक ओस्कर डोयरिंग के सपरिवार जर्मन जनवादी गणतंत्र में लौटने का यही कारण है।

"मानो हमारे सात सदस्यों के परिवार का एक ही कमरे में रहना काफी असुविधाजनक नहीं था, इसलिए मकान का किराया ८० से बढ़ाकर १४० मार्क (एक मार्क बराबर १.१२ रुपये) कर दिया गया। जब हमने इस नयी और अनुचित मांग को पूरा करने से इनकार कर दिया तो हमें मकान खाली करने का नोटिस दे दिया गया।" श्रमिक ने बताया।

सचित्र समाचार

२८ जनवरी को भारत में 'ओरवो' प्रदर्शनी का सर्वप्रथम आयोजन बम्बई की जहांगीर आर्ट गैलरी में हुआ। ४०० सम्मानित जनों की उपस्थिति में महाराष्ट्र सरकार के मंत्री श्री एच. तलयारखां ने 'ओरवो' की एक फिल्म-पट्टी काट कर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। सम्मानित जनसमुदाय के समक्ष ज. ज़. ग. व्यापार दूतावास के प्रधान श्री कूर्ट बोट्टगर तथा 'ओरवो' प्रा० लिमिटेड व ज. ज. ग. विदेश व्यापार संगठन डी. आई. ए. चैमी के प्रतिनिधियों ने भाषण दिये। श्री बोट्टगर तथा श्री तलयारखां ने अपने भाषणों में जोर देकर बताया कि शाँतिपूर्ण सहअस्तित्व उनके अपने-अपने देशों की विदेश नीति का आधारमूत सिद्धान्त है।
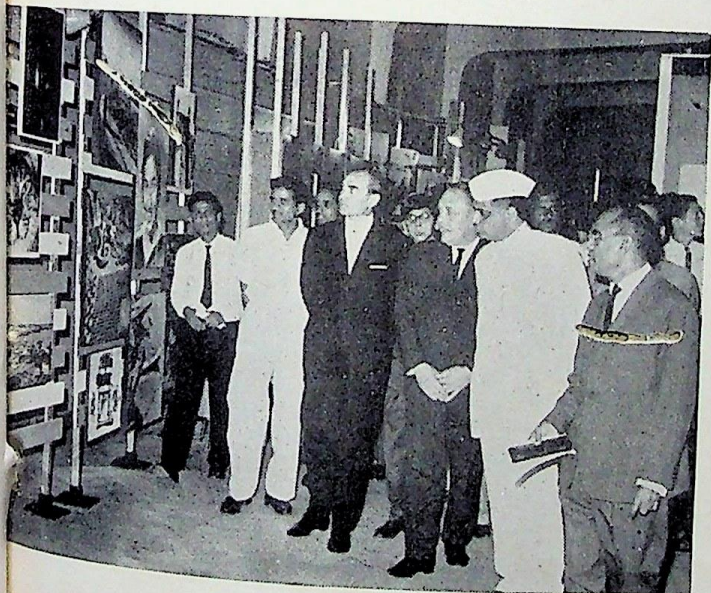
▲ एक प्राचीन जन्तु का कंकाल जो तंगानिका के दक्षिणी तट पर पाया गया था। अनुमान है कि आज से १२ करोड़ ५० लाख वर्ष पहले इन जन्तुओं का लोप हो चुका था। कंकाल की लम्बाई २२.६५ मीटर है। इस समय यह बर्लिन के प्रकृति विज्ञान संग्रहालय में रखा है। संग्रहालय में विश्व के २ करोड़ ५० लाख जन्तुओं के कंकाल हैं।

▼ ज. ज. ग. में हर जगह बर्फ। मार्च के प्रथम सप्ताह में बर्लिन की सड़कें ३ मीटर मोटी बर्फ की तह से पट गयीं। यह ओबेरहोफ का शरदकालीन विश्रामगृह है।

रजि० नं० डी-१३३०

सूचना पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष १०
अंक ४ | २० अप्रैल, १९६५

संकेत

पृष्ठ

मुख पृष्ठ : जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उलब्रिख्त, संयुक्त अरब गणराज्य के एक किंडरगार्टेन में एक मुन्नी को प्यार कर रहे हैं

अंतिम पृष्ठ : ज. ज. ग. में बने हुये, रसोई घर के लिये नवीनतम सामान को ऊता नामक एक ग्रहणी, बड़े प्यार से देख रही है। हाल ही के लाइपज़िक जयन्ती मेले में इस सामान का प्रदर्शन हुआ था

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और यूनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

वाल्टर उल्ब्रिख्त की संयुक्त अरब गणराज्य यात्रा

जर्मन अरब सम्बंधों में एक नया मोड़

संयुक्त अरब गणराज्य की सरकारी यात्रा से लौटने के तुरन्त बाद, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, ज. ज. ग. के रेडियो एवं टेलिविजन संस्था को एक विशेष इन्टरव्यू दिया। इस प्रश्न के उत्तर में कि क्या वे संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा से सन्तुष्ट हैं, श्री उल्ब्रिख्त ने जवाब दिया: "हां, मैं बहुत सन्तुष्ट हूं। यह यात्रा पारस्परिक जर्मन अरब सम्बंधों को सुदृढ़ करने तथा और आगे बढ़ाने के लिये, जर्मन जनवादी गणतंत्र एवं इसकी जनता तथा संयुक्त अरब गणराज्य एवं उसके लोगों के लिये, और विश्व शान्ति के लिये बहुत लाभदायक है।

"शुरू से ही मेरी यात्रा, ज. ज. ग. और सं. अ. ग. की मैत्री विश्वासपूर्ण सहयोग के दृढ़ आधार पर खड़ी थी। और मैं समझता हूं कि इस यात्रा के दौरान, राष्ट्रपति जमाल अब्दुल नासिर और मैंने कई मुलाकातों तथा बातचीत में व्यक्तिगत तौर पर भी काफी अच्छी दोस्ती कायम की। यहां यह बताना अनुचित न होगा कि मैंने हमेशा राष्ट्रपति नासिर की साम्राज्यवाद-विरोधी नीति का समर्थन किया है, और आज भी कर रहा हूं। इस सिलसिले में, इस बात का कायल हूं कि वह एक तटस्थ राज्य के एक ज़िम्मेदार नेता हैं।"

सं. अ. ग. के प्रयत्नों से बहुत प्रभावित:

ज. ज. ग. की राज्य-परिषद के अध्यक्ष से जब पूछा गया कि वह संयुक्त अरब गणराज्य से क्या प्रभाव लेकर लौटे हैं तो उन्होंने कहा कि वहां ग्रहण किये प्रभावों पर वह घण्टों बात कर सकते हैं। वह बोले "वहां की ६ हज़ार वर्षीय भव्य सांस्कृतिक परम्परा से, जिसके दर्शन हमको हर जगह वहां हुये, मैं, मेरी बीवी और मेरे अन्य मित्र बहुत ज्यादा प्रभावित हुये।.. पिछली बीस शताब्दियों के दौरान, अनेक विदेशी आक्रमणकारियों ने मिश्र को फतह करके इस पर सदा के लिये हकूमत करनी चही, लेकिन यहां की वीर तथा उत्साही जनता ने हमेशा अपनी आज़ादी के लिये जो जान की बाज़ी लगाई, और अनेक बलिदानों के बाद अन्त में उसको हासिल किया।... यह तथ्य राष्ट्रपति नासिर की ऐतिहासिक सूझ-बूझ और दूरदर्शिता का प्रमाण है कि उन्होंने, दूसरे महायुद्ध के बाद की नई स्थिति को ठीक तरह से समझ लिया था। उन्होंने, बड़ी बुद्धिमत्ता एवं कुशलता से, मिश्र को ब्रिटिश साम्राज्यवाद और इस के सहायक भ्रष्ट राजतंत्र तथा सामंती कुशासन की दासता से मुक्त करने में, इस स्थिति को बड़ी सफलता से इस्तेमाल किया।...

"वहां मुझे एक बड़ा और नया औद्योगिक उद्यम, 'शेगिन-अल-कौम कताई बुनाई मिल' देखने का भी अवसर मिला। इसके अलावा मैंने अल-तहरीर नामक मुक्ति स्थल भी देखा जो रेगिस्तान को विकसित करके लहलहाया गया है। रेगिस्तान को पीछे धकेल कर उससे ज़मीन छीनने तथा उसको उपजाऊ बनाने, और एक साल में कई फसल पैदा करने के संघर्ष में, आसवान बांध द्वारा नियंत्रित नील नदी का अथाह जल, सबसे बड़ा सहायक है। आसवान बांध, संयुक्त अरब गणराज्य के समाजवादी दिशा में बढ़ने और इसके भावी कृषि तथा औद्योगिक विकास का प्रतीक और सहायक है। राज्य, किसानों को अपने सहकारी खेत विकसित करने में बहुत मदद देता है।.. संयुक्त अरब गणराज्य के, राष्ट्र निर्माण सम्बंधी इन सराहनीय प्रयत्नों से हम बहुत प्रभावित हुये।"

श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त की सं. अ. ग. की ऐतिहासिक यात्रा दुनिया के अखबारों की सुर्खी बन गई

L'AURORE

Nasser reçoit Ulbricht comme un chef d'Etat

The New York Times.

ULBRICHT GIVEN A 21-GUN SALUTE IN VISIT TO CAIRO

Nasser Greets East German

l'Unità

Accolto da Nasser

Ulbricht oggi al Cairo in visita di Stato

The Daily Telegraph

Ulbricht gets big welcome in Egypt

DAILY TELEGRAPH STAFF CORRESPONDENT

THE TIMES

HERR ULBRICHT GIVEN 21-GUN SALUTE

CAIRO GREETING BY PRESIDENT NASSER

FROM OUR MIDDLE EAST CORRESPONDENT

NASSER'S GUEST GETS 21 GUNS

काहिरा के प्रमुख रेल स्टेशन पर, श्री उल्ब्रिख्त का भव्य स्वागत हुआ

महत्वपूर्ण उपलब्धियां :

राष्ट्रपति नासिर को निमन्त्रण : अपने विशेष प्रेस-इण्टरव्यू को जारी रखते हुये, ज. ज. ग. की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने कहा : "मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति नासर ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा का हमारा निमंत्रण स्वीकार किया है ।..."

सह-विज्ञप्ति : श्री उल्ब्रिख्त की संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा के अन्त पर, काहिरा में एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी की गई थी। इसके महत्व का उल्लेख करते हुये श्री उल्ब्रिख्त बोले : "मेरी संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा के ठोस परिणाम उस संयुक्त-विज्ञप्ति में सम्मिलित हैं जिस पर राष्ट्रपति नासिर और मैंने दस्तखत किये हैं । इस विज्ञप्ति में वे बुनियादी नुक्ते शामिल हैं जो हमारे दो राज्यों की नीतियों में समान हैं, जैसे साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष एवं अरब राष्ट्र की एकता के लिये प्रयत्नों के बारे में हमारा दृष्टिकोण, और जर्मन राष्ट्र से सम्बंधित समस्याओं के बारे में संयुक्त अरब गणराज्य के विचार । . . .

"हमारी इस संयुक्त विज्ञप्ति का विशिष्ट महत्व इस तथ्य से भी स्पष्ट हो जाता है कि संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति ने, किसी अन्य दोस्त राज्य के प्रमुख की यात्रा पर, इससे पहले कभी भी संयुक्त-विज्ञप्ति पर दस्तखत नहीं किये थे । इसके अलावा, जिन विषयों पर वहां हमारी बातचीत और मुलाकातें हुई दोस्ती के वातावरण में, और वहां के जन-समूह ने जो अपार एवं स्नेह भरा स्वागत किया हमारा यह सब भी मेरी यात्रा के महत्व पर प्रकाश डालता है । . . .

करारें और सन्धियां : "हमारी यात्रा के दौरान वहां (सं. अ. ग.) जिन करारों तथा संधियों पर दस्तखत हुये वे बहुत अहम हैं । हमारे दो राज्यों के बीच आर्थिक और तकनीकी सहयोग की करार, दोनों देशों के बीच वर्तमान आर्थिक सम्बंधों को और भी आगे बढ़ाने के लिये एक समुचित और दृढ़ आधार प्रस्तुत करती है । हमारे राज्यों के बीच इस आर्थिक सहयोग का कितना जबरदस्त महत्व है, इसका प्रमाण यह तथ्य है कि जल्द ही ऊंचे स्तर पर एक स्थाई आर्थिक आयोग को स्थापित किया जा रहा है । इसके अलावा, एक जर्मन-अरब वैज्ञानिक परिषद भी कायम की गई है, जो हमारे देशों के बीच वैज्ञानिक तथा तकनीकी सहयोग के विकास में सहायक होगी । इसी प्रकार, सांस्कृतिक तथा स्वास्थ्य और अन्य क्षेत्रों में संयुक्त अरब गणराज्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र का संपर्क तथा सहयोग बढ़ाने के लिये कई सन्धियों पर दस्तखत हुये हैं, और इनसे सम्बंधित स्थाई आयोगों को कायम किया गया है । . . . "

सभी अहम सवालों पर मतैक्य :

श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त से, इण्टरव्यू के दौरान, यह अहम सवाल भी

अपनी यात्रा के दौरान श्री उल्ब्रिख्त आसवान बांध देखने भी गये । वहां बांध के निर्माताओं ने उनका हार्दिक स्वागत किया

पूछा गया कि विभिन्न विषयों पर बातचीत के दौरान क्या राष्ट्रपति नासिर के साथ उनके कुछ मतभेद भी रहे या कुछ कठिनाइयां सामने आई ? श्री उल्ब्रिख्त ने उत्तर दिया : "हमारी बातचीत के दौरान न कठिनाइयां सामने आई और न ही मतभेद हुये । ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि हमने वास्तविकता को ध्यान में रखकर हालात का जायज़ा लिया और जैसा मैंने पहले ही कहा है, हमने इस तथ्य को नज़रअन्दाज़ होने न दिया कि संयुक्त अरब गणराज्य एक तटस्थ राज्य है । मैं यह बात बहुत बलपूर्वक कहना चाहता हूं कि हमने जितने भी सवालों तथा समस्याओं पर विचार-विनिमय किया, उन सभी में हमारा एक मत रहा । यह बात आश्चर्यजनक और अजीब भी लग सकती है, क्योंकि हमारे दोनों राज्य भिन्न ऐतिहासिक परिस्थितियों और भिन्न विकास पद्धतियों में से गुज़र रहे हैं । इसके बावजूद हमारे मतैक्य का मुख्य कारण यह है कि राष्ट्रपति नासिर और मैं, वर्तमान युग की राजनीतिक समस्याओं को, साम्राज्यवाद-विरोध के समान दृष्टिकोण से देखते हैं ।

"साम्राज्यवाद , उपनिवेशवाद और नव-उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष के सवालों पर हम दोनों एकमत हैं ।

"शान्ति की सुरक्षा, निःशस्त्रीकरण की सफलता और अणु-मुक्त क्षेत्रों की स्थापना के प्रश्नों पर हमारा मतैक्य है ।

"सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी राज्यों के साथ हमारे राज्यों की अनिवार्य मित्रता और विश्वस्त सहयोग की आस्था में भी हम सहमत हैं ।

"अपने अपने राष्ट्रीय अर्थतंत्र को गतिशील आधारों पर निरन्तर विकसित करने के सवालों पर भी हम एकमत हैं, क्योंकि ऐसा करना
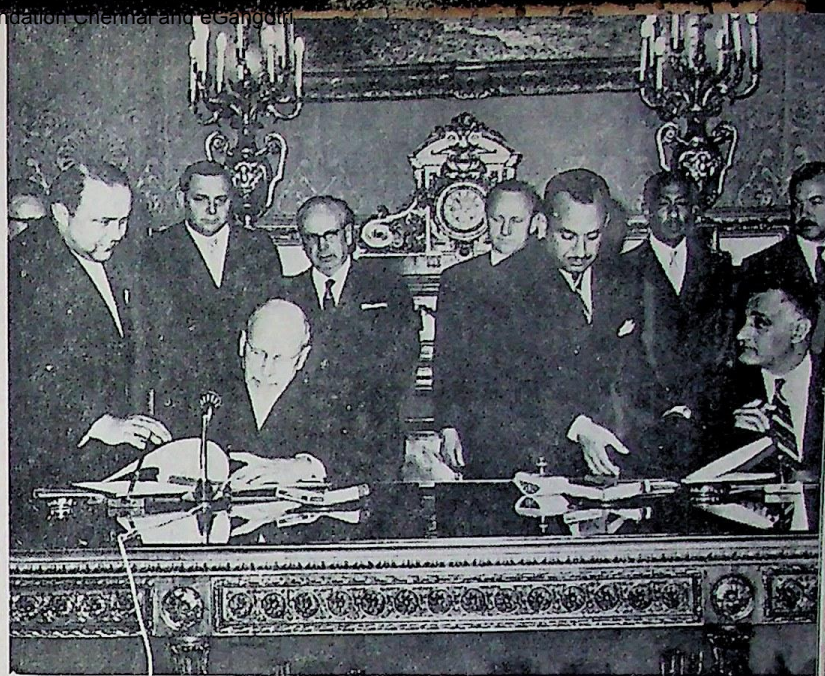
श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त और राष्ट्रपति नासिर सह-विज्ञप्ति पर दस्तखत कर रहे हैं

विकसित देशों की स्वाधीनता और उनकी प्रभुसत्ता की गारण्टी प्रस्तुत करता है ।

"अन्त में, अरब एकता और अपने देशों में जनवाद तथा समाजवाद को विकसित करने के सवालों पर भी हम एकमत हैं । . . . वास्तव में दोनों राज्यों का एक ही ध्येय है--अर्थात जनवाद, समाजवाद और विश्व जनगण में मैत्री स्थापित करना ।

"मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र और संयुक्त अरब गणराज्य के वरिष्ठ बौद्धिकों तथा नागरिकों के बीच व्यक्तिगत संपर्क दोनों देशों के लिये काफी लाभदायक होगा । . ."

नील नदी में एक मोटर-नाव पर ज्योंही श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त लक्सर जाने के लिये पधारे, फौरन उनको स्नेही लोगों और मित्र फोटोकारों ने घेर लिया

राष्ट्रपति नासिर—एक दूरदर्शी बुद्धिमान नेता

राष्ट्रपति नासिर के व्यक्तित्व का उल्लेख करते हुये, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष ने कहा : "व्यक्तिगत बातचीत में, सरकारी मुलाकातों में और उनके पारिवारिक क्षेत्रों में मुझे राष्ट्रपति नासिर के व्यक्तित्व का परिचय मिला । इन सरकारी और पारिवारिक संपर्कों के आधार पर, मैंने उनके लिये यह राय कायम की है : संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति, जमाल अब्दुल नासिर, कठिनाइयों और संघर्षों में तपे हुये एक ऐसे सुलझे हुये नेता हैं जो अपनी जनता के उद्देश्य के बारे में स्पष्ट और सजग हैं । संसार में जो कुछ नया तथा प्रगतिशील वह देखते हैं उस को उदार मन और काफी सोच बिचार कर स्वीकार करते हैं । बुनियादी सावलों पर अडिग रहना

रेगिस्तान से हासिल किये गये अल-तहरीर नामक क्षेत्र में श्री उल्ब्रिख्त हमीद राशिद के परिवार में बैठे हैं। अल-तहरीर के मेयर, हामदी अलेदा भी उनके दायें तरफ बैठे हैं

और उन पर सुदृढ़ फैसले लेना उनकी विशेषता है । मैं उनको इस युग का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञ और इतिहास का निर्माता मानता हूं । . . ."

पश्चिम जर्मनी की बचकाना धमकियों की विफलता

पश्चिमी जर्मन सरकार ने, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त की संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा को पहले रोकने और इसके बाद यात्रा को विफल बनाने के लिये सिर धड़ की बाज़ी लगा दी । इस सिलसिले में पूछे गये एक प्रश्न के उत्तर में श्री उल्ब्रिख्त ने जवाब दिया कि प. जर्मन सरकार की इन बचकाना हरकतों की विफलता अवश्यम्भावी थी । उनके शब्दों में "बोन (पं. जर्मनी--सं.) सरकार स्वयं शीशे के महल में बैठी है, वह दूसरों पर कैसे पत्थर फेंक सकती है। . . प. जर्मन

संयुक्त अरब गणराज्य की राजधानी काहिरा से विदा होते हुये

फेडरल गणराज्य, इज़राइल को सैनिक सहायता देती है । उसके शस्त्र, अरब जनता को शान्ति को खतरे में डाल रहे हैं । इसके विपरीत, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने हमेशा, इज़राइल के वास्तविक रूप को अर्थात् इसको साम्राज्यवाद के सैनिक अड्डे के रूप में देखा है । . .

"मैं संयुक्त अरब गणराज्य में, जर्मन जनवदी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष की हैसियत से ही नहीं गया था, बल्कि साथ ही साथ में तमाम शांतिकामी जर्मन जनता का प्रतिनिधि बनकर भी गया था। इस तथ्य को खुद पश्चिमी जर्मनी के पूंजीवादी अखबारों ने स्वीकार किया है । इस तथ्य का एक और प्रमाण यह भी है कि पश्चिमी जर्मन फेडरल गणराज्य ने काहिरा स्थित अपने राजदूत को मेरी अरब यात्रा के दौरान वहां मौजूद न रहने का हुक्म दिया था । . .

"बोन सरकार, संयुक्त अरब गणराज्य और राष्ट्रपति नासर से उनका हालस्टाइन सिद्धान्त मानने की आशा करते हैं--वह सिद्धान्त जो प. जर्मन सरकार के विस्तारवाद का परिचायक है । लेकिन उनकी इस साम्राज्यवादी नीति को वहां गंभीर दृष्टि से नहीं देखा जाता।. . ."

ज. ज. ग. की सही नीति

ज. ज. ग. की अरब नीति पर प्रकाश डालते हुये, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त बोले : "हमारी संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा, राष्ट्रपति नासर से हमारी मुलाकात, और वहां की जनता का अपार स्वागत इस बात का सबूत है कि ज. ज. ग. की नीति प. जर्मन फेडरल गणराज्य की नीतिसे भिन्न होने के साथ ही साथ सही तथा श्रेष्ठ है । हमारी विदेश नीति विश्व शांति और उन लोगों के साथ मैत्री एवं सहयोग के दृढ़ आधार पर टिकी हुई है जिन्होंने साम्राज्यवाद की दासता से अपने आपको मुक्त किया है, अथवा जो अपनी मुक्ति के लिये आज भी लड़ रहे हैं।

"इसके विपरीत, बोन सरकार, बार-बार अपनी पुरानी साम्राज्यवादी नीति को लागू करने की कोशिश करती है । यह नीति है (अन्य देशों में) जर्मन पूंजी लगाना, और प्रतिशोध एवं नव-उपनिवेशवादी साधनों को अपनाना । पहले पहल, प. जर्मनी ने पश्चिमी यूरोप के पूंजीवादी देशों पर अपना नेतृत्व ठूंसना चाहा, और अमरीका की सहायता से नाभिकीय शस्त्रास्त्रों पर अधिकार करना चाहा । लेकिन इसमें उसको मुंह की खानी पड़ी । इसी प्रकार, तथाकथित हाल्स्टाइन सिद्धान्त की सहायता से अरब राजयों और अफ्रीकी तथा एशिया के देशों पर अपना नेतत्व जमाने और धमकियों से काम चलाने की उसकी नीति भी असफल होती जा रही है । . . . प. जर्मनी की इस अनैतिक और धमकियों पर आधारित नीति का यही उचित अंत है । यह नीति जर्मन राष्ट्र के हितों के सर्वथा प्रतिकूल है । बोन सरकार छीछालेदर हुये हाल्स्टाइन सिद्धान्त को आज भी जिन्दा रखने की भरसक कोशिश कर रही है और जर्मनी के विभाजन को गहरा बनाने के लिये उसका इस्तेमाल कर रही है । . ."

बोन सरकार का संकट

दो जर्मन राज्यों की दो भिन्न विदेश नीतियों पर प्रकाश डालते

हुये, श्री उल्ब्रिख्त आगे बोले : "निकट पूर्व में बोन सरकार की उक्त नीति का संकट, वास्तव में, पश्चिमी जर्मनी के सम्पूर्ण साम्राज्यवादी शासन-व्यवस्था का ही संकट है ।. . . इन कुछ दिनों और हफ्तों में बोन सरकार के रवैये ने, संयुक्त अरब गणराज्य के हमारे दोस्तों पर यह बात बिलकुल स्पष्ट की कि दो जर्मन राज्यों के बीच सद्भावना और एकीकरण का मात्र आधार साम्राज्यवाद विरोध ही हो सकता है । बोन सरकार की यह डींग और दावा कि वही सम्पूर्ण जर्मन जनता की प्रतिनिध है, जर्मनी के विभाजन को मिटाने और दो जर्मन राज्यों की आपसी मैत्री में सब से बड़ी रुकावट है । . . ."

सही रास्ता

"मैं समझता हूं कि हाल के हफ्तों की घटनाओं के अनुभव से पश्चिमी जर्मनी को निम्न यथार्थ पूर्ण नतीजों पर पहुंच जाना चाहिये :

--नेतृत्व संभालने के साम्राज्यवादी प्रयत्नों का परित्याग करना चाहये,

--जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ ठीक तथा सामान्य रिश्ता कायम करना चाहिये,

--दो जर्मन राज्यों का एक जर्मन संघ स्थापित करके आपस में सहयोग की नीति अपना लेनी चाहिये,

--एक शांतिप्रिय पश्चिम जर्मन राज्य बनाना चाहिये ताकि विभाजित जर्मनी को धीरे धीरे पुनः एक किया जा सके ।

"जर्मनी के एकीकरण के दिन, दोनों जर्मन राज्य, एक जर्मन परिषद के अन्तर्गत ,अपने सामान्य और सही रिश्ते कायम कर सकते हैं । इसके अलावा, दोनों जर्मन राज्यों के राजदूत तथा अन्य प्रतिनिधि आपस में दूसरे देशों में अच्छे और मैत्रिपूर्ण संबंध पैदा कर सकते हैं । . . .

यात्रा से लौटने पर बर्लिन में श्री उल्ब्रिख्त का शानदार स्वागत हुआ। ज. ज. ग. में अरब देशों के विद्यार्थी इसमें पेश पेश थे

"मझे इस बात में जरा भी सन्देह नहीं है कि न केवल जर्मन जनवादी गणतंत्र के नागरिक ही, वरन् पश्चिमी जर्मनी की जनता भी, जल्द से जल्द, आजकल की कुत्सित नीति को बदलने और उसके स्थान पर एक सही सद्भावनापूर्ण तथा हमारे राष्ट्र के हितों को सुरक्षित करने वाली नीति की इच्छुक है । इसी सही तथा शांतिप्रिय नीति के लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र लगातार संघर्ष करता आया है और करता रहेगा । . . "

नाज़ी अपराधियों को क़ानूनी छूट देने की योजना के विरुद्ध ज़बरदस्त एहतेजाज

पश्चिमी जर्मनी की संसद की 'याचिका समिति' को ३६,००० व्यक्तिगत, और १३२ सामूहिक विरोध-पत्र प्राप्त हुये हैं । इस ज़बरदस्त विरोध का कारण है पश्चिमी जर्मनी के सरकार की वह घोषणा जिसके अनुसार ८ मई के बाद किसी भी नाज़ी युद्ध-अपराधी को (इनकी संख्या बहुत है—सं.) अदालत में मुक़दमा न चलाये जाने का सुझाव रखा गया है । इस गलत और प्रतिक्रियावादी घोषणा के तुरन्त बाद, विरोध के उक्त हज़ारों पत्र न केवल पश्चिमी जर्मनी से ही वहां की 'याचिका समिति' को प्राप्त होने लगे, बल्कि ज. ज. ग., इटली, पोलैण्ड, इस्राइल, फ्रांस, हंगरी, सोवियत संघ, यूगोस्लाविया और अमरीका से भी ऐसे हज़ारों पत्र आने लगे और अभी तक आ रहे हैं ।

जैसा कि कहा गया है पश्चिमी जर्मनी की सरकार, उक्त घोषणा को ८ मई, १९६५ के दिन से लागू करना चाहती थी। लेकिन विरोध के उग्र रूप को देखकर, बोन सरकार ने, इस तिथि को टालकर अब ३१ दिसम्बर, १९६९ कर दिया है । लेकिन ज़रूरत इस बात की नहीं कि तिथि को टाला जाये, बल्कि ज़रूरत इस बात की है कि नाज़ी युद्ध-अपराधियों को अदालतों में लाने और दण्ड देने के लिये कोई भी अवधि निश्चित न की जाये , जैसा कि समाजवादी देशों, बेलजियम और आस्ट्रिया ने क़ानून पास करके किया है । ऐसा करना ही अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के अनुकूल होगा । जानकार सूत्रों और क़ानूनदानों की नज़र में बोन सरकार द्वारा तिथि को टालना विश्व मत को धोखा देने की एक चाल है । एक पश्चिमी समीक्षक के शब्दों में :

"जो काम बोन सरकार ने २० वर्षों में पूरा नहीं किया, वह अब साढ़े चार साल में भी इस काम को पूरा नहीं करेगी ।...."

1165 1965

M

८०० वें लाइपज़िग जयन्ती मेले में

साढ़े सात लाख दर्शक

जर्मन जनवादी गणतंत्र के लाइपज़िग नगर में हर साल दो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले लगते हैं । एक वसन्त में और दूसरा शरदकाल में । इस वर्ष के वसन्त में लाइपज़िग के इस विश्वप्रसिद्ध मेले ने अपने ८०० वर्ष पूरे किये और यह ८०० वां जयन्ती मेला बड़ी धूमधाम से समाप्त हुआ । विश्व महत्व के इस जयन्ती मेले ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि विभिन्न देशों से आये हुये ताजरों, अर्थशास्त्रियों, तकनीशनों, इंजीनियरों आदि के बीच कायम होने वाले संपर्क और विचारों का आदान-प्रदान, न केवल सदभावना तथा सहयोग को सुदृढ़ करता है बल्कि इससे विश्व-व्यापार तथा तकनीकी प्रगति को भी काफी बल मिलता है । जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, वाल्टर उल्ब्रिख्त की संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा ने, इस जयन्ती मेले की सफलता को द्विगुनित कर दिया ।

३३ सरकारी और संसद-सदस्य प्रतिनिधि-मण्डल

लाइपज़िग का उक्त जयन्ती मेला, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का जीता-जागता नमूना था । विभिन्न समाज व्यवस्था वाले अनेक देशों के प्रतिनिधि यहां एक दूसरे के साथ उठते बैठते, खाते पीते और व्यापार करते थे ।

लाइपज़िग व्यापार मेले की सफलता और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व यहै एक तथ्य सिद्ध करता है कि इस जयन्ती मेले में इस साल विभिन्न देशों की संसदों और सरकारों के ३३ प्रतिनिधि-मण्डल आये थे । इसके अलावा अनेक देशों के ख्यातिनामा राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, व्यापारी आदि सैकड़ों की संख्या में आये थे । इनमें से कतिपय उल्लेखनीय प्रतिनिधि-मण्डलों के नाम हैं सोवियत संघ का प्रतिनिधि-मण्डल, जिसका नेतृत्व स्वयं वहां के प्रधान मंत्री कोसिगिन कर रहे थे, पोलैण्ड जन गणराज्य का प्रतिनिधि मण्डल, इस का नेतृत्व वहां के प्रधान मंत्री जोजेफ सीरानकिविज कर रहे थे, और चैकोस्लावाक समाजवादी गणराज्य के प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व वहां के प्रधान मंत्री, ओतकार सिमूनेक कर रहे थे ।

लाइपज़िग जयन्ती मेले का विश्व रूप तो अपूर्व था । ७५ देशों के १०,४५० प्रदर्शक मेले में अपनी वस्तुएं लेकर आये थे, और ३४४,००० वर्ग मीटर क्षेत्रफल पर ये वस्तुएं प्रदर्शित हुईं थीं । इस व्यापार मेले को देखने के लिये ४९ देशों के दर्शक आये थे । इनमें ८५,१०० दर्शक पश्चिमी जर्मनी, पश्चिम बर्लिन और अन्य देशों के थे, और ६५०,००० दर्शक जर्मन जनवादी गणतंत्र के विभिन्न स्थानों से आये थे ।

व्यापार का अनुकूल वातावरण

व्यापार करने का यहां बहुत ही अनुकूल तथा उचित प्रबन्ध था । यही कारण है कि इस अवसर पर यहां बहुत बड़ी मात्रा में व्यापार हुआ ।
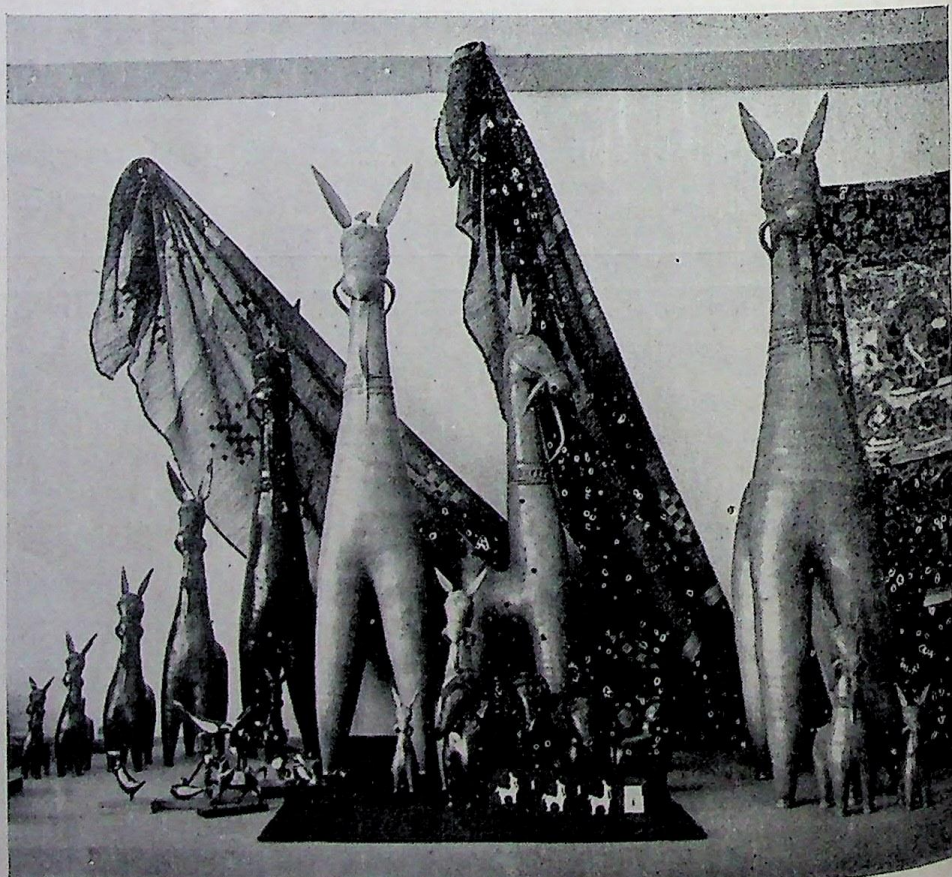
मेले के भारतीय मंडप में रखी गयीं हस्तकला की ये वस्तुएं बहुत लोकप्रिय रहीं

लाइपज़िग मेला दफ्तर के महानिदेशक, डा॰ राल्फ लेमजर, ज. ज. ग. के विदेश व्यापार मंत्रालय द्वारा दी गई एक काकटेल पार्टी में, श्री करुणाकरण तथा श्रीमती सुभद्रा करुणाकरण का स्वागत करते हैं

समाजवादी देशों की विदेश व्यापार संस्थाओं ने आपस में, और अन्य गैर समाजवादी देशों के प्रतिनिधियों तथा फर्मोंके साथ कई व्यापार करारों पर दस्तखत किये । यह तथ्य समाजवादी देशों की बढ़ती हुई आर्थिक शक्ति का सबूत है ।

नवोदित, विकासशील राज्यों ने भी अपने पारस्परिक और नये, औद्योगिक वस्तुओं का खूब प्रदर्शन किया था जयन्ती मेले में, और मेले के दौरान उन्होंने भी अन्य देशों के व्यापारियों तथा प्रतिनिधियों के साथ संपर्क स्थापित किये और अच्छी, अनुकूल शर्तों पर व्यापारिक समझौतों पर दस्तखत किये । . . पूंजीवादी देशों से आये व्यापारियों ने भी इस अवसर को अच्छी तरह इस्तेमाल किया, और उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र की विदेश व्यापार संस्थाओं से कई व्यापार समझौते किये । पश्चिमी बर्लिन की अनेक फर्में भी मेले में भाग लेने आई थीं ।

प्रदर्शन की मुख्य वस्तुएं

जर्मन जनवादी गणतंत्र की विदेश व्यापार संस्थाओं ने, समाजवादी और गैर समाजवादी देशों से आये हुये व्यापारिक क्षेत्रों के विभिन्न प्रतिनिधियों में इस बार एक विशिष्ट रुचि देखी । यह थी ज. ज. ग. के साथ विदेश-व्यापार बढ़ाने और आर्थिक संबंध कायम करने की रुचि । इस रुचि को प्रेरित करने का श्रेय है ज. ज. ग. के राष्ट्रीय स्वामित्व वाले और परियोजनाबद्ध उद्योगों को जिन्होंने यहां के उद्योग में एक तकनीकी क्रान्ति ला दी है । इंजीनियरी, विद्युत-तकनीकी, इलैक्ट्रानिकी और रासायनिक उद्योगों की वस्तुओं का व्यापार तो विशेष सफल रहा ।

स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाली २२० वस्तुएं

ज. ज. ग. के निरन्तर विकसित होते हुये उद्योग की योग्यता इस बात से तो बिलकुल साफ हो जाती है कि समाजवादी और गैर समाजवादी देशों ने लाइपज़िग के उक्त जयन्ती मेले में, ज. ज. ग. से पूरे तथा तैयार कारखाने और उपकरण आयात करने के कई समझौतों पर दस्तखत किये । इसके अलावा उच्च तकनीकी स्तर का सामान सप्लाई करने के लिये भी ज. ज. ग. की कई फर्मों ने व्यापार-करारों पर हस्ताक्षर किये ।

८००वें जयन्ती व्यापार मेले में भी सब से अच्छी प्रदर्शित वस्तुओं को स्वर्णपदक दिये गये । इन वस्तुओं और पदकों की संख्या २२० थी । मेले के दौरान तकनीकी इंजीनियरी व्यापार आदि से संबंधित विषयों पर कई विचारोत्तेजक भाषण, परिसंवाद, एवं गोष्ठियां आयोजित की गयीं, जिनमें विभिन्न देशों के विशेषज्ञों ने भाग लिया ।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि सन् १९६५ का लाइपज़िक व्यापार जयन्ती मेला एक अत्यन्त महत्वपूर्ण आर्थिक एवं राजनीतिक घटना थी । इस शानदार मेले की भव्य सफलता के लिये ज. ज. ग. के विदेश एवं अन्तर जर्मन व्यापार के मंत्री ने यहां की श्रमिक जनता ,यहां के उद्योग, और देश विदेश के प्रदर्शकों तथा दर्शकों का तहेदिल से शुक्रिया अदा किया है जिनका अदम्य सहयोग इस जयन्ती मेले की इतनी बड़ी सफलता का कारण है ।

जयन्ती मेले के अवसर पर सुसज्जित लाइपज़िग का एक दृश्य । दाईं तरफ "स्टाड्ट लाइपज़िग" नामक नवनिर्मित होटल खड़ा है

याल्टा सम्मेलन के २० वर्ष बाद

फरवरी, १९४५ में आयोजित सोवियत, अमरीकी तथा ब्रिटिश सरकारों के प्रधानों का याल्टा सम्मेलन, विश्व के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह सम्मेलन फासिस्ट जर्मनी तथा दूसरे महायुद्ध में उसके मददगार देशों के विरुद्ध, हिटलर-विरोधी सम्मिलत शक्तियों के संयुक्त संघर्ष के चरम बिन्दुओं में माना जाता है।

इस सम्मेलन में वे सामान्य कार्य निर्धारित किये गये जो फासिस्ट आक्रमणकारियों की पूर्ण पराजय के लिए, मित्र राष्ट्रों को करने थे। इसके अतिरिक्त युद्धोपरांत विकास कार्यों के लिए आवश्यक नियम भी तै किये गए। इस समझौते के फलस्वरूप मित्र-राष्ट्रों में फूट के फासिस्टों के सपने चूर चूर हो गये।

'याल्टा सम्मेलन' द्वारा जारी किये गए अन्तिम वक्तव्य के अनुसार मित्र राष्ट्रों ने स्थायी शांति के पुनःस्थापन तथा सुरक्षा के लिए सब कुछ करने का दृढ़ निश्चय किया। 'सम्मेलन' में भाग लेने वालों ने जर्मन सैन्यवाद तथा नाजीवाद को नष्ट कर देने का प्रण किया, और यह निर्णय किया गया कि जर्मनी को फिर ऐसी स्थिति में पहुंचने का मौका ही नहीं दिया जायेगा जिससे वह पुनः विश्व शांति भंग कर सके।

दोनों महायुद्धों का कारण जर्मन साम्राज्यवाद था। इन युद्धों ने जो असंदिग्ध पाठ पढ़ाया और जो 'सम्मेलन' के इस समझौते में व्यक्त किया गया वह यह था कि आक्रामक जर्मन सशस्त्र-सेनाओं को नष्ट किया जाय, अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के आदर्शों के अनुसार सभी युद्ध अपराधियों पर मुकदमे चलाकर उनको दण्ड दिया जाए, सैन्य संस्थाओं को तोड़ दिया जाय और जर्मन जन जीवन पर हर प्रकार के नाज़ी तथा सैनिक प्रभावों को पूर्णतः समाप्त कर दिया जाये।

ये लक्ष्य न केवल हिटलर-विरोधी मित्र राष्ट्रों की जनता के सामान्य हितों के अनुकूल थे, बल्कि उसी हद तक ये जर्मन जनता की फासिस्ट-विरोधी तथा देश भक्त शक्तियों की इस मांग को भी पूरा करते थे कि एक शांतिपूर्ण तथा जनवादी जर्मनी को जन्म दिया जाये।

'याल्टा सम्मेलन' में उक्त लक्ष्यों की स्पष्ट घोषणा करने और फैसला लेने में पहल करने का श्रेय सोवियत संघ को प्राप्त है। इन लक्ष्यों ने, उसके बाद होने वाले सभी समझौतों के लिए एक निश्चित तथा ठोस आधार तैयार किया। बाद में होने वाले समझौतों से तात्पर्य हिटलर विरोधी सम्मिलत शक्तियों के समझौतों, और विशेष रूप से 'पोट्सडाम समझौते' से है।

सोवियत संघ, जर्मनी के विभाजन के लिए पश्चिमी देशों की सभी चेष्टाओं को दृढ़तापूर्वक अस्वीकार करके, जर्मन जनता के हितों की सदैव रक्षा करता रहा है। सोवियत संघ हमेशा एक अखण्ड, साम्राज्यवाद-विरोधी और शांतिपूर्ण जर्मनी की रचना के लिए आग्रह करता रहा है।

आज, पश्चिमी जर्मनी का पुर्नस्थापित सैन्यवाद अन्तर्राष्ट्रीय शांति के लिए एक नया खतरा बनता जा रहा है। इस स्थिति में यूरोपीय जनता की सुरक्षा तथा शांति के हित में याल्टा तथा पोट्सडाम समझौतों की याद दिलाना अत्यन्त आवश्यक जान पड़ता है।

मित्र-राष्ट्रों के समझौता-बद्ध होते हुए भी पश्चिमी जर्मनी में जर्मन सैन्यवाद का पुनः स्थापन कैसे संभव हो सका?

इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि हिटलर विरोधी सम्मिलित शक्तियों (मित्र राष्ट्रों) में तै पाये आधारभूत समझौते और फैसले पश्चिम जर्मनी में लागू ही नहीं कि ये गये, और पश्चिमी अधिकृत शक्तियों के सक्रिय सहयोग तथा सहायता से वहां (प. जर्मनी में) जर्मन सैनिकवाद तथा साम्राज्यवाद पुनः स्थापित हो गया।

हिटलर विरोधी देशों और जर्मन जनता की फासिस्ट-विरोधी जनवादी शक्तियों के लक्ष्यों की पूर्ति केवल जर्मनी के पूर्वी भाग (अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र–सं.) में ही हुई। दूसरे शब्दों में याल्टा कानफ्रेंस के फैसले और पोट्सडाम संधि की शर्तें केवल ज. ज. ग. में ही लागू हुई और पूरी की गयी।

नाज़ी तथा युद्ध अपराधों के निस्सीमित्करण संबंधी एक विशेष कानून पास करके जर्मन जनवादी गणतंत्र ने स्पष्टतः सिद्ध कर दिया है कि पुराने मित्र राष्ट्रों के निर्णयों के आधारभूत, फासिस्ट विरोधी तथा जनवादी नियम तथा सिद्धान्त इस देश में पूर्ण रूप से लागू किये जा रहे हैं।

पश्चिमी जर्मनी के सैन्यवाद का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। इसका कारण पश्चिम जर्मन सरकार की हठपूर्ण चेष्टायें हैं जो वह अणुअस्त्रों को किसी भी तरह प्राप्त करने के लिए कर रही है। उसकी ये चेष्टायें जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य सीमाओं पर अणु सुरंगें बिछाने की ओर भी लक्षित हैं।

इस प्रकार 'याल्टा कानफ्रेंस' के बीस वर्ष पश्चात समस्त संसार को इसका पर्याप्त सबूत मिल चुका है कि हिटलर विरोधी मित्र राष्ट्रों के निर्णयों के पश्चिमी जर्मनी में पूरा न होने और पश्चिमी शक्तियों के जर्मन शांति संधि से इनकार करने के घातक परिणाम निकले हैं।

इसलिए जब तक एक जर्मन शांति संधि नहीं होती, पश्चिमी जर्मनी में मित्र राष्ट्रों के समझौतों को लागू करने के लिए पश्चिमी शक्तियों के विशेष दायित्व की याद दिलाया जाना अत्यन्त अनिवार्य है।

वार्सा सन्धि राज्यों की राजनीतिक सुझाव समिति ने अपनी हाल ही में हुई एक बैठक में उस खतरे का विस्तृत विश्लेषण किया है जो जर्मन सैन्यवाद से यूरोपीय सुरक्षा के लिए बना हुआ है।

इस समिति ने सुझाव दिया है कि पश्चिम जर्मन सरकार की आक्रामक नीति से से बचाव के लिए तुरन्त ये कदम उठाए जाने चाहियें: मध्य यूरोप की वर्तमान सीमाओं को मान्यता देना, दूसरे महायुद्ध के शेष बचे झगड़ों को समाप्त करना दोनों जर्मन राज्यों द्वारा हर प्रकार के अणु-अस्त्रों का पूर्ण त्याग और निःशस्त्रीकरण के उपायों पर अमल करना इत्यादि।

विश्व संसदों के नाम
ज. ज. ग. की लोकसभा की अपील

पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य की सरकार ने, हाल ही में यह फैसला किया है कि दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के २० साल बाद--अर्थात् ८ मई, १९६५ के दिन से, वह नाज़ियों तथा युद्ध अपराधियों पर मुक़दमे नहीं चलायेगी। इस खतरनाक और ग़लत फ़ैसले से क्षुब्ध होकर जर्मन जनवादी गणतंत्र की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) ने दुनिया के सभी राज्यों की संसदों को एक अपील भेजी है । इस अपील में इन संसदों को हिटलर और उसके नाज़ी दरिन्दों द्वारा किये गये नृशंस अपराधों की याद दिलाकर यह अनुरोध किया गया है कि संसदें दूसरे महायुद्ध के मित्र राष्ट्रों से (अर्थात् अमरीका, सोवियत संघ, ब्रिटेन तथा फ्रांस, जिन्होंने मिलकर हिटलर की कमर तोड़ी थी--सं०) मांग करें कि वे नाज़ी युद्ध अपराधियों को, अनिवार्यतः अदालतों के सामने लाकर दण्डित करायें।

११ दिसम्बर, सन् १९४६ में, अपने प्रस्ताव न. ९६ (१) और ६ दिसम्बर, सन् १९४८ के अन्य प्रस्ताव द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि नूरम्बर्ग अदालत में (दूसरे महायुद्ध के बाद जहां नाज़ी युद्ध अपराधियों पर मुक़दमे चले और उनको दण्ड दिया गया--सं०) प्रतिपादित तथा निर्धारित सिद्धान्तों और इस अदालत के फ़ैसलों को स्वीकार करके इनको अन्तर्राष्ट्रीय क़ानूनों का रूप दे दिया है ।

जर्मनी के दो राज्यों में विभक्त होने के बाद, दो में से एक राज्य अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, फासिस्तवाद तथा जर्मन सैनिकवाद के उन्मूलन, और नाज़ी युद्ध अपराधियों को दण्डित करने की अपनी अन्तर्राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी तथा कर्तव्य को पूरा किया है, और आज भी पूरा कर रहा । १ सितम्बर, सन् १९६४ के दिन ज. ज. ग. के पीपुल्स चैम्बर ने "नाज़ी और युद्ध अपराधों को सीमाबद्ध न करने का क़ानून" पास किया ।

लेकिन जर्मन भूमि पर स्थित दूसरे राज्य--फेडरल (पश्चिम) जर्मन गणराज्य में, नाज़ी और युद्ध अपराधियों को नाम-मात्र के लिये अदालतों के सामने लाया गया, और अनेक नाज़ियों को अदालतों से बचाकर, बड़ी बड़ी नौकरियां तक दे दी गयीं । इतना ही नहीं ५ नवम्बर, १९६४ के दिन पश्चिमी जर्मनी की सरकार ने यह फैसला किया कि ८ मई, १९६८ के बाद नाज़ी युद्ध अपराधियों को अदालतों के सामने न लाया जाये (अब इस तिथि को बढ़ाकर ३१ दिसम्बर, १९६९ कर दिया गया है--सं०) ; दूसरे शब्दों में, प. जर्मन सरकार के इस फैसले का मतलब होगा हज़ारों युद्ध अपराधियों का दण्डित होने से बचना, खुली छूट पाना उनका । ज़ाहिर है कि यह भयानक फैसला न केवल अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून की खिलाफवर्ज़ी ही है, बल्कि इससे यूरोप और दुनिया की शान्ति ज़बरदस्त खतरे में पड़ जायेगी । पश्चिम जर्मन सरकार का यह फैसला उनकी युद्धपोषक और प्रतिहिंसावादी नीति का स्पष्ट प्रमाण है ।

पश्चिम जर्मन सरकार के इस कुत्सित फ़ैसले से दुनिया की शांतिकामी जनता में रोष तथा गुस्से की एक प्रबल लहर दौड़ गई है ।. . . . जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार जर्मन राष्ट्र के कल्याण और हित को जानती है, और वह दुनिया के प्रति अपने उत्तरदायित्व को भी खूब समझती है । इसी जागरूकता का यह नतीजा है कि ज. ज. ग. की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) ने विश्व की तमाम संसदों को, पश्चिमी जर्मनी के उक्त खतरनाक फ़ैसले के विरुद्ध अपनी सशक्त आवाज़ उठाने की अपील की है, [illegible] मानवघाती नाज़ी युद्ध अपराधी ,अपने नृशंस अपराधों और काली करतूतों का उचित दंड प्राप्त करें ।

ऐसे हिटलरी युद्ध अपराध फिर न होने पायें

तख्ते पर लिखा हुआ है : "रूसियों की मृत्यु आवश्यक है हमारे जीवित रहने के लिये ।" ऐसे ही अनेक नाज़ी युद्ध-अपराधी आज भी आज़ाद घूम रहे हैं

भारत और ज. ज. ग. निर्माण के सहयोगी
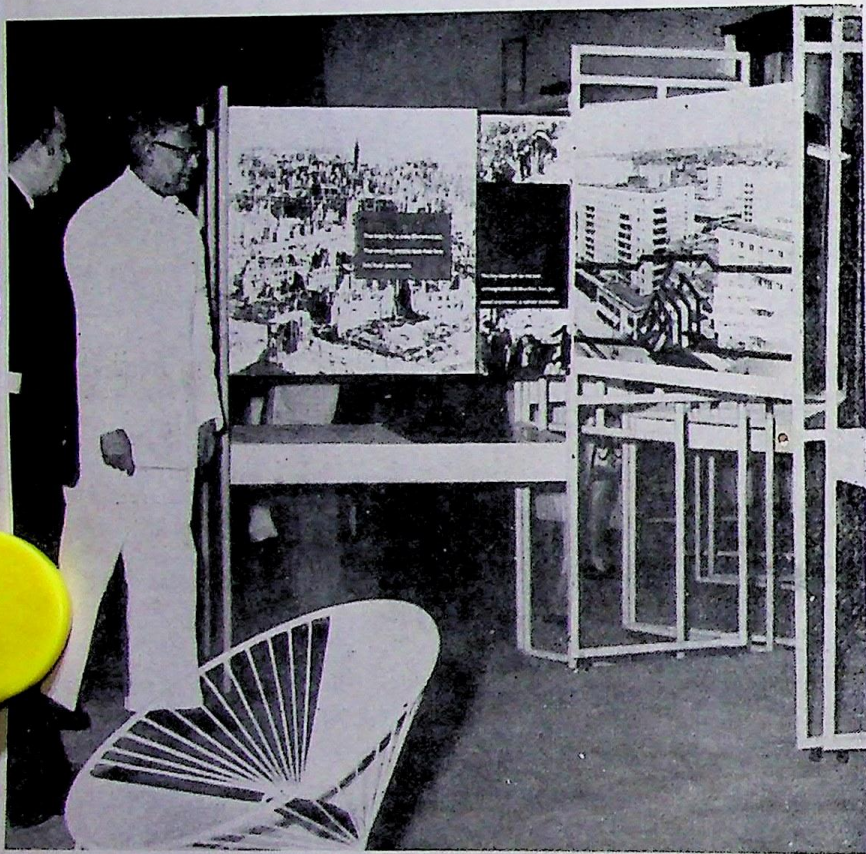
मार्च में, तामिलनाडु कांग्रेस कमेटी के प्रधान कार्यालय 'सत्यमूर्ति भवन' (मद्रास) में "ज. ज. ग. के १५ वर्ष" नामक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया 'दक्षिण भारत चैम्बर ऑफ कामर्स' के प्रधान, श्री एम. वी. अरुणाचलम ने। उन्होंने ज. ज. ग. की आर्थिक प्रगति को अद्भुत और विकासशील देशों के लिये एक उदाहरण कहा। इस पृष्ठ के चित्रों पर श्री अरुणाचलम प्रदर्शनी की विभिन्न वस्तुओं को देखते हैं। मद्रास स्थित,

ज. ज. ग. के क्षेत्रीय व्यापार प्रतिनिधि डा. फाउलवेट्टर ने, श्री अरुणाचलम को, प्रदर्शनी में, तकनीकी पुस्तकें भेंट की। . . . यह प्रदर्शनी आजकल त्रिवेन्द्रम (केरल) में दर्शकों का केन्द्र बन चुकी हैं। वहां इसका उद्घाटन किया राज्य शिक्षा सलाहकार बोर्ड के अध्यक्ष, श्री ए. एन. थम्पी ने।
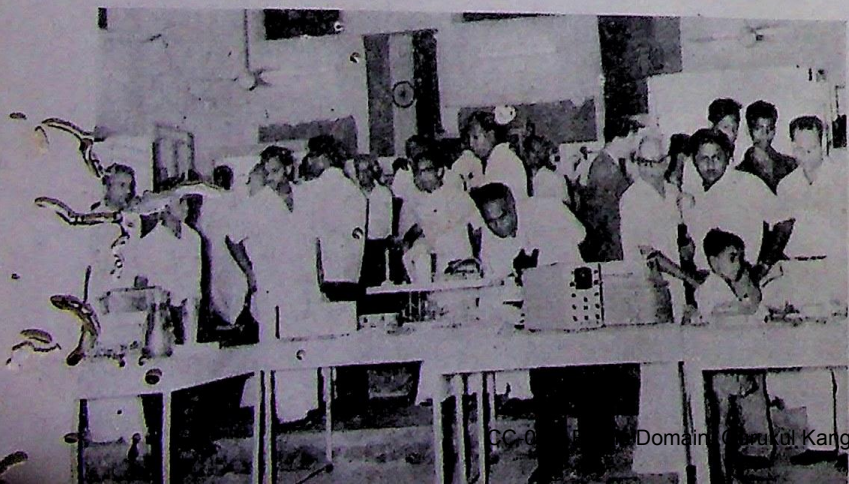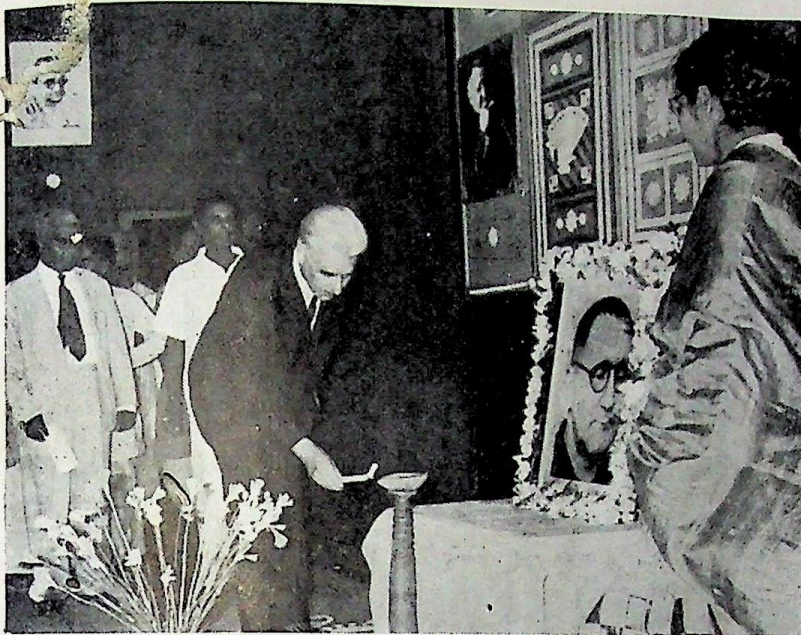
१. हाल ही में, कलकत्ता में "ब्रेख्त संघ" की स्थापना के अवसर पर ज. ज. ग. के 'विश्व मैत्री संघ' के प्रधान, डा. पाल वाण्डल उपस्थित थे।

२. ३. ये चित्र हैं जर्मन नाटककार फ्रीडरिख वोल्फ द्वारा लिखित "प्रोफेसर मामलाक" नामक नाटक के दो दृश्य, जिसको अभिनीत किया कलकत्ता के सुप्रसिद्ध रंगमंच "लिट्ल थियेटर ग्रुप" ने नाटक में, शोभा सेन ने श्रीमती मामलाक और उत्पल दत्त ने प्रोफेसर मामलाक का सुन्दर तथा सफल अभिनय किया।

४. ५. फरवरी-मार्च में फ्रित्स किरचोफ के नेतृत्व में 'फ्री जर्मन यूथ' नामक नवजवान संघ का एक प्रतिनिधि-मण्डल, 'अखिल भारतीय युवक कांग्रेस कमेटी' और 'अखिल भारतीय नवजवान फेडरेशन' के निमन्त्रण पर भारत आया। राजघाट तथा शांतिवन की समाधियों पर उन्होंने श्रद्धा के फूल चढ़ाये।

वाइमर के वे दो मकान

कूर्ट गान्ज़

वाइमर, जो विश्वप्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है, क्लासिकी जर्मन कविता का घर है। यही वह नगर है जहां जर्मनी के दो महान कवि, गेटे और शिल्लर आजीवन रहे और उन्होंने अपनी रचनाओं को जन्म दिया। इन दो महा कवियों की काव्य तथा दार्शनिक कृतियों का काफी हिस्सा आज विश्व-संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन चुका है। यही कारण है कि वाइमर, दुनिया भर के पर्यटकों और यात्रियों के लिये आकर्षण का एक प्रमुख केन्द्र बन चुका है।

वाइमर की राष्ट्रीय रंगशाला के प्रांगण में गेटे और शिल्लर की मूर्तियां

वाइमर, जर्मन जनवादी गणतंत्र के दक्षिण में स्थित एक साधारण सा कस्बा है। यहां की इमारतें, वास्तुकला की दृष्टि से, साधारण ही हैं। गगनचुम्बी अट्टालिकाओं और आलीशान इमारतों का यहां अभाव है। यहां के उन दो मकानों की सादगी और अकृत्रिम हावभाव से, जिनमें गेटे तथा शिल्लर रहते और काम करते थे, दर्शक मुग्ध हो जाते हैं। ये दोनों मकान अब राष्ट्रीय स्मारक बना दिये गये हैं और इनकी देखभाल के लिये सरकार काफी धनराशि खर्च करती है।

गेटे के आवास का नाम है "आम फ़ाउए-नप्लान"। सादगी की शान में खड़ा यह मकान, आस-पास के मकानों पर हावी नहीं हुआ है। कवि के मित्र कार्ल आह्गस्ट ने यह मकान उनको उपहार दिया था, और यह मकान लगभग पचास वर्षों तक उनका घर रहा। इसी घर में कवि-वैज्ञानिक ने अपनी महान रचनाओं का सृजन किया, यहीं उनका परिवार बढ़ा और इसी घर में, राजनयिक के नाते वे अपने मेहमानों तथा प्रशंसकों का स्वागत सत्कार करते थे। आज यह मकान एक सुन्दर संग्रहालय बना दिया गया है जहां कवि के संकलन तथा अन्य वस्तुएं संग्रहीत करके सुरक्षित रखी गई हैं।

मकान में दाखिल होते ही सामने सीढ़ियां नज़र आती हैं ऊपर की मंजिल में जाने के लिये। इन सीढ़ियों का नक्शा स्वयं गेटे ने तैयार किया था। सीढ़ियां उन कमरों तक पहुंचा देती हैं जो सामाजिक कार्यों के लिये सुरक्षित रखे गये हैं। मकान की बैठक का नाम 'यूनो कक्ष' है, जहां से नाना रंगों से सुसज्जित मकान के सभी कमरे एक नज़र में देखे जा सकते हैं। हर एक कमरे में इन महाकवि द्वारा संकलित सुन्दर कला-कृतियां संकलित करके रखी गई हैं। स्वागत-कक्षों से, एक छोटा द्वार, दर्शक को कवि के अध्ययन कक्ष में पहुंचा देता है। इस कक्ष की सादगी इतना गहरा प्रभाव डालती है कि इस सादगी पर गुर्बत का गुमान होने लगता है। महाकविके उन अमर भावों तथा विचारों ने जिन्होंने विश्व को प्रभावित किया, यहीं जन्म लिया। इसी कक्ष के एक कोने में सफेद चादर से ढका वह साधारण पलंग बिछा हुआ है जिसमें २२ मार्च, १८३२ के दिन गेटे, अनन्त निन्द्रा में हमेशा के लिये सो गये।

इस अध्ययन-कक्ष की एक खिड़की से हमारी दृष्टि मकान के सुन्दर, कटे-छटे और लता-द्रुमों से भरे बाग पर गई। काम से फारिग होकर कवि इसी बाग में अपना अवकाश बिताते थे।.. गेटे के जन्म दिन पर यहां शाम को देश देशान्तरों से आये हुये पर्यटक और अतिथि जमा हो जाते हैं और इस महान कवि की याद को ताज़ा करते हैं।

इस बात को स्मरण करके आश्चर्य होता है और मानसिक क्लेश भी कि दूसरे महायुद्ध के अन्तिम दिनों में, अकारण ही, मानवीय परम्परा के इस सुन्दर केन्द्र को अमरीकी बमों का शिकार बना कर, काफी क्षति पहुंचाई गई। लेकिन, उस समय के सोवियत अधिकृत शासन ने, बड़ी रकम खर्च करके इस भीषण क्षति को पूरा किया। मरम्मत पूरा होने के चार साल बाद—अर्थात गेटे की २००वीं वर्षगांठ के अवसर पर, सन् १९४९ में, इस भव्य स्मारक को, दुनिया भर से आये हुये पर्यटकों के लिये खोल दिया गया।

प्रमुख संग्रहालय में संकलित वस्तुओं को, एक बगल वाले मकान की दो मंजिलों में रखा गया है। ये संकलन गेटे के घर के हिस्से हैं और उनका यह घर अपने मौलिक आकार में सुरक्षित रखा गया है। गेटे संग्रहालय में रखी गई वस्तुओं को देखकर दर्शक के सामने महाकवि का सारा जीवन साकार सा हो उठता है।

गेटे के घर—"फ़ाउएनप्लान" से कुछ ही कदम के फासले पर एक अन्य महान कवि का मकान स्थित है। आज के शिल्लर मार्ग के मोड़ पर कवि शिल्लर का यह घर पुराने और बदसूरत मकानों के बीच में सीना ताने खड़ा है। वास्तुकला की दृष्टि से शिल्लर का घर गेटे के घर जितना भव्य नहीं है, क्योंकि महा कवि योहान्न वोल्फगांग वान गेटे, राज्य के एक मंत्री भी रहे थे, और फ़्रेडरिक शिल्लर, पड़ोस के येना विश्वविद्यालय में इतिहास के

साधारण प्रोफेसर थे । फिर भी यह मकान, जर्मनी के सर्वश्रेष्ठ नाटककार का घर रहा तीन वर्ष तक—अर्थात सन् १८०२ से निधन तक, और इस लघु अवधि में ही, इस मकान ने विश्व प्रसिद्धि पाई । कवि तथा नाटककार शिल्लर की सभी उत्कृष्ट रचनायें दुनिया की सभी मुख्य भाषाओं में अनुदित हुई हैं ।

शिल्लर मार्ग के मोड़ पर स्थित महाकवि शिल्लर के घर में एक भिन्न वातावरण घेर लेता है दर्शक को । लेकिन कवि की संकलित स्मारक-संग्रहालय में दर्शक, कवि के उस दुखंपूर्ण संघर्ष से परिचित होता है जो उन को अपने बहुत छोटे जीवन में, अभाव और एक असाध्य रोग के खिलाफ करना पड़ा था । किन्तु इसी कठिन संघर्ष में तप कर महाकवि ने उन अमर रचनाओं का सृजन किया, विश्व की सांस्कृतिक विरासत में जो अनुपम देन है ।

कवि शिल्लर की लिखने वाली मेज़ पर, आज भी उनके इस्तेमाल की चीजें—दवात, मोमबत्ती रखने का स्टैंड, नसवार की डिबिया

१.

१. महाकवि गेटे का मकान 'फ्राउएनप्लान'

२. फ्रेडरिख शिल्लर का घर

२.

महाकवि शिल्लर की काम करने की मेज़

इत्यादि रखी गई हैं । इन चीजों के साथ ही वह कागज का पन्ना भी वहां रखा हुआ है जिस पर उन्होंने अपना महाकाव्य "डेमीट्रियस" लिखना प्रारंभ किया था, और जो कवि की असामयिक मृत्यु के कारण अपूर्ण रहा ।

महाकवि शिल्लर का घर भी दूसरे महायुद्ध की बमबारी में आंशिक रूप में तबाह हुआ था, लेकिन जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार की उदार आर्थिक सहायता से यह पुनः अपने पूर्वरूप को प्राप्त कर चुका है ।

रचनाओं और वस्तुओं से—जो यहां सुरक्षित रखी गई हैं—दर्शक, शिल्लर की प्रखर प्रतिभा से प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता। . . . एक संकरी सीढ़ी दर्शक को उन कमरों तक ले जाती है, जिनमें महाकवि शिल्लर अन्तिम समय तक रहते थे । कमरे देखने में साधारण किन्तु आकषर्क हैं, और ये तद्कालीन रूप-सज्जा से ही सजाये गये हैं ।

ये कमरे, एक द्वार के द्वारा, कवि के अध्ययन-कक्ष से मिले हुये हैं । इसी कक्ष में शिल्लर का प्राणान्त हुआ । शिल्लर के इस

श्रीलंका में ज. ज. ग. के मण्डप की लोकप्रियता

इस वर्ष, १ फरवरी से १० मार्च तक कोलम्बों में एक अन्तर्राष्ट्रीय औद्योगिक प्रदर्शनी हुई। इसे ३० लाख से अधिक लंका वासियों ने देखा।

इस सुन्दर द्वीप के लाखों नागरिकों का कई सप्ताह के लिए एकमात्र लक्ष्य यह अन्तर्राष्ट्रीय औद्योगिक प्रदर्शनी ही थी। इतने बड़े पैमाने पर श्रीलंका में होने वाली अपने प्रकार की यह पहली प्रदर्शनी थी। दिन के समय बढ़ती हुई गर्मी के कारण, यह प्रदर्शनी सायंकाल का एक विशेष मनोरंजन बन गई। प्रदर्शनी क्षेत्र के बीचोंबीच जर्मन जनवादी गणतंत्र द्वारा निर्मित ज़ाइस्स नक्षत्रगृह, बिजली के प्रकाश में चमचमाता था। इस प्लेनेटेरियम को रेडियो सीलोन ने "प्रदर्शनी का रत्न" का नाम दिया। प्रवेश द्वारों पर टिकिट घरों के सामने दर्शकों की लम्बी कतारें लगी रहतीं जो धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा में खड़े रहते। इसके बाद श्रीलंका के तथा विदेशी मंडपों के सामने भी लोगों की लम्बी लम्बी लाइनें लगी रहती थीं। लोग द्वीप के कोने कोने से औद्योगिक विकास का यह प्रदर्शन देखने के लिए आए। किसानों तथा भिक्षुओं, और इन सब के अतिरिक्त असंख्य युवा जनों ने पहली बार श्रीलंका के विकास का संपूर्ण चित्र देखा। उन्होंने अपने देश के बारे में वह सब कुछ देखा जिससे वह अब तक अनभिज्ञ थे। यह विशेष रूप से नए सीलोन की उन औद्योगिक लब्धियों का प्रतिनिधि प्रदर्शन था जिनका अपना महत्व है। श्रीलंका में, जहां पहले चाय तक भी आयात होती थी और इस के लिए पैकिंग सामग्री भी विदेशों से मंगानी पड़ती थी, वहां आज यह देश इस स्थिति में है कि यह चाय शोधन तथा चयन की मशीनें दूसरे देशों को भेज सकता है। इसी प्रकार की प्रगति वस्त्र तथा सीमेंट उद्योगों व रबड़ तथा मृत्तिकला उत्पादन में भी हो चुकी है। श्रीलंका सफलता पूर्वक आर्थिक स्वाधीनता की ओर अग्रसर है।
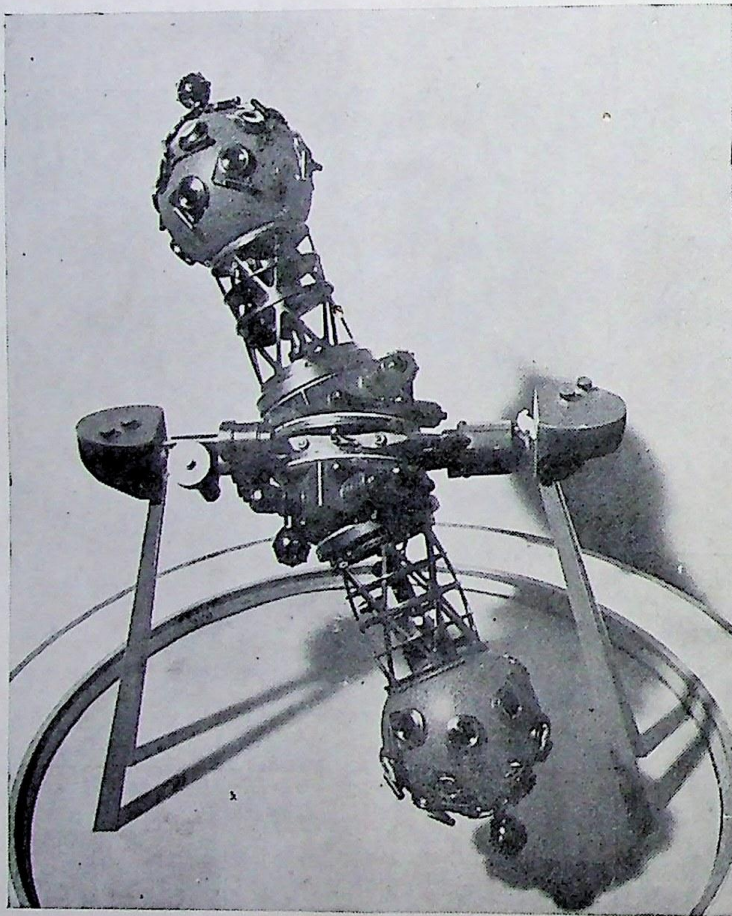
इस प्रदर्शनी में भाग लेने वाले ९ अन्य देशों में अपेक्षाकृत जर्मन जनवादी गणतंत्र का प्रदर्शन सबसे बड़े पैमाने पर था। ज. ज. ग. ने अपने प्रदशन में श्रीलंका की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखा था। इसने मुख्य रूप से इंजीनियरिंग, रसायन तथा इलैक्ट्रोटैक्नीकल पदार्थों के साथ-साथ परिवहन तथा छापेखाने की मशीनों का प्रदर्शन किया था। इस अवसर पर आर. एफ. टी. टेलिप्रिन्टर तथा 'चोपाउ' मोटर साईकल उद्यम द्वारा सीढ़ियों पर मोटरसाईकिल की ढाल दौड़ विशेष आकर्षक थे। औद्योगिक प्रदर्शनी में ज. ज. ग. के भाग लेने का आधार १९६३ के अन्त में की गई ज. ज. ग. की निर्यात प्रदर्शनी के उत्तम परिणाम थे। इसके अतिरिक्त श्रीलंका के साथ व्यापार में महत्वपूर्ण प्रगति इसका दूसरा कारण था। श्रीलंका के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार १९६३ की तुलना में, १९६४ में दुगुना हो गया था।

साइस्स नक्षत्र-घर का नमूना

जर्मन जनवादी गणतंत्र के मंडप में आने वाले दर्शकों ने इलैक्ट्रो टैक्नीकल यन्त्रों तथा RS–०९ बहुधंधी ट्रैक्टर में विशेष रुचि दिखाई। इस ट्रैक्टर को धान के खेत में परीक्षित किया गया। दर्शकों ने भवन निर्माण मशीनों की भी विशेष सराहना की। ये मशीनें पब्लिक वर्क्स मंत्रालय को बेच दी गयीं थीं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार के उप-मंत्री एरिख वाएखटर तथा उनके नेतृत्व में आये हुए एक प्रतिनिधि मण्डल में महत्वपूर्ण रुचि ली गई। श्रीलंका में अपने निवास के दौरान उन्होंने आर्थिक सहयोग संबंधी एक दीर्घकालीन सरकारी समझौते पर हस्ताक्षर किए।

श्रीलंका ने लाइपज़िग मेले में भाग लिया था, और वहां पहली बार अपने औद्योगिक उत्पादनों का प्रदर्शन किया था। लाइपज़िग मेला तथा कोलम्बो की औद्योगिक प्रदर्शनी, राष्ट्रों में शांतिपूर्ण तथा समान व्यापार के विकास की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है, जो निस्सन्देह जर्मन जनवादी गणतंत्र तथा श्री लंका के बीच आर्थिक सम्बन्धों पर पर निश्चयात्मक प्रभाव डालेंगे।

पश्चिमी जर्मनी के शरणार्थी पूर्व में क्यों शरण लेते हैं ?

पिछले कुछ वर्षों में, औसतन २०० व्यक्ति प्रति सप्ताह—लगभग १०,००० व्यक्ति प्रति वर्ष—पश्चिमी जर्मनी छोड़ने पर मजबूर हुये हैं । अपने कुटुम्बों और परिवारों के साथ प्रायः उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली है और वहीं बस गये हैं ।

हाल ही में एक सुप्रसिद्ध ब्रिटिश पत्रकार श्री जॉन पीट की, जर्मन जनवादी गणतंत्र के रेडियो से एक वार्ता प्रसारित हुई । इस वार्ता में, श्री पीट ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र के निवासियों का पश्चिमी जर्मनी में रहने के लिये जाने के कारणों का विश्लेषण प्रस्तुत किया था । इस विश्लेषण में वह इस नतीजे पर पहुंचे हैं :

पश्चिमी जर्मनी के शरणार्थियों का एक दल ज. ज. ग. में शरण लेने के बाद

"युद्धोत्तर काल के प्रथम कुछ वर्षों में, पश्चिम की ओर जाने वाले लोगों में से अधिकांश का यह दृढ़ विश्वास था कि पश्चिमी जर्मनी में (पूर्व की तुलना में—सं.) वातावरण ज्यादा अच्छा और अनुकूल होगा । ऐसे लोगों में पुराने नाजी अपराधियों की बहुतायत थी, जो इस बात से डरते थे कि पूर्व में रहकर उन के पापों का भाण्डा फूट जायेगा । इसके अलावा इन लोगों का यह भी अनुमान था कि पश्चिमी जर्मनी में उनको अच्छी अच्छी नौकरियां तथा पेनशन इत्यादि भी मिलेंगी और उनको युद्ध-अपराधों के लिये दण्डित नहीं किया जायेगा । कहने की आवश्यकता नहीं कि इन लोगों का यह अनुमान एकदम सही था । . ."

लेकिन ज्यों-ज्यों जर्मन जनवादी गणतंत्र की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक नींव दृढ़ से दृढ़तर होती गयी, और ज्यों ज्यों पश्चिमी जर्मनी का वातावरण दूषित होता गया, त्यों त्यों वहां से लोग भागकर ज. ज. ग. में शरण लेने और बसने लगे । अपनी रेडियों वार्ता में इस बात का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुये, श्री जान पीट ने कुछ बहुत ही दिलचस्प तथ्य और आंकड़ सामने लाये हैं :

"पश्चिमी जर्मनी से, जर्मन जनवादी में आने वाले लोगों की संख्या का लगभग ६० प्रतिशत भाग उन लोगों का है जो पहले ज. ज. ग. के ही निवासी थे, और जो सन् '५० के बाद अपना घरबार छोड़ कर पश्चिमी जर्मनी चले गये थे बहुत जल्द अमीर बनने के लिये । उन दिनों, ज. ज. ग. का आर्थिक-जीवन काफी कठिनाइयों से भरा था । इसके अलावा यहां के अनेक निवासी पश्चिमी जर्मनी के इस झूटे प्रचार का भी शिकार हुये थे कि वहां दूध की नदियां बह रही हैं। भागने वालों में कुछ ऐसे लोग भी शामिल थे जो पारिवारिक झगड़ों के कारण भाग निकले थे । ..."

पश्चिमी जर्मनी से भागकर ज. ज. ग. में शरण लेने वाले शरणार्थियों के एक दल के १२५ व्यक्तियों में ९० ऐसे थे जिनके भ्रम टूट चुके थे और अब वे स्वदेश वापस लौट आये थे । ज. ज. ग. छोड़ने के उन्होंने ये कारण बताये :

"३१ व्यक्तियों ने अपने पारिवारिक झगड़ों, नौकरी के झगड़ों, अथवा उन दिनों की मकान न मिलने की कठिनाइयों को ज. ज. ग. छोड़ने का कारण बताया । . .

"इनमें से १८ साहसिक भावना से प्रेरित होकर, साहसिकता का मजा लेने के लिये गये थे । . . .

"१४ व्यक्तियों ने यह स्वीकार किया कि वे पश्चिमी जर्मनी में 'सोने की वर्षा' के प्रचार के शिकार हुये थे । . . . और १२ लोगों ने कहा कि वे उन दिनों बच्चे थे और उनके मां बाप उनको अपने साथ ले गये थे । ६ व्यक्तियों ने कहा कि उनके दोस्त उन्हें वर्गला कर ले गये । ४ ने स्वीकार किया कि छोट मोटे अपराध करके, सजा से बचने के लिये वे प. जर्मनी भाग निकले थे । शरणार्थियों में से एक स्त्री ऐसी भी थी जिसने कहा कि उसको समाजवाद पसन्द नहीं, इसीलिये ज. ज. ग. से वह प. जर्मनी चली गई थी । लेकिन अपने कटु अनुभव से वह अब वहां के पूंजीवाद को और भी कम पसन्द करती है । . . . ."

श्री जान पीट के यह पूछने पर कि अब वे वापस ज. ज. ग. क्यों लौट आये हैं, "शरणार्थियों में से ७५ प्रतिशत ने कहा कि पश्चिमी जर्मनी में रहन-सहन की बहुत कठिन हालत के कारण वे वहां से भाग आये हैं । रहन सहन की कठिनाइयों में उन्होंने मकानों के बहुत ज्यादा किराये, चीजों की निरन्तर बढ़ती हुई कीमतें और सामाजिक सुरक्षा का न होना, आदि का विशेष उल्लेख किया ।

"उनमें से लगभग सभी ने ज. ज. ग. में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सुरक्षा आदि की अनेक सुविधाओं का उल्लेख किया जो पश्चिमी जर्मनी में केवल पैसे से खरीदी जा सकती हैं (इसलिये जनसाधारण की पकड़ से बाहर हैं)।

"२५ शरणार्थियों में से कुछ अपने परिवार में वापस आना चाहते थे और कुछ विवाह करके यहीं बस जाना चाहते थे । . . . लेकिन इन शरणार्थियों में अधिकांश लोग ऐसे थे जो समाजवाद के गुणों से प्रभावित थे । इसलिये वे जर्मन भूमि पर स्थापित प्रथम समाजवादी राज्य—अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र के शांतिपूर्ण नवनिर्माण में हाथ बटाना चाहते थे, और जर्मन राष्ट्र की खुशहाली के लिये काम करना चाहते थे । . . . ."

जान पीट के शब्दों में "यह एक बहुत अच्छा और सुलझा हुआ फैसला था उनका, अपने तथा अपने राष्ट्र के सुखद भविष्य के लिये । . . ."

चिट्ठी-पत्री

नेपाल से दो पत्र

महोदय

आपके यहां से प्रकाशित **सूचना पत्रिका** अवलोकन करने का मौका मिला। मुझे उक्त पत्रिका बहुत अच्छी लगी।

अतः मैं अपने पुस्तकालय के लिये उक्त 'पत्रिका' पाना चाहता हूं। क्या यह पुस्तकालय आपसे उक्त 'पत्रिका' पाने की आशा कर सकता है। कृपया भेजने का कष्ट करें। यदि चन्दा लिया जाता है तो पुस्तकालय को क्या सहूलियत दी जाती है। कृपया सविस्तार लिखें और एक प्रति नमूने के तौर पर भेजें। आपके यहां से और कौनसी पत्रिकाएं निकलती हैं? कृपया सविस्तार लिखें तथा सबके नमूने की एक-एक प्रति भेजने का कष्ट करें।

कष्ट के लिये धन्यवाद

भवदीय
गोविन्द प्रसाद 'दीपक'
विराटनगर (नेपाल)

महाशय,

गत दो वर्ष से ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास से प्रकाशित होने वाली **सूचना पत्रिका** पश्चिम नेपाल स्थित "श्री महेन्द्र पुस्तकालय" में नियमित रूप से भेजने का आपने जो कष्ट किया है वह अतीव चिरस्मरणीय है। जबसे इस पुस्तकालय में 'सूचना पत्रिका' का प्रवेश हुआ तभी से हमारे पाठकगण ज. ज. ग. की आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति के ज्ञान से निकट हो रहे हैं। आप और आपके देश की जनता को पुस्तकालय की तरफ से हार्दिक स्वागत अर्पण करते हैं।

आशा है भविष्य में भी 'सूचना पत्रिका' इस पुस्तकालय को मिलती रहगी।

आपका
गुणराज शर्मा
दांग (नेपाल)

महाशय,

पिछले दो वर्षों से **सूचना पत्रिका** मेरे आवास के पते पर निरंतर आती रही है, इसके लिए मैं दूतावास का हृदय से आभार स्वीकार करता हूं।

एक सुझाव--

'सूचना पत्रिका' पाकर पाठक बड़े प्रसन्न होते हैं। यदि 'सूचना पत्रिका' के रैपर पर पाठकों के नाम तथा पते अंग्रेजी में न अंकित कर हिन्दी में अंकित किये जायं, तो मेरे जानते पाठकों की प्रसन्नता द्विगुणित हो जाएगी।

आशा है, दूतावास मेरे इस सुझाव को मानकर अपने पाठकों की प्रशंसा प्राप्त करेगा।

धन्यवाद।

भवदीय
(प्रो.) श्रवण कुमार गोस्वामी
एम.ए.
रांची (बिहार)

महोदय,

मैं लगभग दो साल से आपकी **सूचना पत्रिका** का पाठक हूं और इसे हमेशा समय पर प्राप्त करता हूं। इसकी पाठन साम्ग्री इतनी रुचिकर होती है कि इसे मिलते ही मैं पढ़कर समाप्त कर डालता हूं। शेष दिन फिर अगले अंक का इन्तजार करना पड़ता है जोकि काफी अखरता है। अतः अगर आप इसे मासिक की जगह साप्ताहिक कर दें तो बहुत अच्छा हो। आशा है आप इस पर विचार करेंगे।

आपसे एक निवेदन और है। यदि आप कुछ और पढ़ने योग्य पुस्तकें आदि भेज सकें तो मैं आभारी रहूंगा। पुस्तकें आपके देश से सम्बंधित होनी चाहिएं।

आपका
ओंकारनाथ सेठ
आगरा (उ. प्र.)

महोदय,

निवेदन है कि हमारे इस संघ, 'अग्रि-कलचुरल लेबर यूनियन' के सदस्यों तथा अन्य जनसाधारण लोगों को हमेशा कृषि आदि का कार्य करना पड़ता है। तत्सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिए हम और भी प्रयत्न कर रहे हैं। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी मासिक **सूचना पत्रिका** भेजने का कष्ट कीजिए ताकि इससे हमारे लोग लाभान्वित हो सकें। शीघ्र ही हम एक पुस्तकालय भी खोल रहे हैं।

आशा है आप हमारी इस प्रार्थना पर अपनी पत्रिका भेज कर हमें अनुगृहीत करेंगे।

भवदीय
टी. नरसिंह राव
हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

प्रिय सम्पादक जी

आज मुझे सौभाग्यवश, आपकी प्रकाशित पत्रिका, **सूचना पत्रिका** पढ़ने को मिली। यह 'पत्रिका' देखकर अति हर्ष हुआ। मैं आपके इस पुस्तक का चिर सदस्य बनना चाहता हूं, इसलिये श्रीमन् जी मुझे सदस्य बनने के नियम बताने की कृपा करें जिस से मुझे सदा ही आपकी सूचना पत्रिका पढ़ने को मिलती रहे।...

आपका
रमेश प्रसाद दानी
कांटाबांजी (उड़ीसा)

'सूचना पत्रिका'

जो पाठक, मासिक **सूचना पत्रिका** को प्राप्त करना चाहते हों, वे **दो रुपये** वार्षिक चन्दा भेज दें। इसके बाद **पत्रिका** नियमित रूप से उनको मिलती रहेगी। चन्दे की दर इस प्रकार है:

वार्षिक	:	२)
अर्ध-वार्षिक	:	१)

तथ्य और आंकड़े

जन-गणना

जर्मन जनवादी गणतंत्र की जन और व्यवसाय गणना के परिणामों के अनुसार, ३१ दिसम्बर, सन् १९६४ के दिन, ज. ज. ग. के ६,१७८ कस्बों और गांवों की कुल आबादी १७,०११,९३१ थी । इसमें ९,२६०,०६९ यानी ५४.४ प्रतिशत औरतें थीं, और ७,७५१,८६२ अर्थात् ४५.६ प्रतिशत पुरुष थे । दूसरे शब्दों में जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्रति १०० पुरुषों पर ११९ स्त्रियां हैं । इसी जन-गणना के अनुसार जर्मन जनवादी गणतंत्र में, १५ वर्ष तक की आयु वाले बच्चों की संख्या ४,०४३,४४३ थी । इसी प्रकार ६,८३६,५४३ व्यक्ति विभिन्न व्यवसायों में काम कर रहे थे, और ३,१३१,९४५ पेनशन पाने वाले व्यक्ति थे ।

अन्य आंकड़े

दूसरे आंकड़े इस प्रकार थे :

प्रति १०० व्यक्तियों पर ५८ काम करने की आयु के, २४ पन्द्रह साल की आयु तक के और १८ पेनशन पाने वाले थे।.... इसी प्रकार काम करने वालों के आयु समूह में, प्रति १०० काम करने वालों में ७३ व्यक्ति काम न करने वाले आयु समह के थे––अर्थात् ४१ बच्चे और ३२ पेनशन पाने वाले थे ।

१२,३७८ औरतें और ६,७६८ मर्द ९० वर्ष और इससे अधिक आयु के थे । ४७ औरतें और १३ मर्द १०० वर्ष या इस से अधिक आयु के थे ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन की कुल आबादी १,०७१,४६२ थी ।

ज. ज. ग. की १४ कौंटियों (प्रान्तों) की जन-संख्या इस प्रकार थी :

काल मार्क्स स्टाड्ट	२,०९०,१८०
हाल्ले	१,९३०,०२१
ड्रेस्डेन	१,८८४,३११
लाइपज़िग	१,५११,४८७
माग्देबुर्ग	१,३२३,७००
एरफ़ूर्ट	१,२४६,८०७
पोट्स्डाम	१,१२४,२६४
रोस्टोक	८३४,९५०
कोट्टबुस	८३१,८३७
गेरा	७३४,२०४
फ्रांकफूर्ट	६५३,०४१
न्यू-ब्रांडेनबुर्ग	६३२,९९६
श्वेरिन	५९३,७२२
जूल	५४८,९४९

बर्लिन से इतर, ज. ज. ग. के निम्न नगरों की जन संख्या १००,००० से ज़्यादा थी :

लाइपज़िग	५९५,२०३
ड्रेस्डेन	५०३,८५९
कार्ल मार्क्स स्टाड्ट	२९३,५४१
हाल्ले	२७४,४०२
मागदेबुर्ग	२६५,१४१
एरफ़ूर्ट	१८९,७७०
रोस्टोक	१७९,३४२
स्विकाउ	१२८,५०५
पोट्सडाम	१०९,८६७
गेरा	१०६,८४१

★

ज. ज. ग. की कृषि का निरन्तर विकास

सन् १९६४ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के सहकारी किसानों और साधारण कृषकों को सन् १९६३ की तुलना में ८५ करोड़ मार्क की अधिक आमदनी हुई । इसी अवधि में ज़ेरेकाश्त भूमि की प्रति हेक्टर भूमि पर १५ प्रतिशत अधिक फसल पैदा हुई । उत्पादन सहकारी संघों और राष्ट्रीय स्वामित्व वाले फार्मों ने, ७० करोड़ मार्क मूल्य की अधिक फसल तथा पशुधन पैदा किया (सन् १९६३ की तुलना में) । इस प्रकार, सन् १९६४ का वर्ष, ज. ज. ग. के १५ वर्षीय जीवन में, कृषि उत्पादन की दृष्टि से सबसे अच्छा साल था ।

ज. ज. ग. की कृषि, सन् १९५२ से बराबर विकसित होती रही है । उस वर्ष यहां सामूहिक तथा सहकारी खेती शुरू की गई । आज कल यहां राष्ट्रीय स्वामित्व वाले ६०० साामूहिक खेत, और १६,००० उत्पादन सहकारी संघ हैं । इन खेतों और संघों में जिन कृषि यन्त्रों का प्रयोग होता है उनका मूल्य लगभग ८०० करोड़ मार्क है (१ मार्क= १.१२ पैसे) ।

★

पश्चिमी जर्मनी के ८७९ शरणार्थी

सन् १९६५ की २५ फरवरी से २४ मार्च तक पश्चिमी जर्मनी से ८७९ लोग भाग निकले और इन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली । इनमें अधिक संख्या––अर्थात् ५०४ उन लोगों की थी जो झूठे प्रलोभनों में फंसकर कुछ समय पहले ज. ज. ग. छोड़कर पश्चिम जर्मनी चले गये थे, लेकिन वहां के अन्यन्त कठिन जीवन से थक टूटकर वे फिर से वापस लौट कर आये थे ।

पश्चिम बर्लिन से भागकर , ज. ज. ग. में शरण लेने वालों की तादाद दिन प्रति दिन बढ़ रही है । उदाहरण के लिए ११ से १३ मार्च तक १३, और १८ से २० मार्च तक १५, प. बर्लिन निवासी शरणागत बनकर ज. ज. ग. में आये शांतिपूर्ण और सुरक्षित जीवन बिताने के लिये ।

समाचार

एक होटल की महिला प्रबन्धक

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक नवीनतम होटल के प्रबन्धक पद पर एक २४ वर्षीया युवती को नियुक्त किया गया। इस होटल का नाम है "जुम लयोन" और इसका उद्घाटन हाल ही में हुआ लाइपजिग व्यापार मेले की ८००वीं जयन्ती के अवसर पर। इसमें ८५० व्यक्तियों के ठहरने का प्रबन्ध है।

"जुम लयोन" लाइपज़िग नगर के बीच में खड़ा है, और यह दूसरे महा युद्ध में बिलकुल तबाह हुआ था। इस होटल के पीछे एक कथा है। एक बार लाइपज़िग के चिड़िया घर के लिये, एक बाघ को ले जाया जा रहा था। वह किसी तरह से पिंजरे से छूट गया, और भाग कर वह इसी होटल में छुप गया। तभी से इस होटल का नाम "लयोन" पड़ा।

पैट्रिस लुमूम्बा की विधवा पत्नी ज. ज. ग. में

कांगो के शहीद प्रधान मंत्री, स्वर्गीय पैट्रिक लुमूम्बा की पत्नी, चार हफ्तों के दौरे पर जर्मन जनवादी गणतंत्र में आई हैं। श्रीमती पालीन लुमूम्बा और 'कांगो (ल्योपोल्डविल) महिला संघ' की प्रधान, श्रीमती एम्बारिगा, दोनों को, ज. ज. ग. की डिमोक्रैटिक महिला लीग ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस यहां बिताने के लिये आमंत्रित किया है। भारत और ब्रिटेन के महिला संगठनों के प्रतिनिधियों को भी उक्त निमन्त्रण दिया गया है।

काहिरा में 'अरब जर्मन संघ' के सांस्कृतिक भवन का उद्घाटन

हाल ही में, संयुक्त अरब गणराज्य की राजधानी काहिरा में, **अरब जर्मन संघ** के सांस्कृतिक भवन का उद्घाटन हुआ। यह भवन, जर्मनी, अरब तथा अन्य देशों से आये हुये वैज्ञानिकों, कलाकारों तथा अन्य बौद्धिकों का मिलनस्थल होगा। इसके अलावा यहां जर्मन भाषा भी पढ़ाई जायेगी।

सांस्कृतिक भवन के उद्घाटन के अवसर पर, अन्य महानुभावों के अतिरिक्त, 'अरब जर्मन संघ' के प्रधान, डा. नूर उद्दीन तारफ (संयुक्त अरब गणराज्य के उप प्रधान मंत्री) ज. ज. ग. के परराष्ट्र मंत्री, डा. लोटार बोल्स, और ज. ज. ग. में 'जर्मन अरब संघ' के उपप्रधान, प्रोफेसर हार्टके (ज. ज. ग. की विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष) भी सम्मिलित थे। उद्घाटन के अवसर पर डा. तारफ ने यह घोषणा की कि संयुक्त अरब गणराज्य का 'अरब जर्मन संघ' भी, जल्द ही बर्लिन में ऐसा ही एक सांस्कृतिक भवन स्थापित करेगा।

ड्रेस्डेन में पढ़ाई करने वाले विदेशी छात्र, वीतनाम जनवादी गणतंत्र पर अमरीकी आक्रमण के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। अमरीकी नृशंस हमले के खिलाफ इस तरह के प्रदर्शन पूरे ज. ज. ग. में हो रहे हैं

१० दिन में लगभग चार लाख प्रवेश-पत्रों के लिये प्रार्थना-पत्र

बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि के अन्तर्गत ईस्टर और विटजून त्यौहारों की छुट्टियों में पश्चिम-बर्लिन के निवासी, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी जनवादी बर्लिन में अपने सगे-संबंधियों से मिलने के लिये जा सकते हैं। इस सिलसिले में जर्मन जनवादी गणतंत्र ने प. बर्लिन में प्रवेश-पत्र देने के दफ्तर खोले हैं। इस वर्ष के प्रारंभ में उक्त दो त्यौहारों की छुट्टियों में, प. जर्मनी के तीन लाख, बयानवे हजार, चार सौ चौवन (३,९२,४५४) व्यक्तियों ने प्रवेश-पत्रों के लिये दरखवास्तें दीं केवल १० रोज में, ताकि वे अपने संबंधियों से मिल सकें।

फासिज़्म से मुक्ति की २०वीं जयन्ती

हिटलरी फासिज़्म की नृशंसता से मुक्ति प्राप्त करने की, २०वीं वार्षिकी के अवसर पर, विभिन्न देशों के नौजवान तथा विद्यार्थी संगठनों के प्रतिनिधियों की बैठक बर्लिन में आयोजित होगी, ४ से ८ मई, सन् १९६५ तक। इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के समायोजक हैं 'फ्री जर्मन यूथ', 'वरल्ड फैडेरेशन आफ डिमोक्रेटिक यूथ' और 'इन्टरनेशनल यूनियन आफ स्टूडेण्ट्स'। बैठक का नारा होगा: "शांति और सद्भावना का समर्थन, फासिज़्म और युद्ध का विरोध।"

अब तक प्राप्त हुई सूचनाओं के मुताबिक उक्त मीटिंग में ३० विभिन्न देशों के १०० से अधिक नौजवान तथा विद्यार्थी संगठन में भाग लेंगे।

'ओरवो' फिल्म की बढ़ती लोकप्रियता

जर्मन जनवादी गणतंत्र का 'वोल्फेन' नामक कारखाना, समस्त यूरोप में, कच्ची फिल्म बनाने वाला सबसे बड़ा कार-

21-22 ग्यारह

सचित्र समाचार

हाल ही में, 'नई दिल्ली गृहणी संघ' की प्रधान, श्रीमती रामी शन्ना ज. ज. ग. की यात्रा पर गई थीं। चित्र में वह वहां की एक सूती मिल की अतिथि रजिस्टर पर अपना हस्ताक्षर कर रही हैं
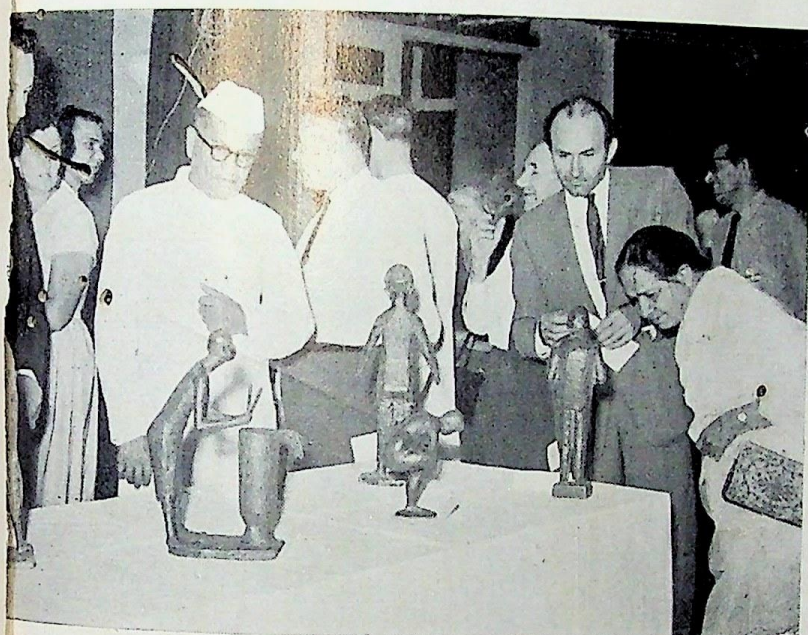
हाल ही में, बम्बई में, ज. ज. ग. के प्लास्टिक उद्योग उत्पादनों की प्रदर्शनी हुई जो बहुत लोकप्रिय रही। चित्र में (बायें कोने पर) हैं बम्बई में, ज. ज. ग. के क्षेत्रीय व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री एच. साखसे, और (सफेद वेष भूषा में खड़े) महाराष्ट्र विधान परिषद् के स्पीकर, श्री वी. एन. देसाई
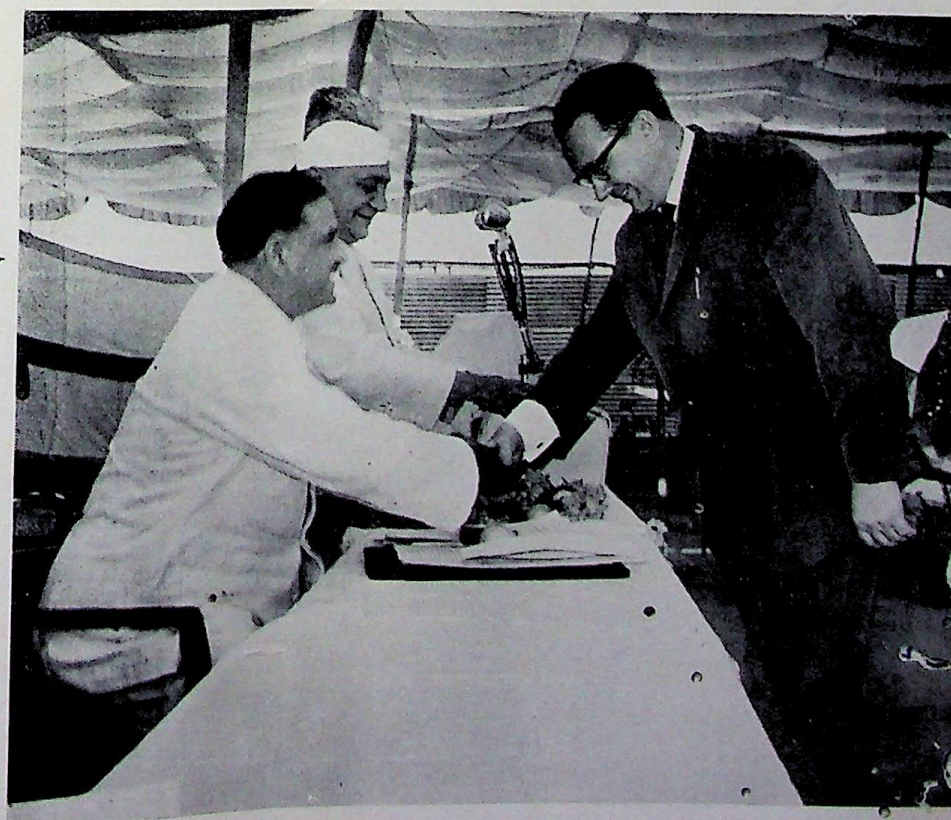
अहमदाबाद में, भारत के कृषक समाज द्वारा आयोजित ११वें 'राष्ट्रीय कृषक सम्मेलन' में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के कृषक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। चित्र में, भारत के उप कृषि मंत्री, श्री शाहनवाज खान से ज. ज. ग. के प्रतिनिधि-मण्डल के नेता श्री स्कोडोवृस्की का परिचय कराया जा रहा है

सूचना पत्रिका

फासिस्तवाद और युद्ध का दानव फिर जीवित न हो

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

५

वर्ष १०
अंक ५
२० मई, १९६५

संकेत

मुख पृष्ठ : हिटली फासिस्टों द्वारा मारे गये हजारों लाखों बेगुनाह शहीदों की पुण्य स्मृति को जीवित रखने के लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र में अनेक स्मारक बनाये गये हैं। यह चित्र है ऐसे ही एक स्मारक का जो भूतपूर्व बूखेनवाल्द यातना-शिविर की जगह पर निर्मित हुआ है

अंतिम पृष्ठ : "सब कुछ अच्छा बच्चों के लिये" यह है ज ज ग. की नीति अपनी शिशु-पीढी के लिये

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और यूनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

फ़ासिस्तवाद से मुक्ति की २०वीं वर्षगांठ

यह दानव फिर जीवित न हो...

८ मई, सन् १९४५ का दिन एक ऐतिहासिक दिन है। उस दिन, मित्र राष्ट्रों--सोवियत संघ, अमरीका, ब्रिटेन तथा फ्रांस के सामूहिक प्रयत्नों ने, दूसरे महायुद्ध में, हिटलर के क्रूर तथा बर्बर फासिस्त शासन की कमर तोड़ दी। इस वर्ष (१९६५) की ८ मई की तिथि इस महान विजय (और फासिस्तवाद के पराजय) की २०वीं वर्षगांठ है। आज से २० वर्ष पहले, हिटलर और उसकी पराजित सेनाओं ने, बिना किसी शर्त के, हथियार डाल दिये, और इस तरह फासिस्त नृशंसता का अन्त हुआ--उस नृशंसता का जिसने न केवल जर्मन जनता को ही तबाह और भयभीत कर दिया बल्कि जिसने सारे यूरोप को रौंद कर लाखों, करोड़ों निरीह प्राणियों को मौत की नींद सुला दिया। फासिस्त दानव के चंगुल से मुक्त होकर सारे संसार ने शांति की सांस ली।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में ८ मई का दिन "फासिस्तवाद से मुक्ति का दिवस" के रूप में मनाया जाता है।

हिटलर और उसके दानवी फासिस्तवाद पर विजय पाना, जर्मन जनता के हित में था, और इस विजय का सबसे अधिक श्रेय सोवियत संघ को है। फासिस्तवाद पर विजय प्राप्त होने से जर्मनी के इतिहास में एक नया अध्याय आरंभ हुआ। यह विजय एक ऐसा मील पत्थर था, जिसको उस समय बहुत कम लोगों ने पहचाना था, लेकिन जो आज पूरी दुनिया के सामने मूर्तिमान खड़ा है।

८ मई, १९४५ के दिन जर्मनी में युद्ध का अन्त हुआ। जर्मनी से आरंभ होकर आखिर यह भयानक युद्ध जर्मनी में ही हिटलर के साथ दफन हुआ। युद्ध के द्वारा जर्मन साम्राज्यवाद, फासिस्तवादी दमन चक्र के द्वारा, अन्य देशों को अपना गुलाम बनाकर और उनको लूटकर खुद ऐसा करना चाहता था। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये हिटलर और उसके पाशविक शासन ने दूसरे महायुद्ध के पहले और इसके दौरान हर तरह के बहाने बनाये और जबरदस्ती पराधीन बनाये गये अन्य लोगों पर हिटलर की सेनाओं ने अकथनीय अत्याचार किये। जर्मन लोगों के दिमाग में "हेरनरोल्ले"--अर्थात् उच्च स्वामि जाति होने का पाठ ठूंस-ठूंस कर भर दिया गया। जिन जर्मन अथवा अन्य देश भक्तों ने इस गलत और तबाहकुन धारणा का विरोध किया, उनको एक एक करके बड़ी निर्दयता से कत्ल किया गया। हजारों फासिस्त विरोधियों, ईसाइयों, डेमोक्रेटों, कम्युनिस्टों, मजदूरों तथा किसानों, लेखकों तथा कलाकारों और वैज्ञानिकों को फासिस्तों ने यातना शिविरों में डाल दिया जहां उनमें से अधिकांश असह्य पाशविक यातनाओं का शिकार हो गये। इन हजारों लाखों बुद्धिजीवियों और निर्दोष लोगों का एक मात्र गुनाह यह था कि वे, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से, हिटलर के क्रूर फासिस्त शासन के विरोधी थे। यातना शिविरों में डाल कर अपने विरोधियों को कत्ल करने का यह योजनाबद्ध तरीका फासिस्तों ने पहले जर्मनी में, और उसके बाद फासिस्त सेनाओं द्वारा अधिकृत दूसरे देशों में भी लागू किया।

लेकिन जर्मन साम्राज्यवादियों और फासिस्तों का, दुनिया पर कब्जा करने का सपना, सपना ही रह गया हालांकि इसको पूरा करने के लिये उन्होंने न केवल जर्मन जनता पर ही, बल्कि अन्य देशों के लाखों करोड़ों लोगों पर भी भयानक अत्याचार किये।

इस कुत्सित स्वप्न का पूरा न होना बिलकुल स्वाभाविक था,

हिटलर के नृशंस शासन की पराजय के बाद बर्लिन स्थित जर्मन राइखस्टाग (संसद) पर सोवियत झण्डा लहराया जा रहा है

क्योंकि इसका आधार था अन्य लोगों, देशों तथा जातियों को गुलाम बनाना और उनकी सांस्कृतियों को खत्म करके उनके भग्नावशेषों पर अपना साम्राज्य खड़ा करना।

आखिरकार, एक दिन रूस की लाल सेना उस तहखाने तक घुस आई जहां हिटलर छुपा बैठा था। उस कायर ने वहां जहर खाकर आत्म हत्या की। शिकस्त के बाद राक्षस हिटलर सारी जर्मन जनता को अपने साथ मौत की नींद सुला देना चाहता था। लेकिन शिकस्त की रफ्तार इतनी तेज़ थी कि वह अपनी इस "अन्तिम इच्छा" को पूरा न कर सका।

पगलाये हिटलर ने अपने मरने के बाद जो पीड़ा, क्षति और तावही पीछे छोड़ी, दुनिया के अनेकानेक अखबारों और साहित्य के अंबारों में उसके रौंगटे खड़े कर देने वाले वृत्तांत मिलते हैं। लेकिन यह सारा लेखन भी जर्मनी की उस दयनीय स्थिति को, दुनिया के सामने पूरी तरह लाने में शायद समर्थ न हो सका जिस स्थिति में वह, युद्ध समाप्ति के प्रथम कुछ वर्षों में छटपटा रहा था। हिटलर तो तहखाने में जहर खाकर मरा था, लेकिन उसके दानवीय कृत्यों ने पूरे जर्मन राष्ट्र की आत्मा और शरीर को नारकीय यातना सहने के लिये छोड़ा था।

* * *

इस दयनीय और यातनापूर्ण स्थिति में भी जर्मनी के कुछ ऐसे जियाले, अपने बदकिस्मत देश के भविष्य की बात सोच रहे थे। वे चारों ओर फैले खण्डहरों के ढेरों और आंसुओं तथा चीत्कारों की कोख से एक नये निर्माण और हंसते जीवन को फिर से अंकुरित करना चाहते थे। इसलिये युद्ध समाप्ति की घोषणा होते ही, बल्कि कहना चाहिये कि शांति की घोषणा के तुरन्त बाद इन लोगों ने एक नयी जर्मनी को शकल देनी शुरू की। ये लोग वही देशभक्त जर्मन थे जिन्होंने हिटलर के दानवीय फासिस्तवाद का डट कर विरोध किया था और इसके लिये जिन्हें यातना-शिविरों में तरह तरह की यातनायें सहनी पड़ी थीं। युद्ध के ज़ख्मों पर मरहम भला और कौन चढ़ा सकता था।

सारी जर्मनी में शायद ही ऐसा कोई घर बचा हो जिस पर हिटलर के राक्षसी शासन का मनहूस साया न पड़ा हो। हर एक परिवार का एक न एक सदस्य हिटलरी युद्ध की अग्नि में स्वाहा हुये बिना न रह सका। मौत, हर घर के दरवाज़े पर दस्तक देकर चली जाती अपना शिकार लेकर। इस सब से जर्मनी के वे चन्द इजारेदार पूंजीपति कुटुम्ब बाकी बचे थे जो जर्मनी पर हिटलर के माध्यम से हकूमत करते थे और युद्ध की बरबादी से करोड़ों, अरबों मार्कों का मुनाफा कमाते थे। इन कतिपय मौत के सौदागरों को छोड़कर समस्त जर्मन जनता युद्ध और इसके जन्मदाताओं से नफरत करने लगी थी।

इस परिवर्तित वातावरण में इसलिये जर्मन जनता ने, जर्मनी को एक ऐसे नये विकासपथ पर चलाने का हार्दिक स्वागत किया जिस पर चलने से जर्मनी में फासिस्तवाद खत्म हो जाता, और एक जनवादी, शांतिप्रिय जर्मन राज्य जन्म लेता। हिटलर-विरोधी मित्र राष्ट्रों ने इस नयी जर्मनी के विकास को विश्वविख्यात पोट्सडाम संधि में संधि-बद्ध किया। इस संधि में निम्न बातों की स्पष्ट घोषणा की गयी: फासिस्तवाद और जाति घृणा को समूल नष्ट करना, यूरोप में स्थायी शान्ति की स्थापना करना, जर्मनी के सैनिकवाद को खत्म करना इत्यादि।

पोट्सडाम संधि ने जर्मन जनता को एक सुनहरी मौका प्रदान किया आत्म-निर्णय के आधार पर एक खुशहाल, शांतिप्रिय और जनवादी जर्मनी बनाने का और विश्व राष्ट्रों के परिवार में फिर से उचित स्थान प्राप्त करने का।

जर्मनी के पूर्वी भाग में, जो भूतपूर्व सोवियत अधिकृत क्षेत्र था (युद्ध समाप्ति के बाद), सभी जनवादी शक्तियों तथा तत्वों ने मिलकर पोट्सडाम संधि की शर्तों तथा घोषणाओं पर अमल करना शुरू कर दिया, और इस तरह, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्होंने, फासिस्तवाद-विरोधी तथा जनवाद के अनुकूल वातावरण तैयार करना शुरू कर दिया।

जर्मनी के पूर्वी भाग में कुछ क्रांतिकारी कदम उठाये गये। इनमें से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम यह था कि जितने भी युद्ध पोषक, युद्ध प्रचारक उद्यम थे, और जितने भी नाज़ी अपराधी थे, उन सब को वहां से खदेड़ दिया गया तथा दबा दिया गया। इस कदम के उठाये जाने से जर्मनी के इस पूर्वी भाग में फासिस्त-विरोधी, जनवादी और सृजनात्मक शक्तियों के फलने फूलने के लिये ज़मीन तैयार कर दी गई। इस भाग के शक्तिशाली श्रमिकवर्ग के नेतृत्व में आम जनता ने बचे खुचे हिटलरी फासिस्त शासनतन्त्र को उखाड़ कर फेंक दिया। इसके स्थान पर नये जनवादी शासनतन्त्र को स्थापित किया गया।.... एक नये और क्रांतिकारी भूमि-सुधार कानून को लागू किया गया। इस कानून के द्वारा जर्मनी के पूर्वी भाग में बड़े बड़े जागीरदारों की जागीरें और सैनिकवादियों की जमीनें छीनी गयीं और किसानों में बांटी गयीं। ऐसा ही एक और महत्वपूर्ण कानून पास हुआ--शिक्षा सुधार कानून। इस कानून के अंतर्गत जाति -घृणा, संकुचित तथा आक्रामक राष्ट्रवाद आदि को बढ़ावा देने वाली फासिस्त शिक्षा को खत्म करके, जर्मन-संस्कृति के मानवीय पक्ष को बढ़ावा देने वाली, और अखिल मानवता को शांति तथा सहयोग का पाठ पढ़ाने वाली शिक्षा स्कूलों, कालिजों तथा अन्य शिक्षा संस्थानों में शुरू कर दी गई।

लेकन बदकिस्मती से, पोट्सडाम संधि की शर्तों का यह अक्षरशः पालन, जर्मनी के सिर्फ एक ही भाग--अर्थात् पूर्वी भाग में ही हुआ। इसके दूसरे भाग, अर्थात् पश्चिमी जर्मनी में बिलकुल विपरीत स्थिति हुई।

दूसरे महायुद्ध में पराजित जर्मनी के इजारेदार पूंजीपति, फिर से क़दम जमाने का ठौर ढूण्ढने लगे। लेकिन हिटलर की कमर तोड़ शिकस्त से वे इतने कमज़ोर हो चुके थे कि वे पश्चिमी ताकतों, विशेषकर अमरीका के साथ दुर्भिसंधि से ही, फिर से उठ खड़े हो सकते थे।

क्षेत्रीय प्रशासकीय संस्थाओं की सहायता से, जिन पर जर्मनी के

(शेष पृष्ठ २२ पर)

दूसरे महायुद्ध में फासिस्त जर्मनी की पराजय क्यों हुई

डा. एच. वोल्गेमूट

८ मई, १९४५ की शाम को वार्मेख्त की सर्वोच्च कमान के प्रधान फील्ड मार्शल कीटल, कोरेशोर्स्ट के मुख्य विद्यालय के असम्बली हाल में उठ खड़े होते हैं। वह उस मेज़ की ओर बढ़ते हैं जिस पर हिटलर-विरोधी सम्मिलन राज्यों के पूर्णाधिकार-प्राप्त दूत बैठे हुए हैं, और फासिस्त जर्मनी के शर्त रहित समर्पण पर हस्ताक्षर कर देते हैं। यह घटना, उस अशुभ दिन १ सितम्बर, १९३९ से ठीक २०७५ दिन पश्चात हुई जब जर्मन साम्राज्यवाद ने हिटलर के नेतृत्व में पूरे संसार को भयंकर युद्ध में झौंक दिया था।

इस युद्ध की समाप्ति पर एक प्रश्न उठा जो आज भी बार-बार उठता है: जर्मन साम्राज्यवाद की समस्त संसार को हड़पने की योजनायें जो १९१४ से १९१८ तक के प्रथम महायुद्ध में सफल नहीं हो सकी थीं, दूसरे महायुद्ध में भी असफल क्यों रहीं?

पराजित सेना अधिकारियों, पश्चिम जर्मनी के राजनीतिज्ञों तथा इतिहासकारों ने भी अपने मतानुसार इस पराजय के कारण ढूंढ निकाले हैं। इन विचारों को पश्चिम जर्मन सरकार के प्रधान, एरहार्ड ने पहली सितम्बर, १९६४ को "जर्मन जनता के नाम संदेश" में संक्षिप्त रूप में वर्णन किया है। उन्होंने कहा कि, "दूसरे महायुद्ध का मुख्य दोषी हिटलर था। उसकी शक्तिलिप्सा, अपराधपूर्ण जातिभेद, जर्मनों के लिए 'लेबेनसराउम' प्राप्त करने के लिए उसका उन्मादी व्यवहार और इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए सशस्त्र सेना प्रयोग के लिए उसकी तत्परता ही इस दुर्घटना के मुख्य कारण थे।"

इस प्रकार साम्राज्यवादी क्षमा याचक, एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों के अनुचित कार्यों को इस पराजय का कारण घोषित करते हैं। वे सामाजिक विकास प्रणाली को एक महत्वपूर्ण कारण स्वीकार नहीं करते और ऐतिहासिक परम्परा को नज़रअंदाज़ करके एक व्यक्ति को ही मूल कारण के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

परन्तु जर्मन साम्राज्यवाद की पराजय कुछ व्यक्तियों की व्यक्तिगत असफलता

प्रपंच, अर्थात् फासिस्त जर्मनी के साम्राज्यवाद ने, समस्त राष्ट्रों को खत्म करने की धमकी दी, परन्तु अन्त में उसने अपने ही राष्ट्र को विनाश के द्वार पर ला खड़ा किया। विश्व विजय की इसकी योजनायें इसकी राजनीतिक, नैतिक, आर्थिक तथा सैनिक संभावनाओं के अनुरूप नहीं थीं।
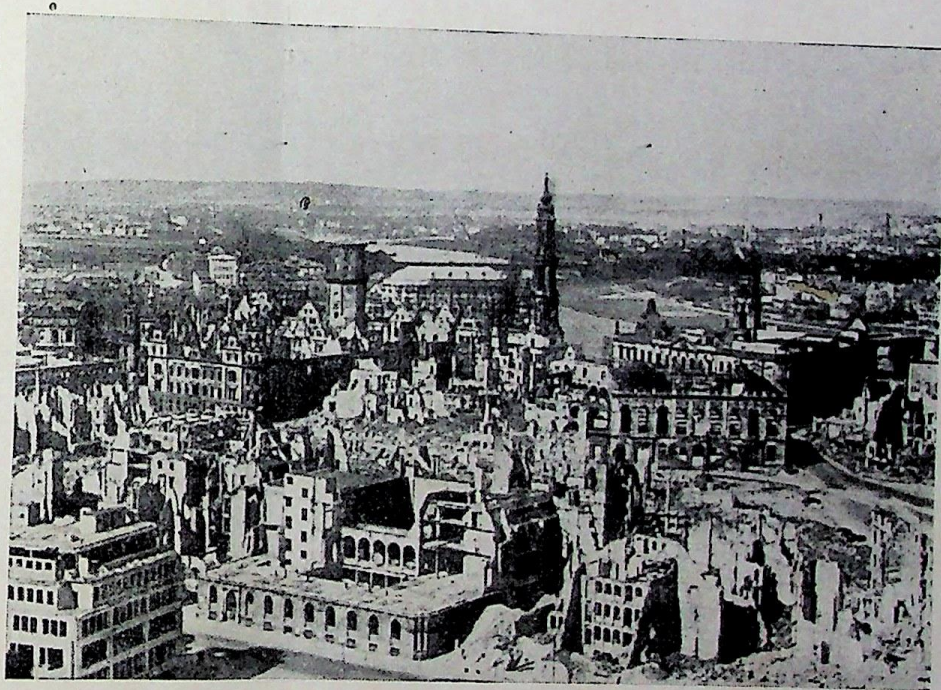
सुन्दर ड्रेस्डेन नगर एक रात की बम्बारी से खन्डहरों में बदल गया

तथा राजनीतिक एवं सैनिक नेताओं के स्वेच्छित निर्णयों का परिणाम नहीं है बल्कि इस का कारण कुछ चेतना रहित कारक थे।

हिटलरी फासिस्तवाद का मुख्य आधार अत्यन्त प्रतिक्रियावादी सामाजिक शक्तियां थीं। युद्ध में इसके लक्ष्य अत्यन्त स्वार्थपूर्ण थे। इसने एक अन्यायपूर्ण युद्ध को जन्म दिया और सोवियत-संघ के विरुद्ध स्वयं विश्व साम्राज्यवाद के नेता के रूप में कार्य किया। मानवतावाद के अत्यंत विरोधी सामाजिक

भारी सशस्त्र तैयारियां करके नाज़ी जर्मनी ने, किसानों और मजदूरों के प्रथम राज्य का विनाश करके सोवियत-संघ पर वोलगा-आर्चगेल्सक सीमा-रेखा तक आधिपत्य जामाना चाहा। यूरोप में नई व्यवस्था का केन्द्र जर्मन राइख को होना था और वहां केवल जर्मनों को रहना था। इस केन्द्र के चारों ओर "हिल्फ़्सवोलकर" नामक राज्य संघों की प्रणाली स्थापित करने की योजना थी। जर्मन शासन के आधीन इन राज्य संघों

की न कोई सेना होनी थी, न कोई अपनी नीति और न ही अपनी अर्थ-व्यवस्था । पूर्वी संघ में पोलैण्ड के अवशेष, बल्कान देश तथा सोवियत संघ के यूरोपीय भाग को सम्मिलित होना था; पश्चिमी संघ में हालैण्ड, बेल्जियम तथा लगभग समस्त फ्रांस, और उत्तरी संघ में डेनमार्क, स्वीडन तथा नार्वे को मिलाने की योजना थी । इन देशों की जनता को या तो देश खाली करना था या फिर दास बनकर रहना था । यह थी हिटलर के विश्वविजय की कुत्सित योजना ।

पूरे उत्तरी अफ़्रीका और निकट तथा मध्य पूर्व के विस्तृत क्षेत्रों को साम्राज्यवाद के अड्डों के रूप में बदल देने के लिए चुना गया था ।

यह सभी योजनायें धरी की धरी रह गयीं और इनके प्रेरकों को मुंह की खानी पड़ी । लेकिन फिर भी कई दांव पेंच और पैंतरे बदल कर जर्मन साम्राज्यवाद अपने आपको आज तक बचाने में सफल रहा है । यद्यपि पहले तथा दूसरे महायुद्ध में इसे निश्चित पराजय मिली परन्तु इसने आर्थिक धमकियों और राजनीतिक तथा सैनिक आक्रामक कार्यों के ज़रिये बदला लेने की चेष्टा की । इस प्रकार चेष्टाओं का परिणाम १३ अगस्त १९६१ की पराजय के रूप में निकला ।

अब आइये पश्चिम जर्मनी के इतिहासकारों के गलत प्रचार की ओर वापिस आयें । न तो पहले महायुद्ध में ही, और न ही सन् १९६१ में हिटलर की कोई भूमिका थी । कहने का तात्पर्य यह है कि प्रस्तुत शक्ति संतुलन के यथार्थ अनुमान में असमर्थता का कारण शासक-क्षेत्रों के किसी एक या दूसरे व्यक्ति की बौद्धिक विफलता या अयोग्यता कदापि नहीं थी । इसका आधार जर्मन साम्राज्यवाद तथा सैनिक वाद का आक्रामक चरित्र है । पश्चिमी जर्मनी के साम्राज्यवादी राजनीतिज्ञ तथा इतिहासकार हिटलर-जर्मनी की दूसरे महायुद्ध में पराजय का एक अन्य कारण भी बतलाते हैं । वह यह कि हिटलर सरकार की नीति गलत थी, और सोवियत-संघ के विरुद्ध लड़ने के लिए उसने गलत मित्रों का चुनाव किया ।

परन्तु इन विचारों का यह आधारभूत कारण ही गलत है कि हिटलर-सरकार की आकस्मिक तथा व्यक्तिनिष्ठ कारणों पर आधारित भूल के कारण फ्रांस, ब्रिटेन, संयुक्त-राज्य अमरीका और अन्य साम्राज्यवादी देश युद्ध में हिटलर जर्मनी के विरोधी बन गए और अन्त में उन्होंने सोवियत-संघ के नेतृत्व में हिटलर-विरोधी सम्मेलन में भी भाग लिया । परन्तु ऐतिहासिक तथ्य यह है कि जर्मन साम्राज्यवाद, पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियों के शासक-वर्गों के लिए भी खतरा बन गया था । इसलिए और जनता के दबाव के कारण भी इन देशों को हिटलर के फासिस्टवाद के विरुद्ध संघर्ष में भाग लेना पड़ा और हिटलर-विरोधी सम्मेलन में भी प्रवेश करना पड़ा । सोवियत संघ के आक्रमण के पश्चात इंगलैंड तथा संयुक्त राज्य अमरीका में जनता ने अपनी सरकारों से यह मांग की कि वे सोवियत संघ को सहयोग दें तथा उसको अपना मित्र बनायें । इस प्रकार फासिस्त-विरोधी शांतिप्रिय जनता के संयुक्त मोर्चे के लिए पूर्वावश्यकतायें उत्पन्न हुईं, और अन्त में, इन्हें हिटलर विरोधी सम्मेलन का रूप मिला ।

स्वतंत्रता प्रिय जनता के सामान्य हितों के परिणाम-स्वरूप हिटलरी सेना के अधिकृत प्रदेशों में राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिये सशस्त्र संघर्ष हुए । ४५ लाख छापामारों ने ,अन्य देशों के अतिरिक्त विशेष रूप में सोवियत संघ, युगोस्लाविया, फ़्रांस तथा इटली में फासिस्ट सेनाओं की नाक में दम कर दिया । सोवियत सेनाओं की सफलताओं से प्रभावित जनता के संघर्ष का, दूसरे महायुद्ध की जीत में बड़ा भारी सैनिक तथा राजनीतिक-नैतिक महत्व है ।

जर्मन साम्राज्यवाद की कमरतोड़ पराजय के इस कारण पर पश्चिम जर्मनी के इतिहासकार चुप रहते हैं । वे इस बात को न तो समझते हैं और न समझ सकते हैं कि सोवियत संघ के विरुद्ध हिटलर जर्मनी के आक्रमण ने ही युद्ध का परिणाम निश्चित कर दिया था । संसार में सामाजिक उन्नति को रोकने के लिए संसार के सर्वप्रथम समाजवादी राज्य को हड़पने और ऐतिहासिक विकास के नियमों की दिशा को बदलने की चेष्टा ही, दूसरे महायुद्ध के आरंभ और मई, १९४५ के दिन इसके अन्त—अर्थात् फासिस्तवाद पर विजय का मुख्य कारण था ।

सोवियत-जर्मन युद्ध के मोर्चे पर ही यह राजनैतिक तथा सैनक निर्णय होना था कि युद्ध में जर्मन साम्राज्यवाद विजयी होकर अपनी भयंकर योजनाओं की पूर्ति कर सकेगा या नहीं ? फासिस्त भी इस बात से पूरी तरह परिचित थे । इसीलिये "वेरमाख्त" (जर्मन सेना) का दो तिहाई भाग सदैव पूर्वी मोर्चे पर ही डटा रहता था ।

परन्तु जर्मन साम्राज्यवाद विजय प्राप्त न कर सका । सोवियत सेना ने हिटलर की फासिस्त सेनाओं को इस बुरी तरह पछाड़ा कि उनके किसी भी लक्ष्य की पूर्ति न हो सकी। सोवियत भूमि की, समाजवादी आर्थिक व्यवस्था दूसरे महायुद्ध में अजेय सिद्ध हुई ।

इस प्रकार दूसरे महायुद्ध में जर्मन साम्राज्यवाद की पराजय अपने ही घर में, अनिवार्य थी । इसका सबसे बड़ा कारण था पूंजीवाद का ह्रास और साम्राज्यवाद पर समाजवादी व्यवस्था के ऐतिहासिक आधार पर टिकी हुई अवश्यभावी विजय ।

आज कल यही ऐतिहासिक व्यवस्था पहले से कहीं अधिक सुदृढ़ रूप में मानव समाज का विकास निश्चित करती है । इसलिए जर्मन साम्राज्यवादियों द्वारा ऐतिहासिक विकास के नियमों के विरुद्ध अपने प्रभाव क्षेत्र के विस्तार के लिए कोई भी नई चेष्टा न केवल अपने ही क्षेत्र में उनकी पूर्ण पराजय सिद्ध होगी बल्कि उनके अन्तिम विनाश का कारण बनेगी । परन्तु आज किसी भी खतरनाक साम्राज्यवादी योजना को सुगमतापूर्वक रोकने और दुस्साहसी तत्त्वों को पराजित करने की संभावनायें पहले से कहीं अधिक हैं ।

फासिस्टवाद नृशंस का अन्त

◄ हिटलर की फासिस्ट फौजों की पराजय के बाद, सोवियत और अमरीकी विजयी सेनायें एवं उनके अफसर एल्बे नदी के तट पर मिले

जर्मनी में नृशंस फासिस्टों ने देश देश के फासिस्ट-विरोधियों को यातना शिविरों (कानसेन्ट्रेशन कैम्प्स) में डाल दिया था। इन शिविरों में लाखों देशभक्तों, फासिस्ट-विरोधियों, युद्ध बन्दियों और बच्चों, बूढ़ों तथा औरतों को हिटलरी दरिन्दों ने अमानुषिक यातनाओं द्वारा मौत के घाट उतारा। सोवियत सेनाओं ने इन कैम्पों से हजारों लोगों को मुक्त किया

बर्बर फासिस्टों के दर्जनों यातना-शिविरों में क़त्ल किये गये बेगुनाहों का एक करूण दृश्य ▼

युद्ध की तबाही

ड्रेस्डेन और बर्लिन जैसे जर्मनी के महानगर बमबारी से खाक में मिल गये।... और मलबों के अनेक अंबारों में दब गये हज़ारों लाखों जर्मन निवासी और कला एवं विज्ञान के अनेक अनमोल खज़ाने

पुनर्निर्माण का पुनारम्भ

विलहेल्म पीक तथा ओटो ग्रोटवोल जैसे जर्मन फ़ासिस्ट-विरोधियों ने, हताश जर्मन जनता में नई आशा के अंकुर उपजाये। . . . और पोट्स्डाम सम्मेलन ने जर्मनी को शांतिपूर्ण ढंग से फिर से पनपने और विकसित होने का अवसर प्रदान किया
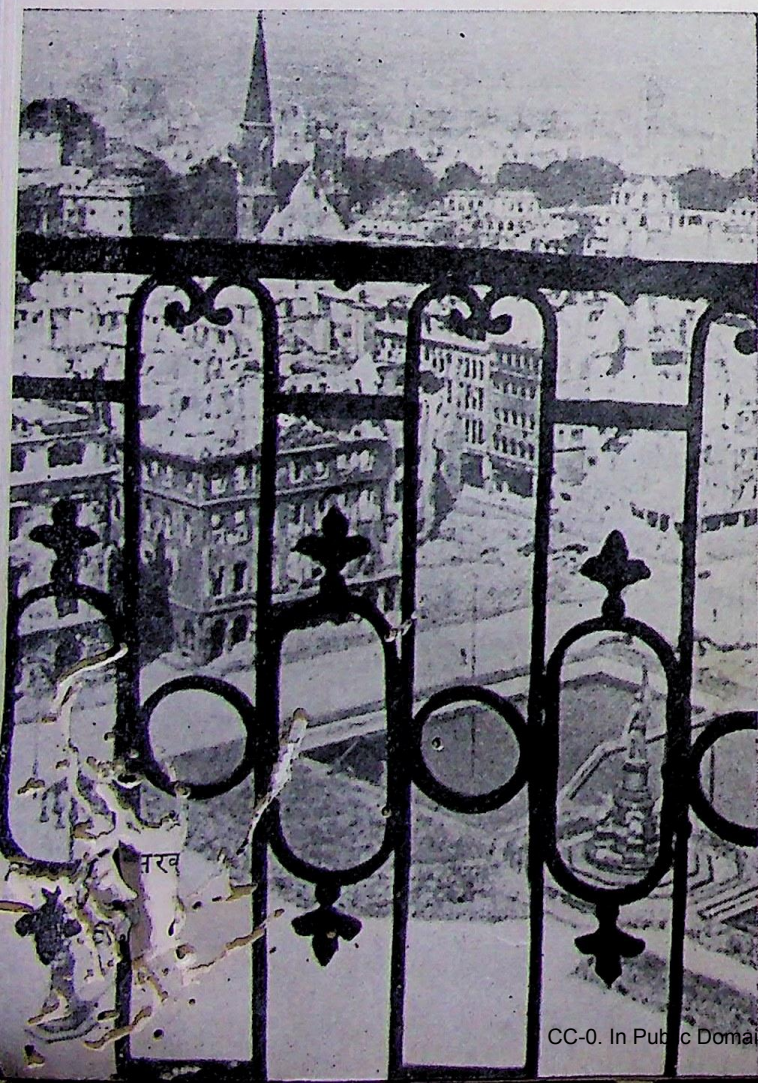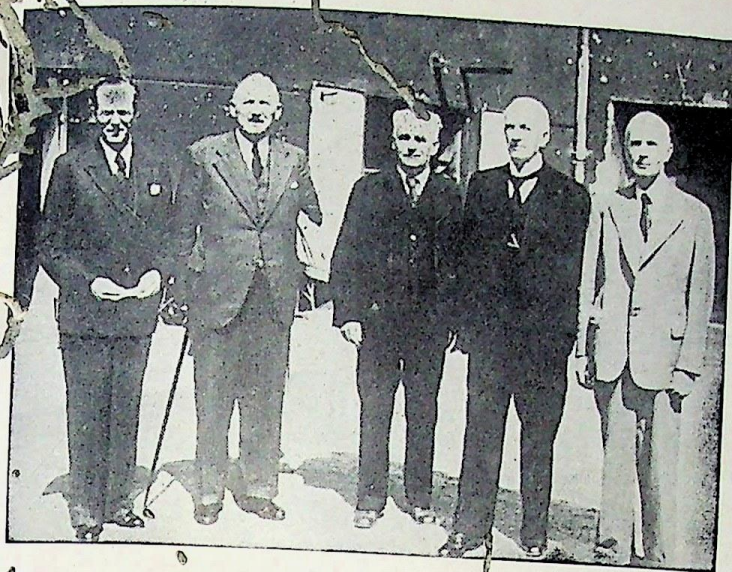
मित्र राष्ट्रों की सेनाओं के उच्चाधिकारी (बायें से दायें) : फील्ड मार्शल मॉन्ट गोमरी, जनरल आइज़ेनहावर, मार्शल शूकोफ, और जनरल द. गॉल

वह मकान, जिसमें पोट्स्डाम सम्मेलन हुआ
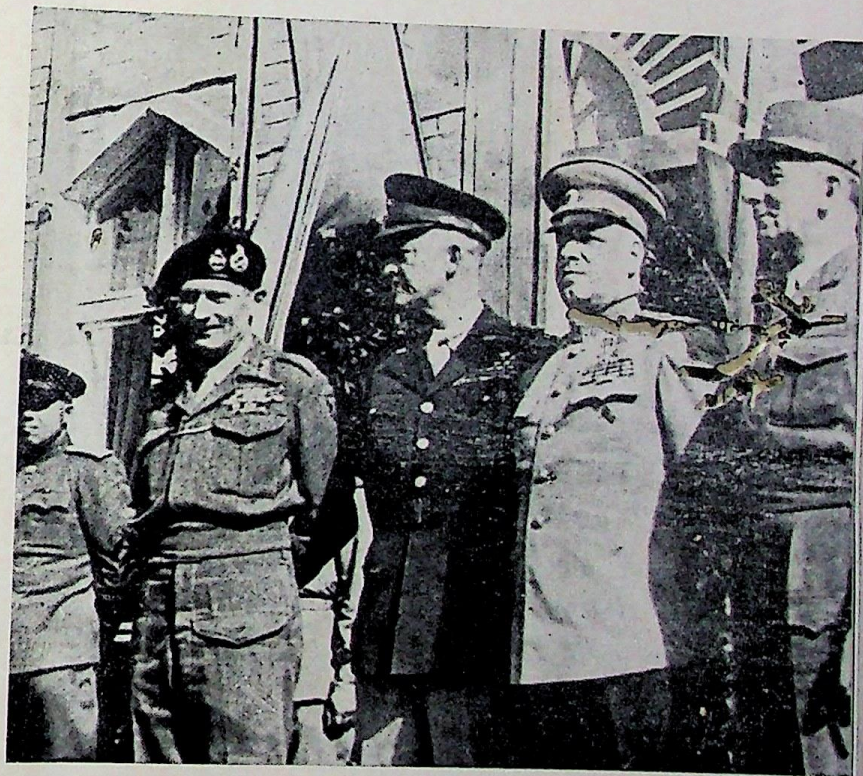
मित्र राष्ट्रों के पोट्सडाम सम्मेलन का अधिवेशन
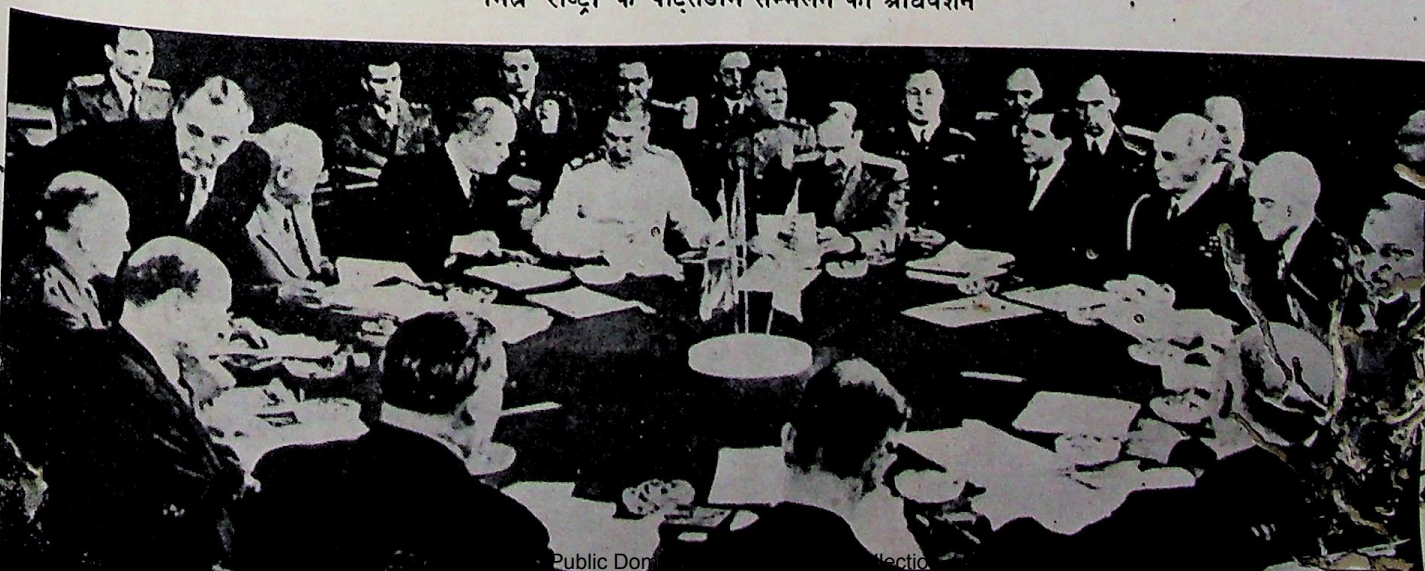
युद्ध और फासिस्टवाद के अन्त के ऐतिहासिक परिणाम

◄ जर्मनी की दो सबसे बड़ी मजदूर पार्टियां--कम्युनिस्ट पार्टी और सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी--मिलकर एक हो गयीं

भूमिसुधार क़ानून पास हुआ, जिसके फलस्वरूप जर्मन साम्राज्यवाद के आधार स्तम्भों अर्थात् बड़े बड़े जागीरदारों की जमीन छीन ली गयी और वह किसानों में बांट दी गयी ►

◄ बड़े बड़े इजारेदार ट्रस्टों और उद्यमों का राष्ट्रीयकरण हुआ ।... यह चित्र है, युद्ध के बाद हेनिंगस्डॉर्फ की इस्पात मिल में प्रथम इस्पात उत्पादन का
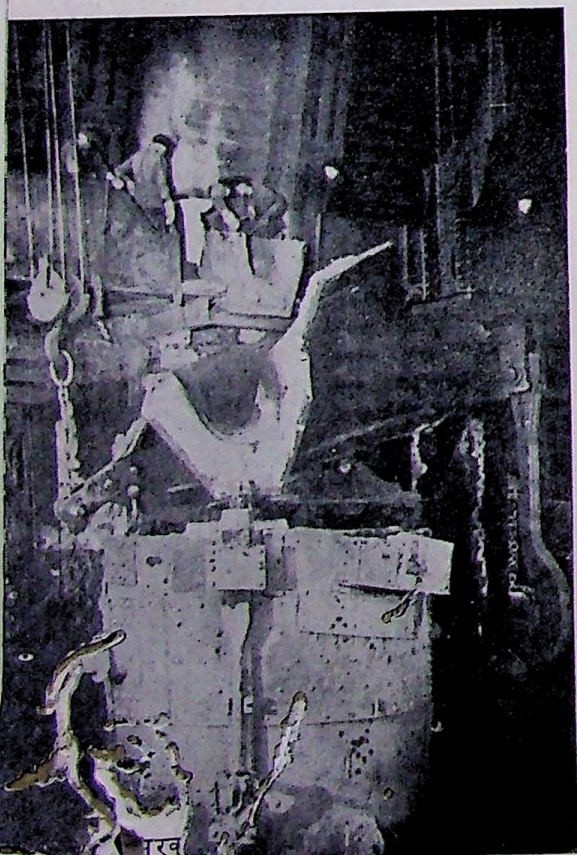
लेकिन...

पश्चिमी ताक़तों ने पोट्स्डाम संधि की शर्तों को पूरा नहीं किया। उन्होंने जर्मनी के विभाजन की तैयारियां शुरू कीं। इस दिशा में उन्होंने सबसे बड़ा ग़लत क़दम यह उठाया कि वर्तमान पश्चिमी जर्मनी ग्रौर पश्चिम बर्लिन में उन्होंने ग्रलग मुद्रा चलाई। यह तस्वीर इस बात की गवाह है जिसमें प. बर्लिन में नई मुद्रा के बक्से उतारे जा रहे हैं

पश्चिमी जर्मनी का ग्रलग राज्य क़ायम करने का उचित उत्तर दिया जर्मनी के फासिस्ट-विरोधियों ग्रौर जनवादी शक्तियों ने। उन्होंने एक जन-सम्मेलन ग्रायोजित किया, ग्रौर सर्वसम्मति से जर्मनी के पूर्वी भाग में एक नये जर्मन राज्य की स्थापना की। इस नये जर्मन राज्य का नाम रखा गया, "जर्मन जनवादी गणतंत्र"। ज. ज. ग. की स्थापना का भव्य स्वागत हुग्रा जिसका एक दृश्य यह है

जर्मन जनवादी गणतंत्र एक प्रभुसत्तात्मक, ग्रौर जर्मन भूमि पर प्रथम शांतिप्रिय तथा युद्ध-विरोधी राज्य है। इसकी लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) के सदस्य मंजे हुये फासिस्ट-विरोधी लोग हैं, जो शांतिप्रिय जर्मन जनता के सच्चे प्रतिनिधि हैं। ... यह ... 'पीपुल्स चैम्बर' के एक सत्र का

बर्लिन

१९४५ १९६५
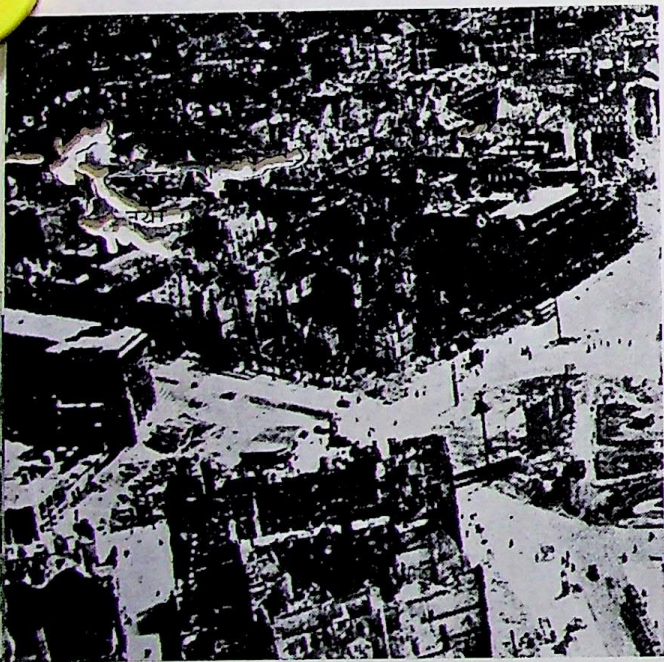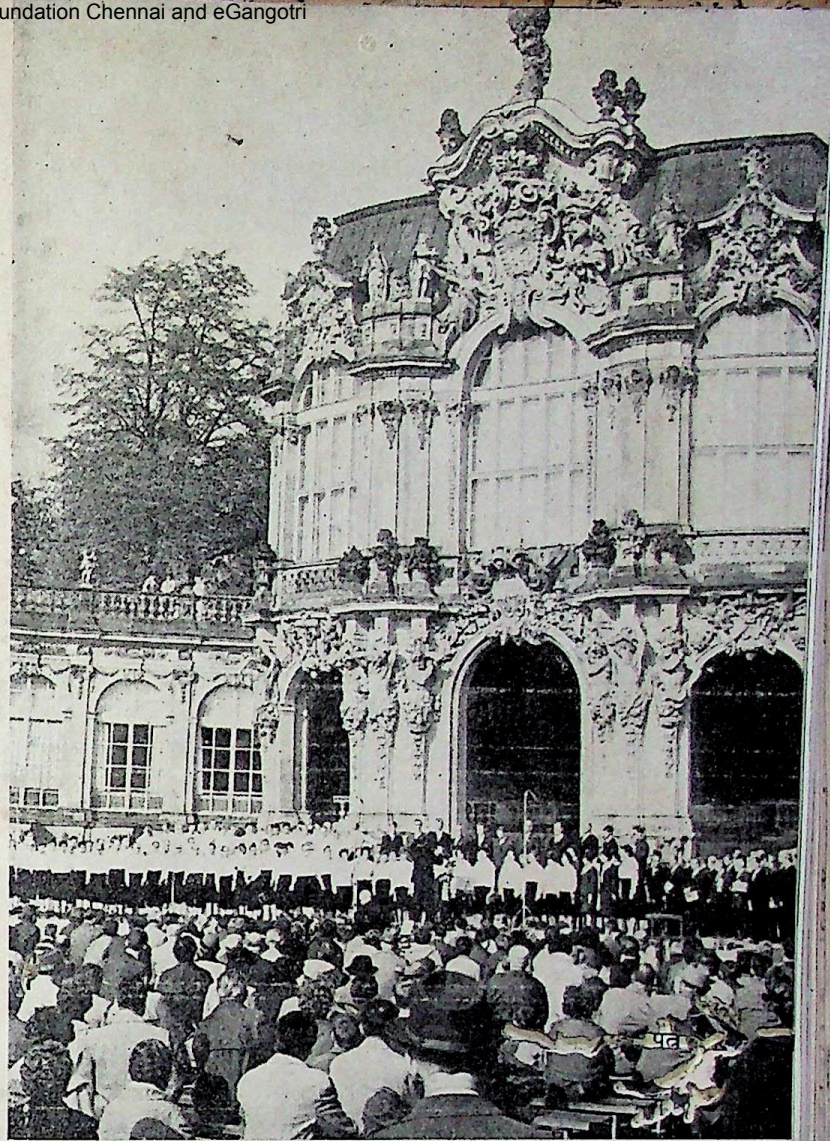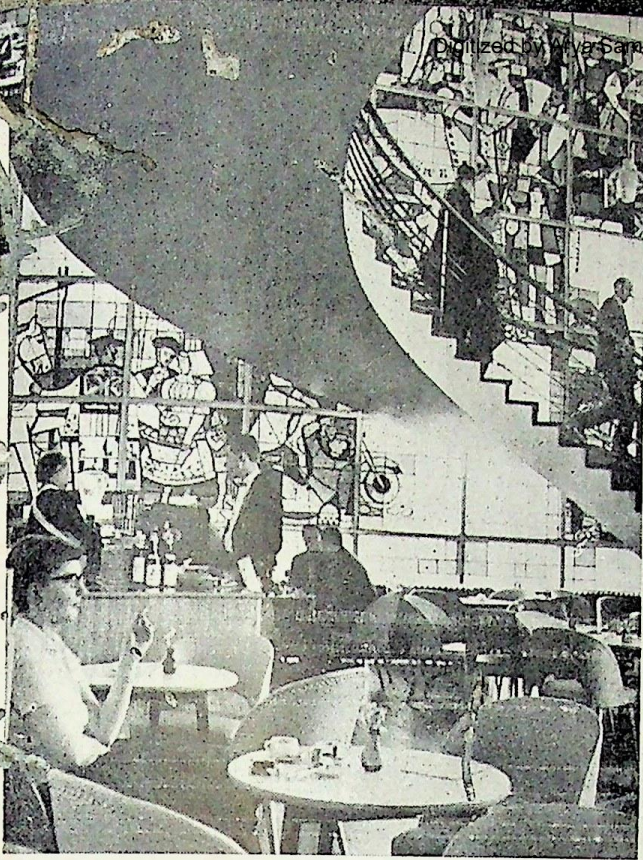
ज. ज. ग. के नये नगरों का नया जीवन

ऊपर, बायें कोने में : ड्रेस्डेन के निकट एक टेलिविजन भवन की ऊपरी मंजिल में आधुनिक ढंग का एक रेस्त्राँ

ऊपर, दायें कोने में : ड्रेस्ड्रेन का 'स्वांइगर' नामक ऐतिहासिक भवन, जो मुरम्मत के बाद अपने पूर्व रूप में खड़ा है

बीच में : लाइपज़िग में नये रहायशी मकान

नीचे, दायें कोने में : माग्देबुर्ग का पुनर्निमित महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र जो युद्ध में बिलकुल तबाह हुआ था

आर्थिक पुनर्निर्माण
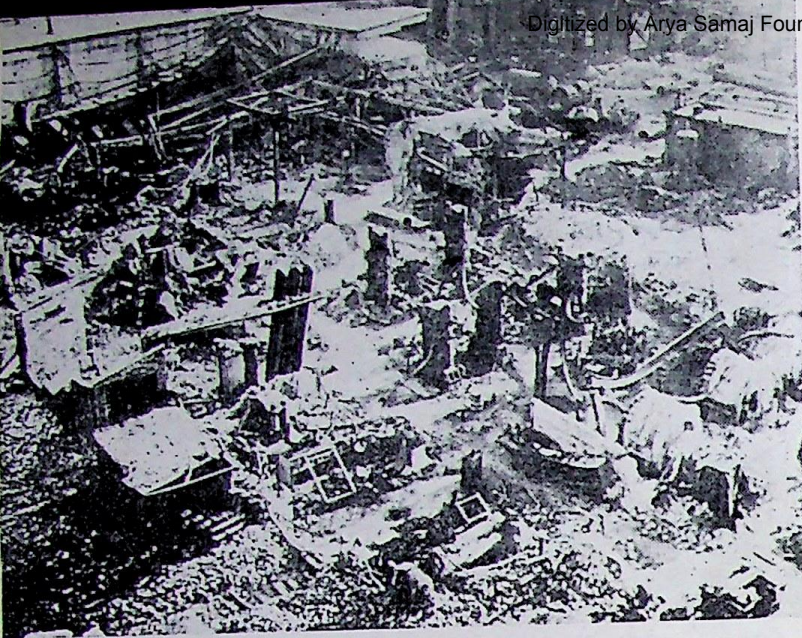
◄ जर्मनी में युद्ध के बाद ऐसी ही तबाही के दृश्य चारों ओर नज़र आते थे। यह बर्लिन की एक ध्वस्त फैक्ट्री का चित्र है

▼ पुनर्निर्माण के बाद इसी फैक्ट्री की तस्वीर
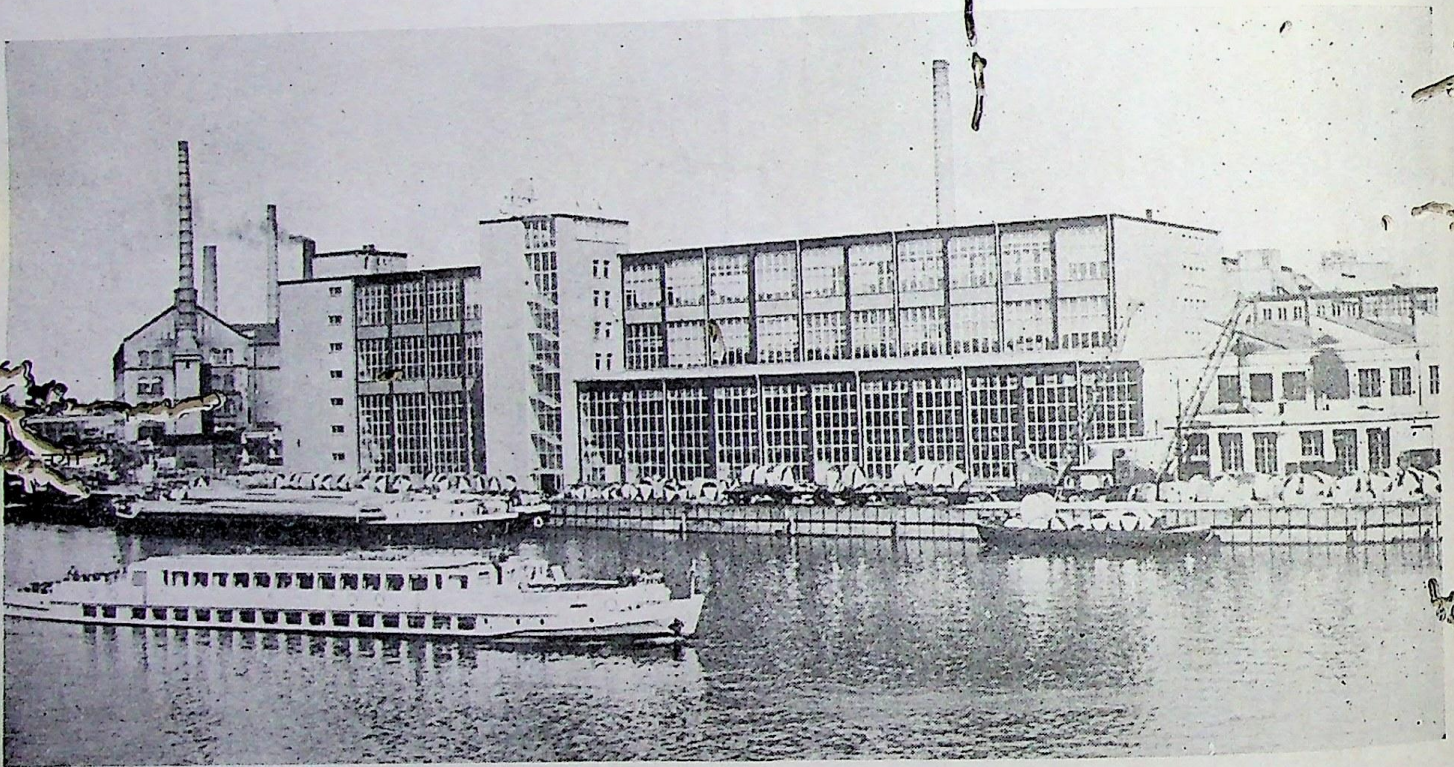
◄ ज. ज. ग. के ऐसे अनेक अवकाशगृहों और आरोग्य-केंद्रों में यहां के लोग अपनी छुट्टियों का आनन्द लेते हैं
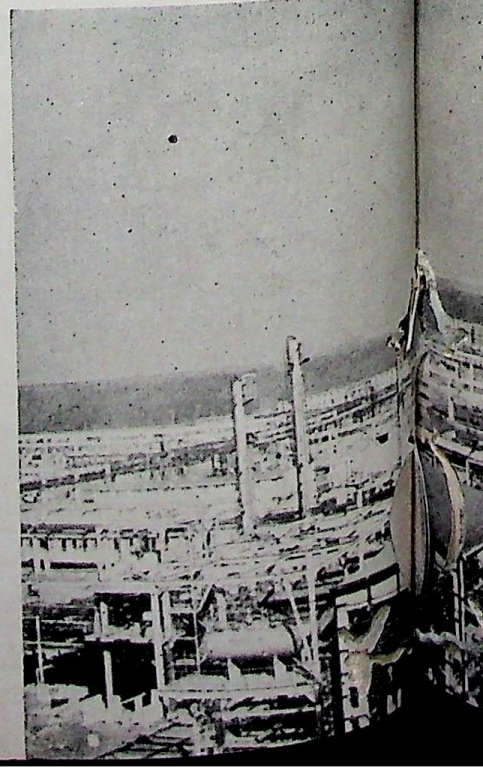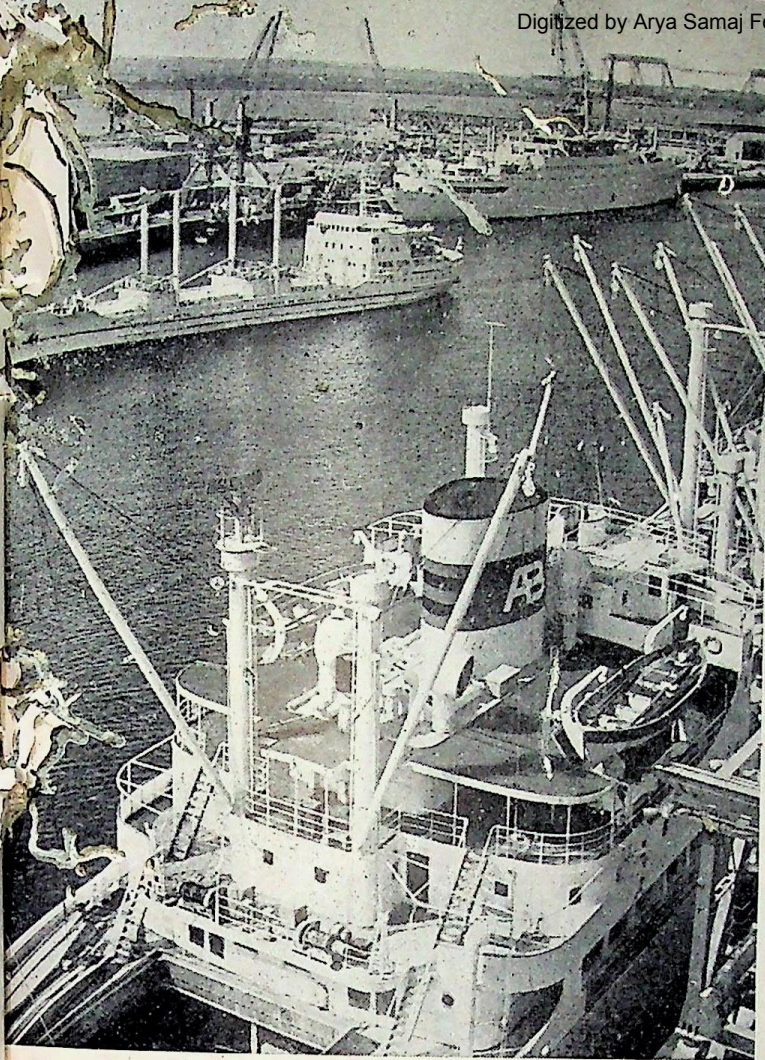
रोस्टोक की नयी तामीर की गई अत्याधुनिक ढंग की बन्दरगाह
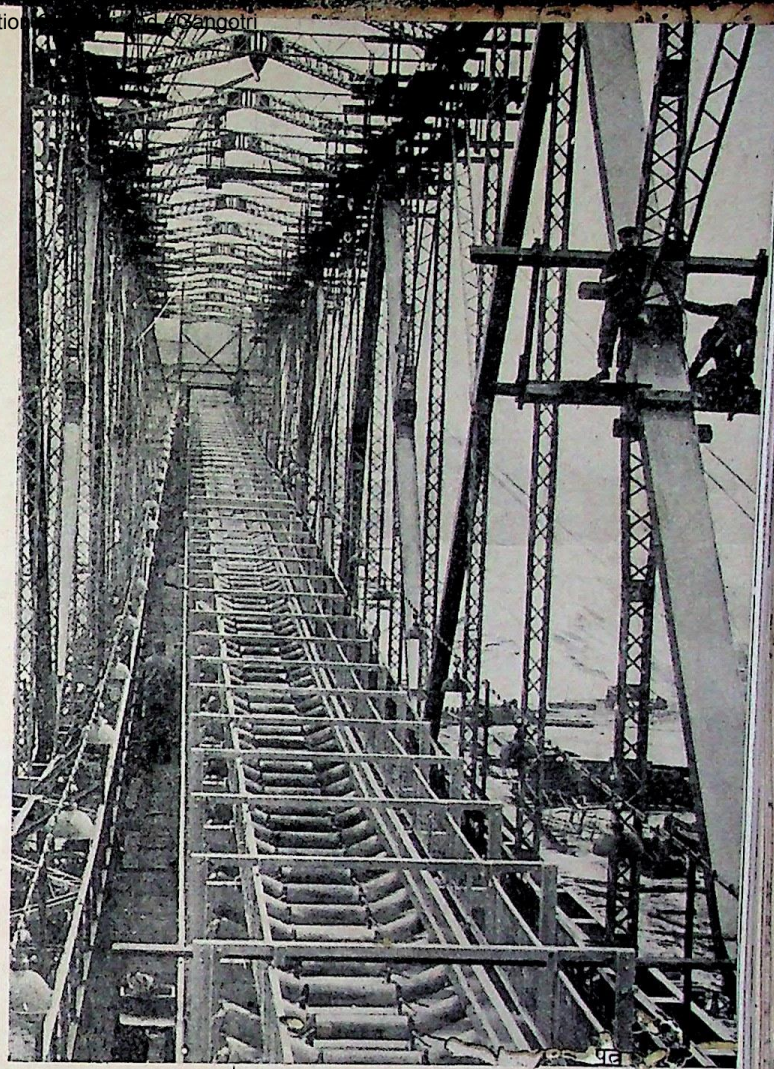
मानव कितना बौना लगता है इन दैत्याकार मशीनों के आगे ।...लेकिन वह इनका निर्माता है, स्वामी है । यह है ज. ज. ग. के एक कोयला-खदान केन्द्र में लगा हुआ एक कोयल वाहक पुल।

रसायन-उद्योग ज. ज. ग. का अहम उद्योग है । यह चित्र है ल्यूना द्वितीय नामक एक बड़े रासायनिक कारखाने का
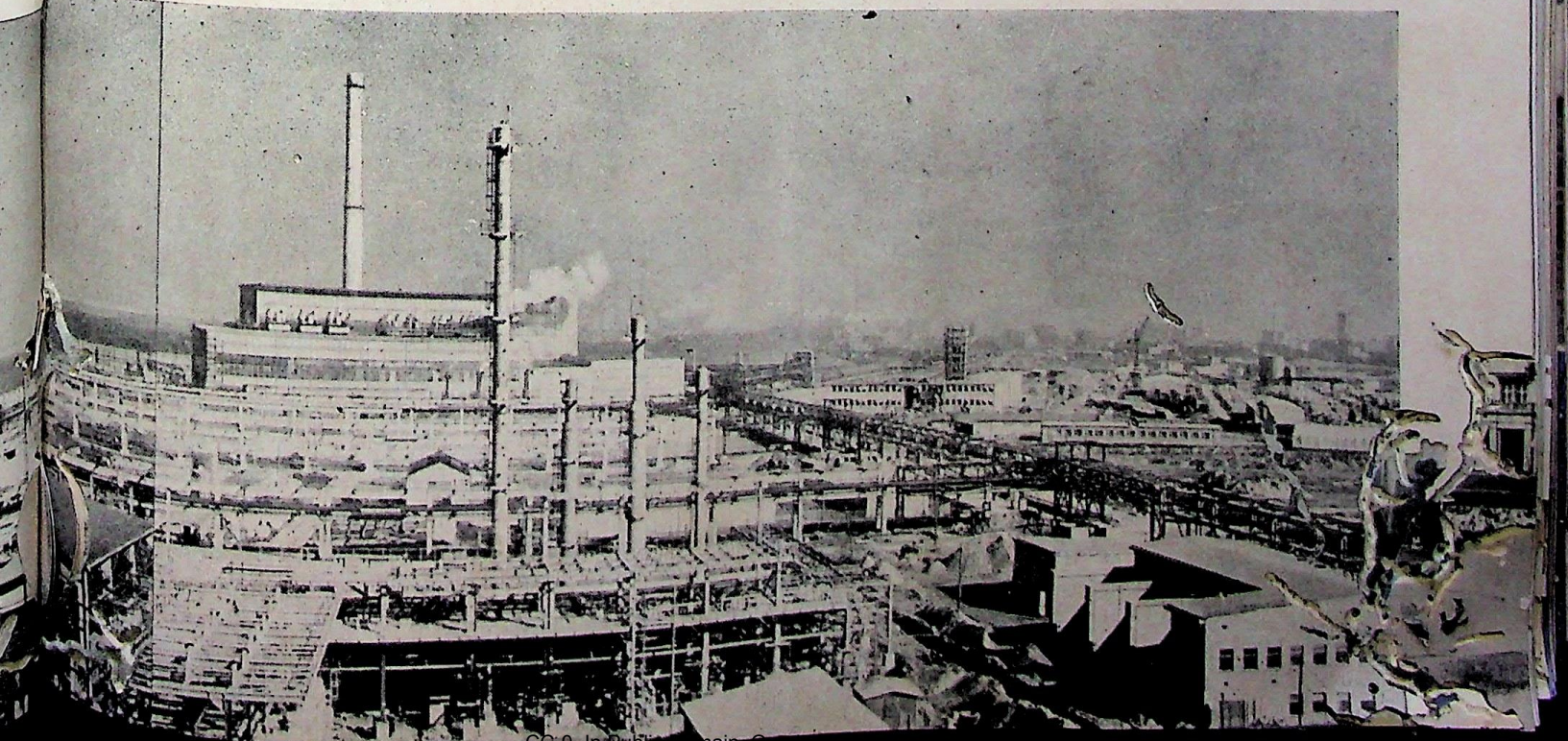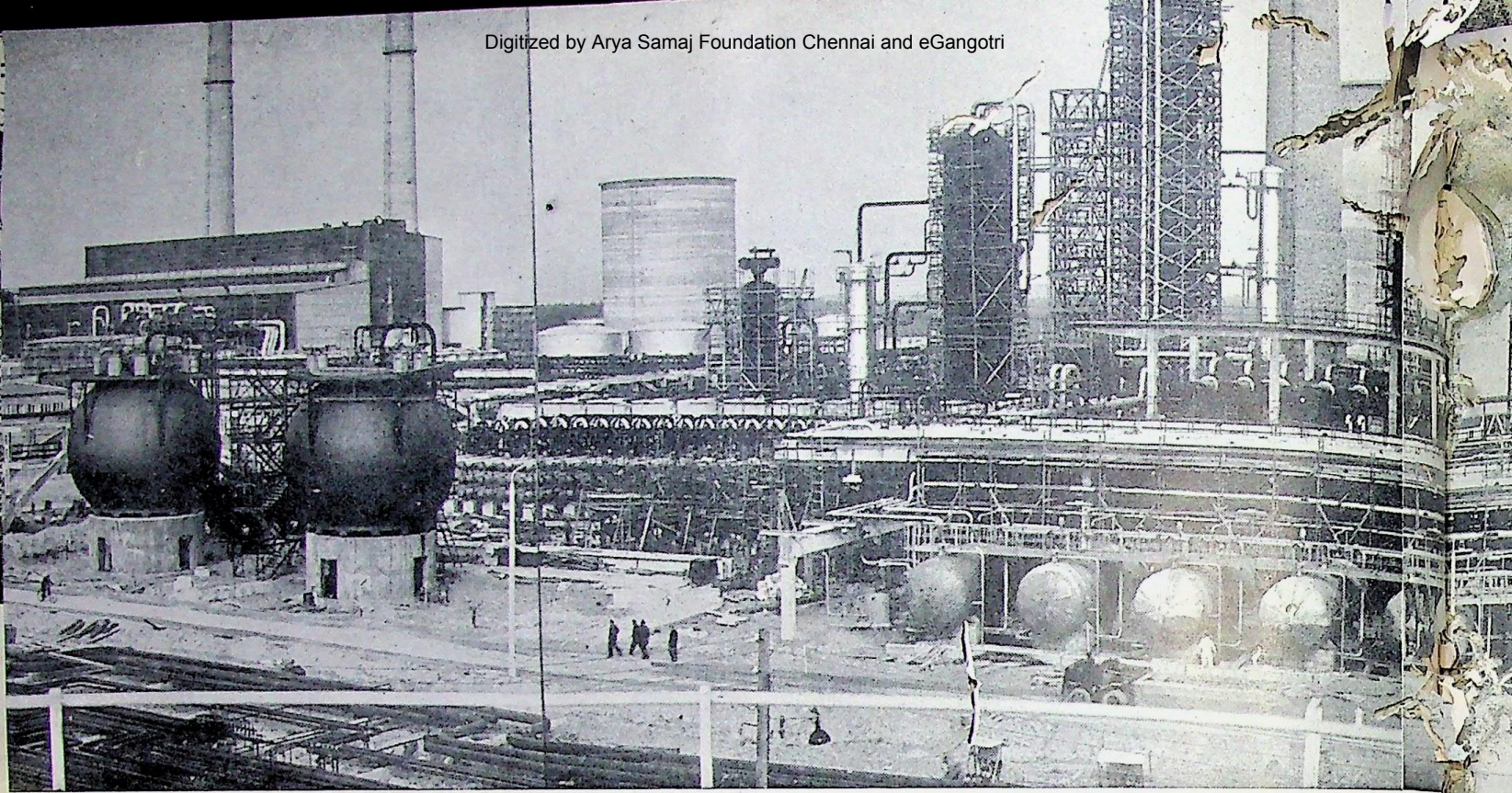
▲ खनिज तेल साफ करने का श्वेड्ट नामक कारखाना । यह ज. ज. ग. का सबसे बड़ा कारखाना है

लाइनेफ़ेल्ड की नई सूत कताई मिल ▶
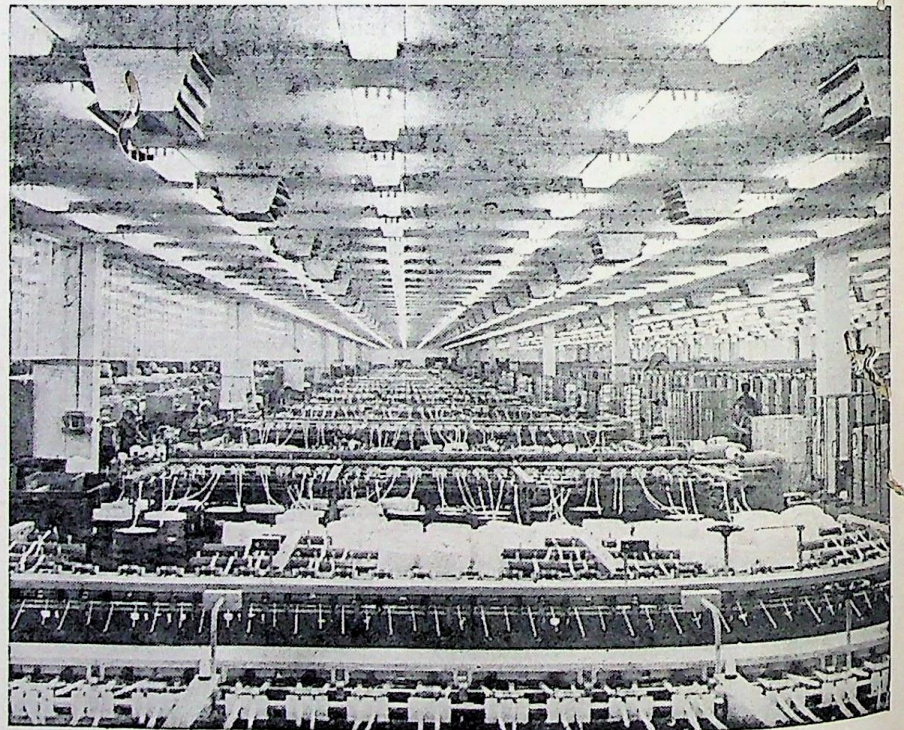
ल्यूब्रेनाउ में स्थित विराट बिजली घर की ये सात चिमनियाँ दूर दूर तक दिखाई देती हैं ▼
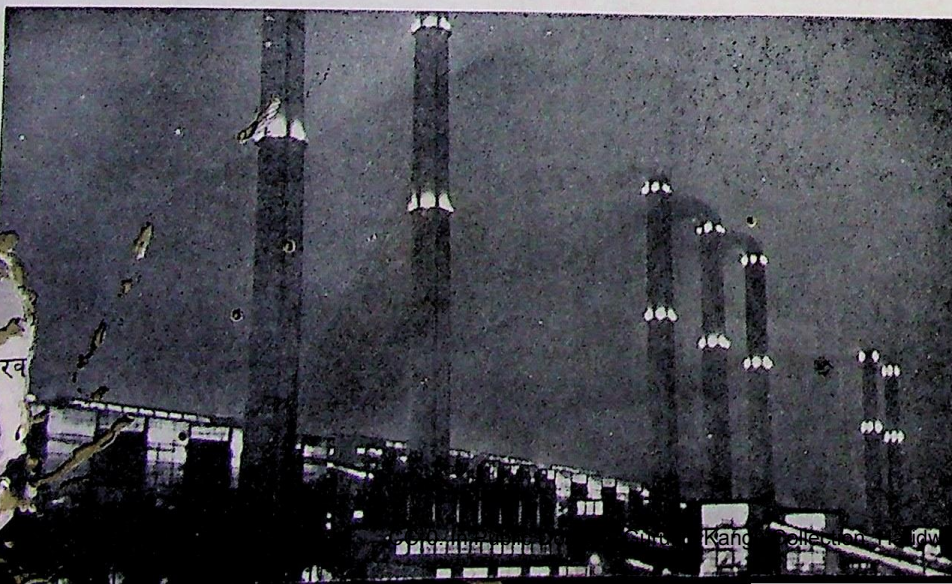
सामने के पृष्ठ पर
बाईं ओर का चित्र : ड्रेज़्डेन के निकट स्थित एक परमाणु-रिएक्टर
दाईं ओर का चित्र : कार्ल-मार्क्स स्टाड्ट में एक बड़ा इंजीनिरी कारखाना
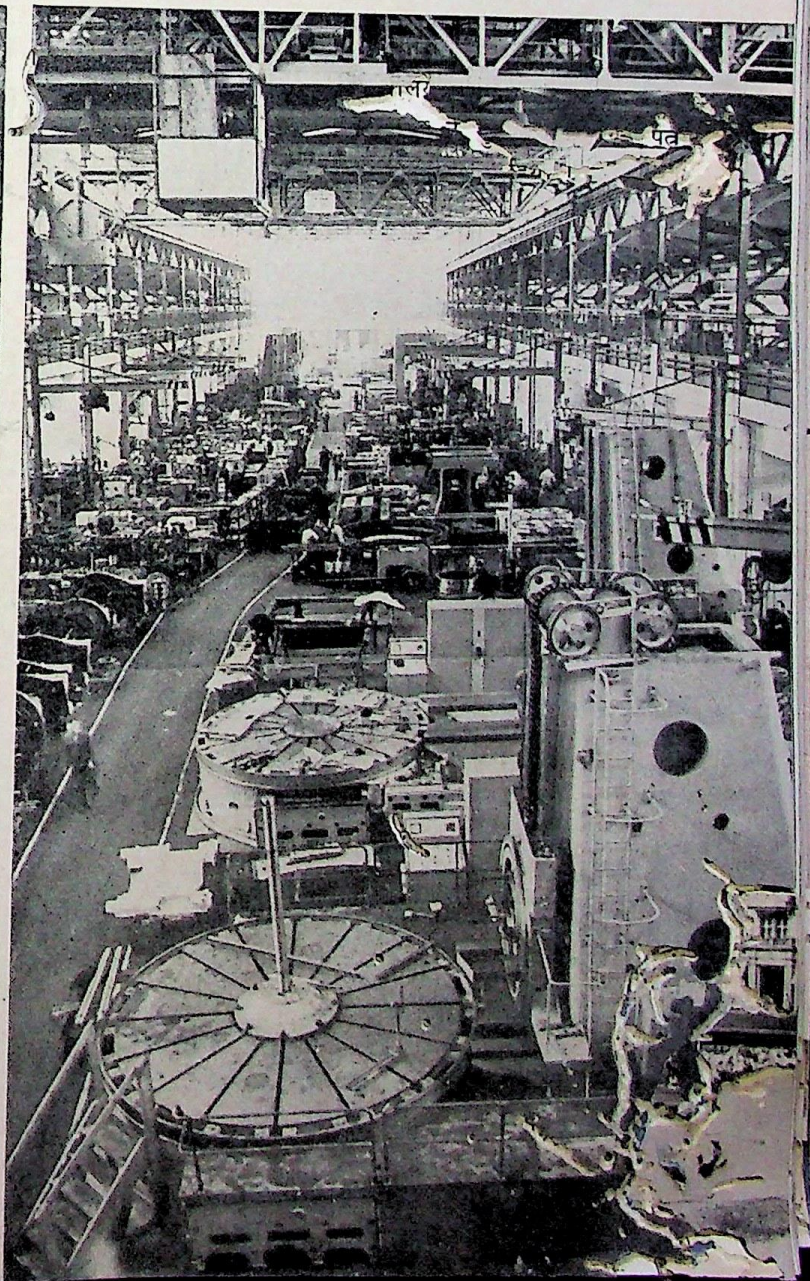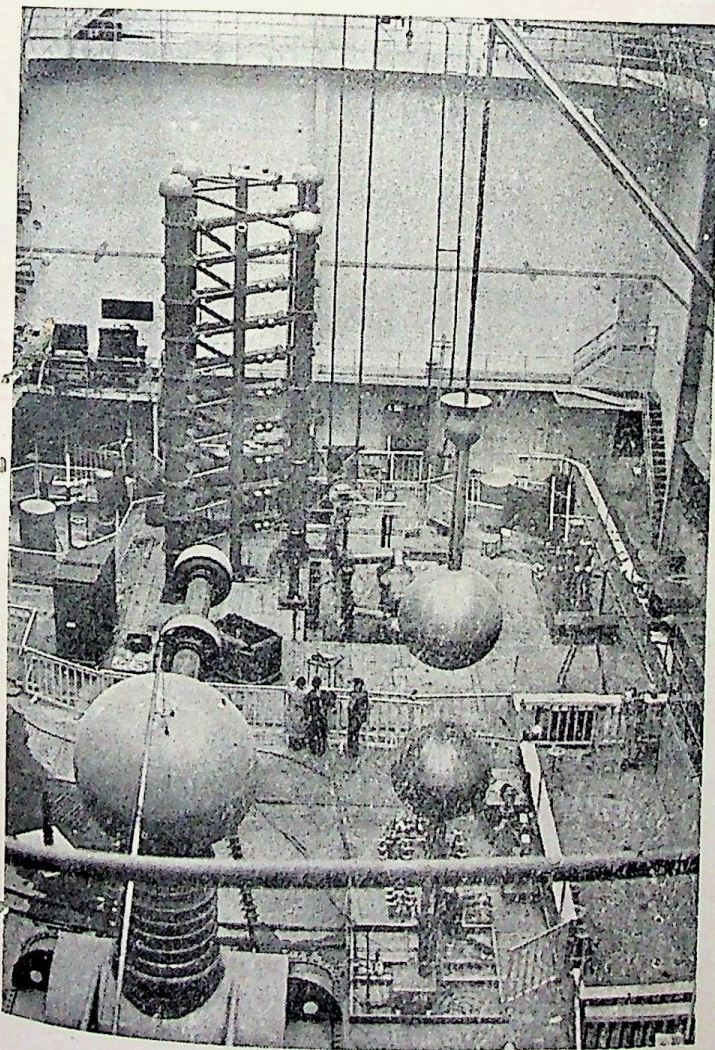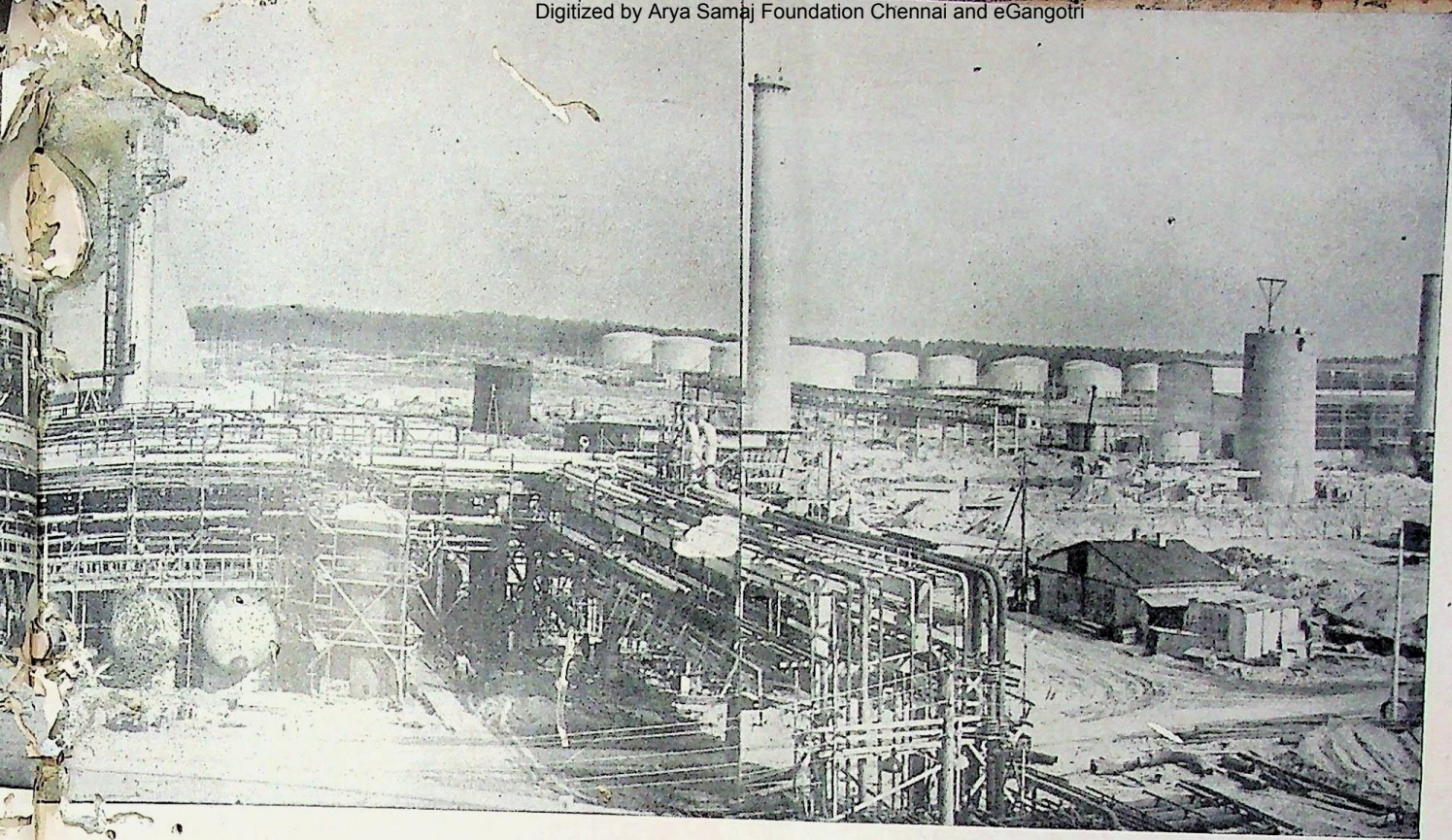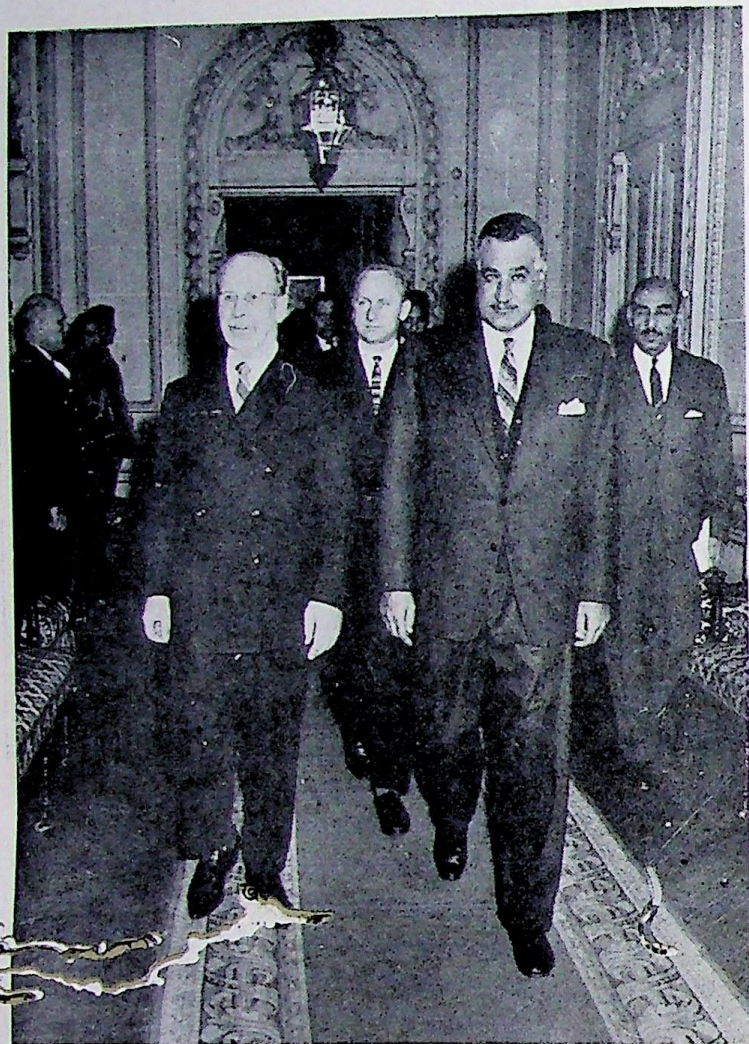
ज. ज. ग. दुनिया के उन तमाम लोगों और देशों के प्रति मैत्री और सद्भावना की भावनायें रखना है जिन्होंने औपनिवेशिक दासता से अपने आपको मुक्त किया या कर रहे हैं । इसके विपरित पं. जर्मनी औपनिवेशिक और साम्राज्यवादियों के साथ दोस्ती बढ़ा रहा है
ऊपर के चित्र मेंः ज. ज. ग. की राज्य परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उलब्रिख्त संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति नासिर के साथ ।
नीचे के चित्र मेंः ज. ज. ग. के राज्य सचिव श्री ओट्टो विनसर (बायें) स्वतन्त्र अलजीरिया के विदेश मंत्री के साथ
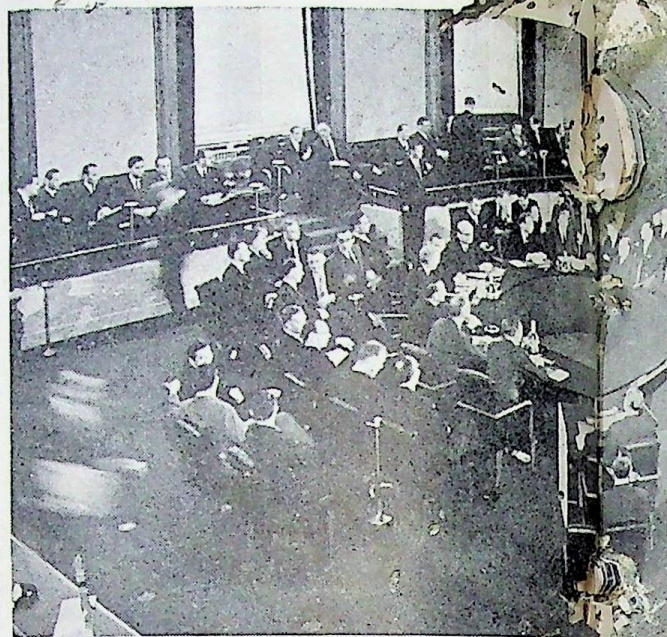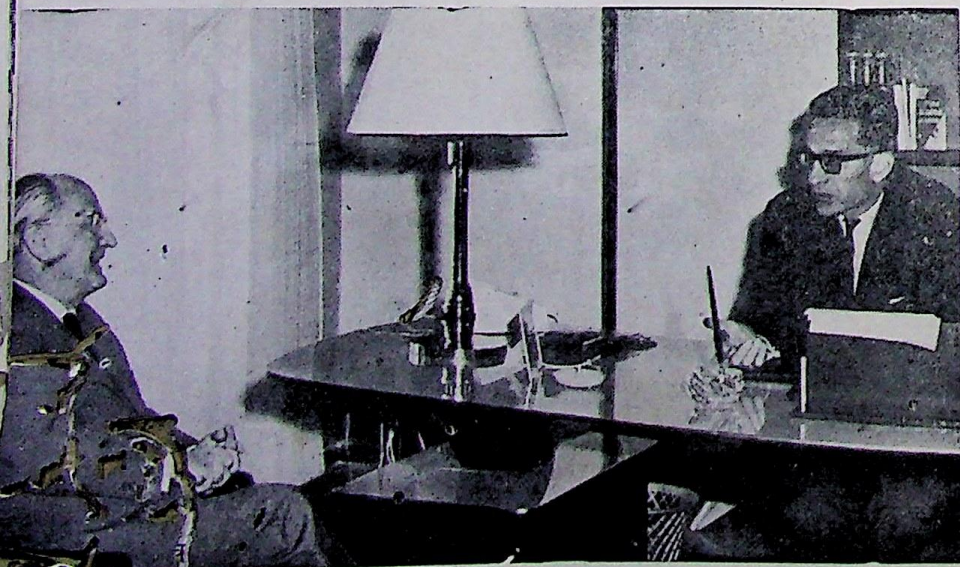
दो जर्मन राज्य...

सन् १९५९ में आयोजित विदेश मंत्रियों के जनेवा सम्मेलन ने यह तथ्य स्पष्टतयः सिद्ध किया कि दो जर्मन राज्य एक ठोस हक़ीक़त हैं । इस सम्मेलन में दोनों जर्मन राज्यों के प्रतिनिधि 'प्रेक्षक' की हैसियत से, अलग अलग स्थानों पर बैठे

...हक़ीकत
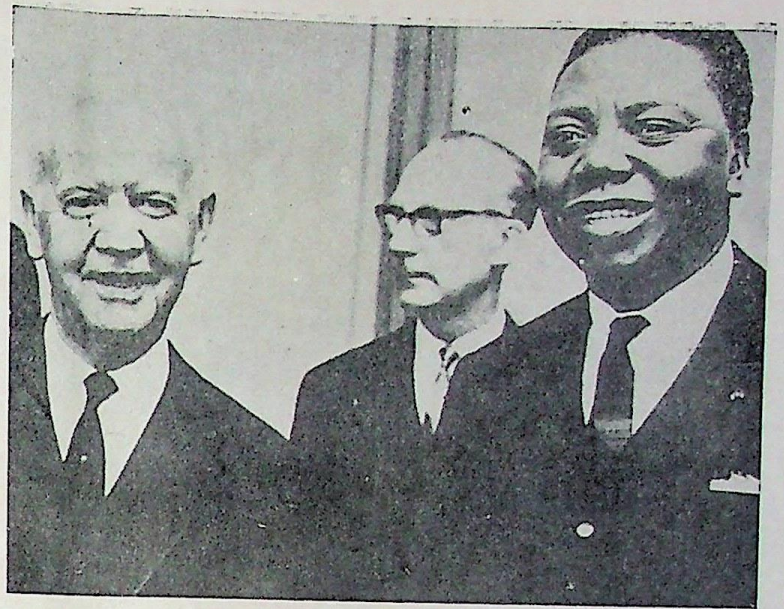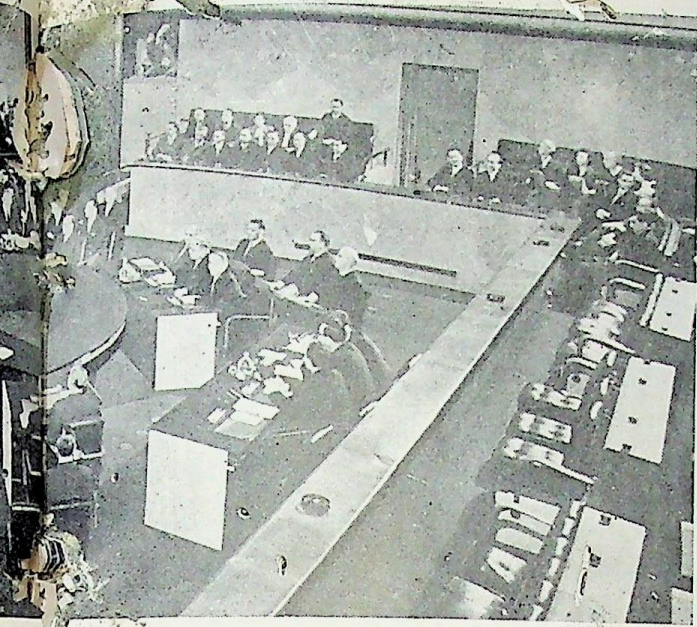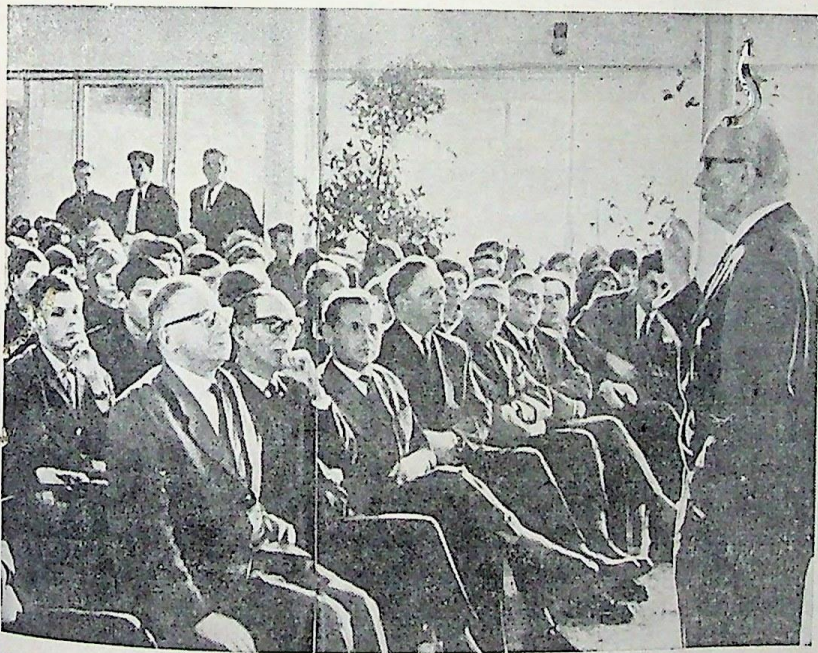
ऊपर, दायें कोने में: पश्चिमी जर्मनी के राष्ट्रपति हाइनरिख लूबके ने, मोइस शोम्बे का स्वागत किया। [दायें कोने के चित्र में: ज. ज. ग. की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) के प्रधान प्रोफेसर योहान्नेस डीक्मन्न, इन्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण के साथ दायें, बीच का चित्र: नाटो सैन्य गुट का पं. जर्मन चीफ कमाण्डर हांइज़ ट्रेट्नर। यही वह व्यक्ति है जिसने हिटलरी फासिस्ट सेना के एक अफसर की हैसियत से स्पेन के गुएटरनिका, हालैण्ड के रोट्टरडाम और इटली के फ्लोरेन्स, नामक नगरों को बमबारी सेतबाह किया बायें, बीच का चित्र: यह है एक समय का हिटलर का उत्तराधिकारी एडमिरल डोयनिट्स जो एक युद्धअपराधी के रूप में सज़ा पा चुका है। यहां आप उसको पं० जर्मनी के एक स्कूल में अध्यापकों एवं छात्रों के सामने भाषण देते हुये देखते हैं। दायें, निचले कोने में: पश्चिमी जर्मनी में यहूदियों का एक गिरजाघर, जिसपर कुख्यात फासिस्टी चिन्ह स्वस्तिका पोत दिया गया है। हिटलर के फसिस्टवादी आतंक के दौरान जर्मनी तथा अन्य देशों के ६० लाख यहूदियों को क़त्ल किया गया।
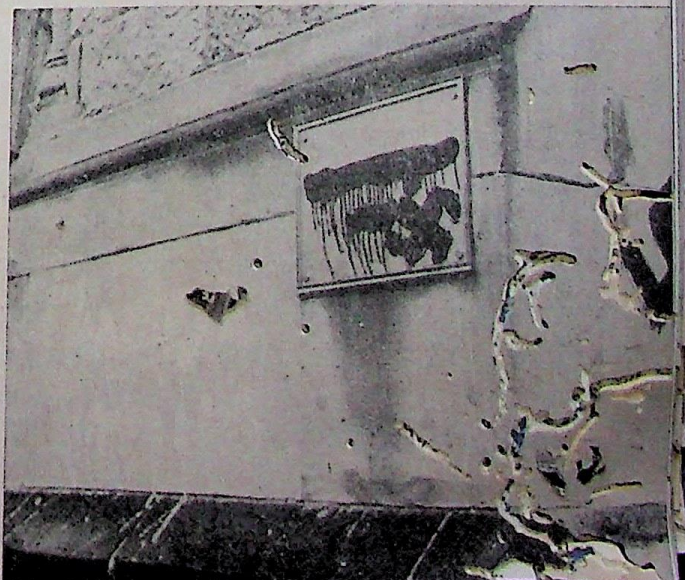
एक चित्र | एक करुण कहानी

मूर्तिमान करुण कहानी . .

२० वर्ष पहले, तमाम दुनिया के अखबारों ने, इस पृष्ठ पर छपी तसवीर को अपने मुखपृष्ठों पर छापा थीं । यह तसवीर है, सैनिक वेश पहने एक हताश लड़के की, और यह वेश है उस जमाने की हिटलरी वायुसेना 'लुफ्टवाफ्फे' का सैनिक-वेश । यह फोटो उस समय का है जब हिटलर का साम्राज्य तहस-नहस होकर खण्डरात बन रहा था ।

कुछ हफ्ते हुये, जर्मन जनवादी गणतंत्र के सुप्रसिद्ध **फ्राई वेल्ट** नामक सचित्र साप्ताहिक ने, अपने मुखपृष्ठ पर इसी तरह का एक बड़ा फोटो छापा, जिसमें कई लोग थे । इस फोटो के साथ ही साप्ताहिक ने अपने पाठकों से यह पूछा था कि क्या वे इस तसवीर में किसी मर्द, औरत या लड़के को पहचान सकते हैं ? इस अपील का पहला उत्तर दिया उस व्यक्ति ने जो आज से २० वर्ष पहले एक लड़का था, और यह वही लड़का था जिसकी तसवीर उस समय दुनिया के अखबारों के मुखपृष्ठ पर छपी थी—हिटलरी वायुसेना के सैनिक वेश और हताश मुद्रा में । . . .इस पृष्ठ पर छपी तसवीर, उस लड़के की आज की फोटो है । बीस साल पहले के किशोर, और आज के प्रौढ़ व्यक्ति ने **फ्राई वेल्ट** की अपील का जो उत्तर दिया, वह निकट अतीत के जर्मन इतिहास का ही एक पृष्ठ है, और एक अत्यन्त करुण कहानी भी । यह इस प्रकार है :

मेरा नाम हांस जार्ज हेनके है । मैं आज ३६ बरस का हूं, और जर्मन जनवादी गणतंत्र के फिनस्टरवाल्डे नामक स्थान में रहता हूं । यहां स्थानीय अस्पताल का प्रबन्धक हूं ।

कई साल पहले जब मैंने एक रिसाले में युद्ध के समय का एक फोटो देखा, मैं तुरन्त समझ गया कि यह मेरी तसवीर है । मैं किसी से इसका ज़िक्र करना चाहता था, पर न जाने क्यों मैं उस समय ऐसा न कर सका । मैं उस समय, १६ वर्ष की आयु में, एक नवसिखिया सैनिक नहीं, बल्कि जर्मन हवाई सेना के विमान-तोड़क दस्ते का एक तरबियत याफ्ता और मुकम्मल सिपाही था । अपने १६वें जन्म दिन के छः महीने बाद नवम्बर, १९४४ में मुझे सैनिक हेडक्वार्टर से बुलावा आ गया ।

अनिच्छा से मैंने सैनिक वेश पहन लिया । मेरे पिता, एक कपड़ा मजदूर थे और वह कम्युनिस्टों के हमदर्द थे । तरह तरह के बहाने बनाकर मैं अपने आपको 'हिटलर युवक संगठन' से बचा पाया था । . . .

भरती होने के बाद मुझे सिर्फ पांच हफ्तों की ट्रेनिंग दी गई, और इसके बाद मुझे माग्डेबुर्ग भेजा गया जहां कई हवाई हमलों से मुझे दो-चार होना पड़ा । . . . सन् १९४४ का अन्त होते होते हिटलरी सेनायें हर मोर्चे से भाग रही थीं । फरवरी, सन् १९४५ में मुझे पूर्वी मोर्चे पर भेजा गया, जो सुकड़कर उस समय, स्टेटिन तक आ गया था । इस तरह, १६ वर्ष की आयु में मुझे मोर्चे की प्रथम पंक्ति पर "आला तोपखाना-प्रेक्षक" तैनात किया गया । इस पर आज हंसी आ सकती है, लेकिन उस समय की दयनीय स्थिति ऐसी ही थी । . . .

रूस की लाल सेना के पहले हमले ने हमको मोर्चे से खदेड़ दिया । अपने बड़े अफसरों के हुक्म के मुताबिक हमने अपनी तोपों तथा अन्य हथियारों को तबाह किया और दूसरे हजारों, लाखों भागते हुये जर्मन सैनिकों में शामिल हुये । कहीं से औरतों की एक साइकिल मेरे हाथ लगी, और मैं भागते हुये असंख्य जर्मन सैनिकों तथा शरणार्थियों के झुण्डों में से गुजरता हुआ पश्चिम दिशा की ओर भाग निकला । . . .

मेरी उक्त तसवीर कब, कहां और किसने खींची, मैं इसके बारे में दावे के साथ कुछ नहीं कह सकता । लेकिन हो सकता है कि यह तसवीर पहली या दूसरी मई के दिन ली गई हो, क्योंकि उन दिनों अनेक युद्ध-संवाददाता और छायाकार हर जगह थे वहां । . . .

हम रोस्टोक पहुंचे । भागते हुये १२० सैनिकों का हमारा दल एक खलिहान में सो पड़ा था । गोलियों की आवाज से हम जाग पड़े । सोवियत सनिकों के हमले से तितर बितर होकर हम एक खेत में से भाग निकले । हमारी कोशिश किसी तरह से सड़क पर पहुंचने की थी—भागते हुये जर्मन सैनिकों के अथाह हजूम की "सुरक्षा" में ।

मैं बेतहाशा भाग रहा था, और मेरे दायें बायें लाशें और जख्मी व्यक्ति गिरते जा रहे थे । . . . मैंने अपनी साइकिल छोड़ दी, क्योंकि यह मेरे भागने में रुकावट डालती थी । भागने के दौरान मेरी लोहे की शिरस्त्राण और मेरी वर्दी की टोपी खो गई । आखिरकार मैं भागते हुये हजूम की धारा में पहुंच ही गया । खलिहान में मेरे साथ सोये हुये १२० व्यक्तियों के दल में से केवल १५ बचकर मेरे साथ यहां तक आने में सफल हुये थे ।

भागते हुये मेरा पांव ज़ख्मी हुआ था । उस समय मेरी मानसिक दशा कैसी थी, उसके बारे में केवल इतना कह सकता हूं आज कि उस असंख्य एवं अनन्त भागते हुये सैनिकों और शरणार्थियों के जनसमुद्र के बीच होकर भी मैं नितान्त एकाकी—बिलकुल अकेला महसूस कर रहा था । मेरे माता पिता युद्ध का शिकार हुये थे, मेरे दूसरे भाई की कोई खबर नहीं थी, और मैं अपना जीवन हथेली पर रख-कर भाग रहा था ।...

दो अन्य सैनिकों के हमराह मैंने अपने घर का रास्ता पाने की कोशिश की । हमने अपनी वर्दी उतार फेंकी, हथियार पटक दिये और शांति की सूचक सफेद कपड़े की पट्टियां अपने बाज़ुओं पर बांध लीं । लेकिन आखिर में माक्लेनबुर्ग के एक छोटे से रेल स्टेशन पर हम पकड़े गये । शायद वह ८ या ९ मई का दिन था । मुझे, युद्ध बन्दियों के एक शिविर में भेज दिया गया । यहां मुझे टाइफस की बी-मारी हुई । लेकिन सोवियत संघ के डाक्टरों के इलाज और तीमारदारी ने मुझे इस भयं-कर रोग से बचा लिया, और मेरा खोया हुआ स्वास्थ्य भी लौट आया ।
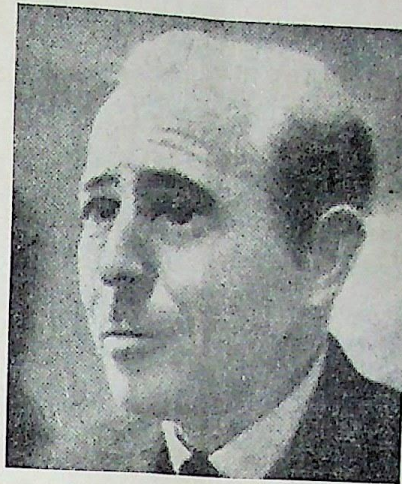
हांस जार्ज हेनके की आज की तसवीर

सन् १९४५ के सितम्बर मास में मुझे रिहा किया गया ।...

अब मेरा दिमाग़ बिलकुल साफ़ था । मैं जानता था कि मुझे क्या करना है । घर पहुंचने के दो महीने बाद, मैं कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुआ, और नौजवानों में दिलोजान से काम करने लगा । मैं अपने कटु अनभवों से, ध्वस्त जर्मनी की हताश नौजवान पीढ़ी को, कुछ सिखाना चाहता था । कुछ समय के बाद मैं जन-पुलिस में भरती हुआ, लेकिन बीमारी ने मुझे यह काम छोड़ने पर मजबूर कर दिया । इसके बाद मैं फिन्स्टरवाल्डे के अस्पताल में काम करने लगा, और कई साल से अब मैं यहीं हूं ।...

इस करुण, दुखभरी कथा पर टिप्पणी करते हुये **फ्राई वेल्ट** अखबार ने लिखा है:

"यह नौजवान सैनिक हांस-जार्ज हेनके की कहानी है उसकी ज़बानी, स्पष्ट और सीधे सादे शब्दों में । दूसरे लाखों लोग भी इसी कटु अनुभव से गुज़रे हैं ।... आज तक, अज्ञात नौवजवान सैनिक की उक्त तस्वीर उस युवा पीढ़ी की प्रतीक रही है, जो पागल एवं नृशंस फासिस्तों के युद्ध की बलि का बकरा बना दी गयी । लेकिन अब हम यह जानते हैं कि उन दिनों का यह मासूम १६ साल का लड़का बलि चढ़ते चढ़ते बच गया; और यह तस्वीर लेने के छः महीनों के बाद ही उसने अपना सही और सच्चा रास्ता तलाश किया अपने पांवों पर खड़े होकर ।...."

निर्माण के सहयोगी
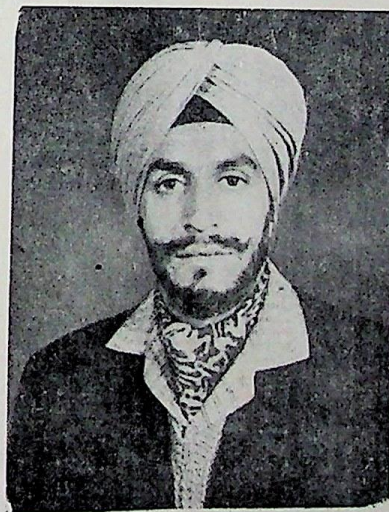
के. ओ. बोसेन

आर. एस. चोपड़ा

१० मार्च, सन् १९६५ के दिन भारत के तीन खिलाड़ी, यहां से जर्मन जनवादी गणतंत्र के लिये ८ महीने के प्रतिक्षण के लिये रवाना हुये । उनके नाम हैं: सर्वश्री के.ओ. बोस. आर. एस. चौहान तथा प्रताप सिंह कछाल । भारत के ये तीन खिलाड़ी, **भारत–ज. ज. ग. सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम** के अन्तर्गत जर्मनी गये, और ये वहां लाइपज़िग के शारीरिक प्रशिक्षण की जर्मन अकादमी में ट्रेनिंग लेंगे ।

भारत के ये तीनों खिलाड़ी लाइपज़िक पहुंच गये हैं, और वहां से इन्होंने भारत स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूत, श्री कुर्ट बोट्टगर को एक पत्र लिखा है जिसमें उन्होंने जर्मन जनों के सद्व्यवहार और मैत्रिपूर्ण स्वागत का प्रशंसा भरा उल्लेख किया है ।

फासिस्तवाद से मुक्ति...

(पृष्ठ ४ का शेष)

पूंजीपतियों का कब्जा था, जर्मनी के समाजवादी पूर्वी भाग द्वारा अपनाये गये सुधारक कानूनों की जनवादी तथा फासिस्त विरोधी उपलब्धियों को उन्होंने रद्द करवा दिया। इस प्रकार, उन्होंने न केवल तै शुदा फैसलों को ही लागू होने से रोका, बल्कि नाज़ी और युद्ध अपराधियों को भी दण्डित होने से बचाया। इस के बाद कदम ब कदम, पश्चिमी ताकतों के सैनिक कमाण्डरों ने, पश्चिमी जर्मनी के इजारेदारों तथा पूंजीपतियों को वहां की आर्थिक और राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने में मदद दी। इस तरह उन्होंने पोट्स्डाम संधि की शर्तों का उल्लंघन किया।

जर्मन पूंजीपति और उनकी सहायक पश्चिमी ताकतें यह बात अच्छी तरह जानती थीं कि सम्पूर्ण जर्मनी में जनवादी विकास को रोकना उनके बस की बात नहीं है। इसलिये उन्होंने जर्मनी के विभाजन की नीति पर अमल करना शुरू कर दिया। उन्होंने एक सामूहिक, जनवादी जर्मनी को जन्म देने वाले प्रत्येक सुझाव का विरोध किया, और जब पश्चिमी जर्मनी को फिर से शस्त्रास्त्रों से लैस कर दिया गया, तब उन्होंने सारी जर्मनी में [illegible] चुनाव करने के राग अलापने शुरू कर दिये। इसके विपरीत जब जब सोवियत संघ ने अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में, जर्मनी के विभाजन को रोकने के लिये, अखिल जर्मन प्रशासनिक अंगों की स्थापना की मांग की तो उन्होंने इन सही मांगों को ठुकरा दिया।

जर्मनी के तीन अधिकृत पश्चिमी क्षेत्रों को पहले मार्शल योजना में शामिल करना और उसके बाद इन तीनों क्षेत्रों को एक ही प्रशासनिक क्षेत्र में तबदील करना, इस क्षेत्र में अलग मुद्रा चलाना, और बर्लिन का दो भागों में बटवारा--ये ऐसे कदम थे जिनके उठाने से, पश्चिमी ताकतों द्वारा अधिकृत जर्मनी के तीन पश्चिमी क्षेत्र आखिरकार एक अलग पश्चिम जर्मन राज्य स्थापित करने के तत्व बन गये। दूसरे शब्दों में पश्चिमी ताकतों द्वारा उठाये गये ये कदम ही जर्मनी के विभाजन के ज़िम्मेदार हैं। यहां यह तथ्य स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह सब कुछ जर्मन जनता की पीठ के पीछे किया गया। इस सब में जर्मन लोगों का कोई हाथ नहीं था। जर्मनी का यह विभाजन--अर्थात् पश्चिमी जर्मन राज्य की स्थापना, पश्चिम जर्मनी के शासक वर्गों का जर्मन जनता के प्रति विश्वासघात था।

इस विश्वासघात का उचित जवाब देने और जर्मन जनता के राष्ट्रीय हितों के लिये, जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी के नेतृत्व में [illegible] की समस्त श्रमिक जनता और देशभक्त तत्व संगठित हुये और उन्होंने मिलकर ७ अक्तूबर सन् १९४९ के दिन, एक अन्य जर्मन राज्य--अर्थात् [illegible] जनवादी गणतंत्र की स्थापना की। जर्मन भूमि पर यह [illegible] वादी और शांतिप्रिय राज्य है।

फासिस्तवाद से मुक्ति के बाद, पिछले २० वर्षों में यह बिलकुल साफ तौर पर साबित हो चुका है कि हिटलर-विरोधी सम्मिलन के उद्देश्य और आदेश जर्मनी के पूर्व भाग--अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र में पूरे किये जा रहे हैं। ज. ज. ग. में साम्राज्यवाद, सैनिकवाद और युद्ध-प्रचार को जड़ से उखाड़ दिया गया है, और यह जर्मन भूमि पर पहला शांतिप्रिय राज्य है। इसके विपरीत, पश्चिमी जर्मन राज्य अन्तर्राष्ट्रीय तनाव, शीत युद्ध और सैनिकवाद का अड्डा बन चुका है। यही तथ्य इस बात का सबूत है कि जर्मन राष्ट्र के सही हितों का प्रतिनिधित्व शांतिप्रिय जर्मन जनवादी गणतंत्र करता है, सैनिकवादी एवं तनावों को बढ़ावा देने वाला (पश्चिम) जर्मन फेडरल गणराज्य नहीं।

विगत १५ वर्षों में, जर्मन जनवादी गणतंत्र, दुनिया के सबसे मज़बूत औद्योगिक राज्यों में से एक बन चुका है। इस प्रसंग में यह तथ्य याद रखना जरूरी है कि ज. ज. ग. का जन्म युद्ध की तबाहकारियों और मलबे के ढेरों की कोख में से हुआ। इतना ही नहीं। १३ अगस्त, १९६१ तक इस नये जर्मन राज्य की खुली सीमायें थीं, और पश्चिम के समाज-विरोधी तत्व बोन सरकार के सक्रिय सहयोग से इस तत्व का नाजायज़ फायदा उठाते थे। खुली सीमा होने के कारण वे ज. ज. ग. की आर्थिक शक्ति को तरह तरह के गलत तरीकों से क्षति पहुंचाते थे और तोड़ फोड़ के काम भी करते थे। लेकिन १३ अगस्त, १९६१ के दिन ज. ज. ग. ने इस अनिश्चित और हानिकारक स्थिति को खत्म किया। उस दिन, यहां की सरकार ने कंक्रीट की दीवार खड़ी करके अपनी सीमा को बांध दिया और पश्चिमी जर्मनी की बोन सरकार के सब मनसूबों को खाक में मिला दिया। इस दृढ़ कदम से साम्राज्यवादी खूब चीखे चिल्लाये और बौखलाये, लेकिन इससे ज्यादा वे और कुछ न कर सके।

उस ऐतिहासिक दिन से लेकर, ज. ज. ग. के आर्थिक विकास में दिन दूनी और रात चौगुनी प्रगति होने लगी और हो रही है। ज.ज.ग. के शांतिप्रिय लोग, अब यह आशा करते हैं कि पश्चिम जर्मन सरकार, ज. ज. ग. को ज़बरदस्ती हथियाने, नाभिकीय शस्त्रास्त्रों को हासिल करने, और सैनिकवादी दुःसाहसों को छोड़ देगी और एक नये शांतिप्रिय रास्ते पर चलकर जर्मन जनवादी गणतंत्र के शांति प्रस्तावों पर गंभीरता से विचार करेगी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में फासिस्तवाद के पाशविक दानव के चंगुल से मुक्ति की २०वीं वर्षगांठ, उन हज़ारों, लाखों निर्दोष लोगों की पुण्य स्मृति में मनाई जायेगी जो इस नृशंस दानव का आहार बन गये। और इस मुक्ति दिवस पर (८ मई को) यहां के लोग, समस्त जर्मन जनता और तमाम दुनिया को इस दानव को पुनः जीवित न होने देने के लिये, आवाहन करेंगे।

चिट्ठी-पत्री

श्रीमन्,

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास की **सूचना पत्रिका** के अंक बड़े रोचक, ज्ञानवर्धक सामग्री से पूर्ण और आकर्षक होते हैं। उनमें भारत-जर्मन मैत्री के सम्बन्धों को सुदृढ़ करने की अद्भुत शक्ति है। लाइपज़िग व्यापार मेले से सम्बद्ध जनवरी अंक अत्यन्त सुरुचिपूर्ण और मोहक है। मेरी बधाई स्वीकार करें।

कृष्णबिहारी मिश्र,
दयालसिंह कालेज,
नई दिल्ली.

महोदय,

सौभाग्यवश आपकी प्रकाशित **सूचना पत्रिका** के दर्शन हुए। इसका संकलन और मुद्रण कला देखकर अति हर्ष हुआ। मेरा सुझाव है कि इस पत्रिका में स्वास्थ्य के सम्बंध में लेख निकालते रहें। सूचना पत्रिका नियमित भेजने का कष्ट करें, जिससे हम लाभान्वित रहें।

सूरजभान जैन 'प्रेम'
संपादक "वर्णी सन्देश"
आगरा (उ.प्र.)

सम्पादक महोदय,

ज. ज. ग. की **सूचना पत्रिका** का लाइपज़िग मेला विशेषांक पढ़कर मुझे और मेरे विद्यालय के बच्चों को बड़ी प्रेरणा प्राप्त हुई। एक दिन वह भी था, जब नेपोलियन के बर्बरतापूर्ण युद्धों ने लाइपज़िग के मार्गों को खून की नदियां बना दिया था। मनुष्य ने खून से विनाश की होली खेली थी और हरे-भरे उद्यानों को श्मशान बना दिया था। एक दिन आज है कि जहां निर्माण और विकास के मेले लग रहे हैं, उत्थान के दीप जगमगा रहे हैं और भविष्य के उज्ज्वल आशा स्तंभ प्रकाशित हो रहे हैं।

सूचना पत्रिका, ज. ज. ग. और हमारे बच्चों के बीच न केवल एक ज्ञान का माध्यम है, बल्कि सांस्कृतिक सम्बन्धों को सुदृढ़ करने वाली एक शिक्षिका भी है। मैं अपने विद्यालय की ओर से आपके इस ज्ञान-यज्ञ का स्वागत करता हूं।

भंवरलाल भट्ट 'मधुप'
प्रधान अध्यापक,
रामपुरा. (म.प्र.)

श्रीमन्,

पहले तो आप इस बात का धन्यवाद लें कि आपकी सूचना पत्रिका नियमित रूप से मुझे प्राप्त होती है। इसमें आपके देश का सचित्र विकास विवरण बड़े ही रोचक रूप में मिलता है। आपका जनवादी गणतंत्र अपने जन्मकाल से ही भारत का हितैषी एवं मित्र रहा है। इतना ही नहीं भारतीय जनता के हृदय में जर्मनी के प्रति स्नेह एवं सौहार्द सर्वदा से सुरक्षित है। भारतविद् जर्मन साहित्यकारों ने भारतीय वांगमय एवं दर्शन का दिग्दर्शन विश्व के अन्य साहित्यकारों को कराया। उन पुनीत एवं ज्ञान पिपासु साहित्य शोधकों ने भारत की प्रतिष्ठा को यथास्थान प्रतिष्ठित किया।

मुझे जर्मन भाषा सीखने की दृढ़ इच्छा है। अतः आप मुझे अपनी भाषा का ज्ञान कराने में जो कुछ मदद कर सकें वह शीघ्रातिशीघ्र करें। आपकी भाषा सीखने के जहां तक हो सके हिन्दी माध्यम की नहीं तो फिर अंग्रेजी जर्मन माध्यम से आवश्यक पुस्तकें भेजियेगा। मुझे आपकी भाषा सीखने की बहुत लगन है जिससे मैं कुछ समय में सीख जाऊंगा। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि मुझे इस कार्य के लिये आपका सहयोग शीघ्र तथा बहुत मिलेगा।

आपके यहां प्रकाशित अन्य साहित्य भी हमें समय समय पर भेजकर हमें लाभान्वित करेंगे।

मेरी ओर से आपको तथा सभी जर्मन वालों को नमस्कार। अधिक क्या? आपकी उचित सलाह एवं प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा में—
आपका विश्वासनीय।

रामस्वरूप मालानी
भीलवाड़ा (राजस्थान)

महोदय,

आपको पहले इसके लिए क्यों न धन्यवाद दे दूं कि आप हमारे पुस्तकालय की शोभा के बढ़ोत्तरी हेतु अपनी सर्वश्रेष्ठ पत्रिका **सूचना पत्रिका** बराबर भेज रहे हैं।

वैसे तो आपकी पत्रिका अन्य दूतावासों से प्रकाशित पत्रिकाओं में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। परन्तु इस माह की पत्रिका के "विश्वविद्यालय तक पहुंचने के विभिन्न मार्ग" नामक लेख ने मुझे आपके पास पत्र लिखने के लिए बाध्य कर दिया। वास्तव में यह लेख मुझे बहुत ज्ञानवर्द्धक लगा। कृपया लेखक डा. हेलमट लेमन्न को हमारी तरफ से धन्यवाद दें।

यदि आपके यहां से अन्य पत्र-पत्रिकाओं का हिन्दी, उर्दू एवं अंग्रेजी में प्रकाशन होता हो तो कृपया भेज कर अनुगृहीत करें। यदि आप अपने यहां से प्रकाशित अन्य साहित्य समय समय पर भिजवाने का कष्ट करें, तो हम हृदय से आभारी होंगे।

सूचना पत्रिका की लोकप्रियता की आकांक्षा में।

अरुण कुमार अग्रवाल "सूर्य"
इलाहाबाद (उ.प्र.)

'सूचना पत्रिका'

जो पाठक, **सूचना पत्रिका** को प्राप्त करना चाहते हों, वे **दो रुपये** वार्षिक चंदा भेज दें। इसके बाद **पत्रिका** नियमित रूप से उनको मिलती रहेगी। चन्दे की दर इस प्रकार है :

वार्षिक : २)
अर्ध-वार्षिक : १)

सूचना पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

६

वर्ष १० | अंक ६ | २० जून, १९६५

संकेत

पृष्ठ

मुख पृष्ठ : १ जून, अन्तर्राष्ट्रीय बाल दिवस के अवसर पर ज. ज. ग. के खुशहाल, बेफिक्र बच्चे

अंतिम पृष्ठ : श्याम और श्वेत का संगम : सेनेगाल और जर्मन सौन्दर्य का आलिंगन

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और यूनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

विश्व शान्ति का दृढ़ समर्थक

8 मई के दिन सारे जर्मन जनवादी गणतंत्र में जर्मन जनता की हिटलरी फासिज़्म से मुक्ति की २०वीं जयन्ती, बड़ी धूमधाम से मनाई गई। ज. ज. ग. की राजधानी, बर्लिन में इस मुक्ति दिवस पर, एक विशेष समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें दूसरे देशों के अनेक सरकारी प्रतिनिधि-मण्डल भी सम्मिलित हुये। इस विशेष समारोह में जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री श्री विल्ली स्टोप ने एक सारगर्भित भाषण में कहा:

"आज, हिटलर के बर्बर फासिस्तवाद के शिकंजे से जर्मन जनता की मक्ति के २० साल बाद हम, जर्मन जनता और विश्व की समस्त जनता के सामने यह घोषित करते हैं: (कि) समाजवादी जर्मन जनवादी गणतंत्र, वर्तमान शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक जीता जागता वैध राज्य है जो जर्मन राष्ट्र के हितों की पूर्ति करता है, और जो यूरोप की शांति एवं सुरक्षा को मजबूत बनाता है।....

"जर्मनी के इस पूर्वी भाग में (अर्थात् ज. ज. ग. में--सं.) दूसरे महायुद्ध में फासिस्तवाद की पराजय के बाद प्राप्त ऐतिसाहिक अवसर का लगातार सदुपयोग किया गया है, और इस तरह यहां साम्राज्यवादी और फासिस्तवादी तत्वों तथा भावनाओं को सदा के लिये खत्म किया गया है।...इसके विपरीत पश्चिमी जर्मनी का शासक वर्ग लगातार इस बात के प्रमाण प्रस्तुत करता रहता है कि वह उन पुरानी साम्राज्यवादी नीतियों का समर्थन करता है जिन्होंने अमानुषिक हिटलरी फासिस्तवाद को जन्म और विस्तार दिया।..."

ज. ज. ग. के प्रधान मंत्री

ज. ज. ग. का विकास

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सर्वतोमुखी निर्माण और विकास का उल्लेख करते हुए प्रधान मंत्री विल्ली स्टोप ने सोवियत संघ के निष्काम सहयोग की प्रशंसा की और सोवियत सेना के प्रति आभार प्रकट किया जिसने साम्राज्यवादी हस्तक्षेप से, ज. ज. ग. के राष्ट्रीय नव-निर्माण को बचाये रखा।

ज. ज. ग. की सफलताओं का लेखा जोखा प्रस्तुत करते हुये, प्रधान मंत्री ने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया कि गत १५ वर्षों में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के औद्योगिक उत्पादन में २७० प्रतिशत की, और विदेश व्यापार में ५३० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसी अवधि में, लोगों की आमदनी में १५० प्रतिशत की वृद्धि, और मूल मजदूरी एवं क्रय-शक्ति में २५० प्रतिशत की बढ़ौती हुई है। ये उपलब्धियां इसलिये और भी प्रशंसनीय हैं क्योंकि इनको अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में प्राप्त किया गया है। इस संदर्भ में, श्री विल्ली स्टोप ने, पश्चिमी जर्मनी के साम्राज्यवादी तत्वों द्वारा, सन् १९६१ तक, ज. ज. ग. की खुली सीमाओं के दुरुपयोग का उल्लेख किया।
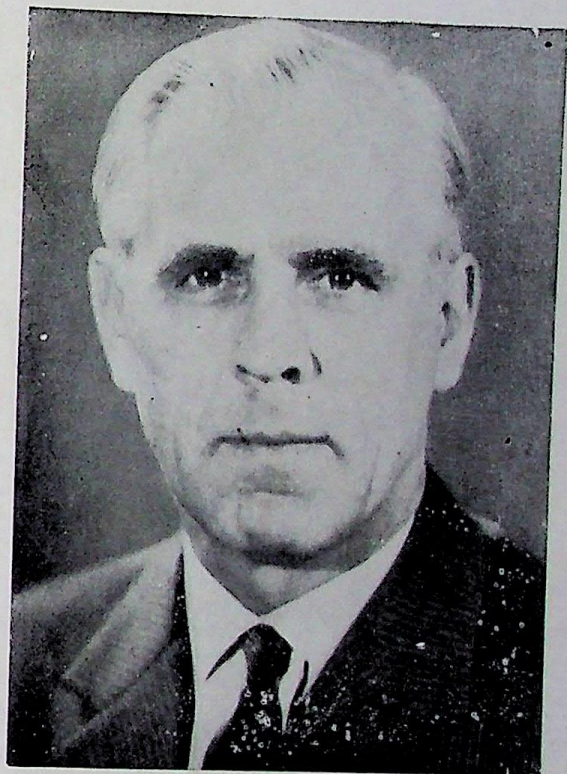
उपनिवेशवाद से मुक्ति के लिये संयुक्त संघर्ष

अपने उक्त भाषण में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री ने उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष का भी उल्लेख किया। इस संदर्भ में उन्होंने बताया: "हमारी पार्टियों एवं लोगों के भाईचारे में, और ज. ज. ग. तथा अन्य समाजवादी राज्यों के बीच दरार डालने की तमाम कोशिशों का अन्त, असफलता के सिवा और कुछ न होगा।... उपनिवेशवादी शोषण से मुक्त होने के लिये लड़ने वाले तमाम लोगों का हम समर्थन करते हैं, और नवोदित विकासशील राज्यों के साथ

हम अपने रिश्तों को निरन्तर बढ़ा रहे हैं।..."

वियतनाम पर अमरीका के लगातार हमलों के संदर्भ में श्री विल्ली स्टोप ने कहा : "समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और ज. ज. ग. की सरकार अपने बन्धु राज्य, वियतनाम की रक्षा के लिये सभी समाजवादी राज्यों द्वारा पुरअसर और सामूहिक कार्रवाई करने के पक्ष में है।..." प्रधान मंत्री ने वियतनाम पर उत्तेजक आक्रमण को तुरन्त बन्द करने की, और आक्रामक एवं हस्तक्षेप करने वाले अमरीकियों को वियतनाम खाली करने की मांग की। इसी संदर्भ में श्री स्टोप ने डोमिनिकन गणराज्य में अमरीकी सेना की दखलअंदाजी को रोकने और वहां से अमरीकी सैनिकों के बाहर निकालने की भी मांग की।

पश्चिमी जर्मनी और पश्चिम बर्लिन

ज.ज.ग. के प्रधान मंत्री ने पश्चिमी जर्मनी और पश्चिम बर्लिन की वर्तमान स्थिति पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पश्चिमी जर्मनी और प. बर्लिन में आज भी जर्मन फासिज्म और साम्राज्यवाद जिन्दा है। ज. ज. ग. पर बल का प्रयोग और वर्तमान सीमाओं को बलात् बदल देने का "अनिवार्य परिणाम होगा आक्रामकों का उनके अपने ही गढ़ में समूल नाश।..."

संयुक्त एवं शांतिप्रिय जर्मनी को पूरा करने के लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग बहुत लम्बा और कठिन अवश्य है लेकिन अप्राप्य या असंभव नहीं। इस सिलसिले में प्रधानमंत्री स्टोप ने कहा : "हमारा यह दृढ़ मत है कि शांतिपूर्ण ढंग से जर्मनी का एकीकरण, मूल रूप से हमारी जनता की ही जिम्मेदारी है। और यह एकीकरण दो जर्मन राज्यों की बराबरी के आधार पर आपसी बातचीत द्वारा ही संभव है।..."

इस संदर्भ में ज.ज.ग. के प्रधान मंत्री ने इस घोषणा को एक बार फिर दोहराया है कि पश्चिम बर्लिन, प. जर्मन फेडरल गणराज्य का न कभी हिस्सा रहा है, और न कभी भविष्य में ही इसका अंग बन सकता है। प. बर्लिन एक ऐसा स्वतंत्र एवं राजनीतिक एकांश है जो जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच में स्थित है।

संयुक्त जर्मनी : शांति की गारंटी

विभाजित जर्मनी के एकीकरण के सिलसिले में, श्री विल्ली स्टोप ने फ्रांस के राष्ट्रपति द गाल के "अहम बयानों" की ओर भी ध्यान दिलाया। उन्होंने कहा : "हम फ्रांस के इस दृष्टिकोण से सहमत हैं कि संयुक्त जर्मनी निश्चित रूप से एक शांतिप्रिय राज्य होना चाहिये जो अपने पड़ोसियों के लिये कभी भी खतरा न बन सके, और वह शांति और प्रगति के लिये एक सहयोगी तत्व होना चाहिये।..."

अपने इस महत्वपूर्ण भाषण का अन्त करते हुये, जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री ने कहा : "ज. ज. ग. की जनता और सम्पूर्ण जर्मन राष्ट्र के हितों का ध्यान रखते हुये, हम उस समय तक अपने संघर्ष को जारी रखेंगे, जबतक सारा जर्मनी एक ऐसा देश बन जाये जहां जनतंत्र, सामाजिक प्रगति और जनगण में मैत्री एवं सद्भावना का बोलबाला हो।..."

निःशस्त्रीकरण और आर्थिक सहायता

इस वर्ष के फरवरी मास के अन्त पर, अलजीरिया की राजधानी अलजियर में, अफ्रो-एशियाई राज्यों का एक आर्थिक-सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में एशिया और अफ्रीका के नवोदित राज्यों के प्रतिनिधियों ने व्यापार और आर्थिक सहयता के प्रश्नों पर सोच विचार किया। इस सिलसिले में, इस सम्मेलन में, निःशस्त्रीकरण के संभावित आर्थिक प्रभावों के विषय पर भी विचार [illegible]र्श हुआ।.. यह विचार ज्यों ज्यों फै[illegible]ा और मजबूत होता जा रहा कि निः-[illegible]करण, साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद [illegible] कलुषित शासन के प्रभावों को समाप्त करने का एक निर्णायक साधन होगा, त्यों-त्यों उक्त प्रश्न, व्यापक और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व धारण करते जा रहे हैं।

समाजवादी राज्यों का यह निश्चित मत है कि निःशस्त्रीकरण से ऐसे अनेक साधन—आर्थिक तथा अन्य साधन—उपलब्ध हो जायेंगे जो विकासशील राज्यों के अर्थ तन्त्रों को मजबूत बनाने में सहायक होंगे। इस सिलसिले में इन समाजवादी राज्यों की यह धारणा और मांग है कि निःशस्त्रीकरण से जो साधन उपलब्ध होंगे उनका १५ प्रतिशत भाग इन नवोदित विकासशील राज्यों के विकास के लिये इस्तेमाल किया जाना चाहिये।

ज.ज.ग. का प्रस्ताव

इस सिलसिले में जर्मन जनवादी गणतंत्र का कहना है कि दो जर्मन राज्यों को इस दिशा में पहल करनी और मिसाल क़ायम करनी चाहिये निःशस्त्रीकरण करके। ज.ज.ग. ने दो जर्मन राज्यों के आम और पूरे निःशस्त्रीकरण के संबन्ध में संयुक्त राष्ट्र संघ की १५वीं महासभा को जो प्रस्ताव दिया है उसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि निःशस्त्रीकरण से जो साधन आजाद हो जायेंगे उनको "आर्थिक दृष्टि से कम विकसित देशों की सहायता के लिये इस्तेमाल किया जाना चाहिये।.."

तटस्थ देशों के अनुमान के मुताबिक यदि ज.ज.ग. के प्रस्ताव पर अमल हो, तो निःशस्त्रीकरण से जो साधन उपलब्ध हो जायेंगे, यदि उनका केवल १० प्रतिशत भाग सहायता के तौर पर दिया जाये तो हर साल, एशिया या अफ्रीका के किसी न किसी राज्य में, आसवान बान्ध जैसा एक-एक विराट प्रायोजन पूरा किया जा सकता है; अथवा समस्त अफ्रीका में, सन् १९८० तक हाइस्कूल शिक्षा का कार्यक्रम चलाया जा सकता है।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

अन्तर्राष्ट्रीय लेखक सम्मेलन का आवाहन

फासिस्तवाद और अणु-युद्ध के खिलाफ लड़ो

मई मास में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के लेखक संघ ने, बर्लिन एवं वाइमर में एक अन्तर्राष्ट्रीय लेखक सम्मेलन का आयोजन किया। इस महत्वपूर्ण लेखक सम्मेलन का समापन हुआ लेखकों के नाम एक अपील द्वारा। दुनिया के लेखकों को सम्बोधन करते हुये अपील की गई है कि, "प्रत्यक्ष और परोक्ष फासिस्टवाद के खिलाफ, साम्राज्यवादी आक्रमणों के खिलाफ और समस्त मानवता को विनाश के मुंह में धकेलने वाले भयंकर अणु युद्ध के खिलाफ एक होकर अपनी प्रतिभा एवं मनोबल से लड़ा जाये।..."

फासिस्तवाद से मुक्ति की २०वीं जयन्ती, और 'सांस्कृतिक सुरक्षा का पेरिस लेखक सम्मेलन' की ३०वीं जयन्ती के अवसर पर, बर्लिन के उक्त लेखक सम्मेलन का आयोजन हुआ था। सम्मेलन की संयोजिका थी विश्व प्रसिद्ध जर्मन लेखिका अन्ना सेगर्स । सम्मेलन में ५२ देशों के १८४ प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें पश्चिमी जर्मनी के १४ लेखक भी शामिल थे।

वाइमर में अन्तर्राष्ट्रीय लेखक सम्मेलन का एक दृश्य

भारत से चार प्रतिनिधि गये थे, जिनके नाम हैं सर्वश्री अमृतराय, मुल्कराज आनन्द, सज्जाद ज़हीर और श्रीमती सज्जाद रज़िया ज़हीर। अन्य देशों के लेखक प्रतिनिधियों में से कुछ उल्लेखनीय नाम ये हैं : जेम्स आल्ड्रिज (ब्रिटेन), अब्दुल कादिर काकी (अलजीरिया), मैग्यूल एन्जेल आस्तुरिया (गौटेमाला), अलवा बेस्सी (अमरीका) कोनस्तानतिन फेदिन (सोवियत संघ), फ़्राक हार्डी (आस्ट्रेलिया), वाल्टर लोवेनफेल्स (अमरीका), पाब्लो नेरूदा (चिली), वैदिमे पोस्नर (फ्रांस), आरनो राइनफ़ांक (पश्चिमी जर्मनी), विलियम सरोयां (अमरीका), गेर्ड जेम्मर (प. जर्मनी), आण्द्रे वूर्मस (फ्रांस), अब्दुल हमीद (इराक), मुहम्मद असदुल्लाह (पाकिस्तान), डैमबेले सिद्दीकी (माली), डा. सलेमान (लेबनान) अजीज नैसिन (तुर्की), योशी होता (जापान) इत्यादि।

सम्मेलन के दौरान मन को छूने वाले अनेक दृश्य देखने में आये।...दुनिया के सभी महाद्वीपों से आये हुये लेखकों ने इस तथ्य की भूरि भूरि प्रशंसा की कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में उनको उस जर्मनी के दर्शन हुये जिसने जर्मन सैनिकवाद और फासिस्तवाद के दानव को दफना कर मानवीय जर्मन संस्कृति की भव्य परम्परा को आगे बढ़ाया है। सम्मेलन में ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध लेखक, श्री जेम्ज़ आलड्रिज ने कहा कि ज. ज. ग. में आने और सम्मेलन में भाग लेने के बाद अब वह फिर से 'मैं जर्मनों से प्यार करता हूं' ये शब्द कह सकता है, तो जबरदस्त तालियों से उनके इस कथन का स्वागत हुआ। जर्मन जनवादी गणतंत्र के बारे में उनके ये शब्द उद्धरणीय हैं :
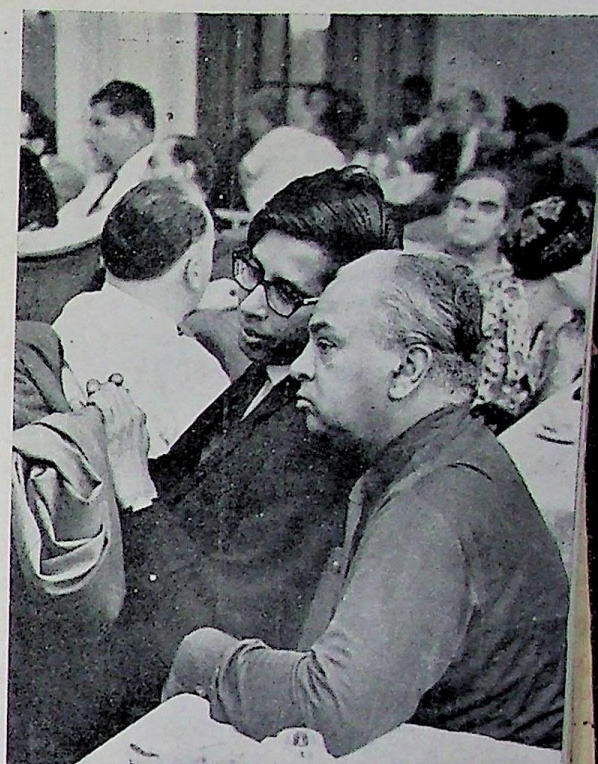
डा. मुल्कराज आनन्द, पाकिस्तान के लेखक असदुल्लाह के साथ

"सोवियत सेना द्वारा मुक्त किये जाने के दो या तीन दिन बाद मैंने बूखेनवाल्द से पहले मेडानेक (यातना-शिविर) को देखा था। उस समय मैंने सोचा, 'क्या मैं कभी फिर यह कह सकूंगा कि मैं जर्मनों से प्यार करता हूं, उनका आदर करता हूं।' फासिस्टों के वे अमानुषिक अत्याचार देखकर मैंने महसूस किया था कि सम्पूर्ण जर्मन जनता ही भ्रष्ट कर दी गई है। आज भी हमारे ब्रिटेन में प्रायः लोग जर्मनों को 'बदमाश' और 'खूनी जर्मन' के नाम से ही याद करते हैं।... लेकिन आज, जर्मन भूमि पर स्थित इस नये जर्मन राज्य (ज.ज.ग.—सं.) को देखकर और इस सम्मेलन में खड़े होकर मैं एक बार फिर अपने जीवन में यह महसूस कर रहा हूं कि 'मैं जर्मनों से प्यार करता हूं।' इस नये राज्य, अर्थात जर्मन जनवादी गणतंत्र और इसकी राजधानी में आयोजित इस अन्तर्राष्ट्रीय लेखक सम्मेलन ने मुझे यह एहसास और चेतना दी है कि एक नई जर्मन जनता का, उनकी नई मानवीय संस्कृति का, और एक खुशहाल भविष्य का पुनर्जन्म हो चुका है।..."

जर्मन जनवादी गणतंत्र में जीवन-स्तर

| गेरहार्ड लिप्पोल्ड

जर्मन जनवादी गणतंत्र अपने पथ पर १५ वर्ष पहले अग्रसर हुआ । पिछले डेढ़ दशक में इसके नागरिकों ने एक सुविकसित अर्थ-व्यवस्था के निर्माण में सफलता प्राप्त कर ली है । जर्मन जनवादी गणतंत्र के मज़दूर और कर्मचारी बेकारी नहीं जानते । काम में लगी औरतों की संख्या किसी भी देश में काम करने वाली स्त्रियों के उच्चतम प्रतिशत के बराबर है । तेज आर्थिक विकास के कारण जीवन के स्तर में भी निरंतर विकास होता जा रहा है । वास्तविक आय में होने वाली वृद्धि से यह बात और अधिक स्पष्ट होती है ।

यह विकास पश्चिमी देशों में वास्तविक आय के विकास से बुनियादी तौर पर भिन्न है । प्रथम तो जर्मन जनवादी गणतंत्र में वास्तविक आय में वृद्धि की गति बहुत तेज़ है । उदाहरण के लिए पश्चिमी जर्मनी में औद्योगिक मज़दूरों की वास्तविक आय में १९५०-५३ में, जहां ५ दशमलव ८ प्रतिशत की वृद्धि हुई वहीं जर्मन जनवादी गणतंत्र में इसी अवधि में १४० दशमवल २ प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

दूसरी विशेष बात यह है कि पश्चिमी देशों के मुकाबले, जहां कीमतें बारबर बढ़ रही हैं, जर्मन जनवादी गणतंत्र में मूल्यों की स्थिरता है और अनेक वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट भी आयी है ।

पूंजीवादी औद्योगिक देशों में थोड़ा-थोड़ा कर के जीवन-व्यय में काफी अधिक वृद्धि हो गयी है । एक ही अवधि में अमेरिका में जीवन-व्यय २७.७ प्रतिशत ब्रिटेन में ६४.७ प्रतिशत, जापान में ९९.९ प्रतिशत और फ्रांस में ९९.९ प्रतिशत बढ़ गया है ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में वास्तविक आय की वृद्धि की एक और विशेषता यह है कि मकानों का किराया बहुत कम होने और यातायात, आवश्यक खाद्य पदार्थ, बिजली, गैस आदि बहुत सस्ते होने से अल्प वेतन भोगियों का जीवन निर्वाह व्यय बहुत कम है । इनकी तुलना में ऊंची किस्म की सभी वस्तुएं और दूसरी सुविधाएं महंगी है ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में मकानों का किराया नियंत्रित होने से उनकी दरें युद्ध के पहले के स्तर पर ही हैं । इसके विपरित पश्चिमी जर्मनी में १९५० से जून १९६४ तक, मकानों के किराये में ९९ प्रतिशत की वृद्धि हुई जिससे एक औसत परिवार को किराये पर ८०.९२ मार्क खर्च करने पड़ते हैं, जब कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में केवल ३४.५० मार्क ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में यातायात के किराये में कई बार कमी की गयी जिसके फलस्वरूप १९६३ में यातायात शुल्क १९५० के मुकाबले सिर्फ ७९.२ प्रतिशत रह गया । लेकिन पश्चिमी जर्मनी में यातायात शुल्क ६७ प्रतिशत बढ़ा है । जर्मन जनवादी गणतंत्र वर्षों से फी किलोवाट घंटे बिजली का मूल्य ०.०८ मार्क और फी घन मीटर गैस का ०.२६ मार्क बना हुआ है । किन्तु पश्चिमी जर्मनी में जून १९६४ में इनका मूल्य क्रमशः ०.१८ और ०.३३ मार्क था ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में आवश्यक खाद्य-पदार्थों—जैसे रोटी, आलू, चिकने पदार्थ (चर्बी) आदि का मूल्य पश्चिमी जर्मनी से कम है ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में लोगों की आय और उपयोग की मात्रा क्या है ?

प्रति १०० घरों में कीमती उपभोक्ता वस्तुओं का स्वामित्व
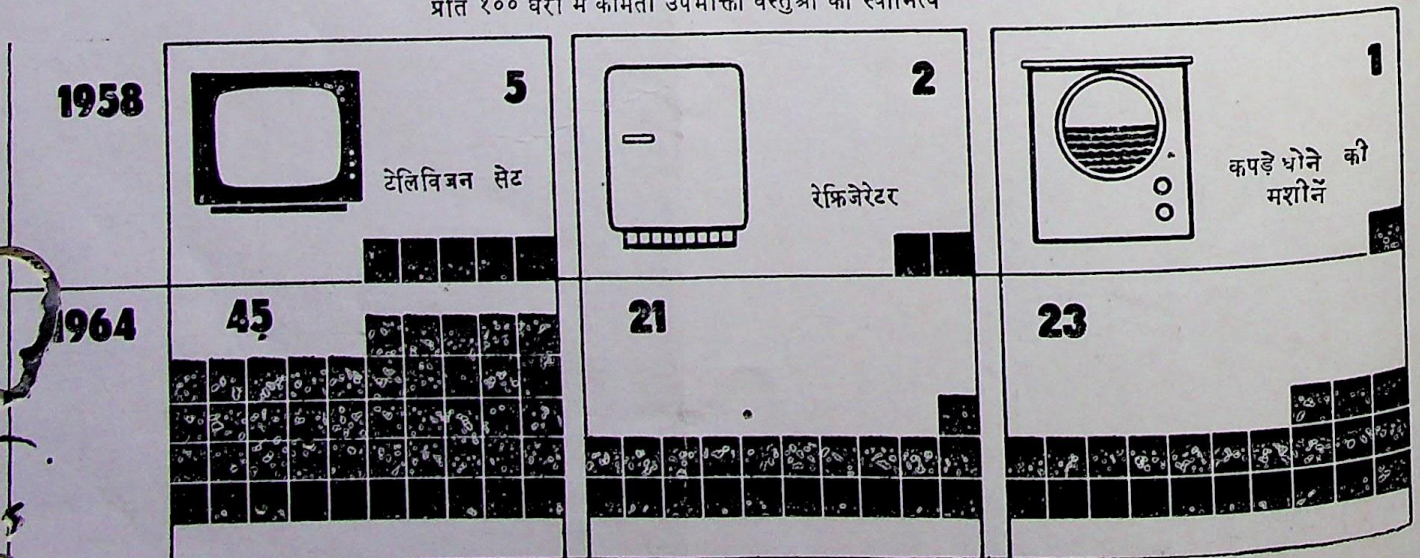
राष्ट्रीय स्वामित्व वाले क्षेत्र में काम करने वाले मज़दूरों और कर्मचारियों की मासिक औसत आय

1949	1950	1963
290	311	592

आय का वास्तविक हिसाब वेतन पर नहीं बल्कि औसत के आधार पर लगाया जा सकता है--जो जर्मन जनवादी गणतंत्र में १९६३ में ५९२ मार्क था। खपत की मात्रा तय करने में व्यक्तिगत आय उतनी निर्णायक नहीं है जितनी पारिवारिक आय, क्योंकि स्त्रियां भी भारी संख्या में काम करती हैं। २ वयस्कों और २ बच्चों के एक परिवार की आय १९६३ में ८३४ मार्क थी। (पश्चिमी जर्मनी में यह आय १९६२ में ९०५ मार्क थी और ज. ज. ग. में ८४७ मार्क) ऊपर जिस मूल्य ढांचे की चर्चा की गयी है उसके अनुसार ज. ज. ग. में पश्चिमी जर्मनी से अधिक खाद्य पदार्थों की खपत होती है और आवास स्थिति भी अच्छी है। किन्तु दैनिक उपयोग तकनीकी सामान, पश्चिमी जर्मनी में कुछ अच्छे हैं।

मक्खन के मामले में जर्मन जनवादी गणतंत्र सबसे अधिक खपत वाले देशों में है। मक्खन और चिकने पदार्थों की प्रति व्यक्ति खपत में जर्मन जनवादी गणतंत्र पश्चिमी जर्मनी, फ्रान्स, ब्रिटेन और अमेरिका से भी आगे है। यही बात आलू और दूसरी तरकारियों के बारे में भी लागू होती है। जर्मन जनवादी गणतंत्र में फ्रान्स को छोड़ कर खाद्यान्नों की प्रति व्यक्ति खपत भी इन सभी देशों से अधिक है।

कुछ खाद्य पदार्थों की प्रति व्यक्ति खपत:

वस्तु	मात्रा	ज.ज.ग. १९६३	प. जर्मनी १९६३
खाद्यान्न	किलो	९६.४	७४.९
आलू	,,	१५८.८	१२६.९
सब्ज़ी	,,	६२.९	४५.४
चीनी और चीनी के सामान	,,	२९.९	३०.७
चिकने पदार्थ	,,	२९.३	१८.५
मक्खन	,,	११.५	७.४
मछली	,,	१३.७	१२.१

जर्मन जनवादी गणतंत्र में १९६१ में प्रति १००० व्यक्तियों के पीछे ३२७ रिहायशी मकान थे। पश्चिमी जर्मनी में २९१। जर्मन जनवादी गणतंत्र के सभी रिहायशी मकानों में बिजली है। ४९ प्रतिशत मकानों में गैस, और ६६ प्रतिशत में पानी की सुविधा में है। १९६१ में जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्रति १००० व्यक्तियों पर ४५ टेलीविजन सेट थे, फ्रांस में (१९६०) ४२ सेट, इटली में (१९६०) ३९ और बेल्जियम में (१९६०) ६८ सेट थे। गत वर्ष जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्रति १०० परिवारों में ४५ के पास टेलिविजन सेट ८१ के पास रेफ्रीजरेटर और १३ के पास धुलाई मशीनें थीं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के निवासियों के पास फ्रांस से अधिक वैकुअम क्लीनर (वायु दावक सफाई यंत्र) ब्रिटेन से अधिक कैमरे और पश्चिमी जर्मनी से अधिक सिलाई मशीनें हैं। हां, इन वस्तुओं और कुछ औद्योगिक सामानों जैसे रेफ्रीजरेटरों और सिलाई मशीनों, मोटरकारों आदि की निर्माण कुशलता और किस्मों की बराबरी अभी भी जर्मन जनवादी गणतंत्र को करनी है।

किन्तु जर्मन जनवादी गणतंत्र के निवासियों के जीवन स्तर के बारे में राय कायम करते समय यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि जन शिक्षा और स्वास्थ्य की संस्थाएं और अन्य सामाजिक तथा सांस्कृतिक सेवाएँ जर्मन जनवादी गणतंत्र में पश्चिमी जर्मनी और अमेरीका से अधिक विकसित हैं और जनता को अधिक लाभ पहुंचाती हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र में शिक्षा बिल्कुल मुफ्त है।

इन सभी बातों को दृष्टि में रखते हुए लन्दन टाइम्स (१४ जून १९६३) के शब्दों में कहा जा सकता है कि "ज. ज. ग. उच्च भौतिक सम्पन्नता और सांस्कृतिक स्तर का देश है जो हर बात में पश्चिम की बराबरी कर सकता है"।
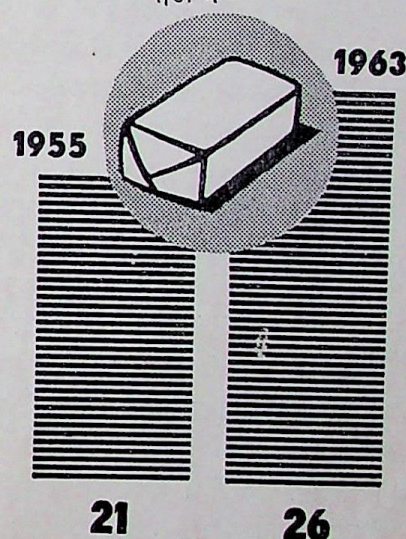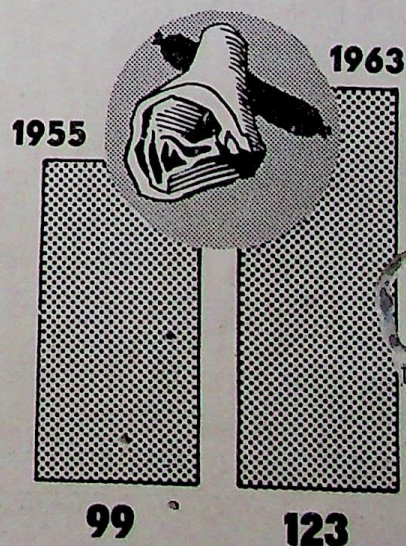
खसरा उन्मूलन अभियान

उरज़ूला एबेरिक

इस वर्ष के जनवरी मास में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के बर्लिन, लाइपज़िग, पोट्स्डाम और श्वेरिन नामक ज़िलों के कस्बों एवं गांवों की सड़कों पर तथा गली कूचों में छोटे-छोटे लड़के और लड़कियां एक नये अभियान पर निकले । उनके हाथों में नाना रंग के गुब्बारे थे जिन पर लिखा था: "मैं स्वस्थ रहता हूं ।" इन नन्हें मुन्ने बच्चों के साथ उनकी मातायें थीं, और ये टीका लगवाने के केन्द्रों से खसरे से बचने का टीका लगवा कर आ रहे थे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र का स्वास्थ्य-मंत्रालय, कई साल से खसरे (Measles) से बच्चों को मुक्त करने का लगातार संघर्ष चला रहा था । इस रोग ने यहां के अनेक बच्चों को मौत की नींद सुला दिया था । जर्मन जनवादी गणतंत्र में, खसरे से, विभिन्न आयु वर्ग के १३६ बच्चों की मौत हुआ करती थी। इसके अलावा, अनेक और बच्चे खसरे से उत्पन्न अन्य रोगों के शिकार हो जाया करते थे । ...इसलिये जर्मन जनवादी गणतंत्र के मेडिकल विशेषज्ञों ने अमरीका में खसरे के रोग पर हो रहे अनुसंधान में काफी गहरी दिलचस्पी दिखाई । अमरीका के दो वैज्ञानिकों—एण्डर्स और पोयबेल्स, अपने सतत् अनुसन्धान द्वारा सन् १९५४ में, खसरा विषाणु (वाइरस) संवर्धित करने में सफल हुये । इस तरह खसरे के खिलाफ सफल टीका तैयार करने के लिये रास्ता साफ हुआ।

खसरा रोग पर अनुसन्धान करने वाले जर्मन जनवादी गणतंत्र के कुछ वैज्ञानिकों ने लेनिनग्राद स्थित विश्वविख्यात 'पासचर संस्थान' से संपर्क स्थापित किया, जहां प्रोफेसर स्मोरोडिनसेव के पथ-प्रदर्शन में सोवियत डाक्टरों का एक दल एक सफल खसरा उन्मूलक टीका तैयार करने में सफल हुआ है । सोवियत संघ में इस टीके की प्रथम सफलता के बाद, प्रोफेसर स्मोरोडिनसेव ने इन खसरा-विरोधी टीकों की काफी बड़ी मिकदार जर्मन जनवादी गणतंत्र को उपलब्ध की । इसके बाद, सन् १९६३ के शरद्काल में बर्लिन और पोट्स्डाम ज़िलों के बच्चों की अच्छी खासी संख्या को ये टीके लगाये गये । ये बच्चे खसरे का शिकार नहीं हुये, हालांकि वे किंडरगार्टनों और शिशु गृहों में ऐसे बच्चों के साथ ही उठते बैठते थे जिनके टीके नहीं लगे थे और जो इस स्पृश्य रोग से बीमार हुये थे ।

इस सफलता के बाद, जर्मन जनवादी गणतंत्र के स्वास्थ्य मंत्रालय ने चार अन्य ज़िलों के बच्चों को इस टीके के लिये चुना । हालांकि यह टीका लगाना या न लगाना अपनी मर्जी पर निर्भर करता था, तब भी औरतों की भारी भीड़ लग गयी जो अपने बच्चों को टीका लगवाना चाहती थीं । इसके पहले जर्मन जनवादी गणतंत्र के अखबारों, रेडियो और टेलिविजन ने लोगों को राष्ट्र-व्यापी खसरा उन्मूलन अभियान की अहमियत से आगाह किया था ।

ऐसे ही अन्य टीकों की तरह, खसरे का टीका भी ज. ज. ग. में मुफ्त होता है । इसका सारा खर्च यहां की सरकार बरदाश्त करती है । इस वर्ष के सितम्बर मास में, ज. ज. ग. के बाकी दस ज़िलों के बच्चों को भी खसरा विरोधी टीके लगेंगे । यहां के विशेषज्ञों की यह निश्चित राय है कि पोलियो की तरह ही, इस ख़तरनाक रोग को भी समूल नष्ट किया जा सकता है । जर्मन जनवादी गणतंत्र ने इस टीके की काफी मिकदार 'पासचर संस्थान' से खरीद ली है । बड़े बड़े बक्सों में बन्द करके यह टीका हवाई जहाज़ों से ज. ज. ग. में लाया गया । संभव है कि सन् १९६६ से खसरे का टीका लगाना भी यहां अनिवार्य हो जाये ।

अपने नागरिकों को टीके लगवाने में जर्मन जनवादी गणतंत्र का अग्रगण्य स्थान है । केवल सन् १९६४ में यहां के डाक्टरों ने २७ लाख मार्क की रकम के विभिन्न प्रकार के टीके लोगों को दे दिये । हमारी सरकार इस कोशिश में लगी है कि सन् १९७० तक जर्मन जनवादी गणतंत्र में, टीके लगवाने की, समस्त संसार में, सबसे अच्छी संगठित व्यवस्था हो । ...जन्म लेने के बाद प्रथम कुछ हफ्तों में ही शिशुओं को क्षय रोग विरोधी टीका लगता है, और इसके बाद यथा समय उनको पोलियो, डिफथेरिया टेटनस, काली खांसी, चेचक आदि रोगों के विरोधी टीके लगाये जाते हैं ।... इसलिये बच्चों के रंग-बिरंगे गुब्बारों पर लिखे हुये ये शब्द "मैं स्वस्थ रहता हूं" सार्थक हैं । इनमें कोई अत्युक्ति नहीं ।

एक बच्चे को खसरा-विरोधी टीका लग रहा है

९८ देशों के विद्यार्थियों को दाखला

आज के युग में विज्ञान एवं तकनालोजी में आश्चर्यजनक प्रगति हो रही है। इसीलिए प्रत्येक देश के लिये, दूसरे देशों के साथ संपर्क कायम करना, सहयोग बढ़ाना और अनुभवों का आदान प्रदान करना अनिवार्य हो गया है। इससे विज्ञान और तकनालोजी की पेचीदा तथा नवीनतम समस्याओं को सुलझाने में बहुत बड़ी सहायता मिलती है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र, विश्व के दस सबसे बड़े औद्योगिक राज्यों में से एक है। यह महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने का प्रमुख कारण इसकी वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति है। इस क्षेत्र में जर्मन जनवादी गणतंत्र, अन्य देशों के विद्यार्थियों और शिक्षार्थियों को, ट्रेनिंग एवं अध्ययन आदि की सुविधायें देकर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में अहम योगदान देता है।

विगत साल (१९६४) के अक्तूबर मास में जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अपनी १५ वीं वर्षगांठ मनाई। सन् १९४९ में जन्म लेते ही, जर्मन भूमि पर इस प्रथम शांतिप्रिय और समाजवादी राज्य ने, अन्य देशों के विद्यार्थियों के लिये अपने स्कूलों तथा दूसरे शिक्षा संस्थानों के दरवाज़े खोल दिये। इस समय यहां के ४० कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में ९८ देशों के २,००० से अधिक शिक्षार्थी अध्ययन कर रहे हैं। इनमें से दो तिहाई एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमरीका के देशों के हैं।

भारतीय विद्यार्थी

जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारत के बीच, वैज्ञानिक तथा शैक्षिक क्षेत्र में भी, काफी अच्छे सम्बंध हैं। दोनों राज्यों के बीच 'सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम' के अन्तर्गत विद्यार्थियों का विनिमय होता है। यही कारण है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, भारत सरकार को हर साल, कई छात्रवृत्तियां उपलब्ध करती है।

इस समय ज. ज. ग. के विभिन्न शिक्षा संस्थानों में १०० से अधिक भारतीय विद्यार्थी, विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन कर रहे हैं। इनमें से कई उच्च वैज्ञानिक और तकनीकी प्रशिक्षण ले रहे हैं, और कुछ अन्य शोध कार्य कर रहे हैं। भारत के ये नौजवान विद्यार्थी ज. ज. ग. में तीन से लेकर चार वर्षों तक गहरा अध्ययन करते हैं, और तकनालोजी एवं विज्ञान की पेचीदा और कई समस्याओं का हल ढूंढने का प्रयत्न करते हैं। इस कार्य में अनुभवी जर्मन विद्वान और विशेषज्ञ इनकी सहायता करते हैं। प्रशिक्षण अथवा अनुसन्धान की सफल-समाप्ति पर, शोधार्थियों को वह संस्थान डाक्टर (अर्थात् पी.एच.डी.) की उपाधि प्रदान करता है जिसमें उन्होंने अपना कार्य किया होता है। पिछले चन्द वर्षों में, ७० से अधिक भारतीय शोधार्थियों ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विभिन्न संस्थानों से उक्त डिग्री प्राप्त की है, और आजकल ये अपने देश के निर्माण के विभिन्न क्षेत्रों में हाथ बटा रहे हैं।

अन्य देशों के शोधार्थी

दिन प्रति दिन जर्मन जनवादी गणतंत्र में अनुसन्धान करने वाले विदेशी शोधार्थियों की संख्या बढ़ती जा रही है। आजकल यहां इन शोधार्थियों की संख्या कुल विदेशी विद्यार्थियों की संख्या का १० प्रतिशत है। यह तथ्य, ज. ज. ग. के वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास का स्पष्ट प्रमाण हैं।

विदेशी विद्यार्थी मुख्यतः जर्मन जनवादी गणतंत्र के विभिन्न कालिजों में ही पढ़ते हैं। ये विद्यार्थी यहां दो प्रकार की अकादमिक शिक्षा प्राप्त करते हैं: एक है विश्वविद्यालय अथवा कालेज की सामान्य शिक्षा। इसमें शिक्षा की अवधि पांच साल तक की होती है, और वैज्ञानिक, तकनीकी, और मानविकी के विभिन्न विषयों का अध्ययन कराया जाता है। अध्ययन की अवधि समाप्त होने पर परीक्षा होती है। इस प्रकार प्राप्त की गई डिग्री सुप्रसिद्ध 'मास्टर्स डिग्री' के बराबर होती है। . . . विदेशी विद्यार्थियों में ५० प्रतिशत से भी अधिक शिक्षार्थी वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों का अध्ययन करते हैं। लगभग २० प्रतिशत विद्यार्थी मेडिकल विषयों में प्रशिक्षण लेते हैं। पहले चन्द वर्षों से अफ्रीका और एशिया के नवोदित राज्यों ने कृषि, अर्थ-शास्त्र, खदान और शिक्षा सम्बन्धी विषयों में गहरी दिलचस्पी दिखानी शुरू की है, क्योंकि इन राज्यों के राष्ट्रीय नवनिर्माण में इन विषयों के विशेषज्ञों की बहुत आवश्यकता है। जर्मन जनवादी गणतंत्र में इन विषयों में प्रशिक्षण देने के कई विश्व प्रसिद्ध संस्थान हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में मध्यम कोटि के तकनीकी प्रशिक्षण के भी अनेक संस्थान हैं। इन संस्थानों में दो या तीन वर्षों के अन्दर ही, इंजीनियरी इत्यादि जैसे विषयों में बहुत अच्छे विशेषज्ञ तैयार किये जाते हैं। कम अवधि में तकनीकी क्षेत्रों में विशेषज्ञ तैयार करने वाले इन संस्थानों ने एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमरीका के नवोदित राज्यों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। इन राज्यों में ऐसे विशेषज्ञों की बहुत कमी है। जर्मन जनवादी गणतंत्र में इस तरह के १८० संस्थान हैं। इनको इंजीनियरी अथवा तकनीकी स्कूलों का नाम दिया गया है। इनमें से कई स्कूलों ने विश्वप्रसिद्धि प्राप्त की है, जैसे मिट्टवाइडा का विद्युत इंजीनियरी स्कूल, लाइपज़िग का इंजीनियरिंग एवं मुद्रणकला स्कूल, हाल्ले का संयन्त्र सुरक्षा तकनीकी स्कूल (प्लान्ट प्रोटेक्शन टेकनिकल स्कूल), स्वीकाऊ का ख[illegible]न एवं इंजीनियरी स्कूल, कार्ल मार्क्स स्टा[illegible] स्थित वस्त्र-उद्योग इंजीनियरी स्कूल, येना स्थित सूक्ष्म-यन्त्र तकनालोजी का इंजीनियरी स्कूल और जाइरस कारखाना इत्यादि।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

भारत में दफतरी मशीनों की प्रदर्शनी

एच. पी. वोइडा | क्षेत्रीय व्यापार-दूतावास बम्बई का वाणिज्य सलाहकार

जर्मन जनवादी गणतंत्र की एक सुप्रसिद्ध विदेश व्यापार संस्था 'ब्यूरोमाशीनेन-एक्सपोर्ट' ने अपने भारतीय एजेंटों 'मेसर्स ब्ल्यू स्टार इंजीनियरिंग कं. प्राइवेट लिमिटेड' के सहयोग से, भारत में अपनी दफ्तरी मशीनों की कई प्रदर्शनियां आयोजित कीं।... प्रथम प्रदर्शनी ७ अप्रैल, १९६५ के दिन बम्बई में उद्‌घाटित हुई और यह बहुत लोकप्रिय रही। दूसरी प्रदर्शनी मई मास में दिल्ली में हुई।

इन प्रदर्शनियों में दिखाई गई ज. ज. ग. की दफ्तरी मशीनों से इस बात का साफ पता चल जाता है कि इन मशीनों के बनाने में ज. ज. ग. ने पिछले १५ वर्षों में आश्चर्य-जनक उन्नति की है। इसके अलावा भारतीय ग्राहकों के सामने यह संभावना भी आई कि वे अपने काम में इन वैज्ञानिक यंत्रों का उपयोग करके इसको अधिक व्यापक, सुव्यवस्थित और मशीनोन्मुख बना सकते हैं। ज.ज.ग. की प्रदर्शित दफ्तरी मशीनों में से कुछ उल्लेखनीय मशीनें ये थीं :

ओपटिमा टाइपरायटर : इन टाइपरायटरों का की-बोर्ड अंग्रेजी और हिन्दी में है जो भारत सरकार द्वारा अनुमोदित है।

सोएमट्रान : ये बिजली से काम करने वाले टाइपरायटर हैं। इसी वर्ष के फरवरी मास में दिल्ली में आयोजित 'इण्टरनेशनल चैम्बर्स आफ कामर्स' के सम्मेलन में इन टाइपरायटरों का बहुत और सफल उपयोग हुआ।

सोएमट्रान : गणक

सोएमट्रान : गणना-यंत्र

आस्कोटा : जोड़ने और गणना की मशीनें

सोएमट्रान : बीजक बनाने की मशीनें

सैक्यूरा : रोकड़ बहियां

सन् १९६० से ये सभी दफ्तरी मशीनें भारत में आयात की जा रही हैं जर्मन जनवादी गणतंत्र से, और अपनी योग्यता और गुणों के कारण सरकारी दफ्तरों, औद्योगिक एवं वाणिज्य उद्यमों, बैंकों, बीमा कम्पनियों और अन्य संस्थानों में इनका व्यापक प्रयोग हो रहा है।

इन यन्त्रों की उक्त प्रदर्शनियों में, ज.ज.ग. ने भारत में आस्कोटा नामक स्वतः चालित गणना यंत्र जैसी कुछ नवीन दफ्तरी-मशीनें सहयोग से बनाया है। इसी प्रदर्शनी में एक गोदरेज-ओपटिमा हिन्दी टाइपरायटर आकर्षण का विशेष केन्द्र बना। यह हिन्दी टाइपरायटर भी भारत में तैयार होकर जल्द ही बाजार में आयेगा।

पिछले १५ वर्षों में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की इन दफ्तरी मशीनों के निर्यात में सात गुना वृद्धि हुई है। इस उद्योग के कुल
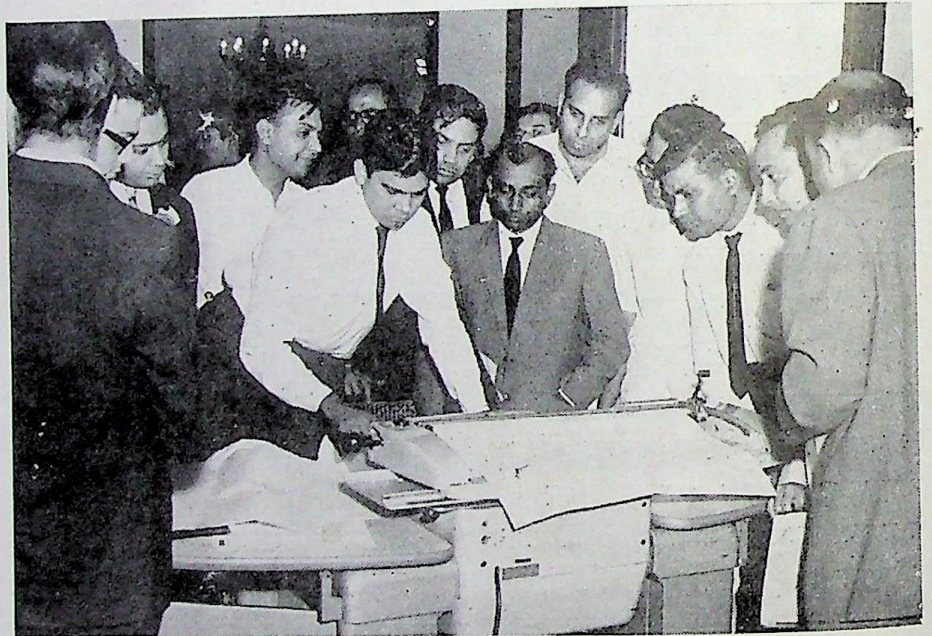
बम्बई की प्रदर्शनी में लोगों ने दफतरी मशीनों में गहरी दिलचस्पी दिखाई

पहली बार प्रदर्शित कीं। यह मशीनें गणना और हिसाब-किताब के तरीकों को आसान और सुव्यवस्थित करने के अलावा १० अंकों को १० अंकों से, आंख की एक झपकी के समय में गुणा करती हैं।

बम्बई की प्रदर्शनी में, भारत में बनाया गया एक ओपटिमा अंग्रेजी टाइपरायटर, पहली बार प्रदर्शित हुआ था। यह टाइपरायटर भारत की गोदरेज कम्पनी ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की एरफूर्ट की एक फर्म के

उत्पादन का ९० प्रतिशत भाग दुनिया के ८५ देशों को निर्यात किया जाता है।

भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच दीर्घकालीन व्यापार-संधि हुई है। इस संधि में उल्लिखित व्यापार वस्तुओं में दफ्तरी मशीनें भी शामिल हैं। वस्तुओं का भुगतान भारतीय मुद्रा, अर्थात रुपयों में होता है।...जर्मन जनवादी गणतंत्र अधिक से अधिक दफ्तरी मशीनें भारत को निर्यात करने में समर्थ और इच्छुक है।

प्लाउएन का लेस
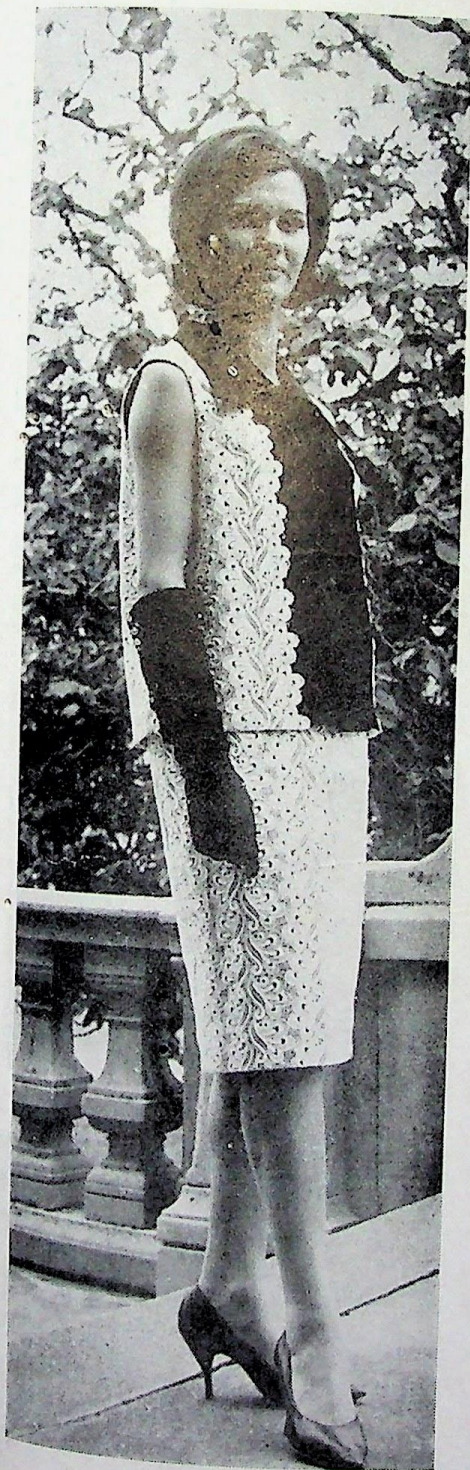
लेस—अर्थात् जालीदार कपड़ा, दुनिया के प्रत्येक देश की औरत का मन मोह लेता है। जालीदार कपड़े की सुन्दरता और आकर्षण ही इस बात का कारण है। इस कपड़े से नारियां तरह तरह के पहनावे ब्लाउज़ आदि बनाती हैं, इसके अलावा लेस का फीता या गोटा वेशभूषा को सजाने और सुन्दर बनाने के काम भी आता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्लाउएन नामक स्थान लेस उत्पादन का विश्वप्रसिद्ध केन्द्र है। यहाँ का लेस सौन्दर्य, गुण और विविधता के लिये विश्वप्रसिद्ध है और यह पेरिस, मास्को, न्यूयार्क अथवा मेलबोर्न जैसे दुनिया के अनेक नगरों में अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

ज. ज. ग. के इस प्लाउएन नामक क़स्बे में जालीदार कपड़ा (लेस) तैयार करने की १०० से अधिक फैक्ट्रियाँ हैं। इनमें से कुछ राष्ट्रीय स्वामित्व वाली हैं, कुछ गैर सरकारी, कुछ निजी स्वामित्व, और कुछ सहकारिता के अन्तर्गत चलती हैं। लेस तैयार करना प्लाउएन की लगभग सौ वर्षों की विरासत है। यहाँ के एक इंजीनियर ज़ाल द्वारा काढ़ने की स्वचालित मशीन का आविष्कार करने के बाद लेस उत्पादन उद्योग में असली उभार पैदा हुआ। .. वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ तक भी लेस उद्योग एक हस्तकला ही थी। लेकिन आज जर्मन जनवादी गणतंत्र के लेस-उत्पादक केन्द्रों, जैसे प्लाउएन, आउरबाख, ओयलस्निट्ज़, सीराउ, ट्रएन लाउटरवाख और फाल्केन्स्टाइन में, २००० से अधिक यन्त्रों का प्रयोग होता है। इन यन्त्रों में सबसे बड़ा यन्त्र १५ गज़ चौड़ा है।

जालीदार कपड़े का निर्यात करने वाली सबसे बड़ी फर्म है, वेब प्लाउएनेर स्पिट्ज़े। इसमें १,१०० लोग काम करते हैं। सन् १९५३ की तुलना में, इस फर्म ने (सन् १९६३ में) सात गुणा अधिक लेस निर्यात की। यह फर्म, अपने नाना प्रकार के लेस, दुनिया के ४६ देशों को निर्यात करती है। समाजवादी देशों से इतर जो देश प्लाउएन के शानदार लेस के खरीदार हैं उनके नाम हैं: स्कैन्डिनेविया के देश, आस्ट्रेलिया, जापान, न्यूज़ीलैण्ड, अमरीका, ग्रीस, इटली, बेलजियम, ब्रिटेन, अरब गणराज्य, सीरिया, नाइजीरिया और गिनी।

प्लाउएन लेस के कपड़ों की शौकीन औरतों में अग्रगण्य हैं अन्तरिक्ष यात्रा की प्रथम महिला-नाविक श्रीमती वालनटीना तेरिश्कोवा - निकोलायेवा, और विश्वप्रसिद्ध इटालियन अभिनेत्री सोफिया लोरेन।

इस जालीदार कपड़े को आयात करने वाले देश, लेस को नाना प्रकार से इस्तेमाल करते हैं। वेशभूषा के अतिरिक्त लेस से, खिड़कियों तथा दरवाज़ों के पर्दे आदि भी बनते हैं। सन् १९६४ के शरद्कालीन लाइपज़िग व्यापार मेले में जालीदार कपड़े की बिक्री सन् १९५६ के कुल सालाना उत्पादन से भी ज्यादा थी।

भारत – ज. ज. ग. निर्माण के सहयोगी

मई मास में, मद्रास नगर में, ओरवो (ORWO) फिल्मों एवं उत्पादनों की प्रदर्शनी हुई, जिसका उद्‌घाटन मद्रास के मुख्य मंत्री, श्री भक्तवतसलम ने किया (देखिये दाईं तरफ का चित्र)।

ऊपर के चित्र में : दाईं से बाईं ओर हैं : श्री ए. वी. मय्यप्पन (ओरवो फिल्म ईस्टर्न यूनिट के प्रतिनिधि), मुख्य मंत्री, श्री भक्तवतसलम् और मद्रास में क्षेत्रीय व्यापार-दूतावास के प्रतिनिधि, डा. फाउलवेट्टर।

नीचे के चित्रों में : श्री भक्तवत्सलम्, श्री कामराज नाडर (कांग्रेस के प्रधान), डा. फाउलवेट्टर और श्री मय्यप्पन प्रदर्शनी का अवलोकन कर रहें हैं।
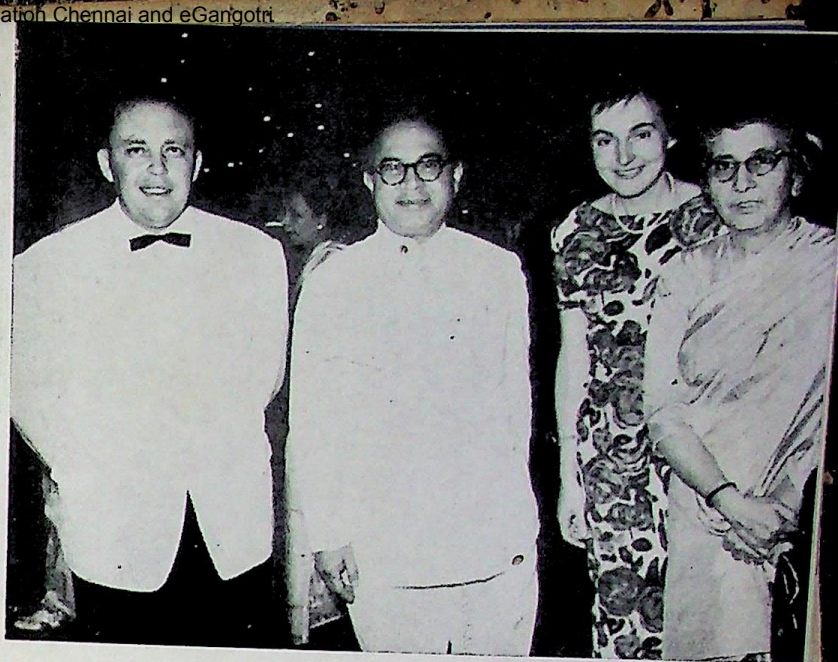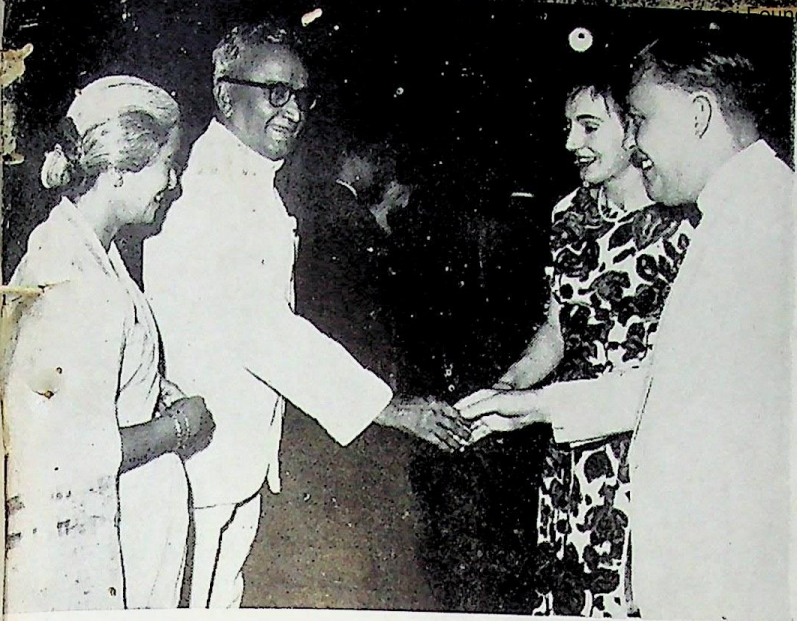
फासिस्तवाद से मुक्ति की २०वीं जयन्ती के अवसर पर, भारत स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्त बोट्टगर ने, ७ मई के दिन अपने आवास पर, एक स्वागत-समारोह का आयोजन किया।

ऊपर, बायें चित्र में : श्री तथा श्रीमती बोट्टगर, भारतीय शिक्षा मंत्रालय में शिक्षा के राज्य मंत्री, श्री आर. एम. हज़रनवीस का स्वागत कर रहे हैं।...

ऊपर, दायें चित्र में : श्री बोट्टगर, विज्ञान एवं उद्योग अनुसन्धान परिषद् के महा निदेशक, डा० हुसैन ज़हीर के साथ; **और बीच के चित्र में :** भारत के भूतपूर्व तेल मंत्री. श्री केशवदेव मालवीय के साथ।

नीचे, बायें चित्र में : मद्रास में, ज. ज. ग. व्यापर-दूताव स के क्षेत्रीय प्रतिनिधि डा. फाउल-वेट्टर और श्री ब्लूम, मद्रास के शहीद स्मारक पर, ८ मई के दिन श्रद्धा के फूल चढ़ा रहे हैं।

नीचे, द.यें चित्र में : भारतीय वित्त मत्रालय में योजना मंत्री, श्री बी. आर. भगत, ज. ज. ग. की दफतरी मशीनों में काफी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। ज.ज ग. की इन मशीनों की प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री भगत ने हाल ही में किया नई दिल्ली में। उनके साथ खड़े हैं. श्री कूर्ट बोटटगर और श्री लेमनित्सर ज. ज ग. के 'वाणिज्य सलाहकार
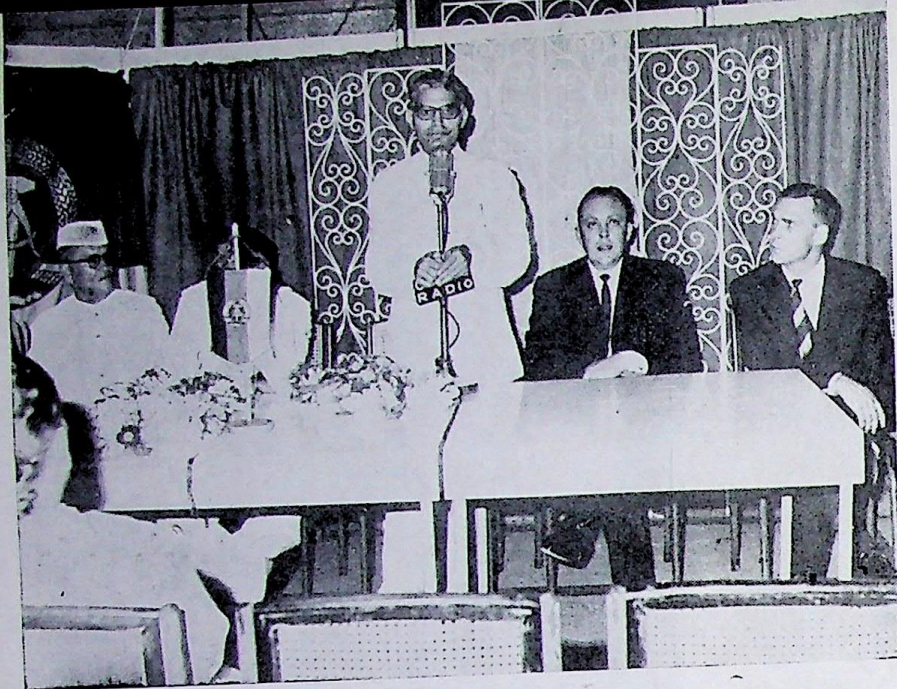
डा. रफीक़ ज़कारिया, प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं। उनके बाईं ओर हैं श्री कूर्ट बोट्टगर

मंत्री द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन

२५ मई के दिन, महाराष्ट्र के नगर-विकास मंत्री, डा. रफीक ज़कारिया ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र से संबन्धित "जर्मन जनवादी गणतंत्र के १५ वर्ष" नामक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। यह प्रदर्शनी, ज. ज. ग. के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास की झांकी प्रस्तुत करती थी। इस उद्घाटन समारोह में बम्बई के अनेक वरिष्ठ तथा सम्मानित अतिथि और नागरिक पधारे थे, जिनमें महाराष्ट्र की विधान परिषद् के उपाध्यक्ष श्री वी. एन. देसाई और बम्बई नगर के महापौर, श्री माधवन भी शामिल थे।

श्री ज़कारिया ने अपने उद्घाटन भाषण में उस खुशहाल और सुखद भविष्य का उल्लेख किया जिसके निर्माण में जर्मन जनवादी गणतंत्र संलग्न है। इस संदर्भ में उन्होंने यह भी कहा कि भारत, अफ्रीका और एशिया की जनता को भी वह सुखद भविष्य अवश्य प्राप्त होगा। ज. ज. ग. इसके लिये एक उदाहरण है। डा. ज़कारिया ने ज. ज. ग. को, १५ वर्ष में उसके अद्भुत विकास के लिए बधाई दी।

इस अवसर पर एकत्रित सम्मानित जनों को, और बाद में एक प्रेस सम्मेलन में भी, भारत स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्ट बोट्टगर ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र की नीति पर सविस्तार प्रकाश डाला।

उक्त प्रदर्शनी, बम्बई से पहले मद्रास, त्रिवेन्द्रम और नई दिल्ली में भी प्रदर्शित हुई थी।
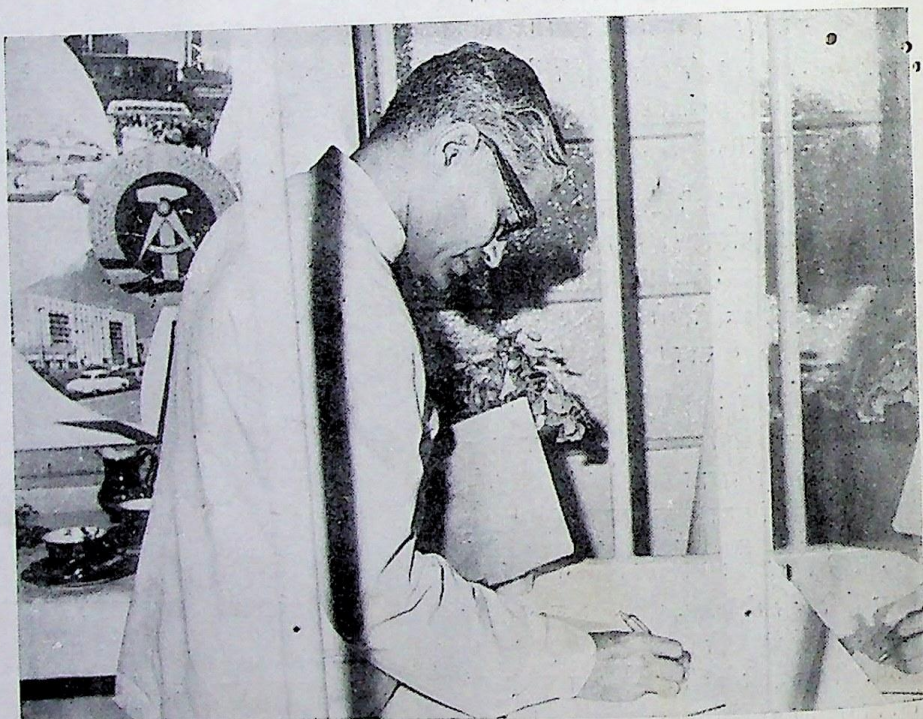
डा. ज़कारिया, अतिथि रजिस्टर पर हस्ताक्षर कर रहें हैं

१० अप्रेल के दिन पूना में "आज का भारत" नामक प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ, जो ६ हफ्तों तक चली। इस प्रदर्शनी में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के "उपभोक्ता सहकारी संघ" को भी जगह मिली थी। इस 'संघ' ने अपने १५ चित्रों के ज़रिये, ज. ज. ग. में सहकारी आन्दोलन का विकास दिखाया था। इस अवसर पर, ज. ज. ग. के व्यापार दूतावास की बम्बई शाखा के श्री बोइसे (बायें से पांचवें) पूना विश्वविद्यालय के उप कुलपति, श्री एन. वी. गाडगिल (बायें से छठे) और पूना के महापौर, श्री के. वी. परदेशी (बायें से सातवें) से मिले

१७ वर्षीय गणितज्ञ

हांस रूकर

कार्ल मार्क्स स्टाड्ट टेकनिकल कालेज के गणित संस्थान के एक शांत कमरे में १७ वर्षीय गुंटर बोनिट्स मेरे सामने बैठा है। मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूं कि इतनी कम उम्र का छात्र टेकनिकल कालेज के प्रथम सत्र में कैसे प्रवेश पा गया, क्योंकि नियमनुसार १८ वर्ष से कम अवस्था वाले छात्रों को मैट्रिक की परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाती और इसी कारण वे ऐसे कालेजों में भी प्रवेश नहीं पा सकते।

"सच पूछिये तो इसमें कोई खास बात नहीं है। हमारे देश में यह बड़ी सामान्य सी बात है कि युवाजनों को हर तरह की सुविधाएं और सहयोग दिया जाता है।" गुंटेर बोनिट्स कहता है। मुझे इस विनम्र उत्तर से संतोष नहीं हुआ। मैं सोच रहा था कि यह असाधारण विकास कैसे शुरू हुआ और यह उसे कहां ले जायगा। छात्र थोड़ी देर तक सोचता है, फिर अपने युवा जीवन की कहानी सुनाता है।

कार्ल मार्क्स स्टाड्ट से, जो एक बड़ा औद्योगिक केन्द्र है, थोड़ी ही दूर और पर्वतों में रोयेडलिट्स एक छोटा सा गांव है। गुंटेर उस गांव के स्कूल में पढ़ने गया तभी उसे अपने गणित प्रेम का पता लग गया। "पहले ही दिन से मुझे अंकों में विशेष आनन्द मिलने लगा। मेरे शिक्षक को भी शीघ्र ही इसका पता चल गया और वे मुझे पाठ्यक्रम से बाहर के छोटे छोटे सवाल हल करने के लिए देने लगे। बाद में, मैं स्कूल की ही गणित मण्डली का सदस्य बन गया। इस विषय के सब से तेज विद्यार्थी ही इसके सदस्य बन सकते थे और अपने शिक्षकों की सहायता से हम पाठ्यक्रम के अलावा अपने विषय का अधिकाधिक ज्ञान अर्जित करने लगे। मैं खुद कई बार इस अध्ययन-मण्डल का इन्चार्ज बना। इस अध्ययन के फलस्वरूप प्रत्येक वर्ष मैं अपनी कक्षा में गणित में सब से अधिक अंक पाता।"

किन्तु गणित के पाठ्येतर अध्ययन के लिए गुंटेर को एकमात्र यही अवसर नहीं मिला। वह अक्सर गणित प्रतियोगिताओं में भी भाग लेता। इन प्रतियोगिताओं में पूरे एक क्षेत्र के प्रतिभावान छात्र भाग लेते हैं और उन्हें उनकी अवस्था के अनुसार गणित के प्रश्न हल करने के लिए दिये जाते हैं। गुंटेर कई बार कार्ल मार्क्स स्टाड्ट जिले का चैम्पियन बना और दसवीं कक्षा में पढ़ते हुए वह पूरे जर्मन जनवादी गणतंत्र का चैम्पियन बन गया। आश्चर्य की बात नहीं कि गणित में गुंटेर की प्रतिभा के प्रति कार्ल मार्क्स स्टाड्ट टेकनिकल कालेज के रेक्टर तथा गणित संस्थान के डाइरेक्टर प्रोफेसर डाक्टर जेकेल का ध्यान आकृष्ट हुआ। उनकी सिफारिश पर गुंटेर गणित संस्थान के एक अध्ययन मण्डल का सदस्य बना लिया गया जहां विशेष योग्यता वाले छात्रों को उनके पाठ्यक्रम से बाहर उच्चतर गणित के मूल तत्वों का ज्ञान कराया जाता है। "मुझे यह विचार बहुत पसन्द आया क्योंकि इससे मैं अपने प्रिय विषय को अधिकाधिक समय दे सकता था।" गुंटेर ने कहा, "इस प्रकार मैंने ज्ञान की एक ऊँची सीढ़ी पर कदम रखा।"

अपने दसवें वर्ग तक के स्कूल में गुंटेर ने न केवल गणित में, बल्कि अन्य विषयों में भी सर्वोच्च अंक प्राप्त किये थे। कुछ विषय सरल नहीं थे। फिर भी उसने इतनी अधिक मेहनत की कि उनमें भी उसे अधिकार प्राप्त हो गया। और उसकी इसी लगन को देखते हुए मैट्रिक की परीक्षा पास किये बिना ही दसवीं कक्षा की पढ़ाई समाप्त होने पर उसे टेकनिकल कालिज में भर्ती कर लिया गया। उसके लिए एक विशेष पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया ताकि उस पर अधिक बोझ न पड़े। फिर भी गुंटेर इन सब सीमाओं को पसन्द नहीं करता और सभी विषयों की पढ़ाई में उपस्थित रहता।

गुंटेर बोनिट्स का पिता एक पेन्शनयाफ्ता वृद्ध है। "पढ़ाई का कोई शुल्क नहीं लगता और हर छात्र की भांति मुझे १९० मार्क मासिक मिलते हैं—जो यदि मैं अच्छी योग्यता प्रदर्शित करूं तो बढ़ भी सकते हैं।"

"पढ़ाई समाप्त करने के बाद तुम क्या करना चाहते हो?"
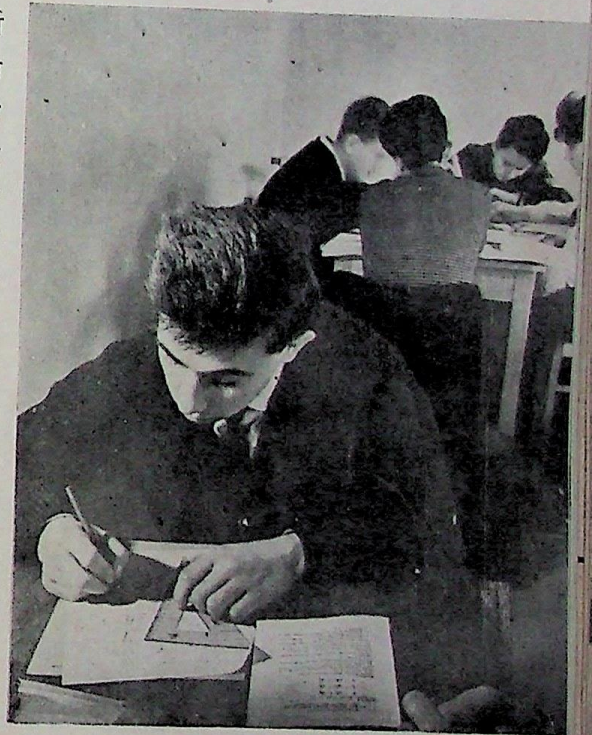
अध्ययन में तल्लीन गुन्टेर बोनिट्स

"मेरा पहला लक्ष्य तो गणित में उपाधि प्राप्त करना है। उसे प्राप्त कर लेने के बाद मेरे सामने सारी दुनिया खुली पड़ी है। जर्मन जनवादी गणतंत्र जैसे उच्च विकसित औद्योगिक देश में गणितज्ञों की भारी मांग है। उसके बारे में तो मैं चिन्तित ही नहीं हूं। क्योंकि मेरा भविष्य सुरक्षित है।" गणित संस्थान के एक अध्यापक डाक्टर श्नाइडर भी

(शेष पृष्ठ१९ पर)।

तथ्य और आंकड़े

बर्लिन के लिये नया भवन निर्माण कार्यक्रम

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन का, सन् १९६५ का भवन-निर्माण कार्यक्रम बहुत बड़ा तथा व्यापक है। इस कार्यक्रम का अधिकांश भाग बर्लिन के ब्रान्डेन-बुर्ग और स्ट्राउसबर्गर चौक से संबन्ध रखता है।

सन् १९४९ से अब तक शहर के आंचल पर ६०,००० से भी अधिक फ्लैट तामीर किये गये। बर्लिन के भवन निर्माण उद्योग का लगभग एक तिहाई भाग रिहायशी मकानों की तामीर में लगा हुआ है। सन् १९६५ की योजना के अन्तर्गत, बर्लिन में ५,३०० से ज़्यादा नये फ्लैट तैयार होंगे। पिछले वर्षों में सालाना १०,००० रिहायशी फ्लैट तामीर किये गये।

प्रति परिवार पर एक रेडियो

जर्मन जनवादी गणतंत्र में ३० लाख परिवारों में—अर्थात लगभग ५० प्रतिशत परिवारों में—कम से कम एक एक रेडियो है।

सन् १९५२ में ज. ज. ग. में टेलिविजन सेवा शुरू हुई। तब से लेकर अब तक ८०० टेलिविजन नाटक और १२० टे. वि. फिल्में तैयार करके लोगों को टेलिविजन पर दिखायी गयीं। ज. ज. ग. के २५ टे. वि. केन्द्र सीधे बर्लिन से सजीव संचारण लेते हैं।

यहां का रेडियो तथा टे. वि. उद्योग अपने कुल उत्पादन का लगभग १५ प्रतिशत भाग, दुनिया के ६० देशों को निर्यात करता है।... औसत सालाना उत्पादन लगभग १० लाख रेडियो और ६५०,००० टे. विजन हैं।

२५ देशों के लिये एक्स-रे सामान

ड्रेस्डेन (ज. ज. ग.) का एक सरकारी कारखाना, संयुक्त अरब गणराज्य को १५ एक्स-रे एकांश और अस्पतालों से संबंधित अन्य सामान निर्यात करेगा। यह कारखाना सन् १९०४ से एक्स-रे सामान तैयार करता है, और इसमें ४,००० श्रमिक काम करते हैं।... सीरिया भी इस साल ड्रेस्डेन से यह सामान आयात करेगा।

आजकल जर्मन जनवादी गणतंत्र दुनिया के २५ देशों को एक्स-रे सामान निर्यात करता है।

५०० विशेष पुस्तकालय

बर्लिन, जो दूसरे महायुद्ध में ध्वस्त हुआ था, अब पुनर्निर्मित हुआ है। इसमें फिर से ५०० विशिष्ट पुस्तकालय लोगों को ज्ञान गंगा में नहलाते हैं। यहां १२५ सार्व-जनिक पुस्तकालय भी हैं, जिनमें कुल ८००,००० पुस्तकें हैं। युद्ध के पहिले बर्लिन में केवल ११४ सार्वजनिक पुस्तकालय थे जिनमें से दो तिहाई बमबारी से नष्ट हुये थे। यहाँ का राष्ट्रीय पुस्तकालय दुनिया के ७० देशों के पुस्तकालयों के साथ पुस्तकों, दस्तावेज़ों आदि का विनिमय करता है।
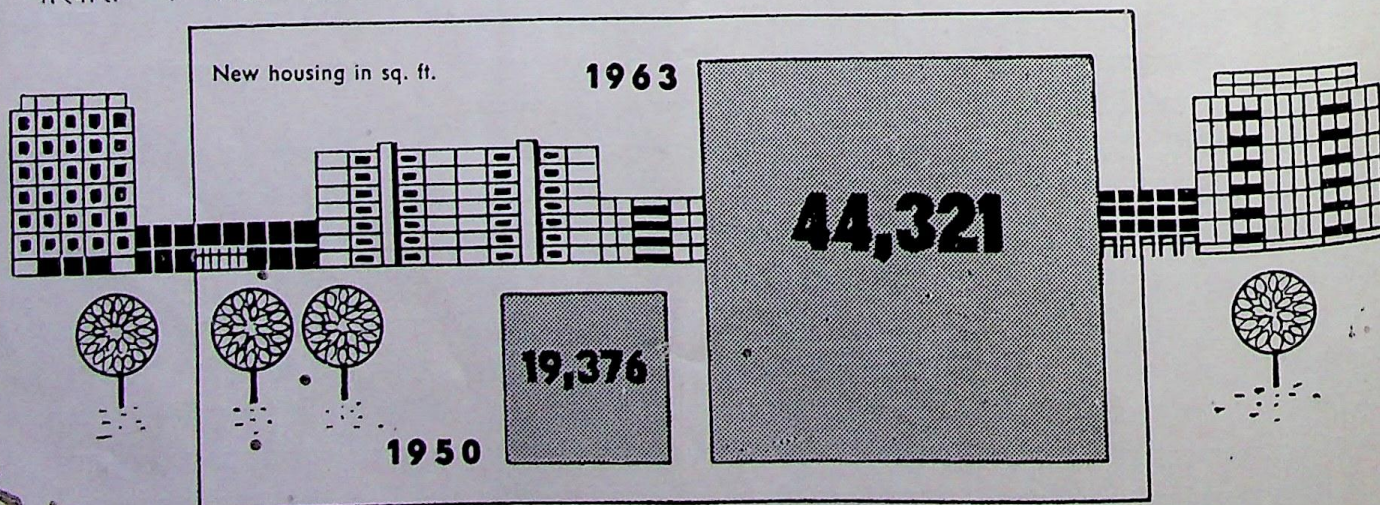
४१७ फैक्ट्रियों का निर्यात

ज. ज. ग. की औद्योगिक क्षमता

जर्मन जनवादी गणतंत्र दुनिया के १० बड़े औद्योगिक राज्यों में एक है। सन् १९५० से लेकर सन् १९६३ तक इसके औद्योगिक उत्पादन में २४५ प्रतिशत की वृद्धि हुई। अनुमान है कि सन् १९७० तक यह उत्पादन ५०० प्रतिशत बढ़ जायेगा।

ज. ज. ग. में उद्योग की उन शाखाओं को विकसित किया जा रहा है जो टेकनालोजीय क्रांति और राष्ट्रीय अर्थतंत्र को मजबूत करने के लिये अनिवार्य है। इसका परिणाम यह है कि उद्योग की सभी शाखायें समान रूप से विकसित नहीं की जा रही हैं। इस प्रकार से पूर्ण अनेक, विशिष्ट उत्पादन-विधियां बेचता है। इनमें उल्लेखनीय हैं इलेक्ट्रोनिकी, रासायनिक इंजीनियरी और रासायनिक उद्योगों के उत्पादन एवं संयन्त्र। इसके अलावा, उक्त क्षेत्रों में ज. ज. ग., अन्य देशों के साथ निकटस्थ तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करने में दिलचस्पी रखता है।

इस प्रकार के विशिष्ट औद्योगिक विकास का दूसरा पहलू यह है कि ज.ज.ग. को ऐसे यंत्रों और उत्पादनों की आवश्यकता है जिनको वह स्वयं उत्पन्न नहीं करता है। परिणामस्वरूप आयात निर्यात और विदेश व्यापार की दृष्टि

टेमा में, ज. ज. ग. के मुद्रण यंत्रों से सुसज्जित घाना का सरकारी छापाखाना

के औद्योगिक विकास के लिये—अर्थात् कुछ शाखाओं में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिये अन्य देशों का योजना बद्ध सहयोग प्राप्त करना अनिवार्य है।

कुछ औद्योगिक शाखाओं में विशेषज्ञता प्राप्त करने की स्थिति ने ज.ज.ग. को वाणिज्य एवं व्यापार की दृष्टि से काफी आकर्षक साझीदार बना दिया है। यह राज्य, अन्य राज्यों को उत्पादन और वैज्ञानिक दृष्टि से, यह अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन जर्मन जनवादी गणतंत्र के लिये बहुत महत्व रखता है।

पिछले कई वर्षों में ज.ज.ग. के विदेश व्यापार में वृद्धि की दर, विश्व व्यापार में औसत वृद्धि से अधिक रही है। ज.ज.ग. के कुल निर्यात में, सन् १९५५–१९६३ में १२ प्रतिशत वार्षिक बढ़ौती हुई, जबकि इसी अवधि में विश्व व्यापार की औसत वृद्धि ८ प्रतिशत रही। अनुमान है कि सन् १९७० तक ज. ज. ग. के निर्यात में ८ प्रतिशत वार्षिक वृद्धि होती रहेगी।

विश्व की समाजवादी मण्डी में ज.ज.ग. सबसे अधिक मशीनें सप्लाई करने वाला राज्य बन चुका है। पोलैण्ड की लिगनाइट खानों में, रूमानिया की सरकंडा-शोधक कारखानों, हंगरी के बिजली पैदा करने वाले कारखानों और सोवियत संघ के सीमेन्ट उत्पादन कारखानों में मुख्य रूप से जर्मन जनवादी गणतंत्र के ही यंत्र इस्तेमाल होते हैं।

सन् १९५४ से लेकर सन् १९६४ तक, जर्मन जनवादी गणतंत्र की इनवेस्ट-एक्सपोर्ट नामक विदेश-व्यापार संस्था ने २० देशों को ४७१ मुकम्मल और तैयार औद्योगिक संयन्त्र (प्लांट) सप्लाइ किये। संयुक्त अरब गणराज्य में जर्मन जनवादी गणतंत्र ने ३३ फैक्टरियां लगाने के लिये मशीनें तथा यंत्र उपलब्ध किये हैं।...सन् १९७० तक मुद्रण यन्त्रों का निर्यात तीन गुना बढ़ जायगा। इस समय मुद्रण उद्योग का ७० प्रतिशत उत्पादन अन्य देशों को निर्यात किया जा रहा है।

उत्पादन-प्रक्रियाओं और लाइसेन्सों के क्रय-विक्रय का महत्व भी बहुत बढ़ रहा है। हमारे आर्थिक सहयोग का एक महत्वपूर्ण अंग है तकनीकी-ज्ञान प्रदान करना।... सन् १९६२ तक जर्मन जनवादी गणतंत्र ने सोवियत-संघ को २,१८० उत्पादन-प्रक्रियायें या नुस्खे बेचे थे और बदले में, उसने सोवियत संघ से २,५५० लाइसेंसें या नुस्खे प्राप्त किये थे। इसी प्रकार जर्मन जनवादी गणतंत्र ने 'मालिमो' नामक अपनी उत्पादन-विधि अमरीका और दूसरे पश्चिमी देशों को बेची, और ब्रिटेन, फ्रांस आदि देशों से कुछ विशिष्ट रासायनिक तथा अन्य उत्पादन विधियों की लाइसेन्सें खरीद लीं।

ये सभी तथ्य जर्मन जनवादी गणतंत्र के अत्यन्त दृढ़ औद्योगिक आधार एवं आर्थिक क्षमता के स्पष्ट प्रमाण हैं।

चिट्ठी-पत्री

प्रिय महाशय,

आपके महान राष्ट्र की बातें जानने की मधुमयी अभिलाषा हमारे हज़ारों पाठकों के चित्त में उठ रही हैं । आप इसलिए अपना मासिक पत्र **सूचना पत्रिका** हमारे लिए नियमित रूप से भेज दें तो हम आपके बड़े आभारी होंगे । हमारे पाठकों की ओर से पुनः हमारी विनती है कि आप जल्दी ही उसे भेज दें ।

मंत्री
विज्ञान दायिनी वाचनालय
एवं पुस्तकालय,
कुट्टिक्काकम,
केरल

महोदय,

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास से प्रकाशित **'सूचना पत्रिका'** का मई अंक मुझे बड़ा ही रुचिकार प्रतीत हुआ । बेगुनाह शहीदों से चित्रित पत्रिका के मुख्य पृष्ठ ने मुझे निर्निमेष बना कर अपने अंक में निमग्न कर लिया । फासिस्टवाद से मुक्ति की २० वीं वर्षगांठ मैंने भी बड़े चाव से मनायी । उस पुण्य स्मृति के लिए मेरी श्रद्धांजलि प्रेषित है ।

'पत्रिका' आद्योपान्त कर जाने पर इसके प्रत्येक मानवीय पहलू जगमगाते से दीख पड़ने लगे । विगत १५ वर्षों में ही जर्मन-जनवादी गणतंत्र संसार का सर्वोपरि औद्योगिक राज्य बन गया यह आश्चर्य ही नहीं अपितु प्रेरणाप्रद भी है । आत्मनिर्भरता का यह सबक है । मेघाछन्न आकाश पवन प्रयास से ही स्वच्छ बनता है । शिक्षा निर्देश के लिये यह हर राष्ट्र को अपेक्षित है । बधाई ।

प्रभुदयाल
प्राच्य भारती कार्यालय
भागलपुर (बिहार)

प्रिय महोदय,

कलकत्ता की एक लाइब्रेरी में **सूचना पत्रिका** पढ़ने का सौभाग्य मिला । मैं बचपन से ही जर्मनी के बारे में जानने की इच्छा रखता था । जर्मन भाषा पढ़ने का भी मेरा विचार है । इस विषय में मुझे सलाह दीजिये । कभी सुअवसर मिले तो वहां जाने का भी विचार है । आपकी 'सूचना पत्रिका' से आपके देश के बारे में जानने का मौका मिला । मैं आपकी 'पत्रिका' का ग्राहक बनना चाहता हूं । कृपया मुझे वार्षिक शुल्क लिखें ताकि मैं जल्दी भेज सकूं । अगले अंक से 'सूचना पत्रिका' भेजना शुरू कीजियेगा !

विनोद कुमार सिंह
प्रकृति निकेतन
कलकत्ता (पं. बंगाल)

संपादक महोदय,

मैं आपको धन्यवाद देता हूं, क्योंकि मुझे हर महीने नियमित रूप से **सूचना पत्रिका** मिल रही है । मेरे परिवार के सब सदस्य बड़े चाव से इसे पढ़ते हैं । कृपया मुझे लिखें कि जर्मन भाषा का जर्मन-हिन्दी शब्दकोष उपलब्ध है या नहीं । मैं जर्मन भाषा सीखना चाहता हूं । सुना है कि बड़ी कठिन भाषा है । आप मुझे जर्मन भाषा सीखने की सरल सुविधा बताने की मेहरबानी करें । आशा है कि आप मुझे निराश नहीं करेंगे ।

मैं फिर आप को धन्यवाद देता हूं क्योंकि मेरे मित्रों को भी 'सूचना पत्रिका' पढ़ने में दिलचस्पी है । मेरे घर 'सूचना पत्रिका' आती है । इस से तो मेरे मित्रगण भी पढ़ गये हैं ।

एच. बी. जोलापरा,
राजकोट (गुजरात)

एक पत्र संस्कृत में

श्री सम्पादक महोदय,

२० अप्रैल, १९६५ दिनांके प्रकाशित पत्रिकायां २२ पृष्ठे शर्म्मण्यदेशीयभाषाविदः चर्चा मुद्रिताऽसीत् । तदनुसारं निवेदये यत् साम्प्रतिकमान्यता प्राप्तस्य कस्यचन श्रीमतोदेशस्य भाषाविदः पुस्तकस्य नाम प्रेषयितुं किं शक्यते ? यदि तत् पुस्तकं भवती भाषायांचेत केवलं, किमहं भाषा-विषये द्वित्रान् प्रश्नान् प्रेषयितुं पारये ? एषां उत्तरं तत्पुस्तकानुसारं भवेत् । अहं भाषा विषये कतिचन प्रश्नेषु भवद्देशीय-विदुषां मन्तव्यं ज्ञातुमिच्छमि । आशासे-उत्तरेणानु-ग्रहिष्यतीति ।

भवतां कश्चित्
इन्दुप्रकाश उपाध्यायः
चमोली (उ. प्र.)

आदरणीय महोदय,

एक दिन नहर के किनारे टहलते हुये मुझको आपके सूचना विभाग से प्रकाशित **सूचना पत्रिका** का मुख पृष्ठ का एक फटा हुआ पन्ना मिला । उसको देख एवं पढ़कर मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ । मुझको देश-विदेश के विषय में ज्ञान प्राप्त करने का शौक है । चूंकि वह पृष्ठ फटा हुआ था इस कारण में विशेष जानकारी नहीं हासिल कर सका हूं । इसलिये यदि आप के यहां से कोई, 'पत्रिका' हिन्दी भाषा में प्रकाशित होती हो तो निम्न पते से भेजने का कष्ट करें । साथ ही साथ चंदा एवं मंगाने के नियम भी लिखें । पसंद आने पर अवश्य मंगा लूंगा ।

कृपया यह भी लिखें कि भारत की किस किस भाषा में यह 'पत्रिका' प्रकाशित होती है ।

सुरेश प्रताप सिंह
सरधुवा
बांदा (उ.प्र.)

गणितज्ञ...

(पृष्ठ १५ का शेष)

बातचीत में भाग ले रहे हैं। उनका कहना है--"हम गुंटेर को इसी संस्थान में एक वैज्ञानिक कार्यकर्ता के रूप में लेना चाहेंगे।"

यह एक ऐसे युवक की जीवन झांकी है जो अपनी मेहनत और प्रतिभा की बदौलत कालेज में निर्धारित वय-सीमा से ८ वर्ष पहले ही भर्ती कर लिया गया। फिर भी यह प्रश्न रह जाता है कि प्रतिभावान बालक बालिकाओं को दी जाने वाली विशेष सुविधाएं क्या केवल गुंटर बोनिट्स ऐसे छात्रों तक ही सीमित है--? इसलिए मेरा अंतिम प्रश्न डाक्टर श्नाइडर से है--"इस तरह की प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए कार्ल-मार्क्स स्टाड्ट टेकनिकल कालेज क्या करता है?" उनका उत्तर है--"हमारे गणतंत्र में विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभावान युवाजनों को आगे बढ़ाने की सारी व्यवस्था है। इसकी शुरूआत दसवें वर्ग तक के स्कूलों में अध्ययन मण्डलों और गोष्ठियों से होती है और इनका क्षेत्र विश्वविद्यालयों तथा कालेजों तक है। मैं अपने गणित संस्थान का नाम एक उदाहरण के रूप में ले रहा हूं। हमारे शिक्षक पायोनियर गृहों के युवाजनोंको भी अध्ययन में सहयोग देते हैं। हमने अपने अत्याधुनिक कम्प्यूटर सेन्टर में 'फ्रेडरिक एन्जेल्स उच्चतर माध्यमिक स्कूल' की एक विशेष कक्षा के छात्रों को काम करने की पूरी छूट दे रखी है। उस कक्षा के छात्र प्राविधिक गणितज्ञ बनाने की तैयारी करते हैं। कार्ल मार्क्स स्टाड्ट कालेज के गणितज्ञ थे।

२५ सर्वश्रेष्ठ छात्र एक विशेष अध्ययन गोष्ठी में शामिल किये जाते, हैं जिन्हें हमारे संस्थान में अतिरिक्त शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त कालेज की ११वीं और १२वीं कक्षा के गणित के छात्रों के लिए अलग-अलग विशेष वर्ग हैं। प्रत्येक कक्षा की २० छात्र-छात्राएं कालेज के अध्यापकों से शिक्षा प्राप्त करती हैं --और स्कूल लीविंग परीक्षा भी पास करती हैं। चूंकि ये कार्ल-मार्क्स स्टाड्ट ज़िले के अनेक नगरों और गांवों से आते हैं अतः हमारे एक छात्रावास में रहते हैं।"

अब प्रश्नों का समय नहीं रह गया, क्योंकि कुछ परेशान सा गुंटेर कहता है--"थोड़ी देर में मेरी कक्षा की पढ़ाई शुरू होने वाली है।

"अच्छा गुंटेर। हमारी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।"

निशस्त्रीकरण...

(पृष्ट ४ का शेष)

पश्चिमी जर्मनी : निःशस्त्रीकरण का विरोधी

लेकिन दुर्भाग्य की बात तो यह है कि पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य की सरकार ने ज.ज.ग. के उक्त प्रस्ताव को लगातार ठुकरा दिया है। इसके विपरीत पश्चिमी जर्मनी निरन्तर हथियार-बन्दी करता जा रहा है। परिणामस्वरूप, दो जर्मन राज्यों में निःशस्त्रीकरण का मामला उलझ कर रुक गया है।..यदि जर्मनी में, आंशिक निःशस्त्रीकरण भी हो, तब भी विकासशील देशों को काफी आर्थिक सहायता दी जा सकती है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में परमाणविक शस्त्रास्त्रों पर एक पैसा भी खर्च नहीं होता है। लेकिन पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य, अणु शस्त्रों पर कवजा करने की हर संभव कोशिश कर रहा है। यदि ज.ज.ग. के, दो जर्मन राज्यों द्वारा अणुशस्त्रीकरण के परित्याग के प्रस्ताव को मान लिया जाता, तो अणुशक्ति को शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिये इस्तेमाल किया जाता। यह एक विचारणीय और खतरे की बात है कि पश्चिमी जर्मनी, नाटो-सैनिक गुट की बहुदेशीय नाभिकीय सेना (मलटिलेटरल न्यूकलियर फोर्स) की प्रायोजनों पर २०० करोड़ डालर खर्च करना चाहता है।

६८ देशों के विद्यार्थी....

(पृष्ट ६ का शेष)

अपने शिक्षा संस्थानों में विदेशी विद्यार्थियों को दाखिला देने में जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है अफ्रो-एशियाई दोस्त मुल्कों के विद्यार्थियों को विभिन्न तकनीकी क्षेत्रों में विशेषज्ञ बनाकर उनके महान राष्ट्रीय निर्माण कार्य में सहयोग प्रदान करना। अध्ययन के दौरान विदेशी शिक्षार्थियों को उसी प्रकार की ट्रेनिंग और शिक्षा दी जाती है जो जर्मन जनवादी गणतंत्र के विद्यार्थी प्राप्त करते हैं। इस बात पर खास ज़ोर दिया जाता है कि विदेशी छात्र निश्चित अवधि में अपना प्रशिक्षण समाप्त करके स्वदेश लौटें और अपने देश के काम में हाथ बटायें।...यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य है कि आज तक ६० प्रतिशत से भी अधिक भारतीय विद्यार्थियों को, "अच्छे" और "बहुत अच्छे" कोटि के अंक मिले हैं।

विदेशी विद्यार्थियों को ज. ज. ग. के शिक्षा संस्थानों में जो स्नेह और घरेलू वातावरण मिलता है उससे वे बहुत प्रभावित होकर स्वदेश लौटते हैं। ...प्रत्येक विदेशी शिक्षार्थी को अपनी देश सरकार या जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार से वज़ीफा मिलता है जो उसके रहने सहने और पढ़ने लिखने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये काफी होता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, वहां के वैज्ञानिक, प्रोफेसर तथा अन्य बौद्धिक, और वहां की समस्त जनता एशिया और अफ्रीका के नवोदित राज्यों के राष्ट्रीय नवनिर्माण में गहरी हमदर्दी तथा रुचि रखते हैं। इस महान निर्माण में जर्मन जनवादी गणतंत्र हर प्रकार का सहयोग दे रहा है, और आगे भी देने के लिये तैयार हैं।

समाचार

भारत के लिये आटा पीसने की मिल

जर्मन जनवादी गणतंत्र का ड्रेस्डेन का एक सरकारी कारखाना भारत के सुप्रसिद्ध नगर कानपुर को आटा पीसने की एक मिल निर्यात करेगा। यह मिल हर रोज़, १५० टन आटा पीसने की क्षमता रखती है। ड्रेस्डेन का उक्त कारखाना, आज तक संयुक्त अरब गणराज्य, कोरिया, इराक आदि देशों के अलावा भारत को ऐसी मिलें निर्यात कर चुका है।

कानपुर को निर्यात की जाने वाली मिल ६५ प्रतिशत स्वचालित-पद्धति पर चलने वाली मिल है। कानपुर के कुछ इंजीनियर इस सिलसिले में आजकल ज. ज. ग. में बातचीत कर रहे हैं।

ड्रेस्डेन तकनीकी विश्वविद्यालय में दाखिले का अनुपात

जर्मन जनवादी गणतंत्र के आगामी वर्ष का शिक्षा-सत्र सितम्बर मास से शुरू हो जायेगा। इस सिलसिले में ड्रेस्डेन तकनीकी विश्वविद्यालय में १४७१ विद्यार्थियों को दाखला मिला है। १२,००० विद्यार्थियों के अलावा यह विश्वविद्यालय ५,००० व्यक्तियों को पत्र-विधि से भी प्रशिक्षण देता है। यह सारे यूरोप में अपनी तरह का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है।

सन् १९६३ के अन्त पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र के ७ विश्वविद्यालयों, ३९ उच्च शिक्षा संस्थानों और १५३ प्राविधिक कालिजों में २५६,००० व्यक्ति --अर्थात् प्रति १०,००० व्यक्तियों पर १५० व्यक्ति उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। इस संख्या में एक तिहाई औरतें हैं।

शिक्षा पर धन खर्च करने की दृष्टि से, जर्मन जनवादी गणतंत्र का चौथा स्थान है दुनिया में। विश्वविद्यालयों के लगभग ८६ प्रतिशत शिक्षार्थियों को, और प्राविधिक कालिजों में पढ़ने वाले लगभग ६५ प्रतिशत विद्यार्थियों को सरकारी वज़ीफे मिलते हैं। शिक्षा बिलकुल मुफ्त है। सभी विद्यार्थी सामाजिक बीमा व्यवस्था के अन्तर्गत बीमाशुदा हैं।... लगभग १०० देशों के ३,००० विदेशी विद्यार्थियों को यहां, अध्ययन की अच्छी सुविधायें उपलब्ध हैं।

जाइस्स फर्म ने एक और मुकदमा जीत लिया

स्विटज़रलैण्ड की फेडरल अदालत के न्यायाधीश ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र के येना स्थित विश्वप्रसिद्ध ज़ाइस्स कारखाने के ट्रेड मार्क को वैध तथा जायज़ करार दिया। इस फैसले से पश्चिमी जर्मनी की जाली ज़ाइस्स फर्म और इसके जाली ट्रेड मार्क को असली जाइस्स कारखाना स्वीकार करने की मांग रद्द कर दी गई। इस मुकदमे पर जितना खर्च आया है, वह भी प. जर्मनी की फर्म को ही बरदाश्त करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त, पं. जर्मनी की उक्त जाली फर्म, येना के कारखाने को ५,००० स्विस फ्रांक हरजाने के तौर पर अदा करेगी।... इससे पहले लन्दन की अदालत में भी जर्मन जनवादी गणतंत्र की ज़ाइस्स फर्म ने ऐसा ही एक मुकदमा जीता है।

ज. ज. ग. का विश्वव्यापी रेडियो प्रसारण

मई मास में जर्मन जनवादी गणतंत्र की रेडियो सेवा ने अपनी २० वीं जयन्ती मनायी। हिटलर की नाज़ी सेनाओं की कमरतोड़ पराजय के तुरन्त बाद, पूर्वी जर्मनी में प्रसारण व्यवस्था को नये और जनवादी तरीकों पर संगठित किया गया।

ज. ज. ग. का रेडियो हर रोज १० भाषाओं में, १५० घण्टे का प्रसारण करता है। इन भाषाओं में अंग्रेज़ी भी शामिल है, और ये प्रसारण दुनिया के विभिन्न देशों के लिए प्रसारित किये जाते हैं। रेडियो बर्लिन इण्टरनेशनल ने, दुनिया के ६६ देशों के प्रसारण केन्द्रों से अपने संपर्क स्थापित किये हैं। विश्व के विभिन्न देशों के श्रोताओं से, हर महीने, इस रेडियो को ४०,००० पत्र मिलते हैं।

बर्लिन के प्रसारण भवन में दो हज़ार कमरे हैं जहां रेडियो सेवा के कर्मचारी–सम्पादक, कार्यक्रम संचालक, समाचार पढ़ने वाले इत्यादि बैठते हैं। इस भवन के अनेक कमरे केवल प्रसारण के लिये और कुछ कमरे अभिलेखागारों के लिये सुरक्षित हैं।

भारतीय उपन्यास का जर्मन भाषा में अनुवाद

जर्मन जनवादी गणतंत्र के वोल्क एण्ड वेल्ट नामक प्रकाशन गृह ने केरल के लेखक ताकजी शिवशंकरन का सुप्रसिद्ध उपन्यास "दि प्रॉन" (झींगा मछलियां) का एक जर्मन संस्करण प्रकाशित किया है। रोमियो और जूलियट की तरह, इस उपन्यास का विषय भी समाज के खिलाफ बगावत है।

श्री शिवशंकरन का यह उपन्यास, भारत की साहित्य अकादमी द्वारा सन् १९५८ में पुरस्कृत हुआ है और लेखक को यह पुरस्कार प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के कर कमलों द्वारा प्राप्त हुआ। यह उपन्यास अंग्रेज़ी में भी अनूदित और यूनेस्को द्वारा प्रकाशित हुआ है। जर्मन संस्करण में प्रकाशकों ने, श्री शिवशंकरन की एक परिचयात्मक टिप्पणी भी दी है।

पश्चिमी जर्मनी के एक हज़ार शरणार्थी

१९६५ के अप्रैल मास में, पश्चिमी जर्मनी से लगभग १,००० शरणार्थियों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के ११ विभिन्न (शरणार्थी) स्वागत गृहों में शरण ली। पिछले साढ़े तीन वर्षों में पश्चिमी जर्मनी से कुल ८०,००० शरणार्थियों ने ज. ज. ग. में रहने के लिये शरण मांगी है।

मई मास के पहले १० दिनों में प. जर्मनी के ३११ नागरिक ज. ज. ग. में रहने के लिये आये।

बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि

इस संधि के अन्तर्गत १२ से लेकर २५ अप्रैल १९६५ तक, अर्थात् ईस्टर के त्यौहार के दिनों में, पश्चिम बर्लिन के ५८१, ४७० निवासी ज. ज. ग. की राजधानी में अपने सगे संबन्धियों से मिलने आये। अनुमान है कि लगभग इतने ही लोग वितसून के त्यौहार के दिनों में भी, (जून के पहले सप्ताह में) संधि के अन्तर्गत, ज. ज. ग. की राजधानी में आयेंगे।

भारतीय पत्रकार बर्लिन में

भारत के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक "ब्लिट्ज" के सम्पादक, श्री आर. के. करंजिया, फासिज्म से मुक्ति की २०वीं जयन्ती के अवसर पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र के दौरे पर आये थे। वह यहां सपरिवार एक हफ्ते तक रहे। उन्होंने यहां के सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञों, नेताओं तथा अधिकारियों आदि से मुलाकातें कीं। जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उलिब्रख्त से उन्होंने एक विशेष प्रेस इण्टरव्यू लिया। श्री करंजिया, जर्मन जनवादी गणतंत्र की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) के अध्यक्ष, डा. योहान्नेस डीकमन्न, न्याय मंत्री, श्रीमती हिल्डे बेनजामिन, उप-विदेश मंत्री, डा. वोल्फगांग कीज़ेवेट्टर, और अपने मेज़बान, आज के कार्यकारी विदेश मंत्री, ओट्टो विन्ज़ेर से भी मिले।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रमुख समाचार एजेंसी ए.डी.एन. को एक इंटरव्यू में श्री करंजिया ने बताया कि यहां के नेताओं और राजनीतिज्ञों से उनकी "बातचीत बहुत फायदामन्द" रही। इसके अलावा उन्होंने कहा: "यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र हिटलर के फासिस्तवाद से मुक्ति के दिवस रूप में मानता है, जबकि पश्चिमी जर्मनी में इस दिन को आज भी पराजय समझा जाता है। जर्मनी की इस खतरनाक समझ में ही तीसरे विश्व युद्ध के बीज छुपे हैं।..."

श्री आर. के. करंजिया का यह चौथा दौरा है जर्मन जनवादी गणतंत्र का। वह यहां के साधारण लोगों से भी मिले सड़कों पर, रेस्त्राओं और बसों आदि में। उन्होंने अपने इण्टरव्यू में इस बात को स्पष्ट शब्दों में कहा कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के लोग खुशहाल हैं और समाजवादी व्यवस्था से वे बहुत सन्तुष्ट हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की आर्थिक प्रगति पर टिप्पणी करते हुये, श्री करंजिया ने कहा कि वास्तविक आर्थिक चमत्कार ज.ज.ग. में हुआ है पश्चिम जर्मनी में नहीं, क्योंकि दूसरे महायुद्ध की समाप्ति पर पूर्वी जर्मनी में तबाही के सिवा कुछ भी नहीं था। ज.ज.ग. के ज़बरदस्त आर्थिक नवनिर्माण से एशिया, अफ्रीका और अरब के राष्ट्र बहुत कुछ सीख सकते हैं।

शरद्कालीन लाइपज़िग मेले की तैयारियां शुरू

विश्वप्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय शरद्कालीन व्यापार मेले की तैयारियां आज ही से शुरू हो चुकी हैं। यह मेला हर साल यहां दो बार आयोजित होता है—वसन्तकाल में (मार्च में) और शरद्काल में (सितम्बर में)। इस वर्ष का उक्त मेला ५ से १२ सितम्बर तक आयोजित होगा।... आज तक ६० देशों ने इस मेले में शामिल होने की घोषणा की है। इन देशों के लिये १३०,००० वर्ग मीटर रकबा जमीन प्रदर्शन मण्डपों के लिये सुरक्षित की गयी है।

जर्मन जनवादी गणतन्त्र के नये विदेश-व्यापार मन्त्री, श्री होरस्ट सोएल्ले

उक्त लाइपजिग व्यापार मेले में ८० देशों के २३५,००० दर्शकों के आने की संभावना है। १५,००० व्यापार विशेषज्ञ, तकनीशियन, इंजीनियर तथा अन्य विशेषज्ञ केवल समाजवादी देशों से आयेंगे। इनके अलावा लगभग ३५,००० व्यापारी एवं दर्शक पश्चिमी देशों से मेले में आयेंगे।... समाजवादी देशों की १०० से भी अधिक विदेश-व्यापार संस्थायें मेले में अपने उत्पादन लेकर आयेंगी, और ३० समुद्रपार देश भी इस मेले में शामिल होंगे।

भारत की लोकसभा के सदस्य ज. ज. ग. में
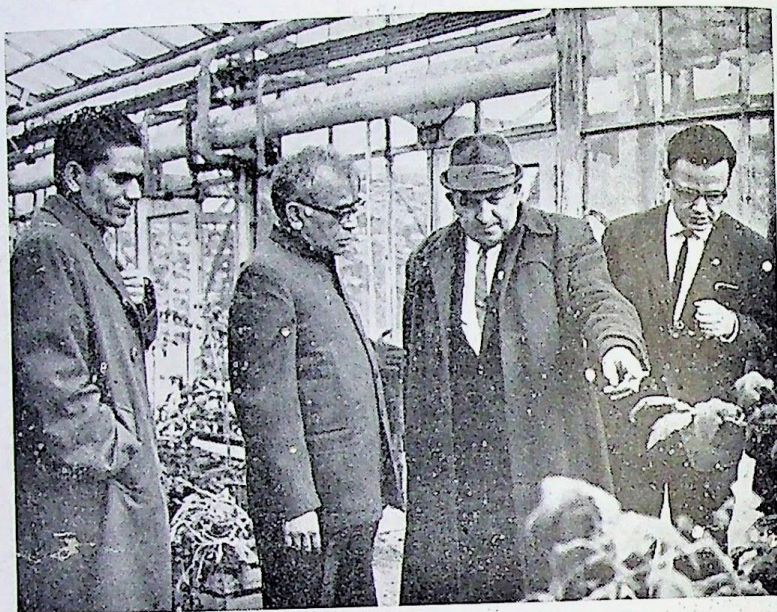
भारतीय लोकसभा के सुप्रसिद्ध सदस्य, डा. राम मनोहर लोहिया और श्री मधु लिमैये, मई मास में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के दौरे पर गये थे। बायें चित्र में बर्लिन के शोएनेफेल्ड हवाई अड्डे पर, ज. ज. ग. के 'अन्तर संसदीय संघ' के अध्यक्ष, श्री माक्स ओपिट्स, भारत के इन सदस्यों का स्वागत कर रहे हैं। दायें चित्र में, संसद सदस्य एक गांव के मेयर के साथ एक कृषि उत्पादन सहकारी फार्म देख रहे हैं

फासिस्तवाद से मुक्ति

जर्मन जनता की, फासिस्तवाद से मुक्ति की २०वीं जयन्ती के अवसर पर, ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास की बम्बई शाखा ने कई समारोहों का आयोजन किया। इस सिलसिले में बम्बई और पूना में प्रेस कानफ्रेन्सें भी हुईं। पत्रकारों ने अनेक प्रश्न पूछे। श्री कावरेट्सके पूना (बायें चित्र में), और बम्बई (दायें चित्र में), पत्रकारों से बातचीत कर रहे हैं

ज. ज. ग. के वैज्ञानिकों द्वारा चांद पर उतरने वाले "ल्यूना ५" के लिये गये चित्र

कार्ल मार्क्स स्टाड्ट के निकट रोडेविश नामक वेधशाला से १३ मई, १९६५ के दिन, प्रोफेसर एडगार पेनज़ोल ने चाँद पर उतरने वाले स्वचालित-स्टेशन "ल्यूना ५" के चित्र लिये। यह स्वचालित-स्टेशन ११ मई के दिन सोवियत संघ ने चांद की ओर भेजा है।

ये तीन चित्र विभिन्न समयों के अन्तर पर लिये गये चांद के टीको (**Tycho**) नामक विवर के चित्र हैं।

सूचना पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

७
जुलाई

वर्ष १०
अंक ७ | २० जुलाई, १९६५

संकेत

मुख पृष्ठ : श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त और यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति टीटो

अंतिम पृष्ठ : बाल्टिक सागर में ऊज़ेडोम नामक द्वीप का एक रमणीय दृश्य

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और यूनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

राष्ट्रपति टीटो की ज. ज. ग. यात्रा

5 जून से लेकर १३ जून तक, राष्ट्रपति जोसिप ब्रोज़ टीटो ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकारी यात्रा की। यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति का यह सरकारी दौरा, जर्मन जनवादी गणतंत्र की बढ़ती हुई अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता का प्रमाण है।

इस सिलसिले में यह महत्वपूर्ण तथ्य याद रखना ज़रूरी है कि यूगोस्लाविया ही वह राज्य था जिसने सन् १६५७ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र को मान्यता देकर पश्चिमी जर्मन सरकार के तथाकथित "हालस्टाइन सिद्धांत" पर ज़बरदस्त आघात किया। इस 'सिद्धान्त' के द्वारा प. जर्मनी समस्त जर्मनी का प्रतिनिधित्व करने का दावा करता है, और यह धमकी देता रहता है कि यदि कोई राज्य, जर्मन जनवादी गणतंत्र को मान्यता देगा तो पं. जर्मनी उस राज्य से अपने राजनयिक संबन्ध तोड़ देगा। यद्यपि इस बेहूदा सिद्धान्त के अन्तर्गत पश्चिमी जर्मनी ने, यूगोस्लाविया के साथ अपने राजनयिक संबन्ध विच्छेद कर दिये, लेकिन वह अपने आर्थिक संबन्धों को तोड़ने में असमर्थ रहा। बल्कि इन दो राज्यों (यूगोस्लाविया और प. जर्मनी) के आपसी व्यापार में वृद्धि भी हुई।

सन् १६५७ और सन् १६६५ म उक्त "हालस्टाइन सिद्धान्त" के तुलनात्मक प्रभाव और शक्ति को आंकना, काफी रोचक होगा। सन् १६६५ में इस बेकार 'सिद्धान्त' पर अन्तिम और निर्णयक घातक वार किया संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति जमाल नासिर ने। संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति ने पश्चिमी जर्मन सरकार की धमकियों की परवा न की, और उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त का (जब वह फरवरी में सं. अ. ग. के सरकारी दौरे पर आये) भव्य स्वागत किया।

जहां सन् १६५७ में, पश्चिमी जर्मनी अपनी धमकियों को अमली रूप देने में अपने आपको समर्थ और मज़बूत पाता था (हालांकि तब भी यूगोस्लाविया पर धमकियों का कोई असर नहीं पड़ा), वहां सन् १६६५ में "हालस्टाइन सिद्धान्त" संयुक्त अरब गणराज्य में पूरी तरह धराशायी हो गया। इस 'सिद्धान्त' की इस करारी हार ने एक बार फिर दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व की हक़ीकत को सिद्ध कर दिया।...

राष्ट्रपति टीटो ने इस हकीकत को जर्मन जनवादी गणतंत्र की अपनी यात्रा में कई बार दोहराया है। उन्होंने कहा : "जर्मन समस्या के हल करने की कोई भी बात-चीत इस तथ्य को स्वीकारने से ही शुरू सकती है कि दो भिन्न समाज व्यवस्थाओं पर आधारित, दो प्रभुसत्तात्मक जर्मन राज्यों का अस्तित्व है। जर्मनी के वर्तमान विभाजन को धीरे-धीरे समाप्त करने के आवश्यक साधन तभी पैदा किये जा सकते हैं जब ये दोनों राज्य आपस में संपर्क स्थापित करें।..." जर्मनी के एकीकरण का प्रश्न, स्वयं जर्मन जनता ही हल कर सकती है, और इसमें कोई भी बाहरी हस्तक्षेप अवांछनीय है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र को अलग करने, और दूसरे महायुद्ध के बाद स्थापित की गई सीमाओं को बल के आधार पर बदल देने की प्रतिशोधवादियों की योजनायें "न केवल वास्तविकता से दूर हैं, बल्कि बहुत खतरनाक राजनीति भी है।" यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति ने कहा : "हम मध्य यूरोप में अणुमुक्त क्षेत्र की स्थापना, नाभिकीय शस्त्रास्त्रों के परित्याग, और विश्व शांति की सुरक्षा के लिये उठाये गये हरएक कदम का प्रबल समर्थन करते हैं।...."

राष्ट्रपति टीटो ने कहा कि युद्धोत्तर वर्षों में जर्मनी की समस्या ने काफी अन्तर्राष्ट्रीय तनाव पैदा किये हैं। लेकिन "जर्मन जनवादी गणतंत्र के बढ़ते हुये वकार एवं अधिकार के कारण और सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों की शांति नीति के फलस्वरूप, यूरोप के इस क्षेत्र में हालात पर काबू पाया गया और तनाव कम हुये।

"इसलिये हमारा यह निश्चित मत है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र विश्व के इस भाग में, शांति के लिये एक महत्वपूर्ण और विश्वस्त तत्व है।..."

आगे चल कर राष्ट्रपति टीटो ने यह मत प्रकट किया कि "दुनिया

बर्लिन की सड़कों पर सैर करते हुये राष्ट्रपति टीटो, उनकी पत्नी और उनके दल के अन्य व्यक्ति। उनके साथ हैं ज.ज.ग. के प्रधान मंत्री, श्री विल्ली स्टोप (दायें, चश्मा पहने) तथा अन्य अधिकारी
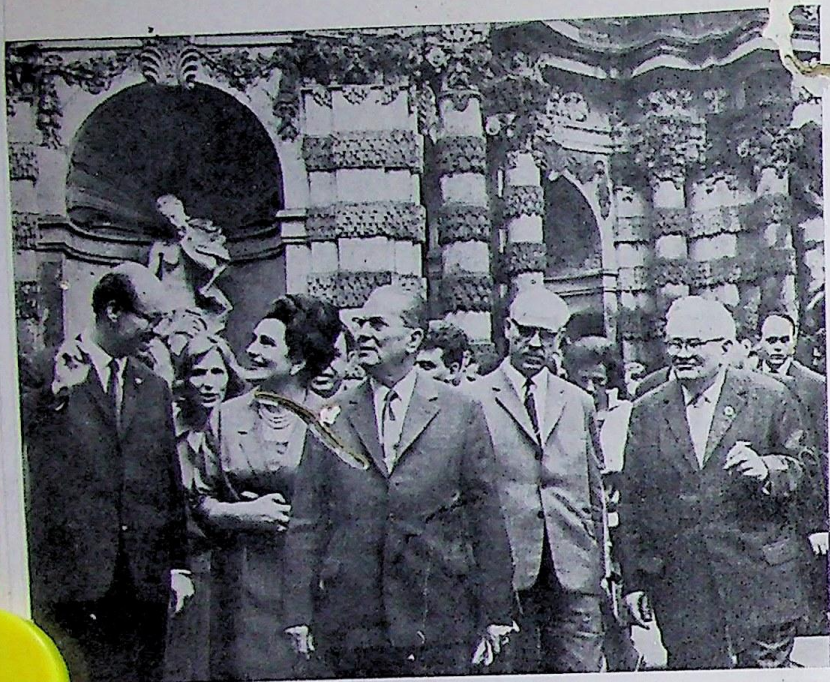
ड्रेस्डेन के विश्व प्रसिद्ध स्विंगर को देखते हुए राष्ट्रपति टीटो और उनकी पत्नी

के देशों की अधिकाधिक संख्या और उनकी जनता द्वारा अपनाई जा रही शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति ही विनाशकारी युद्ध का विकल्प है।"

यूगोस्लाविया और ज. ज. ग. के मैत्रिपूर्ण संबन्धों का उल्लेख करते हुये, राष्ट्रपति टीटो ने कहा : "हमारे दोनों देश शांति की सुरक्षा और शांतिपूर्ण एवं सक्रिय सह-अस्तित्व के सिद्धान्त के आधार पर समान, अन्तर्राष्ट्रीय रिश्ते जोड़ने के लिये मिलजुल कर प्रयत्न करते हैं।..."

उन्होंने, पश्चिमी जर्मनी की खतरनाक सैनिकवादी तथा प्रतिशोधवादी नीति की कड़ी निन्दा की। पश्चिमी जर्मनी में अनेक प्रतिशोधवादी और सेनावादी तत्व हैं जो ज़ोर जबरदस्ती के बलबूते पर जर्मन समस्या को हल करना चाहते हैं। ये युद्ध लोलुप तत्व, 'हिटलर जर्मनी की पराजय' के बाद स्थापित की गई सीमाओं को फिर से बदल देना चाहते हैं बल का प्रयोग करके। इस पृष्ठभूमि में पश्चिमी जर्मनी द्वारा नाभिकीय हथियारों को हस्तगत करने का प्रयत्न चिन्ताजनक है।

यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति ने इस तथ्य का भी स्मरण कराया कि फासिस्टों के आधिपत्य के खिलाफ अपने चार वर्षीय मुक्ति संग्राम में यूगोस्लाविया का हर ९वां व्यक्ति शहीद हुआ। उनके शब्दों में : "आज, दूसरे महायुद्ध के २० वर्ष बाद भी, हिटलरी फासिस्ट दरिन्दों के अत्याचारों को हमारी जनता नहीं भूली है। इसके बावजूद जर्मन [illegible] साथ हम अपने संबन्ध जोड़ने और विकसित करने के सदा [illegible] रहे हैं। लेकिन पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य ने आज तक भी ऐसे रिश्ते कायम करने की ओर दिलचस्पी नहीं दिखाई।..." राष्ट्रपति टीटो ने इस बात पर सन्तोष व्यक्त किया कि "जर्मन जनता की एक अच्छी खासी संख्या ने न केवल फासिस्ट अत्याचारों से अपना रिश्ता तोड़ दिया है, बल्कि उसने अत्याचार करने वाले फासिस्ट अपराधियों को कानून के हवाले करके दण्डित भी किया है। इसके अलावा जर्मन जनवादी गणतंत्र ने शांतिपूर्ण और जनतांत्रिक विकास पथ को अपनाया है एक समाजवादी समाज का निर्माण करने के लिये।..."

इसका सद्परिणाम यह निकला है कि "जर्मनी के इस भाग में (अर्थात् ज. ज. ग. में—सं.), उल्लिखित भयंकर अत्याचारों का दोहराये जाने की संभावना हमेशा के लिये समाप्त कर दी गई है। इस प्रकार यहां एक ऐसी प्रक्रिया शुरू हुई है जो जर्मन जनता के सम्मान को, और शांतिप्रिय राष्ट्रों से उनकी मैत्री एवं सद्भावना को फिर से बहाल करेगी।..."

पश्चिमी जर्मनी में यूगोस्लाविया के नागरिकों पर हमलों की चर्चा करते हुय राष्ट्रपति टीटो बोले : "ये हमले इस बात को सिद्ध करते हैं कि वे फासिस्ट और सैनिकवादी तत्व तथा शक्तियां, जिन्होंने आजाद देशों को गुलाम बनाया और जिन्होंने जनता पर भयंकर अत्याचार किये, पश्चिमी जर्मनी में न सिर्फ मौजूद ही हैं, बल्कि उनको वहां खुलेआम अपनी उत्तेजनात्मक कार्रवाइयां करने की भी इजाजत है। इस पृष्ठभूमि में देखने से हमारा यह निश्चित मत है कि शांतिप्रिय जर्मन जनवादी गणतंत्र का अस्तित्व और भी महत्वपूर्ण है।..."

राष्ट्रपति टीटो और उनके दल का, जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता ने जो हार्दिक और भव्य स्वागत किया, वह यूगोस्लाविया की जनता के लिये उसकी गहरी दोस्ती की स्पष्ट अभिव्यक्ति है। यूगोस्लाविया और जर्मन जनवादी गणतंत्र के मैत्रिपूर्ण संबन्धों के विकास पर श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने सन्तोष प्रकट किया। दोनों राज्यों में रिश्तों के पहले सोपानों का उल्लेख करते हुये श्री उल्ब्रिख्त ने कहा : "समाजवाद के रास्ते पर बढ़नेवाले विभिन्न देशों में विकास की परिस्थितियां और स्तर चूंकि एक दूसरे से सर्वथा भिन्न था इसलिये कई और कभी-कभी भिन्न रूपों एवं प्रणालियों को जन्म दिया गया। लेकिन बदकिस्मती से इन भिन्न रूपों और प्रणालियों को अपनाते वक्त सामान्य उद्देश्यों को हमेशा पहला स्थान नहीं दिया गया।

"हम अब समाजवादी विकास की उस मंजिल में पहुंच चुके हैं, और हमने विभिन्न समाजवादी देशों में ऐसे भिन्न अनुभव संचित किये

(शेष पृष्ठ १९ पर)

हाल्ले में एक विराट जनसभा ने राष्ट्रपति टीटो और अध्यक्ष उल्ब्रिख्त का भव्य स्वागत किया

ज.ज.ग. और यूगोस्लाविया का संयुक्त वक्तव्य

हाल ही में, यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति टीटो ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजकीय यात्रा की। यात्रा के अन्त पर, दोनों देशों ने एक संयुक्त वक्तव्य पर दस्तखत किये। इस वक्तव्य में, अत्यन्त महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर, दोनों राज्यों का समान दृष्टिकोण स्पष्ट सिद्ध होता है।

संयुक्त वक्तव्य में कहा गया है कि राष्ट्रपति टीटो और ज. ज. ग. की राज्य परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त में कई मुलाकातें हुई और उन्होंने "दोनों देशों में समाजवादी निर्माण की समस्याओं, पारस्परिक संबन्धों के दृढ़ीकरण, अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन और मौजूदा अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर, लाभदायक विचार विनिमय किया। . . ." संयुक्त वक्तव्य के अनुसार "यह विचार विनिमय, मित्रतापूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। . . ."

वक्तव्य में इस बात का भी उल्लेख है कि ज. ज. ग. और यूगोस्लाविया के बीच जल्द ही एक दीर्घकालीन व्यापार-संधि होगी जो सन् १९७० तक वैध होगी। आर्थिकी और कृषि के क्षेत्रों में, दोनों देशों के सहयोग को अधिक व्यापक और दृढ़ कर दिया जायेगा।

राष्ट्रपति टीटो ने, श्री उल्ब्रिख्त को यूगोस्लाविया आने की दावत दी है, जो उन्होंने साभार स्वीकार की।

तटस्थ राज्यों की भूमिका

राष्ट्रपति टीटो और अध्यक्ष उल्ब्रिख्त ने संयुक्त वक्तव्य में "तटस्थ राज्यों के महत्व और विश्वशांति, समानता के आधार पर नये अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों के स्थापन और सभी प्रकार की दासता एवं पराधीनता के खिलाफ उनके संघर्ष की भूमिका पर बल दिया।"

दोनों राजनीतिज्ञों ने इस विचार पर भी ज़ोर दिया कि अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन दिन-प्रति-दिन बढ़ता और सबल होता जा रहा है, और जिन लोगों ने पूंजीवादी शिकंजे से मुक्त होकर अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त की है, वे सक्रिय रूप से विश्व शांति को मज़बूत बना रहे हैं। . . . संयुक्त वक्तव्य में शांति के संघर्ष में, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति पर अमल करने में, और मुक्ति आन्दोलनों के साथ एकजुटता में समाजवादी देशों के रोल के महत्व पर बल दिया गया है।

श्री टीटो और श्री उल्ब्रिख्त ने अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के खराब होने पर गहरी चिन्ता प्रकट की है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि वियतनाम जनवादी गणतंत्र पर अमरीकी हमले, और दक्षिण वियतनाम में उनके सैनिक हस्तक्षेप ने दुनिया की शांति को खतरे में डाला है। इसी प्रकार डोमिनिक गणराज्य में अमरीका की फौजी कार्रवाई अन्य देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप, और मध्य पूर्व में तनावों का बढ़ना भी शांति के लिये खतरा है।

संयुक्त वक्तव्य में, यूरोप की सुरक्षा के लिये यूरोप के राज्यों का सम्मेलन आयोजित करने का सुझाव रखा गया है। वक्तव्य में पश्चिमी जर्मनी की प्रतिशोधवादी, युद्ध-लोलुप और अणु-शस्त्रास्त्रों को हस्तगत करने की खतरनाक नीति को "यूरोप की सुरक्षा और इसके शांतिपूर्ण विकास के लिये सबसे बड़ी बाधा" कहा गया है। . . . ज. ज. ग. और यूगोस्लाविया, पश्चिमी जर्मनी की इस आक्रामक नीति के सख्त खिलाफ हैं।

संयुक्त वक्तव्य में "यूरोप की यथार्थ स्थिति को—अर्थात् दो विभिन्न समाज-व्यवस्थाओं वाले दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व को मान लेना" अनिवार्य कहा गया है। . . "दो जर्मन राज्यों के कदम-ब-कदम एक दूसरे के क़रीब आने, और शांतिपूर्ण बातचीत के लिये इस हक़ीक़त को मान लेना पहली शर्त है . . . ।"

राष्ट्रपति टीटो और अध्यक्ष उल्ब्रिख्त ने वक्तव्य में, पश्चिम बर्लिन की स्थिति को सामान्य बनाने की आवश्यकता पर बल दिया है, और इस संबन्ध में ज. ज. ग. को अलग करने या नजर अंदाज करने के प्रयत्नों को उन्होंने अवास्तविक तथा हानिकारक घोषित किया है।

राष्ट्रपति टीटो और श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त संयुक्त वक्तव्य पर दस्तखत कर रहे हैं

अपने संयुक्त वक्तव्य में दोनों नेताओं ने उपनिवेशवाद को खत्म करने के संघर्ष, और तटस्थ राष्ट्रों के काहिरा सम्मेलन के फैसलों का समर्थन किया—खासकर विश्व निरस्त्रीकरण सम्मेलन से संबन्धित फैसले का।

अन्त में, संयुक्त वक्तव्य में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'समाजवादी एकता पार्टी' और यूगोस्लाविया की 'कम्युनिस्ट-लीग' के बढ़ते हुये संपर्कों और संबन्धों पर संतोष प्रकट किया गया है।

'ब्राउन बुक' द्वारा रहस्योद्घाटन

पश्चिम जर्मन सरकार के ऊंचे पदों पर १८०० नाज़ी युद्ध अपराधी आसीन हैं

पश्चिमी जर्मनी की सरकार में १८०० से ज्यादा नाज़ी युद्ध अपराधी बड़े बड़े और महत्त्वपूर्ण पदों पर विराजमान हैं। इस रहस्य का उद्घाटन एक दस्तावेज़ी पुस्तक, "ब्राउन बुक" में हुआ।

अकाट्य प्रमाणों से भरी हुई, ३४० पृष्ठों वाली यह "ब्राउन बुक" जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में, एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस कानफ्रेंस में, दुनिया भर के पत्रकारों के सामने पेश की गई।

प्रामाणिक दस्तावेज़ों वाली इस पुस्तक में जिन १८०० से ज्यादा युद्ध अपराधी अफसरों का उल्लेख हुआ है उनमें पश्चिमी जर्मनी के १५ मंत्री तथा राज्य सचिव, ८२८ कानून अधिकारी (न्यायाधीश इत्यादि), हिटलर की सेना के १०० जनरल तथा एडमिरल, विदेश मंत्रालय के २४५ उच्चाधिकारी, और पुलिस एवं राजनीतिक पुलिस दल के २९७ ऊँचे अफसर भी शामिल हैं। "ब्राउन बुक" में केवल उन ही व्यक्तियों का उल्लेख हुआ है जिन्होंने नाजियों के पाशविक कामों में सक्रिय भाग लिया है, और इसलिये जो नामी युद्ध अपराधी हैं।

उक्त "ब्राउन बुक" में इस तथ्य पर भी प्रकाश डाला गया है कि दो जर्मन राज्यों में, नाजियों एवं युद्ध अपराधियों के साथ कैसा सलूक किया जाता है। जहां पश्चिमी जर्मनी में इन गन्दे अपराधियों को ऊंचे ऊंचे पद और मोटी मोटी नौकरियां दी जाती हैं, वहां जर्मन जनवादी गणतंत्र में उन के साथ अपराधियों जैसा ही सलूक किया जाता है। ज. ज. ग. में आज तक १६,५७२ ऐसे मुजरिमों को अदालतों में खड़ा किया जा चुका है, और इनमें से १२,८०७ मुजरिमों को सज़ा भी मिल चुकी है।

इसके विपरीत पश्चिमी जर्मनी में, जहां ज. ज. ग. से तीन गुना अधिक लोग रहते हैं, सन् १९६४ के आरम्भ तक केवल १२,४५७ व्यक्तियों पर मुक़दमे चलाये गये थे। इनमें से भी, मार्च १९६५ तक, केवल ६,१०० व्यक्तियों को सज़ा दी गई है, और अधिकांश [illegible] सिर्फ दिखावे के लिये दी गई हैं।

"ब्राउन बुक" में उल्लिखित नाज़ी युद्ध अपराधियों के क्रूर आधिपत्य के दौरान, यातना-शिविरों (कनसेंट्रेशन कैम्प्स) में उनके हाथों एक करोड़, १० लाख निर्दोष प्राणियों की हत्या हुई। आज तक यह पूरा अनुमान नहीं लगाया जा सका है कि हिटलर के सुरक्षा दल (एस.एस.) और उसके हमला करने वाले दस्तों (एस.ए.) ने कितने मर्दों, औरतों और बच्चों की हत्या की है।

"ब्राउन बुक" में ५२० ऐसे नाज़ियों के नामों और कुकृत्यों का ब्योरा दिया गया है जो पश्चिमी जर्मनी की परराष्ट्र सेवा में घुस गये हैं। ये ही लोग, प. जर्मनी की आक्रामक विदेश नीति के स्तम्भ हैं।

इसके विपरीत, "ब्राउन बुक" के दस्तावेज़ इस बात को सिद्ध करते हैं कि ज. ज. ग. में एक भी नाज़ी राजनायक विदेश मंत्रालय में ढूंढ़ने से भी नहीं मिलता है।

"ब्राउन बुक" में इस रहस्य का भी उद्घाटन हुआ है कि पश्चिमी जर्मनी के उद्योग धन्धों में ९५ प्रतिशत उन ही नाज़ियों का प्रभुत्व है जो हिटलर के ज़माने में भी उद्योगों में बड़े बड़े पदों पर क़बज़ा हुये थे। इस संदर्भ में, दस्तावेज़-पुस्तक में उन बड़े बड़े ट्रस्टों का उल्लेख किया गया है जिनमें युद्ध अपराधी आज काम करते हैं। 'फ्लिक' नामक ट्रस्ट की ताक़त सबसे ज्यादा है। सन् १९६२ में, इस दैत्याकार ट्रस्ट के आधीन १५ संयुक्त कम्पनियां, ८९ लिमिटेड कम्पनियां और ६ अन्य कम्पनियां थीं। इस ट्रस्ट की ९ सबसे बड़ी कम्पनियों के, प. जर्मनी के शस्त्र उद्योग में हिस्से हैं।

इसी प्रकार 'क्रुप्प' नामक ट्रस्ट के चार बड़े बड़े कारखाने विनाशकारी शस्त्रों के उत्पादन में लगे हैं। क्रुप्प ट्रस्ट, जर्मन साम्राज्यवाद और सैनिकवाद का हमेशा पिट्ठू रहा है और हमेशा इसको शस्त्रास्त्र सप्लाई करता रहा है। सन् १९६२ में इस ट्रस्ट के पास २४ संयुक्त कम्पनियां, ७२ लिमिटेड कम्पनियां और ७ अन्य कम्पनियां थीं।

जर्मन समस्या और इसका हल

योहान्नेस कोयनिग
(ज. ज. ग. के उप विदेश मंत्री)

जर्मन समस्या, दुनियाभर की नजरों में, विश्व शान्ति के प्रश्न से जुड़ी हुई है।... दुनिया की जनसंख्या का बहुत बड़ा बहुमत, दो-दो विनाशकारी युद्धों के बाद, इस नतीजे पर पहुंचा है कि हर संभव तरीके से तीसरे घातक युद्ध को रोक देना चाहिये। अणु और उद्जन बमों और शस्त्रास्त्रों के इस युग में तीसरे युद्ध का मतलब होगा करोड़ों प्राणियों और सम्पत्ति का विनाश। इसके बावजूद, कुछ ऐसे मुट्ठीभर इजारेदार पूंजीपति और दुस्साहसिक सैनिकवादी जो शस्त्रास्त्रों की तिजारत में मुनाफा कमाते हैं, तीसरे युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। ये मुट्ठीभर लोग, तीसरे युद्ध में विजय और दुनिया के हाकिम बनने का ख्वाब देख रहे हैं।

इसलिये यहां यह तथ्य कहना क्या अनुचित होगा कि दोनों महायुद्ध जर्मनी से ही शुरू हुये? उक्त दोनों युद्धों को शुरू करने की जिम्मेदारी जर्मन साम्राज्यवाद एवं जर्मन सैनिकवाद पर है। यही वजह है कि दूसरे महायुद्ध में हिटलर की पराजय के बाद प्रमुख नाज़ी तथा युद्ध अपराधी, अपने पाशविक अपराधों के लिये, नूरम्बर्ग की अन्तर्राष्ट्रीय अदालत के सामने दण्ड पाने के लिये खड़े कर दिये गये।

लेकिन अब यह सवाल पैदा होता है कि जिस जर्मनी ने दो विश्वयुद्धों को जन्म दिया, क्या वह उस समय विभाजित या एक था? इस सवाल का सीधा और सर्वविदित जवाब यही होगा कि जर्मनी उन दोनों अवसरों पर विभाजित नहीं, एक था। इसके बाद, शांति स्थापना की दृष्टि से अहम और बुनियादी प्रश्न यह उठता है कि वर्तमान स्थिति में, जबकि जर्मनी विभाजित हुआ है और जबकि जर्मन भूमि पर दो राज्य मौजूद हैं, दोनों जर्मन राज्यों में शासन-सत्ता पर किन तत्त्वों का अधिकार है? आज की जर्मन समस्या का सारभूत प्रश्न यही है।...

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है (इस तथ्य को वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ से ही जर्मन इतिहास ने प्रमाणित किया है) कि जर्मन साम्राज्यवाद और आक्रामक जर्मन सैनिकवाद, जहां एक ओर जर्मन जनता के लिये तबाही और बरबादी लायी, वहीं दूसरी ओर इसने सारे संसार के लोगों पर भी मुसीबतों के पहाड़ गिरा दिये। इसलिये यह बात बेरोकटोक कही जा सकती है कि जर्मनी और विश्व शांति का एक दूसरे से गहरा रिश्ता है।

एक बार फिर जर्मन राष्ट्र का अस्तित्व और समस्त विश्व की शांति खतरे में पड़ती जा रही है। इस खतरे का सबसे बड़ा कारण जर्मनी का विभाजन नहीं, बल्कि वे साम्राज्यवादी और सैनिक शक्तियां एवं तत्त्व हैं जिन्होंने पश्चिमी जर्मनी की शासन सत्ता फिर अपने क़ब्ज़े में कर ली है। यही तथ्य मूलरूप से जर्मनी के विभाजन का भी बुनियादी कारण है।

जर्मनी का विभाजन हुआ कैसे?... हिटलर जर्मनी की कमर तोड़ शिकस्त के बाद पोट्सडाम सन्धि की शर्तों को पश्चिमी जर्मनी में, एक के बाद एक करके तोड़ा गया और उनको कार्यान्वित नहीं किया गया। पोट्सडाम संधि जर्मनी की समस्त जनता के हितानुकूल थी। इस संधि की प्रमुख शर्तें थीं पूरी जर्मनी में सैनिकवाद एवं फासिस्तवाद को जड़ से उखाड़ना, इजारेदारी को खत्म करना और जर्मनी में एक शांतिप्रिय तथा लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था कायम करना। लेकिन पोट्सडाम संधि की इन शर्तों पर केवल जर्मनी के पूर्वी भाग में ही अमल किया गया। यही भाग आज जर्मन जनवादी गणतंत्र के नाम से विश्व प्रसिद्ध है। इसके विपरीत, पश्चिमी जर्मनी में इजारेदार पूंजीवाद को फिर से पुनर्जीवित किया गया, पुराने कुख्यात नाज़ियों एवं युद्ध अपराधियों को शासन के उच्च पदों पर बिठाया गया, और इसके साथ ही साथ, नाटो सैनिक गुट के पर्दे में पश्चिमी जर्मनी को यूरोप में अपनी सबसे मजबूत फौज तैयार करने का मौका दिया गया।

पोट्सडाम संधि की शर्तों के इस शर्मनाक उल्लंघन का ही यह परिणाम निकला कि अन्त में पश्चिमी अधिकृत शक्तियों ने पश्चिमी जर्मनी के शासक-वर्ग के साथ मिलकर, सन् १६४१ में, जर्मनी का विभाजन किया और पश्चिम जर्मन राज्य की स्थापना की। ऐसा होने के बाद ही, जर्मनी के पूर्वी भाग की जनता ने एक ऐतिहासिक फैसला लिया और जर्मनी के इस भाग में, जर्मनी का प्रथम शांतिप्रिय और जनतांत्रिक राज्य--जर्मन जनवादी गणतंत्र--स्थापित किया।

संक्षेप में यही है जर्मनी के विभाजन और जर्मन-भूमि पर दो जर्मन राज्यों की स्थापना का इतिहास। यदि पूरे जर्मनी में पोट्सडाम संधि की शर्तों पर अमल किया गया होता, तो आज यूरोप के लिये युद्ध का खतरा नहीं पैदा हुआ होता, और यूरोप की सुरक्षा की समस्या वजूद में न आई होती। लेकिन आज यह खतरा पहले से भी ज़्यादा बढ़ गया है। पश्चिमी जर्मनी के प्रतिशोधवादी और सैनिकवादी शासक किसी भी तरह अणु-शस्त्रास्त्रों को हासिल करना चाहते हैं, और इस के बाद पाशविक शक्ति के प्रयोग से ज.ज.ग. को हड़पना चाहते हैं, और दूसरे देशों के साथ भी सीमाओं के झगड़े खड़ा करना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में यही कहा जा सकता है कि वे ही तत्त्व और शक्तियां जिन्होंने दुनिया को दो महायुद्धों में झौंका, आज फिर अपने

विश्व-विजय के दुःस्वप्न को साकार करने की योजनायें बना रहे हैं (तीसरे युद्ध के द्वारा) यद्यपि उन्हें दोनों बार मुंह की खानी पड़ी।

पश्चिमी जर्मनी की इन आक्रामक शक्तियों की उक्त दुस्साहसिक योजनाओं को शिकस्त देनी चाहिये और ऐसा अवश्य होगा। इस संबन्ध में इन आक्रामक तत्त्वों को वारसा-संधि के राजनीतिक आयोग की निम्न चेतावनी सदैव ध्यान में रखनी होगी।

"पश्चिमी जर्मनी की आक्रामक और प्रतिशोधवादी मांगों को पूरा करने का मतलब होगा पूरे जर्मनी के अस्तित्व को ही खतरे में डालना। पश्चिमी जर्मनी द्वारा अणु हथियारों को प्राप्त करने का अनिवार्य परिणाम होगा एक महाविनाशक अणुयुद्ध, जिसमें जर्मनी, पुनः एकीकरण के बदले एक धधकते हुये नाभिकीय रेगिस्तान में बदल जायेगा।..."

इसलिये जर्मन समस्या का एक ही हल है और वह है शांति की सुरक्षा। दो जर्मन राज्यों का एकीकरण असंभव है यदि पश्चिमी जर्मनी, अणु-हथियारों को प्राप्त कर सकेगा। जहाँ तक जर्मन जनवादी गणतंत्र का सवाल है इसने दो जर्मन राज्यों द्वारा, अणु-हथियारों के परित्याग के लिये पश्चिमी जर्मनी को कई प्रस्ताव पेश किये हैं आज तक। यूरोप और जर्मनी में निरस्त्रीकरण और पोट्सडाम संधि की शर्तों को पूरा करने से ही दो जर्मन राज्य तनाव में काफी कमी ला सकते हैं।

यही एक रास्ता है महायुद्धोत्तर युग को समाप्त करने, और स्थाई शान्ति क़ायम करने का।...इस सिलसिले में, दोनों प्रभुसतात्मक जर्मन राज्यों—जर्मन जनवादी गणतंत्र और फेडरल जर्मन गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी) को समानता के आधार पर, दोनों जर्मनियों को मिलाकर, एक शांतिप्रिय और जनतांत्रिक जर्मन राज्य को स्थापित करने के लिये बातचीत करना अनिवार्य है। ... अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है जर्मन समस्या को हल करने का।

व्यक्तित्व की झांकी

ओटो विन्ज़र

जर्मन जनवादी गणतंत्र के नये पर-राष्ट्र मंत्री

ओट्टो विन्ज़र

इस साल के विगत (जून) मास में, श्री ओटो विन्ज़र, जर्मन जनवादी गणतंत्र के नये परराष्ट्र मंत्री नियुक्त हुये। यह नियुक्ति, डा. लोटार बोल्ज़ के त्याग-पत्र देने का परिणाम है, जिनका स्वास्थ्य इधर कुछ दिनों से अच्छा नहीं है। लेकिन डा. बोल्ज़, बदस्तूर, मंत्रि परिषद् के उपाध्यक्ष बने रहेंगे। त्याग-पत्र स्वीकार करते हुये प्रधान-मंत्री, विल्ली स्टोफ ने, डा. बोल्ज़ की सेवाओं और उपलब्धियों की प्रशंसा की।

ज. ज. ग. के नये परराष्ट्र मंत्री ओटो विन्ज़र इससे पहले राज्य सचिव और प्रथम उप विदेश मंत्री रहे हैं।
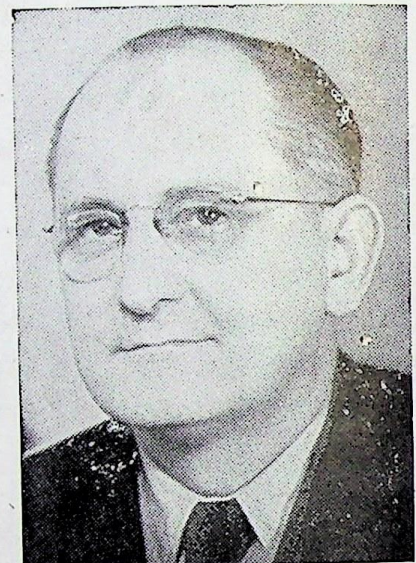
श्री ओटो विन्ज़र का जन्म हुआ सन् १९०२ एक में एक मजदूर परिवार में। १७ वर्ष की आयु से ही वह मजदूर आन्दोलन में सक्रिय रहे हैं, और १९१९ तथा १९२३ के बीच, जर्मनी के क्रांतिकारी संघर्षों में पेश-पेश रहे। छापखाने में काम करने के कारण, सन् १९२२ में वह 'यूथ इण्टरनेशनल' के व्यवस्थापक बन गये। सन् १९३३ में हिटलर द्वारा जर्मनी की राज्य-सत्ता हथियाने के बाद श्री विन्ज़र फासिस्टवाद के खिलाफ लड़ते रहे, लेकिन दो साल के बाद वह जर्मनी छोड़ने पर मजबूर हो गये। १० वर्षों तक वह फ्रांस, हालैण्ड और सोवियत संघ में रहे, और दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के बाद वह जर्मनी वापस आये। तब से लेकर आज तक श्री ओटो विन्ज़र बराबर जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना और इसके विकास में व्यस्त रहे हैं।

सात वर्षों तक, श्री विन्ज़र, जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति, स्वर्गीय विल्हेल्म पीक की चान्सलेरी के सचिव रहे। सन् १९५९ में वह प्रथम उपविदेश मंत्री एवं राज्य सचिव बने। इस पद पर आसीन होने के नाते, जर्मन जनवादी गणतंत्र की परराष्ट्र नीति के निर्धारण में इनका खासा हाथ है, और इस हैसियत से उन्होंने कई देशों का दौरा भी किया है जिनमें भारतवर्ष भी शामिल है। श्री विन्ज़र ने सन् १९६० में भारत की यात्रा की।

श्री ओटो विन्ज़र, जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रमुख राजनीतिक पार्टी जर्मन समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य भी हैं। उनकी सेवाओं के लिये, श्री विन्ज़र को कई पदकों और पुरस्कारों से विभूषित किया गया है।

ज. ज. ग. का

बाल पुस्तकों का प्रकाशन-घर

इजा फूरमान्स्की

सारी दुनिया में बच्चों के लिए पुस्तकें बहुत प्यारी और पसन्द की जानेवाली उपहार समझी जाती हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र से प्रकाशित होनेवाली बाल-पुस्तकें फ़ान्स, ब्रिटेन, चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, बेल्जियम, क्यूबा, यूगोस्लाविया, अमेरिका और संसार के अन्य सभी देशों के बालक-बालिकाओं को बहुत पसन्द आती हैं। चाहे वह अरविन स्ट्रिटमैटर की 'टिको' हो या गोएट्ज आर. रिचर की 'सावी' या ग्रिम बंधुओं की परीलोक की कहानियां हों, सभी पुस्तकें बच्चों का मन मोह लेती हैं। संभवतः स्वर्ग से गिरनेवाली बादलों की भेड़ों के बारे में वे भी उतनी ही दिलचस्पी व्यक्त करते हैं जितनी उसके जन्मदाता फ़्रेड रोड्रिएन (बालपुस्तक प्रकाशन के निदेशक) और उसके चित्रकार वर्नर क्लेमके। वे, गेरहार्ड निसे की, प्रयोगों की पुस्तक में 'कोलम्बस के १०० अंडों' पर टूट पड़ते हैं। गेरहार्ड निसे की सरल विज्ञान की पुस्तकें अमेरिका में विशेष रूप से लोकप्रिय हैं।

बालपुस्तक प्रकाशन घर के व्यापारिक संबंध ४० से अधिक देशों के साथ हैं। पिछले दस वर्षों में १६ देशों के बालपुस्तकों के प्रकाशन संबंधी १२० कापीराइट अधिकार स्वीकृत किये गये। किन्तु विश्व में हमारी बालपुस्तकों की लोकप्रियता केवल इसी कारण नहीं है। हमारी लोकप्रियता अन्य देशों के साथ सहयोगात्मक आधार पर प्रकाशित होने वाली उन अनेकानेक पुस्तकों के कारण भी है जो दुनिया भर में भेजी जाती हैं। पिछले दस वर्षों में ८० बालपुस्तकों के भारी संस्करणों का निर्यात किया गया। प्रतिदिन लाइपज़िग से विश्व के विभिन्न देशों को पुस्तकों की १ लाख प्रतियां भेजी जाती हैं, और इनमें काफी संख्या बालपुस्तकों की होती है।

सर्वाधिक सफल बालपुस्तकें लुडविग रेन्न की हैं, जिनकी ख्याति देश की सीमाओं को लांघकर बहुत दूर तक फैल चुकी है। अब तक उनकी दो पुस्तकों 'ट्रिनी' और 'नीग्रोनोबी' के क्रमशः २ लाख और २ लाख ८० हज़ार के अंतर्राष्ट्रीय संस्करण छप चुके हैं। समाजवादी देशों के अतिरिक्त 'नीग्रो नोबी' जापान बेल्जियम और क्यूबा में भी छप चुकी है। लेखक को उसके पाठक न सिर्फ प्यार करते बल्कि पूजते हैं। लुडविन रेन्न के घर में अक्सर बाल-मेहमानों की भीड़ देखी जा सकती है जो उनके नायकों के कर्तव्य और भाग्य के बारे में उत्सुकतापूर्वक बातचीत करती है। वे पूछते हैं—आगे क्या होगा? नोबी का क्या हुआ...? और लेखक बच्चों के सभी प्रश्नों का उत्तर देता है। वह बच्चों को अपनी अप्रकाशित पुस्तकों की पाण्डुलिपियों के दिलचस्प भाग पढ़ कर सुनाता है, अपनी कहानियों के स्रोत समझाता है और अपने पाठकों को अपनी पुस्तकों और उनके नायकों के जन्म और प्रगति में भाग लेने का अवसर देता है।

लेखक और पाठक का यह घनिष्ट सम्पर्क साहित्य से हमारे बालक-बालिकाओं के निकट संबंध का एक उदाहरण मात्र है। जितनी दिलचस्पी और उत्साह से बच्चे किताबें पढ़ते हैं उतनी ही मेहनत से लेखक, और कार्टूनिस्ट किसी पुस्तक को तैयार करते हैं, जो सामग्री और सज्जा की दृष्टि से मूल्यवान होती है।

ये प्रयास निम्नलिखित आंकड़ों से अधिक स्पष्ट होते हैं। हमारे कुल पुस्तक प्रकाशन की २४ प्रतिशत पुस्तकें बालपुस्तकें होती हैं। बाल-पुस्तक प्रकाशन घर से जो अपने ढंग का अकेला प्रकाशन-घर नहीं है, जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना के बाद, पिछले पन्द्रह वर्षों में १३०० पुस्तकों की ६ करोड़ प्रतियां छप चुकी हैं, जिसका अर्थ हुआ ६ करोड़ ऐसी पुस्तकें जो बच्चों को शांति तथा सभी मनुष्यों के साथ मैत्री की भावना को मजबूत बनाने वाले मानवतावादी विचारों में दीक्षित करती हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्रकाशित बाल-साहित्य को विदेशी शिक्षाविदों और वैज्ञानिकों ने भी आदर्श बाल-साहित्य कहा है। उन पुस्तकों की पाठ्य सामग्री के अंतर्गत उदात्त मानवतावादी आदर्शों और उनकी कलापूर्ण छपाई तथा सज्जा की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इनमें सभी तरह की पुस्तकें हैं—चित्रमय पुस्तकों, सभी देशों की परीलोक की कथाओं, कहानियों, उपन्यासों और साहसिक कथाओं से लेकर जीवन चरित्र और सामान्य लोगों के लिए लिखी गयीं आधुनिक वैज्ञानिक पुस्तकों तक। इनमें बाल साहित्य के प्राचीन लेखकों से लेकर विश्व-भर के समकालीन लेखकों तक की पुस्तकें अच्छे अनुवादों के रूप में उपलब्ध हैं। ये सभी पुस्तकें बच्चों के लिए एक निधि की तरह हैं और उन्हें विश्व-संस्कृति का ज्ञान कराती हैं। जीवन पथ पर इन अल्पवयस्क पाठकों का सच्चा साथी साहित्य ही है।

ज. ज. ग. का यह जनतांत्रिक, और मानवतावादी बालसाहित्य हमारी राष्ट्रीय संस्कृति का एक आवश्यक अंग है। १०० बालपुस्तकों

(शेष पृष्ठ १९ पर)

सहकारी खेती के पाँच साल

जर्मन जनवादी गणतंत्र में वहां के किसान आजकल एक महत्वपूर्ण घटना की ५वीं जयन्ती मना रहे हैं। यह घटना है, आज से पांच साल पहले की जब ज.ज.ग. के सभी गांवों में सहकारी कृषि आरंभ कर दी गयी।

ज.ज.ग. में प्रथम २,००० कृषि उत्पादन सहकारी संघों की स्थापना सन् १९५२ में हुई। आजकल यहां १६,००० कृषि सहकारी फार्म, ३७० सहकारी क्रय विक्रय केन्द्र, और लगभग ६०० राज्यकीय फार्म हैं, जिन्होंने सन् १९६४ में, ज. ज. ग. में सबसे अधिक फसल पैदा की। इस तरह, यूरोप में ज.ज.ग का पांचवां स्थान है कृषि उत्पादन की दृष्टि से।

पशु और सुवर पालन में--काश्त योग्य भूमि के अनुपात के अनुसार--ज. ज.ग. का दुनिया में पांचवां स्थान है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की कृषि में काम करने वाले कृषियन्त्रों का कुल मूल्य ७५० करोड़ मार्क (१ मार्क = १.१२ रुपये) है। इनयन्त्रों में १२०,००० ट्रैक्टर और १३,००० फसल बोने-काटने के यन्त्र (हारवेस्टर) भी शामिल हैं। लगभग इतनी ही रकम सरकार ने, सन् १९६० से सन् १९६३ तक, कृषि में लगाने के लिये उपलब्ध की।

कृषि के क्षेत्र में इस अपूर्व हलचल का सबसे बड़ा कारण था सन् १९४५ का भूमि सुधार कानून। उस वर्ष, इस कानून के अन्तर्गत पूरे जर्मनी में, अनेक आयोगों का चुनाव हुआ, और इन आयोगों ने कुछ ही महीनों में ७,००० ताल्लुकेदारों तथा ज़मींनदारों, नाज़ी नेताओं और युद्ध अपराधियों से लगभग ३३ लाख हेक्टर भूमि छीन ली। इसमें से अधिकांश ज़मीन ५६०,००० काश्तकारों, भूमिहीन किसानों और उखड़े हुये लोगों को दी गई। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्वामित्व वाले ५०० फार्म भी क़ायम किये गये।

ज.ज.ग. में कृषि उत्पादन सहकारी खेत दिन प्रतिदिन आत्म निर्भर हो रहे हैं। सन् १९६२ में जहां १६,००० में से ३,००० सहकारी फार्मों को राज्य से कर्ज़े लेने पड़े थे अपने अखराजात के लिये, वहां सन् १९६४ में, ऐसे फार्मों की संख्या घट कर ७४४ ही रही।

कृषि की व्यवस्था और संचालन में किसानों का सीधा प्रभाव और हाथ है। इसका प्रमाण यह तथ्य है कि ज.ज.ग. के ज़िलों और क़स्बों की कृषि परिषदों में २३४,००० सहकारी किसान इनके सदस्य हैं। इस के अलावा, सहकारी खेतों की संचालक समितियों में लगभग ११५,००० सहकारी किसान काम करते हैं।

सन् १९४५ के भूमि सुधार क़ानून के बाद ज.ज.ग. की कृषि प्रगति करते करते यन्त्रीकरण तक पहुंच गई

संयुक्त राष्ट्र संघ के २० वर्ष

फर्डिनण्ड वान दून

आज, ११५ राज्य, संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य हैं--अर्थात् दिसम्बर १९६४ की १९वीं महासभा से ३ सदस्य अधिक। जून मास में, यह अन्तर्राष्ट्रीय संस्था २० साल की हुई। लेकिन इतने समय के बाद भी यह वह सार्वभौमिकता प्राप्त नहीं कर सकी है जो इसने अपने प्रपत्र (चार्टर) में प्राप्त करने की घोषणा की थी। उदाहरण के लिये, अमरीकी दबाव के कारण, संयुक्त राष्ट्र संघ में आज भी च्यांग-काई शेक गुट का प्रतिनिधि बिराजमान है, जबकि इसका सही हकदार चीनी गणतंत्र है। इसी प्रकार कुछ पश्चिमी तत्वों ने राजनीतिक दबाव से सं. रा. सं. को पश्चिमी जर्मनी का समर्थक बनाने की कोशिश की, जबकि वास्तविकता यह है कि जर्मन भूमि पर पिछले १४ वर्षों से दो राज्य मौजूद हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र ने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि दोनों जर्मन राज्यों को संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बना देना चाहिये। इससे अन्तर्राष्ट्रीय तनाव में काफी कमी होगी। इसके अलावा, इससे, पश्चिमी जर्मनी पर भी यह बात वाज़े हो जायेगी कि जोर और जबरदस्ती से नहीं बल्कि आपसी बातचीत से दोनों जर्मन राज्यों में सुलह सफाई और समझौता हो सकता है, और संभव है कि इस तरह अन्त में जर्मनी का पुनर्एकीकरण भी हो।

संयुक्त राष्ट्र संघ न्यूयार्क में स्थित है, और वहां आने के लिये अमरीका प्रवेशपत्र (वीसा) देता है। इस स्थिति का अमरीका नाजायज फायदा उठाता है। उसने पश्चिमी जर्मन फेडरल गणराज्य के प्रतिनिधि को प्रवेशपत्र दिया है। फलस्वरूप यह प्रतिनिधि राष्ट्र संघ में प्रेक्षक की हैसियत से बैठा है। लेकिन जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधि को अमरीका प्रवेशपत्र देने से इन्कार करता है, इसलिये सं. राष्ट्र संघ में उसका प्रेक्षक नहीं है। राष्ट्र संघ के पहले महासचिव, स्व. हैमरशोल्ड ने इसी नीति को चालू रखने के लिये यह बहाना ढूंढ निकाला था चूंकि जर्मन जनवादी गणतंत्र को संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिकांश सदस्य देशों ने मान्यता नहीं दी है इसीलिये उसको सं. रा. सं. का सदस्य नहीं बनाया जाता। लेकिन पश्चिमी देशों के अधिकांश राजनीतिज्ञ जानबूझकर यह तथ्य नजरअंदाज करते हैं कि ३० से अधिक देशों के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र के सरकारी संबंध हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ के वर्तमान महामंत्री, श्री ऊ थांत ने, उक्त अवास्तविक नीति को तिलांजलि दी है। राष्ट्र संघ की १९वीं महासभा के सामने प्रस्तुत किये गये अपने वार्षिक रिपोर्ट में उन्होंने कहा कि ऐसे राज्यों को, जो अभी संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य नहीं बन सके हैं, ऐसा मौका दिया जाना चाहिये ताकि वे राष्ट्र संघ के काम को बहुत निकट से देख सकें। २०वीं महासभा के अध्यक्ष, घाना के प्रतिनिधि ने भी इस विचार का समर्थन किया।

महासचिव, ऊ थांत द्वारा प्रतिपादित, वास्तविकता पर आधारित उक्त नीति से, बोन (पश्चिमी जर्मनी) के राजनीतिज्ञ, बहुत परेशान हैं। उनकी इस परेशानी का मात्र कारण यह है कि यदि जर्मन जनवादी गणतंत्र का प्रतिनिधि राष्ट्र संघ में दाखिल होगा तो उनके इस गलत दावे की धज्जियां उड़ जायेंगी कि केवल बोन ही समस्त जर्मन जनता का प्रतिनिधि है।

पश्चिमी जर्मनी के परराष्ट्र मंत्री, श्री श्रोयडर ने, अमरीका के राज्य-सचिव, श्री डीन रस्क से कहा है कि अमरीका, जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधियों को न्यूयार्क में आने के लिये प्रवेश-पत्र (वीसा) न दे। कहा जाता है कि श्री डीन रस्क ने बोन के हाकिमों को खुश करने के लिये ऐसा करना मान लिया है। लेकिन जो लोग यह सोचते हैं कि प्रवेश-पत्र न देकर वे जर्मन जनवादी गणतंत्र को संयुक्त राष्ट्र संघ की कार्रवाई में भाग लेने से रोक सकते हैं, वे स्वप्नों के संसार में रहते हैं।

यह एक बहुत बड़ी हकीकत है यदि संयुक्त राष्ट्र संघ शांति कायम रखना और निरस्त्रीकरण करना चाहता है, यदि वह उपनिवेशवाद, नव-उपनिवेशवाद तथा जातिभेद को खत्म करना चाहता है, और यदि वह अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना चाहता है, तो वह सं. रा. सं. के सभी देशों का सहयोग प्राप्त किये बिना, इन उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर सकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर और उक्त उद्देश्यों की अहमियत को देखते हुये ही, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, संयुक्त राष्ट्र संघ की पिछली महासभा को एक स्मृति-पत्र भेजा था जिसमें उसने संयुक्त राष्ट्र संघ को उक्त उद्देश्यों को पूरा करने के लिये अपने सहयोग की पेशकश की है।...इसी दृष्टिकोण से प्रेरित होकर, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, हाल ही के काहिरा सम्मेलन की इस घोषणा का भी स्वागत किया कि सभी राज्यों को संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रवेश मिलना चाहिये।

विश्व शांति की सुरक्षा के लिये यह जरूरी है कि दोनों जर्मन राज्य संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य बनें। जब तक सदस्यता की समस्या हल हो, तब तक राष्ट्र संघ को दोनों राज्यों के साथ एक जैसा सलूक करना चाहिये--अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रेक्षक को भी राष्ट्रसंघ में आने देना चाहिये, ताकि जर्मन जनवादी गणतंत्र भी इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अपना यथाशक्ति योगदान दे सके।
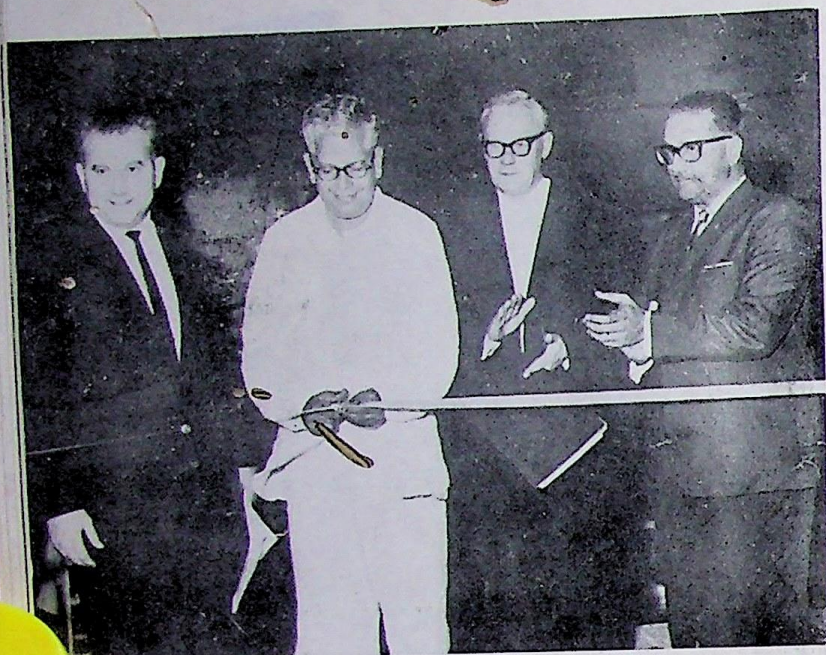
भारत—ज.ज.ग.

निर्माण के सहयोगी

▲ पहली जून को, मद्रास राज्य के उद्योग मंत्री, श्री वेनकटरामन ने, मद्रास के सत्यमूर्ति भवन में, ज. ज. ग. की दफ्तरी-मशीनों की प्रदर्शिनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शिनी आयोजित की थी भारतीय ब्ल्यू स्टार इंजीनियरिंग फर्म ने

▶ १७ से २२ मई तक, ज. ज. ग. में, केरियल रसायन शास्त्रियों और तकनालोजिस्टों की दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय बैठक हुई जिसका एक दृश्य यहां आप देख सकते हैं। भारत के टी. के. घोष ने इस मीटिंग में भाग लिया, जिनके सौजन्य से हमें ये दो चित्र प्राप्त हुये

इस चित्र में (दायें से बायें) प्रोफेसर घोष, प्रो. तकेली (तुर्की से), प्रो. शेल्लेनबर्गर (अमरीका से) और ज. ज. ग. के डा. सिम्मरमान आपस में कुछ बातचीत कर रहे, बैठक में अवकाश के दौरान
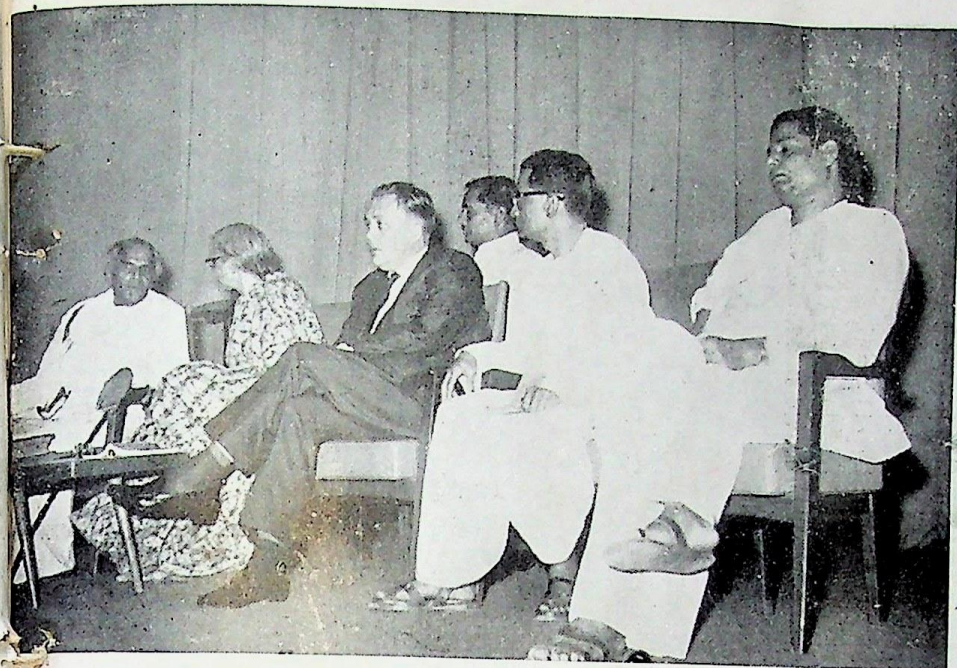
मई मास में, 'भारत -ज. ज. ग. मैत्री संघ' ने, लोकसभा सदस्य, श्रीमती सुभद्रा जोशी के सभापतित्व में, फासिस्तवाद के पराजय की २० वीं जयन्ती मनाई। सभा में श्री कृष्ण मेनन, और भारत में ज. ज. ग. के व्यापार-दूत, श्री कूर्ट बोट्टगर प्रमुख वक्ता थे

इस अवसर पर, ज. ज. ग. के व्यापार दूतावास के जर्मन कर्मचारियों के बच्चों ने सुन्दर गाने गाये
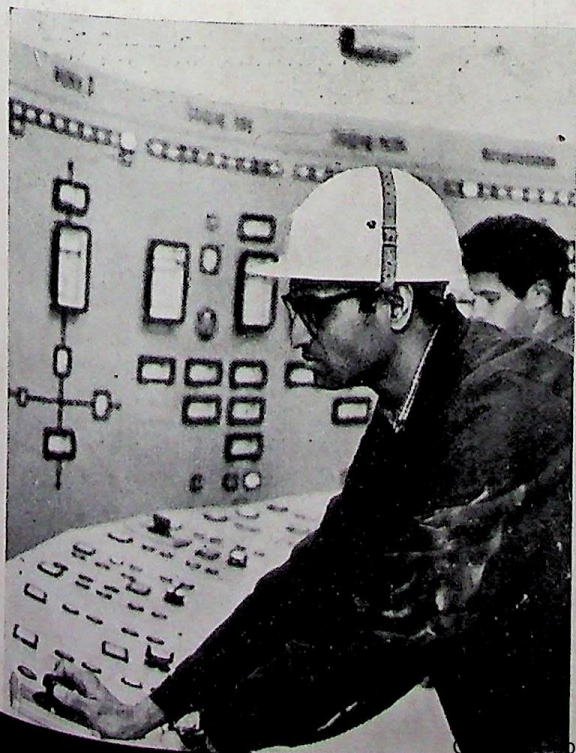
ज. जै. ग. में निर्माणाधीन, सबसे बड़े लिग्नाइट कारखाने, श्वार्ज़ पम्पे (ब्लैक पम्प) में भारत के एक इंजीनियर पीयूष बिसवास, एक वर्ष की अमली ट्रेनिंग ले रहे हैं। श्री बिसवास ड्रेस्डेन तकनीकी विश्वविद्यालय से थर्मो इंजीनियरिंग की ट्रेनिंग लेनेवाले प्रथम भारतीय हैं

बर्लिन - शोएनेफेल्ड का हवाई अड्डा

| एडुवर्ड कार्प

बर्लिन के शोएनेफेल्ड नामक हवाई अड्डे पर, हर दिन दुनिया के सभी देशों के ३,००० यात्री, हवाई जहाजों से उतरते चढ़ते हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र की यह प्रमुख हवाई अड्डा, बर्लिन के दक्षिण-पूर्वी आंचल पर स्थित है, और राजधानी से, मोटर के द्वारा यहां आधे घण्टे का रास्ता है। नवीनतम सुविधाओं और यन्त्रों से सुसज्जित शोएनेफेल्ड का हवाई अड्डा, बस्ती से काफी दूर है, और बड़े-बड़े जेट विमान यहां रात दिन आते-जाते रहते हैं।

इण्टरफ्लूग के विमान से उतरे हुये अनेक देशों के यात्री शोएनेफेल्ड के हवाई अड्डे पर

७ मार्च, सन् १९५९ के दिन ज.ज.ग. के इस हवाई अड्डे का जेट विमानों के उतरने-चढ़ने का पहला दौड़-पथ (रन वे) तैयार हुआ। आज यह दौड़-पथ ३,६०० मीटर लम्बा तथा ६० मीटर चौड़ा है, और यह २०० टन बोझ सहन कर सकता है। इस अत्याधुनिक दौड़-पथ के अलावा इस हवाई-अड्डे को हवाई-यातायात के नवीनतम यन्त्रों, जैसे रेडार, सुरक्षा-बुर्ज आदि से लैस किया गया है। यात्रियों की सुविधा और आराम के लिये दो सुन्दर और बड़े हाल भी बनाये गये हैं। पूर्व निर्धारित स्थान पर जहाजों को उतारने में सहायक यथावत अवतरण रेडार के अलावा, ५० किलोमीटर दूर से आने वाले विमानों का मार्ग दर्शन करने के लिये भी रेडार यन्त्र यहां लगाये गये हैं। २०० मीटर क्षेत्र की परिधि तक भी आने जानेवाले विमानों का, उतरने चढ़ने से पहले मार्ग-दर्शन करने के रेडार भी शोएनेफेल्ड पर लगे हैं।

३० लाख किलोमीटर की हवाई सेवा

हवाई अड्डे से बाहर जानेवाले यात्री पहले एक १२० मीटर लम्बे हाल में दाखिल होते हैं जहां १० दोहरे कांउटर लगे हैं। इन कांउटरों पर, एक घण्टे में १,१०० यात्री निपटाये जा सकते हैं—अर्थात् साल में लगभग १६ लाख यात्री।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मुख्य, अन्तर्राष्ट्रीय हवाई सेवा का नाम है **इण्टरफ्लूग** (Interflug)। इस हवाई सेवा ने, ५० विदेशी हवाई कम्पनियों और ५ अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा-एजन्सियों के साथ अपने वाणिज्य

सम्बन्ध स्थापित किये हैं । इस तरह यात्री, 'इण्टरफ्लूग' हवाई सेवा के द्वारा, दुनिया के सभी देशों में आ जा सकते हैं जिस के विमान ३० लाख किलोमीटर लम्बे हवाई मार्ग पर उड़ान करते हैं । ज.ज.ग. की इस हवाई सेवा ने जिन हवाई कम्पनियों से अपने संबन्ध जोड़े हैं उनमें उल्लेखनीय हैं : एरोफ्लोट, लोट, सी.एस.ए., मालेव, टारोम, जे.ए.टी. षयर फ्रांस, एस.ए.एस., स्विस एयर, के.एल.एम., एयर इण्डिया, एलइटालिया, पानएयर, डे ब्राज़िल और ट्रांस कनाडा एयर लाइन्स ।

पिछले साल, 'इण्टरफ्लूग' के वायुयानों ने ७२ लाख किलोमीटर का फासला तय किया । अपने दस वर्ष के जीवन में, यह वायु सेवा एक भी हवाई दुर्घटना का शिकार नहीं हुई ?

एक ओर मास्को, वारसा, प्राग, बूडापेस्ट और बुखारेस्ट को रवाना होने वाले यात्रियों को रोज़ाना यहां के लाउडस्पीकर सूचित करते रहते हैं । दूसरी ओर सुन्दर ढंग से सजाया गया ट्रांजिट-हाल का द्वार क्षण क्षण खुलता और बन्द होता है । इस हाल में ३५० यात्री एक साथ बैठ कसते हैं। यदि कोई यात्री, कोई चीज घर से लाना भूल गाय है तो वह इण्टरशोप (Intershop) पर उस चीज़ को चुंगी दिये बिना खरीद सकता है ।

उड़ान करने से पहले शोएनेफेल्ड के इस सुन्दर एवं ससुज्जित प्रतीक्षा-हाल में आप आराम से बैठ सकते हैं

नई इमारतें : विनम्र सेवा

शोएनेफेल्ड के हवाई अड्डे पर उतरने वाले हवाई जहाज़, अपने यात्रियों को पूरे हवाई अड्डे की एक झांकी दिखाते हैं——इसकी विशाल विमान शाला, में बहुत बड़े बड़े आई.एल. १८ (IL 18) आकार वाले पांच विमान खड़े रह सकते हैं; आधुनिक सुख ४विधाओं से आरास्ता २०० कमरों वाला हवाई अड्डे का होटल, जिसमें यात्री रात बिता सकते हैं; और निर्माणाधीन दूसरा दौड़-पथ । इस झांकी के बाद यात्री हवाई अड्डे पर क़दम रखेंगे । कई भाषायें बोलने वाली परिचारिकायें अनेप मेको हमानों अलविदा कहेंगी ।

इसके बाद, यात्री, पास ही के रेस्त्रां में बैठकर, पेय-पदार्थों का आनन्द लेते हुये, शीशे की खिड़कियों में से, विशाल हवाई अड्डे से अनेक विमानों का चढ़ना-उतरना देखते रहेंगे । जब सर्दियां आती हैं तो ये विमान पोलैण्ड, बुलगेरिया, रूमानिया, और हंगरी इत्यादि के हिमाच्छादित पर्वतों के ऊपर से उड़कर, यात्रियों को हिम के शीतल सौन्दर्य का आनन्द प्रदान करते हैं ।

शोएनेफेल्ड हवाई अड्डे से, हर साल, १ लाख से अधिक पर्यटक, 'इण्टरफ्लूग' के विमानों में बैठकर काले सागर और बलकान प्रदेशों के अन्य आरोग्य केन्द्रों को जाते हैं अपनी छुट्टियां बिताने के लिये । ज.ज.ग. की इस हवाईसेवा ने अपने प्रथम वर्ष में १२,५३३ यात्री ढोये, लेकिन पिछले साल यह संख्या ३३७,००० तक पहुंच गयी । शोएनेफेल्ड से यात्री, बसों या मोटरों के द्वारा बर्लिन जाते हैं; अथवा वे स्थानीय हवाई जहाजों के द्वारा, ज.ज.ग. के अन्य नगरों, लाइपज़िग-ड्रेस्डेन, एरफूर्ट, बार्ट आदि को उड़ान कर सकते हैं ।

* * * *

शरद्कालीन लाइपजिग व्यापार मेला भी ८००वां जयन्ती मेला होगा

सन् १९६५ के वसन्तकालीन व्यापार मेले की तरह ही इस वर्ष का शरद्कालीन लाइपजिग व्यापार मेला भी ८००वां जयन्ती मेले के रूप में मनाया जायेगा। यह मेला ५ सितम्बर से १२ सितम्बर तक लगेगा।

अनेक देश शामिल होंगे

जयन्ती वर्ष के इस शरद् व्यापार मेले में ६० देशों के, लगभग ६,५००प्रदर्शक अपनी-अपनी वस्तुएं लेकर आयेंगे। प्रदर्शन मैदान का लगभग १,४००,००० वर्ग फुट क्षेत्रफल विभिन्न मण्डपों से घिर जायेगा जो ३० विभागों में बांट दिये जायेंगे। अनुमान है कि इस मेले में लगभग ८० देशों के २३५,००० लोग आयेंगे, जिन में समाजवादी देशों से १५,००० व्यापारी, वाणिज्य विशेषज्ञ, इंजीनियर आदि, और गैर-समाजवादी देशों के ३५,००० ग्राहक तथा पर्यटक भी शामिल होंगे। पहले व्यापार मेलों की तरह ही इस जयन्ती मेले में भी, बड़े पैमाने पर व्यापार और व्यापार-समझौते करने का अच्छा अवसर मिलेगा व्यापारियों को मेले में। जिन उद्योगों के उत्पादन विशेष रूप से प्रदर्शित होंगे उनमें से उल्लेखनीय हैं वस्त्र तथा तैयार कपड़े, खाद्य पदार्थ, पुस्तकें, घरेलू काम की चीजें, रहायशी सामान, रासायनिक उत्पादन ओषधियां और अंगराग (कॉसमेटिक्स) इत्यादि।

ज. ज. ग. की वस्तुएं

सन् १९६५ के उक्त शरदकालीन जयन्ती मेले में जर्मन जनवादी गणतंत्र अनेक वस्तुएं प्रदर्शित करेगा, जिनमें कुछ नई और विकसित वस्तुएं भी शामिल होंगी। ज. ज. ग. की उपभोक्ता वस्तुएं दर्शकों और व्यापारियों का खास तौर से ध्यान आकर्षित करेंगी। तकनीकी उत्पादनों में, टाइपराइटर, गणक, सिलाई की मशीनें, फोटोग्राफी और प्रकाशकीय सामान मुख्य प्रदर्शन-वस्तुएं होंगी।

समाजवादी देश

लाइपजिग के इस व्यापार मेले मे समाजवादी देशों की लगभग १०० विदेश व्यापार संस्थायें एवं संगठन भाग लेने के लिये आ रही हैं। ये संस्थायें ६५,००० वर्ग फुट के क्षेत्रफल पर अपने प्रदर्शन-मण्डप फैला देंगी।

भारत : समुद्रपार देशों में सबसे बड़ा प्रदर्शक

उक्त व्यापार मेले में, ३० समुद्रपार देश अपनी सामूहिक और वैयक्तिक प्रदर्शनियां लेकर आयेंगे। इन देशों में भारतवर्ष पहले की तरह इस बार भी सबसे बड़ा प्रदर्शक होगा। मेलों में भारत की सामूहिक प्रदर्शनी काफी लोकप्रिय और आकर्षक रहती है।

पश्चिमी यूरोप के देश

पश्चिमी यूरोप के पूंजीवादी देशों की अनेक फर्में शरदकालीन व्यापार मेले में भाग लेने के लिये, आतुर हैं। प्रदर्शन-क्षेत्र के आरक्षण के लिये इन फर्मोंके अनेक आवेदन-पत्र मेले के दफ्तर में हर रोज पहुंच रहे हैं। ये फर्में इस बार प्रदर्शनी-मैदानों का १५०,००० वर्गफुट क्षेत्रफल घेर लेंगी। जिन देशों से ये फर्में आयेंगी, उनके नाम हैं : आस्ट्रिया, बेलजियम, साइप्रेस, डेनमार्क, आयर, फिनलैण्ड, फ्रांस, ब्रिटेन, ग्रीस, आइसलैण्ड, इटली, लक्समबर्ग, मोनाको, नेदरलैण्ड्स, नार्वे, पुर्तगाल, स्पेन, स्वीडन और स्विट्जरलैण्ड।

इन देशों के अतिरिक्त पश्चिमी जर्मनी और पश्चिम बर्लिन की अनेक फर्में भी काफी बड़े पैमाने पर उक्त व्यापार मेले में भाग लेंगी।

गोष्ठियाँ

१९६५ के शरद व्यापार मेले में, ज.ज.ग. की "चैम्बर ऑफ टेकनालोजी" नामक संस्था कई गोष्ठियों, परिसंवादों इत्यादि का भी आयोजन करेगी। मेले में आये हुये व्यापारी, इंजीनियर, विशेषज्ञ तथा पत्रकार आदि इन गोष्ठियों एवं व्याख्यानों में भाग लेंगे। इस कार्यक्रम के अंतर्गत तीन गोष्ठियाँ और १५ या २० विशिष्ट व्याख्यान होंगे।

यह चित्र है १८२० के वसन्त कालीन लाइपजिग व्यापार मेले का

जहां २८०,००० फोटो-नगेटिव रखे हुये है

फोटो-चित्रों का विशाल अभिलेखागार
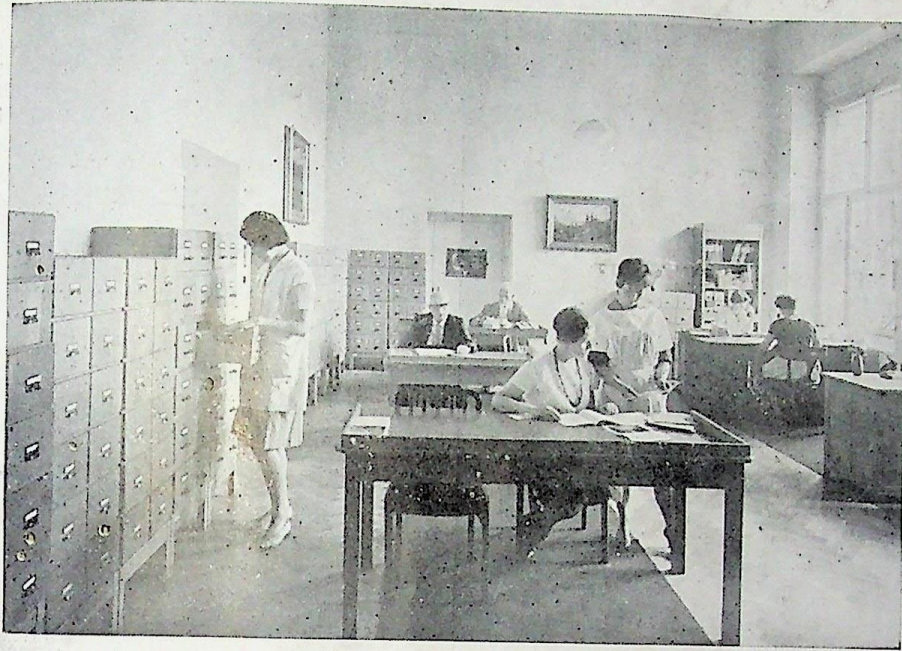
यदि आप किसी प्रसिद्ध पेंटिंग की अनुकृति की तलाश में हैं, अथवा यदि आपको किसी रूप-चित्र की जरूरत है, तो ड्रेस्डेन स्थित "जर्मन फोटोटेक" नामक फोटो अभिलेखागार आपकी सहायता कर सकता है। जर्मन जनवादी गणतंत्र का यह फोटो अभिलेखागार विश्व का एक महान और पूरा सुसज्जित फोटो-चित्रों का विशाल अभिलेखागार है जिसमें २८०,००० बड़े-बड़े नगेटिव रखे गये हैं। ४० से भी अधिक देशों के विश्वविद्यालय, शोधार्थी, प्रोफेसर और प्रकाशक इत्यादि, अपने अपने कार्य के लिये इस अभिलेखागार की सामग्री का उपयोग करते हैं। पिछले साल, ब्राज़िल के सुप्रसिद्ध विद्वान, प्रोफेसर एनरिको शेफ्फर को डच चित्रकार ऐकहौट द्वारा रंगे गये एक छत में चित्रित पक्षियों की फोटो-अनुकृतियों की जरूरत पड़ी। "जर्मन फोटोटेक ड्रेस्डेन" ने तुरन्त उनको ८० रंगीन अनुकृतियां भेज दीं जो अभिलेखागार के छायाकारों ने तैयार कीं।

विश्व के प्रत्येक देश के जीवविज्ञान, भूगोल, कला-इतिहास, तकनालोजी का इतिहास, चित्रकला, और वास्तुकला आदि जैसे विषयों से संबन्धित फोटो-चित्रों के अनेक संग्रह उक्त अभिलेखागार में रखे गये हैं। इन संग्रहों के अतिरिक्त, रूप-चित्रों के संग्रह और स्लाइड भी यहां संग्रहीत हैं जो मांगने पर उधार दिये जाते हैं।

अभिलेखागार के संग्रहों में, युद्ध की तबाही से पहले के ड्रेस्डेन नगर के चित्र भी मौजूद हैं। कला का यह विश्व प्रसिद्ध नगर, इन्हीं अनमोल फोटो-चित्रों की सहायता से, तबाही के बाद एक बार फिर अपने पूर्व रूप और गौरव को प्राप्त कर सका है नवनिर्माण के द्वारा।..

सैंकड़ों चित्रांकित पुस्तकें और अन्य प्रकाशन इस अभिलेखागार के बहुमुखी उपयोग और महत्व के मुंह बोलते प्रमाण हैं। अन्य देशों के शैक्षिक तथा सांस्कृतिक संस्थानों से भी "जर्मन फोटोटेक" के संपर्क और संबन्ध हैं जिनमें लेनिनग्राद का 'हर्मिटेज' और आस्ट्रिया का राष्ट्रीय पुस्तकालय भी शामिल है।...पिछले वर्ष अभिलेखागार के कोष में ५,५०० फोटो नगेटिवों की वृद्धि हुई।

तथ्य और आंकड़े

बर्लिन के उस भाग में, जो वर्तमान जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी है, दूसरे महायुद्ध की समाप्ति पर कुल ९५,३४० इमारतों में से १०,५१३ बिलकुल तबाह हुई थीं, और ५,०९६ इमारतों को आंशिक रूप से नुकसान पहुंचा था।

० हवाई हमलों में इसके १८५,००० फ्लैट तबाह हुये थे।

० ४,००० फ्लैटों की मरम्मत हुई।

० सन् १९५१ से जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने, बर्लिन में नये रिहायशी फ्लैटों के निर्माण के लिये २१५ करोड़ ५० लाख मार्क की रकम खर्च की है।

० पिछले एक दशक में बर्लिनवासियों को रहने के लिये ८१,५०० नये फ्लैट दिये गये।

० सन् १९६५ में, ज. ज. ग. की राजधानी में, नये मकानों की तामीर पर १७ करोड़ ८० लाख मार्क की रकम खर्च की जायेगी।

० पिछले आठ वर्षों में यहां टूटे मकानों की मरम्मत पर १०५ करोड़, ४० लाख मार्क की रकम खर्च की गयी।

२० लाख किलोमीटर का सफर

जर्मन जनवादी गणतंत्र में फ्रित्स सीलिग एक लारी चालक है जिसकी उम्र ६५ वर्ष है। चालक के जीवन में आज तक उसने २० लाख किलोमीटर का फासला तय किया है मोटरगाड़ियां चलाते-चलाते। यह फासला, पृथ्वी की परिधि का पचास गुना है। श्री सीलिग के इस रिकार्ड में शानदार और दिलचस्प बात यह है कि उसने यह फासला ३८ साल में, बिना एक भी दुर्घटना के, पूरा किया है

विटसून में विवाह

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में, विटसून-त्यौहार में ३६४ विवाह रचे गये। इनमें १६२ विवाह त्यौहार की पहली शनिवार को ही सम्पन्न हुये। ईस्टर और क्रिसमस के त्यौहारों के बाद विटसून ही एक ऐसा त्यौहार है जबकि यहां बहुत संख्या में विवाह रचे जाते हैं।

चिट्ठी-पत्री

प्रिय महोदय,

सूचना पत्रिका मुझे निरन्तर प्राप्त होती रहती है। इसके रूपरंग से मैं बहुत प्रभावित हूं। आपके देश और उसकी प्रगति के संबंध में जो सूचनाएं मिलती हैं वे बहुमूल्य हैं। घर बैठे ही मानो आपके सुन्दर देश की यात्रा कर आता हूं। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका इन दो महान देशों में भावनात्मक एकता स्थापित करने में निरन्तर सफल होगी। मेरी बधाई लें।

विष्णु प्रभाकर
(लेखक तथा पत्रकार)
दिल्ली–६

आदरणीय महोदय,

जर्मन जनवादी गणतंत्र की **सूचना पत्रिका** पढ़कर मुझे बहुत आनन्द आया, विशेषकर भारत जर्मन मित्रता देख कर। हिटलर तो खतम हो गया लेकिन अभी भी कुछ ऐसे लोग हैं जो दुनिया को तबाह करना चाहते हैं। उनको उन्हीं की भाषा में उत्तर देने के लिये भारत-जर्मन-रूस मैत्री बहुत जरूरी है और तमाम दुनिया के साम्राज्य विरोधी उपनिवेशवाद विरोधी ताकतों को हमेशा साम्राज्यवादियों से निपटने के लिये तैयार रहना चाहिये।

के. पी. गुप्ता
झांसी (उ. प्र.)

बधाई : कविता में

प्रिय महोदय,

सादर जय हिन्द !

विश्व शांति गणतंत्र उपासक
गूंज रही शहनाई है।
व्यापार वृद्धि निर्माण कला की
जो करती पटुताई है।।
देश, विदेशन की खबरों से
माला गूंथ बनाई है।
"शंकर मण्डल" के सन्मुख
यह "सूचना पत्रिका" आई है।।

रामदत्त शर्मा 'पथिक'
बिजनौर (उ. प्र.)

मान्यवर महोदय,

सूचना पत्रिका के अंक यत्र-तत्र कभी-कभी देखने को मिल जाते हैं। बिना पूरा पढ़े सन्तोष होता नहीं। भारत-जर्मन मैत्री का प्रतीक बन कर सचमुच यह पत्रिका हमें प्रेरणा ही देती है। कई बार समाचारपत्रों या अन्य निबन्धों के निर्माण में इस पत्रिका से मुझे बड़ी सहायता मिलती है। मेरा आपसे सादर निवेदन है कि इसका प्रत्येक अंक तथा दूतावास से प्रकाशित अन्य उपयोगी प्रकाशन भिजवाते रहें।

स्थानीय साहित्यिक संस्था 'नव संगम परिवार' के अध्यक्ष की हैसियत से भी ऐसा निवेदन कर रहा हूं। मेरी आन्तरिक शुभकामनाएं स्वीकारें। योग्य सेवा के लिए सदैव तत्पर।

सुरेश दुबे 'सरस'
सम्पादक **नवांकुर**
पटना (बिहार)

प्रिय मित्र,

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि **सूचना पत्रिका** का प्रकाशन जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, नई दिल्ली द्वारा हो रहा है। यह पत्रिका मुझे अचानक किसी मित्र द्वारा पढ़ने का सुअवसर मिला। 'सूचना पत्रिका' के लेख, समाचार तथा चित्र इत्यादि से मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ। पत्रिका की रूप-सज्जा अत्यधिक आकर्षक है तथा लेख और समाचार ज्ञानप्रद भी।

मेरी शुभकामना है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारत के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध और अधिक ठोस, सुदृढ़ एवं स्थाई बनते रहें। मैं पुस्तकालय की ओर से आपसे आग्रह करता हूं कि आप 'सूचना पत्रिका' की हिन्दी एवं अंग्रेजी की एक-एक प्रति हमारे पुस्तकालय को उपहार के रूप में नियमित रूप से भेजने की कृपा करें।

बिन्देश्वरी मिश्र 'बनमाली'
मुंगेर (बिहार)

श्रीमान्,

आपकी **सूचना पत्रिका** प्रत्येक मास उपलब्ध हो जाती है। फासिस्टवाद के अन्त के बाद जर्मन जनवादी गणतंत्र की जितनी प्रगति एवं विकास हुआ निश्चित ही प्रशंसनीय है। जर्मन जनवादी गणतंत्र का विकास, उपनिवेशवाद से मुक्त स्वतंत्र राष्ट्रों को नई प्रेरणा देगा और उनके विकास में सहायक होगा। उक्त 'पत्रिका' के द्वारा भारत और ज.ज.ग. में सद्भाव, प्रेम और सहिष्णुता की भावना उत्पन्न होकर विश्व में एक नयी ज्योति प्रस्फुटित होगी। आशा है हम भारतीय आप के देशवासियों के सहयोग के बल पर प्रगति के मार्ग पर बढ़ सकेंगे।

हमारी शुभकामनाएं दोनों देशों के अगाध मैत्री को चिरंजीवी बनावें।

तेगबहादुर सिंह
सह-सम्पादक
बलिया समाचार
बलिया (उ.प्र.)

राष्ट्रपति टीटो की ज. ज. ग. यात्रा

(पृष्ठ ४ का शेष)

हैं; जिनके आधार पर अपने-अपने देश के विकास संम्बंधी भिन्न राष्ट्रीय परिस्थितियों को ठेस पहुंचाये बिना, हम एक दूसरे के साथ, निकट से निकटतर सहयोग प्रदान कर सकते हैं ..."

यूरोप में स्थाई शांति को कायम करने का उल्लेख करते हुये, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने "एक मजबूत यूरोपीय शांति व्यवस्था स्थापित करने की बात की। हाल्ले शहर में (जहां राष्ट्रपति टीटो ने एक विराट जनसभा में भाषण दिया) श्री उल्ब्रिख्त ने यूरोप के राज्यों का एक सम्मेलन बुलाने और उसमें शांति सुरक्षा के उपायों पर विचार करने का प्रस्ताव रखा। इस सिलसिले में उन्होंने कहा: "यूरोप की शांति वार्ता में जर्मनी का, अर्थात् दोनों जर्मन राज्यों का, शामिल होना स्वाभाविक भी है और अनिवार्य भी। ...

"इस संदर्भ में दोनों जर्मन राज्यों का सर्वप्रथम काम होगा एक अखिल जर्मन परिषद् कायम करके, आपस की सद्भावना तथा समझौते की ओर अग्रसर होना, तनावों को कम करना, और जर्मन समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से हल करना। ..."

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष ने इस बात पर ज़ोर दिया कि "पश्चिमी जर्मनी के प्रतिशोधवादी तत्वों और उनकी सरकार द्वारा दी जानेवाली उत्तेजनात्मक कार्रवाइयों को देखते हुये, यूरोप में, चिरस्थाई शांति का कायम होना और भी ज़रूरी हो गया है। और यह शांति केवल आज की ऐतिहासिक स्थिति की वास्तविकता के आधार पर ही कायम की जा सकती है। ..." इस संबंध में श्री उल्ब्रिख्त ने सुझाव दिया कि यूरोप के राज्यों का उक्त सम्मेलन:

१. "यूरोप में एक अणु-मुक्त क्षेत्र तैयार करे, और वर्तमान सीमाओं को मान कर, नाटो तथा वारसा सन्धियों के सदस्य राज्यों के बीच एक अनाक्रमण संधि तैयार करे;

२. "ऐसे उपायों पर विचार करे जिनसे दूसरे महायुद्ध के बचे खुचे [illegible]ामों को पूरा किया जा सके, और दोनों जर्मन राज्यों के साथ [illegible] संधि करे;

३. "ऐसे उपाय भी सोच ले जिनसे यूरोप के राज्यों के आपसी सहयोग में वृद्धि हो। ..."

श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, पश्चिमी जर्मन सरकार द्वारा वियतनाम और दोमिनिक गणराज्य पर अमरीकी आक्रमण के हिमायत करने की कड़ी निन्दा की। इस सिलसिले में उन्होंने कहा:

"अमरीका की यात्रा के दौरान चांसलर एरहार्ड ने अमरीकी साम्राज्यवादियों को, वियतनाम की जनता पर पाशविक अमरीकी हमले और दोमिनिक गणराज्य के घरेलू मामलों में उनके सैनिक हस्तक्षेप की नीति का पश्चिम जर्मन सरकार के समर्थन का यकीन दिलाया। श्री एरहार्ड ने ऐसा इसलिये किया ताकि उसको बोन सरकार की खतरनाक प्रतिशोधवादी नीति और अणु शस्त्रों को हस्तगत करने में अमरीका की अधिक मदद मिले।

"वियतनाम, दोमिनिक गणराज्य और कांगो की घटनायें यह सिद्ध करती हैं कि साम्राज्यवादी कोई भी जघन्य अपराध करने से नहीं हिचकिचाते हैं।

"हम मांग करते हैं कि अमरीका, वियतनाम जनवादी गणराज्य पर अपने हमलों को फौरन बन्द करे, अमरीका दक्षिणी वियतनाम की जनता के खिलाफ अपने गन्दे युद्ध को समाप्त करे और वह वियतनाम से अपनी पाशविक सेनायें हटा लें। वियतनाम, वियतनामी जनता का है।

"हम, पश्चिमी जर्मनी की शासक पार्टी—क्रिश्चियन डेमोक्रेकटिक पार्टी का जबरदस्त विरोध करते हैं जो अमरीकी आक्रमणकारियों का समर्थन करती है, और इस तरह उनको, वियतनाम की जनता के खिलाफ युद्ध को अधिक फैलाने में प्रोत्साहन देती है। ..."

बाल प्रकाशन-घर

(पृष्ठ ६ का शेष)

को साहित्यिक और राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुके हैं।

३५ पुस्तकें 'वर्ष की सबसे सुन्दर पुस्तक' के रूप में पुरस्कृत हो चुकी हैं। बाल तथा तरुण साहित्य विषयक एक पत्रिका शिक्षाविदों, लेखकों तथा बच्चों के माता-पिताओं के विचार-विनिमय का माध्यम है। इस पत्रिका में बाल-साहित्य की समस्याएं पढ़ायी जा सकती हैं और उनका विश्लेषण भी किया जा सकता है। जर्मन जनवादी गणतंत्र में बाल पुस्तकें पहली बार एक विशेष विभाग के अंतर्गत, एक वैज्ञानिक पुस्तकालय—बर्लिन की जर्मन स्टेट लायब्रेरी में रखी गयी हैं। इस पुस्तकालय में, जहां विश्वभर के वैज्ञानिक और विशेषज्ञ आते रहते हैं, सभी युगों और देशों का सम्पन्न और मूल्यवान बालसाहित्य एकत्र किया गया है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की बालपुस्तकें विश्व में हर जगह मैत्री के संदेशवाहक के रूप में जाती हैं और वे विश्वव्यापी समझदारी के आधार पर आपसी सहयोग का अवसर प्रदान करती हैं।

समाचार

भारत के संसद सदस्य ज. ज. ग. में

आजकल तीन भारतीय संसद सदस्यों का एक दल जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा कर रहा है। उनके नाम हैं : श्री कैलाश चन्द्र (संसदीय मामलों के मंत्रालय में सचिव) और सर्वश्री आर. पी. सिनहा तथा बी.के.पी. सिनहा (राज सभा के कांग्रेस सदस्य)। ज.ज.ग. की राजधानी, बर्लिन में, यहां की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) के अध्यक्ष, प्रोफेसर योहान्नेस डीकमान ने, भारतीय संसद सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया।

प्रोफेसर डीकमान ने, भारत के मेहमानों को ज.ज.ग. की लोकसभा की कार्य-पद्धति एवं संरचना से अवगत किया। संसद सदस्यों ने ज.ज.ग. में समाजवादी लोक-तंत्र के विकास में काफी दिलचस्पी दिखाई। ज.ज.ग. के पीपुल्स चैम्बर (लोकसभा) और भारत की संसद के बीच मैत्रिपूर्ण संबन्ध कैसे गहरे बना दिये जायें, इस पर भी विचारों का आदान प्रदान हुआ। बातचीत के दौरान, ज.ज.ग. के उप विदेश मंत्री डा. वोलफगांग कीज़ेवेट्टर भी मौजूद थे।

रविवार के दिन भारत के संसद सदस्य लाइपज़िग-मार्कलीबर्ग में कृषि प्रदर्शनी देखने गये। प्रदर्शनी से प्रभावित होकर संसदीय प्रतिनिधि मण्डल के नेता, श्री कैलाश चन्द्र ने कहा कि एक कृषि प्रधान देश होने के नाते, भारतवर्ष, ज.ज.ग. जैसे एक औद्योगिक दृष्टि से जबरदस्त विक-सित देश के कृषि विकास में गहरी दिल-चस्पी रखता है। ज.ज.ग ने कृषि में काफी विकास किया है, और भारत भी [illegible] का काफी हद तक यन्त्रीकरण [illegible]हता है। इस दृष्टि से ज.ज.ग. [illegible] की सफलताओं का अध्ययन [illegible] सहायक रहा।

१९६५ लाइपज़िग मेले के स्वर्णपदक

इस वर्ष के शरद्कालीन लाइपज़िग व्यापार मेले में भी, उच्च कोटि की वस्तुओं को स्वर्ण पदकों और प्रशंसा-पत्रों से सम्मानित किया जायेगा (पिछले वर्ष की तरह)। यह मेला ५ से १२ सितम्बर तक आयोजित होगा। प्रदर्शकों के आवेदन-पत्र १० अगस्त, १९६५ तक स्वीकार किये जायेंगे।... उच्च कोटि के वस्तुओं को स्वर्ण पदक देने की परम्परा, सन् १९६३ के वसन्तकालीन लाइपज़िग व्यापार मेले से शुरू की गई।

३६० मीटर ऊंचा टेलिविजन बुर्ज

बर्लिन में एक ३६० मीटर ऊंचा टेलि-विजन टावर तामीर हो रहा है। १९७ मीटर की ऊंचाई पर, इस बुर्ज में, ८ मंज़िलों वाला, एक गोलाकार कैफे बनेगा जिसका व्यास ३२ मीटर होगा। इस कैफे में २०० व्यक्तियों के लिये बैठने की जगह होगी।

कैफे के ऊपर शंकुआकार का एक विशाल कमरा तामीर होगा जिसमें यन्त्र तथा तक-नीकी सुविधायें होंगी। यह विशाल कमरा टेलिविजन के ६० मीटर ऊंचे मास्ट के लिये बुनियाद का काम भी करेगा। इस २०० मीटर ऊंचे बुर्ज पर चढ़ने के लिये ३ लिफ्ट होंगे, जो एक घण्टे में ४८५ व्यक्तियों को चढ़ाया उतारा करेंगे।

वर्तमान बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि की अन्तिम अवधि

जर्मन जनवादी गणतंत्र और पश्चिम बर्लिन सेनेट के बीच, जर्मन जनवादी गण-तंत्र की राजधानी में, प. बर्लिन के निवासियों के आने और अपने सगे-संबंधियों से मिलने के सिलसिले में पिछले साल जो प्रवेश-पत्र संधि हुई, उसकी चौथी और अन्तिम अवधि, ३१ मई के दिन शुरू हुई। उस दिन से लेकर १३ जून तक, उक्त संधि के अन्तर्गत लगभग ५ लाख पश्चिम बर्लिन निवासी जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी में अपने संबंधियों से मिलने के लिये आये।

बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि में इस बात की भी गुंजाइश रखी गयी है कि संधि की अवधि समाप्त होने से तीन मास पहले, अर्थात २४ जून तक, इस संधि की अवधि को बढ़ाने के सिलसिले में बात-चीत चलाई जाय। संधि में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि : "दोनों ओर से इस बात का भरसक प्रयत्न किया जायेगा कि संधि को सफल बनाने और सुचारू रूप से चालू करने के लिये हर संभव प्रयत्न किया जायेगा।..." लेकिन अफसोस से कहना पड़ता है कि पश्चिम बर्लिन के सेनेट (नगर प्रशासन) ने इस नियम का घोर उल्लंघन किया।

पश्चिमी जर्मनी में मौजूद कई जासूस एजेनसियों ने इस संधि का दुरुपयोग किया। इसका प्रमाण है वह मुकदमा जो प. बर्लिन के चार जासूसों पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी में चल रहा है। इन चार अपरा-धियों ने, यहां के कई नागरिकों को बहला-फुसला कर और जाली पारपत्र बनाकर, सीमा के उस पार पहुंचा दिया। इस मुकदमे में यह बात बिलकुल साफ हुई कि पश्चिम बर्लिन में न केवल कई जासूसी संस्थायें हैं, बल्कि उनको सरकारी अधिकारियों का सह-योग भी प्राप्त है। मुकदमे में कई गवाहों और चारों मुलजिमों ने इस रहस्य का उद्घा-टन किया कि कई जासूस संस्थाओं के नेताओं ने उनको बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि का अधिक से

लाइपज़िग में नेहरू प्रदर्शनी

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विश्व प्रसिद्ध व्यापार मेलों के नगर लाइपज़िग के सुविख्यात विश्व-विद्यालय, कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय के भारतीय संस्थान में स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू की पुण्य स्मृति में एक फोटो प्रद-र्शनी चल रही है। इस प्रदर्शनी में फोटो-ग्राफों के माध्यम से नेहरू के जीवन और कृतित्व को दिखाया गया है। प्रदर्शनी के एक भाग में, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बढ़ते हुये संबन्ध, चित्रों के द्वारा दर्शाये गये हैं।

अधिक फायदा उठाने—अर्थात ज. ज. ग. के खिलाफ कुछ उत्तेजनात्मक काम करने की हिदायत दी थी।

प. जर्मनी का राज्य सचिव एक नाज़ी था

पश्चिमी जर्मनी के विकास सहायता मंत्रालय का राज्य सचिव, फ़्रीडरिख कार्ल वियालां एक नाज़ी अधिकारी था जिसने सन् १९४३ में २१,२२ और २३ जनवरी को, सोवियत संघ के नाज़ी अधिकृत रीगा नामक कस्बे में, फासिस्त क्षेत्रीय कमिशनरों की एक मीटिंग में भाग लिया था। नाज़ी अधिकारियों की इस मीटिंग में यहूदियों की सम्पत्ति को छीनने और उनको खत्म करने तथा सोवियत छापामारों को शिकंजे में कसने के सिलसिले में फैसले किये गये थे। इस रहस्य का उद्घाटन उन दस्तावेज़ों के ज़रिये हुआ जो जर्मन जनवादी गणतंत्र के कब्जे में हैं और जो हाल ही में, पश्चिमी जर्मनी के सरकारी वकील के दफ्तर में जमा कियेगये।

इन दस्तावेज़ों में, फ्रीडरिख वियालां के नाज़ी अपराधों के पूरे सबूत मौजूद हैं। इन दस्तावेज़ों के हाशियों पर विलायां की हस्तलिपि में कई हुकुम दर्ज हैं जिनमें उसने यहूदियों से छीनी गई सम्पत्ति को उसके दफ्तर में जमा करने का हुकुम दिया था। इस बात का भी साफ सबूत मिलता, है कि वियालां ने, फासिस्त जासूसों और जर्मन आक्रामक सेना की हर तरह से मदद की।

प्राचीन काप्ट जाति के बहुमूल्य वस्त्र

बर्लिन राष्ट्रीय संग्रहालय के प्राचीन ईसाई एवं बाइज़ानटीन विभाग में, मिश्र देश में रहने वाली काप्ट नामक एक प्राचीन ईसाई जाति के नाना रंग और डिज़ाइनों के शानदार पहनावे रखे गये हैं। इनकी संख्या लगभग ८०० है, और ये कपड़े, वर्तमान शताब्दी के आरम्भ में, मिश्र देश के पानोपोलिस नामक संस्थान में रहने वाली काप्ट जाति की बस्तियों में पाई गयी कब्रों से प्राप्त हुये।

काप्ट जाति के उक्त वस्त्र ३ से लेकर ७वीं शताब्दी के हैं, और आज उनकी दशा बहुत अच्छी है। इन अमूल्य वस्त्रों में एक कपड़ा ऐसा है जिस पर सन्त पीटर की कथा चित्रित की गई है। ऐसे वस्त्र ५ वीं, ६ठी शताब्दी में कफन के तौर पर इस्तेमाल हुआ करते थे। इसके अलावा संग्रहालय के इस विभाग के संग्रह में कीमती आभूषणों से सुसज्जित १३०० वर्ष पुराना एक वेश रखा हुआ है।

अमरीकी व्यापार-फर्में लाइपज़िग मेलों में भाग लेंगी

ऐसा पता चला है कि अमरीका की अनेक व्यापार-फर्में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विश्वप्रसिद्ध लाइपज़िग व्यापार मेलों में अब भाग लेना शुरू करेंगी। इस पर पश्चिमी जर्मनी की प्रमुख समाचार एजेंसी की यह टिप्पणी दृष्टव्य है:

"लाइपज़िग के पिछले वसन्तकालीन व्यापार मेले में पश्चिमी व्यापार-फर्मों की सफलता को देखकर अमरीका के व्यापारियों ने अपने देश के वाणिज्य विभाग से यह पूछा कि अन्य पश्चिमी देशों की तुलना में उन्हें को क्यों मेले में भाग लेने से रोका जा रहा है।..."

अमरीकी सरकार ने हमेशा अपने व्यापारियों को "चेतावनी" दी है कि वे लाइपज़िग व्यापार मेलों में शामिल न हों। लेकिन अमरीकी व्यापारियों के बढ़ते हुये दबाव के कारण अब ये "चेतावनियां" बन्द कर दी जायेंगी। और लाइपज़िग मेलों में शामिल होने में रुकावटें दूर कर दी जायेंगी।

यात्री तथा अन्य पोतों का निर्माण

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विज़मार प्रान्त में "माटियास-टेज़ेन" नामक पोत-निर्माण का कारखाना पिछले १५ वर्षों से यात्री-पोत
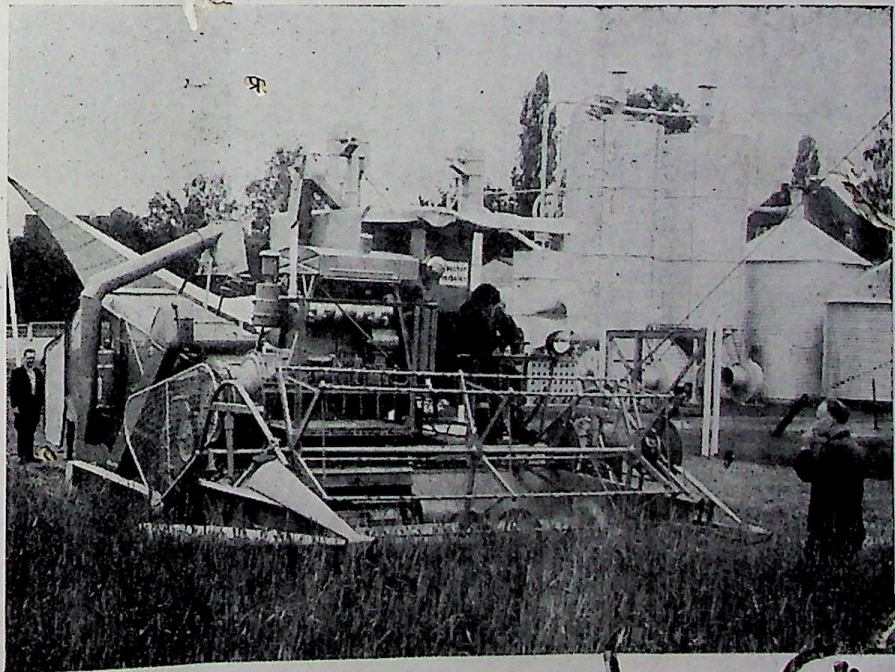
१३ जून से लेकर ११ जुलाई तक, जर्मन जनवादी गणतंत्र की १३वीं कृषि प्रदर्शनी ला[illegible] निकट, मार्कलीबर्ग के स्थान पर लगी थी। यह प्रदर्शनी १४० हेकटर भूमि पर फैली थी [illegible] ८१ प्रदर्शन मण्डप थे। दोनों जर्मन राज्यों और अन्य देशों के लगभग ७५,००० दर्श[illegible] इस प्रदर्शनी को देखा

हा हाल ही में जर्मन जनवदी गणतंत्र के एक सैनिक प्रतिनिधिमण्डल ने बर्मा का, नौ दिनों का दौरा किया। यह प्रतिनिधिमण्डल बर्मा की सरकार का मेहमान था और इसका नेतृत्व कर रहे थे ज.ज.ग. के उप प्रतिरक्षा मंत्री एडमिरल वाल्डेमार बर्नेर। उक्त सैनिक प्रतिनिधिमण्डल ने बर्मा में, वहां के नेताओं के साथ सैनिक एवं राजनीतिक मामलों पर बातचीत की

बनाता रहा है। इस समय इस कारखाने में "एलेक्जांडर पुश्किन" नामक ७०वां यात्री-पोत निर्माणाधीन है। इसका वजन १६,००० टन होगा। पिछले १५ वर्षों में "माटियास-टेजेन" कारखाने ने जितने जहाज तामीर किये उनका कुल वजन २३३,००० टन है।

इस कारखाने के तकनीशियन इस समय एक नया यात्री-पोत तैयार कर रहे हैं जिसका वजन २५,००० टन होगा। इन पोतों के अलावा उक्त कारखाना मछलियां पकड़ने वाले जहाज तथा शोध-पोत भी निर्माण करता रहेगा।

विकलांगों के लिये अस्पताल

जर्मन जनवादी गणतंत्र के रूडोल्फ एल्ला नामक विकलांग अस्पताल में, सन् १९६४ में २,५०० रोगियों का इलाज हुआ। इन रोगियों में साइप्रेस, अलजीरिया, क्यूबा और लातीनी अमरीका के अन्य देशों के १३० ... भी शामिल हैं। सन् १९५० से लेकर ... इस अस्पताल में ..२ देशों के विक- ... लिये ३,५०० कृत्रिम अवयव ... बनाये गये हैं। ... तकनीक

उक्त अस्पताल की ख्याति दूर-दूर तक पहुंच गई है। यहां के डाक्टरों और कृत्रिम अवयव तैयार करने वाले तकनीशियनों ने ६० से अधिक वैज्ञानिक लेख लिखे हैं। इन लेखों में से ४४ लेख अस्पताल के निदेशक, डा. हांस उनगर ने लिखे और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में पढ़े हैं।

एक ही उड़ान में बर्लिन से काहिरा

जर्मन जनवादी गणतंत्र की अन्तर्राष्ट्रीय हवाई सेवा "इन्टरफ्लूग" ने, २२ जून के दिन, बर्लिन से काहिरा तक की सीधी उड़ान का उद्घाटन किया। यह उड़ान बर्लिन से काहिरा हर मंगलवार को, और काहिरा से वापस बर्लिन हर बुद्धवार को हुआ करेगी। बर्लिन से इस नई हवाई सेवा की उद्घाटन उड़ान में कई पत्रकार भी शामिल थे और बर्लिन के शोएनेफेल्ड हवाई अड्डे पर ज.ज.ग. के यातायात मंत्री, श्री एरविन कामर ने इस उड़ान के यात्रियों को अलविदा कही।

संयुक्त अरब गणराज्य के प्रथम कोंसल जनरल बर्लिन पहुंचे

संयुक्त अरब गणराज्य के प्रथम कोंसल जनरल, श्री सादुल फत्तारी, जून में जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन पहुंच गये। ज.ज.ग. में संयुक्त अरब गणराज्य के कोंसलेट जनरल की नियुक्ति, राष्ट्रपति नासिर, और अध्यक्ष वाल्टर उल्ब्रिख्त की सहमति का सुफल है। याद रहे कि कुछ ही महीने पहले, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, वाल्टर उल्ब्रिख्त, संयुक्त अरब गणराज्य की यात्रा पर गये थे। उनकी यह यात्रा बहुत ही सफल रही।

जून के पहले १० दिनों में २७३ शरणार्थी

पहली जून से १० जून तक पश्चिमी जर्मनी के २७३ शरणार्थियों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली। इनमें आधे वे हैं जो कई साल पहले, प. जर्मनी के झूठे प्रचार का शिकार होकर वहीं रहने के लिये गये थे जर्मन जनवादी गणतंत्र से। अब वहां की वास्तविकता देखकर ये लोग वापस स्वदेश लौटे थे। इन शरणार्थियों में ३० परिवार भी थे और ७७ कुशल मजदूर भी। ५२ नौ-जवान शरणार्थियों ने प. जर्मनी से भागने का कारण यह बताया कि वे जबरी सैनिक प्रशिक्षण लेकर पश्चिमी जर्मनी के आक्रामक सेनावाद के हथियार बनना नहीं चाहते थे।

८०० वर्ष पुराना कार्ल-मार्क्स-स्टाड्ट

२० जून को, जर्मन जनवादी गणतंत्र के कार्लमार्क्स-स्टाड्ट नामक प्रसिद्ध नगर एवं प्रान्त ने, अपनी ८००वीं जयन्ती मनाई। इस क़स्बे का पहला नाम केमनिट्स था और यह प्राचीनकाल से ही वस्त्रों की बुनाई के लिये विश्वप्रसिद्ध था। कालान्तर में यह जर्मनी के वस्त्र उद्योग के एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। आजकल यह न केवल ज.ज.ग. का एक वस्त्र उद्योग केन्द्र ही है, बल्कि यहां मशीन-निर्माण के अनेक कारखाने भी लगाये गये हैं।

ऊपर, बायें कोने के चित्र में, कार्ल-मार्क्स स्टाड्ट (नगर) के नव निर्मित "राष्ट्रों का मार्ग" नामक सड़क का एक दृश्य है।... और नीचे, दायें कोने के चित्र में है यहां के पुराने टाउन हाल की तस्वीर

सूचना पत्रिका

POST
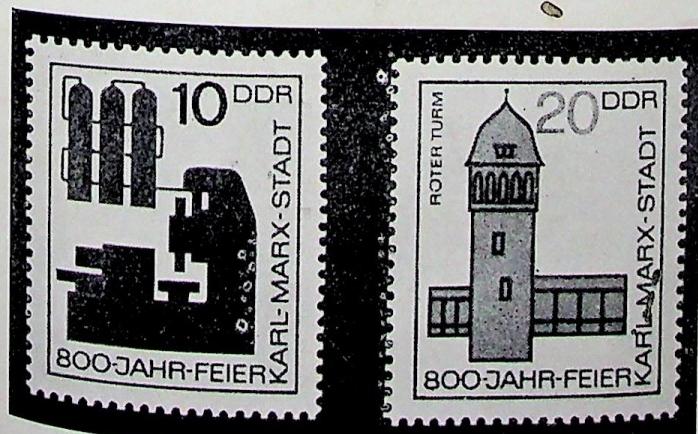
जर्मन
जनवादी
गणतंत्र

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष १० | २० अगस्त, १९६५
अंक ८

संकेत

मुख पृष्ठ : नवनिर्मित लाइपज़िग नगर के सौन्दर्य की एक झलक··

अंतिम पृष्ठ : ··और सागर तट पर मुखर सौन्दर्य की दूसरी झलक !

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और यूनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

अलविदा! भारत...

प्यारे दोस्तो,

एक ऐसे देश से विदाई लेना काफी दुखद है जहां मुझे बहुत आतिथ्य और सौहाद्र मिला साढ़े तीन वर्षों तक। भारत आने से पहले मेरी प्रबल इच्छा थी कि मैं आपके उस देश के दर्शन करूं जिसको शांतिपूर्ण, सह-अस्तित्व और तटस्थ नीति को विश्व के अधिकांश देशों से सम्मान और प्रशंसा मिली है। मेरे देश, जर्मन जनवादी गणतंत्र में भी, भारत की यह नीति बहुत सम्मान की दृष्टि से देखी जाती है।

भौगोलिक दृष्टि से हमारे दो देशों के बीच हजारों मीलों का फासला है, और हमारी जनताओं का इतिहास भी एक दूसरे से काफी भिन्न है। लेकिन इस दूरी और भिन्नता के बावजूद, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र में कई महत्वपूर्ण चीजें हैं जो सामान्य हैं। इन समान चीजों में सबसे पहली है शांति के लिये गहरा प्यार और प्रगति करने के लिये प्रबल इच्छा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के लोग भारत की भव्य और मानवीय सांस्कृतिक परम्परा के प्रशंसक हैं। इसी प्रकार, भारत की जनता हमारे उन जर्मन मनीषियों एवं विद्वानों को आज भी इज्जत से याद करती है जिन्होंने भारत के सन्देश को यूरोप की जनता तक पहुंचाया। भारतीय जनता मैक्स म्यूलर जैसे जर्मन विद्वान, गेटे तथा शिल्लर जैसे कवियों, और हम्बोल्ट एवं कोख जैसे जर्मन वैज्ञानिकों को सम्मान से याद करती है। इसी प्रकार, जर्मनी के प्रगतिशील और उदारचेता लोगों ने भारत के मुक्ति संग्राम की हिमायत और ब्रिटिश उपनिवेशवाद की निंदा की। उसी तरह, भारत के उदारचेता बौद्धिकों और प्रगतिशील जनता ने, स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू जिसके अग्रगण्य थे, जर्मनी में हिटलर के क्रूर फासिस्तथवाद के लिये नफरत दिखाई और इसके पराजय का स्वागत किया। ... यही है वह समान पृष्ठभूमि जो भारत और जर्मन की जनताओं के आपसी रिश्तों के पीछे खड़ी है।

भारत में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधि की हैसियत से मैं यहां अनेक देशों और विचारों वाले लोगों से मिला। ... यह मेरा सौभाग्य था कि स्व. जवाहरलाल नेहरू से मेरी मुलाकात हुई, जिनके देहान्त से, व्यक्तिगत तौर से मुझे, और जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता को बहुत दुख हुआ। श्री लालबहादुर शास्त्री की सरकार के प्रतिनिधियों कला एवं सांस्कृतिक क्षेत्र के वरिष्ठ जनों, अर्थशास्त्र तथा व्यापार के विशेषज्ञों, और अनेक साधारण लोगों से मैं मिला अपने ३½ वर्ष के भारत-आवास में। उन सबका सहज सौजन्य और सहयोग मेरे लिये एक बहुमूल्य स्मृति के रूप में सदा मेरे साथ रहेगा।

मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि पिछले वर्षों हमारे दो देशों में मैत्री के संबंध, न केवल व्यापार के क्षेत्र में ही, बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी काफी विस्तृत और मजबूत हुये। पारस्परिक व्यापार में तो लगभग ५० प्रतिशत की वृद्धि हुई। मुझे इस बात की भी बहुत खुशी है कि मेरे भारत आवास काल में, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच 'सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम' और जहाजरानी की संधियों पर दस्तखत हुये। एक और महत्वपूर्ण संधि है 'जर्मन विज्ञान अकादमी' और 'विज्ञान एवं औद्योगिक अनुसंधान की भारतीय परिषद' के बीच आपसी सहयोग की संधि।

मैं समझता हूं कि अभी ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जिनमें हमारे दो देश सहयोग कर सकते हैं, एक दूसरे का हाथ बटा सकते हैं। इस विस्तृत सहयोग की अनेक संभावनाओं का मुख्य कारण है हमारे दोनों देशों की शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, निरस्त्रीकरण और व्यापार एवं अर्थतंत्र को विकसित तथा मजबूत करने में आस्था। हम अधिक प्रयत्न करने से इन संभावनाओं को अमल में लाकर दोनों देशों का हित कर सकते हैं।

मैं भारत से विदा ले रहा हूं, भारत वासियों के प्रति अपने हृदय में मित्रता की कोमल लेकिन मजबूत भावनाओं के साथ। एक नये और खुशहाल भारत के निर्माण करने में, उनके सद्प्रयत्नों की सफलता की कामना करता हूं। मैं उन सबका आभारी हूं जिनके व्यक्तिगत संपर्क में मैं आया, और ... अनेकानेक लोगों का मैं तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूं जिन्होंने मुझे, हमारे दो देशों में मित्रता के सम्बन्धों को दृढ़ से दृढ़तर बनाने में सहयोग प्रदान किया।

आपका शुभाकांक्षी

(कूर्ट बटमन) [illegible]

ऐतिहासिक पोट्स्डाम संधि के २० वर्ष

२ अगस्त, १९६५ के दिन, पोट्स्डाम की ऐतिहासिक संधि के २० वर्ष पूरे हो गये। हिटलर और उसके दानवीय फासिस्टवाद की मुंहतोड़ पराजय के बाद, आज से २० वर्ष पहले, ३ अगस्त १९६४ के दिन सोवियत संघ, संयुक्त राज्य अमरीका एवं ब्रिटेन ने इस संधि पर हस्ताक्षर किये। बाद में फ्रांस ने भी इस संधि पर दस्तखत किये।

सोवियत संघ, अमरीका और ब्रिटेन की सरकारों के प्रमुखों ने दूसरे महायुद्ध के दौरान ही, १ दिसम्बर, १९४३ के दिन "तेहरान घोषणा" पर और फरवरी १९४५ में "याल्टा संधि" पर हस्ताक्षर किये थे। तेहरान में मित्र राष्ट्रों के प्रमुखों ने, शत्रु के खिलाफ संयुक्त मोर्चाबन्दी पर ही नहीं बल्कि समान नीति अपनाने पर भी बल दिया। ... और याल्टा सम्मेलन तक आते-आते जर्मन सैनिकवाद तथा नाज़ीवाद को समूल नष्ट करने का उद्देश्य स्पष्ट घोषित हुआ। इस सिलसिले में ये शब्द दृष्टव्य हैं :

"हमरा दृढ़ उद्देश्य है जर्मन सैनिकवाद और नाज़ीवाद को पूर्ण रूप से नष्ट करना, और ऐसी स्थिति पैदा करना जिससे जर्मनी फिर कभी विश्व की शांति को भंग न कर सके"। याल्टा सम्मेलन की घोषणा में यह भी स्पष्ट घोषित किया गया था कि :

"हमारा कदापि यह उद्देश्य नहीं है कि जर्मन जनता को नष्ट किया जाये। लेकिन इतना तो स्पष्ट ही है कि जब तक जर्मन सैनिकवाद और नाज़ीवाद को समूल नष्ट नहीं किया जायेगा तब तक तो जर्मन जनता न तो सुखी जीवन व्यतीत कर सकती है और न ही विश्व के राष्ट्रों में जर्मन राष्ट्र को यथोचित स्थान प्राप्त हो सकता है। ..."

इन स्पष्ट घोषणाओं के बाद यह देखना अनुचित न होगा कि पोट्स्डाम संधि के बुनियादी सिद्धान्तों एवं शर्तों पर, युद्धोत्तर जर्मन इतिहास में, कितना अमल हुआ ?

सन् १९४८-४९ में जर्मनी का विभाजन होने और जर्मन भूमि पर दो जर्मन राज्यों की स्थापना के बाद, दो में से एक राज्य —अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र में पोट्सडाम संधि की शर्तों पर फौरी अमल शुरू किया गया। युद्ध समाप्त होने के बाद तुरन्त सोवियत अधिकृत अधिकारियों ने, जर्मनी के पूर्वी भाग में, समस्त युद्ध सामग्री को नष्ट कर दिया, और उन्होंने सभी तरह के सैनिक अनुसन्धान पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इस तरह सन् १९४७ के अक्तूबर मास तक सोवियत अधिकारियों ने जर्मनी के इस भाग में हथियार बनानेवाली ७३३ फैक्ट्रियों को बन्द [illegible] सन् १९४७ में जनवरी से जुलाई मास तक, मित्र राष्ट्रों [illegible] मित्र निरीक्षण' आयोग ने जर्मनी के सोवियत अधिकृत [illegible] दौरा किया। इस आयोग ने इस बात का समर्थन किया कि इस क्षेत्र में हथियार बनानेवाले सभी कारखानों को बजा तौर पर खत्म कर दिया गया है।

दूसरे शब्दों में पोट्स्डाम संधि की बुनियादी शर्तों यानी जर्मन साम्राज्यवाद, सैनिकवाद, प्रतिशोधवाद और हिंसा एवं बल प्रयोग में विश्वास इन सब को ज. ज. ग. में समूल नष्ट कर दिया गया। उदाहरण के लिये यहां एक कानून पास करके युद्ध अपराधियों और सक्रिय नाज़ियों की पूंजी तथा सम्पत्ति ज़ब्त कर ली गई, और इस प्रकार फासिस्तवाद के आर्थिक जड़ों को काट दिया गया। इसी प्रकार जर्मन जनवादी गणतंत्र में भूमि सुधार कानून द्वारा बड़े-बड़े जागीरदारों और सैनकवादियों की ज़मीनें छीनकर और उनको किसानों में बांट कर, इस वर्ग के आर्थिक (शोषण के) आधार को मिटा दिया गया। जनवादी स्कूल सुधार कानून पास करके, और जर्मन संस्कृति की मानवीय परम्परा को पुनर्जीवित करके, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने [illegible] तथा जातिभेद और संकीर्ण राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों को अपने यहां से समाप्त किया। ... इस तरह जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, पोट्स्डाम संधि के बुनियादी सिद्धान्तों और शर्तों को पूरा करके जर्मन भूमि पर

तक

नई जर्मन पीढ़ी की शिक्षा

युद्धोत्तर जर्मनी के बारे में, एकबार, विश्वप्रसिद्ध जर्मन नाटककार एवं कवि, स्वर्गीय बर्तोलत ब्रेख्त ने कहा : "यहाँ के शहर ही खण्डहर नहीं बने हैं, वरन् यहां के लोगों के दिमाग भी खण्डहर बन चुके हैं। ..."

कई वर्षों तक जर्मनी के लोग फासिस्तवादी प्रचार के प्रभाव और नाज़ी शिक्षा में रंगे रहे। इसलिये पोट्स्डाम संधि में घोषित नाज़ीवाद एवं सैनिकवाद के उन्मूलन संबन्धी शर्तें, जर्मनी के भावी शांतिपूर्ण तथा जनवादी विकास के लिये, अत्यन्त महत्वपूर्ण शर्तें थीं। जर्मनी के पूर्वी भाग में —अर्थात् वर्तमान ज. ज. ग. में, जर्मनी की नौजवान पीढ़ी को फासिस्तवाद के पाशविक सिद्धान्तों के शिकंजे से, कम से कम समय में, मुक्त करना था। सभी नाज़ी शिक्षकों को मुअत्तल किया गया और पुराने तथा फासिस्तवाद से पीड़ित शिक्षकों को स्कूलों में पढ़ाने के लिये ट्रेनिंग दी गई। सन् १९४७ तक, ज. ज. ग. के ६५,२०७ कुल शिक्षकों में से ४५,२४४ नये शिक्षक थे। शिक्षा के क्षेत्र में इस क्रांतिकारी परिवर्तन का ही यह सुफल है कि आज जर्मन जनवादी गणतंत्र की नई पीढ़ी के लिये जाति एवं रंगभेद, युद्ध प्रचार, उच्च स्वामी जाति और प्रतिशोधवाद आदि जैसे विचार छू तक नहीं गये हैं। ऐसे विचार यहाँ के नौजवानों के लिये अजनबी हैं।

प्रथम शांतिप्रिय जर्मन राज्य बनाने का गौरव प्राप्त किया। इस ठोस आधार पर खड़ा होने के कारण ही आज, इस प्रभुसत्तात्मक राज्य का यह अधिकार है कि वह पूरे जर्मन राष्ट्र और इसके हितों का प्रतिनिधित्व करे। जर्मन जनवादी गणतंत्र, पिछले दो दशकों में अपने यहां एक समाजवादी, शांतिप्रिय और मानवीय समाज व्यवस्था कायम कर चुका है, और यूरोप के बीच वह विश्व शांति के लिये एक ज़बरदस्त शक्ति बन चुका है।

इजारेदार पूंजी को जब्त करके और भूमि, शिक्षा, प्रशासन और क़ानून व्यवस्था में जनवादी सुधार करके, जर्मन जनवादी गणतंत्र यूरोप के हृदय में शांति और यूरोप की जनता की सुरक्षा के लिये एक सशक्त दुर्ग के रूप में खड़ा है। इस स्थिति तक पहुंचना इसके लिये आसान न था। लोहे, कोयले और जर्मनी की अधिकांश भारी उद्योगों का केन्द्र रूर जर्मनी के पश्चिमी भाग में बसा है, और पोट्सडाम संधि की पहली शर्त यह घोषित हुई थी कि जर्मनी को एक सामूहिक आर्थिक इकाई मानकर इसके अत्यन्त महत्वपूर्ण उत्पादनों और युद्ध के बोझोंको बराबर-बराबर बांट लिया जायेगा। लेकिन संधि की इस पहली शर्त को ही पूरा नहीं किया गया। पश्चिमी शक्तियों ने राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को इस तरह विभाजित कर दिया कि जर्मनी का पूर्वी भाग (जो वर्तमान ज. ज. ग. है–सं) रूर के प्राकृतिक साधनों (लोहा, कोयला इत्यादि) से काट दिया गया। आर्थिक साधनों को इस अन्यायपूर्ण तरीके से बांटा गया कि जर्मनी के पश्चिमी भाग को लगभग सारा कच्चा माल मिला, और पूर्वी भाग पर युद्ध के अधिकांश बोझ डाले गये।

इस गलत और भेदभाव पूर्ण नीति के बावजूद, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने बड़े साहस और साधना के साथ इन मुसीबतों का सामना किया, और नतीजा यह निकला है कि आज ज. ज. ग. औद्योगिक दृष्टि से दुनिया का आठवां, और यूरोप का पांचवा सबसे मजबूत औद्योगिक राज्य है। यही है ज. ज. ग. [illegible] असली [illegible] चमत्कार और इसकी अनुपम औद्योगिक क्रांति।

समस्त जनता के [illegible]ण और सुखी भविष्य के लिये यह ज़रूरी है कि मजदूर कारखानों के, और किसान खेतों के मालिक [illegible] जायें। इसी बात ने उन बड़े बड़े इजारेदारों और ताल्लुकेदारों की [illegible] हराम कर रखी है जिनको ज. ज. ग. ने, पोट्सडाम संधि की शर्तों के मुताबिक उखाड़ दिया है..। जटिल जर्मन समस्या का एक मात्र हल यही है कि दोनों जर्मन राज्य बल प्रयोग, निरस्त्रीकरण तथा प्रतिशोधवाद, को तिलांजलि दें और पारस्परिक संबंधों को सामान्य बनायें। पोट्सडाम संधि की यही शर्त हैं जिनपर अमल करने से नाज़ीवाद और सैनिकवाद को [illegible]नर्जीवित होने से रोका जा सकता है। ...

नाज़ी क़ानून का उन्मूलन...

अपने राष्ट्र और विशेषकर यूरोप के देशों [illegible] प्रति जर्मन राष्ट्र के नये उत्तरदायित्व और कर्तव्य को देखते हुये, जर्मन जनवादी गणतंत्र, नाज़ी हत्यारों एवं न्यायाधीशों और युद्ध अपराधियों की अमानुषिक, कुकृत्यों [illegible] कर रहा है। इससे न केवल जनवादी शक्तियां ही मज़बूत होती हैं बल्कि स्वयं जर्मन राष्ट्र का भविष्य भी सुरक्षित हो जाता है। ज. ज. ग. में नाज़ी-अपराधियों पर मुकदमे चलाकर उनको दण्ड दिया जाता है। उदाहरण के लिये सन् १९४५ से लेकर १९६४ तक जर्मनी के इस भाग में, अर्थात् ज. ज. ग. में, १६,५७२ नाज़ियों पर मुक़दमे चलाये गये, जिनमें से १२,८०७ मुजरिम घोषित हुये और उनको सजा मिली। इन मुजरियों में से ११८ को फांसी की सजा मिली, और २३१ को आजीवन कारावास मिला।

सन् १९४५ में, महान शक्तियों के प्रतिनिधि पोट्सडाम सम्मेलन में

जर्मन जनवादी गणतंत्र में नगर नियोजन

गरहार्ड एच. केगेल

जर्मन जनवादी गणतंत्र में नगरों का आकार आर्थिक क्षेत्र के हर पहलू में नियोजित विकास का परिणाम है। उद्योग, विज्ञान तथा शोध के केन्द्र, नगरों के आकार, स्वरूप तथा उनकी विशेषताएं निर्धारित करते हैं। ज. ज. ग. में नगर नियोजन और जिन वातावरणों में लोग रहते और काम करते हैं, उनके अनुरूप भवन निर्माण आदि के ऐसे दीर्घकालिक कार्यक्रम जिनसे समाज और व्यक्ति को अधिकतम लाभ पहुंचे, बनाये जा सकते हैं।

१९७० तक की दीर्घकालिक योजना का, जिसमें काफी आर्थिक स्रोत और धन लगेगा, सुचिंतित तथा नियोजित कार्यान्वियन औद्योगिक उत्पादकता और भवन परियोजनाओं के विकास द्वारा जनता की सम्पन्नता बढ़ायेगा। यही इस योजना का लक्ष्य है। बड़े-बड़े निवास क्षेत्रों के निर्माण से जनता के जीवन स्तर में काफी वृद्धि हुई है। वैविध्य पूर्ण और दिलचस्प शहरी जीवन के विकास का यह प्रारम्भिक बिन्दु है।

१९७० तक प्रति वर्ष पूरी होनेवाले फ्लैटों की संख्या में १९६४ की तुलना में २५ प्रतिशत की वृद्धि हो जायगी। इसी अवधि में पोलीटेकनिकल हाई स्कूलों की क्षमता में ८ प्रतिशत, नर्सरी स्कूलों की क्षमता में १३ प्रतिशत और बाल गृहों की क्षमता में ३० प्रतिशत की वृद्धि हो जायगी।

इस समय नगर नियोजन पूर्णरूप से, औद्योगिक और नगर केन्द्रों में स्थित बड़े भवनों के निर्माण और रिहायशी क्षेत्रों तथा सड़कों के पुनर्निमाण और मरम्मत के कामों में लगा हुआ है।

वेस्ट-हाले के निर्माण में उक्त दीर्घकालिक योजनाओं में सन्निहित विचार ही मूर्तिमान हुए हैं। वैस्ट-हाले एक नया निवास-क्षेत्र है। इसे हाले-मर्सेबुर्ग-दिट्टरफेल्ड नामक औद्योगिक केन्द्र से, जिसका निर्माण हो रहा है, मिला कर हाले नगर के ऐतिहासिक केन्द्र से संबंधित कर दिया गया है। फ्लैटों के निर्माण में हमारे रसायन तथा अन्य उद्योगों से प्राप्त हो सकने वाली नयी से नयी भवन-निर्माण सामग्री का उपयोग किया गया है। इस प्रकार नागरिक, जिनमें से अधिकांश भविष्य में नये रासायनिक उद्योगों में उच्च स्वचालित उत्पादनों की देखरेख करेंगे, अपने लिए सुन्दर और आधुनिक निवास स्थल का निर्माण कर रहे है।

ज. ज. ग. में नगर नियोजन की एक विशेषता नये निर्माण और पुनर्निर्माण कार्यों का एक साथ चलना है। अनेक नगर केन्द्रों में तीव्र गति से दृष्टव्य परिवर्तन लाने के लिए आवश्यकतानुसार कारखानों और संस्थाओं की भवन योजनाएं बना ली जाती हैं। और उन्हीं केन्द्रों में भारी संख्या में कई मंजिलों वाले फ्लैट निर्मित हो जाते हैं।

उपर्युक्त दीर्घ कालिक योजना की अवधि में अधिकांश निर्माण सामग्रियों और आर्थिक साधन बर्लिन, लाइपज़िग, ड्रेसडन और कार्ल मार्क्स स्टैड के नगर केन्द्रों के निर्माण में लगेंगे। बर्लिन में नगर के मध्य में स्थापत्य और नगर नियोजन का एक ऐसा वैविध्यपूर्ण स्वरूप प्रस्तुत करना है, जिसके चारों ओर विस्तृत निवास क्षेत्र रहेंगे। इन निवास क्षेत्रों के १०, १६, २० या २४ मंज़िला भवनों में ३० हज़ार व्यक्ति निवास करेंगे।

आधुनिक यातायात व्यवस्था अलैक्ज़ांडार चौक को बर्लिन के किसी भी भाग से जोड़ती है। बर्लिन के इस मुख्य स्थल में नये भवन होने

लाइपज़िग का बाज़ार चौक। बाईं ओर लाइपज़िग व्यापार मेले का नया दफतर, और दाईं ओर यहां का टाउन हाल खड़ा है
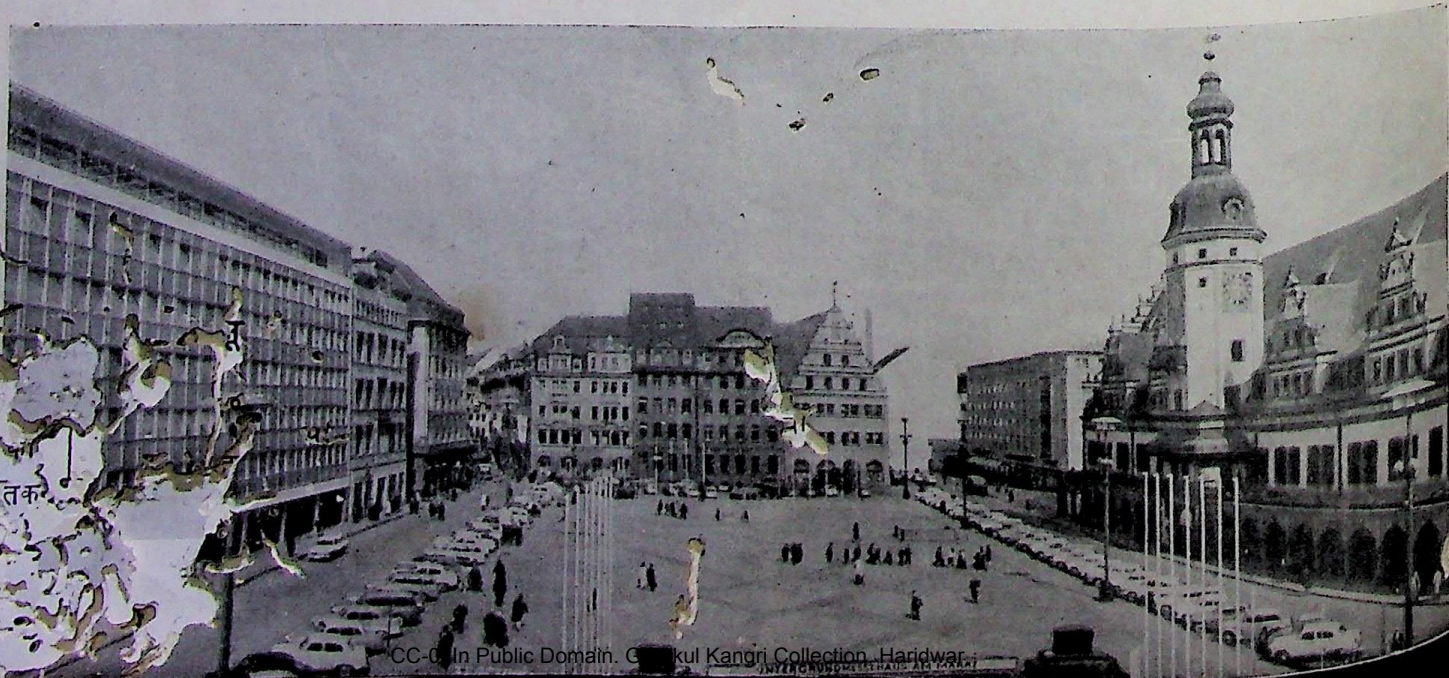
बर्लिन में राज्य परिषद की नई इमारत

बर्लिन का कार्लमार्क्स आल्ले नामक चौक

से, जिनमें एक गगन चुम्बी होटल, एक केन्द्रीय डिपार्टमेन्ट स्टोर, एक प्रेस सेन्टर, एक अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन केन्द्र और सरकारी कार्यालय हैं —यातायात में काफी वृद्धि हो जायगी।

ज. ज. ग. की राजधानी में यह केन्द्रीय भवन क्षेत्र अलेक्जांडर चौक से मार्क्स-एंगेल्स चौक तक फैला हुआ है। यहां पीपुल्स चैम्बर और ज. ज. ग. की मंत्रिपरिषद का केन्द्रीय भवन रहेगा जो ५ हज़ार व्यक्तियों के असेम्बली हाल से संबद्ध होगा। इसीके साथ यहां एक टेलीविजन टावर भी निर्मित होगा।

लाइपज़िग "मार्केट" में नये भवन और 'आल्टे वाग' नामक ऐतिहासिक भवन, जिसका पुनर्निमाण किया गया है, पुराने टाउन हाल के चारों ओर ऐतिहासिक भवनों की सौंदर्य वृद्धि करते हैं।

रेलवे स्क्वायर और कार्ल मार्क्स चौक में नये आधुनिक होटल अपने ऐतिहासिक मेले के लिए प्रसिद्ध इस नगर के नितान्त नये और पुनर्निमित रूप को प्रकट करते हैं। सम्प्रति लाइपज़िग रिंग का विस्तार किया जा रहा है और कार्ल मार्क्स चौक में एक गगनचुम्बी इमारत बनेगी और विश्वविद्यालय भवन में पुनर्निर्माण किया जायगा। मुख्य बोलिवार्ड का आकार, जो रिंग को मेला-भूमि से संबंधित करेगा नगर नियोजन के अन्तर्गत एक बहुत बड़ा कार्यक्रम है। इस बोलिवार्ड के दोनों ओर अधिकांशतः कई मंजिला निवास-भवन और छात्रावास बनेंगे।

ड्रैसडेन में नगर के केन्द्र-स्थल के निर्माण के लिए १९६५ में ही ८ करोड़ मार्क निर्धारित कर दिये गये हैं। कुछ ही वर्षों में एल्बे और सैन्ट्रल रेलवे स्टेशन के मध्य कई मंजिला इमारतें, होटलों और सांस्कृतिक भवनों का एक अत्याधुनिक नगर बन जायगा। महान सांस्कृतिक महत्व का एक और कदम यह होगा कि 'लैण्ड-हाउस' का पुनर्निमाण किया जायगा। ऐतिहासिक 'ओल्ड मार्केट' के सामने मुख्य बोलीवार्ड की खाली जगहें भर दी जायेंगी।

'गेब्रगेनेंटोर' में किले के सिंह द्वार और 'गेवान्ड-हाउस' और अन्य प्रसिद्ध ऐतिहासिक भवनों का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। नगर के केन्द्र में कम्प्यूटर टेकनोलाजी की गगनचुम्बी इमारत और एक रेस्तरां जिसमें १८०० लोग बैठ सकेंगे, हमारी [illegible] निर्माण प[illegible]ना में विशेष महत्व के हैं।

कार्ल मार्क्स श्टट्टट नगर का केन्द्र स्थल, जिसका पुनर्निमाण हो रहा है, छः भागों में विभाजित है। किसी भी दर्शक को सर्वप्रथम आधुनिक कार्यालय भवन, दो मंजिला दूकानें, और नयी चौड़ी सड़कें जिनके इर्द-गिर्द बड़े-बड़े पार्क हैं, प्रभावित करेंगी। स्थापत्य कला ने सुन्दर भवनों को अपना विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान किया है। भवनों के बाहरी भाग ग्लास-अल्मुनियम, लाल पत्थर, संगेमरमर के टुकड़ों और चीनी मिट्टी और दूसरी बहुत सी भवन निर्माण सामग्रियों से बने हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के अन्य नगरों की भांति कार्ल मार्क्स श्टट्टट की भी भवन निर्माण परियोजनाएं १९७० से आगे [illegible] की हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र का [illegible]वन निर्मा[illegible]क्रम जो नये फ्लैटों, होटलों, संस्थाओं, कार्यालय भवनों, पुस्तकालयों आदि के साथ साथ, इन विकसित हो रहे नगरों के निवासियों की सांस्कृतिक आवश्यकताओं को भी पूरा करता है, पूर्णरूप से हमारे औद्योगिक विकास की संभावनाओं के अनुरूप है।

बर्लिन का आधुनिक होटल 'बेरोलिना' और अन्तर्राष्ट्रीय सिनेमा घर

अलेक्ज़ाण्डर चौक, बर्लिन में, अत्याधुनिक शिक्षक-भवन

स्कूटरों पर दक्षिण-पूर्व एशिया की यात्रा

जुलाई के अन्त पर, बरसात में भीगते हुये, जर्मन जनवादी गणतंत्र के दो यात्री अपने "मोपेड" स्कूटरों पर, भारत की राजधानी में दाखिल हुए। इन यात्रियों में से एक का नाम है श्री वोल्फगांग श्रेडर और दूसरे का नाम है डा. हाइंज़ लांगर। श्री श्रेडर इंजीनियर हैं और श्री लांगर, डाक्टर। ज. ज. ग. के ये दोनों यात्री, स्कूटरों पर दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों की यात्रा कर रहे हैं। इस लम्बी यात्रा का प्रमुख उद्देश्य है मोपेड स्कूटरों के 'मोकिक स्टार' नामक प्रकार की क्षमता का परीक्षण करना। ये स्कूटर जर्मन जनवादी गणतंत्र में बनते हैं और बहुत लोकप्रिय हैं। इस प्रकार के स्कूटर की औसत रफतार ५० किलोमीटर प्रति घण्टा है और यह प्रति गैलन पैट्रोल पर लगभग १२० मील चलता है। इसके मोटर की ताकत ३.४ अश्व-शक्ति के बराबर है।

सूचना पत्रिका के दफ्तर में हमने डा. लाँगर तथा श्री श्रेडर से उनकी यात्रा के बारे में बातचीत की, और हमने उनसे कुछ प्रश्न भी पूछे। ये प्रश्न और उनके उत्तर काफी दिलचस्प हैं। हमें विश्वास है कि हमारे पाठक भी इस प्रश्नोत्तर में काफी रुचि लेंगे :

--सम्पादक

वोल्फगांग श्रेडर (बायें) और डा. हांइज लाँगर

प्रश्न : क्या आप पहली बार ऐसी यात्रा पर निकले हैं।

श्री श्रेडर : नहीं, मेरे लिये यह दूसरी ऐसी यात्रा है। मेरी पहली यात्रा थी सन् १९६०-६१ में, ५०,००० किलोमीटर की अफ्रीका के [illegible] ही लम्बी यात्रा। लेकिन उस [illegible] मैं मोपेड स्कूटरों के एक अन्य प्रकार [illegible] स्कूटर का परीक्षण कर रहा था। यह स्कूटर परीक्षण में पूरा सफल रहा, और मेरी यह पहली यात्रा भी बहुत लाभदायक और दिलचस्प रही। इसी से प्रोत्साहित होकर मैं दक्षिण-पूर्वी एशिया की अपनी इस दूसरी यात्रा पर निकल पड़ा हूं।

प्रश्न : आप में एक इंजीनियर और दूसरा डाक्टर है। आप दोनों आपस में कैसे मिले इस यात्रा के लिये ?

डा. लांगर : हुआ यह कि श्री श्रेडर मेरे पास डाक्टरी आरोग्य पत्र लेने के लिये आये। इसी दौरान उन्होंने मुझे अपनी यात्रा का साथी बनने को कहा। यह सुझाव बहुत ललचानेवाला तो था लेकिन मैं तुरन्त हां या ना में जवाब नहीं दे सका। लेकिन मैं चूंकि दो वर्ष तक एक यात्री पोत का डाक्टर रहा था और इस जहाज की यात्राओं के साथ मैंने, दक्षिण-अमरीका और दक्षिण-पूर्व एशिया की यात्रा भी की थी, इसलिए दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों को बहुत करीब से देखने का यह सुअवसर में हाथ से जाने नहीं देना चाहता था। इस समय तक हमारी यात्रा ने यह सिद्ध किया है कि हमारा जोड़ा काफी अच्छा रहा है। उष्णकटिबन्धीय देशों की ऐसी लम्बी यात्रा में कभी कभी न केवल मोपेड स्कूटरों के इंजन में कुछ खराबी से दो-चार होना पड़ता है, बल्कि शारीरिक पेचीदगियों का भी सामना करना पड़ता है।

प्रश्न : तो यह बताइये कि अपने मोपेड स्कूटरों की खराबी और शरीर की पेचीदगियों को ठीक करने के लिये आपके पास कौन से साधन हैं ?

श्री श्रेडर : मोपेड इंजनों की खराबी को ठीक करने के लिए हमारे साथ औज़ारों का बक्सा, और कुछ अतिरिक्त पुर्जे भी हैं। डा. लांगर ने सर्प-विष विरोधी औषधि अपने साथ रखी है। लेकिन अब तक हमको पेट की खराबी के लिये ही थोड़ी बहुत दवाइयों की जरूरत पड़ी है। लेकन एक औज़ार जो हमारे बहुत काम आया यहां, वह है हमारा छाता। इस औज़ार ने बरसात से हमारी थोड़ी-बहुत रक्षा की है।

प्रश्न : आपने अपनी यात्रा कहां से आरम्भ की, और इस समय तक आप कहां कहां गये हैं ?

उत्तर : जर्मन जनवादी गणतंत्र से हम बम्बई तक जहाज़ से आये, जहां से जुलाई के

[...]रम्भ में इसने अपनी यात्रा शुरू की । नई दिल्ली पहुँचने से पहले हमने औरंगाबाद, अजन्ता, एल्लोरा, इन्दौर, सांची, ग्वालियर, आगरा, फतेहपुर-सीकरी, सिकन्दरा, मथुरा और वृन्दावन नामक भारतीय स्थान देखे । २,००० किलोमीटर के इस लम्बे रास्ते में हमें कई सड़कें ऐसी मिलीं जो बरसात से खराब हुई थीं । लेकिन हमने ये सड़कें अच्छी तरह पार कीं क्योंकि हमारी यात्रा का मुख्य उद्देश्य है उष्णप्रदेशीय वातावरण में—और विशेषकर बरसात के मौसम में, मोपेड इंजनों का परीक्षण करना ।

प्रश्न : अपने मोपेड स्कूटरों में क्या आपको किसी बड़ी खराबी से दो चार होना पड़ा ?

उत्तर : इस समय तक हमारे स्कूटरों के सिर्फ स्पार्क-प्लग कभी-कभी खराब हुये सफर में । लेकिन यह खराबी सामान्य है और तुरन्त ठीक की जा सकती है । हमारे स्कूटरों के 'न्यूमांट' टायर यहाँ की सड़कों पर बहुत अच्छे चल रहे हैं ।

प्रश्न : आप लोग अपने खाने पीने और रहने का क्या और कैसे प्रबन्ध करते हैं ?

उत्तर : इसके लिये हमारे पास कोई निश्चित प्रबन्ध नहीं । हम शाम को जहाँ भी पहुँचते हैं—शहर हो या क़स्बा—वहीं हम अपना डेरा डालते हैं । डाक-बंगलों में या छात्रावासों में । लेकिन होटलों में हम बहुत कम ठहरे हैं । गांवों में भारतीय किसानों के सद्व्यवहार और आतिथ्य से हम सचमुच विभोर होते हैं । जब भी हम सन्ध्या को किसी गांव में पहुँचे, वहाँ के लोगों ने, मुक्त हृदय से हमारा स्वागत किया । हमारे सोने के लिये वे अपनी चारपाइयाँ देते और खाने को दाल रोटी । वैसे मसालेदार खानों के अब हम आदी हो चुके हैं, क्योंकि यात्रा-पथ पर स्थित रेस्त्रानों में मसालेदार खाना ही मिलता है । दाल और रोटी को अब हम बहुत पसन्द करने लगे हैं ।

प्रश्न : अब तक की अपनी भारतीय यात्रा में आपने यहाँ के कई ऐतिहासिक स्थान देखे ? क्या इस सम्बन्ध में आप हमें अपने अनुभव बतायेंगे ?

डा. लाँगर : भारत का प्राचीन इतिहास, कला और संस्कृति बहुत गौरव-शाली रही है । अजन्ता एवं एलोरा की गुफाओं के भित्तिचित्रों ने हमको मोहित कर लिया । भारतीय कला की ये अमर कृतियाँ प्राचीन भारतीय जीवन की दर्पण है । . . . फतेहपुर-सीकरी के नगर-नियोजन और इसकी गरिमा-युक्त वास्तुकला हमें बहुत अच्छी लगी । विश्वप्रसिद्ध ताजमहल के तो हमने अनेक फोटे देखे थे । लेकिन इसके साक्षात्कार ने हमें एकदम स्तब्ध कर दिया । इतना अथाह और अलौकिक सौन्दर्य । जिन कलाकारों ने इस सौन्दर्य को गढ़ा, उनकी

दोनों मित्र नई दिल्ली में ।

प्रशंसा करने में हमारे शब्द असमर्थ हैं । . . . मथुरा में एक स्थानीय शिक्षक ने हमें निमन्त्रित किया और उसके साथ हमने जमुना में नाव की सैर की । यमुना [...] पर बसे मांझियों के जीवन की एक झाँकी भी मिली हमको । भारत की राजधानी दिल्ली में हमने लाल क़िला, कुतुब मीनार और जामा मस्जिद देखीं । अपनी इस यात्रा में हम जहाँ भी गये, हमने लोगों को महात्मा गान्धी और जवाहरलाल नेहरू का, बड़ी श्रद्धा एवं स्नेह के साथ नाम लेते देखा । भारतीय जनता के इन महान और प्रिय महापुरुषों की समाधियों पर—राजघाट और शांतिवन में—[...] फूल चढ़ाये ।

प्रश्न : वास्तुकला [...] यात्रा के [...] भारत के [...] कितनी रुचि दिखाई है ?

उत्तर : बम्बई से दिल्ली तक की यात्रा में हम जितने लोगों से मिले उनमें [...] जो दिलचस्पी देखी उससे हमें काफी प्रोत्साहन मिला । केवल अंग्रेजी भाषा जानने के कारण (अपनी मातृभाषा जर्मन के अतिरिक्त) बेशक हमें कुछ कठिनाई अवश्य होती है । हम बम्बई में आकाशवाणी के अधिकारियों से मिले और यहाँ दिल्ली में आकाशवाणी ने हमारा [...] भी लिया । आकाशवाणी के बम्बई और दिल्ली केन्द्रों ने हमें भारतीय लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत के टेपों से टेप-रिकार्ड करने की इजाज़त दी । इसके लिये हम उनके अत्यन्त आभारी हैं । भारतीय संगीत और गायन के ये नमूने हमारे लिये अमूल्य स्मृतियों के रूप में हमारे साथ रहेंगे । यहाँ के सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ी दैनिक "इण्डियन एक्सप्रेस" (Indian Express) ने भी हमारा इण्टरव्यू लिया ।

प्रश्न : भारत [...] आप को [...] क्या है ? भारत की यात्रा के बाद अ[...]

(शेष पृष्ठ १६ पर)

३६ भाषाओं का घर

आजकल महमे... बीच की लम्बी दूरियां ...ट विमानों से तय कर ली जाती हैं। पर्यटक भी दूसरे देशों ... में उतनी ही आसानी महसूस करते हैं जितनी पहले कूटनीतिज्ञों और ... को होती थीं। इसलिए ... भाषाओं का ज्ञान आधुनिक मानव की पूर्ण शिक्षा का एक आवश्यक अंग बन चुका है। विद्यार्थी को स्कूल में जो शिक्षा नहीं मिल पाई है, या वह जो खुद नहीं सीख पाया है, उसकी कमी वयस्क होने पर उसे बुरी तरह खलती है, और वह अपनी सामर्थ्य भर उसे पूरा करने की कोशिश करता है। कुछ संस्थान या प्रकाशन-गृह कुशल शिक्षण विधियों और सरल शैक्षणिक सामग्रियों द्वारा ऐसे व्यक्तियों की सहायता करते हैं।

लाइपजिग का प्रकाशन-गृह—एनज़ाइक्लोपीडिया-वेरलाग—जिसकी स्थापना १९५६ में की गई थी, आवश्यक शिक्षण सामग्री उपलब्ध कर वयस्कों को विदेशी भाषाएं सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसके प्रकाशनों ... सूची पर्यटकों के लिए मुहावरों की पुस्तकों से लेकर विद्वानों के लिए उच्च स्तर की पुस्तकों तक है। इसके कार्यक्रम में बिभिन्न प्रकार के शब्दकोशों, व्याकरणों, अभ्यास पुस्तिकाओं और बात-चीत सिखानेवाली पुस्तकों के प्रकाशन के साथ-साथ रिकार्ड किये हुए स्वशिक्षण पाठ्यक्रम भी तैयार करना है।

प्रति वर्ष यह प्रकाशन-गृह १०० पुस्तकों के भारी संस्करणों का प्रकाशन और विदेशी-भाषाओं के पाठ्यक्रमों के डेढ़ लाख रिकार्ड तैयार करता है। इस समय इन प्रकाशनों और रिकार्डों का ६० प्रतिशत आस्ट्रिया, ब्रिटेन, फिनलैण्ड, स्वीडन, पश्चिमी जर्मनी, स्विटजरलैण्ड, अमेरिका, सोवियत-संघ, इटली, फ्रांस ... के देशों ... जा जाता है। ... काशन कार्यक्रम में यूरोपीय भाषाओं ... महत्वपूर्ण स्थान है किन्तु उतना ही महत्व का ... एशिया और अफ्रीका की राष्ट्रीय तथा प्रशासनिक भाषाओं, और विदेशियों को जर्मन भाषा सिखानेवाली पुस्तकों का भी है।

एनसाइक्लोपीडिया प्रकाशन-गृह के वर्तमान प्रकाशन कार्यक्रम में १९ यूरोपीय और १७ गैर यूरोपीय भाषाएं हैं, जो प्रकाशन क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सफलता है और इसने इस युवा प्रकाशन-गृह को अभी ही अपने ढंग का प्रमुख प्रकाशन-गृह बना दिया है। इन प्रकाशनों के साथ-साथ करीब करीब सभी यूरोपीय भाषाओं के द्विभाषी शब्दकोश भी (जर्मन से दूसरी भाषाओं और दूसरी भाषाओं से जर्मन में) छापे गये हैं। इस प्रकाशन-गृह के चित्र-शब्दकोशों ने विदेशों में लोगों का काफी ध्यान आकर्षित किया है। कई देशों को उनके आंशिक संस्करण छापने की अनुमति दे दी गयी है। इस वर्ष एनसाइक्लोपीडिया के चित्र शब्दकोश, विज्ञान और उद्योगों के बारे में लोगों के ज्ञान में तेजी से होनेवाले प्रसार को ध्यान में रखकर पुनः सम्पादित किये जायेंगे। प्रारम्भिक तोर पर जर्मन-अंग्रेजी और जर्मन-फ्रेन्च चित्र-शब्दकोश छापे जायेंगे। इसके अतिरिक्त प्रकाशन गृह प्राविधिक (टेकनिकल) शब्दकोशों के प्रकाशन का कार्यक्रम भी, जो चार-भाषाओं के कृषि शब्द कोश से शुरू हुआ है, जारी रखेगा।

लाइपज़िग के इस प्रकाशन उद्योग की कार्यक्षमता का अच्छा उदाहरण है प्राच्य और अफ्रीकी भाषाओं के प्रकाशन। अरबी, इन्दोनेशियाई, मंगोली, फारसी, मुदेली, उर्दू, वियतनामी और नावाई भाषाओं की पाठ्य पुस्तकों और शब्दकोशों के साथ-साथ इस संस्था ने चीनी भाषा ... जानकारी देनेवाले महत्वपूर्ण ग्रंथ भी प्रकाशित किये हैं और इस प्रकार प्रकाशन क्षेत्र में एक बहुत बड़ी पहल की जा रही है जिसके अन्तर्गत भविष्य में एशिया-अफ्रीका की सभी प्रमुख भाषाओं के प्रकाशन किये जायेंगे।

लाइपज़िग के हर्डर संस्थान, जो जर्मन जनवादी गणतंत्र में विदेशी ... को जर्मन भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान कराता ... के सहयोग से विदेशियों के लिए चा... प्रारम्भिक पाठ्य पुस्तकों और कुछ पूरक सामग्रियों (कुंजियों, शब्द संग्रहों और पढ़ने के लिए पुस्तकों) का जर्मन भाषा पाठ्यक्रम तैयार किया गया ...। इसके साथ ही विदेशियों को जर्मन सिखाने वाले रिकार्ड भी तैयार किये गये हैं जो अनेक वर्षों से सफलतापूर्वक विदेशों में भेजे जा रहे हैं। हर वर्ष इस तरह की करीब ७० हज़ार पुस्तकों और ७० हजार रिकार्डों का निर्यात होता है। अंग्रेजी और फ्रेन्च भाषा में विदेशियों के लिए विशेष ढंग की पाठ्य पुस्तकें तैयार की गयी हैं जिनसे जर्मन लिखना, पढ़ना और बोलना सिखाया जाता है। इनके अ... दूसरे रिकार्ड पाठ्य-क्रम उच्चारण सिखानेवाले रिकार्ड और 'सब की भाषा' नामक रिकार्ड संग्रह, जिन में कुछ लघु पाठ्य पुस्तकें भी हैं —विभिन्न यूरोपीय देशों को भेजे जा रहे है।

पर्यटन के निरंतर विकास की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए एनसाइक्लोपीडिया प्रकाशन-गृह ने बोल-चाल की भाषा सिखाने वाली पुस्तिकाएं निकाली हैं जो अधिकांश यूरोपीय भाषाओं के लिए उपलब्ध हैं। उनमें जर्मन के माध्यम से अन्य भाषाएं की बोलचाल सिखाई जाती हैं। पश्चिमी जर्मनी और ... प्रकाशकों को इनके आंशिक संस्करण ... की अनुमति दी गयी है।

इसी प्रकाशन संस्था द्वारा 'द रशियन वर्ब' उच्च कोटी की संदर्भ पुस्तक भी छापी गयी है। रूसी भाषा के प्रति लोगों की बढ़ती हुई रुचि के कारण जर्मन भाषी देशों, ब्रिटेन और अमरीका में इसकी बहुत अधिक मांग है।

अपने शब्दकोशों और भाषा शिक्षण रिकार्डों से एनसाइक्लोपीडिया प्रकाशन ने अपनी स्थापना से अब तक आठ वर्ष की अवधि में बहुत से लोगों को विदेशी भाषाएं सीखने में मदद पहुंचाई है। लाइपज़िग के औद्योगिक मेले में सम्मिलित होना इसके लिए सदा ही अत्यधिक सफल सिद्ध हुआ है। इस वर्ष, जो मेले की ८०० वीं जयंती है, एनसाइक्लोपीडिया को निश्चित ही बहुत से नये मित्र मिलेंगे।

रक्तदान, जीवनदान है

बर्लिन के एलेक्सान्डर चौक में, अस्पताल-गाड़ी का भोंपू जोर से चीख उठता है। [illegible] लमहों के लिये सारा यातायात रुक जाता है। चौक के एक मोड़ से अस्पताली-गाड़ी लाल-क्रास वाला झण्डा लहराती भागती हुई [illegible] दिखाई देती है। यातायात पुलिस की एक [illegible] उसके साथ-साथ दौड़ रही है। दो मोटरों [illegible] टक्कर में, एक ड्राइवर बुरी तरह घायल हुआ है। उसके गहरे घावों से खून के धारे छूट रहे हैं, और उसकी जिन्दगी, मौत के जबड़े में छटपटा रही है। अब क्या होगा? क्या क्रूर मौत, इस जिन्दगी को निगल सकेगी . . .?

बर्लिन के रक्तदान केन्द्र का एक डाक्टर तुरन्त दुर्घटना स्थल पर पहुंच जाता है, और सबसे पहले वह घायल ड्राइवर के घावों पर खुष्क खून का प्लाज़्मा मल देता है। रक्त-प्लाज्मा वह पीला द्रव है जो रुधिर-गणना (ब्लड काउंट) करते समय इसके ऊपर जमा हो जाता है। निर्वात हिमकरण विधि (वैकुअम फ्रीज टेकनीक) से इस द्रव —अर्थात् प्लाज़्मा को, भस्म के रूप में तबदील किया जाता है। यह खुष्क प्लाज्मा, टीन के डिब्बों में बन्द [illegible] रुधिर से अधिक अच्छी हालत में और [illegible] समय तक रहता है। जरूरत पड़ने पर [illegible]-भस्म को विसंक्रमित (स्टरलाइज़्ड) पानी में मिलाकर खून का रूप दिया जाता है।

किसी भी आहत या रोगी को तब तक खून नहीं दिया जाता जब तक कि उसके रुधिर वर्ग की जांच नहीं होती। एक मनुष्य से खून निकालकर सीधे दूसरे में भरने की अपेक्षा डिब्बा बन्द खून ही का अधिकांश प्रयोग होता है। दिल का आपरेशन करते समय, दिल और फेफड़ों को निकाल कर उनकी जगह, आपरेशन समाप्त होने तक एक कृत्रिम हृदय यंत्र लगा दिया जाता है। इस बड़े और नाजुक आपरेशन में लगभग १७ पिण्ट खून की ज़रूरत होती है।

३०,००० रक्त-दानी

जर्मन जनवादी गणतंत्र में बोतल-बन्द खून की मांग बहुत है, क्योंकि इससे अनेक प्राणियों को जीवन दान मिला है। पिछले साल ३०,००० बर्लिन-वासियों ने रक्त-दान किया। लेकिन यह भी अभी काफ़ी नहीं, क्योंकि, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में इस साल, ४०० मिलि-लिटर वाले ४०,००० टिन-बन्द डिब्बों की जरूरत है।

रक्त-दान और रुधिराधान (ब्लड-ट्रांस्फ्यूजन) सेवा यहां काफी सुव्यवस्थित है। जर्मन जनवादी गणतंत्र की १५ कांवटियों (प्रान्तों) में, कांवटी विशेष की आबादी तथा विस्तार के अनुसार, रक्त-दान के केन्द्र खोले गये हैं। इन केन्द्रों में सभी रक्त-दाताओं का नाम रजिस्टर होता है। इन केन्द्रों की स्थापना और संचालन के लिये, ज. ज. ग. की सरकार ने सन् १९४८ में ७० लाख मार्क, और सन् १९६३ में २ करोड़ [illegible]० लाख मार्क की रकम (१ मार्क = १.१२ [illegible] की। यहां कानून के अनुसार ये रक्त-दान [illegible] किसी अस्पताल [illegible] सम्बद्ध [illegible] य केन्द्र नई इमारतों में नवीनतम वैज्ञानिक यंत्रों एवं उपकरणों से सुसज्जित है। किसी रोगी अथवा आहत को, जब ज़रूरत पड़े, फौरन [illegible] में रुधिराधान किया जा सकता है।

जल्द ही, बर्लिन में, रक्तदान केन्द्र और रुधिराधान सेवा का एक केन्द्रीय संस्थान स्थापित किया जायेगा। . . . १८ से लेकर ६० वर्ष की आयु तक वाले स्वस्थ व्यक्ति रक्त-दान कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति जो कभी मलेरिया अथवा ऐसे ही रुधिर-संक्रामक रोगों से ग्रस्त रहे हों, रक्त-दान के अयोग्य समझे जाते हैं।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

श्री तथा श्रीमती बोट्टगर, शिक्षा मंत्रालय में, राज्य मंत्री, श्री आर. एम. हाजरनवीस का स्वागत कर रहे हैं

भारत
ज. ज. ग.

भारत में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्ट बोट्टगर के सम्मान में कई अलविदा-पार्टियों का आयोजन हुआ। श्री बोट्टगर, भारत में अपनी साढ़े तीन वर्षों की कार्यावधि समाप्त करके ४ अगस्त, १९६५ को स्वदेश लौट गये। इन पृष्ठों पर उक्त अलविदा-समारोहों के कुछ चित्र दिये गये हैं।

'विज्ञान एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद' के महानिदेशक, डा. हुसैन ज़हीर का स्वागत किया जा रहा है
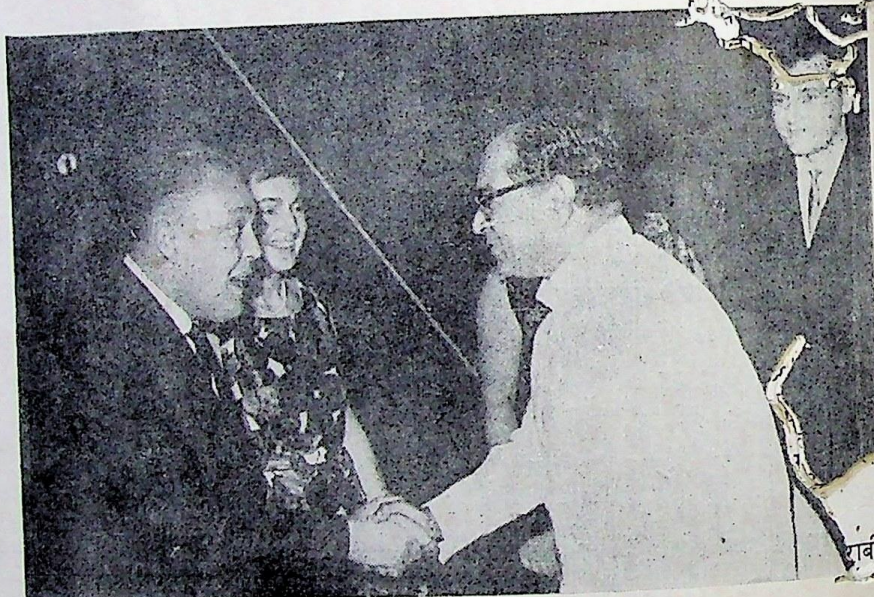
बंबई में, श्री बोट्टगर का अलविदाई-समारोह : यहां श्री बोट्टगर, महाराष्ट्र सरकार के मुख्य सचिव, श्री प्रधान के साथ देखे जा सकते हैं। साथ में, ज.ज.ग. के व्यापार-दूतावास की बंबई शाखा के श्री तथा श्रीमती काउरेट्स्की भी खड़े हैं

...योगी

...देश लौट जाने से पहले, श्री कूर्ट बोट्टगर ने भारत के प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री से मुलाकात की। प्रधान मंत्री के अतिरिक्त, ज. ज. ग. के व्यापार-दूत भारत सरकार के कई अन्य मंत्रियों तथा उच्चाधिकारियों से भी मिले, जिनमें उल्लेखनीय हैं: स्वराष्ट्र मंत्री श्री गुलजारी लाल नन्दा; वाणिज्य मंत्री, श्री मनुभाई शाह; शिक्षा मंत्री, श्री मुहम्मद करीम छागला; उद्योग मंत्री, श्री टी. एन. सिंह, लोकसभा के अध्यक्ष, सरदार हुकुमसिंह; राज्य व्यापार निगम के अध्यक्ष, श्री पटेल; एम. टी. सी. के अध्यक्ष, श्री गोविंद सहाय, और पर-राष्ट्र मंत्रालय के अन्य अधिकारी।

कई उच्चाधिकारियों एवं महानुभावों ने श्री बोट्टगर के सम्मान में अलविदाई-भोज तथा पार्टियों का आयोजन किया।

वाणिज्य मंत्रालय; राज्य व्यापार निगम के अध्यक्ष, श्रीपटेल; नौ-परिवहन के महानिदेशक के सचिव, डा. नगेन्द्र सिंह, और श्री शंकर पिल्ले (शंकर्स वीकली) ने सायंकालीन भोज दिये। लोकसभा के अध्यक्ष, सरदार हुकुम सिंह, और संसदीय मामलों के मंत्रालय में सचिव, श्री कैलाश चन्द ने ज. ज. ग. के व्यापार-दूत को जलपान का निमन्त्रण दिया।

बंबई में श्री कूर्ट बोट्टगर, महाराष्ट्र सरकार के नगर विकास मंत्री, डा. जकरिया; महापौर, श्री माधवन; और चैम्बर आफ कामर्स के उपप्रधान, श्री लाल चन्द हीराचन्द से मिले। कलकत्ता में उन्होंने, विधानसभा के अध्यक्ष, श्री के. सी. वसु, और प. बंगाल के राज्यपाल, कुमारी पद्मजा नायडू से मुलाकात की।

जुलाई के अन्तिम सप्ताह में पोलैण्ड के राजदूत, श्री पी. ओगरीजिन्स्की ने, श्री बोट्टगर के सम्मान में एक अलविदाई समारोह का आयोजन किया। चित्र में बायीं से दायीं ओर खड़े हैं: पोलैंड के राजदूत की पत्नी; बर्मा की राजदूत, श्रीमती दी खीन की; भारतीय लोकसभा के अध्यक्ष, श्री हुकुम सिंह, श्री तथा श्रीमती बोट्टगर और पोलैंड के राजदूत

भारत के भूतपूर्व रक्षा मंत्री, श्री कृष्ण मेनन, एक स्वागत समारोह में, श्री बोट्टगर को अलविदा कह रहे हैं

बम्बई के समारोह में, श्री बोट्टगर, महाराष्ट्र विधान परिषद के उपाध्यक्ष श्री वी. एन. देसाई के साथ खड़े हैं

पोट्सडाम का ऐतिहासिक राजमहल

राजमहल में रखी हुई
कछुए के खोल से बनी हुई घड़ी

१८वीं शताब्दी में यूरोप के सभी छोटे बड़े राजे महाराजे, फ्रांस के सम्राट लूई १४ की तरह ठाट से रहने के सपने देखा करते थे, और उसी की तरह वर्सेले जैसा एक राजमहल तामीर करना चाहते थे। प्रशया (जर्मनी) का बादशाह फ्रेडरिख द्वितीय, इसका अपवाद नहीं था। वह भी अपना एक वर्सेले महल बनवाना चाहता था। . . .

सन् १७४५ में सम्राट फ्रेडरिख ने वास्तुकार नोबेल्सडोर्फ को, बर्लिन के निकट, पोट्सडाम की एक अंगूर वाटिका में, एक राजमहल बनाने का हुक्म दिया। मई, सन् १७४६ से, फ्रेडरिख द्वितीय, अपने इस नये राजमहल और ग्रीष्म आवास में रहने लगा। सम्राट् ने इस राजमहल का नाम रखा "साँसूसी"—अर्थात् चिन्ता मुक्त। यहाँ वह शासनकी झंझटों से दूर, अपनी खयाली दुनिया में विचरना चाहता था। . . . "साँसूसी" में सम्राट फ्रेडरिख ने २१ वर्ष ऐश लूटी। उसकी पत्नी, ब्राउन्शवाइग की एलिजेबेथ क्रिस्टीन, जिसको तलाक मिली थी, इस राजमहल में सम्राट् की मृत्यु के बाद ही दाखिल हो सकी।

अंगूर वाटिका का उक्त राजमहल एक बहुत बड़े पार्क के आँचल पर खड़ा है। यह पार्क बोर्क-बागों की शैली की हू-बहू नक़ल है। कटे-छटे वृक्ष तथा कोमल घास, सुसज्जित

राजमहल में फ्रंच किताबों का गोलाकार पुस्तकागार। फ्रेडरिख द्वितीय जर्मन भाषा को नापसन्द करते थे . . .

'सांसूसी' की आन्तरिक चित्र कला-वीथि
जिसको बनाने में ७ वर्ष लगे थे...
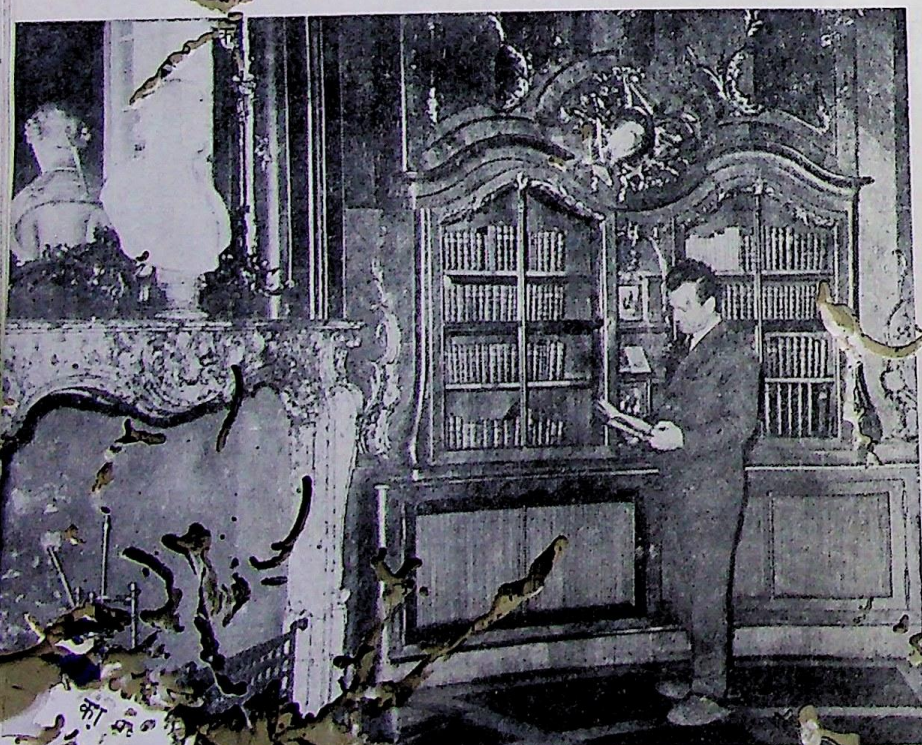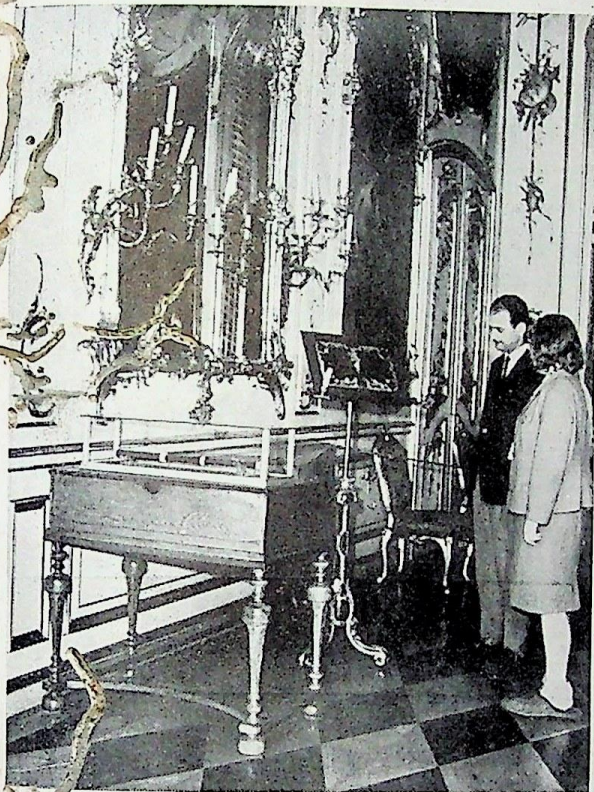
फ्रेडरिख द्वितीय एक अच्छा वंशी-वादक था। ... इस पियानो पर एक बार विश्वप्रसिद्ध संगीताचार्य योहान्न बाख ने सम्राट को अपने संगीत से मुग्ध किया था

पुष्प वाटिकायें, ओर झूमते फव्वारे एवं संगमरमर की तराशी हुई सुडौल मूर्तियाँ, दर्शक का मन हर लेती हैं। १२ कक्षों वाला यह राजमहल शायद एक बादशाह के लिये छोटा ही था, लेकिन इन कक्षों की सज्जा और नक्काशी उस ज़माने की सुन्दरतम कला की प्रतीक है।

कमरों के पच्चीकारी किये हुये फर्श, क़ीमती लकड़ी के बने हैं, ओर दीवारें तथा छत सुन्दर लकड़ी के काम, गवाक्ष-जाल और तैल चित्रों से सुसज्जित हैं। बहुमूल्य फर्नीचर की सजावट ने इस राजमहल के सौन्दर्य को और भी निखारा है। "सांसूसी" के शांत वातावरण से फ्रेडरिख द्वितीय को बहुत प्यार था; शायद इसलिये कि वह इस वातावरण में उन यातनाओं तथा क्रूरताओं को भूल जाता था, जिनमें उसके साइलेज़िया के युद्धों ने बिचारे प्रशिया और यूरोप के लोगों को झौंक दिया था। बाद में फ्रेडरिख द्वितीय ने पोट्सडाम में कई अन्य महल और भवन तामीर कराये। उसके वंशजों ने भी इस तामीर को जारी रखा।

आज "सांसूसी" का राजमहल और इस का विशाल उद्यान, जर्मनी और दुनिया के लाखों दर्शकों एवं पर्यटकों के लिये एक मनोरंजन केन्द्र तथा ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ वे प्रकृति के सौन्दर्य और वास्तुकार के सृजन का दर्शन करते हैं।

संगेमर्मर का एक फव्वारा महल की एक
पुष्पवाटिका में झूम रहा है...

रसधारा

मूल : योहान्नेस बेचर | अनुवाद : चन्द्रबली सिंह
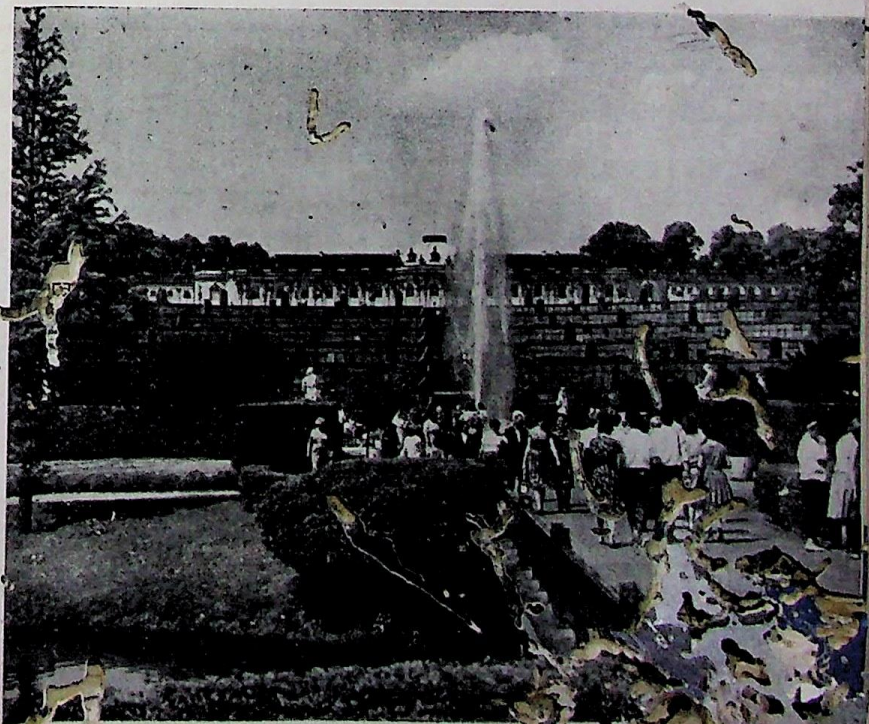
[illegible] से हमारे मित्र, श्री चन्द्रवली सिंह ने, एक आधुनिक जर्मन कवि एवं योहान्नेस आर. बेचर (१९११–१९५८) की एक कविता का अनुवाद भेजा है। कविता के अंग्रेजी रूपान्तर "लास्ट अवर" से किया गया यह हिन्दी अनुवाद काफी सुन्दर है।

किन्हीं कारणों से **रस-धारा** का यह स्तम्भ हमको पर्याप्त समय के लिये स्थगित करना पड़ा था। लेकिन श्री चन्द्रवलीसिंह के उक्त अनुवाद से, 'पत्रिका' के इस अत्यन्त लोकप्रिय स्तम्भ को पुनः आरम्भ करने की हमें प्रेरणा मिली है। "अन्तिम घड़ी" भेजने के लिये हम अनुवादक महोदय के आभारी हैं। यह क्रम फिर न टूट जाय इसके लिये हम भरसक प्रयत्न करेंगे।

—सम्पादक

अन्तिम घड़ी

अंतिम घड़ी, चाहता मैं घोषित कर जाना,
वह सब कुछ जो सभी के लिए प्रासंगिक था,
ताकि अल्प मात्रा में ही पर मैं जनता का
इस आखिरी घड़ी में कुछ सौभाग्य बढ़ाऊं।

यह आखिरी घड़ी न याद की घड़ी बनेगी,
और चीखती फरियादों का वक्त नहीं है।
धन्यवाद कहने का ही यह उचित समय है,
ओ अंतिम क्षण, तुम कृतज्ञता से पूरित हो।

मैं जो कुछ हूं उसके लिये मटपी जनता का।
इस कारण जनता से इस आखिरी घड़ी में
अपनी अंतिम बात कह रहा। सुनो, हृदय में
उसे संजो लो तुम, जिसके हित अर्थ मैं जिया।

तुमसे कटना मृत्यु, मृत्यु कुछ और नहीं है,
जन, मेरे आवास, गर्भ, अमरत्व तुम्हीं हो।

रक्तदान

(पृष्ठ ११ का शेष)

रक्त-दाताओं को सुविधायें

रक्त-दानी वर्ष में चार बार रक्त-दान कर सकते हैं। रक्त-दान करने के लिये उनको यदि दूर से आना पड़े तो उनको सफर खर्च दिया जाता है। सफर करने में और रक्त-दान के लिये प्रतीक्षा करने में उनका जितना समय लगता है, उतने समय की उनको मजदूरी दी जाती है। इसके अतिरिक्त उनको मुफ्त नाश्ता दिया जाता है। लम्बे सफर की थकान और झंझट से बचाने के लिये रक्त-दाताओं से उनके [illegible] करने के स्थानों पर ही, रक्त-दान [illegible] व्यवस्था है। ऐसे रक्त-दाताओं [illegible] [illegible]रीर बिना किसी कीमत के रक्त दान करते हैं, एक सम्मान-पत्र से सम्मानित किया जाता है।

दक्षिण-पूर्व एशिया की यात्रा

(पृष्ठ ९ का शेष)

अन्य देशों की यात्रा करेंगे ?

उत्तर: अब हमारी यात्रा का अगला पड़ाव जम्मू तथा काश्मीर है। वहाँ हम श्रीनगर के अतिरिक्त गुलमर्ग, पहलगाम और [illegible]स्थान भी देखेंगे। काश्मीर जाने से पहले हम चण्डीगढ़ और भाखड़ा नांगल देखना चाहते हैं। अमृतसर का दरबार साहेब (स्वर्ण गुरुद्वारा) भी देखने का विचार है।

भारत की यात्रा समाप्त करने के बाद हम नेपाल, बर्मा, कम्बोडिया, और इन्दोनेशिया आदि दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों की यात्रा करेंगे। इन देशों की यात्रा करके हम वापस भारत लौटेंगे, और उड़ीसा, मद्रास और केरल जैसे भारतीय स्थानों का पर्यटन करेंगे। इसके बाद हम बम्बई से अपने देश ––जर्मन जनवादी गणतंत्र के लिये रवाना होंगे, स्थल मार्ग से। इस सारी यात्रा में हमें एक साल लगेगा। चूंकि हम दोनों विवाहित हैं, इसलिये हमारी पत्नियाँ हमारी छुट्टी और नहीं बढ़ायेंगी।

हम भारतीय लोगों के आभारी हैं जिन्होंने मुक्त हृदय से हमारा स्वागत सत्कार किया। भारत के लोग बहुत परिश्रमी और शांतिप्रिय हैं जो अपने राष्ट्र के नवनिर्माण और अपनी गौरवशाली तथा भव्य सांस्कृतिक परम्परा को आगे बढ़ाने में लगे हुये हैं। हम उनकी मधुर स्मृति और इस यात्रा को हमेशा याद रखेंगे।

बर्लिन-बूख: ज. ज. ग. के अस्पतालों का सब से बड़ा केन्द्र

—डा. रोल्फ स्टाएप्स

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन के उत्तरी आँचल पर बूख नामक स्थान में यहाँ के अस्पतालों का सबसे बड़ा केन्द्र स्थित है। शहर की हलचल और कारखानों के शोर गुल से दूर अस्पतालों का यह केन्द्र बहुत ही आदर्श एवं रमणीय वातावरण से घिरा हुआ है। बूख के चारों ओर जंगल और खेत फैले हैं, और यह बर्लिन से परिवहन के अनेक साधनों से जुड़ा हुआ है।

हम बर्लिन-बूख को, अस्पतालों का कस्बा भी कह सकते हैं। ये अस्पताल, क़स्बे की नगरपालिका की देख रेख में चलते हैं। इसके अतिरिक्त, "जर्मन विज्ञान अकादमी" का "जीव विज्ञान एवं औषधि का संस्थान" भी यहाँ स्थित है, जहाँ मुख्यतः अनुसन्धान कार्य होता है। अस्पतालों का यह केन्द्र, बर्लिन और इसके आस-पास के कस्बों की स्वास्थ्य योजनाओं में महत्वपूर्ण रोल अदा करता है। बूख में स्थित विभिन्न अस्पतालों में, भिन्न-भिन्न रोगों के इलाज के लिये ५,००० रोगियों के लिये स्थान है।

जन स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने के कारण ज. ज. ग. की समाजवादी सरकार, बूख अस्पताल केन्द्र को बहुत आर्थिक सहायता प्रदान करती रहती है। परिणामस्वरूप इस केन्द्र में स्थित ३३ अस्पताल तथा मेडिकल संस्थान अत्याधुनिक मेडिकल यंत्रों और नवीनतम औषधियों से सुसज्जित हैं। इस केन्द्र की गतिविधि से संबन्धित निम्न कतिपय आंकड़े द्रष्टव्य हैं:

सन् १९६३ में, यहां के विशिष्ट रोगों का इलाज करने वाले २० अस्पतालों ने, ८८,००० से अधिक रोगियों का इलाज किया। बर्लिन बूख के इस अस्पताल केन्द्र में कई विशिष्ट संस्थान भी काम करते हैं। जिनमें उल्लेखनीय हैं: आन्तरिक औषधि शल्यक्रिया, बाल रोग, और सैधान्तिक तथा निदान संबन्धी संस्थान। आन्तरिक-औषधि संस्थान के अन्तर्गत चार अस्पताल हैं, जिनमें अलग-अलग मधुमेह (डायबेटीज़), संक्रामक रोग, गुर्दे के रोग और रक्त रोग से पीड़ित रोगियों का इलाज किया जाता है। हृदय के रोगों तथा गठिया का इलाज भी इसी संस्थान में होता है।

विशिष्ट रोगों के विशिष्ट अस्पताल और संस्थान यहाँ नवीनतम डाक्टरी यन्त्रों से सुसज्जित हैं और ये विशिष्ट अस्पताल विश्व-प्रसिद्धि वाले डाक्टर-विशेषज्ञों की देख रेख में काम करते हैं। उदाहरण के लिये तंत्रिका-चिकित्सालय (न्यूरो-सरजिकल क्लिनिक), निश्चेतक एवं पुनः संचेतना का प्रथम संस्थान (फर्स्ट इनस्टिच्यूट फार अनेस्थेटिक्स एण्ड रि-अनिमेशन) और पुनः स्थापन अस्पताल, क्रमशः डा. वाइक्मान्न, डा. उल्रिख स्ट्राल और डा. प्रेसबर के निरीक्षण में काम करते हैं। पुर्नस्थापन क्लिनिक में बहुत जल्द, आधुनिक ढंग का एक चिकित्सालय भी जोड़ दिया जायेगा। इसके लिये सरकार ने एक बड़ी रक़म मंजूर की है।

इस इमारत को तामीर करने के लिए नवीनतम वास्तुकला को अपनाया गया है। यहाँ इन रोगियों के इलाज [illegible] प्रबन्ध है जिनके लिए [illegible] इलाज का एक अनिवार्य अंग है। इसी के लिये तैराकी का एक तालाब और [illegible] हम्माम भी यहाँ है। बच्चों की शल्य-क्रिया के लिए, [illegible] कान नाक तथा गले के रोगों के [illegible] लिए, एक्स-रे करने एवं त्वचा रोगों के लिए, और नेत्र-विज्ञान के लिये यहाँ भिन्न-भिन्न अस्पताल और संस्थान हैं।

बर्लिन-बूख के इस अस्पताल केन्द्र का प्रशासन कैसे चलता है, यह भी देखिए। इस केन्द्र के एक मेडिकल निदेशक हैं जिनका नाम है डा. आर. स्टाप्स। इनके आधीन सात सहायक निदेशक काम करते हैं जो डाक्टर हैं। ये विभिन्न तथा विशिष्ट डाक्टरी विभागों के निदेशक हैं। इस प्रशासन-बोर्ड के दो अन्य सदस्य हैं मुख्य प्रशासक और मैट्रन। यह बोर्ड मिलकर, नगर के स्वास्थ्य संबंधी मामलों के बारे में फैसले करता है। इस डाक्टरी-बोर्ड के अतिरिक्त एक डाक्टरी सलाहकार परिषद भी है यहां, जो इस अस्पताल केन्द्र के भावी विस्तार एवं विकास से संबंधित समस्याओं पर सोचविचार करती रहती है।

बर्लिन-बूख अस्पताल केन्द्र का विषालु-रसौली के इलाज का अस्पताल
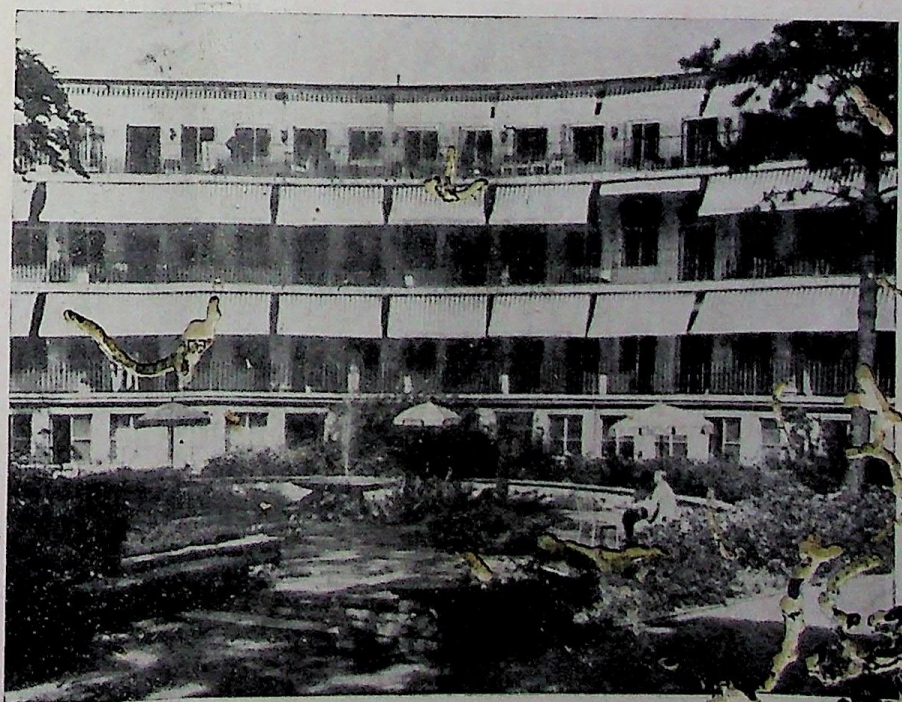
स्नातक...

गूएनटर कोख

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विश्व प्रसिद्ध ब्रान्डनबर्ग द्वार से कुछ ही दूर, और उनटरडेन-लिण्डन के राजमार्ग पर, मंत्रालयों, दूतावासों, हास्य और नाट्य, राज्य-पुस्तकालय के और राज्य-ऑपेरा के ठीक सामने यहां का १५० वर्ष पुराना हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय खड़ा है, अपनी गरिमा को लिये हुये।

आजकल १०,००० से अधिक छात्र-छात्रायें इस विश्वविद्यालय में पढ़ते हैं, और हर साल अनेक तरुण स्नातक डाक्टर, कृषि विशेषज्ञ, दर्शन शास्त्री, भाषाविद्, इतिहासकार, धर्मशास्त्री, वैज्ञानिक और शिक्षक अपना प्रशिक्षण एवं अध्ययन समाप्त करके यहां से निकलते हैं, और अपने विद्यार्थी जीवन को अलविदा कहते हैं।

एडिलिण्डे एर्डमान्न, इस वर्ष की एक ऐसी ही स्नातक है जो अपने छात्र जीवन से रुखसत हो रही है। कुमारी एर्डमान्न के पिता दूसरे महायुद्ध में मारे गये और, उसकी मां एक छोटे से कस्बे में दर्जन का काम करके अपना गुजारा कर रही है। इसी कारण से कु. एडेलिण्डे ने उच्चतर माध्यमिक स्कूल से प्रवेश करने के बजाय हिसाब-किताब रखने की ट्रेनिंग करना आवश्यक समझा, ताकि वह जल्द से जल्द अपनी मां की सहायता कर सके। लेकिन ट्रेनिंग के दौरान, इस मेहनती लड़की के काम तथा योग्यता से उसके शिक्षक अत्यधिक प्रभावित हुये और उन्होंने उसको विश्वविद्यालय में दाखिल होने की सलाह दी। उसको वज़ीफा दिया गया, और उसके बाद कुमारी एर्डमान्न ने तीन साल में मैट्रिक पास किया, जिसमें उसको विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ। इस सफलता ने उसके आत्म-विश्वास, और अधिक ज्ञान अर्जित करने की उसकी प्यास को बढ़ाया। वह बर्लिन चली आई और हुम्बोल्त विश्वविद्यालय के विज्ञान एवं गणित विभाग में दाखिला लिया। यहां भी, अन्य अधिकांश विद्यार्थियों की तरह उसको सरकारी छात्रवृति मिली। यह वज़ीफा उसको कमरे तथा आने जाने का किराया देने, खाने-पीने और आवश्यक किताबें खरीदने के लिये काफी था। कभी-कभी वह कुछ कपड़े खरीदने के लिये भी पैसा बचा पाती थी।

कुमारी एडेलिण्डे की आयु अभी सिर्फ २६ वर्ष है। लेकिन इस उमर में ही वह एक पूर्ण गणितज्ञ बन चुकी है। अपने मुख्य विषय, अर्थात् गणित के अतिरिक्त, उसको तीन भाषायें—अंग्रेजी, रूसी तथा फ्रंच भी पढ़नी पढ़ीं, ताकि वह इन भाषाओं में अपने विषय से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन कर सके।

बहरहाल, कु. एडेलिण्डे के लिये परीक्षा पास करने का समय अब समाप्त हो गया, और अब लम्बी छुट्टियों का मजा लूटने का उसको समय मिलेगा। छुट्टियां बिताने के बाद वह और उसके तीन अन्य सहपाठी स्नातक बर्लिन की एक महत्वपूर्ण फर्म में सहायक अभियन्ता के पद पर काम करेंगे। ... कु. एडेलिण्डे के साथ, गणित में २६ और स्नातक निकले। इनमें से पांच, विश्वविद्यालय में ही सहायक पदों पर नियुक्त हुये, तीन स्नातक स्नातकोत्तर अनुसंधान आरंभ करेंगे।

इन स्नातकों को नौकरी कैसे मिल गई? ... विश्वविद्यालय के अधिकारियों की यह जिम्मेदारी है कि वे मैट्रिक पास करने के बाद ही, विद्यार्थियों की नौकरी का ख्याल रखें और इसका प्रबन्ध करें। फर्में तथा अन्य संस्थायें विश्वविद्यालयों और कालिजों से नये स्टाफ के लिये लिखती रहती हैं। इसलिये, जर्मन जनवादी गणतंत्र में स्नातक को नौकरी की चिन्ता नहीं सताती। विश्वविद्यालय के अन्तिम वर्ष में ही स्नातक, अपने भावी काम करने के स्थलों से परिचय प्राप्त करते हैं।...

अनेक स्नातक, अपने विश्वविद्यालय के क्षेत्र (शहर) को छोड़कर दूसरी जगह नौकरी करने नहीं जाना चाहते। लेकिन चूंकि इन पठित और प्रशिक्षित स्नातकों (विशेषज्ञों) की सारे देश में आवश्यकता है, इसलिये उनको धैर्य से समझाया जाता है, और अधिकांश स्नातक जल्दी स्थिति को समझ जाते हैं। विवाहित दम्पत्ति को अलग-अलग स्थानों में नौकरी देकर कभी भी एक दूसरे से अलग नहीं किया जाता।

विद्यार्थी, हुम्बोल्त विश्वविद्यालय के सामने

चिट्ठी-पत्री

प्रिय महाशय,

आपके [illegible] से हिन्दी भाषा में जो **सूचना पत्रिका** निकलती है वह एक दफे हम लोगों को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसमें बहुत ही उपयोगी, मनोरंजक और साथ ही साथ आजकल की दुनिया की सभी हलचल भरी खबरें छपा करती हैं, जो बहुत जानने योग्य हैं। इसलिये आप लोगों से प्रार्थना करता हूं कि हम लोगों को भी 'सूचना पत्रिका' सुचारू रूप से हमेशा भेजने की कृपा करें। इससे हमें भी आपके देश के विषय में जानकारी हासिल करने में मदद मिलेगी।

प्रेम बहादुर श्रेष्ठ
काठमांडु
नेपाल

प्रियवर,

सूचना पत्रिका का जुलाई अंक मिला, आभारी हूं। आपके देश की सम्यक जानकारी इस पत्रिका के माध्यम से मिल जाती है—लगता है जैसे इस महान देश को पाठक स्वयं अपनी आंखों से देख रहा हो। भारतीय नेत्रहीनों के लिए प्रकाशित होनेवाली "आलोक" पत्रिका में समय-समय पर मैं इसमें से जानकारी उदधृत करता रहूँगा ताकि वे भी आपके देश से परिचित हो सकें।

ठाकुर विश्वनारायण सिंह
ब्रेल सम्पादक
देहरादून (उ. प्र.)

प्रिय महोदय,

जर्मन जनवादी गणतंत्र की **सूचना पत्रिका** आप नियमित भेज रहे हैं, इसके लिये प्रथम आपको धन्यवाद। आपकी 'पत्रिका' वास्तविक भारत-जर्मन मैत्री को सुदृढ़ बनाकर आपस में पारस्परिक सम्बन्धों को जोड़ने में बहुत ही सहायक है। इसके लेख बहुत सुन्दर और रुचिकर होते हैं।

आपके जुलाई, ६५ के अंक में **जर्मन समस्या और उसका हल** इसका कितना अच्छा निराकरण किया है। उसमें विश्व शांति के ही उद्देश्य हैं, आज समस्त संसार को जिसकी बहुत आवश्यकता है। आप-हम जितने दूर थे, उतने ही निकट आ रहे हैं। यह हमारे आपके लिये सौभाग्य की बात है, भविष्य के लिये भी यही आशा है।

'सूचना पत्रिका' में प्रश्न-उत्तर का स्तम्भ स्थायी रूप से रखा जाये। हमारे आपके बीच में जो भी प्रश्न उत्पन्न होंगे उनका समाधान इस स्तम्भ द्वारा हो सकेगा।

मुझे 'पत्रिका' के माध्यम से आपकी जर्मन भाषा सीखने का विचार है, यदि आप मासिक में जर्मनी का हिन्दी अनुवाद एक पृष्ठ अंकित करें तो और अधिक आपकी भाषा सीख सकेंगे।

आपके यहां से मराठी में भी 'सूचना पत्रिका' प्रकाशित होती हो तो आशा है, मुझे एक प्रति नियमित भेजने का कष्ट करें जिसे अनेक लोग लाभ उठा सकेंगे।

अंत में मैं पुनः आशा करता हूं कि जर्मन-भारत पूर्ववर्ती मित्र रहा वैसे ही परवर्ती में मित्रता को निभायेगा और विश्व शांति के प्रयत्नों में सफलता प्राप्त करेगा।

कृ. न. कनाठे
[illegible]ई हिन्दी विद्यापीठ
भैंसदेही (म. प्र.)

मराठी में 'सूचना पत्रिका' का नाम है "वृत पत्रिका"। यह आपको हमारे बम्बई दफतर से मिल सकती है। पता है:

मिस्त्री भवन
१२२, दिनशा वाचा रोड़
बम्बई।

प्रिय बन्धु,

'सूचना पत्रिका' [illegible] जुलाई, १९६५ का अंक आपकी तरफ से [illegible]। [illegible] धन्यवाद।

क्रान्तिवीर टीटो की [illegible] का वर्णन बड़ा रोचक है। जनता ने विश्व के इस क्रान्तिवीर का उचित ही सम्मान किया है।

कार्ल मार्क्स नगर की तस्वीरें देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। विश्व के इस महान, क्रान्तिकारी दार्शनिक की पुण्यस्मृति में, वीर जर्मन जनता ने एक नगर कायम किया है यह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

भारत-सोवियत संघ और यूरोप की सब जनवादी गणतंत्र सरकारों की और जनताओं की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई मैत्री, विश्व-शांति को कायम रखने [illegible] विराट बल प्रदान करती है।

आपकी वीर जनता को सौराष्ट्र साहित्य संग की ओर से शुभ कामनायें भेजता हूं।

नरेन्द्र देव
सौराष्ट्र साहित्य संगम
राजकोट (गुजरात)

श्रीमानजी,

मैं अपने एक दोस्त के जरिये आपका पता हासिल कर सका हूं। मैंने कई बार [illegible] हासिल करने की कोशिश की, लेकिन इसमें सफलता नहीं मिली। मैं आपकी **पत्रिका** का ग्राहक बनना चाहता हूं सो इस 'पत्रिका' के क्या नियम तथा, चंदे की दर या और कोई भी शर्तें हो उसे आप अविलम्ब भेजने का प्रयत्न कीजिये बहुत दिनों से यह हार्दिक इच्छा थी कि इस 'पत्रिका' का सदस्य बनूं। 'सूचना पत्रिका' प्राप्त करने पर मैं अपने को बहुत बड़ा भाग्यवान [illegible] था साथ ही [illegible] आपको धन्यवाद भी दूंगा।

पन्ना लाल [illegible]
कलकत्ता [illegible]. बंगाल

सहयोग
आये हैं।
होगा, और
मैत्री का प्रतीक
याद कर
...

समाचार

कैंसर रोग के उन्मूलन के लिये ज.ज.ग. के प्रोफेसर बॉन ग्रारडेने ने कई नये प्रयोग किये हैं। इन्हीं प्रयोगों के बारे में वह पत्रकारों से बातचीत कर रहे हैं

भारतीय समुद्र वैज्ञानिक ज.ज.ग. में

"भारतीय अनुसन्धान परिषद्" के सदस्य एवं "अन्तर्राष्ट्रीय समुद्र-विज्ञान संस्था" के प्रधान, डा. पणिकर ने, जो हाल ही में जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा पर आये थे, यहां के "समुद्र विज्ञान संस्थान" में एक सारगर्भित व्याख्यान दिया। उनके व्याख्यान का विषय था "भारत में समुद्र, विज्ञान और मछली पकड़ने की समस्यायें। इसके अतिरिक्त उन्होंने यूनेस्को के समुद्र विज्ञान आयोग की गतिविधि पर भी प्रकाश डाला।

डा. पणिकर ने, समुद्र विज्ञान के क्षेत्र में, भारत और ज.ज.ग. के अच्छे सहयोग की प्रशंसा की। उन्होंने कहा: "मेरा विश्वास है कि भविष्य में, अनुसन्धान के क्षेत्र में हमारे दो देशों के रिश्ते अधिक मजबूत हो जायेंगे और काफी विकसित भी होंगे। . . ."

भारतीय पर्यटकों का स्वागत है

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने हाल ही में हुई एक प्रेस कानफ्रेन्स में भारतीय गणराज्य से काफी संख्या में आने वाले भारतीय पर्यटकों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इससे हमारे दोनों देशों के संबंध और भी मजबूत होंगे। प्रवक्ता ने इस बात का भी संकेत किया कि जर्मन जनवादी गणतंत्र भी, अपने विभिन्न प्रतिनिधि-मण्डल, और कलाकार, छात्र, प्रोफेसर इत्यादि भारत भेजना चाहता है।

बिल्ली और कुते का सह-अस्तित्व

... जनवादी गणतंत्र के एक गांव ...टसाइ... में एक बिल्ली और एक कुत्ते की दुश्मनी, दोस्ती में बदल गई। हुआ यह कि एक कुत्ते की नांद में एक बिल्ली ने अपने तीन बच्चों को जन्म दिया। कुत्ते ने न सिर्फ इस बात पर ऐतराज नहीं किया, बल्कि बिल्ली की गैर हाजिरी में वह बच्चों की देखभाल भी करने लगा। कुत्ता केवल बिल्ली को ही अपने बच्चों के पास आने जाने देता है, और किसी को नहीं।

स. अ. ग. के उपराष्ट्रपति ज. ज. ग. जायेंगे

संयुक्त अरब गणराज्य के उप राष्ट्रपति, श्री हसनइब्राहिम, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकारी यात्रा पर रवाना हो जायेंगे। इस सिलसिले में, संयुक्त अरब गणराज्य जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधि, राजदूत एरनेस्ट शोल्ज, उप राष्ट्रपति से मिले और उनसे बातचीत की।

ज. ज. ग. के समृद्ध उपभोक्ता सहकारी संघ

पिछले वर्ष, जर्मन जनवादी गणतंत्र के कुल परचून क्रय-विक्रय का एक तिहाई भाग, यहां के उपभोक्ता सहकारी संघों के माध्यम से हुआ। ये उपभोक्ता संघ, सारे देश में लगभग ३८,००० उपभोगी भण्डार तथा दुकानें और ५,५०० रैस्त्रां चलाते हैं। इन भण्डारों और रेस्त्रानों के अलावा, उक्त सहकारी संघ, कई खाद्य-पदार्थ उत्पादक और वस्त्र उत्पादक फैक्ट्रियों के भी स्वामी हैं।

ज. ज. ग. के उपभोक्ता सहकारी संघों के सदस्यों की कुल संख्या लगभग ३० लाख, ९० हज़ार है, अर्थात् यहां की कुल बालिग जन-संख्या का ३० प्रतिशत। सदस्य-संख्या की दृष्टि से मजदूर यूनियनों के बाद दूसरा स्थान उपभोक्ता संघों का ही है।

अन्तर्राष्ट्रीय डाक-टिकट प्रदर्शनी

जर्मन जनवादी गणतंत्र के लाइपजिग नगर में शरदकालीन लाइपजिग व्यापार मेले के ८०० वें जयन्ती मेले के अवसर पर यहां डाक-टिकटों की एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी भी होगी। यह प्रदर्शनी ४ से १९ सितम्बर तक चलेगी और आज तक २० देशों के कई डाक-टिकट-संग्रह-कर्ताओं ने इस प्रदर्शनी में भाग लेने के लिये-स्थान आरक्षित करा लिया है। इस प्रदर्शनी में डाक-टिकट एवं डाक-टिकटों

के संग्रह, शोध संकलन, जाली टिकटें और टिकट-[illegible] संबंधी साहित्य प्रदर्शित किया जायेगा।

[illegible]स चिड़िया घर की दसवीं जयन्ती

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन [illegible] चिड़ियाघर ने गत मास (जुलाई) में अपना दसवां जन्मदिन मनाया। इस अल्प आयु में ही यह चिड़िया-घर विश्व प्रसिद्धि पा चुका है।

इस चिड़ियाघर की स्थापना सन् १९५५ में हुई और उस समय वहां केवल ४०० पशु पक्षी थे। बर्लिनवासियों ने अपने इस चिड़िया-घर की स्थापना में सक्रिय सहयोग दिया श्रमदान के रूप में। इस समय तक इन लोगों ने लगभग [illegible] लाख [illegible] श्रमदान किया है चिड़िया-[illegible] को बनाने के लिये। . . . इस बीच में [illegible] रहने वाले पशु पक्षियों की संख्या बढ़कर ४,७०० तक पहुंच चुकी है, जिनमें ८८५ विरल जातियों के जीव हैं।

आज तक उक्त बर्लिन चिड़ियाघर को १ करोड़ ६० लाख लोगों ने देखा है जिनमें देश-देशान्तरों के हजारों दर्शक भी शामिल हैं। इस चिड़ियाघर में, हर साल लगभग २५० पशु-पक्षी लाये जाते हैं समुद्र, वायु और अन्य मार्गों के जरिये।

शांति और लोक तंत्र के आधार पर ही एकीकरण संभव

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सुप्रसिद्ध बन्दरगाह रोस्टोक में, हाल ही में, बाल्टिक सप्ताह मनाया गया। इस सप्ताह में पश्चिमी जर्मनी से भी कई लोग भाग लेने आये थे। पं. जर्मनी के इन निवासियों से मुलाकात के दौरान, ज. ज. ग. की प्रमुख राजनीतिक पार्टी, समाजवादी एकता पार्टी के पोलिटिकल ब्यूरो के सदस्य, श्री हरमन्न मार्टन ने उनसे कहा कि "अणु बमों की धमकियों और आपाती काननों से थोपी गयी सैनिक तानाशाही के आधीन जर्मनी का पुनःएकीकरण नितान्त असंभव है। ऐसा अविभाजित जर्मनी जहां मुट्ठी भर इजारेदार जनता पर शासन करते हों, और ऐसा जर्मनी जिसने दो-दो महायुद्धों में दुनिया को धकेल दिया हो—एक बार फिर ऐसा ही अविभाजित जर्मनी बनाना न केवल दुनिया के लिये ही वरन् स्वयं जर्मन राष्ट्र के लिये भी बहुत बड़ा अभिशाप होगा। . . .

"हम जर्मनी के एकीकरण के समर्थक रहे हैं और आज भी हैं —लेकिन एक ऐसे जर्मनी के समर्थक जो शान्ति और लोकतंत्र का पोषक हो, और जो फिर कभी विनाशकारी युद्धों को जन्म न दे। हम ऐसे जर्मन राज्य के समर्थक हैं जहां राजसत्ता मुट्ठीभर इजारेदारों के हाथ में न होकर जनता के हाथ में हो। बस, यही एक रास्ता है शांति को सुरक्षित रखने और [illegible] जर्मनियों को एक करने का। विभाजित जर्मनी को एक करने के लिये दो जर्मन राज्यों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व जरूरी है, और इन दो राज्यों की सरकारों के बीच निरस्त्रीकरण, अणुशस्त्रों के परित्याग और दूसरे झगड़ों को सुलझाने के लिये आपस में समझौता करना भी अनिवार्य है। . . ."

प. जर्मनी में युद्ध अपराधी स[illegible]

एक ऐसे युद्ध अपराधी [illegible] के दिनों में, हि[illegible] को फासिस्ट [illegible] में [illegible] हालही में पश्चिमी जर्मनी [illegible] "विशिष्ट सेवा क्रास" का पदक देकर सम्मानित किया। इस नाजी अपराधी का नाम है डा. हरनाम कोनरिंग और यह पं. जर्मनी की शासक पार्टी "क्रिश्चियन डैमोक्रेटिक यूनियन" का संसद सदस्य है।

हालैण्ड, नार्वे आदि देशों पर नाजी आधिपत्य के दौरान, डा. कोनरिंग, राइख कमिसार सीस्स इनक्वार्ट का विशेष प्रतिनिधि था। युद्ध समाप्ति के बाद इनक्वार्ट को, अन्तर्राष्ट्रीय सैनिक अदालत ने युद्ध अपराधी करार देकर मौत की सजा सुनाई थी।

ज.[illegible]ग. में ६ से ७ वर्ष के हजारों बच्चों के लिये १ सितम्बर से स्कूल का नया सत्र शुरू हो जायेगा।

स्मारक : गुलाबों का बाग

इंगलैंड [illegible] फ्रांस [illegible] नामक स्थानों के नौजवान [illegible] गणतंत्र के विश्व प्रसिद्ध कला-[illegible] शहर में, यहां के नागरिकों [illegible]यती और

सहयोग से गुलाबों का एक बाग लगाते आये हैं। गुलाबों का यह बाग एक स्मारक होगा, और ... उक्त नगरों की आपसी मैत्री का प्रतीक भी होगा। इस संदर्भ में यह याद करना ... कि कावेन्ट्री और ड्रेस्डेन ... महायुद्ध में बमबारी से ... ध्वस्त हुये थे।

अखबारों के ... के टन

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में एक नया, विशिष्ट डाक-खाना है। इस डाकखाने से, ४० टन से लेकर १३० टन तक कुल वजन के अखबार तथा अन्य प्रकाशन रोजाना परिवहित होते हैं। यहां हर रोज, ज. ज. ग. के ६२० प्रकाशन और ३,५०० विदेशी अखबार तथा मासिक ढोये जाते हैं। यहां से ये अखबार ज. ज. ग. के लगभग एक हजार कस्बों और कई अन्य छोटे-छोटे स्थानों को भेजे जाते हैं। पुराना डाकघर इतने फैले कामकाज को करने में असमर्थ था। उक्त नये डाकखाने ... ई इमारत, बर्लिन के प्रमुख रेल स्टेशन के बगल में ही खड़ी है।

बाल सहचरों का अन्तर्राष्ट्रीय शिविर

बर्लिनः बाल सहचरों का, इस वर्ष का अन्तर्राष्ट्रीय ग्रीष्म शिविर, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी, बर्लिन के एक मनोहर झील के किनारे पर स्थित, ज. ज. ग. के बाल पयोनियरों के "विल्हैलम पीक" नामक मनोरंजन उद्यान में आयोजित हुआ। दुनिया के जिन देशों के ५०० बच्चे इस अन्तर्राष्ट्रीय बाल शिविर में भाग ले रहे हैं, उनमें से उल्लेखनीय नाम हैं : घाना, भारत, माली, फ्रांस, साइप्रेस, पश्चिमी जर्मनी, जंजीबार और ब्रिटेना। जर्मन जनवादी गणतंत्र के ६०० बच्चे भी इस शिविर से शामिल हुये हैं।

झील के किनारे पर स्थित और सुन्दर जंगलों से घिरा हुआ, ज.ज.ग. के "यंग पयो- ... उक्त ... नामक ... ३५० हेक्टर भूमि पर ... और इसमें उनके रिहायशी मकान, दो ... एक क्लब और एक खेल-कूद का ... डियम बना हुआ है। इस उद्यान में एक विशेष पार्क भी है जिसका नाम है "मैत्री बाग"। इसमें दुनिया के अनेक देशों के बच्चों ने पौधे और वृक्ष बोये हैं।

संसद सदस्यों में २५ प्रतिशत से अधिक औरतें

जर्मन जनवादी गणतंत्र की संसद में, कुल निर्वाचित सदस्यों में एक चौथाई से अधिक औरतें सदस्य है। इस तथ्य का उद्घाटन हुआ है उस सूचना में जो जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, संयुक्त राष्ट्र संघ की आर्थिक एवं सामाजिक परिषद को दी है इसकी जनेवा बैठक में।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में, कानूनन औरतों को समानता का दर्जा दिया गया है, और वे यहां ऊंचे-ऊंचे और महत्वपूर्ण पदों पर काम कर रहीं हैं। मंत्रिमण्डल में भी तीन महिलायें हैं जिनके आधीन न्याय, शिक्षा आदि मंत्रालय हैं। एक ममहिला उप-प्रधान मंत्री भी है।

कानून के क्षेत्र में ३१.७ प्रतिशत औरतें न्यायधीश और २३.१ प्रतिशत वकील हैं। इसी प्रकार, उच्चतम न्यायालय में २० प्रतिशत औरतें हैं।

अन्य देशों में जर्मन कलाकारों के अभिनय

जर्मन जनवादी गणतंत्र के अभिनेताओं, संगीतकारों तथा अन्य कलाकारों ने, इस ... के पहले छः महीनों में, दूसरे देशों में ४, ... अभिनय तथा प्रदर्शन प्रस्तुत किये। इन अभिनयों और प्रदर्शनों में से ११० संगीतकारों ने, २२ देशों में, २०४ संगीत-प्रदर्शन प्रस्तुत किये।

निकट भविष्य में ड्रेस्डेन का वाद्यवृन्द साल्जबुर्ग (आस्ट्रिया) और डुबरोवनिक (यूगोस्लाविया) के महोत्सवों में अपने संगीत से वहां के लोगों का मनोरंजन करेंगे। इसी प्रकार जर्मन जनवादी गणतंत्र का "लाइपजिग बाख वाद्यवृन्द" यूगोस्लाविया, यूनान, साइप्रेस और यूरोप के कतिपय उत्तरी देशों में अपनी संगीत कला का प्रदर्शन करेगा। लाइपजिग का 'गेवाण्डहाउस' नामक वाद्यवृन्द, अपने कार्य-क्रम का शुभारंभ लन्दन से करेगा नये साल (१९६६) के प्रारंभ में, वहां के रॉयल फेस्टिवल हाल में।

ब्रिटेन, अरब गणराज्य ... अन्य कई देशों के कई अभिनेता ... दूसरे कलाकार इसी प्रकार से, जर्मन जनवादी गणतंत्र में आकर यहां की जनता का मनोरंजन करेंगे।

पोप पाल द्वारा फासिस्ट विरोधी योद्धा का सम्मान

पोप पाल ६ ने जर्मनी के एक सुप्रसिद्ध फासिस्ट-विरोधी योद्धा, श्री फ्रांज प्राइस्सलर को "नाइटहुड ऑफ दि ऑर्डर आफ पोप सेंट सिलवेस्टर" के ... से सम्मानित किया है। पदक प्रदान करने वाले कागजात पर पोप के लिये पैपल के राज्य सचिव, श्री सिकोगानी के दस्खत थे, और पोप पाल की ओर से, श्री प्राइस्लर को उक्त पदक प्रदान किया जर्मन जनवादी अणतंत्र के पादरी डी. ओट्टो स्पूलबेक ने।

सन् १९४२ में हिटलरी शासन ने, श्री फ्रांज प्राइस्सलर को सेना में जबरी भरती करके पोलैण्ड भेज दिया वहां के कुख्यात वारसा घेटो में फासिस्टों द्वारा जमा किये गये यहूदियों का कत्लेआम करने के लिये। लेकिन उसने नाजी दरिन्दों का यह पाशविक हुकुम मानने से इन्कार किया। इसके लिये श्री प्राइस्सलर को फासिस्ट सैनिक अफसरों ने दाखाऊ के बदनाम यातना-शिविर में कैद किया। इस शिविर में भी इस साहसी फासिस्ट विरोधी योद्धा ने कई यहूदियों की जानें बचाने में मदद की।

पोप पाल और ज. ज. ग. के पादरी स्पूल-बैक को कई देशों से अनेक तार और पत्र मिले हैं जिनमें श्री फ्रांज प्राइस्सलर के साहस तथा धैर्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है। श्री प्राइस्सलर जर्मन जनवादी गणतंत्र की "क्रिश्चयन डेमोक्रेटिक पार्टी" के सदस्य हैं।

सचित्र समाचार

भारत से अलविदा होने के अवसर पर 'भारत–ज. ज. ग. मैत्री संघ' ने एक समारोह में श्री बोट्टगर को एक हुक्का, और उनकी पत्नी को एक साड़ी उपहार में दिये

जुलाई में भारतीय लोकसभा के दो सदस्य सर्वश्री आर. पी. सिन्हा तथा के. पी. एस. सिन्हा, और संसदीय मामलों के मंत्रालय में सचिव, श्री कैलाश चन्द्र, जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा पर गये थे। चित्र में वे, ज.ज.ग. की राज्यपरिषद के सचिव, श्री ओट्टो गोटशे के साथ विचार विनिमय कर रहे हैं

भारतीय नृत्यकला की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री इन्द्राणी रहमान, श्री एवं श्रीमती बोट्टगर को एक समारोह में अलविदा कह रही हैं

मद्रास में १९ जुलाई के दिन श्री बोट्टगर के सम्मान में अलविदाई पार्टी दी गई। चित्र में श्री बोट्टगर, मद्रास के उद्योग मंत्री श्री आर. वेंकटरमन (दायें) के साथ खड़े हैं

रजि० नं० डी-१३३०

Gateway of India — Bombay
4.3.65

जर्मन
जनवादी
गणतंत्र

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष १०
अंक ९ | २० सितम्बर, १९६५

संकेत

पृष्ठ

मुख पृष्ठ : 'गेटवे ऑफ इण्डिया, बोम्बे' : रेखा-चित्रकार : डा. लांगर (अन्य रेखा चित्र १२,१३ पृष्ठों पर)

अंतिम पृष्ठ : ज. ज. ग. के एक उत्तरी गांव में एक पुरानी पवन-चक्की

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और यूनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

वर्धा आश्रम में महात्मा गांधी के साथ रहने वाले

भारत में ज.ज.ग. के व्यापार-दूतावास के नये प्रमुख

श्री हरबर्ट फिशर

इस मास (सितम्बर, १९६५) के प्रथम सप्ताह में, श्री हरबर्ट फिशर ने, भारत में जर्मन जनवादी गणतंत्र के नये व्यापार-दूतावास के प्रमुख की हैसियत से, अपना कार्यभार संभाला।

श्री फिशर का जन्म हुआ १० अप्रैल, सन् १९१४ के दिन, जर्मनी के हेरनइट नामक स्थान में। सुप्रसिद्ध वाइमर रिपब्लिक के अन्तिम वर्षों में उनका दीक्षान्त हुआ।

श्री हरबर्ट फिशर, उन उदारचेता जर्मनों में से एक थे, जो लोकतन्त्र एवं प्रगतिशील विचारों के थे, और जो शुरू से इस तथ्य को समझते थे कि हिटलर और फासिस्तवाद द्वारा राजसत्ता संभालने का अर्थ होगा युद्ध। सन १९३३ में जब हिटलर ने जर्मनी का शासन हथिया ही लिया, तब श्री फिशर भी अनेकों अन्य फासिस्त-विरोधियों की तरह अपनी मातृभूमि छोड़ने पर मजबूर हुए। लेकिन अपने इस निष्कासनकाल में भी वह शांति, लोकतन्त्र एवं समाजवाद की विजय के लिये निरन्तर संघर्ष करते रहे।

श्री फिशर ने अपने निर्वासन के प्रथम दो साल, पश्चिमी यूरोप में, बड़ी मुसीबतों में काटे। इन वर्षों में वह, एशियाई तथा अन्य पराधीन देशों के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों से बहुत आकर्षित हुए। भारत के साम्राज्य-विरोधी स्वातन्त्र्य-संग्राम की गतिविधि में वह खास दिलचस्पी लेने लगे। श्री फिशर ने भारतीय मुक्ति आन्दोलन के कर्णधार, महात्मा गांधी के साथ पत्र-व्यवहार शुरू किया। इसके बाद वह, सन १९३६ में भारत आये, वर्धा आश्रम में गांधी जी के निर्देशन में काम करने के लिये।

पूरे १० वर्ष--अर्थात् सन १९३६ से १९४६ तक—श्री हरबर्ट फिशर भारत में रहे, और अपनी समस्त शक्ति से भारत के राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेते रहे। महात्मा गांधी एवं अन्य राष्ट्रीय नेताओं से प्रेरणा प्राप्त करके श्री फिशर एक समाज-सेवक बन गये। इस हैसियत से उन्होंने 'अखिल भारतीय ग्राम उद्योग सेवक संघ' और सहकारिता आन्दोलन में सरगर्म हिस्सा लिया।

सन् १९३६ में, श्री फिशर, भारतीय नेशनल कांग्रेस के फैज़पुर अधिवेशन में शामिल हुए, जहाँ वह जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, खान अब्दुल गफ्फार खाँ तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं के संपर्क में आये।

दूसरे महायुद्ध के आरम्भ होते ही, ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने श्री फिशर को गिरफ्तार किया और अहमदनगर, पुरन्धर तथा अन्य स्थानों पर कैद रखा। ब्रिटिश सरकार के इस रवैये पर महात्मा गांधी ने अपना रोष प्रकट किया, और उन्होंने ब्रिटिश वाइसराय को एक विरोध-पत्र लिखा जिसमें श्री फिशर को रिहा करने की मांग की गई थी। ....भारत में अपने आवास काल के दौरान उन दिनों, श्री फिशर ने, भारत के आर्थिक पुनर्निर्माण एवं कृषि विकास से संबंधित समस्याओं का गहरा अध्ययन किया।

दूसरे महायुद्ध की समाप्ति पर, सन १९४६ के अन्त में, श्री हरबर्ट फिशर जर्मनी लौट गये और अधूरे छोड़े हुए काम में, अर्थात् अपने देश के समाजवादी एवं लोकतन्त्रात्मक निर्माण में वह एक बार फिर जुट गये। कुछ समय तक वह जर्मन जनवादी गणतन्त्र के एक उच्चतर माध्यमिक स्कूल के, और इसके बाद एक शिक्षक प्रशिक्षण कालेज के प्रधानाचार्य के रूप में काम करते रहे।

सन् १९५६ में श्री हरबर्ट फिशर, ज.ज.ग. के विदेश मंत्रालय में आ गये। सन १९५८ में वह पुनः भारत आये ज.ज.ग. के भारत स्थित व्यापार-दूतावास के उप-प्रमुख बनकर; और सन् १९६२ तक वह इस पद पर रहकर स्वदेश लौटे। वहां वह ज.ज.ग. के विदेश मंत्रालय में 'दक्षिण पूर्व एशिया विभाग' के प्रमुख नियुक्त हुए। अब श्री फिशर फिर भारत आये हैं....ज.ज.ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख बनकर।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सफलता के छः मास

जर्मन जनवादी गणतंत्र के, इस वर्ष (१९६५) के प्रथम छः मास सर्वतोमुखी आर्थिक प्रगति की दृष्टि से बहुत सफल रहे। इस सफलता का कारण है राज्य तथा आर्थिक अधिकारियों, और जर्मन जनवादी गणतंत्र की समस्त श्रमिक जनता का संयुक्त बल एवं प्रयत्न। यह सफलता, जर्मन जनवादी गणतंत्र की ओर अधिक राष्ट्रीय प्रगति की निश्चित द्योतक है।

पिछले वर्ष अर्थात् सन् १९६४ के प्रथम छः महीनों के आंकड़ों से तुलना करके, इस वर्ष के प्रथम छः मास में, वृद्धि के निम्न आंकड़े दृष्टव्य हैं :

राष्ट्रीय आय में . . .	४.० प्रतिशत
निवेश में . . .	८.० ,,
औद्योगिक उत्पादन में . . .	६.७ ,,
श्रम उत्पादिता में . . .	६.४ ,,
भवन निर्माण उत्पादन में . . .	६.६ ,,
पशु – धन में . . .	१०.० ,,
विदेश व्यापार में . . .	४.० ,,
परचून व्यापार में . . .	४.२ ,,

निवेश

उक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीय आर्थिक निवेश में ८ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस कुल निवेश की काफीबड़ी रकम, रासायनिक उद्योग और ऊर्जा के उत्पादन में लगा दी गई। उत्पादन की नई क्षमताएँ और योजनायें पैदा की गयीं। उदाहरण के लिये वेएटशाउ के बिजली घर में, २०० मेगावाट क्षमता वाला एक और बिजली जनरेटर चालू किया गया। इसी प्रकार फोएनिक्स नार्ड की खदान में, गूबेन और प्रेमनिट्स के रासायनिक कारखानों में, उनकी क्रमशः क्षमातयें २१ लाख टन कच्चा लिगनाइट, और १ हजार तथा ५ सौ टन डेडेरान एवं कृत्रिम ऊनी तन्तु पैदा करने तक बढ़ा दी गयीं।

राज्य और आर्थिक आयोगों तथा अधिकारियों ने मुख्य रूप से, वैज्ञानिक-तकनीकी क्षेत्र के विकास एवं प्रगति पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। तकनीशनों, वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों और श्रमिक जनता के परिश्रम और सहयोग के सद्परिणाम, इस वर्ष, लाइपज़िग के ८००वें जयन्ती मेले में साफ तौर से देखने को मिले। इस मेले में ज. ज. ग. द्वारा कुल प्रदर्शित वस्तुओं में से १७ प्रतिशत वस्तुएं या तो एकदम नई, अथवा अधिक विकसित थीं। इस अच्छी सफलता का एक ज्वलन्त प्रमाण यह तथ्य है कि मेले में, उत्कृष्ट उत्पादनों पर लाइपज़िग मेला दफ्तर ने जो २२० स्वर्ण पदक प्रदान किये उनमें ११६ पदक, जर्मन जनवादी गणतंत्र की वस्तुओं को दिये गये।

औद्योगिक उत्पादन

सन् १९६५ के पूर्वार्ध में, अनेक नई वस्तुएं उत्पादन के क्षेत्र में दाखिल हुई। इन वस्तुओं के उत्पादन में, उत्पादन और तकनालोजी की नई विधियों को काम में लाया गया था। इन विधियों के प्रयोग से एक ओर श्रम उत्पादिता में वृद्धि हुई और दूसरी ओर बुनियादी लागत में कमी हो गई।

सन् १९६५ के पूर्वार्ध में, जैसा कि उल्लिखित आंकड़ बताते हैं, औद्योगिक वस्तुओं के उत्पादन में ६.७ प्रतिशत की और श्रम उत्पादिता में ६.४ प्रतिशत की वृद्धि हुई। राज्य द्वारा संचालित और निर्देशित औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि के निम्न आंकड़े दृष्टव्य हैं:

वेटशाउ का बिजली-घर
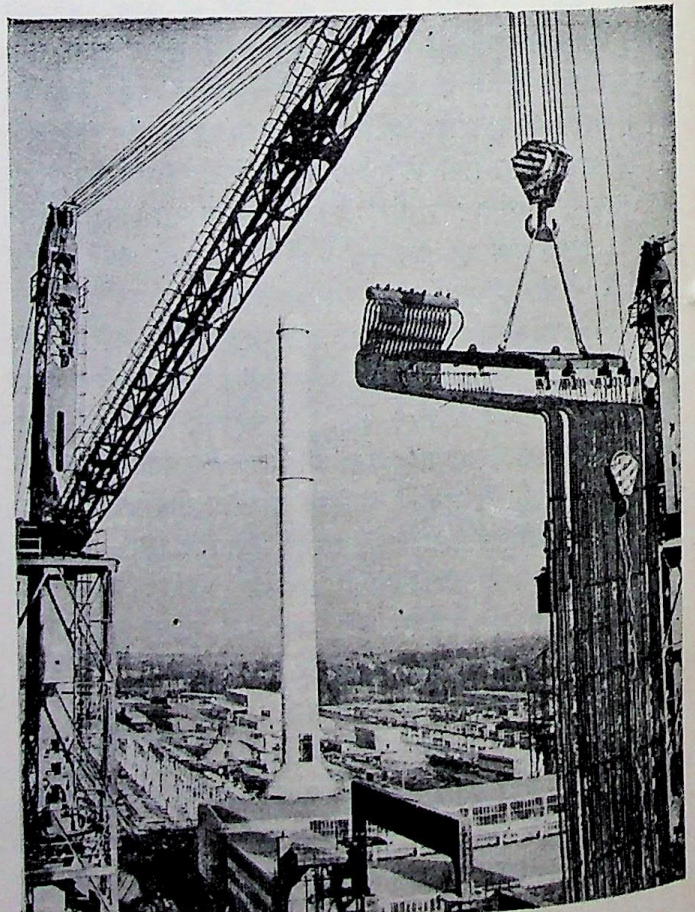
उद्योग	वृद्धि
रासायन में	१०.० प्रतिशत
अलोह धातु उद्योग एवं पोटाश में....	७.० ,,
भारी मशीनों एवं परिवहन मशीनों का उत्पादन में	९.० ,,
ऊर्जा एवं शक्ति यन्त्र में....	८.० ,,
मशीनी औजार एवं स्वचालन यन्त्र में....	१३.० ,,
विद्युत-तकनीकी की यन्त्र में....	१०.० ,,
लकड़ी, कागज एवं छापेखान में....	६.० ,,

विभिन्न प्रान्तों की राष्ट्रीय आर्थिक परिषदों के आधीन काम करने वाली राष्ट्रीय स्वामित्व वाली फैक्ट्रियों ने उत्पादन में ७ प्रतिशत वृद्धि की। इसी प्रकार अर्ध राज्यकीय और निजी एवं कुटीर उद्योगों तथा उद्यमों ने अपने अपने उत्पादनों को बढ़ाया। औद्योगिक उत्पादनों की गुणात्मकता में काफी उन्नति हुई। यह उन्नति, विशेष कर खदान यंत्रों, क्रेनों, वाहक-संयन्त्रों और विद्युत यन्त्रों में हुई।

वास्तु निर्माण

विनिर्माण उत्पादन में वृद्धि का प्रमुख कारण है उद्योग की से शाखा में श्रम-उत्पादिता में ९ प्रतिशत की बढ़ौती। इस क्षेत्र में कई प्रायोजन तथा कारखाने जैसे लुडविगस्फेल्डे का कारखाना और शेवेड्ट की उर्वरक फैक्ट्री, निश्चित समय से पहले ही पूरे किये गये। इसी प्रकार, इस वर्ष के पहले छः महीनों में २५ हजार रहायशी फ्लैट तामीर किये, गये। रहायशी मकानों की तामीर का कार्यक्रम विशेषकर गूबेन, ल्यूना, वरेरा, येना तथा अन्य औद्योगिक केन्द्रों में, निश्चित समय से पूर्व पूरा किया गया।

कृषि

कृषि के क्षेत्र में भी उत्पादन काफी अच्छा रहा। वृद्धि के निम्न आंकड़े, इस बात को पुष्ट करेंगे :

गोश्त में...	११.६ प्रतिशत
कुक्कट पालन में...	४.६ ,,
दूध में...	८.६ ,,
अण्डों में...	६.७ ,,

इसके अलावा, अधिक उर्वरक और हजारों ट्रैक्टर तथा अन्य कृषि यन्त्र भी सप्लाइ किये गये, और कई कृषि भवन तामीर किये गये।

विदेश व्यापार

समाजवादी, पूंजीवादी तथा विकासशील देशों के साथ, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार में भी काफी अच्छी वृद्धि हुई, इस वर्ष के पूर्वार्ध में। दो जर्मन राज्यों के बीच, व्यापार में गतिरोध आया। इस गतिरोध के लिये पश्चिमी जर्मनी की हठधर्मी और एकतरफा कार-

ज.ज.ग. का सब से बड़ा कारखाना है ल्यूना का रासायनिक कारखाना। यह चित्र है इस कारखाने के गैस अलग करने वाले विभाग का
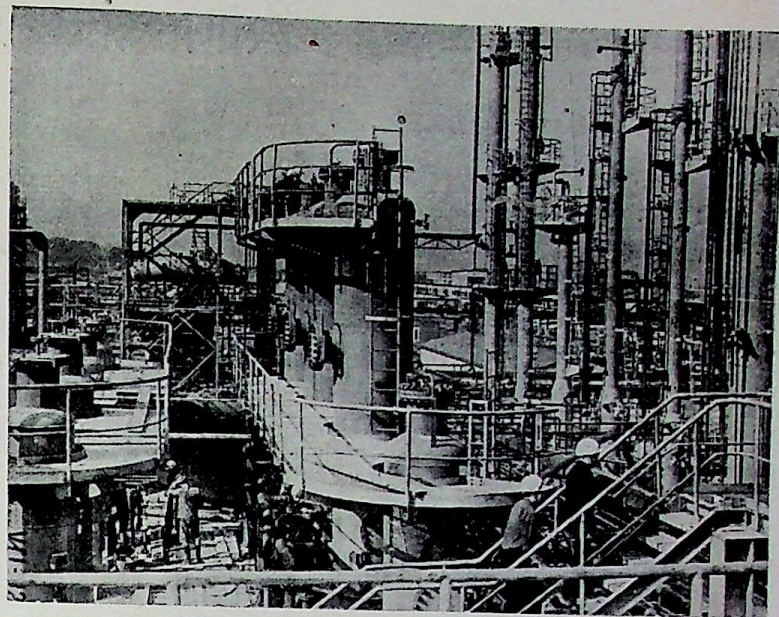
वाई जिम्मेदार है। इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में जर्मन जनवादी गणतंत्र के उद्योग का प्रमुख काम होगा, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अधिक उत्पादन पैदा करना जो अन्य देशों को काफी मात्रा में निर्यात किये जायेंगे।

जीवन स्तर में वृद्धि

ज. ज. ग. की उल्लिखित आर्थिक प्रगति का अवश्यम्भावी परिणाम यह निकला है कि वहाँ के लोगों का जीवन स्तर काफी बढ़गया है। उपभोग की निम्न वस्तुओं में क्रय-विक्रय वृद्धि के ये आंकड़े इस तथ्य को पुष्ट करेंगे :

महिलाओं के कपड़ों में....	८ प्रतिशत
लड़कों के कपड़ों में....	१२ ,,
चमड़े की वस्तुओं में....	१३ ,,
बिजली की घरेलू वस्तुओं में....	१८ ,,
कॉफी में....	४ ,,
गोश्त में....	२ ,,
शिशु खाद्य में....	१२१ ,,
अण्डों में....	६ ,,

ज.ज.ग. व्यापार-दूतावास के नये प्रमुख

(पृष्ठ ३ का शेष)

भारत और जर्मन जनवादी गणतन्त्र के बीच राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में वर्तमान मित्रता के संबंधों को अधिक व्यापक और दृढ़ बनाना, श्री हरबर्ट फिशर अपना प्रमुख कर्तव्य समझते हैं। यह उनकी निश्चित धारणा है कि दोनों देशों की मुख्य नीतियां समान हैं और इसलिये दोनों देशों के रिश्तों को चर्तुदिक बढ़ाने की संभावनायें अथाह हैं।...श्री फिशर और उनकी धर्मपत्नी भी अच्छी तरह हिन्दी बोल एवं लिख पढ़ सकती हैं।

सोर्ब जाति का नया जीवन

कूर्ट क्रेन्ज

(डोमोविना की फेडरल परिषद् के अध्यक्ष)

जर्मन जनवदी गणतंत्र के दक्षिण-पूर्व में, लाउसिट्ज़ नामक स्थान में, अल्पसंख्यक सोर्ब जाति आबाद है। यह जाति प्राचीन स्लाव कबीलों के वंशज हैं, जो ईसा के एक शताब्दी बाद एल्बे और ओडर नदियों के बीच बस गये, एक स्वतन्त्र जाति के रूप में। लेकिन सन १००० के लगभग, जर्मन सामन्तों ने अनेक युद्धों में इनको पराधीन बनाया। ये युद्ध अनेकानेक वर्षों तक चलते रहे। पराधीनता के बाद सोर्ब एक दबी हुई, शोषित अल्पसंख्यक जाति का जीवन बिताती रही। इसके न सामाजिक अधिकार थे, न राजनीतिक अधिकार। लेकिन यह वीर जाति, समय समय पर अपने अधिकारों के लिये लड़ती रही और विद्रोह करती रही।

इस जाति पर सबसे अधिक अत्याचार और क्रूर शोषण हिटलर के फासिस्त शासन काल में हुआ। इस काल में सोर्ब जाति को "निम्न कोटि के प्राणी" घोषित किया गया था, और उनकी भाषा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। फासिस्तवाद के पोषक हिटलर के अधिकारियों ने सोर्बों के एक मात्र जातीय संगठन "डोमोविना" (DOMOVINA) और उनके सांस्कृतिक तथा शिक्षा संस्थानों को नष्ट किया। इस तरह फासिस्त अत्याचारियों ने इस जाति की मूल्यवान जातीय परम्परा तथा विरासत को मिट्टी में मिलाने की पूरी पूरी कोशिश की।

फासिस्तों की क्रूर यातनायें देने वाली विशिष्ट फौज एस. एस. के सबसे बड़े अधिकारी हिम्मलर ने सभी सोर्बों को जर्मनी से निकाल बाहर करने का हुक्म दिया था। इस आदेश में, जिसपर हिम्मलर ने स्वयं दस्तखत किया था, लिखा गया है : "जर्मन राइख की सीमाओं में रहने वाली आबादी के ऐसे हिस्से (सोर्ब तथा वेण्ड्स), जो जाति की दृष्टि से निम्न कोटि के हैं, निकाल बाहर कर दिये जायें और (जर्मन) अधिकृत पूर्वी क्षेत्रों म ले लिये जायें। इनसे सड़कें बनाने, खानें खोदने तथा हमारी ऐसी ही अन्य विशिष्ट योजनाओं में मज़दूरों का काम लिया जाय। चूंकि इनकी अपनी कोई संस्कृति नहीं है, इसलिए वे जर्मन राष्ट्र की उच्च, सही एवं कड़े नेतृत्व में काम करेंगे।..."

दूसरे शब्दों में फासिस्त अधिकारी हिम्मलर के इन लफ्ज़ों का सीधा अर्थ है सोर्ब जाति के वजूद को ही खत्म कर देना।

लेकिन दूसरे महायुद्ध में जब पाशविक फासिस्तवाद की कमर तोड़ दी गई तो लाउसिट्ज़ में रहने वाली सोर्ब जाति भी इसके चंगुल से मुक्त हुई। सन १९४५ के जनतांत्रिक सुधारों के बाद, जो सभी के लिये सामाजिक मुक्ति और समानता के आधार थे, अन्य जर्मनों के साथ सोर्बों का भी नया जीवन शुरू हुआ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की समाजवादी सरकार, जर्मनों और सोर्बों में कोई भेद नहीं करती। सन १९४८ में ही, जबकि फासिस्त-विरोधी लोकतन्त्रात्मक विधान तैयार हो रहा था, सैक्सनी की संसद ने "सोर्ब जनता के अधिकारों की सुरक्षा के लिये कानून" में १५०,००० सोर्बों को पूरे और समान अधिकार दिये थे। इस कानून के द्वारा न केवल अल्पसंख्यक सोर्ब जाति की जातीय संस्कृति की रक्षा हुई है, बल्कि प्रशासन, संचालन और राजनीतिक मामलों में भी उनको समान अधिकार मिले हैं। सन १९४९ में जर्मन जनवादी गणतन्त्र की स्थापना के बाद इन अधिकारों को ज.ज.ग. के संविधान में जगह दी गई। इस संविधान की धारा २ में लिखा गया है कि "गणतन्त्र में, अल्पसंख्यक राष्ट्रीय जातियों की चारित्रिक विशिष्टताओं को

बाउट्ज़ेन में सोर्बों का भवन
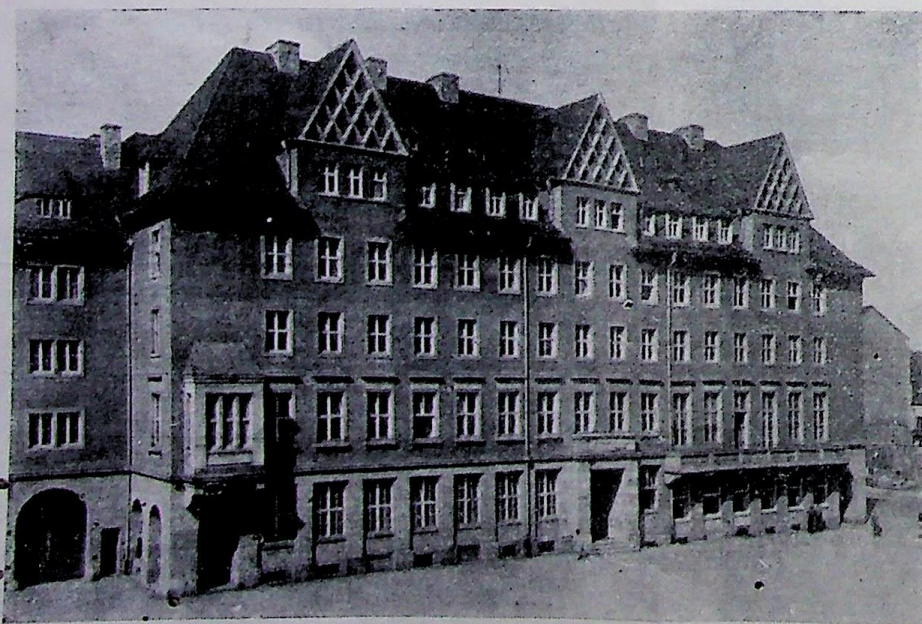
प्रोत्साहन दिया जायगा और उनको शिक्षा, प्रशासन और अदालतों में अपनी मातृभाषा प्रयुक्त करने की प्रत्येक सुविधा दी जायगी ।...."

ज. ज. ग. के विभिन्न अंगों में, उक्त सिद्धांतों को अमल में लाने के लिये अनुकूल वातावरण एवं आवश्यक तत्व पैदा किये गये हैं । यहां के गृह मंत्रालय में एक विशेष विभाग सोर्ब जाति के मामलों की देखभाल कर रहा है । इस विभाग में सब के सब कर्मचारी सोर्ब ही हैं । यह विशिष्ट विभाग, सोर्ब जनता से संबंधित विभिन्न समस्याओं के सुलझाने में गृह मंत्रालय को सुझाव तथा परामर्श देता रहता है । सरकार के अन्य मंत्रालयों में भी ऐसे ही विशिष्ठ विभाग कायम किये गये हैं ।

ज. ज. ग. के उस क्षेत्र के स्कूलों में, जहाँ सोर्ब जनता आबाद है, (क) कोटि के स्कूलों में पठन-पाठन का माध्यम सोर्ब भाषा है । जर्मन भाषा विशिष्ट विषय के रूप में पढ़ाई जाती है । (ख) कोटि के स्कूलों में—अर्थात् ऐसे क्षेत्रों के स्कूलों में जहाँ सोर्ब जाति जर्मन जाति के साथ मिलजुल गई है—जर्मन भाषा शिक्षण का माध्यम है, और सोर्ब भाषा विशिष्ट विषय के रूप में पढ़ाई जाती है ।

लाइपज़िग के कार्ल-मार्क्स विश्वविद्यालय में एक विशेष सोर्ब संस्थान स्थापित किया गया है । इस संस्थान के माध्यम से सोर्ब विद्यार्थी उच्च सोर्ब-विज्ञान में उपाधि ले सकते हैं । लाइपज़िग एवं ड्रेस्टेन विश्वविद्यालयों में, विशिष्ट छात्रावास सोर्ब विद्यार्थियों के लिये सुरक्षित रखे गये हैं ।

राज्य के प्रशासन में तथा विभिन्न अंगों में सोर्बों की अच्छी खासी संख्या ज़िम्मेदार पदों पर आसीन है । इसके अलावा ज.ज.ग. की लोकसभा (पीपुलस चैम्बर) एवं अन्य विधान सभाओं, निगमों तथा नगर पालिकाओं आदि में २,००० से अधिक सोर्ब-जन निर्वाचित सदस्यों के रूप में राज्य के विकास में योगदान दे रहे हैं ।

सोर्ब संस्कृति को सुरक्षित रखने और विकसित करने के लिये ज.ज.ग. में अनेक

बाउटज़ेन में सोर्ब जन एक सांस्कृतिक मेले में भाग लेने जा रहे हैं अपनी जातीय वेश भूषा में

केंद्र तथा संस्थान कायम किये गये हैं । सन् १९५१ में 'जर्मन विज्ञान अकादमी' के आधीन 'सोर्ब लोक-कला संस्थान' कायम किया गया । इससे भी पहिले सन् १९४८ में 'सोर्ब जन-नाट्यशाला' की स्थापना की गई थी जिसमें सोर्ब जनों को अभिनय का प्रशिक्षण दिया जाता है । 'राष्ट्रीय सांस्कृतिक राज्य एनसाम्बल' एक और महत्वपूर्ण संस्थान है । सोर्ब जाति से संबंधित विशेष प्रसारण कार्यक्रमों का खास प्रबन्ध भी है । सोर्ब शिक्षकों का अपना एक अखबार "सेरब्स्का सूला" भी है । इसी प्रकार सोर्ब बच्चों का एक लोकप्रिय पत्र "पूलोमियो" भी प्रकाशित होता है ।

सोर्ब-जाति के प्रमुख संगठन "डोमोविना" का एक दैनिक, एक साप्ताहिक और एक सांस्कृतिक अखबार भी है । ये तीनों अखबार सोर्ब भाषा में प्रकाशित होते हैं । इसके अतिरिक्त दो धार्मिक मासिक पत्रों का भी प्रकाशन होता है । "काफोल्स्की पोजोल" कैथोलिक सोर्बों का, और "पोमाज बोह" प्रोटैस्टेंन्ट सोर्बों का पत्र है ।

प्रसिद्ध सोर्ब लेखकों एवं अन्य साहित्यिकों की रचनायें, ज.ज.ग. में काफी लोकप्रिय हैं । कई सोर्ब लेखकों को उच्च साहित्यिक पदक तथा पुरस्कार दिये गये हैं ।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की वह अल्पसंख्यक सोर्ब जाति, जिसको हिटलर के फासिस्त अधिकारियों ने, "जातीय दृष्टि से निम्न कोटि के प्राणी" घोषित किया था, आज ज.ज.ग. के समाजवादी निर्माण और विकास के हर क्षेत्र में—उद्योग, कृषि, शिक्षा आदि के क्षेत्रों में—अन्य नागरिकों के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर, अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान कर रही है । समानता और सम्मान के इस राज्य को—अर्थात् ज.ज.ग. को इसी लिए लाउसिट्ज़ में आबाद सोर्ब "सोर्ब जनता की पितृभूमि" कहकर पुकारते हैं ।

येना विश्वविद्यालय

आन्ने कार्टरिन ल्यूशनेर

एक प्रसिद्ध जर्मन लोकगीत की पंक्तियों में "ज़ाल्ले नदी के रमणीय तटों पर खड़े गर्वोन्नत एवं भव्य राजमहलों" का वर्णन हुआ लेकिन इस नदी के तट पर यहां का आलीशान विद्या केंद्र—अर्थात् येना का विश्वविद्यालय भी खड़ा है। कहा जाता है कि एक जर्मन राजकुमार योहान्नेस फ्रीडरिख वान साखंसेन ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। स्थापना से संबंधित सरकारी दस्तावेज़ों में, स्थापन तिथि १५ अगस्त, सन १५५७ लिखी मिलती है। उस दिन यहां के 'हाइ स्कूल' को —जो सन १५४८ से चल रहा था—बढ़ा कर एक विश्वविद्यालय में बदल दिया गया। उसी दिन से इस विश्वविद्यालय को धर्म-शास्त्र, कानून, डाक्टरी और दर्शन आदि विषयों के पढ़ाने तथा परीक्षा लेने, और स्नातकों को एम. ए. (मास्टर आफ आर्टस) एवं पी.एच.डी. (डाक्टर) की उपाधियां देने का अधिकार दिया है।

दूसरे महायुद्ध में येना विश्वविद्यालय और यहां का सारा शहर खंडहरों में बदल गये। सन १९४५ के वसन्त में, येना पर किये गये हवाई हमलों ने, जो सैनिक दृष्टि से बिलकुल जरूरी नहीं थे, येना विश्वविद्यालय के शताब्दियों के आवास को जबरदस्त क्षति पहुंचाई। इसकी चार बड़ी-बड़ी इमारतें बिलकुल ध्वस्त हुई। इसके लगभग पचास संस्थानों, छात्रावासों आदि को आंशिक क्षति पहुंची। आज जब कि इस विद्यालय ने अपने जीवन के पांच सौ वर्ष पूरे किये (अगस्त, १९६५ में) और पुनः निर्माण द्वारा पुनर्जीवन भी प्राप्त किया, इसकी प्रगति पर एक सिंहावलोकन करना उचित ही होगा।

येना विश्वविद्यालय के प्रगति-पथ के इतिहास में, १७वीं शताब्दी एक मील-पत्थर की हैसियत रखती है। उस शताब्दी में इस विश्वविद्यालय के पुराणपन्थी पाठ्यक्रम में आमूल परिवर्तन हुआ, और इसका स्थान लिया आधुनिक, प्रगतिशील विज्ञान ने। तब तक यहां की शिक्षा में धार्मिक अन्ध-श्रद्धा का ही आधिपत्य था। इस क्रांतिकारी परिवर्तन में सबसे बड़ा हाथ था उस शताब्दी के दो व्यक्तियों का जो उस सदी के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति माने जाते थे। इनमें से एक का नाम था श्री बेरनर रोलफिण्क जो वैज्ञानिक थे, और दूसरे का नाम था श्री बेरनर वागल, जो गणितज्ञ, ज्योतिषविद् तथा शिक्षा-शास्त्री थे। विश्वविद्यालय में इस नये पाठ्यक्रम और शिक्षण की बुनियादी प्रवृत्ति, अनुभवाश्रित भौतिकता पर आधारित थी। उदाहरण के लिये ब्रिटेन, फ्रांस और इटली के विश्वविद्यालयों में पढ़े हुए श्री रोलफिण्क ने ऐसे प्रयोग एवं शरीर-विज्ञान संबंधी प्रगतिशील शोध आरम्भ किये, जिनको उन्होंने यूरोप के शिक्षा-संस्थानों में सीखा था। इसी प्रकार, श्री एरहार्ड वाइगेल जर्मनी के प्रथम विद्वान थे जिन्होंने महान फ्रेंच दार्शनिक देसकार्ते के प्रमुख सिद्धांत का जर्मनी में प्रतिपादन किया। यह सिद्धांत था सभी विज्ञानों को गणित के आधार पर विकसित करना। जर्मनी में, लातीनी भाषा की बजाय, जर्मन भाषा में अध्ययन अध्यापन का श्री-गणेश भी श्री वाइगेल ने ही किया। जर्मनी के कोने-कोने से विद्यार्थी उनके व्याख्यान सुनने के लिये आया करते थे।

येना विश्वविद्यालय की प्रगति के इतिहास में एक अन्य मोड़ आया फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव के कारण। इस क्रांति के फलस्वरूप पूरा येना नगर ही जर्मन बूर्जुआ-वर्ग के उद्धार के लिये संघर्ष का प्रमुख केंद्र बन गया। इस नगर को बल और प्रोत्साहन प्रदान किया यहां के विश्वविद्यालय ने। इसके अतिरिक्त यह शिक्षा-संस्थान सम-सामयिक समस्याओं पर प्रकाश डालने और उनका समर्थन करने में पेश पेश रहता। इस सरगर्मी के कारण इसकी प्रसिद्धि दूर दूर तक फैल गई। इस उथल-पुथल ने अनेकानेक जर्मन विद्वानों और

येना विश्वविद्यालय का एक भवन
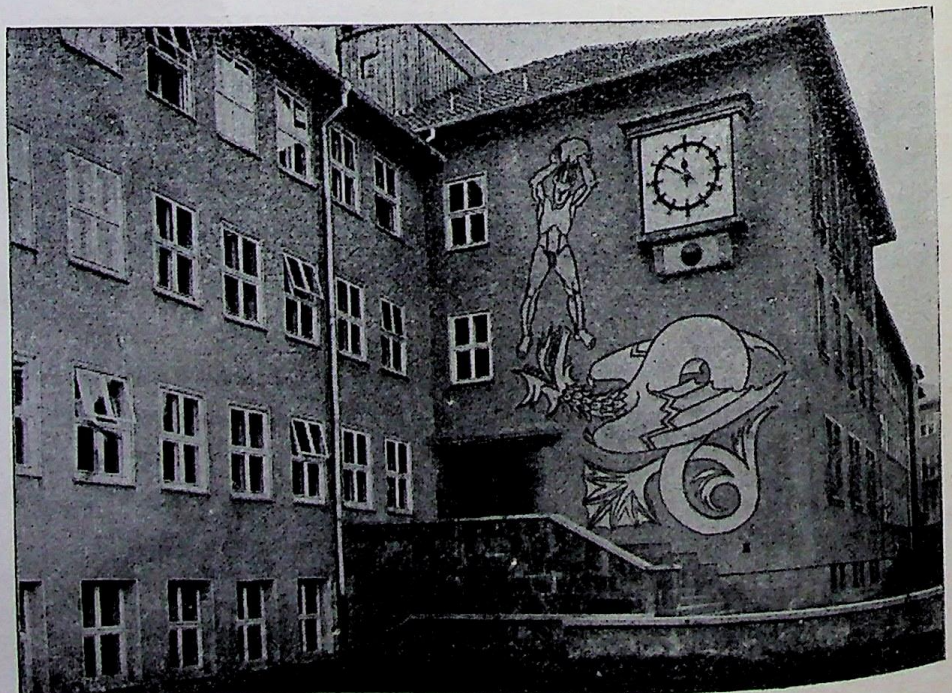
मनीषियों को येना विश्वविद्यालय के संपर्क में लाया ।.....क्लासकी जर्मन आदर्शवादी दार्शनिक श्री कार्ल ल्योनार्ड राइनहार्ड ने येना में कांट का दर्शन लाया । श्री योहान्नेस गोट्टलीब फिखटे को, उनके क्रांतिकारी दार्शनिक विचारों के लिये, चर्च के पाखंडी पोपों ने नास्तिक घोषित करके, येना छोड़ने पर मजबूर किया । विश्वविद्यालय के ऐसे ही क्रांतिकारी दार्शनिकों में शेल्लिग और हेगल का नाम भी उल्लेखनीय है । औषधि शास्त्र के क्षेत्र में शरीर-विज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान डा. जसटस क्रिश्चियन लोडर, और डा. क्रिश्चियन विल्हेलम हूफलैण्ड, येना विश्वविद्यालय के मेडिकल विभाग से संबद्ध थे । डा. हूफलैण्ड ने, एक कृति 'मनुष्य को दीर्घायु बनाने की कला' की रचना करके काफी ख्याति पाई थी, अपने समय में । इस कृति में विद्वान डाक्टर ने आयु को बढ़ाने के लिये स्वस्थ जीवन गुज़ारने के तरीकों पर प्रकाश डाला था, और इस पुस्तक की ख्याति इतनी फैल गई कि यह यूरोप की सभी भाषामें अनूदित हुई । डा. हूफलैण्ड की दूसरी कृति 'माकरोबयोटिक' आज भी विश्व-मान्य है, और इन ही द्वारा प्रतिपादित "परहेज़, इलाज से बेहतर है" का सिद्धांत आज हमारी (ज.ज.ज.ग. की—सं.) आरोग्य सेवा का पथ-प्रदर्शन करता है । ज.ज.ग. इस महान डाक्टर को आज श्रद्धा से याद करता है, और हमारी सरकार ने इनके नाम से 'हूफलैण्ड पदक" रखा है जो हर साल योग्य डाक्टरों को दिया जाता है ।

येना विश्वविद्यालय में, जर्मनी के दो महान और विश्वविद्यालय साहित्यकारों एवं मनीषियों—फ्रीडरिख शिल्लर और योहान्न वोल्फगांग गोइटे ने भी अध्यापन का काम किया है । सन १७८९ में फ्रीडरिख शिल्लर यहां इतिहास के प्रोफेसर नियुक्त हुये । उसी वर्ष, २६ मई के दिन उन्होंने इस विश्वविद्यालय में अपना प्रख्यात व्याख्यान "सार्वभौमिक इतिहास क्या है, और इसका अध्ययन क्यों आवश्यक है ?" येना विश्वविद्यालय में ही जर्मनी के इन दो महान और क्रांतिकारी बौद्धिकों की ऐतिहासिक मित्रता पनपी । इनकी रचनात्मक क्रियाओं और कृतियों ने न केवल येना के ही वरन पूरे जर्मनी के भी बौद्धिक एवं शैक्षणिक वातावरण पर काफी गहरा तथा स्थाई प्रभाव डाला । जर्मनी में सन १८४८ की बूर्जुआ क्रांति के आविर्भाव तक येना, जर्मनी के उदार विचारों का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा । येना विश्वविद्यालय से ही, प्रोफेसर बरनार्ड वोल्फ की सहायता से वैज्ञानिक समाजवाद के जनक एवं प्रतिपादक, कार्ल मार्क्स ने, १५ अप्रैल, सन १८४१ के दिन, "जनतांत्रिक एवं भोगवादी दर्शन का अन्तर" नामक शोध-प्रबन्ध पर डाक्टरेट (पी.एच.डी.) की उपाधि प्राप्त की ।

उन महान प्रतिभाओं में जिन्हें येना विश्वविद्यालय ने आकृष्ट किया, श्री एर्नस्ट हाइक्ल का नाम भी उल्लेखनीय है । अपनी वैज्ञानिक रचनाओं के द्वारा इन्होंने धार्मिक मतान्धता एवं पाखण्ड की कमर तोड़ दी । श्री हाइक्ल कई वर्षों तक इस विश्वविद्यालय में पढ़ाते रहे । उनकी प्रतिभा का प्रमाण यह तथ्य है कि २८ वर्ष की आयु में वह प्राध्यापक बने, और इसके दो ही वर्ष बाद उनको प्राणि विज्ञान का प्रोफेसर नियुक्त किया गया । "विश्व के रहस्य", "जीवन के आश्चर्य" आदि जैसी उनकी कृतियों ने उन्हें विश्व प्रसिद्धि प्रदान की । श्री हाइक्ल उन प्रथम कतिपय बौद्धिकों में से एक थे, जिन्होंने सन १८६१ में, डारविन की विश्वविख्यात और क्रांतिकारी कृति "प्राणियों का उद्गम" जर्मनी में प्रचारित की और कालान्तर में वह जर्मनी में डारविन के क्रांतिकारी विचारों के ज़बरदस्त हामी और प्रतिपादक बने । इस सब के लिये, पाखंडी पोप और चर्च उनके जानी दुश्मन बन गये । लेकिन श्री हाइक्ल अपने मार्ग से विचलित न हुए और वह लगातार विज्ञान और प्रगति के लिये संघर्ष करते रहे । वह धार्मिक अंधविश्वासों और सामाजिक शोषण के लिए ज़िम्मेदार तत्वों के खिलाफ लड़ते रहे, और चर्च के चंगुल से मुक्त करने के लिये लोगों को सचेत करते रहे । इस उदार, प्रगतिशील जर्मन परम्परा को ज.ज.ग. की सरकार एक पवित्र धरोहर समझती है, और इसको आगे बढ़ाने के लिये हर प्रकार से प्रयत्नशील है ।

नवम्बर, सन १९१८ की जर्मन क्रांति के दौरान, येना में, समाजवादी विद्यार्थियों का प्रथम दल संगठित हुआ । प्रसिद्ध जर्मन लेखक श्री योहान्नेस आर. बेखर इस दल के सदस्य थे । वामपन्थी सोशाल डेमोक्रैटिक दल के अनुयायी, जीव-विज्ञान के प्रोफेसर, डा. जूलियस शामेल भी येना विश्वविद्यालय के प्राचार्य थे ।

सन १९३३ के बाद, अर्थात् हिटलर द्वारा राजसत्ता हथियाने के बाद, येना विश्वविद्यालय को नाज़ियों ने फासिस्त प्रचार के विश्वविद्यालय में तबदील किया ।

कई फासिस्तों को, बिना उचित उपाधियों के भी, विश्वविद्यालयों में नामज़द किया गया । दूसरे शब्दों में हिटलर के फासिस्त दरिन्दों ने येना विश्वविद्यालय की शानदार परम्परा को मिट्टी में मिला दिया अपने पाशविक शासनकाल के दौरान ।

सन १९४५ में महायुद्ध में फासिस्तवाद की कमरतोड़ पराजय के बाद, येना विश्वविद्यालय का पुनर्निर्माण आरम्भ हुआ और १५ अक्तूबर, सन १९४५ के दिन इसको फिर से अध्ययन अध्यापन के लिये खोला गया । जर्मन जनवादी गणतन्त्र की स्थापना के बाद, यह विश्वविद्यालय जर्मन भूमि पर इस प्रथम शांतिप्रिय और समाजवादी जर्मन राज्य के समाजवादी नवनिर्माण में, और जर्मनी की मानवीय परम्पराओं को आगे बढ़ाने में अपना पूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है । इस महत्वपूर्ण कार्य में ज.ज.ग. सरकार येना विश्वविद्यालय को लाखों मार्क की रकम, हर साल, अनुदान के रूप में देती है । यहां नये विभाग तथा संस्थान खोले जा रहे हैं । शोध कार्य को बेहतर और व्यापक बनाया जा रहा है ।

इस विश्वविद्यालय का नया नामकरण महान कवि-मनीषी, फ्रीडरिख शिल्लर के नाम पर कर दिया गया है । अब यह विश्वविद्यालय, येना का 'फ्रीडरिख शिल्लर विश्वविद्यालय' के नाम से सुप्रसिद्ध है ।

ज. ज. ग. में कृषि

गुरुशरन सिंह

जर्मन जनवादी गणतंत्र में व्यक्तिगत खेती से, सहकारी खेती और व्यापक कृषि उत्पादन संघों तक का संक्रमण, वहां की कृषि का एक दिलचस्प पहलू है। ज.ज.ग. के अपने हाल के ही दौरे में, मुझे वहां के सहकारी खतों को निकट से देखने और सहकारी किसानों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। जन्म से किसान और वृत्ति से (कृषि क्षेत्र में) पत्रकार होन क नाते, मैं यह जानने के लिये बहुत उत्सुक था कि यह व्यवस्था (सहकारिता) ज. ज. ग. में कैसे लाई गई और किस हदतक सफल हुई। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आज लगभग सौ फीसदी किसान सहकारी खेती में अपनी मरज़ी से शामिल हुए हैं, और जर्मन जनवादी गणतंत्र के किसान सहकारी कृषि व्यवस्था लागू करने की महान सफलता के लिये बधाई के अधिकारी हैं। ज़मीन, किसान की व्यक्तिगत सम्पति ही रहती है, लेकिन वह जमीन और कृषि के साधनों का एकत्रीकरण करता है (दूसरे किसानों के साथ)। इस तरह वह अधिक स्थिरता (आर्थिक) अनुभव करता है, धीरे-धीरे उसका जीवन स्तर बढ़ जाता है, और वह यह महसूस करने लग गया है कि सहकारी खेत वास्तव में उसी का है। जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने यहां के किसानों और नव-स्थापित इन सहकारी खेतों की उक्त सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

ज.ज.ग. के किसानों ने उन सभी दीवारों तथा रुकावटों को तोड़ दिया है जो व्यक्तिगत खेती में अन्तर्निहित हैं। जर्मन इतिहास में पहली बार यहां के सहकारी किसानों ने ग्रामीण जनता का सामाजिक और नैतिक संगति स्थापित की है। इस प्रकार उन्होंने ज.ज.ग. में किसानों के लिये ऐसी परिस्थितियां पैदा की हैं जिनमें उनकी प्रतिभा एवं योग्यता का अच्छा और व्यापक प्रयोग हो सकेगा। गांवों के नौजवानों के लिये सहकारी खेतों ने प्रगति के अनेक मार्ग खोल दिये हैं। सहकारिता ने उनको, कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में, अधिक से अधिक उत्पादन बढ़ाने के लिये अपनी प्रतिभा का उपयोग करने के अच्छे साधन एवं अवसर प्रस्तुत किये हैं।

कृषि उत्पादक सहकारी खेतों में स्वेच्छा से शामिल होना, जर्मन जनवादी गणतंत्र के किसानों की एक अच्छी सफलता है। कुछ ही वर्ष पहले, जब वे वैयक्तिक खेती करते थे, उनकी हालत बहुत खराब थी। उनका जीवन-स्तर काफी नीचा था और वे कर्ज़े तथा शोषण के शिकार थे। सहकारी खेती में तकनीकी औजारों और नवीनतम वैज्ञानिक साधनों के सदुपयोग ने, उनके उस जीवन में अब आमूल परिवर्तन ला दिया है। दूसरे शब्दों में सहकारी कृषकों ने कम से कम समय में, वेशी अनाज पैदा करने के आवश्यक साधन—अर्थात् उत्पादन और श्रम-उत्पादिता में आशु वृद्धि के साधन—पैदा किये हैं। इस तरह, यहां का सहकारी समुदाय, जर्मन जनवादी गणतन्त्र के नागरिक और ग्रामीण जीवन के मुख्य अन्तरों को क्रमशः मिटाने का आधार शिला बन चुका है। इसके अतिरिक्त, सहकारी कृषि व्यवस्था ने प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि करने की बुनियाद भी तैयार की है।

मैंने ज.ज.ग. के कई कृषि सहकारी उत्पादक संघ देखे, जहां में अनेक कृषि विशेषज्ञों, सहकारी किसानों, कृषि इंजीनियरों और सहकारी संघों के अध्यक्षों से मिला और उनसे बातचीत की। मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि ये लोग भाईचारे की भावना से, एक दूसरे की सहायता करते हैं और मिल-जुलकर काम करते हैं। वे अपने काम से और सहकारी व्यवस्था से काफी संतुष्ट हैं। उनमें से हरएक के लिये काम के घंटे निश्चित हैं। प्रत्येक दल अपने-अपने काम के लिये उत्तरदायी है। लगभग हरएक सहकारी किसान के घर में टेलिविजन सेट है, और वे सुखी पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हैं। अपने जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने के लिये

लेखक, मेस्टलिन के कृषि उत्पादक सहकारी फार्म के अध्यक्ष और वहां के मेयर के साथ

हरएक के लिये समान अवसर एवं सुविधाएं उपलब्ध हैं। उनके स्वस्थ और प्रसन्न चेहरे उनके खुशहाल जीवन के दर्पण थे।

सन १९५२ में, ज.ज.ग. की प्रमुख पार्टी—"समाजवादी एकता पार्टी" का दूसरा सम्मेलन बर्लिन में हुआ। इस सम्मेलन में देश के सभी भागों से अनेक किसानों ने प्रतिनिधियों के रूप में भाग लिया। इसी सम्मेलन में इन किसान प्रतिनिधियों ने कृषि सहकारी उत्पादक संघ स्थापित करने का महत्वपूर्ण फैसला लिया। उसी वर्ष स्थापित किये गये कुछ सहकारी फार्मों में से एक मैंने मेस्टलिन में देखा। प्रारंभ में इस सहकारी फार्म में केवल १८ किसान शामिल हुए अपनी २०० हेक्टर भूमि लेकर। राज्य की सहायता और मेहनती किसानों की जी तोड़ परिश्रम के परिणामस्वरूप इस सहकारी खेत ने बहुत अच्छी फसल पैदा की। इससे पास-पड़ोस के अन्य किसान भी सहकारी व्यवस्था से काफी प्रभावित हुए। नतीजा यह निकला कि सन १९६१ तक, मेस्टलिन का पूरा गांव ही सहकारी खेती में शामिल हुआ, और आज इस सहकारी खेत में ४०० सदस्य और २२,००० हेक्टर भूमि शामिल हुई है।

ज.ज.ग. में कृषि उत्पादक सहकारी फार्मों की सफलता में, यहां के "मशीन और ट्रैक्टर केन्द्रों" का भारी हाथ है। भूमि सुधार कानून लागू करने के बाद यहां इन केंद्रों की स्थापना हुई। ये केंद्र राज्य की ओर से, सहकारी खेतों एवं किसानों को, खेती बोने काटने में, भूमि परीक्षण में और ट्रैक्टर आदि सप्लाई करने में हर प्रकार की तकनीकी सहायता उपलब्ध करते थे। इस प्रकार के सभी कामों के लिये राज्य सब से कम भूमि वाले किसान से, कम से कम मजदूरी लेता। उदाहरण के लिये ६ हेक्टर भूमि वाले किसान से खेत की जुताई के लिये प्रति हेक्टर पर १५ मार्क लिये जाते, जबकि एक हेक्टर भूमि की जुताई पर ४० मार्क से कम मज़दूरी नहीं लगती। इसके विपरीत २० हेक्टर भूमि वाले किसान से, प्रति हेक्टर पर २५ मार्क जुताई-दाम लिये जाते। दूसरे शब्दों में, सबसे गरीब किसान को राज्य की ओर से अधिक से अधिक सहायता और प्रोत्साहन मिलता। धीरे-धीरे गरीब किसान की समझ में यह बात आई कि छोटे-छोटे खेत रखने से हानि होती है। इस अनुभव के बाद ऐसे किसानों ने अपने साधनों को एकत्रित करना शुरू किया। यही, जर्मन जनवादी गणतन्त्र में सहकारी खेती का प्रारंभ था।
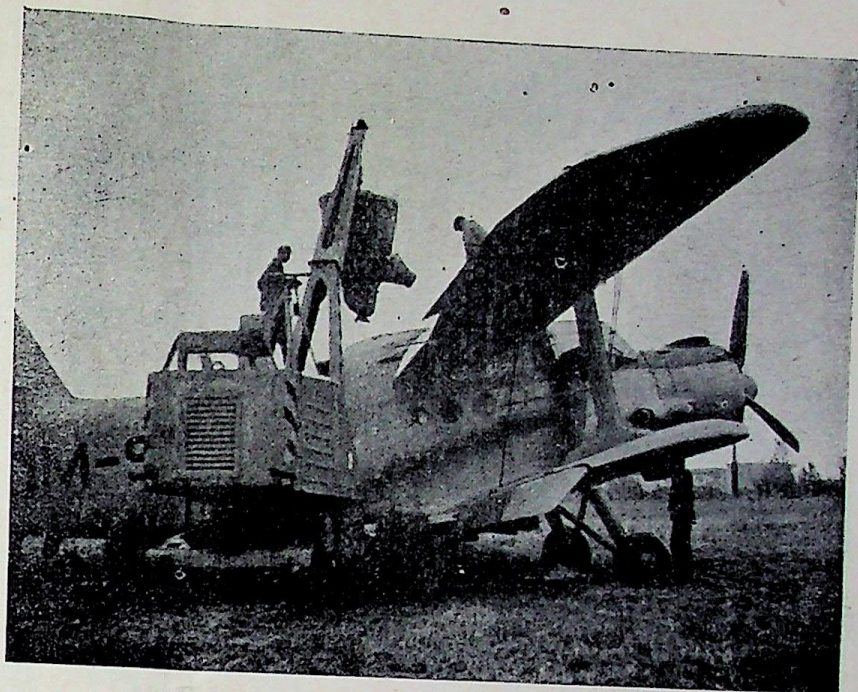
एक सहकारी खेत में डालने के लिये, हवाई जहाज में खाद भरी जा रही है

सन् १९५२ में, ज.ज.ग. के किसानों ने स्ववेच्छा से सहकारी खेतों और कृषि उत्पादक सहकारी संघों को स्थापित करने का फैसला किया। इस कार्य में सरकार ने दीर्घकालीन और अल्प कालीन ऋण देकर इन किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान की।

सन १९४५ से १९५३ तक मेस्टलिन के कृषि उत्पादक सहकारी खेत में, प्रति हेक्टर भूमि पर अनाज की औसत पैदावार २.१ टन थी, जबकि सन १९६४ में यह पैदावार बढ़कर ३.३ टन तक पहुंच गई। इसी प्रकार सन १९५२ में मेस्टलिन के ही प्रति सहकारी किसान की औसत वार्षिक आय ४ और ५ हज़ार मार्क के बीच थी जो सन १९६४ में बढ़कर ८ और १० हज़ार के बीच हो गई। इसके अलावा इस सहकारी फार्म ने अपने पैसे से सन १९६४ तक, ५१ ट्रैक्टर, मक्का गाहने की ६ मशीनें (थ्रेशर), चुकन्दर बोने-काटने के ६ कम्बाइन, ३ क्रेन और कई गाड़ियां तथा सैकड़ों कृषि औजार खरीद लिये थे। मेस्टलिन सहकारी खेत में पशुधन—गायें, सुअर, घोड़े, मेड़, कुक्कट इत्यादि—का कुल मूल्य २५ लाख मार्क है, और इस फार्म के पास जो कृषि यन्त्र तथा मशीनें हैं उनका कुल मूल्य १ करोड़ मार्क आंका गया है (१ मार्क =१.१२ रुपये)।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में कृषि उत्पादक सहकारी खेत, वहां के कृषि उत्पादन को बढ़ाने में, और ग्राम्य जीवन के उत्थान के लिये निर्णायक तत्व बन चुके हैं। वैयक्तिक खेती से सहकारी खेती तक के संक्रमण ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र में जहां कृषि उत्पादन को बहुत बढ़ाया है, वहीं इसने किसानों और कृषि में काम करने वाले अन्य लोगों के जीवन-स्तर को भी काफी ऊंचा उठाया है। जर्मन जनवादी गणतंत्र के सहकारी किसानों द्वारा प्राप्त यह अनुपम सफलता, उन सभी कृषि प्रधान देशों के लिये अनुकरणीय है जो अपने कृषि उत्पादन को बढ़ाना और किसान जीवन को सुधारना एवं उन्नत बनाना चाहते हैं।

शिमला
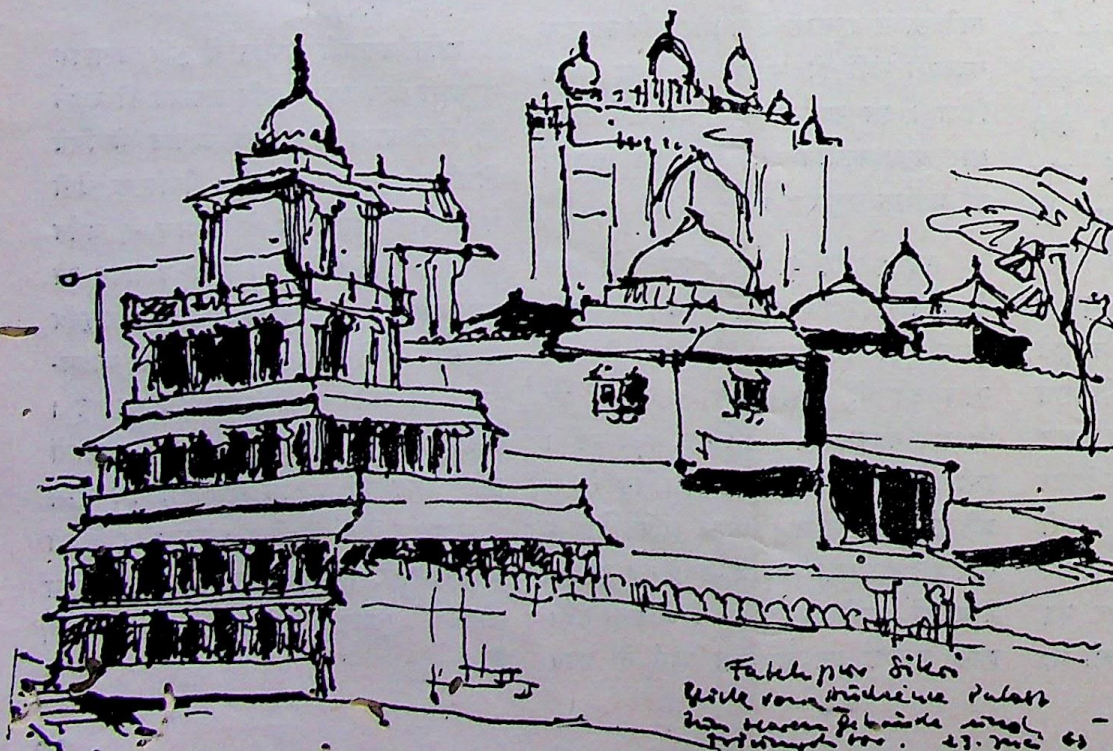
रैणात्रारी-श्रीनगर (काश्मीर)

फतहपुर सीकरी
(आगरा)
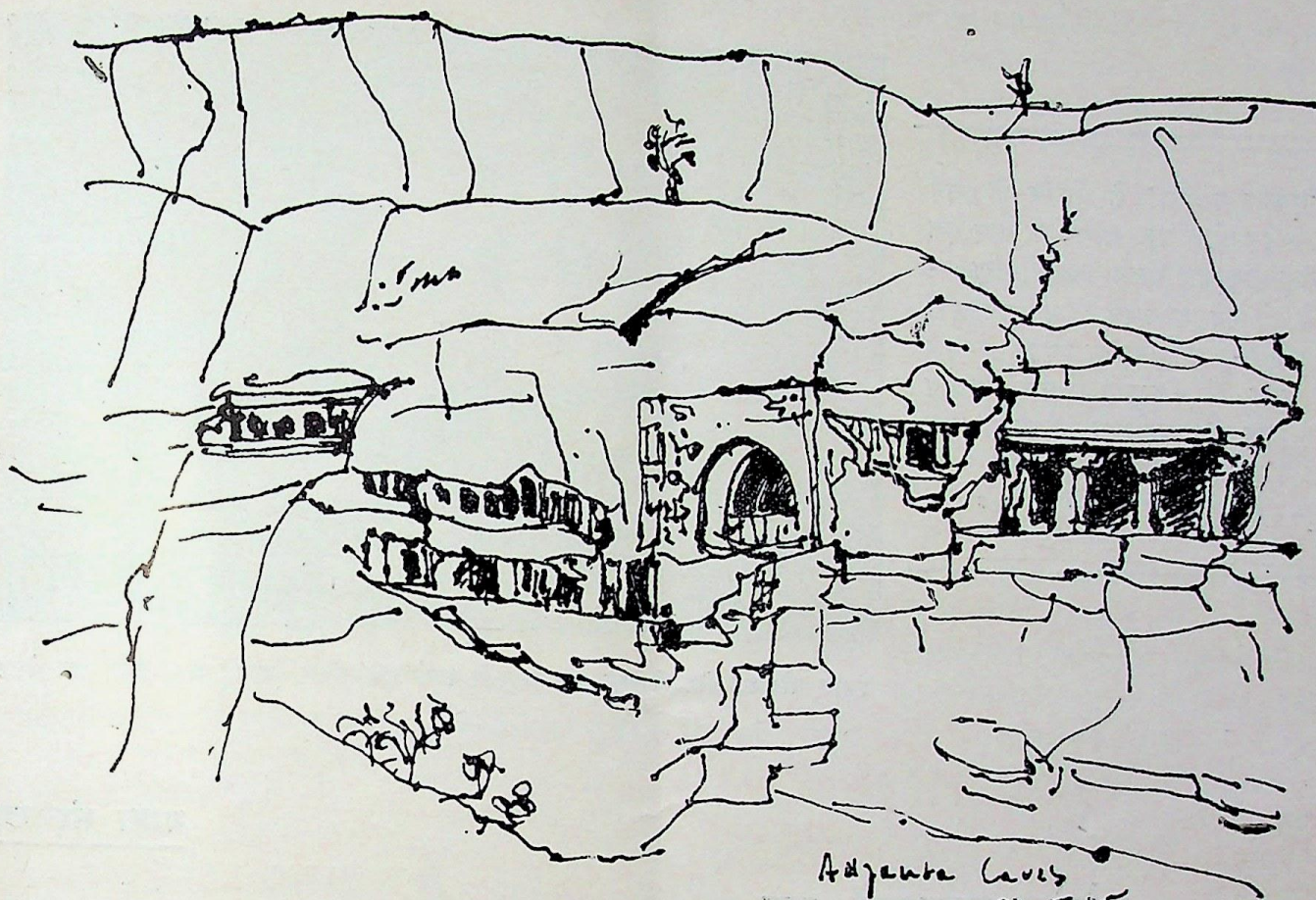
अजन्ता की गुफायें

डा. लांगर : रेखा-चित्रों का एक सिद्धहस्त कलाकार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, डाक्टर हाइंज लांगर वृत्ति से एक डाक्टर हैं । वह जर्मन जनवादी गणतंत्र के एर्जगेबिरगे नामक पर्वतीय प्रदेश के रहने वाले हैं, उनके शब्दों में जो, "आपके काश्मीर प्रदेश की तरह प्राकृतिक सौन्दर्य और लकड़ी की कला के लिये प्रसिद्ध है । . . ." कई वर्षों तक डा. लांगर जर्मन जनवादी गणतंत्र के विभिन्न यात्री पोतों पर बहैसियते डाक्टर के नियुक्त हुये, और इस तरह उन्होंने दूर-दूर की यात्रायें कीं । कभी शान्त तथा गंभीर और कभी तूफानी समुद्रों में यात्राओं, और विभिन्न देशों तथा लोगों के संपर्क ने, उनके हृदय को नई भावानुभूतियों से उद्वेलित किया । इस गहरे उद्वेलन को अभिव्यक्त करने के लिये डा. लांगर किसी कला-माध्यम को अपनाने के लिये आतुर हुये । आत्माभिव्यक्ति के लिये आखिर उन्होंने रेखाचित्रों और काष्ठकला (वुड कट्स) के माध्यम को अपना लिया । इस माध्यम की तलाश में डाक्टर को, अपने कतिपय कलाकार मित्रों की सहायता प्राप्त हुई, ड्रेस्डेन में वह जिनके संपर्क में आये । सन् १९५९ से डा. लांगर ड्रेस्डन में ही बस गये हैं ।

आज तक, अपने नव-उपलब्ध क्षेत्र --अर्थात् रेखा-चित्रण और काष्ठ कला के क्षेत्र में, डा. लांगर काफी आगे बढ़ गये हैं । अपने दो अन्य कलाकार मित्रों के साथ उन्होंने अब तक अपनी कला कृतियों की, ड्रस्डेन में दो बार प्रदर्शनियां की हैं । इत्तेफाक से डा. लांगर के ये दो कलाकार मित्र भी उनके हम पेशा--अर्थात् डाक्टर ही हैं । उक्त दोनों कला-प्रदर्शनियों ने अखबारों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और कला-समीक्षकों ने कलाकारों की कृतियों पर प्रशंसात्मक टिप्पणियां लिखीं । . . . "तब से," डा. लांगर 'सूचना पत्रिका' के सम्पादक से एक इंटरव्यु में बोले, "मैंने कई अखबारों के साथ अपने संपर्क स्थापित किये, जो समय समय पर, मेरे रेखाचित्रों और काष्ठकला की अनुकृतियों को अपने अखबारों में छापते रहते हैं । . . ."

कलाकार-डाक्टर लांगर ने अपने इंटरव्यू में इस बात पर जोर दिया कि कला उनका पेशा नहीं है । उनके शब्दों में, "चित्रांकन मेरा शौक है । किसी जगह पर पहुंचकर स्केच-बुक पर रेखाओं से चित्र बनाने और निर्जीव काष्ठ को आकार प्रदान करने के बाद में एक असीम संतोष और शांति का अनुभव प्राप्त करता हूं । . ." फिर मुस्कराकर यह डाक्टर कालकार, धीरे से अपने कथन में यह गंभीर शब्द जोड़ते हैं: "मेरा विश्वास यह है कि कलाकार की पारदर्शी आंखें, अपने चारों ओर फैली दुनिया में अधिक गहराई से झांक सकती हैं । . . ."

'सूचना पत्रिका' के गतांक में हमने श्री श्रेडर और डा. लाँगर के साथ एक इंटरव्यू छापा है। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के ये दो पर्यटक अपने दो मोपेड़ स्कूटरों पर दक्षिण-पूर्व एशिया का पर्यटन कर रहे हैं। हाल ही में इन्होंने शिमला, पंजाब और कुल्लू और काश्मीर की यात्रा की। इस लेख में हम इसी यात्रा से संबंधित उनके अनुभव प्रस्तुत कर रहे हैं— सम्पादक
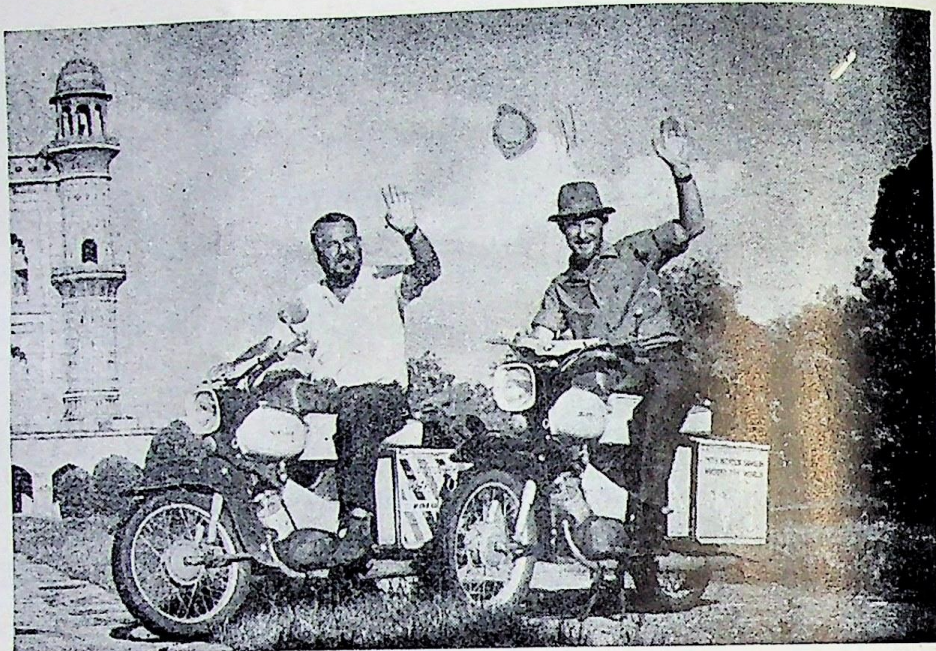
पंजाब और काश्मीर की यात्रा शुरु करने से पहले डा० लाँगर (बायें) और इंजीनियर श्रेडर

यात्रा संस्मरण

मोपेड-स्कूटरों पर

हिमालय की गोद में . . .

चण्डीगढ़ में : अपनी भारतीय यात्रा की प्रथम मंजिल में—अर्थात् बम्बई से नई दिल्ली तक, हमारे मोपेड-स्कूटर अपने परीक्षण में, ज़बरदस्त बरसात के बावजूद, बहुत सफल रहें। इन स्कूटरों को अब ऊंचे स्थानों पर, पहाड़ों, में परखने की बारी थी। इसलिए अपनी यात्रा की दूसरी मंज़िल के लिये हमने शिमला, चण्डीगढ़ और काश्मीर की यात्रा करने का कार्यक्रम तय किया। काश्मीर में टंगमर्ग और पहलगाम, दो पहाड़ी स्थानों की यात्रा भी हमारी स्कूटर-यात्रा में शामिल थी।

दिल्ली से चंण्डीगढ़ की यात्रा बहुत जल्दी हुई, क्योंकि रास्ता बिलकुल साफ और अच्छा था, और हम पंजाब के इस नई भव्य राजधानी में सांझ को दाखिल हुए। एक पत्रकार मित्र ने हमको चण्डीगढ़ घुमाया। हम पंजाब की इस राजधानी से बहुत प्रभावित हुए। संभवतः यह भारत का अत्याधुनिक नगर है। हम पंजाब विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के सामने खड़े हुए, अपने कैमरों से गांधी-भवन के फोटो लेने के लिये। इतने में विश्वविद्यालय के कई विद्यार्थियों ने हमें घेर लिया। हमारी बातचीत शुरू हुई। बातचीत में एक प्रोफेसर भी शामिल हो गये, और देखते ही देखते, आजकल की कई समस्याओं पर गर्मागर्म बहस शुरू हुई। जर्मन समस्या और इसके एकीकरण की चर्चा चली; पश्चिम बर्लिन की समस्या पर गुफ्तगू हुई; हिरोशिमा तथा नागासाकी पर परमाणु बम बरसाने पर बहस हुईं। हमने जर्मन और पश्चिम बर्लिन समस्या को हल करने के लिये, जर्मन जनवादी गणतन्त्र के सुझाओं की चर्चा की—अर्थात् दोनों जर्मन राज्य धीरे धीरे आपसी सद्भावना की ओर बढ़ें, तथा जर्मन समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से हल करें। इसी तरह पश्चिम बर्लिन को एक असैनिक, तटस्थ और स्वतन्त्र नगर में तबदील करके इस सवाल को हल किया जाय। विद्यार्थियों ने ज.ज.ग. के इन सुझाओं की सराहना की। हिरोशिमा तथा नागासाकी पर परमाणु बम बरसाने की चर्चा करते हुए हमने छात्रों से कहा कि हम इसको एक जघन्य पाशविक कुकृत्य समझते हैं। इस संदर्भ में हमने उपस्थित विद्यार्थियों से कहा कि ज.ज.ग. अणु हथियारों के फैलाव के खिलाफ है और वह पूरे तथा आम निरस्त्रीकरण का दृढ़ समर्थक है। इस सवाल पर ज.ज.ग. की सरकार और भारत सरकार का एक ही मत है। बातचीत में भाग लेने वाले

विद्यार्थियों ने हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था, समाज-कल्याण तथा ग्रन्य विषयों में भी काफी दिलचस्पी दिखाई ।

शिमला ग्रौर कुल्लू घाटी में : चण्डीगढ़ से, शिमला ग्रौर मण्डी होते हुए हम कुल्लू घाटी में दाखिल हुए । कुल्लू में हमने, ग्रपने 'मोपेडो' को दो दिन की छुट्टी दी । ग्रपने रकसैक कन्धों पर लाद कर राहला से रोहताँग दर्रे तक हमने पैदल चढ़ाई की । यह दर्रा १४,००० फुट की ऊँचाई पर स्थित है । रोहतांग पास तक पहुंचने से पहले हम एक तूफान में घिर गये, ग्रौर रेस्ट-हाउस तक पहुंचते पहुंचते हम पूरी तरह भीग चुके थे । लेकिन रेस्ट-हाउस में पहुंचकर जब हमको वही स्नेहभरा भारतीय ग्रातिथ्य मिला, तो हमारे सभी कष्ट ग्रौर थकान जाती रही । चौकीदार ने ग्राग जलाई ग्रौर स्वादिष्ट खाना तैयार किया । सोने के लिये उस सज्जन ने हमको ग्रपना विस्तर दिया । . . .ग्रौर सुवह जब हमने उससे बिल मांगा तो उसने सिर्फ पांच रुपये लिये।

काश्मीर की ग्रोर : हमारी इस यात्रा में सबसे कठिन मार्ग था जम्मू-श्रीनगर की सड़क का बटोट से बानिहाल तक का भाग । पहले दिन की ज़बरदस्त वर्षा ने इस रास्ते को कई स्थानों पर काट दिया था । बह गये पुलों के दोनों ग्रोर, मोटरों ग्रौर गाड़ियों की लम्बी कतारें खड़ी थीं ग्रौर मजदूर सड़क की मरम्मत करने में लगे हुए थे । लेकिन हमारे नन्हें स्कूटरों के लिये यह कोई बड़ी समस्या नहीं थी । खड़ी गाड़ियों की कतारों के दायें-बायें खाली जगहों के बीच से हमारे हल्के एवं फुर्तीले मोपेड स्कूटरों ने रास्ता बनाया, ग्रौर सिर्फ १० मिनट में हमने यह कठिनाई पार की। गर्मी, धूल ग्रौर कठिन पर्वतीय चढ़ाई ने हमारा ग्रौर हमारे स्कूटरों का तेल निकाला । लेकिन ग्रन्त में जब हम जवाहर-टनल से गुजर कर, टनल की दूसरी ग्रोर निकल ग्राये तो एक ग्रनुपम प्राकृतिक छटा ने हमें एकदम मोहित कर दिया। सूर्यास्त की ग्रन्तिम किरणों में काश्मीर की घाटी सुनहले रंग में नहा रही थी । कई मिनटों तक हम इस ग्रद्भुत दृश्य को मन्त्रमुग्ध होकर निहारते रहे ।

हम **श्रीनगर** पहुंचे । वहाँ ग्रपने भारतीय मित्रों, विशेषकर एक कलाकार मित्र की सहायता से हम खूब घूमे टहले । लेकिन दुर्भाग्य से हम टंगमर्ग ग्रौर गुलमर्ग नहीं जा सके, क्योंकि उन दिनों इन स्थानों का यातायात बन्द कर दिया गया था । हमने एक नाव किराये पर ली ग्रौर सारे नगर की सैर की (वितस्ता नदी, श्रीनगर के बीचोंबीच बहती है ग्रौर लगभग सारा श्रीनगर इसके दोनों

(शेष पृष्ठ २२ पर)

Srinagar - Rainawari 15 Aug. 65

रैणावारी, श्रीनगर (काश्मीर)

जर्मन सांस्कृतिक सम्पदा का एक उज्ज्वल मणि | ड्रेसडेन ज़्विंगर

"ज़्विंगर में नृत्य संध्या", "ज़्विंगर युवक नृत्य", "गीति काव्य की संध्या"—ड्रेस्टेन नगर के नोटिस-स्तम्भों पर इस प्रकार के अनेक पोस्टर दर्शक का ध्यान अपनी ओर अवश्य आकर्षित करते हैं। खुले आकाश के नीचे 'ज़्विंगर' वह महोत्सव-भवन है जो प्रस्तर वास्तुकला का एक अनुपम नमूना है, और युद्ध में तबाही के बाद जिसका पुनर्निर्माण हो चुका है। इस पुनर्जन्म के बाद, जर्मन संस्कृति का यह उज्ज्वल प्रतीक 'ज़्विंगर' एक बार फिर काव्य एवं नृत्य महोत्सवों का आवास बन गया है।

वास्तुकार डेनियल पोप्पेलमान्न ने, एक अन्य वास्तुकार मित्र बाल्टज़ार पेरमोज़र की सहायता से, वास्तु शिल्प के इस उज्ज्वल मणि का निर्माण किया। निर्माण के समय इन वास्तुकारों ने जो सपना देखा था, वह आज साकार हुआ है: आज यह भव्य महोत्सव हाल ड्रेस्टेन-वासियों और उनके अनेकानेक विदेशी मेहमानों के लिये मनोरंजन एवं आमोद प्रमोद का केंद्र बन चुका है।

आज भी कुछ पर्यटक, 'ज़्विंगर' दाखिल होने से पहले, उसके बाहर पत्थर पर खुदे इन शब्दों को पढ़ने के लिये रुक जाते हैं: "ज़्विंगर की जांच हुई। सुरंगें नहीं बिछी हैं। जांच करनेवाला—चानूतिन · · ·।"

'चानूतिन' सोवियत सेना का एक साधारण सैनिक था, जो सन १९४५ के मई मास में जब पूरे ड्रेस्टेन नगर की तरह, 'ज़्विंगर' भी बमबारी से ध्वस्त हुआ था, बड़े-बड़े मलबे के अम्बारों को उलाँघता हुआ, अपने जीवन को खतरे में डालकर, 'ज़्विंगर' का रास्ता तलाश करने गया था। १३ फरवरी सन १९४५ के दिन आंग्ल-अमरीकी बमवर्षक विमानों ने, ड्रेस्टेन पर बिना किसी मतलब के खूंख्वार बमबारी की थी। ब्रिटिश इतिहासज्ञ, श्री डेविड इरविंग ने पश्चिमी शक्तियों की इस बमबारी को "सैनिक दृष्टि से गैर-जरूरी, एक राजनीतिक अपराध" कहा है। इस पाशविक बमबारी से, ऐसा लगता था कि ज़्विंगर जैसा सांस्कृतिक मणि नष्ट होकर अब फिर कभी नहीं चमकेगा।

'ज़्विंगर' इस बमबारी से पूरी तरह क्षत-विक्षत हुआ था। पेरमोज़र के कलात्मक हाथों तथा उनके शिष्यों द्वारा विरचित बलुआ-पत्थर की ६०० मूर्त्तियों में से लगभग ४०० नष्ट हुई थीं। पोलिश ताज को उठाये हुए मुख्य द्वार पर बनाये गये बाज़ (पक्षी) मलबे का ढेर मात्र रह गये थे, और इसकी शानदार मेहराबें एवं सुन्दर कक्ष खंडहरों में बदल गये थे। लेकिन इस दुर्भाग्य की सबसे बड़ी मार यह थी कि 'ज़्विंगर' के वास्तुशिल्प के डिज़ाइन तथा नक्शे भी गायब कर दिये गये थे।

लेकिन युद्ध समाप्ति के बाद ही, 'ज़्विंगर' का पुनर्निर्माण आरम्भ हुआ। कुछ वास्तुकारों, तामीराती मजदूरों और राजगीरों के पास 'ज़्विंगर' के कुछ पुराने फोटो थे। इन्हीं को इकट्ठा करके, और उन्हीं के अनुसार, जर्मन संस्कृति के इस ज्वलन्त प्रतीक का पुनर्निर्माण शुरू हुआ। सन १९४९ से (जब जर्मन जनवादी गणतन्त्र की स्थापना हुई—सं.) जर्मन जनवादी गणतन्त्र की समाजवादी सरकार ने, 'ज़्विंगर' के पुनर्निर्माण के लिये १ करोड़ मार्क से अधिक धनराशि प्रदान की, और प्रोफेसर एरमिश को, जिनके निदेशन में यह पुनर्निर्माण कार्य चल रहा था, राष्ट्रीय पुरस्कर से सम्मानित किया।
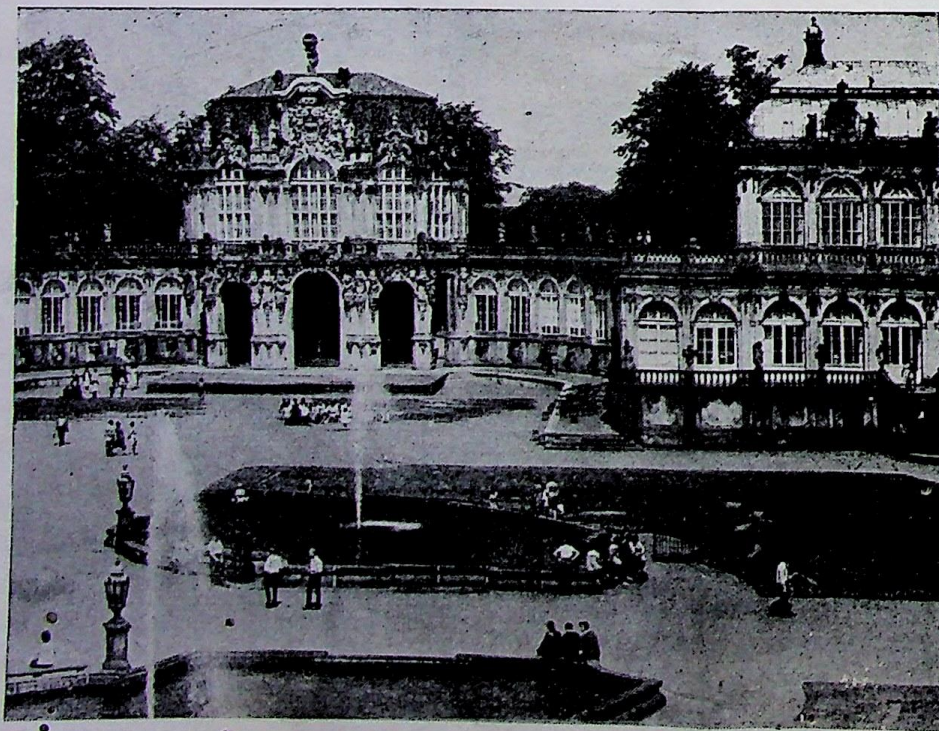
ड्रेस्डेन का पुनर्निमित भव्य और सुन्दर ज़्विंगर

ज़्विंगर भवन में एक बैले-नृत्य
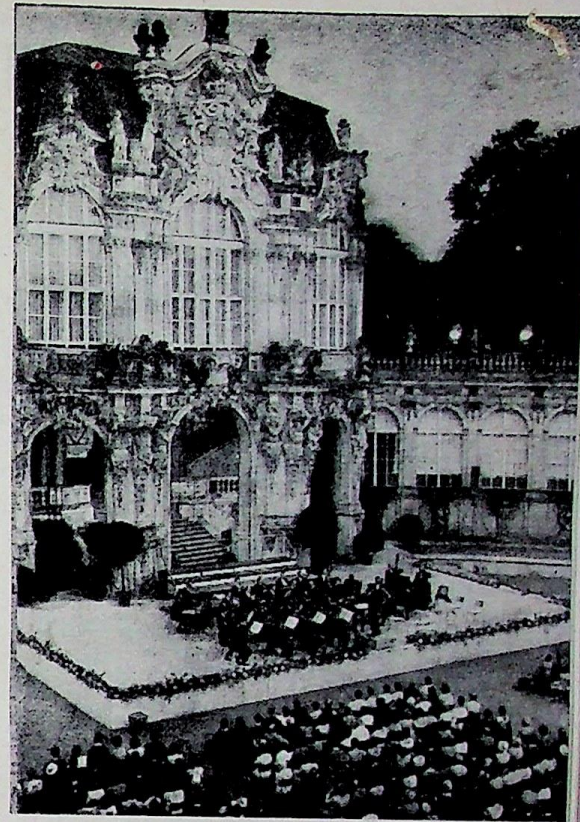
ज़्विंगर की खुली नाट्यशाला में एक वाद्यवृन्द समारोह

★

पिछले वर्ष (१९६४) में भी, 'ज़्विंगर' को अपना आकार प्रदान करने में लगे हुए वास्तुकारों के एक दल को, इसी महान राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह दल, प्रोफ़ेसर एरमिश के देहान्त के बाद, प्रोफ़ेसर फ़न्ज़ेल के निर्देशन में काम कर रहा था।

आज, वर्षों के पुनर्निर्माण के बाद, जर्मन संस्कृति का यह उज्ज्वल मणि 'ज़्विंगर' पुनः अपने पूर्वाकार और आभा में चमक रहा है, और यथावत हज़ारों दर्शकों का मनोरंजन करता है। इसके मुख्य द्वार पर विराजमान सुनहले बाज़ों की मूर्त्तियां, पहले की तरह फिर से सूर्य के प्रकाश में जगमगाती हैं। इसके आंगन में, बलुआ-पत्थरों की प्रतिमाओं के हाथों से फव्वारें छूट कर दर्पण-सम निर्मल तालाब में आ गिरते हैं। रात को 'ज़्विंगर' एक अलौकिक दृश्य उपस्थित करता है। जगमगाते झाड़-फानूसों से छन छन कर आती हुई रोशनी रात्रि की कालिमा की पृष्ठभूमि में इसके रूप को द्विगुणित बना देती है, और दामन में खुले रंगमंच के तीव्र प्रकाश के धारे जगमगाते हैं। और इस प्रकार 'ज़्विंगर'

एक बार फिर, ध्वंस की कोख से पुर्नजन्म लेकर उठा है, अपने पूर्वरूप और गरिमा को लेकर, और आज, पहले की तरह यहां संगीत की मोहक धुनें एवं नृत्य के थिरकते चरणों की थाप फिर सुनाई देती है।

रात्रि में ज़्विंगर की सौन्दर्य छटा
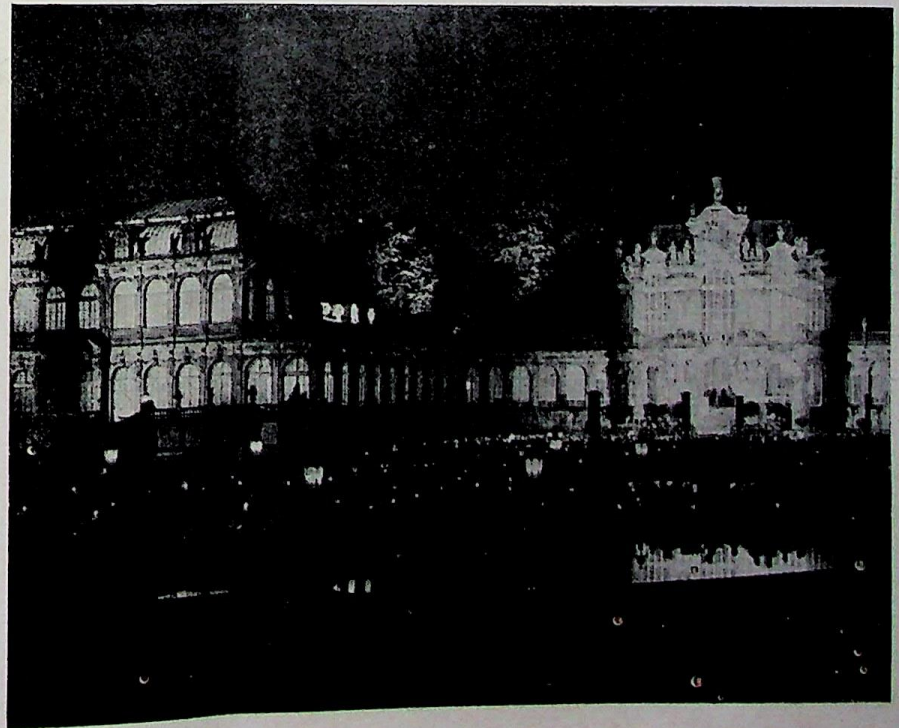
जनता द्वारा संचालित चुनाव

आगामी १० अक्तूबर को जर्मन जनवादी गणतंत्र के स्थानीय चुनाव होने वाले हैं। इस सिलसिले में राज्य परिषद के उपाध्यक्ष गेराल्ड गोयटिंग से, जो केंद्रीय चुनाव आयोग के सदस्य हैं, एक साक्षात्कार लिया गया। उसका विवरण नीचे दिया जा रहा है :

प्रश्न : दो वर्ष पहले 'पीपुल्स चैम्बर' (लोकसभा) के जो चुनाव हुए वे चुनाव-आयोग द्वारा संचालित, प्रथम चुनाव थे। चुनाव में ये परिवर्तन क्यों किये गये ?

उत्तर : कोई भी व्यक्ति, जो जर्मन जनवादी गणतन्त्र के इतिहास का ध्यान से अध्ययन कर रहा हो, यह जानता है कि आर्थिक प्रगति के साथ ही समाजवादी जनतन्त्र भी प्रगति कर रहा है और उसी के साथ चुनाव पद्धति भी बराबर विकसित और विस्तृति होती जा रही है। इसके अनुरूप 'पीपुल्स चैम्बर' ने जुलाई १९६३ में 'पीपुल्स चैम्बर' का और अक्तूबर १९६३ में ज़िला संसदों का चुनाव सामाजिक संस्थाओं के हाथ में सौंप देने का निश्चय किया।

अब तक सारे चुनावों के लिये आंतरिक मामलों का मंत्रालय ज़िम्मेवार था। उसके बाद चुनावों की ज़िम्मेदारी जनतांत्रिक ढंग से गठित चुनाव आयोगों को सौंप दी गयी। उसकी बदौलत चुनाव की सारी जिम्मेदारी जनता पर आ पड़ी। चुनावों के नियंत्रण में आवश्यक विधानों का भी पालन किया जाता रहा और इस प्रकार चुनावों का संचालन पूरी तरह जनता का ही कार्य हो गया।

१९६३ में, चुनावों के बाद चुनाव आयोग की जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई उसमें इस बात पर ज़ोर दिया गया था कि नयी पद्धति पूर्ण सफल रही। करीब १० हज़ार चुनाव समितियों ने, जिनमें १ लाख से अधिक लोगों ने सक्रिय रूप से हाथ बटाया, चुनाव का संचालन कराया और उससे संबंधित सारी बातों की जिम्मेदारियां लीं। इस तरह जर्मन जनवादी गणतंत्र में समाजवादी जनतन्त्र की नयी प्रगतियां केवल चुनाव आयोगों की स्थापना में ही नहीं वल्कि उनके उत्तर दायित्व पूर्ण कार्य में भी परिलक्षित होती हैं।

प्रश्न : चुनाव आयोगों का गठन किस तरह होता है ?

उत्तर : केंद्रीय चुनाव आयोग के अतिरिक्त अन्य सभी स्तरों पर जिला, क्षेत्र, नगर, उपनगर और गांव के स्तरों पर भी, ये आयोग बनते हैं। इनके अतिरिक्त हर चुनाव क्षेत्र के अलग अलग चुनाव-आयोग होते हैं।

इन आयोगों के सदस्य, पांच राजनीतिक दलों और कारखानों, सहकारी संघों, विभिन्न संस्थाओं और सैनिक इकाइयों की बैठकों में मनोनीत किये जाते हैं। इन बैठकों के प्रस्तावों के आधार पर ही केंद्रीय चुनाव आयोग के सदस्यों का भी मनोनयन, राज्य परिषद करती है। जिला और अन्य स्थानीय चुनाव आयोग भी इन्हीं प्रस्तावों के आधार पर अधिकृत परिषदों द्वारा गठित किये जाते हैं। इस बात में फिर १९६३ से की गयी प्रगति परिलक्षित होती है। उस समय केवल केंद्रीय चुनाव आयोग और जिला आयोगों का गठन इस प्रकार होता था। राज्य परिषद ने निश्चय किया है कि सभी चुनाव आयोगों के सदस्य उसी जनतांत्रिक तरीके से मनोनीत किये जायं।

प्रश्न : केन्द्रीय और स्थानीय चुनाव आयोग किस प्रकार गठित किये गये हैं और उनके सदस्य कौन-कौन लोग हैं ?

उत्तर : केन्द्रीय चुनाव आयोग के सदस्यों की सूची देखने पर पता लगेगा कि वे जीवन के सभी क्षेत्रों से आते हैं। मज़दूर और सामूहिक फार्मों के किसान, पांचों राजनीतिक दलों के सदस्य और पदाधिकारी, सामाजिक संस्थाओं के सदस्य, विभिन्न पेशे के लोग, महिलाएं और नौजवान लोग उसके सदस्य हैं। 'सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी' की पोलित ब्यूरो के सदस्य और राज्य परिषद के कोई डिप्टी चेयरमैन, एक अनुभवी किसान और किसी सामूहिक फार्म के अध्यक्ष, प्रोफेसर, शिक्षक, लेखक, संगीतकार, पत्रकार, पादरी सभी उसके सदस्य हैं; और चुनावों के सफल संचालन के लिये सभी लोग मिल कर काम करते हैं। स्थानीय चुनाव आयोग भी इसी तरह के लोगों द्वारा गठित होते हैं, और उनमें कुल दो लाख सदस्य हैं।

प्रश्न : केन्द्रीय चुनाव आयोग किसके प्रति ज़िम्मेदार है और उसका कार्य कब समाप्त समझा जाता है ?

उत्तर : केन्द्रीय चुनाव आयोग राज्य परिषद के प्रति जिम्मेदार है। वह अपने काम की रिपोर्ट राज्य परिषद को दे देता है। तब उसका काम पूरा हो जाता है।

चिट्ठी-पत्री

मान्यवर महोदय,

सूचना पत्रिका के अंक जब तब देखने को मिल जाते हैं और हर्ष से पुलकित हो उठता हूं। 'नव संगम परिवार' इस इस्पात नगरी के उदीयमान एवं प्रतिभाशाली साहित्यकारों की एकमात्र हिन्दी संस्था है। मैं चाहता हूं 'परिवार' के सभी सदस्य 'सूचना पत्रिका' से नियमित लाभ उठायें।

अतः आपसे सादर निवेदन है कि उक्त पते पर आप 'सूचना पत्रिका' नियमित रूप से निःशुल्क भिजवाते रहने की कृपा करें।

मंत्री
नव संगम परिवार
जमशेदपुर-३
(बिहार)

सम्पादक महोदय,

उस दिन की अपार प्रसन्नता का वर्णन क्या किया जा सकता है जिस दिन मुझे स्वर्णमई एवं अनुपम चित्रों वाली **सूचना पत्रिका** एक अपरचित आदमी के हाथों दर्शन को मिली।

'पत्रिका' की अभिव्यंजना शैली अत्यन्त सुंदर, सरल, कोमल तथा मार्मिक होने के कारण मुझे बहुत पसन्द आई। पढ़ने से ऐसा प्रतीत हुआ मानो जर्मन राष्ट्र के गौरव और सम्मान की बातें इसके अन्दर छिपी हुई हैं।

इसलिए श्रीमान जी से सविनय निवेदन है कि कृपया आप एक पत्रिका हमारे पुस्तकालय को उपहार के आधार पर नियमित रूप से भेजें जिससे हमारे टाउन हाल के सभी लोग लाभान्वित हों। साथ ही साथ आपके महान राष्ट्र की बातों से परिचित होकर अपने को ज्ञानी कहलाने के अधिकारी हो सकें।

मुहम्मद अली
नेशनल लाइब्रेरी
गोरखपुर (उ.प्र)

मान्यवर महोदय,

विदित हो कि आपकी **सूचना पत्रिका** का प्रकाशन एवं वितरण भारत जैसे महान गणतंत्र प्रिय राष्ट्र के लिए एक अभिमान की बात है। आपका यह प्रकाशन और 'पत्रिका' की सामग्री दोनों देशों की सांस्कृतिक एकता में महत्वपूर्ण योगदान कर रही है।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि यह 'सूचना पत्रिका' उक्त पते पर नियमित रूप से भेजकर अनुगृहीत करेंगे। क्योंकि भारतीय बालसहचरों को आपके देश के प्रिय बालकों की गतिविधि से अवगत कराना श्रेयस्कर होगा। कानव्हेंट स्कूल में पढ़ने वाले बालकों के लिये भी यह जानकारी लाभप्रद होगी।

धन्यवाद…

एस. सी. गोयल
अकोला (महाराष्ट्र)

प्रिय महोदय,

सूचना पत्रिका का मुझे अगस्त, १९६५ का अंक मिला। धन्यवाद।

सचमुच यह 'पत्रिका' बड़ी रोचक और ज्ञानवर्द्धक लगी। भारत-जर्मन मैत्री को सुदृढ़ बनाने में यह आवश्यक रूप से उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी सम्भावना है। 'पत्रिका' के 'सचित्र समाचार' तो इस क्षेत्र में सोने पर सुहागा का काम करते हैं। कितना अच्छा हो यदि आप 'पत्रिका' में नियमित रूप से एक जर्मन लोक-कथा को भी स्थान दें। इससे भारत जर्मन जनता को घनिष्ठ होने में सहयोग मिलेगा।

आशा है 'पत्रिका' नियमित रूप से मिलती रहेगी।

बद्री नारायण शर्मा 'तूफानी'
रोहतक (पंजाब)

आदरणीय महोदय,

आपकी **सूचना पत्रिका** में यह समाचार पढ़कर कि, जर्मनी से हमारे दो बन्धु, इंजीनियर श्री श्रेडर एवं डाक्टर हाइंज़ लांगर स्कूटरों पर भारत की यात्रा के लिये आये हुये हैं, नितान्त प्रसन्नता हुई है। अभी ये बन्धु नेपाल, बर्मा आदि की यात्रा भी करेंगे। इन्हें ग्रंटन रोड से कानपुर, इलाहाबाद, बनारस आदि होते जाना होगा। हम अपने घर पर ही इन दोनों बंधुओं से मिलने के इच्छुक हैं। हमारा मकान तथा औषधालय कानपुर एवं इलाहाबाद के बीच ग्रंटन रोड पर स्थित खागा कस्बे से १० मील दक्षिण की ओर जाने वाली सड़क पर किशनपुर कस्बे में है। हम उक्त दोनों बन्धुओं को आमंत्रित कर रहे हैं। हम उनकी चिकि[illegible] तथा औषधि-निर्माण सम्बंधी यंत्रों एवं विधियों की जानकारी करेंगे और अपने देश की आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली के सम्बन्ध में तथा भारतीय जड़ी बूटियों के बाबात अपने मित्रों को जानकारी कराके परस्पर चिरस्थायी मित्रता को जन्म देंगे। हमें विश्वास है कि हमारे बंधु हमें निराश नहीं करेंगे। हम उनके पत्र एवं दर्शन की प्रतीक्षा बराबर करते रहेंगे। आशा है यह पत्र आप दिल्ली में आये हमारे उक्त बंधुओं तक पहुंचा देंगे। तथा हमारे पत्र की भाषा को उनकी भाषा में अवगत कराने का कष्ट करेंगे। हम आपके तथा आगत उक्त बन्धुओं की कृपा के परम आभारी होंगे।

प्रताप नारायण मिश्र, वैद्य
प्रताप फार्मेसी किशनपुर
फतेहपुर (उ. प्र.)

मिश्र जी…आपके निमन्त्रण को पाकर दोनों जर्मन पर्यटक गद्गद् हो गये। वे इस समय नेपाल और इण्डोनेशिया की यात्रा कर रहे हैं। लौटने पर वे आप से अवश्य मिलेंगे

—संपादक

समाचार

दस्तकारों के सहकारी प्रयासों की सफलता

पिछले साल, जर्मन जनवादी गणतंत्र में दस्तकारों के सहकारी संघों का प्रति व्यक्ति उत्पादन, व्यक्तिगत दस्तकारों के प्रति व्यक्ति उत्पादन से ४,२०० मार्क अधिक था। सन् १९५५ में, जब स्वेच्छा से यहां दस्तकारों के प्रथम कतिपय उत्पादन सहकारी संघ स्थापित किये गये, व्यक्तिगत और सहकारी उत्पादन बराबर था। लेकिन सन् १९६४ तक आते-आते दस्तकार सहकारी संघों का प्रति व्यक्ति उत्पादन, वैयक्तिक उत्पादन से दुगुना हुआ। इस सफलता के पीछे दस्तकार सहकारी संघों का सुयोग्य संगठन, उनका यंत्रीकरण, और आधुनिक टेकनालोजी का प्रयोग—इन सब चीजों का हाथ है।

रासायनिक उत्पादन में वृद्धि

जर्मन जनवादी गणतंत्र में ब्यूना का रासायनिक कारखाना, सालाना १०० करोड़ मार्क की रकम का उत्पादन करता है (१ मार्क बराबर है १.१२ रुपये के—सं.)। इस कारखाने में विभिन्न प्रकार के ४०० रासायनिक वस्तुओं का उत्पादन होता है। यह ज. ज. ग. का, संशलिष्ट रबर और कारबाइड़ तैयार करने का, प्रमुख कारखाना है। ये रासायनिक वस्तुएं दुनिया के ५० देशों को यहां से निर्यात की जाती हैं।

पिछले २० वर्षों में ब्यूना के इस रासायनिक कारखाने में ८० करोड़ मार्क की धनराशि लगा दी गई है। अगले पांच वर्षों में, इस कारखाने में इतनी ही रकम और लगा दी जायेगी। इस तरह ब्यूना का यह कारखाना, ज. ज. ग. का, प्लास्टिक पैदा करने वाला, प्रमुख कारखाना बन जायेगा।

उत्तर-प्रदेश विधान सभा सदस्य द्वारा जर्मन शांति प्रयत्नों की प्रशंसा

हाल ही में, उत्तर प्रदेश (भारत) की विधान सभा के एक सदस्य, श्री नेकराम शर्मा ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के, विश्व शांति संबंधी प्रयत्नों की, भूरि-भूरि प्रशंसा की। ज.ज.ग. की शांति संबंधी नीति का मात्र ध्येय है जर्मन-भूमि से पुनः युद्ध का विस्फोट न होने देना। श्री शर्मा, गत मास, में जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में, विश्वप्रसिद्ध पोट्सडाम संधि की २०वीं वर्षगांठ के सम्मान में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग ले रहे थे।

श्री नेकराम शर्मा के अतिरिक्त, उत्तर प्रदेश विधान सभा के एक अन्य सदस्य, श्री गोविंद सहाय, पोस्टडाम संधि से संबंधित उक्त सम्मेलन में भाग लेने गये थे, जिसमें १४ देशों के २०० से अधिक प्रतिनिधि आये थे।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में बोलते हुए, श्री नेकराम शर्मा ने सेनावाद और नव-उपनिवेशवाद के आपसी गठजोड़ पर प्रकाश डाला। इसके बाद उन्होंने कहा : 'बोन सरकार (पश्चिमी जर्मनी की सरकार—सं.) ने हाल ही में, अपने अनुदान में 'भारत सहायता कोष' में अपने अनुदान की रकम में से ९० लाख डालर की रकम इसलिए कम कर दी ताकि भारत की आर्थिक योजना संकट में पड़ जाये। ...लन्दन के 'फाइनैन्शल टाइम्स' अखबार तक ने इस कमी को 'सन१९६५ का नीचतम कुकृत्य' कह कर पुकारा है।"

...अपने भाषण में श्री शर्मा ने सम्मेलन में भाग लेने वालों और दुनिया के समस्त

१८वें स्वतंत्रता दिवस पर भारत को बधाई

इस वर्ष के १५ अगस्त के दिन, भारत ने अपनी आजादी की १८ वीं वर्षगांठ मनाई। इस शुभ अवसर पर भारत के वरिष्ठ नेताओं एवं प्रतिनिधियों को, जर्मन जनवादी गणतंत्र के सरकारी प्रतिनिधियों और राजनीतिज्ञों ने, अपनी हार्दिक शुभ-कामनायें एवं बधाइयां भेजी हैं। इन शुभ-कामनाओं में भारत वर्ष के निरन्तर विकास तथा खुशहाल भविष्य के लिये, और विश्व शांति के लिये उसके निरन्तर प्रयत्नों की सफलता की कामना की गई है।

श्री नेकराम शर्मा (विधान-सभा सदस्य, उ.प्र.) ज.ज.ग. के 'सेसीलीएनहोफ मैनर मिमोरियल' में जहां सन् १९४५ में ऐतिहासिक पोट्सडाम संधि पर दस्तखत हुये

प्रगतिकामी लोगों से अपील की कि वे सेनावाद, उपनिवेशवाद एवं नव-उपनिशवेशवाद के दानव के खिलाफ निरन्तर संघर्ष जारी रखें। इस संदर्भ में भारतीय विधायक ने, ज.ज.ग. की शांतिप्रिय नीति और उपनिवेशवाद तथा सेनावाद के विरुद्ध उसके सद्प्रयत्नों के लिये आभार प्रदर्शन किया।

ज.ज.ग. में हज़ारों विदेशी पर्यटक

जुलाई मास में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के पर्वतीय प्रदेश टूरिनजिया के एरफूर्ट नामक शहर में २,३०० से अधिक विदेशी सैलानी आये। ये सैलानी भारत, जापान, यूगोस्लाविया, और कम्बोडिया आदि जैसे देशों से आये थे। इनमें से अधिकांश पर्यटक जर्मनी के माहन कवियों का कस्बा, वाइमर, और कुख्यात हिटलरी फासिस्ट यातना-शिविर बूखेनवाल्ड में बनाया गया शहीद-स्मारक देखने भी गये।

टीका लगाने से खसरे का उन्मूलन

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में इस साल तीन वर्ष तक की आयु वाले ३० हज़ार बच्चों को खसरे का टीका लगाकर इस रोग से सुरक्षित किया गया है। इस टीके का नाम है एल-१६, और सोवियत संघ के डाक्टरों ने इस टीके को, लेनिनग्राद के 'पासचर संथान' में विकसित किया है। ...एक साल की अवधि में ही इस खसरा-विरोधी टीके की सफलता सामने आई है। मई, सन् १९६४ में बर्लिन में खसरे से पीड़ित बच्चों की संख्या ३७७ थी। लेकिन इस वर्ष के इसी मास (मई) में --टीका लगाने के बाद--यह संख्या केवल २४ पर पहुंची।

सबसे कम अपराधियों की संख्या

सन् १९६४ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की अदालतों ने सिर्फ ५२ हज़ार अपराधियों को दण्ड दिया। यह संख्या पिछले पन्द्रह वर्षों के अपराधी-आंकड़ों में सबसे कम हैं। सन् १९५८ में, ज. ज. ग. के अदालतों ने उक्त संख्या से दुगने अपराधियों को दण्डित किया था।

अपराधों की इतनी कम संख्या का कारण वे मध्यस्थ आयोग तथा मसालिहत आयोग हैं जो क्रमशः मुहल्लों और फैक्टरियों में कायम किये गये हैं। इन आयोगों को, छोटे मोटे झगड़ों, एवं अपराधों को निबटाने के अख्तिया-रात दिये गये हैं। ये आयोग लोगों द्वारा निर्वाचित होते हैं। ज. ज. ग. में ६०० मध्यस्थ-आयोग हैं जिनके ७००० निवार्चित सदस्य हैं। इनमें एक तिहाई संख्या औरतों की है।

भारत तथा अन्य देशों को खाद्य उद्योग यंत्रों का निर्यात

"नगेमा" नाम के अन्तर्गत इकट्ठी की गई और राष्ट्रीय स्वामित्व वाली जर्मन जनवादी गणतंत्र की खाद्य-उद्योग की मशीनें तैयार करनेवाली फैक्ट्रियाँ, यहां से, दुनिया के अनेक देशों को निर्यात की जाती हैं। इन दिनों, तानजानिया के पोम्बा नामक द्वीप पर, ज.ज.ग. के फिटर, धान कूटने की एक मिल लगा रहे हैं। यह मिल २४ घंटों में २० टन धान कूट सकेगी।

इस वर्ष के अन्त तक भारत भी, ज.ज.ग. से धान कूटने की एक मिल आयात करेगा। क्यूबा को अनाज कूटने की मिल निर्यात की जा रही है जो २४ घंटों में २०० टन अनाज कूटने की क्षमता रखती है। इराक को, पकाने के यन्त्र निर्यात किये जायेंगे।

'नागेमा' फैक्ट्रियों के कुल उत्पादन का ५५ प्रतिशत भाग, इस साल, निर्यात किया जायेगा। ज.ज.ग. से लगभग ४० देश खाद्य उद्योग से संबंधित मशीनें एवं यंत्र आयात करते हैं। इनमें कुछ नाम ये हैं: स्कैंडिनेविया के देश, ब्राजील, लेबनान, आस्ट्रिया, पश्चिमी जर्मनी और अमेरिका।

अरब गणराज्य के एक साप्ताहिक का श्री उल्ब्रिख्त से इंटरव्यू

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, हाल ही में संयुक्त अरब गणराज्य के एक सुप्रसिद्ध अखबार, साप्ताहिक "अकबर अल योम" को एक प्रेस इंटरव्यू दिया। इस इंटररव्यू में, वियतनाम पर अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रमण का उध्लेख करते हुये, अध्यक्ष उल्ब्रिख्त ने कहाः "अमरीकी साम्राज्य-वादियों ने वियतनाम पर युद्ध थोप दिया है, और अपने पाश्विक आक्रमण से उन्होंने लोगों के आत्मनिर्णय के अधिकार, आजादी और प्रभुसत्ता के बुनियादी अधिकारों को रौंद डाला है जिनके बारे में वे (साम्राज्य-वादी) बहुत शोर मचाते हैं। ...

"हमारा यह निश्चित मत है कि अमरीका के इस आक्रमण का अन्त करने के लिये एक ही रास्ता है, और वह यह है कि वियतनाम जनवादी गणतंत्र पर अमरीका की पाश्विक बमबारी रोक दी जाये, वियतनाम की जनता के विरूद्ध अमरीकी आक्रामक कार्रवाई तुरन्त बन्द हो, सन् १९५४ की जनेवा-हिन्दचीन संधि की शर्तों को पूरी तरह लागू किया जाये, अमरीकी सेनाओं को फौरन हटा दिया जाये, और दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे को बातचीत में वैध साझीदार का दर्जा दिया जाये। ..."

इंटरव्यू को जारी रखते हुये श्री उल्ब्रिख्त ने कहाः "वियतनाम की जनता बड़े साहस और शौर्य के साथ अपने राष्ट्रीय हितों के लिये संघर्ष कर रही है। इस संघर्ष में दुनिया की समस्त शांतिप्रिय जनता उसके साथ है। हमें इस बात में ज़रा भी सन्देह नहीं कि अन्त में यह संघर्ष सफल होगा, और वियतनाम की जनता पर साम्राज्यवादियों के आक्रमण की पराजय अवश्यम्भावी है।

"हमारी राय में इस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है सभी शक्तियों और समस्त शांतिकामी जनता के संघर्ष में एकता लाकर, वियतनाम में अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण के खिलाफ संघर्ष करना, और इस प्रकार साम्राज्यवादियों को, सन् १९५४ के जनेवा-हिन्दचीन समझौते को मान लेने पर मज़बूर करना। ..."

हिमालय की गोद में...

(पृष्ठ १५ का शेष)

किनारों पर बसा हुआ है—सं.) । डाक्टर लाँगर ने कैमरा बन्द कर दिया, और अपना स्केच-बुक संभाला और लगे श्रीनगर के रेखा-चित्र तैयार करने (इनमें से कुछ रेखा-चित्र 'पत्रिका' में यत्र-तत्र दिये गये हैं—सं) नीले आकाश के नीचे निर्मल जल की फैली स्निग्ध 'डल' झील, और १२,००० फुट ऊंचे पर्वत के दामन में लेटे हुए मुगल बागों—निशात और शालीमार—के सौंदर्य ने हमको मोह लिया।

काश्मीर अपनी रेशमी तथा ऊनी वस्तुओं एवं दस्तकारी के लिये विश्व प्रसिद्ध है। अपने काश्मीरी कलाकार मित्र (श्री पृथ्वीनाथ काचरू—सं) की सहायता से—जो राजकीय 'स्कूल आफ़ डिज़ाइन्स' में एक डिज़ाइनर हैं—हमने जुलाहों, दस्तकारों तथा अन्य कलाकारों को काम करते देखा। ...घर पर हमारी पत्नियां नाराज़ न हों, इसलिए हमने उनके लिये यहां कुछ सुन्दर, कलात्मक चीजें उपहार के लिये खरीद लीं।

श्रीनगर से हम यहां के सुप्रसिद्ध पार्वतीय सुरम्य स्थान, पहलगाम गये। यहां हमने एक बार फिर अपने स्कूटर छोड़े और रकसैक संभाले। और चल पड़े दूर ऊँचे पहाड़ों में स्थित अमरनाथ-गुफा की ओर। हाल ही में समाप्त हुई अमारनाथ की यात्रा के कुछ चिन्ह अभी शेष थे। इक्के-दुक्के यात्री अभी इसकी यात्रा कर ही रहे थे।

अमरनाथ गुफा को जाने वाले पर्वतीय पथ पर, गुफा से एक पड़ाव पहले, हम शेषनाग झील तक पहुंचे। यहाँ एक बार फिर हमको एक अलौकिक प्राकृतिक दृश्य का साक्षात्कार हुआ। हिमाच्छादित पर्वत शिखर के दामन में नीलवर्ण की स्निग्ध शान्त झील—जैसे कोई दार्शनिक किसी गंभीर विचार में समाधिस्थ हो।

भाखड़ा नंगल में : काश्मीर की मनमोहक यात्रा समाप्त करके हम एक बार फिर बानिहाल के सर्पिल मार्ग से पंजाब आये। इस बार सड़क बिलकुल ठीक थी। पंजाब में हम भाखड़ा और नंगल देखने गये।

एशिया के इस सब से ऊँचे भाखड़ा बांध को देख कर हम स्तब्ध रह गये। वोल्फगांग श्रेडर ने, जो पेशे से एक इंजीनियर हैं, इस वृहत्त योजना के भावी विस्तार और सिंचाई पद्धति में काफी दिलचस्पी दिखाई। पास ही की उर्वरक फैक्ट्री में श्रमिकों तथा कर्मचारियों के लिये उपलब्ध किये गये समाज-कल्याण संस्थानों को देखकर हम खासतौर से प्रभावित हुए।

कुछ दिनों की इस दूसरी यात्रा के बाद हम फिर दिल्ली पहुँचे। हमारे स्कूटर इस यात्रा के परीक्षण में भी सफल रहे। ...अब हम कम्बोडिया और इन्डोनेशिया की यात्रा पर जा रहे हैं। इस यात्रा की समाप्ति पर हम फिर भारत आयेंगे। तब तक के लिये अलविदा। हम एक बार फिर अपने मेहमाननवाज़ भारतीय मित्रों को धन्यवाद देते हैं उनके स्नेह और सौहार्द्र के लिये।

७०,००० शरणार्थियों ने पूर्व में शरण ली

१३ अगस्त, सन् १९६१ से लेकर आज तक—अर्थात् जब से जर्मन जनवादी गणतंत्र के पश्चिम बर्लिन के साथ लगी हुई अपनी सीमाओं को एक कंक्रीट दीवार खड़ी करके सुरक्षित कर दिया गया—पश्चिमी जर्मनी और पश्चिम बर्लिन से भागकर लगभग ७०,००० शरणार्थियों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली। इनमें ४०,००० व्यक्ति ऐसे हैं जो ज. ज. ग. के ही नागरिक हैं और जो कुछ समय पहले पश्चिमी प्रचार के झूठे प्रलोभनों को सच मानकर, स्वदेश छोड़कर पश्चिमी जर्मनी चले गये थे।

पिछले एक वर्ष में, लगभग १०,००० व्यक्तियों ने पश्चिमी जर्मनी और पं. बर्लिन को छोड़कर ज. ज. ग. में आ गये हैं रहने के लिये। इन शरणार्थियों में प्रत्येक चौथा व्यक्ति, १९ से लेकर २५ वर्ष की आयु का, नौजवान है। इसी अवधि में ७२३ परिवारों ने, जिनमें १,५११ बच्चे भी शामिल हैं, पश्चिमी जर्मनी को तिलांजलि दे दी है।

पश्चिमी जर्मनी से निरन्तर पूर्व में आनेवाले इन हज़ारों शरणार्थियों का ज. ज. ग. में बसाने के लिये यहां की समाजवादी सरकार ने अपने यहां १८ स्वागत-आवास केन्द्र खोले हैं। इन स्वागत-केन्द्रों में शरणार्थियों को तब तक रहने खाने की सुविधायें दी जाती हैं, जब तक उनके लिये उचित काम और घर का प्रबन्ध किया जाता है।

ये हज़ारों शरणार्थी पश्चिमी जर्मनी छोड़कर जर्मन जनवादी गणतंत्र में क्यों शरण लेते हैं, इसके कई कारण हैं। इन शरणार्थियों में अधिकांश संख्या नौजवानों की होती है, जिनको पं. जर्मनी में अध्ययन तथा प्रशिक्षण का अवसर ही नहीं मिलता है। अन्य कई शरणार्थी उस "सुनहले पश्चिम" को इसलिये छोड़ते है क्योंकि वहां केवल पैसे और स्वार्थ का राज है। उदाहरण क लिये श्री गुएनटर टेस्समान, जो अपनी बीवी और दो साल के बच्चे को लेकर यहां आये, बोले: "मैं छः महीनों में दो बार बीमार पड़ा, लेकिन किसी ने भी मेरे परिवार के लिये कुछ न किया—न पड़ोसियों ने, न किसी ट्रेड यूनियन ने और न ही किसी सरकारी संस्था ने! इसके विपरित, ज. ज. ग. में रहने वाले अपने सम्बंधियों से हमें जो पत्र मिले उनसे हमें विश्वास हुआ कि जर्मनी के इस भाग में (अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र में—सं.) मनावीय सहानुभूति और बन्धुत्व को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।"

भारत-ज. ज. ग. निर्माण के सहयोगी
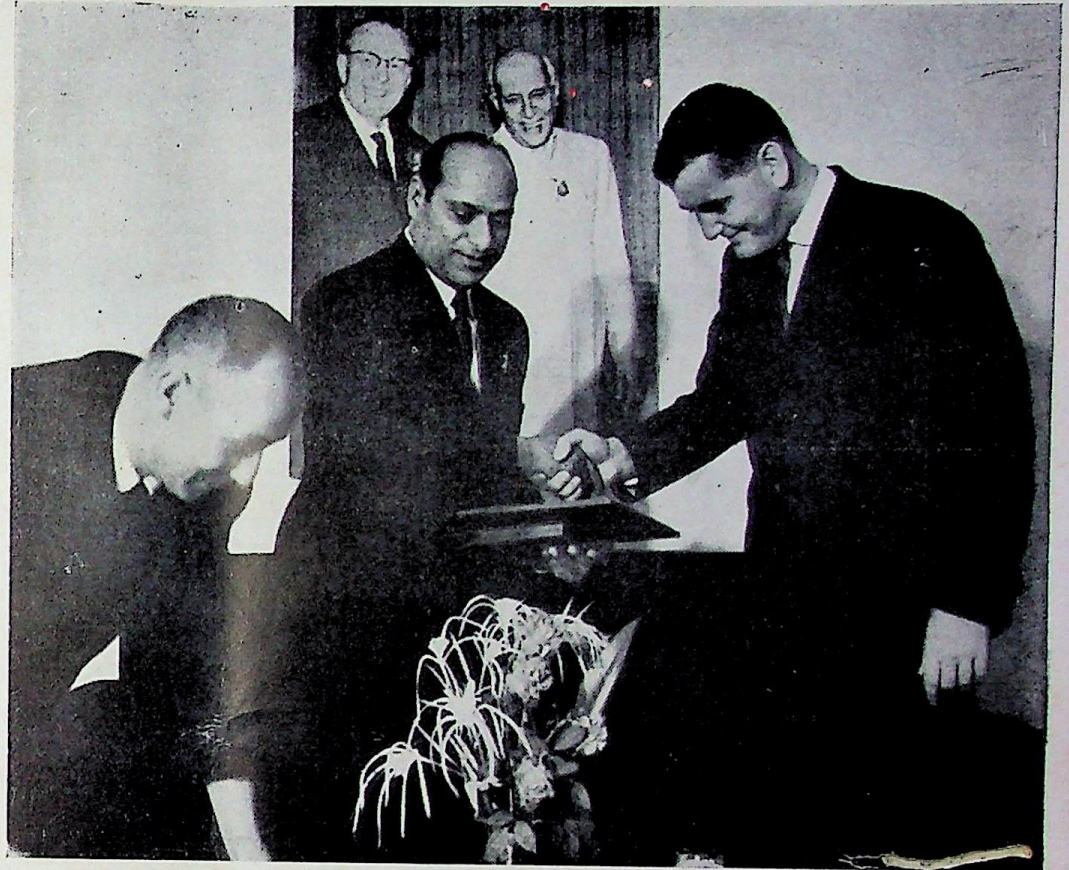
२१ अगस्त, १९३५ के दिन, भारत सरकार के प्रदर्शनियों के निदेशक, श्री पी. के. पणिक्कर को, लाइपज़िग मेले के "सम्मान का पदक" से विभूषित किया गया। 'पदक' ज. ज. ग. व्यापार-दूतावास के कार्यकारी प्रमुख श्री के. एच. फेसपर (दायें) ने प्रदान किया। पदक प्रदान करने का समारोह, नई दिल्ली में ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास में आयोजित किया गया था।

श्री पणिक्कर को यह 'पदक', लाइपज़िग मेले एवं भारत और ज. ज. ग. के बीच व्यापार-सम्बन्धों को बढ़ाने के लिये, उनकी विशिष्ठ सेवाओं के लिये प्रदान किया गया।

शरद्कालीन लाइपज़िग व्यापार मेले (सितम्बर, १९६५) के अवसर पर, क्षेत्रीय व्यापार-दूतावास, कलकत्ता में समारोह का एक दृश्य
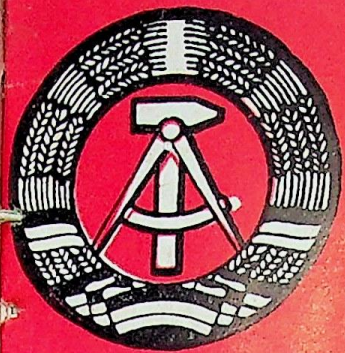
सूचना पत्रिका

1949

राष्ट्रीय-दिवस विशेषांक

1965

जर्मन
जनवादी
गणतंत्र

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष १० | २० अक्तूबर, १९६५
अंक १०

संकेत

पृष्ठ

मुख पृष्ठ : प्रगति के विभिन्न चेहरे

अंतिम पृष्ठ : विकास का ऊंचा ध्येय

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित। संपादक : ब्रूनो मे

जर्मन जनवादी गणतंत्र के १६ वर्ष

सन् १९३३ में जब हिटलर ने जर्मनी की राजसत्ता हथिया ली तो उसने एक हजार (१,०००) साल तक जर्मन राइख (संसद) पर फासिस्त शासन की डींग हांकी । लेकिन सिर्फ १२ वर्ष के बाद अर्थात् १९४५ में फासिस्त तानाशाही को दफन किया गया । जर्मन-आर्य जाति की उत्कृष्टता और दुनिया पर शासन करने के फासिस्तों के सभी सपने मिट्टी में मिला दिये गये । . . .लेकिन हिटलर के फासिस्त शासन के दौरान, जर्मन जनता का एक खासा भाग नात्सियों के झूठे प्रचार का शिकार हो गया था और अनेकनेक जर्मन-जन अन्ध एवं संकुचित राष्ट्रवाद की धारा में बह गये थे। किन्तु दूसरे महायुद्ध के बाद जर्मन जनता का यह संकुचित भ्रम टूट गया, और वह एक बार फिर राष्ट्रीय लोकतंत्रात्मक आन्दोलन के पथ पर आगे बढ़ने लगी ।

जर्मन जनता के इस आन्दोलन और अनुपम उभार से इजारेदार और जागीरदार शासक वर्ग संत्रस्त हो उठा । इसलिए अपने आपको और अपने वर्ग के निहित स्वार्थों को बचाने के लिए इन इजारेदारों तथा जागीरदारों को एक ही रास्ता नजर आया, और वह रास्ता था जर्मनी का विभाजन करवाना । इसी षड़यंत्र के आधीन, जर्मनी के अमरीकी एवं ब्रिटिश अधिकृत पश्चिमी भाग में, सन् १९४७ में, तथाकथित "बाइ-ज़ोन" (द्वि-क्षेत्र) की स्थापना कर दी गई । जर्मनी को विभक्त करने की दिशा में यह पहला कदम था । सन् १९४८ में इस विभाजन की और दूसरा निर्णायक कदम उठाया पश्चिमी शक्तियों ने । उस वर्ष में, जर्मनी के पश्चिमी अधिकृत क्षेत्रों में एक अलग मुद्रा-सुधार लागू किया गया । इसके बाद, सन् १९४९ के सितम्बर मास में, पश्चिमी जर्मनी के अलग राज्य––जर्मन फेडरल गणराज्य–– की स्थापना की गई । . . .

जर्मनी के इजारेदार-जागीरदार वर्ग के इस षडयंत्र को पराजित करने के लिए "जर्मन जन सम्मेलन" ने ७ अक्तूबर, सन् १९४९ के दिन, एक नये जर्मन राज्य 'जर्मन जनवादी गणतंत्र' के स्थापन की घोषणा की । इस विराट जन सम्मेलन में पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के निर्वाचित प्रतिनिधि आये थे। इस प्रकार, जर्मन भूमि पर और इसके इतिहास में पहली बार एक शान्तिप्रिय, समाजवादी जर्मन राज्य की स्थापना हुई ।

'जर्मन जनवादी गणतंत्र' ने जन्म लेने से अब तक एक ही उद्देश्य प्राप्ति के लिये लगातार काम किया है, और यह उद्देश्य है पोट्स्डाम संधि के आधार पर पुनः एक संयुक्त, लोकतन्त्रीय जर्मनी को कायम करना । लेकिन इसके विपरीत, पश्चिमी जर्मनी, हर संभव तरीके से जर्मन जनवादी गणतंत्र के यथार्थपूर्ण और ठोस प्रस्तावों एवं नीति का लगातार विरोध करता आ रहा है ।

'जर्मन जनवादी गणतन्त्र' ने ही सर्वप्रथम यह सुझाव दिया कि सम्पूर्ण जमनी में एक आम चुनाव किया जाये और इसके द्वारा एक अखिल जर्मन सरकार की स्थापना की जाये । इसी प्रकार इस प्रथम शान्तिप्रिय जर्मन राज्य ने, पश्चिमी जर्मनी के नाटो में शामिल होने और ज.ज.ग. के वारसा संधि में दाखिल होने का डटकर विरोध किया । ज.ज.ग. ने ही, सम्पूर्ण जर्मनी से, सभी अधिकृत सेनाओं को हटाने की मांग भी की । लेकिन पश्चिमी जर्मनी की सरकार ने, शांति स्थापना और जर्मनी को पुनः एक करने के इन प्रस्तावों को हरबार ठुकरा दिया । प. जर्मनी सरकार को इस बात का डर था कि यदि वह इन जायज सुझाओं को मान लेगी तो जर्मन जनता इसकी गलत नीतियों के खिलाफ अपना फैसला देगी ।

जर्मन जनता के इस फैसले से पश्चिमी जर्मन राज्य को बचाने के लिये, अडेनावर सरकार ने जानबूझकर एक ऐसी नीति अपनाई जिसके कारण पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के बीच की खाई (विभाजन की) दिन प्रति दिन चौड़ी होती गई । इस नीति का परिणाम यह निकला है कि आज सारे यूरोप में, पश्चिम जर्मन सरकार एकमात्र ऐसी सरकार है, जो अन्य देशों के क्षेत्रों पर अपना अधिकार जताती है । प. जर्मनी के अनेकों प्रकाशन और अखबार जर्मनी की वर्तमान सीमाओं के अन्तर्गत वे सभी इलाके दिखाते हैं जो सन १९३७ या १९३९ में हिटलर राइख के अधिकार में थे ।···लेकिन प. जर्मनी के इन अधिकारों को फ्रांस के राष्ट्रपति द गाल तक ने अमान्य घोषित किया है, और ओडर नाइससे सीमा को, जर्मनी और पोलैण्ड के बीच की वैध सीमा-रेखा स्वीकार किया है ।

जर्मनी का विभाजन, पश्चिम जर्मन सरकार की एकांगीन राजनीतिक प्रचार, आर्थिक बायकाट, और पश्चिमी जर्मनी के शस्त्रीकरण की नीति से अधिक गहरा हुआ है । इस के विपरीत, जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने हमेशा दो जर्मन राज्यों के बीच धीरे-धीरे पुनर्मेल की ओर बढ़ने की नीति को इस उद्देश्य से अपना लिया ताकि अन्त में जर्मनी पुनः एक हो जाये । इस संदर्भ में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र के, दो

ज. ज. ग. के १६ वर्ष

जर्मन राज्यों का एक महा संघ (कामन फेडेरेशन) बनाने का प्रस्ताव का यहां स्मरण कराना अनुचित न होगा । इस प्रस्ताव के अनुसार दोनों जर्मन राज्यों का यह महासंघ, एक अखिल जर्मन महासमिति को कायम करतो । यह उच्चतम अखिल जर्मन समिति दो जर्मन राज्यों के व्यापार, यातायात, परिवहन, सांस्कृतिक विनिमय आदि से संबंधित प्रश्नों को हल करती । इसके बाद जर्मनी का पुनर्एकीकरण बहुत ही आसान हो जाता । 'जर्मन जनवादी गणतन्त्र' के इस प्रस्ताव का, अफ्रो-एशियाई देशों में काफी स्वागत हुआ, लेकिन पश्चिमी जर्मनी की सरकार यथावत अपनी हठधर्मी पर अड़ी रही ।

भारत के राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन, स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू और श्री लाल बहादुर शास्त्री इस बात को कई बार दोहरा चुके हैं कि पूर्वी जर्मनी (जर्मन जनवादी गणतन्त्र--सं.) और पश्चिमी जर्मनी के लिए वर्तमान जटिल स्थिति से निकलने का एकमात्र रास्ता है आपस में मिल-बैठकर बातचीत करना । दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व की हकीकत को मान लेने की इस सही भारतीय नीति पर, पश्चिमी जर्मनी के अखबार बौखला गये और उन्होंने भारत की तटस्थ विदेशी नीति पर बहुत कीचड़ उछाला ।

इस सब कुछ के बावजूद यह एक दिलचस्प तथ्य है कि जर्मनी में, पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के बीच बातचीत का विचार, दिन प्रति दिन जोर पकड़ता और व्यापक होता जा रहा है । और पश्चिमी जर्मनी का यह दावा, कि वह सम्पूर्ण जर्मनी का मात्र प्रतिनिधि है, (इस दावे का आधार है, प. जर्मनी का खोखला हालस्टाइन सिद्धांत--सं.), अब अधिकांश अफ्रो-एशियाई तथा लात.नी देशों में अविश्वास की दृष्टि से देखा जाने लगा है ।

भारत और पाकिस्तान के वर्तमान झगड़े के प्रति पश्चिमी जर्मनी के रवैये पर भी दो शब्द कहना आवश्यक है । प० जर्मनी के एक सुप्रसिद्ध दैनिक अखबार 'डी वेल्ट' ने अपने ७ सित बर १९६५ वाले अंक की एक टिप्पणी में भारत को आक्र ता घोषित करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ को, भारत के खिलाफ आर्थिक बायकाट करने और उससे हर प्रकार के अन्य सम्बन्ध विच्छेद करने की सलाह दी । ८ सितम्बर के दिन 'डी वेल्ट' ने अपनी एक और टिप्पणी में लिखा कि काश्मीर के बारे में पाकिस्तान की म.ग न्य.यसंगत है । इसके विपरीत 'जर्मन जनवादी गणतंत्र', काश्मीर के सवाल पर भारत के दृष्टिकोण का पूर्ण समर्थन करता है । इस समर्थन की घोषणा की थी जर्मन जनवादी गणतंत्र के स्वर्गीय प्रधान मंत्री, ओट्टो ग्रोटवोल ने जब वह भारत की सद्भावना यात्रा पर आये थे । जर्मन जनवादी गणतंत्र आज भी इसी भारत-समर्थक काश्मीर नीति पर दृढ़ है। भारत और पाकिस्तान के वर्तमान झगड़े ने, भारत को अपने सच्चे मित्र पहचानने का एक अनुपम अवसर प्रदान किया है—ऐसे सच्चे मित्र जो ज़रूरत में उसके काम आ सकें ।

पूर्व और पश्चिम ज

पश्चिमी जर्मनी में गत १९ सितम्बर को आम चुनाव सम्पन्न हुए । उसमें कुल ४७.५ प्रतिशत मत पड़े और 'क्रिश्चियन डेमोक्रैटिक यूनियन' की दुबारा विजय हुई । इन चुनावों के प्रति कई देशों में काफी दिलचस्पी थी, कारण कि आणुविक निशस्त्रीकरण, योरोपीय देशों की वर्तमान सीमाओं को मान्यता देने, और विभिन्न व्यवस्थाओं वाले देशों में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति के प्रति पश्चिमी जर्मन सरकार का रुख संसार के कई भागों में चिंता का विषय बना हुआ है ।

चुनावमें भाग लेनेवाली मुख्य पार्टियाँ थीं 'क्रिश्चियन डेमोक्रैटिक यूनियन', 'क्रिश्चियन स.शलिस्ट यूनियन' और 'सोशलिस्ट डेमोक्रैटिक पार्टी आफ़ जर्मनी' । १९५६ में जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी (के.पी.डी.) पर कार्लसरुहै अदालत के एक अवैधानिक आदेश से प्रतिबन्ध लगा दिया गया था । वी. बी. एन. पर भी, जो जर्मन यातना-शिविरों के
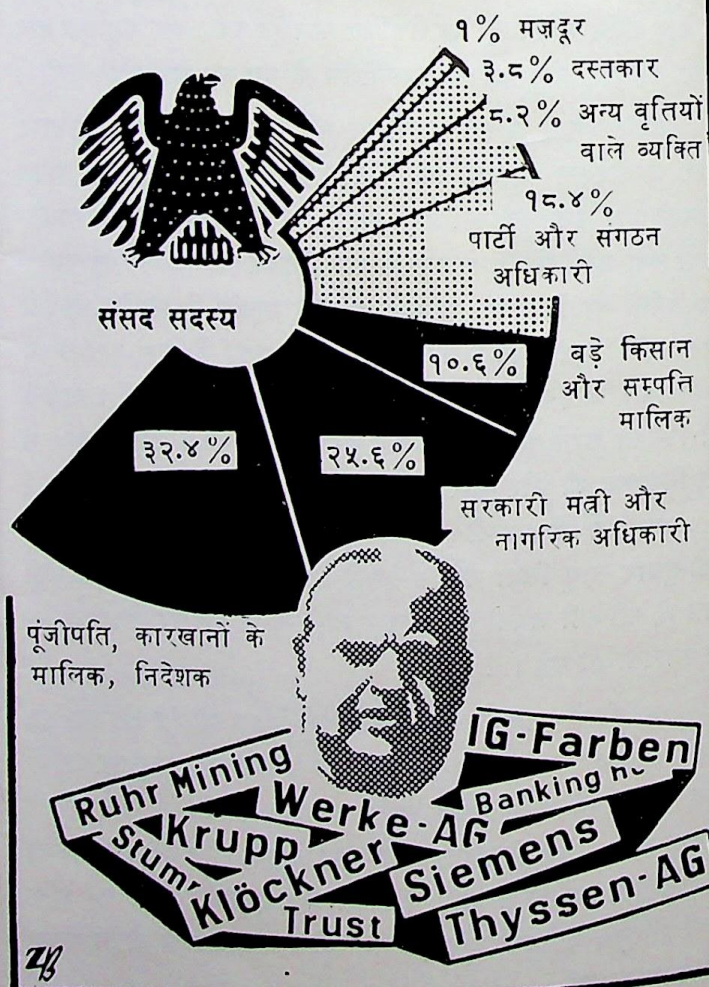
१९६५ के चुनावों के पहले प० जर्मन बुण्डस्टाग (संसद) में वृत्ति के अनुसार सदस्यों का अनुपात

जर्मनी में चुनाव

भूतपूर्व कैदियों, (जो कम्युनिस्टों, पादरियों और मध्य वर्ग के फासिस्ट-विरोधी प्रतिनिधियों का संगठन है) पर भी रोक लगाने की कोशिश की गई थी। प्रत्येक सच्चे विरोध पक्षीय आंदोलन का गला घोंट कर जर्मन मतदाता शुरू से ही शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सद्भावना की नई नीतियों के पक्ष में मतदान करने के अवसर से वंचित कर दिये गये थे।

विश्व के विभिन्न भागों के अधिकांश टिप्पणीकारों की निगाह से यह स्थिति छिपी नहीं रही। उदाहरण के लिए १४ सितम्बर १९६५ के 'स्टेट्समैन' ने जर्मन जनता के समक्ष रखे गये विकल्पों के बारे में लिखा : प्रतिद्वंदियों में अन्तर अत्यन्त नगण्य है, समस्याएँ बहुत ही घिसी-पिटी हैं और चुनाव के वर्तमान अथवा संभावित समझौते इतने ढीले और सतही हैं कि प्रतिद्वंद्विता-पूर्ण मतदान की आशा ही नहीं की जा सकती।''

ज. ज. ग. का पीपुल्स चैम्बर (लोक सभा)

वृत्ति के अनुसार संसद सदस्यों के अनुपात
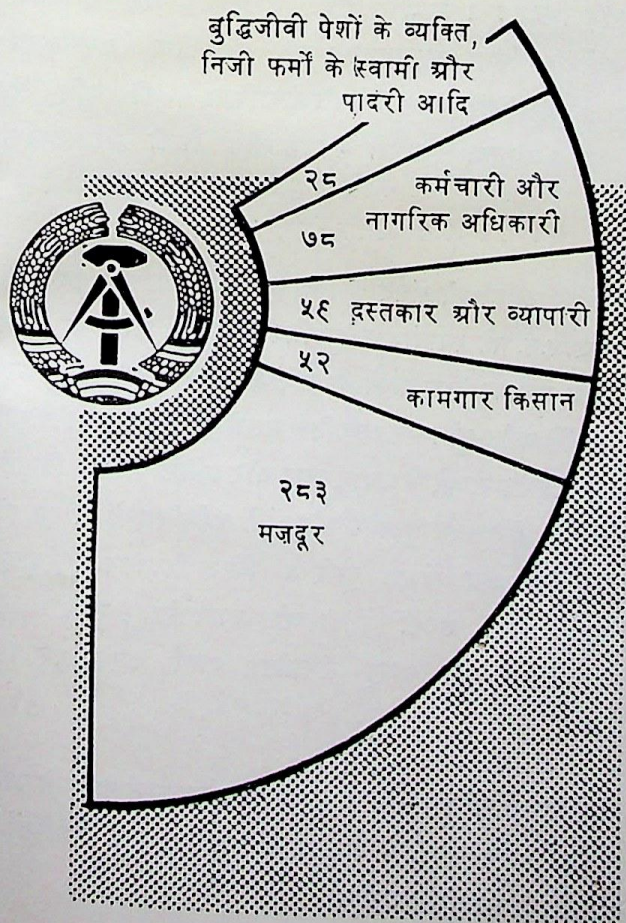
विकल्प के इस अभाव को पश्चिमी जर्मनी के अखबारों, रेडियो और टेलीविजन ने मतदाताओं को गैर-राजनीतिक चिंतन के लिए 'शिक्षित' करने के नाम पर पूरा करने की कोशिश की। इस सिलसिले में पश्चिमी जर्मनी के सबसे बड़े दैनिक 'बिल्ड' की चर्चा की जा सकती है, जिसकी प्रसार संख्या ४५ लाख है। 'बिल्ड' की इस सफलता का, उसके सम्पादक और पश्चिमी जर्मनी के पत्रों के सम्राट, अलेक्स स्प्रिंगर ने निम्नलिखित रहस्य बताया : उनका कहना है कि "प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त होने के बाद से मेरी पक्की धारणा रही है कि जर्मन (पश्चिमी) पाठक एक बात किसी भी हालत में नहीं करना चाहता --और वह है सोचना। और मैंने अपने पत्र को ऐसा ही रूप दे दिया।'' उनके इस कथन के प्रमाणस्वरूप अगस्त १९६५ के 'बिल्ड' के उस हफ्ते के स्मरण पेश किये जा रहे हैं, जिस समय चुनाव अपनी पूरी तेज़ी पर था :

मुख्य पृष्ठों (प्रथम तथा अंतिम) पर प्रकाशित ७१ फीचर और समाचार निम्नलिखित विषयों पर थे :

हत्या, चोरी और दूसरे अपराध ...	१५
दुर्घटनाएँ और विपत्तियाँ ...	११
अभिनेता-अभिनेत्रियों के किस्से ...	८
विदेशी मामले ...	८
सीमा की उत्तेजनात्मक घटनाएँ और सीमा-यातायात ...	५
मानवीय कार्य ...	४
बुण्डस्टाग का चुनाव ...	४
अन्य राष्ट्रीय मामले ...	३
वान प्रवृत्ति से संबंधित मुख्य समाचार ...	३
साहस के कारनामे और खेल कूद ...	३
आर्थिक (मूल्य वृद्धि के साथ) ...	३
मौसम ...	२
	७१

समाचारों का यह क्रम संयोग की बात नहीं। समाचारों के चुनाव और उनके अनुपात में एक पूरी पद्धति है। इस प्रकार के प्रचार द्वारा पश्चिमी जर्मनी के मतदाताओं के स्वभाव में जो राजनीतिक निष्क्रियता आ गयी है, उसका कई भारतीय पत्रों ने उल्लेख किया।

ऐसी हालत में यह और दुःखद है जबकि सम्पूर्ण जर्मन राष्ट्र के समक्ष कुछ अति महत्वपूर्ण राजनीतिक मसले हैं--उदाहरणार्थ--पश्चिमी जर्मनी का अणु-शस्त्रों से लैस किया जाना, संकटकालीन अधिकार जिससे पश्चिमी जर्मनी की सरकार जब चाहे जनतन्त्र समाप्त कर सकती है, विचारों की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति पर रोक लगा सकती है तथा संसद का निर्णय बदल कर उसे हिटलर के समय की सी हालत

में ला सकती है, और एकीकरण या बलप्रयोग के इरादे से दोनों जर्मन राज्यों में वार्ता चलाने की समस्या आदि।

५ सितम्बर १९६५ के 'नेशनल हेराल्ड' ने उचित ही टिप्पणी की है कि "पश्चिमी जर्मनी के नेतृत्व में मुख्य मतभेद उन लोगों के बीच हैं जिनमें से एक पक्ष के लोग यह विश्वास करते हैं कि फिलहाल 'राइख' की राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि पश्चिमी जर्मनी के सारे दावे से कुछ कम पर ही समझौता कर लिया जाय और उचित अवसर आने पर और के लिए दावा किया जाय। दूसरा पक्ष इस राय का है कि अपने परमाणविक शस्त्रीकरण की पूरी कीमत वसूलने पर ज़ोर देना चाहिए।" पत्र ने आगे कहा है, "चुनाव के बाद भी मुख्य सवाल बग़ैर हल हुए ही रह जायगा। वह मुख्य प्रश्न यह है कि पश्चिमी जर्मनी पारमाणविक गुट में शामिल होकर परमाणविक शस्त्रों से लैस हो जायगा अथवा गैर-परमाणविक स्थिति को और संभवतः एक प्रकार के संघीय स्वरूप में पूर्वी जर्मनी से एकीकरण को अपने अस्तित्व को बरकरार रखने का सबसे सुनिश्चित मार्ग स्वीकार कर लेगा।"

ज. ज. ग. में लोकतन्त्रीय चुनाव

१० अक्तूबर को **जर्मन जनवादी गणतन्त्र** में स्थानीय विधान-सभाओं के चुनाव हुए। यह चुनाव ज़िलों, नगरों और विभिन्न क्षेत्रों के २ लाख डेपुटीज़ का, ४ वर्ष का कार्यकाल समाप्त होने पर हुआ। ज.ज.ग. में समाजवादी विकास के साथ-साथ आर्थिक विकास और स्थानीय प्रशासन के बारे में स्थानीय असेम्बलियों के अधिकारों में भी विस्तार होता गया। जन-कल्याण ही स्थानीय और राज्य असेम्बलियों का वास्तविक उद्देश्य है। चुनाव के पहले 'डेपुटीज़' को जनता के सामने अपने कार्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना पड़ता है, क्योंकि यह उनका बुनियादी कर्तव्य और मतदाताओं का बुनियादी अधिकार है

मतदाता यदि किसी भी उम्मीदवार के पक्ष में मत देता है तो उसे यह आशा रहती है कि वह उम्मीदवार उनके विचारों, अनुभवों, सुझाओं और आलोचनाओं से भी भली-भांति अवगत है। ज.ज.ग. के 'इंस्टिट्यूट फ़ार पब्लिक ओपीनियन' द्वारा की गयी जांच के आधार पर पता चला है कि ७५ प्रतिशत मतदाता स्थानीय असेम्बलियों में अपने प्रतिनिधियों को भली भांति जानते हैं और उनके साथ सहयोग करते हैं। पर इस बात में सन्देह नहीं कि अभी पूरी संभावनाओं का उपयोग, विशेषकर नगरों में नहीं किया जा सका है।

मतदाताओं और उनके प्रतिनिधियों में और निकट सम्पर्क स्थापित करने के लिए चुनाव क्षेत्रों का आकार घटा दिया गया है। ज.ज.ग. की ५ जनतांत्रिक ब्लाक पार्टियों द्वारा गठित स्थानीय असेम्बलियां चुने जाने वाले 'डेपुटीज़' की संख्या निर्धारित करती है। मतदाता अपनी सच्ची राय आदि व्यक्त कर सकें इसलिए जितने 'डेपुटीज़' का चुनाव होता है उससे अधिक उम्मीदवार होते हैं। जनता, सभाओं तथा मीटिंगों के जरिये अपने उम्मीदवारों को निकट से जानने का प्रयत्न करती है।

ज.ज.ग. में चुनाव की तैयारी भी पश्चिमी जर्मनी में चुनाव की तैयारी से नितान्त भिन्न रही। मतदाताओं में यहां गैर-राजनीतिक अज्ञान नहीं फैलाया गया बल्कि इसके विपरीत जर्मन राष्ट्र के भाग्य का निर्णय करने में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया। प्रत्येक नागरिक का सक्रिय सहयोग ही ज.ज.ग. की सफलता की कुंजी है और वह जर्मनी के अविकसित और पिछड़े हुए भाग की जगह आज अपने अस्तित्व के १६ वर्षों बाद, एक आधुनिक औद्योगिक देश है जिसका विश्व में आठवाँ और यूरोप में पांचवां स्थान है।

लेकिन यह बात भी कम महत्व की नहीं है कि आज ज.ज.ग. में एक नयी पीढ़ी भी उदित हो चुकी है जिसने अतीत से हमेशा के लिए नाता तोड़ लिया है। आज ज.ज.ग. में ऐसा कोई उम्मीदवार नहीं मनोनीत किया जा सकता जो आणविक शस्त्रीकरण, पोलैण्ड, सोवियत-संघ या चेकोस्लोवाकिया की भूमि फिर हड़पने या जनतन्त्र विरोधी संकटकालीन डिक्री की वकालत करे।

पश्चिमी जर्मनी की संसद के लिए चुने गये अधिकांश सदस्यों के विपरीत ज.ज.ग. की स्थानीय असेम्बलियों के उम्मीदवारों को जर्मनी की राष्ट्रीय समस्या हल करने के बारे में ठोस सुझाव पेश करने पड़े। उन्होंने जर्मन-भूमि पर आणविक शस्त्रों की जगह पूर्ण निशस्त्रीकरण, दोनों जर्मन राज्यों में प्रचार द्वारा और अधिक संबंध बिगाड़ने की जगह धीरे-धीरे संबंध सुधारने और दोनों जर्मन राज्यों का एक संघ बनाने, आर्थिक क्षेत्र में एक दूसरे के विरुद्ध विध्वंसक कार्रवाइयों की जगह दोनों राज्यों में अच्छे व्यापारिक संबंधों और फौजी धमकियों की जगह समझौता वार्ता करने पर ज़ोर दिया।

इसमें सन्देह नहीं कि आगे आने वाले दिन इस प्रश्न का सही उत्तर देंगे कि दोनों जर्मन राज्यों में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्थितियों के प्रति यथार्थवादी रुख किसका है।
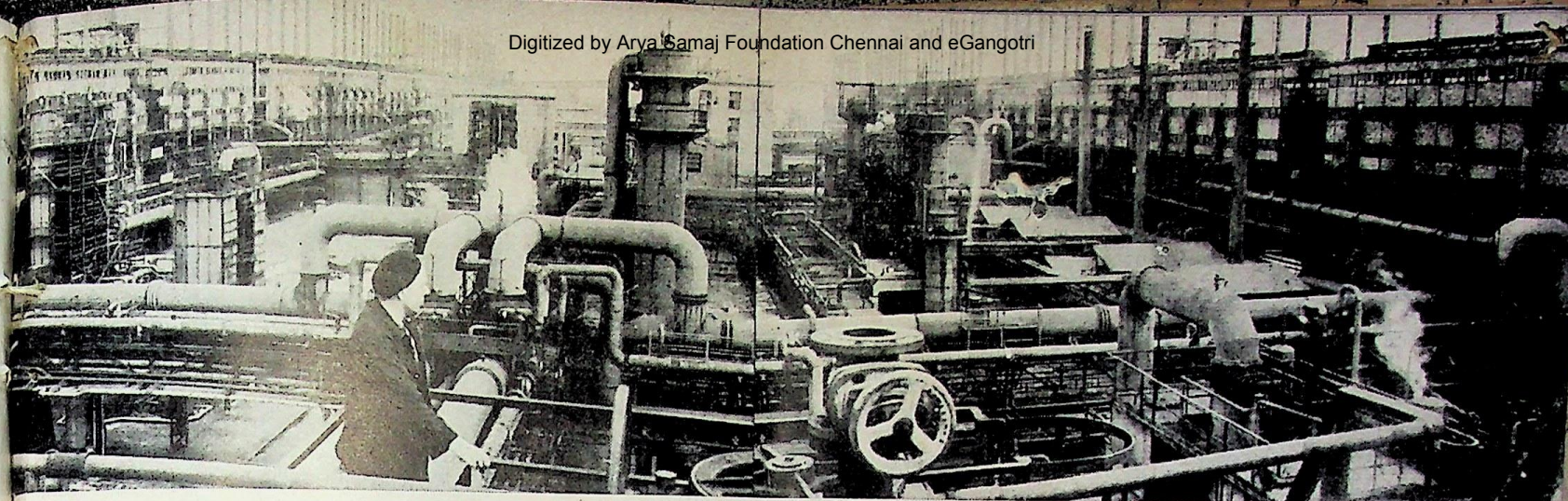
ज.ज.ग. एक आधुनिक औद्योगिक राज्य
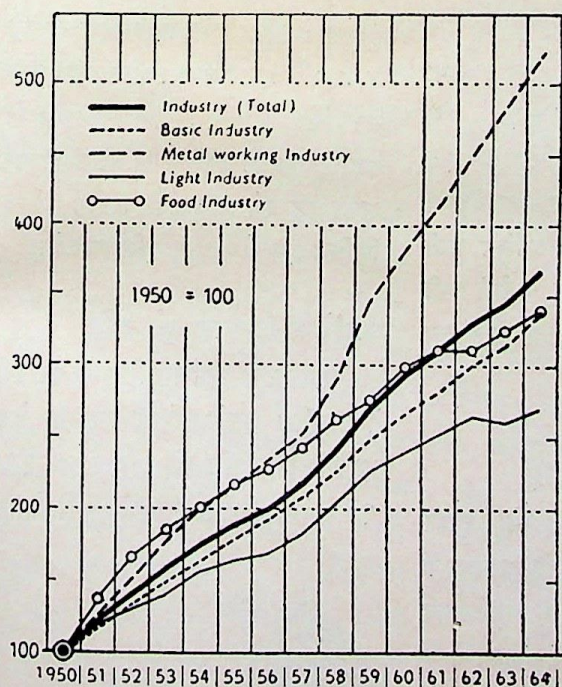
जर्मन जनवादी गणतंत्र आज, यूरोप के सबसे विकसित औद्योगिक राज्यों में पांचवें और दुनिया की सबसे मज़बूत औद्योगिक शक्तियों में आठवें स्थान पर है।

सन् १९४९ में स्थापना के समय, ज.ज.ग. अत्यन्त छिन्न विछिन्न और ध्वस्त हुये अर्थतंत्रों वाले यूरोपीय राज्यों में से एक राज्य था। उस समय इसके पास आर्थिक साधन नगण्य थे, और भारी उद्योग का वहां नामोनिशान तक नहीं था। इस सब के ऊपर युद्ध की तबाही के बाद पुनर्निर्माण की सबसे विकट समस्या इसके सिर पर थी। उस वर्ष, अर्थात् सन १९४९ में, कुल औद्योगिक उत्पादन २२,००० मिलियन मार्क (१ मिलियन = १० लाख) से अधिक नहीं थी।

इन ज़बरदस्त कठिनाइयों और रुकावटों के बावजूद, सन १९६३ तक आते आते, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अपना कुल औद्योगिक उत्पादन ८१,००० मिलियन मार्क तक बढ़ा लिया।

सन् १९६४ में, ज.ज.ग. के कुल उत्पादन का मूल्य, सन् १९३६ में संपूर्ण जर्मन राइख के उत्पादन के बराबर था। इस संबंध में यह ज्ञातव्य है कि आधुनिक ज.ज.ग. का क्षेत्र, भूतपूर्व जर्मन राइख के कुल क्षेत्रफल का एक चौथाई भाग से भी कम है।

सन् १९६४ में ही, ज.ज.ग. का औद्योगिक उत्पादन-सूचकांक (१९५०-१००) ३६८ तक बढ़ गया। उद्योग की प्रत्येक शाखा में आश्चर्यजनक प्रगति हुई। सूचकांक (इनडेक्स) के अनुसार इस प्रगति के आंकड़े इस प्रकार हैं : धातु उद्योग में ४४७, रासायनिक उद्योग में ३९३, इंजीनियरिंग उद्योग में ४७८, विद्युत इंजीनियरिंग में ७३०, सूक्ष्म एवं प्रकाशीय औजारों में ४४३, हल्के उद्योग में २७१ और खाद्य तथा अन्य तत्संबंधी उद्योग में ३४०।

प्रस्तुत लेख में पढ़िये ज.ज.ग. के इसी आर्थिक चमत्कार और प्रगति की कहानी जो समाजवाद की सफल आर्थिक योजनाओं की एक साहसिक कहानी है।

सन् १९३६ में, भूतपूर्व संयुक्त जर्मनी के सख्त कोयले का ९७.७ प्रतिशत भाग और कोक उत्पादन का ९९.४ प्रतिशत भाग, (वर्तमान) पश्चिमी जर्मनी की सीमाओं में ही पैदा होता था। इसके फलस्वरूप जर्मनी के मुख्य रासायनिक कारखाने, कच्चे लोहे का ९३.४ प्रतिशत उत्पादन और अन्य धातुओं के अधिकांश उद्योग धन्धे वहीं स्थित थे। इसके अतिरिक्त पश्चिमी जर्मनी में ही लोहे और इस्पात पैदा करने के ८९.९ प्रतिशत कारखाने, और जर्मनी के धातु-पिघलाने के कुल उद्योग के ८६.६ प्रतिशत कारखाने वहीं कायम हुए थे। विभिन्न प्रकार की भारी इंजीनियरिंग सामान--जिसमें जल-टरबाइन, प्रद्रावण तथा बेलन मिल उपकरण, और फाउंड्री मशीनें शामिल हैं--सिर्फ पश्चिमी जर्मनी में ही पैदा किया जाता था।

दूसरे महायुद्ध के बाद, पोट्स्डाम संधि में इस विशिष्ट औद्योगिक स्थिति को ध्यान में रखा गया था। इसीलिए इस संधि में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि जर्मनी की आर्थिक एकता को सुरक्षित और सामान के विनिमय को संतुलित रखा जाना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य से, जर्मनी के विभाजन ने, इस संतुलित आर्थिक संगठन को नष्ट कर दिया। यह स्थिति, जर्मनी के पूर्वी इलाके के लिए बहुत हानिकारक थी। इसी इलाके को लेकर बाद में, जर्मनी के एक अन्य और नये राज्य, जर्मन जनवादी गणतन्त्र की स्थापना हुई।

प. जर्मनी द्वारा आर्थिक बायकाट

जन्म लेने के दिन से ही ज.ज.ग. आर्थिक बायकाट एवं अन्य प्रतिबंधों के खिलाफ सतत संघर्ष करने के लिए मजबूर हुआ। इसका अर्थ-तंत्र बुनियादी भारी-उद्योगों के अपने मूल स्रोत, अर्थात् पश्चिमी जर्मनी से कट गया। विभाजन के बाद, ज.ज.ग. इस बात पर निर्भर नहीं कर सकता था कि जर्मनी का दूसरा राज्य--अर्थात् पश्चिम जर्मन राज्य, पहले की करारों तथा संपर्कों को बनाये रखेगा, और ज.ज.ग. को कच्चा माल तथा अन्य आवश्यक सामान भेजता रहेगा। पिछले कई वर्षों के अन्तर-जर्मन व्यापार के अनुभवों ने ज.ज.ग. के इस अन्देशे को सही साबित कर दिया है। प. जर्मनी की सरकार ने ज.ज.ग. के साथ स्वतन्त्र व्यापार के मार्ग में कई बनावटी रुकावटें पैदा कर दीं और आज भी कर रही है। उदाहरण के लिए, पश्चिम जर्मन सरकार ने सन १९६० के अन्त में, बिना किसी कारण के ज.ज.ग. के साथ हुई व्यापार-संधि तोड़ दी।

इस व्यापार संधि को तोड़ने पर ही पश्चिमी जर्मनी को संतोष नहीं हुआ। बोन सरकार सन १९६१ तक, बर्लिन की खुली सीमा का भी खूब नाजायज़ फायदा उठाती रही। (अगस्त १९६१ में बर्लिन की दीवार खड़ी करके खुली सीमा को सुरक्षित कर दिया गया--सं.) इस नाजायज़ फायदे में बर्लिन में उपभोक्ता तथा अन्य सामान खरीदकर प. बर्लिन में ले जाना, मुद्रा का कृत्रिम विनिमय दर पैदा करना, और ज.ज.ग. के हजारों प्रशिक्षित विशेषज्ञों एवं तकनीशनों को फुसला कर पश्चिमी जर्मनी ले जाना--यह सब शामिल था।

पश्चिमी जर्मन सरकार की इन गलत हरकतों के परिणाम-स्वरूप ज.ज.ग. को, ३० हज़ार मिलियन मार्क (१ मिलियन = १० लाख के) का कुल नुकसान उठाना पड़ा। लेकिन बर्लिन की सीमा को सुरक्षित किये जाने के बाद (दीवार द्वारा) पश्चिमी जर्मनी की इन नाजायज़ हरकतों को ज.ज.ग. ने हमेशा के लिए खत्म कर दिया।

बुनियादी उद्योगों का निर्माण

इन ज़बरदस्त कठिनाइयों को ध्यान में रखकर ही, ज.ज.ग. ने अपनी स्थापना के तुरन्त बाद, बुनियादी उद्योगों के निर्माण पर अपना सारा बल लगा दिया। इन उद्योगों के अन्तर्गत धातु उद्योग, लिगनाइट उद्योग, नये बिजली घर, रासायनिक उद्योग और भारी इंजीनियरिंग उद्योग की कुछ विशेष शाखाओं की बुनियाद डाली गई। औद्योगिक निर्माण के इस प्रथम चरण के दौरान ही कई महत्वपूर्ण कारखाने खड़े किराये गये।

जर्मनी के पूर्वी भाग में सख्त कोयले के ज़खीरे नहीं हैं। इस अभाव को पूरा करने के लिए ज.ज.ग. ने भूरे कोयले की खदानों की ओर ध्यान दिया, जिसके अनन्त भण्डार यहाँ मौजूद हैं। कुछ ही वर्षों में ज.ज.ग. का लिगनाइट उद्योग इतना विकसित और व्यापक बन गया कि इसने दुनिया भर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। लिगनाइट (भूरा कोयला) से धातु-कोक तैयार करना, ज.ज.ग. के इस नवीन उद्योग की एक महानतम उपलब्धि है। ....सन १९५० से १९५६ तक, केवल छः वर्षों में, ज.ज.ग. की सरकार ने अपने इस नये बुनियादी उद्योग में ४५,००० मिलियन मार्क की धनराशि लगाई।

आर्थिक विकास की गति

ज.ज.ग. के आर्थिक विकास की गति काफी तेज़ रही। इसके परिणामस्वरूप, केवल सात वर्षों की अवधि में (१९५७–१९६३ में) १००,००० मिलियन मार्क (१ मिलियन = १०
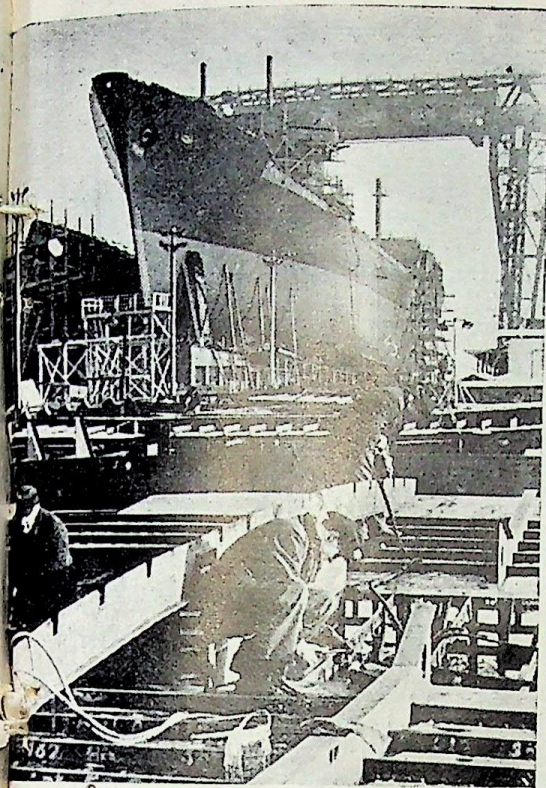
ज.ज.ग. का सबसे बड़ा और आधुनिक ढंग का पोत-निमाण कारखाना, जो वार्नेमुएण्डे में स्थित है

लाख) से भी अधिक की रकम यहां की बुनियादी एवं प्रमुख उद्योगों में लगा दी गई है। इस महत्वपूर्ण विकास ने ज.ज.ग. के मज़बूत राष्ट्रीय अर्थतन्त्र का स्वरूप निर्धारित किया।

ज.ज.ग. में बुनियादी कच्चे माल का भी काफी कमी है। इस लिए यहाँ, उच्च कोटि के बुनियादी सामान के उत्पादन पर सब से अधिक बल दिया गया, क्योंकि इस सामान की विश्व-मण्डी में काफी मांग है। इस प्रकार की वस्तुओं की बिक्री द्वारा अर्जित मुद्रा से कच्चा माल, अर्ध-तैयार चीज़ें, यंत्र एवं उपकरण आदि आसानी से खरीदे जा सकते थे। यही कारण है कि ज.ज.ग.में रासायनिक उद्योग के विकास में पेट्रोलियम-रसायन शाखा पर अधिक बल दिया गया है। इसी प्रकार विद्युत इंजीनियरिंग और इंजीनियरिंग उद्योगों में भी ऐसे उत्पादनों पर बल दिया गया है, जो उत्पादन विधियों को अधिक से अधिक, स्वचालित और मेकनिकी विधियों में तबदील कर दे। दूसरे शब्दों में यही कहा जा सकता है कि ज.ज.ग. के उद्योग को विश्व व्यापी टेकनिकल क्रांति की आवश्यकताओं और स्तर के अनुरूप ढाला जा रहा है।

देश का अपना एक स्वतन्त्र पेट्रो-रासायनिक उद्योग स्थापित करने की दिशा में यह एक निर्णायक कदम था। ज.ज.ग. के इस उद्योग की एक महान उपलब्धि यह है कि श्वेट में एक बहुत बड़ा तेल-शोधक कारखाना आज काम कर रहा है। और इस उद्योग को अधिक से अधिक विकसित करने के लिए सरकार बहुत बड़ी बड़ी रकमें हर साल लगा रही है।

१९७० का आर्थिक स्वरूप

कुछ समय से ज.ज.ग. के अर्थ-शास्त्रियों तथा अन्य विशेषज्ञों में अधिकाधिक राष्ट्रीय आर्थिक विकास की भावी, बुनियादी दिशा पर खूब बहस हो रही है। अब यह बहस केवल विशेषज्ञों तक ही सीमित न रहकर जनता की चर्चा का भी विषय बन चुकी है। इस बहस और विचार-मंथन से ज.ज.ग. के अर्थ-तंत्र का, सन १९७० का जो स्वरूप सामने आया है, वह इस प्रकार का है :

सन १९७० तक ज.ज.ग. का वार्षिक औद्योगिक उत्पादन १३६,००० मिलियन मार्क मूल्य का होगा। दूसरे शब्दों में, सन १९६३ के वार्षिक उत्पादन के मूल्य से ६० प्रतिशत अधिक, अथवा ज.ज.ग. के स्थापना वर्ष से ६ गुणा ज्यादा। इसी प्रकार, सन १९७० में कुल वार्षिक निवेश, सन् १९६३ के वार्षिक निवेश––अर्थात् १६,८००० मिलियिन मार्क से बढ़कर २८,००० मिलियन मार्क होगा। श्रम-उत्पादिता में ६५ प्रतिशत की वृद्धि होगी जिसके परिणाम-स्वरूप लोगों का जीवन-स्तर और ऊँचा उठ जायगा।

पिछले कुछ वर्षों में ज.ज.ग. के औद्योगिक उत्पादन की संरचना में काफी गुणात्मक परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन में सर्वप्रथम उल्लेखनीय है एसे उच्च कोटि की वस्तुओं का उत्पादन जो विश्व-मण्डी की होड़ में बहुत अच्छी तरह टिक गई हैं। इतना ही नहीं। यह सब कुछ कम लागत और अधिक लाभ पर हुआ है। इसका यह परिणाम निकला है कि ज.ज.ग. के पास अब निवेश के लिए अधिक धन है, जो यहां की सरकार बुनियादी उद्योगों के सतत विकास तथा विस्तार में लगाती जा रही है। इस विकास में पहला स्थान दिया गया है विभिन्न उद्योगों की उत्पादन विधियों का स्वचालन एवं मेकनिकीकरण को। इसके लिए विद्युत-इंजीनियरिंग, औज़ार एवं यंत्र निर्माण और शक्ति उत्पादक उद्योग के विकास को तेज़ किया जा रहा है।

इस आर्थिक विकास का अभिन्न अंग है ज.ज.ग. के उद्योगों में, विज्ञान तथा टेक्नोलाजी में नवीनतम खोजों को कम से कम समय में लागू करना। इसके फलस्वरूप ज.ज.ग. उच्चतम कोटि की और विश्व-स्तर की वस्तुएँ पैदा कर रहा है।

श्रम-उत्पादिता

ज.ज.ग. के उद्योग के सामने जो बहुत ज़रूरी काम है वह है श्रम-उत्पादिता के स्तर को ऊँचा उठाना। यह बात और भी आवश्यक बन जाती है जब हम इस तथ्य को याद रखें कि आजकल ज.ज.ग. के राष्ट्रीय-अर्थ-तंत्र के हर क्षेत्र में श्रम-शक्ति की बहुत कमी है। इस कमी का एक मुख्य कारण है ज.ज.ग. की प्रतिकूल आय-संरचना। इस समय, यहां

(शेष पृष्ठ २८ पर)

ज.ज.ग. के हल्के उद्योग का उत्पादन : आधुनिक रहाइशी फर्निचर

लाइपज़िग व्यापार मेले के भारतीय मण्डप में ज.ज.ग. के प्रधान मंत्री, श्री जी. वाइस्स

साथ उनके बैंकों के माध्यम से व्यापारिक-रिश्ते कायम किये गये हैं। उदाहरण के लिए ज.ज.ग. के 'दुइत्शे नोटेन बैंक' और ब्राज़िल, फ्रांस, ग्रीस तथा यूरुगोय के केन्द्रीय बैंकों के बीच ऐसी प्रकार की व्यापार-करारें की गई हैं। ऐसे भी कई देश हैं जिनके व्यापार-चैम्बरों ने ज.ज.ग. के विदेश-व्यापार चैम्बर के साथ व्यापार समझौतों पर दस्तखत किये हैं। इस प्रकार के देशों में उल्लेखनीय देश हैं : आस्ट्रिया, बेलजियम, डेनमार्क, फ्रांस, इंग्लैंड, आइसलैंड, इटली, नेदरलैंड्स, नार्वे, स्वीडन और तुर्की।

४६ देशों में, ज.ज.ग. के दूतावासों अथवा व्यापार-दूतावासों में वाणिज्य नीति विभाग हैं। ज.ज.ग. के व्यापार-दूतावास तथा अन्य संस्थाएँ, क़रार में उल्लिखित वस्तुएँ बिना

बम्बई की एक बन्दरगाह में भारतीय खेतों के लिए ज.ज.ग. के उर्वरक उतारे जा रहे हैं

ज. ज. ग. | व्यापार का विश्वस्त सहयोगी

आजकल, ड्रेस्डेन के चीनी मिट्टी के बर्तन, येना का कांच का सामान और प्रकाशीय एवं सूक्ष्म औज़ार जैसी जर्मन जनवादी गणतन्त्र की परम्परागत उपभोक्ता वस्तुओं के अतिरिक्त उसके जो अन्य उत्पादन दुनिया के विभिन्न देशों में देखने को मिलते हैं उनमें से प्रमुख हैं मशीनें, मशीनी औज़ार, मुद्रण तथा दफ्तरी यन्त्र, पूरी की पूरी फैक्ट्रियां, इलेक्ट्रानिक सामान, कच्ची फिल्म और रासायन उद्योग के विभिन्न उत्पादन।

ज.ज.ग. के विदेश व्यापार संगठनों और निर्यात करने वाली अन्य संस्थाओं ने दुनिया के १०० से अधिक देशों में अपने संपर्क और संबंध कायम किये हैं। यहां के येना स्थित विश्व प्रसिद्ध कार्ल ज़ाइस्स नामक कारखाने के ८० से अधिक देशों में ग्राहक हैं जिनको यह अपना प्रकाशीय तथा सूक्ष्म औज़ार निर्यात करता है।

सन् १९६४ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के कुल विदेश-व्यापार का मूल्य, दुइत्शे नोटेन-बैंक की मुद्रा में २३,२०३ मिलियन मार्क (१ मिलियन = १० लाख) था।

ज.ज.ग. की सरकार ने ३२ देशों के साथ व्यापार समझौते किये हैं। कई अन्य देशों के

'ट्राबाण्ट'--ज.ज.ग. की सबसे छोटी मोटर। इसका सारा शरीर प्लास्टिक का बना है

किसी बाधा के सुपुर्द करने में, और दोनों देशों के व्यापार को बढ़ाने में सहायता करती हैं। इसके लिए ये दूतावास एवं संस्थाएं अन्य देशों की सरकारों के साथ अथवा गैर-सरकारी तथा निजी फर्मों और व्यापारियों के साथ काम करती हैं।

ज.ज.ग. में २८ ऐसे विदेश-व्यापार संगठन एवं संस्थाएँ हैं जो किसी विशिष्ट वस्तु के आयात अथवा निर्यात के समझौते पर दस्तखत कर सकती हैं। इसके अलावा कुछ विशेष और बड़े कारखानों को भी इसी तरह के अधिकार दिये गये हैं। ये निर्यात संगठन पूरी तरह और कानूनी तौर पर ज़िम्मेदार है।

ज.ज.ग. के तकनीशियन तथा अन्य विशेषज्ञ, किसी देश के साथ करार होने के बाद, उसमें उल्लिखित शर्तों को पूरा करने में हर प्रकार की तकनीकी तथा अन्य सहायता एवं परामर्श देने को हमेशा तैयार रहते हैं।...

इस समय तक ज.ज.ग. का सबसे अहम व्यापार-साझीदार सोवियत-संघ रहा है, जिसने सन् १९६३ में ज.ज.ग. से लगभग ६,००० मिलियन मार्क की कीमत की चीज़ें आयात कीं। इसी तरह, ज.ज.ग. भी सोवियत वस्तुओं का सबसे बड़ा आयातक रहा। अन्य कई उत्पादनों के अलावा, ज.ज.ग. सोवियत संघ से तेल, कच्चे धातु, इस्पात एवं बेलन मिल उत्पादन, यन्त्र, घरेलू वस्तुएँ और खाद्यान्न भी आयात करता है। सोवियत संघ के बाद ज.ज.ग. के व्यापार में दूसरा अहम साझीदार चेकोस्लोवाकिया है।

नवोदित राज्यों के साथ व्यापारिक संबन्ध

पिछले कुछ वर्षों में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने, अफ्रो-एशियाई एवं लातीनी अमरीका के नवोदित देशों के साथ अपने व्यापारिक तथा अन्य संबन्ध तेज़ी के साथ वढ़ाये और गहरे बना दिये हैं। सन् १९५५ में उक्त देशों में से केवल सात देशों, अर्थात् बर्मा, भारत, लेबनान, सूदान, सीरिया, संयुक्त अरब गणराज्य, और इण्डोनेशया के साथ ही ये संबन्ध क़ायम हो सके थे। लेकिन सन् १९६४ के अन्त तक अफ्रो एशिाई एवं लतीनी अमरीका के २० देशों के साथ ये संबन्ध स्थापित हो गये।

ज. ज. ग. और उक्त अफ्रो एशियाई तथा लातीनी अमरीका के नवोदित राज्यों के बीच "निर्यात आयात सूचकांक" के अनुसार (१९५०–१००), व्यापार में इस प्रकार की वृद्धि हुई: सन् १९५७ में १४२, १९५९ में २२२, १९६३ में २४९ और सन् १९६४ में २६०। दूसरे शब्दों में, इन नवोदित राज्यों और ज. ज. ग. के बीच, पिछले आठ वर्षों में २ $\frac{1}{2}$ गुणा तेज़ी से व्यापार बढ़ा अन्य देशों के साथ व्यापार की तुलना में। इन देशों के साथ व्यापार को अधिक बढ़ाने की काफी संभावनायें मौजूद हैं। ज. ज. ग. के व्यापार मंत्री के अनुसार इन देशों के साथ १९६३ के

(शेष पृष्ठ २९ पर)

कारखाने में 'वार्टबुर्ग' नाम वाली मोटर कारें। ये कारें १५ देशों को निर्यात की जाती हैं

जर्मन जनवादी गणतंत्र में
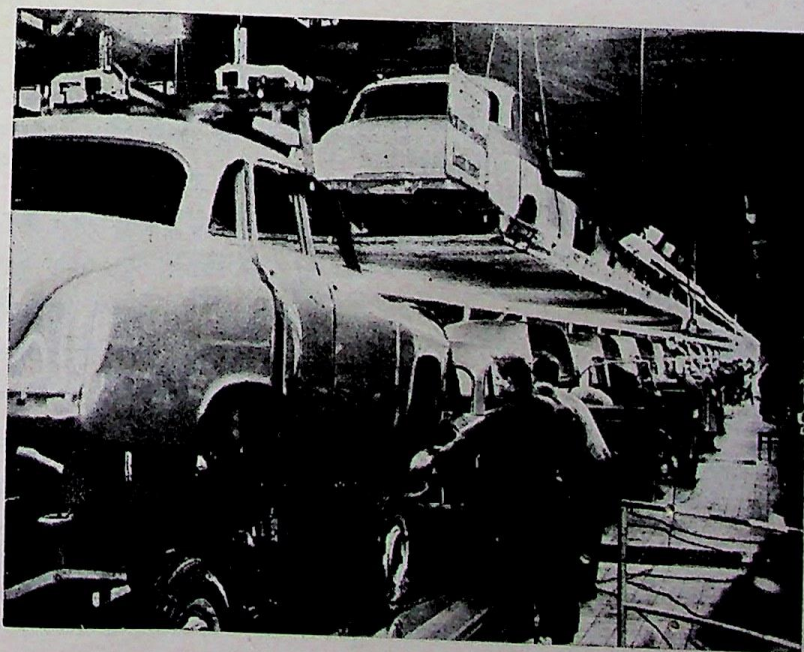
भूमि-सुधारों के बीस वर्ष

इस वर्ष गर्मियों में 'जर्मन जनवादी गणतन्त्र' में किसानों को अपनी फसल काटने में काफी कठिनाई हुई। हफ्तों की अनवरत वर्षा और बाढ़ों के कारण फसल की कटाई करीब-करीब असंभव हो गयी थी। फिर भी किसानों को इन कठिनाइयों के बावजूद किसी संकट की गुहार लगाने की जरूरत नहीं पड़ी। इसका कारण था १९४५ से भूमि सुधारों के बाद से कृषि उत्पादन में बढ़ती।

ज.ज.ग. में १९४५ में भूमि का वितरण जर्मनी के इतिहास में, किसानों का सबसे अधिक क्रांतिकारी आन्दोलन था। ५०० से अधिक वर्षों तक जर्मन किसान सामन्तों और बड़े भूमिपतियों के खिलाफ संघर्ष करते रहे थे। द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू होने के पहले सामन्तों और बड़े भूमिपतियों की आबादी कुल ग्रामीण आबादी का १ प्रतिशत थी लेकिन कृषि योग्य भूमि का एक तिहाई भाग उन्हीं के अधिकार में था। छोटी और मध्यम जोतों के मालिकों के अधिकार में, जिनकी आबादी ७२ प्रतिशत थी, कुल भूमि का पांचवां हिस्सा ही था।

दूसरे महायुद्ध में मुख्यतः इन्हीं सामन्तों ज़मींदारों और बड़े भूमिपतियों ने हिटलर को जनरलों की फौज दी। उन्होंने नृशंस युद्धापराध किये। युद्ध और फासिस्ट अर्थ व्यवस्था ने किसानों को तबाह कर दिया था। युद्ध में ग्रामीण आबादी के १० लाख लोग मारे गये थे। युद्ध समाप्त होने पर किसानों ने मांग की कि युद्धापराधियों की सारी ज़मीनें बिना किसी मुआविज़े के कब्ज़े में कर ली जाय। किसान और खेतिहर मज़दूर चाहते थे कि वे उस भूमि के जिसे वे जोतते थे, मालिक बनें, और साथ ही बड़े भूमिपतियों की सत्ता समाप्त कर दी जाय, ताकि गांवों में सच्ची जनतांत्रिक व्यवस्था लागू हो सके।

१९४५ के पतझड़ में, अकाल की काली छाया मंडरा रही थी, इसलिए ज़मीन का बंटवारा शीघ्र करना था। खाद्यान्न की पूर्त्ति के बारे में निश्चित होने के लिए बुआई कर ली जाती थी, क्योंकि मध्य यूरोप में कुछ फसलें पतझड़ में ही बो दी जाती हैं, और फार्मों का पुनर्निर्माण किया जाता था।

भूमि सुधार आयोग

भूमि सुधार खुद किसानों ने ही शुरू किया और आगे बढ़ाया। उन्होंने ज़मींदारों और नाज़ी युद्धापराधियों की ३२ लाख ९० हज़ार हेक्टर भूमि पर कब्ज़ा कर लिया और पांच लाख ग्रामीण मजदूरों, भूमिहीन किसानों और पुनर्वासियों में २१ लाख ८० हजार हेक्टर भूमि बांट दी गयी। १० लाख हेक्टर भूमि राजकीय फार्मों के अन्तर्गत आ गयी। हर गांव ने अपना अलग भूमि सुधार आयोग नियुक्त किया। कुल १० हज़ार ऐसे आयोग स्थापित हुए जो गावों के नये जनतांत्रिक स्वशासन का आधार बना। उन्होंने भूमि वितरण के फैसले किये और उन प्रतिक्रियावादी तत्वों के खिलाफ जमकर लड़ाई लड़ी जो इन सुधारों को नष्ट करने के लिए मशीनों की तोड़फोड़ और मवेशियों की हत्या जैसे जघन्य कार्य कर रहे थे।

किसानों ने पारस्परिक सहायता समितियां भी स्थापित कर लीं जो बड़े फार्मों और उनकी सम्पत्ति की जिनका वितरण नहीं हुआ था, देखभाल भी करती थी।

जंकर्स की डेरियों, कृषि यंत्रों और कारखानों से सभी लोग लाभान्वित हुए। उसके साथ ही कृषकों को घर और मवेशी रखने के लिए बाड़े बनाने के लिए ऋण स्वीकृत किये गये। उन्होंने १९४६ और ५३ के बीच करीब २ लाख १० हज़ार फार्म और २ लाख ३८ हजार घर, बाड़े और अस्तबल बनाये। शहरों के मजदूरों ने गांव के किसानों की मदद की। मजदूर और किसान सभी देश के पुनर्निर्माण के लिए काम कर रहे थे और वे नगरों और गांवों का जनतंत्रीकरण किया जाना चाहते थे।

१९४८ में मशीनी सहायता केन्द्र खोले

गये। वहाँ से किसानों को ऐसी मशीनें ऋण पर दी जाती थीं जो वे नहीं खरीद सकते थे, या बड़ी मुश्किल से खरीद पाते थे। आगे चलकर इन्हीं केंद्रों को मशीन और ट्रैक्टर स्टेशन (एम. सी. एस.) कहा जाने लगा। १९५८ से १९६० के बीच राज्य, इन पर १ अरब ४० करोड़ मार्क व्यय कर चुका है।

सहकारी आन्दोलन विकसित हुआ

छठे दशक (सन ५०-६०) के प्रारम्भ में जब व्यक्तिगत खेती की स्थिति सुदृढ़ हो गयी तो एक नया आन्दोलन शुरू हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़े फार्मों के पक्ष में जो वातावरण बना उसका कारण यह था कि छोटे और व्यक्तिगत फार्मों की संभावनाएँ सीमित होती हैं। इसका प्रभाव जर्मन जनवादी गणतन्त्र में भी अनुभव किया गया। व्यक्तिगत फार्मों के पास न तो बड़े खेत थे और न ही बड़ी और आधुनिक मशीनों के लिए धन। और न ही उनके पास उन मशीनों को चलाने के लिए विशेषज्ञ थे। इसलिए किसानों ने खुद-ब-खुद संयुक्त रूप से अपने खेतों को जोतना शुरू कर दिया। बाद में वे अपनी यूनियनों को कृषि उत्पादन-सहकारी संघ कहने लगे। उसका सदस्य होना ऐच्छिक था। बहुत से किसान सहकारी संघ का सदस्य होना नहीं चाहते थे। उन्हें अपनी ज़मीन जानेका भय था। वे सोचते थे कि सहकारी संघ का सदस्य होने से वे अपनी ज़मीन के मालिक नहीं रह जायेंगे। (जिन किसानों ने सहकारी संघ छोड़ दिया उन्हें उनकी ज़मीन वापस दे दी गयीं)। १९५२ में कृषि उत्पादन सहकारी संघ (एल. पी.जी) के पास जर्मन जनवादी गणतन्त्र की कुल

ज.ज.ग. के छोटे से छोटे गांव में भी इस प्रकार की आधुनिक दुकानें हैं

कृषि योग्य भूमि की केवल ३.६ प्रतिशत थी। लेकिन १९५९ में यह बढ़कर ४३.६ प्रतिशत हो गयी और अगले वर्ष सारी ज़मीनों का सहकारी संघों में पूर्ण विलय हो गया। १९६९ में कुल १६ हजार कृषि उत्पादन सहकारी संघों के पास खेती योग्य सारी भूमि का ८५ प्रतिशत--५५ लाख हेक्टर था। बाकी भूमि राजकीय फार्मों, बागवानी के सहकारी संघों या ऐसे किसानों के पास रही जिन्होंने किसी सहकारी संघ की सदस्यता नहीं ग्रहण की--उदाहरणार्थ सुदूर पहाड़ी इलाकों के किसान।

प्रारम्भ की अनेक, कठिनाइयों, मशीनों और पशु-पालन के लिए नयी इमारतों की कमी आदि के कारण, सरकार ने इन सहकारों को ऋण स्वीकृत किये। मशीन और ट्रैक्टर केंद्रों की मरम्मतविशेष तकनीकी कार्यों के केंद्रों में बदल दिया गया। उन केंद्रों में जो कृषि यंत्र थे, वे कृषि सहकारी संघों को आम तौर से निःशुल्क ही दे दिये गये।

सहकारी आन्दोलन के लाभ

सहकारिता का लाभ विशाल जोतों पर आधुनिक मशीनों के उपयोग और काम के विकसित संगठन द्वारा, जिसके अन्तर्गत अलग-अलग कामों जैसे पशुपालन, खेती के सामान्य काम पर अलग-अलग फसलों के बारे में विशेष दक्षता प्राप्त ब्रिगेड बन गये हैं, उपज की भारी वृद्धि है।

हर कृषि उत्पादन सहकारी संघ का अपना एक सामाजिक कोष भी होता है। उसे यह कोष कानूनन खोलना पड़ता है ताकि बीमार सदस्यों की मदद की जा सके।

कृषि सहकारी संघों के विकास के दौरान कई तरह के सहकारी संघ स्थापित हुए। उनमें से एक तो वे थे जिनमें सिर्फ खेत ही संयुक्त रूप से जोते जाते हैं। दूसरे वे थे जिनमें भूमि और मशीनें, या भूमि मशीनें और मवेशी सभी उस सहकारी संघ की संयुक्त सम्पत्ति होते हैं। लेकिन हर हालत में सदस्य अपने पास दशमलव ५ हेक्टर ज़मीन और बागीचे का प्लाट अपने निजी उपयोग के लिए रखते हैं।
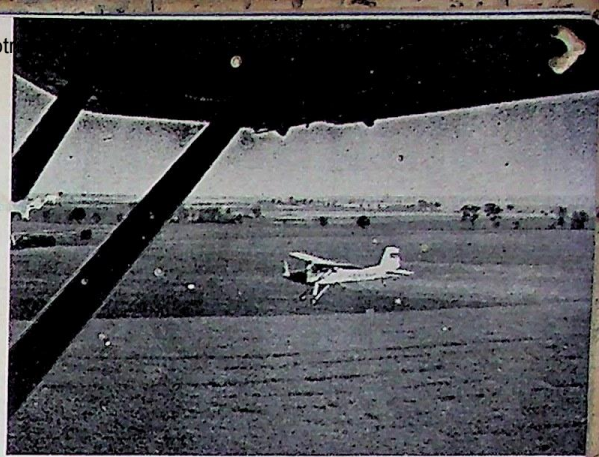
कृषि में वायुयान भी सहायता करते हैं

किसानों के जीवन-स्तर में वृद्धि

हर कृषि सहकारी संघ अपने सदस्यों में से एक कार्यकारिनी का चुनाव करता है। और ऐसे नियम-कायदे बनाता है जो हर सदस्य के अधिकार में और कर्तव्य निर्धारित करते हैं। इस संघों की आय का ८० प्रतिशत, रुपये और वस्तुओं के रूप में काम के परिमाण और अपनी ज़मीन के हिस्से के आधार पर वितरित कर दिया जाता है। अब लाभ वितरण के मामले में काम के गुण--अच्छाई या बुराई--को भी शामिल करने की कोशिश की जा रही है।

हर सहकारी संघ औसतन अपने उत्पादन का ५० प्रतिशत से कुछ अधिक राज्य को एक निश्चित मूल्य पर जो लागत से कुछ अधिक होती है, बेचता है। यदि राज्य और सामान खरीदता है तो उसे वह सामान ५० से लेकर १०० प्रतिशत तक अधिक मूल्य पर खरीदना पड़ता है। सहकारी संघ अपना उत्पादन ऊँचे निर्धारित मूल्यों पर स्थानीय बाजारों में भी बेच सकते हैं।

इन सहकारी संघों के कारण उत्पादन के साथ-साथ किसानों के जीवन स्तर में भी काफी वृद्धि हुई है। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के लिए इस बात का विशेष महत्व है, क्योंकि कृषि उत्पादन में वृद्धि से देश की खाद्यान्नों के मामले में निर्यात पर निर्भरता कम हुई है। उदाहरण के लिए ये आंकड़े देखिए--१९३८ में जहां १२½ लाख टन उर्वरकों का प्रयोग होता था वहां १९६४ में २३ लाख टन उर्वरकों का प्रयोग होने लगा। अनाज की उपज १.९७ मीट्रिक टन प्रति हेक्टर

(शेष पृष्ठ ३० पर)

भारत और ज. ज. ग. के बीच आर्थिक सहयोग की सम्भावनाएं

आर. पी. सिनहा, एम. पी.

संसदीय कांग्रेस पार्टी की कार्यकारिणी एवं कॉफी बोर्ड के सदस्य

संसद सदस्यों के एक दल के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र की दस दिनों की यात्रा के बाद, मैं कुछ सप्ताह पहले वापिस आया हूं। पाकिस्तान के साथ लड़ाई के बाद की परिस्थिति को देखते हुए पूर्वी जर्मनी और पूर्वी योरप के अन्य देशों की इस यात्रा को मैं खास तौर से उपयोगी समझता हूं।

ज.ज.ग. ने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से अपने अर्थतंत्र को बहुत अधिक उन्नत किया है। इस बात को मैं वहाँ जाकर स्वयं अपनी आंखों से देख आया हूं। इस युद्ध के पहले पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी का अर्थतंत्र एक साथ मिला हुआ और एक-दूसरे का पूरक था। जर्मनी के अस्वभाविक और असंगत विभाजन के फलस्वरूप जर्मनी के पूर्वी भाग की अर्थ-व्यवस्था बहुत ही असुविधाजनक स्थिति में पहुंच गयी। पूर्वी जर्मनी पहले जर्मनी का खेतिहार भाग समझा जाता था। १९६३ में यहां के कुल राष्ट्रीय उत्पादन का ८६.९ प्रतिशत भाग उद्योग-धंधों से और ९.६ प्रतिशत भाग कृषि और वन उद्योग से प्राप्त होने लगा। इससे यह साफ ज़ाहिर हो जाता है कि ज.ज.ग. एक औद्योगिक राज्य की हैसियत से कितना अधिक विकसित हो गया है। आज औद्योगिक शक्ति की दृष्टि से योरोपयीय देशों में उसका पांचवां स्थान है और दुनिया के औद्योगिक दृष्टि से सबसे अधिक विकसित दस देशों में उसकी गिनती होती है।

ज.ज.ग. के अर्थतंत्र में समाजवादी क्षेत्र सबसे अधिक शक्तिशाली क्षेत्र है। वहां के अर्थतंत्र का ८५ प्रतिशत समाजवादी क्षेत्र में, ७ प्रतिशत अर्ध-सरकारी क्षेत्र में और ८ प्रतिशत निजी क्षेत्र में है। रसायन उद्योग, मशीन निर्माण उद्योग और सूक्ष्म मेकानिक आप्टीकल्स उद्योग ज.ज.ग. की मुख्य औद्योगिक शाखाएं हैं। ज.ज.ग. में लगभग सभी महत्वपूर्ण वस्तुएँ उत्पादित होने लगी हैं। इन सभी वस्तुओं का उत्पादन और श्रम-उत्पादन दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। फलस्वरूप ज.ज.ग. इन वस्तुओं के मामले में पूरी तरह आत्म-निर्भर बन गया है। ज.ज.ग. को कभी बेरोज़गारी का सामना नहीं करना पड़ा है। वहां काम करनेवालों की बहुत कमी है और इस कमी को दूर करने के लिए वह यंत्रीकरण, प्रविधि में उन्नति और स्वचालन पर बहुत अधिक ज़ोर देता है।

जर्मनी के, दो राज्यों में विभाजित हो जाने के फलस्वरूप, पूर्वी जर्मनी के सामने कच्चे मालों की आयात की फौरी समस्या उपस्थित हुई। इसके लिए उसे आधुनिक और नफीस मशीनों तथा अन्य उपकरणों की शक्ल में अपने यहां के तैयार मालों का निर्यात करना पड़ा। अतएव स्वाभाविक रूप से उसका व्यापार बढ़ गया और वह १९५० के ३६८ करोड़ मार्क से बढ़कर १९६४ में २३२० करोड़ ३० लाख मार्क तक पहुंच गया। उसका ७७ प्रतिशत व्यापार समाजवादी देशों के साथ होता है। सोवियत संघ समेत पूर्वी योरप के देशों के साथ उसका सबसे अधिक व्यापार होता है। उसके बाद ज.ज.ग. का व्यापार सबसे अधिक भारत के साथ ही होता है; चीन के साथ जितना व्यापार होता है उससे भी अधिक।

मेरा पक्का विश्वास है कि भारत और ज.ज.ग. के बीच आर्थिक सहयोग की बहुत अधिक संभावनाएँ हैं और उन सबका उपयोग अभी त क नहीं हो पाया है। ज.ज.ग. के वाणिज्य मंत्रालय के प्रतिनिधियों के साथ अपनी बातचीत के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि वहाँ के अधिकारी भारत के साथ व्यापार की मात्रा और विविधता को बढ़ाना चाहते हैं। ऐसा मालूम होता है कि बर्लिन में भारतीय व्यापार कार्यालय का न होना इस समय व्यापार बढ़ाने के मार्ग की एक मुख्य बाधा है। यदि ऐसा कार्यालय वहां खुल जाय, तो न सिर्फ ज.ज.ग. में परम्परागत भारतीय वस्तुओं के निर्यात की अच्छी तरह देखभाल हो सकती है, बल्कि हमारे तैयार और अर्ध-तैयार माल के लिये नया बाज़ार तलाशने का हमारा उद्देश्य भी आगे बढ़ सकता है। घाना, संयुक्त अरब गणराज्य, फिनलैण्ड, सीरिया और अन्य देशों के व्यापार कार्यालय या कोंसलेट जबसे वहां खोले गये हैं, तब से इन देशों और ज.ज.ग. के बीच माल का आदान-प्रदान काफी बढ़ गया है।

ज.ज.ग. के वाणिज्य मंत्रालय और अन्य आर्थिक तथा व्यापार संगठनों के प्रतिनिधियों के सामने जब मैंने भारत के आर्थिक विकास की रूपरेखा का स्पष्टीकरण किया, खास तौर से सुनियोजित विकास और अपनी चौथी पंच-

वर्षीय योजना की ग्रावश्यकताग्रों के संबंध में, तो उन्होंने इसमें बहुत ज्यादा दिलचस्पी दिखाई। भारत ग्रौर ज.ज.ग. के ग्रर्थतंत्र बहुत हद तक एक दूसरे के पूरक बन सकते हैं। इसलिए दोनों देशों का सुनियोजित ग्रौर दीर्घ-कालीन सहयोग निश्चय ही दोनों देशों के व्यापार संबंधों के लिए परस्पर लाभदायक ग्रौर हितकर होगा। पिछले पांच वर्षों में दोनों देशों के बीच का बढ़ा व्यापार विदेशी व्यापार की पारस्परिक लाभदायकता के हमारे सिद्धांत के लिए एक ज्वलन्त उदाहरण सिद्ध हुग्रा है।

तैयार माल को विदेशों में भेजने की हमारी ग्राकांक्षा की ज.ज.ग. में सराहना की गयी ग्रौर इसमें सहयोग का ग्राश्वासन मिला। इस बात से मुझे बड़ी खुशी हुई। हम ग्रपने यहां से ग्रपनी परामपरागत वस्तुग्रों का एक सीमा तक ही निर्यात कर सकते हैं। इस बात को ध्यान में रखकर हमें यह बताया गया कि ज.ज.ग. टिनों में बन्द फल, फल से बनी चीजें, जूते, काठ की बनी चीजें, रेशमी कपड़े, प्लाइउड, इंजीनियरिंग उद्योग के सामान ग्रौर उपभोक्ता माल तथा इसी तरह के ग्रन्य सामान भारत से खरीदना पसन्द करेगा। दूसरी ग्रोर भारत ज्यादा मात्रा में बुनियादी सामान——जैसे रसायन, उर्वरक, कल-कारखाने ग्रौर टेकनिकल जानकारी——वहां से प्राप्त कर सकता है। भारत को इस समय विदेशी मुद्रा की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में दीर्घकालीन सहयोग ग्रौर ग्रावश्यक सुविधाग्रों के ग्राधार पर ज.ज.ग. से प्राविधिक जानकारी का पूरा लाभ उठाना ग्रौर वहां से नफीस मशीनों का ग्रायात करना, भारत के लिए बहुत लाभदायक होगा।

श्रम के ग्रन्तर्राष्ट्रीय विभाजन के सिद्धांत के ग्रनुसार ग्रौर ज.ज.ग. में श्रम-शक्ति की कमी के कारण, ज.ग.ज. के ग्रधिकारी, भारत से ग्रौद्योगिक उत्पादन की वस्तुएँ, विशेषकर उपभोक्ता सामग्री, ग्रायात करने में दिलचस्पी रखते हैं। दूसरी ग्रोर ज.ज.ग. कुछ विशेष उद्योगों की स्थापना में भारत को प्राविधिक सहयोग दे सकता है, जिसके उत्पादन का एक भाग ज.ज.ग. को निर्यात किया जा सकता है।

ज.ज.ग., सामानों के सेकेन्डरी प्रोसेसिंग पर, विशेष कर धातुविक सामानों के मामलों में, ग्रधिक जोर देता है।

ज.ज.ग., जिसका स्थान ग्रौद्योगिक उत्पादन के मामले में समाजवादी देशों में सोवियत संघ के बाद दूसरा है, प्राविधिक जानकारियों के मामले में, विशेषकर रासायनिक उर्वरक, पेट्रोल ग्रौर रसायन उद्योग, चश्मे के कारखाने ग्रादि के संबंध में, भारत के समक्ष विस्तृत सम्भावनाग्रों के द्वार खोलता है। फिर ज.ज.ग. समाजवादी शिविर के बाहर के देशों से ग्रपने व्यापारिक संबंध बढ़ाने के लिए विशेष उत्सुक है। मेरा ख्याल है कि भारत के साथ ग्रपने व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ाने ग्रौर उसे बहुपक्षीय करने की ज.ज.ग. की इच्छा को देखते हुए हमें उन सुविधाग्रों का लाभ उठाना चाहिए जो ज.ज.ग. से हमें मिल सकती हैं। ग्रौर भारत को भी उसके साथ ग्रपने व्यापारिक संबंध ग्रौर सहयोग बढ़ाना चाहिए।

मैं पूर्वी ग्रौर पश्चिमी जर्मनी के बीच होने वाले व्यापार के बारे में भी कुछ कहना चाहूंगा। मेरा ख्याल है कि भारत में ग्रधिकांश लोग उससे ग्रवगत नहीं हैं। १९६३ में समाजवादी शिविर के बाहर के देशों के साथ ज.ज.ग. का कुल व्यापार ५ ग्ररब ७१ करोड़ ४० लाख रूबल का हुग्रा, ग्रौर ग्रकेले जर्मनी के साथ ३ ग्ररब ९० करोड़ ८० लाख रूबल का व्यापार हुग्रा। ज.ज.ग. ग्रौर पश्चिमी जर्मनी में कुछ उद्योगों, विशेषकर रासायनिक उद्योगों, के विकास के लिए प्राविधिक सहयोग का भी समझौता है। पश्चिम जर्मनी द्वारा ज.ज.ग. के साथ राजनीतिक ग्रछूत जैसा व्यवहार किये जाने के बावजूद यह प्रवृत्ति ग्रधिकाधिक बढ़ती ग्रौर गहरी होती जा रही है।

ज.ज.ग. यात्रा का सबसे ग्रधिक प्रभाव मेरे ऊपर यह पड़ा है कि ग्रापसी लाभ के लिए दोनों देशों के व्यापारिक संबंध बढ़ाने के लिए ज.ज.ग. ग्रौर भारत दोनों ही देशों के ग्रर्थशास्त्रियों, योजना ग्रायोगों ग्रौर सरकारों को उन संभावनाग्रों पर ग्रधिक ध्यान देना चाहिए जिनका ग्रब तक लाभ नहीं उठाया गया है।
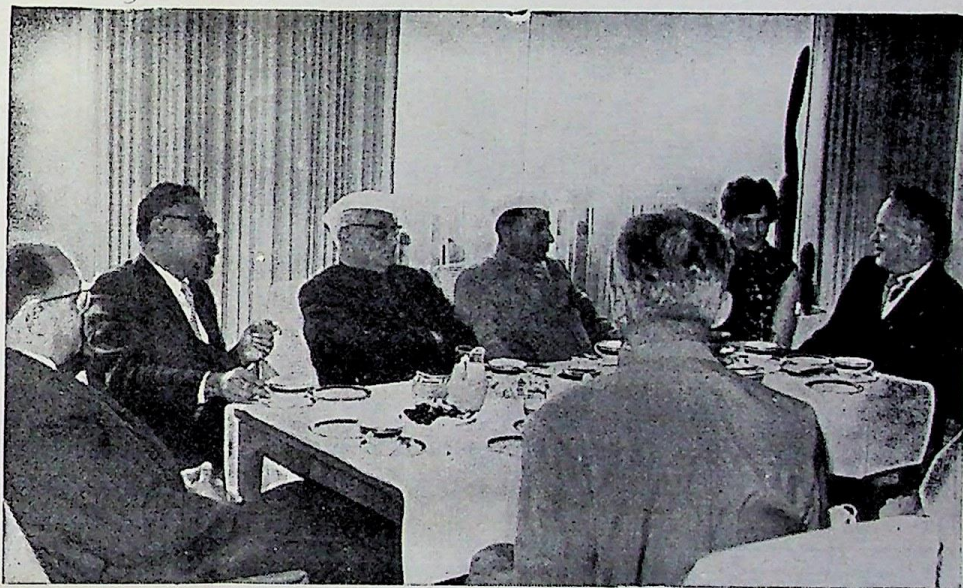
ज.ज.ग. में, ग्रन्य भारतीय संसद सदस्यों के साथ श्री सिनहा, जर्मन ग्रधिकारियों के साथ बातचीत कर रहे हैं

१

३

२

बर्लिन में
दो घंटों की सैर

ज. ज.ग. की राजधानी बर्लिन में मेरा पर्यटन, एक सूचना वर्द्धक यात्रा सिद्ध हुई ।" ये शब्द भारतीय सहकारी पत्रिकाओं के प्रधान संपादक **श्री एन. आर. गुप्ता** के हैं । हमारे अतिथि के इस कथन का आधार क्या था ? श्री गुप्ता, बर्लिन नगर के आस पास एक सीमित अवलोकन विहार पर गये थे । आइये, हम उनके यात्रा मार्ग पर आपको भी लिए चलते हैं ।

यात्रा का आरम्भ "वैरोलीना" होटल से होता है । इस होटल में छः सौ यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था है । दो ही मिनट के समय में "बर्लिन पर्यटन" गाड़ी नगर के मुख्य यातायात केंद्र अलेक्ज़ाण्डर चौक पर पहुंच जाती है । **चित्र (१)** देखिए । इसमें बर्लिन की सार्वजनिक यातायात के तीन मुख्य साधन दिखाए गए हैं । पुल पर राजधानी की रेलवे लाइन हैं और सड़कों पर बसें तथा ट्रामें चलती हैं । पैदल चलने वाले, चौक पार करने के लिये सड़कों पर प्रतीक्षा नहीं करना चाहते । इसलिए उनके लिए एक तलमार्ग की व्यवस्था है । अलेक्ज़ाण्डर चौक के ठीक नीचे दो मंज़िला एक तलमार्ग पारपथ है । यातायात के आंकड़ों से पता चलता है कि अलेक्ज़ाण्डर चौक में स्थिति प्रशासन दफ्तरों और दुकानों में लगभग औसत १५,००० व्यक्ति प्रतिघंटा आते-जाते हैं ।

बर्लिन नगर हाल का बुर्ज तो आप चित्र के मध्य में देख ही रहे हैं। परन्तु बर्लिन नगर हाल की ओर आने से पहले गाड़ी बायीं ओर मुड़ जाती है। और **भूरे मठ** के खंडहर के सामने आकर रुकती है। १५वीं शताब्दी में फ्रांसिस्की भिक्षुओं ने बर्लिन के इस पुरातन शिक्षालय का निर्माण किया था । दूसरे महायुद्ध में यह धार्मिक केन्द्र, बम वर्षा का

४

शिकार हो गया, और आज यह चित्रकारों तथा फोटोग्राफरों के लिए एक विषय मात्र बन कर रह गया है।

अब हमारी बस **मार्क्स एंगेल्स चौक** से गुजर रही है। यह वह स्थान है जहाँ सार्वजनिक जलसे, जलूसों, समारोहों और प्रदर्शनों के अवसरों पर लाखों बर्लिनवासी एकत्रित होते हैं। यहीं के एक नए भवन में, ज.ज.ग. की राज्य परिषद स्थित है। उत्तर दिशा में आप बर्लिन के तेरह संग्रहालयों में से पांच को देख सकते हैं। **चित्र** (२) में, हाल ही में पुनः स्थापित, राष्ट्रीय वीथि दिखाई दे रही है। इसमें पुरातन काल से आधुनिक समय तक के विश्वप्रसिद्ध चित्रों, रेखाचित्रों तथा मूर्तियों का अपूर्व संग्रह है।

मार्क्स-एंगेल्स चौक से हम ऐतिहासिक क्षेत्र उनटर डेन लिण्डन में दाखिल होते हैं। प्राचीन "स्यूगहाउस" अर्थात् प्रशियाई राजाओं के शस्त्रागार और हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय के बीच में शिकेल द्वारा १८१८ ई० में निर्मित "न्यू वारवे" (नव प्रहरी) स्थित है। आज यह भवन सैन्यवाद तथा फासिस्तवाद के पीड़ितों का स्मारक बन चुका है। प्रत्येक बुधवार को ढाई बजे दिन, लोग यहां राष्ट्रीय जन सेना के प्रहरी परिवर्तन का महान दृश्य देखने के लिए जमा हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहां जर्मन राजकीय आपेरा उण्टर डेर्न लिण्डन है। इसका निर्माण प्रसिद्ध जर्मन वास्तुकार नोबेल्सडार्फ (१६९९–१७५३) ने किया था। दूसरे महायुद्ध में यह पूर्णतया नष्ट हो गया और तत्पश्चात

ज. ज. ग. की नीति

सन् १९६४–६५ के नव-वर्षारंभ पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, दो जर्मन राज्यों की जनता को संबोधित करते हुए, अपने रेडियो एवं टेलिविजन भाषण में कहा :

१. दोनों जर्मन राज्य हथियारों पर प्रतिबंध लगायें, इस तरह जो धन बच जायगा उसको लोगों के सामाजिक तथा शैक्षणिक कामों पर खर्च किया जाये।
२. दोनों जर्मन राज्य प्रत्येक प्रकार के अणु-शस्त्रीकरण का प्रत्येक करें।
३. दोनों जर्मन राज्यों के बीच और ज.ज.ग. तथा पश्चिम बर्लिन के विशिष्ट क्षेत्र के बीच, सामान्य संबंध स्थापित करने के लिये बातचीत शुरू करनी चाहिए।
४. दोनों जर्मन राज्यों के बीच व्यापार में हर प्रकार के भेद-भाव को समाप्त कर देना चाहिए, और उनको एक दूसरे से मिशनों के विनिमय से संबंधित एक क़रार करनी चाहिए।
५. समानता के आधार पर दोनों जर्मन राज्य संयुक्त-आयोग कायम करें। ये आयोग व्यापार, परिवहन, वित्तीय तथा अन्य क्षेत्रों में सहयोग से संबंधित संभावनाओं पर विचार करें।
६. पश्चिमी जर्मनी को, विदेशों में जाने वाले ज.ज.ग. के नागरिकों के प्रति बरते जाने वाले अपने सभी भेदभावों को समाप्त करना चाहिए।
७. पश्चिमी जर्मनी में वे सभी कानून रद्द किये जाने चाहिए जो ज.ज.ग. के नागरिकों को प. जर्मनी के अधिकारियों के गलत रवैये का शिकार बनाते हैं।

जर्मन शान्ति सिद्धान्त

१२ जून, १९६४ के दिन, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त द्वारा उद्घोषित

—जर्मनी की वर्तमान सीमाओं को मान्यता देना, यूरोप की सुरक्षा को बढ़ाता है।

—दोनों जर्मन राज्यों को समानता की दृष्टि से देखना और उनके आत्म-निर्णय के अधिकार के प्रति सम्मान, जर्मनी एवं यूरोप में शांति को मज़बूत बना देता है। इससे जर्मनी के पुनर्एकीकरण और इसके एक शांतिप्रिय राज्य बनने के लिये एक अनुकूल वातावरण तैयार होता है।

—दोनों जर्मन राज्यों के साथ यूरोप, एशिया, अफ्रीका एवं लातीनी-अमरीका के देशों के सामान्य संबंध यूरोप की सुरक्षा को बल पहुंचाता है, और जर्मन जनता के बीच सद्भावना तथा समझदारी पैदा करता है।
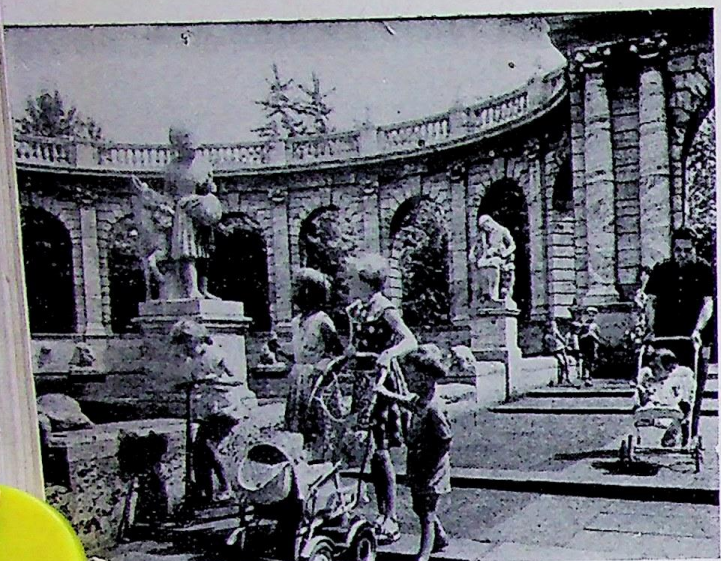
५ ६

१९५१ से १९५५ के बीच, इसका पुराने नक्शों के अनुसार पुनः निर्माण हुआ। यह कला केंद्र संसार के समस्त भागों से आने वाले फोटोग्राफरों के लिए एक लोकप्रिय आकर्षण है। (३) "ऐडा" "देवताओं का सांध्यलोक" और "बोरिस गोदूनोव" इस ऑपेरा के कला भंडार में से कुछ शीर्षक हैं जो इस कलाकोष के दो सौ वर्षीय परम्परा के मील पत्थर हैं।

"उण्टर डेन लिण्डन" एवेन्यू ब्राण्डेनबुर्ग द्वार पर समाप्त हो जाता है। यह द्वार बर्लिन का सीमा-चिन्ह है। इसका निर्माण सन १७८८–९१ में एथेंस के सिंह-द्वार के अभिकल्प अनुसार हुआ था। हमारे चित्र के पृष्ठाधार में तथा ज.ज.ग. की राज्य-सीमा से परे, पश्चिम बर्लिन विजय स्तम्भ देखा जा सकता है। **(चित्र ४)**

"ब्राण्डेनबुर्ग द्वार" से चलकर, व्यापार तथा रिहायशी क्षेत्रों से होते हुए हमारी गाड़ी फ्रेडरिक उपवन में पहुंचती है। उपवन के प्रवेश-द्वार पर बर्लिन का सुन्दरतम फव्वारा दर्शक का स्वागत करता है। इसे "परी कथा उत्स्रोत" कहते हैं। दस प्रसिद्ध परी कथाओं के पशुओं को समरस रूप में एकत्रित दिखाया गया है। **(चित्र ५)**

वृद्ध और तरुण––सभी लोग इस पार्क में विश्राम तथा विनोद करना चाहते हैं। निकट ही दो छोटी पहाड़ियां हैं जो युद्ध के मलबे से बनाई गई हैं। इन्हें भी सुन्दर पार्कों में परिवर्तित किया गया है। इन पहाड़ियों के शिखर से राजधानी का सुन्दर दृश्य बड़ा लुभावना प्रतीत होता है।

हम चलते-चलते बेरसेरिन-पथ पर पहुंचते हैं। यहाँ से हम कार्ल-मार्क्स एवन्यू में दाखिल होते हैं, जहाँ आधुनिक फ्लैट तथा सुसज्जित दुकानें हैं और सुन्दर चौड़ी सड़कें बर्लिन की इस मुख्य शाहराह की एक विशेषता हैं।

बैरोलीना-पथ में प्रवेश करते हुए हमें एक बार फिर अलैक्ज़ाण्डर चौक में खड़े बहुमंजिला "**शिक्षक भवन**" पर दृष्टि डालने का अवसर मिलता है, जहाँ से हम अपनी यात्रा के आरम्भ में गुज़रे थे। कार्ल-मार्क्स एवन्यू तथा बैरोलीना-पथ के चौराहों पर स्थित "आइस-बार" जलपान गृह में बैठकर नये तथा सुन्दर फ्लैटों की कतारों का मोहक दृश्य देखा जा सकता है। **चित्र (६)**

हमारी दो घंटे की यह यात्रा बहुत शीघ्र समाप्त हो गई––हमें ऐसा भास हुआ। इस यात्रा में हम नगर केन्द्र का केवल एक ही भाग देख सके। परन्तु भारत के अपने मेहमान, श्री गुप्ता के इस विचार से तो सहमत होना ही पड़ेगा कि यह यात्रा छोटी जरूर थी लेकिन साथ ही काफी रोचक और बड़ी ज्ञान-वर्द्धक भी थी। एक नगर में प्राचीन और अर्वाचीन का इतना सुन्दर मिलन शायद ही कहीं और देखने को मिल सके। संसार की बहुत कम राजधानियों में इतने सुन्दर तथा विस्तृत उपवन हैं जितने कि बर्लिन में। हां, अनेकानेक भवनों के वास्तुशिल्प संबंधी विचारों के प्रति लोगों की राय अलग-अलग हो सकती है। लेकिन इतना तो निश्चित है कि नया बर्लिन नए राजमार्ग पर चल पड़ा है। बर्लिन की हवा को, किसी समय प्रसिद्ध संगीतकार पाल लिंके ने "सदावहार" नाम दिया था। आज इस हवा में धूल और कोयले की राख की गहराई और भी कम हुई है क्योंकि औद्योगिक क्षेत्र, नगर के मध्य से उठाकर बाहर स्थापित कर दिया गया है।

अनुभवी सैलानी बर्लिन के पूरे दर्शन के लिए, पूरा दिन बिता देते हैं। इसके पश्चात यात्रा-गाड़ी ट्रेप्टो पार्क के स्मारक की ओर बढ़ा दी जाती है, या फिर फ्रीडरिखस्फेल्डे में स्थिति चिड़ियाघर देखा जाता है। यह चिड़ियाघर समस्त योरोप में अपनी प्रकार का सबसे बड़ा चिड़ियाघर है। सैलानी का सबसे मनोरंजक अनुभव है राजधानी के पूर्व में बर्लिन की अनेक नदियों और झीलों में "श्वेत बेड़े" के किसी आधुनिक जहाज़ में बैठकर पांच घंटे का जल विहार करना।
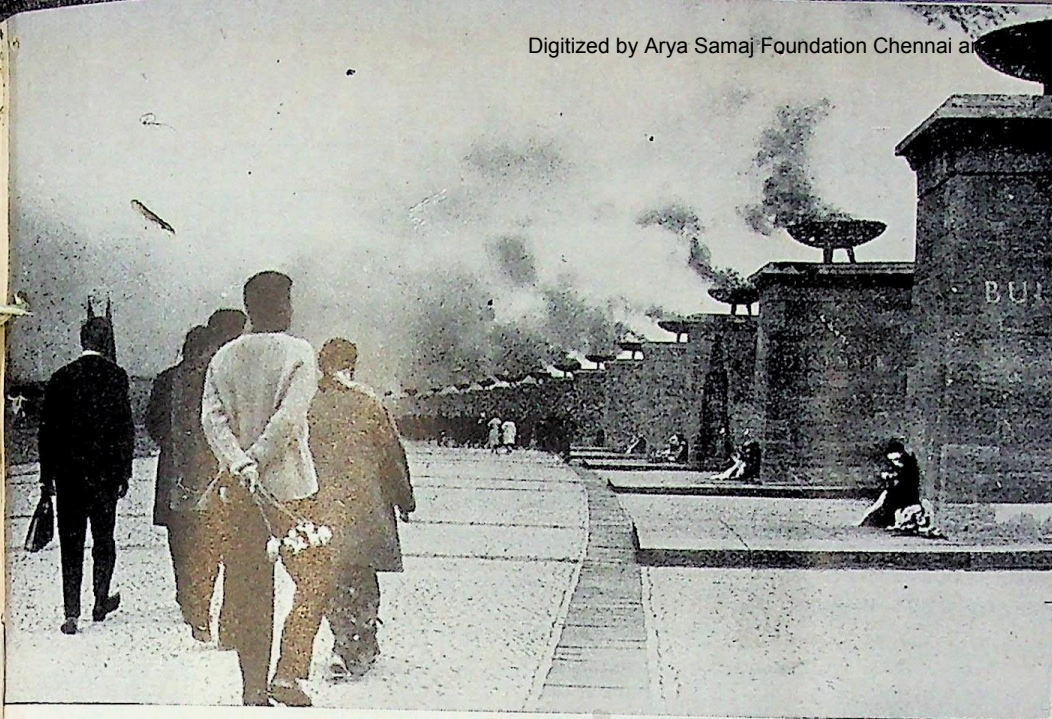
दाय चित्र में : भारतीय लेखक, बूखेनवाल्ड शहीद स्मारक में । बायें चित्र में : श्री सज्जाद ज़हीर (बायें से दूसरे), अमृतराय (बायें से चौथ), श्रीमती ज़हीर और डा. मुल्कराज आनन्द (कैमरे की ओर पीठ किये हुये)

वे अविस्मरणीय दिन...

सज्जाद ज़हीर

वर्तमान यात्रा (मई, १९६५), जर्मन जनवादी गणतन्त्र की मेरी तीसरी यात्रा थी। हमें दिल्ली से सीधे बर्लिन पहुंचना था विमान के द्वारा। इस उड़ान में हमें मास्को में विमान बदलना था। लेकिन मास्को बर्लिन उड़ान में हमारी सीटें सुरक्षित न हो सकीं। अपने यात्रा एजेंट का सुझाव अनसुना करके, हम चार भारतीय लेखक, यह सोचकर यहां से मास्को उड़ चले कि वहां बर्लिन के लिए हमें किसी हवाई जहाज में सीटें मिल ही जायेंगी। लेकिन मास्को के हवाई अड्डे पर पहुंचकर, 'इण्टरफ्लूग' हवाई-सेवा की सुन्दर रमणी ने बहुत ही विनम्र स्वर में हमसे कहा कि न केवल उस अपरान्ह के लिए ही बल्कि अगले तीन दिनों के लिये भी बर्लिन के लिए जगह मिलना असंभव है। इस प्रकार हम मास्को में फंस गये। ..और हमारी जेबों में केवल तीन-तीन पौण्ड थे। वह मई की १२ तारीख थी और हमको १४ मई तक बर्लिन पहुंचना था **अन्तर्राष्ट्रीय लेखक सम्मेलन** में भाग लेने के लिए।

घबरा कर हमने मास्को के 'सोवियत लेखक संघ' और वहां के अपने भारतीय मित्रों के टेलीफोन खटखटाये, ताकि वे इस दुखद स्थिति से हमारा उद्धार करें। ....और हमारा उद्धार किया भी। उन्होंने हमको यह सालाह दी कि हम मास्को में जर्मन जनवादी गणतन्त्र के दूतावास से सम्पर्क स्थापित करके सहायता और परामर्श लें। ....ज.ज.ग. के दूतावास का नौजवान सांस्कृतिक अताशे, ऊंघता हुआ सा लग रहा था। लेकिन वह एक दुर्लभ नमूना था—— एक ऐसा राजनयिक जो साथ ही मानव भी था। जर्मनों के साथ वैसे कठोरता, औपचारिकता और यथातथ्यता जोड़ी जाती है। लेकिन हमारे सामने बैठा हुआ नौजवान जर्मन विनम्र, अनौपचारिक और एकदम शांत था।

इससे मिलने के बाद दो ही मिनटों के अन्दर अन्दर हमारी कठिनाई और चिन्ताएँ एकदम काफूर हो गयीं। शांत भाव से इस जर्मन नवयुवक राजनयिक ने हमारी बात सुनी, हमें शीतल पेय दिया और आध घंटे के लिए वह कहीं चला गया। आकर उसने हमसे कहा कि हम रेलगाड़ी से बर्लिन जायें, वह अपरान्ह में हमारे होटल से हमको ले जायेंगे, गाड़ी में हमारी सोने की जगहें सुरक्षित की गई हैं और वह अपने साथ टिकटें लेकर आयेंगे। हमारे पासपोर्ट लेकर उसने ज.ज.ग. में दाखिल होने का वीसा तत्कार तैयार करवा कर हमें दिया।

इन कठिनाइयों को लांघ कर आखिरकार हम, १४ मई की शाम को, बर्लिन पहुंच ही गये। मास्को में ज.ज.ग. के दूतावास ने हमारे बर्लिन के मेजबानों को हमारे आमद की पूर्व सूचना दी थी। इसलिए जब हम बर्लिन के 'ओस्टबानोफ' रेलवे स्टेशन पर पहुंचे, तो वहां जर्मन लेखकों के एक दल ने रंगारंग फूलों के गुलदस्तों से हमारा शानदार स्वागत किया। औपचारिकताओं के समाप्त होने के थोड़ी ही देर बाद वहां के, आधुनिकतम सजावट और सुविधाओं से आरास्ता होटल 'होटल बेरोलीना' के हाल में, हमने अपने आपको पाया। मुझे आठ साल पहले की अपनी प्रथम बर्लिन यात्रा याद आई। उस समय मुझे वहां के एक पुराने होटल 'आस्टोरिया' में ठहराया गया था, जिसका दो तिहाई भाग युद्ध में नष्ट होकर मलबे का ढेर बन पड़ा हुआ था। इस होटल में रहकर मुझे कुछ बेमज़गी का एहसास हुआ था। ...लेकिन आज आठ साल बाद बर्लिन में चारों ओर मैंने सन १९५७ की तुलना में, एक नया ही वातावरण देखा——प्रगति, खुशहाली और विनोद का वातावरण।

आधुनिक और दिलकश वास्तु शिल्प में तामीर की गई अनेकानेक इमारतें, चारों और दूरदूर तक खड़ी दिखाई देती हैं। हमारे होटल के बगल में एक नया सिनेमा हाल खड़ा था। जिस की सुन्दर संरचना और डिज़ाइन दर्शक को बरबस अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पास ही बना हुआ 'शिक्षक भवन' वास्तु शिल्प की दृष्टि से एकदम नया और प्रभावित करने वाला था। इन नये भवनों के चेहरे (मुहार) यूरोप के सामान्य माकानों की तरह अब भूरे रंग के नहीं हैं, बल्कि नीले पीले और हरे रंग का बहुत प्रयोग अब यहां की भवन-सज्जा का एक आम और महत्वपूर्ण अंग बन गया है। दुकानों की सज्जा भी पहले से अधिक सुन्दर थी और इनमें रखी हुई वस्तुएँ गुण और परिणाम की दृष्टि से भी काफी थीं, पहले की निस्बत। हमारी एक युवा लड़की नवीन-तम शृंगार और रमणीय वेशभूषा को बहुत पसन्द करती है। उसने बार-बार हमसे यह अनुरोध किया था कि ज.ज.ग. से हम उसके लिए इतर, लिपिस्टक, पाउडर तथा प्रसाधन, अलंकरण का अन्य नारी उपयोगी सामान लायें। सच बात तो यह है कि मुझे इस बात में सन्देह था कि ज.ज.ग. में हमें इस प्रकार का अच्छा सामान मिलेगा। लेकिन जब हमारी एक जर्मन महिला मित्र ने कहा कि हमें यह सामान यहां मिलेगा तो हमें एक सुखद आश्चर्य हुआ। उसने हमें शृंगार की उक्त वस्तुएँ खरीदने में मदद की, और मेरी लड़की का कहना है कि ये सुखद वस्तुएँ सचमुच बहुत ही उच्चकोटि की हैं। शायद ये चीजें पेरिस की शृंगारिक वस्तुओं जैसी न हों, लेकिन ये उतनी महंगी भी नहीं थीं।

जीवन की अच्छी चीज़ों से--लज़ीज़ जियाफ़तों, छलकते जामों और खानपान के स्थानों में सुखद वातावरण से मुझे परहेज नहीं है। मैं इनको पसन्द करता हूं। बर्लिन में मुझे ये सभी चीजें मिलीं और इफ़रात से मिलीं। कार्ल मार्क्स आले पर स्थित शानदार 'बुडापेस्ट' रेस्त्रां में हमें बहुत अच्छा खाना मिला। इसी प्रकार 'स्प्री' नदी के तटवर्ती, सुन्दर रेस्तरां में और 'योहान्नेसहाफ' रेस्त्रां में काफी लज़ीज़ एवं स्वादिष्ट भोजन मिले। बहुत अच्छी शराबें भी खूब पीने को मिलीं--लेकिन ज.ज.ग. की नहीं, बल्कि हंगरी, बुलगेरिया और जोरजिया की। जर्मनी के इस भाग में--अर्थात् जर्मन जनवादी गणतन्त्र में, अच्छे किस्म के अंगूर नहीं मिलते। ज.ज.ग. के सभी बड़े-बड़े रेस्त्रां ये प्रसिद्ध शराबें पेश करते हैं। ...अब ज.ज.ग. में फिल्टर वाले बहुत अच्छे सिगरेट भी बनते हैं। मेरी पहली यात्रा के समय इनका वहां काफी अभाव था।

हमारे योग्य दुभाषिये, श्री साल्डेक ने आग्रह किया कि हम बर्लिन के उन नवनिर्मित कुछ स्थानों को भी देख लें जहाँ नृत्य और संगीत की बहार रहती है। इन स्थानों में हमने नौजवानों को एक बेफिक्री और विनोद के वातावरण में जीवन का आनन्द लेते हुए पाया--पांवों में नृत्य की ताल और हाथों में जाम लेकर। हम विश्वप्रसिद्ध 'बर्लिनेर एन्साम्ब्ल' भी देखने गये और हमने इसके द्वारा अभिनीत 'थ्री पेनी आपेरा' नाटक भी देखा। हमारे लिए यह एक अविस्मरनीय घटना थी। संभवतः नाट्यकला आजतक इतनी पूर्णतः को कभी भी प्राप्त न हो सकी है। सिर्फ 'बर्लिनेर एनसाम्ब्ल' द्वारा अभिनीत नाटकों को देखने के लिए ही, जर्मन जनवादी गणतन्त्र की यात्रा करना सार्थक है। "बर्लिनेर एनसाम्ब्ल" के जनक, विश्वविद्यालय जर्मन नाटककार बर्टोल्ट ब्रेख्त की विधवा पत्नी, श्रीमती हेलेन वाइगल, स्वयं एक महान अभिनेत्री हैं, और 'बर्लिनेर एनसाम्ब्ल' की निदेशिका हैं। उन्होंने कृपा करके अपने रंगमंच पर हमें एक पार्टी दी।

हममें से अनेकों ने जर्मन लेखक ब्रूनो आपिट्ज़ का शक्तिशाली उपन्यास "भेड़ियों के घेरे में मानव" (नेकेड अमंग वूल्व्ज़) पढ़ा है। मेरी पत्नी रज़िया सज्जाद ज़हीर ने उर्दू में इस उपन्यास को अनूदित किया है, और यह अनुवाद छप भी गया है। इसलिए, श्री आपिट्ज़ से मिलने की हमारी उत्सुकता एवं इच्छा एक स्वाभाविक बात थी। . . .ब्रूनो आपिट्ज़ ने बहुत स्नेह और मित्रता से हमारा स्वागत किया। लेखक ने हमें अपने उपन्यास के फिल्मीकरण के बारे में भी कई बातें कहीं। यह फिल्म देखने का हमें सुअवसर भी मिला, और हम यह बात दावे के साथ कह सकते हैं कि मौलिक उपन्यास में चित्रित सभी गुण, फिल्म में भी सफलता पूर्वक दर्शाये और चित्रित किये गये हैं। ये गुण हैं: गहरी मानवीयता तथा श्रेष्ठतम मानवीय मूल्यों के सुरक्षा के लिये कठिनतम परिस्थितियों में दृढ़ता से लड़ना, और इसका उच्च कला-पक्ष। फिल्म देखकर मैंने चाहा कि काश यह फिल्म भारत में व्यापक रूप से दिखाई जाती।

जर्मन जनवादी गणतन्त्र की यात्रा पर जाना सार्थक रहा हमारे लिए। इस यात्रा में हमने वहाँ का नवनिर्माण, जनता का बढ़ा हुआ जीवन स्तर, खुशहाली का वातावरण, मई मास में पूरे यौवन पर खिले हुए नानाप्रकार के पुष्प, कटी-छटी सुन्दर वाटिकायें और क्यारियां, सुसज्जित पार्क तथा चौक और लिण्डन वृक्षों की मनोहर हरियाली--ये सब कुछ देखा।

अन्तराष्ट्रीय लेखक सम्मेलन में (जिसमें भाग लेने के लिए हम चार भारतीय लेखक गये थे) दुनिया भर से आये हुए सुविख्यात लेखकों से हमारी मुलाकात हुई। इस लेखक सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन बर्लिन में, और दूसरा अधिवेशन गोइटे के स्वप्न-नगर और क्लासिकी जर्मन साहित्य तथा संस्कृति के क्रीड़ास्थल, वाइमर में हुआ। इस अन्तर्राष्ट्रीय लेखक सम्मेलन का आयोजन, हिटलरी फासिस्तवाद पर विजय की २०वीं जयन्ती और फासिस्त विरोधी अन्तर्राष्ट्रीय लेखक कांग्रेस की ३०वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में हुआ था। यह फासिस्त-विरोधी लेखक कांग्रेस हुई थी पेरिस में, सन १९३५ में, और इसके आयोजक थे, मैक्सिम गोर्की, रोमां रोलां, हेनरी बारबुस तथा अन्य लेखक. . .।

दुनिया के कई विश्वप्रसिद्ध लेखकों के अतिरिक्त, मेज़बान देश अर्थात् ज.ज.ग. के कई लेखकों से भी हमारी मुलाकात हुई। इनमें से कुछ हमारे पुराने परिचित तथा मित्र हैं। वृद्ध किन्तु तब भी उत्साह और उमंग से भरपूर, अन्ना सेगर्स, पूरे सम्मेलन की जान ही थीं। मुझे आज भी याद है कि बीस वर्ष पहले इस लेखिका के महान उपन्यास

(शेष पृष्ठ ३० पर)

जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने १३ अगस्त, १९६१ को पश्चिमी बर्लिन से लगी हुई अपनी सीमा पर जो पाबन्दियाँ लगा दी थीं उसे आज चार वर्ष हो गये हैं। लेकिन जनवादी जर्मनी के कई सुझावों, उसी की पहल पर एक ओर से दूसरी ओर जाने आने के दो अनुमति पत्रों के समझौतों पर हस्ताक्षर होने और सामान्य मैत्रीपूर्ण संबंधों के लिए उसके रुख के कारण, इसके लिए अनुकूल वातावरण नहीं बन पाया है। पश्चिमी जर्मनी की संसद (बुण्डस्टाग) का अधिवेशन अभी थोड़े ही दिनों पहले उसकी सीमा के बाहर पश्चिमी बर्लिन में हुआ था जिसने स्थिति को और विस्फोटक बना दिया। इन सारी बातों को देखते हुए यहां प्रस्तुत लेख काफी दिलचस्प है। इस के लेखक जार्ज रूगेरां फ्रांस की सीनेट के सोशलिस्ट सदस्य हैं, और यह लेख उन्होंने "जर्नल-ड सेन्टर" में धारावाहिक रूप से लिखा था, जिसे हमने संक्षिप्त कर दिया है। इस लेख में श्री रूगेरां ने गत वर्ष ज.ज.ग. में अपने अध्ययन-दौरे का विवरण दिया है।

......और वह दीवार

एक ओर इसे लोग 'शर्म की दीवार' कहते हैं और दूसरी ओर 'राज्य की सीमा' जो बृहत्तर बर्लिन को दो भागों में विभाजित कर देती है।

पुरानी कहावत है कि 'जो एक ही घंटी को सुनता है उसे एक ही आवाज़ सुनाई पड़ती है'। चूंकि मैंने सिर्फ पश्चिम की आवाज़ ही सुनी थी और उससे काफी परेशान हुआ था, इसलिए मैंने जर्मन जनवादी गणतन्त्र की आवाज़ भी सुननी चाही। इसलिए अपनी बातचीत में मैं बार-बार बर्लिन की दीवार का प्रश्न उठाता रहता था, जिससे मेरे सहयोगियों को शंका होती कि कहीं कोई स्कैण्डल न फैल जाय। एक रेस्तरां में मैं पश्चिमी जर्मनी के एक युवक और सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी के एक पदाधिकारी में "दीवार" को लेकर छिड़ी बहस के बीच भी पड़ गया। यह बहस आगन्तुक द्वारा ही छेड़ी गयी थी।

भारत के संसद सदस्य बर्लिन की राज्य सीमा को देख रहे हैं

किसी तरह का स्कैण्डल फैलने का कोई अवसर नहीं आया; हमेशा बातों को स्पष्ट करने की इच्छा देखी गयी। दो भिन्न मत देखने वाले जर्मनों में भी इस बात की बहुत अधिक उत्सुकता दिखलाई पड़ी और यद्यपि हैम्बर्ग (प. जर्मनी) के युवक ने कई लोगों के सामने बड़े मुंहफट ढंग से बात की थी, तथापि उस के खिलाफ कोई पुलिस कार्रवाई नहीं हुई।

फिर, आखिर वह 'दीवार' है ही क्यों? ज.ज.ग. का कहना है कि इसके तीन कारण हैं। और वे हैं: राजनीतिक कारण, सुरक्षा का कारण और आर्थिक कारण।

राजनीतिक कारण: जर्मन जनवादी गणतन्त्र एक राज्य है, इस तथ्य को पश्चिमी जर्मनी स्वीकार करे या न करे। प्रत्येक राज्य को यह अधिकार है कि वह अपनी सीमाओं को मज़बूत बना कर अपनी प्रभुसत्ता की रक्षा करे। वह अपनी सीमाओं को खुला रखे या बन्द करे कोई आपत्ति नहीं कर सकता, इस कार्य की अनुमति उसे स्वयं अपनी प्रभु-सत्ता सम्पन्नता ही देती है। बर्लिन में जो स्थिति थी वह मई १९४५ के युद्ध विराम पर आधारित थी। इसके अनुसार नगर के पश्चिमी क्षेत्र में २२ लाख की आबादी के साथ ज.ज.ग. के क्षेत्र से घिरे हुए थे। पश्चिमी बर्लिन की सीमा ४३ किलोमीटर तक पूर्वी बर्लिन से सटी हुई थी और पश्चिमी जर्मनी तथा ज.ज.ग. की सीमा १११ किलोमीटर लम्बी थी। द्वितीय

प. बर्लिन के साथ ज. ज. ग. की सीमा पर, संयुक्त अरब गणराज्य के उपराष्ट्रपति हसन इब्राहिम
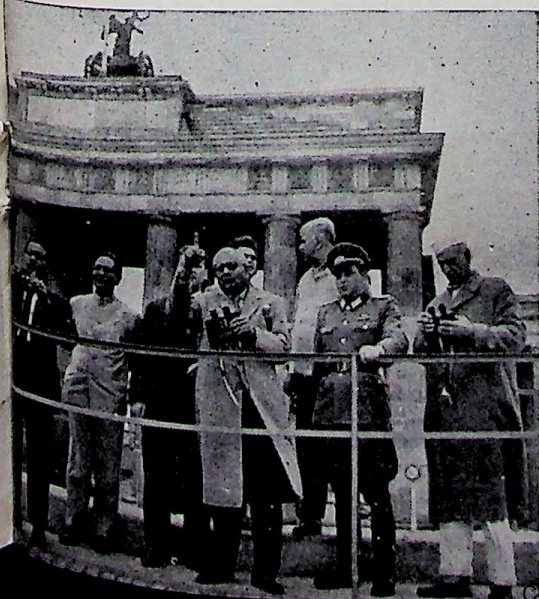
महायुद्ध में विजयी शक्तियों में मतभेद के फलस्वरूप पहले की स्थिति में परिवर्तन हो गया। वह यह कि संघीय जर्मनी (प. जर्मनी.) बर्लिन को अपना एक अंग मानने लगा, यद्यपि नगर के पश्चिमी भाग की विशेष स्थिति है और वहां का प्रशासन एक सिनेट चलाती है। सामान्यतः पश्चिमी जर्मनी के कानून पश्चिमी बर्लिन में तभी लागू हो सकते हैं जब वहां की सेनेट उसे वैध क़रार दे। जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने नगर के दूसरे भाग, पूर्वी बर्लिन को अपनी राजधानी बनाया। फिर भी बर्लिन के दोनों भागों में पिछले १२ वर्षों से स्वतन्त्र रूप से आवागमन होता था। इस स्थिति से लाभ उठाकर पश्चिमी शक्तियों ने पश्चिमी बर्लिन में ज.ज.ग. के विरुद्ध स्थाई रूप से शत्रुतापूर्ण वातावरण की जमीन तैयार की जिससे न सिर्फ ज.ज.ग. की सुरक्षा और आर्थिक पुनर्निर्माण को ही बल्कि सुनियोजित षडयंत्रों के कारण ज.ज.ग. के अस्तित्व तक को खतरा उत्पन्न हो गया।

सुरक्षा संबंधी कारण: शीत-युद्ध में उचित मनोवैज्ञानिक अवसर का काफी महत्व होता है और हर पक्ष यथासंभव उसका उपयोग करता है। लेकिन किसके फायदे में? यह एक दूसरा सवाल है ...। यदि अमेरिकी जनरल कोनन के इस कथन को कि "बर्लिन ज.ज.ग. के हृदय में धंसी भाले की नोक है" या एक उच्च पदस्थ पश्चिमी नेता का कथन कि 'बर्लिन पश्चिमी मित्र राष्ट्रों के लिए सबसे सस्ता अणुबम है', ध्यान में रखकर विचार किया जाय तो यह आसानी से समझा जा सकता है कि जनवादी जर्मनी के नेता गुप्तचर संगठनों की, जो पूर्वी बर्लिन में अपने जासूस और तोड़फोड़ करने वालों को भेजा करते थे, कितने चिंतित हो उठे होंगे। मुझे बताया गया कि इन कार्रवाइयों ने उस समय बहुत गंभीर रूप ले लिया जब पश्चिमी जर्मनी की सेना के एक अधिकारी ने ज.ज.ग. को खत्म कर देने के उद्देश्य से बनायी गयी एक आक्रमण योजना की प्रतियां प्रस्तुत कीं। इससे ज.ज.ग. के लिए खतरा स्पष्ट हो गया और उसने वारसा संधि के दूसरे सदस्य देशों के साथ बातचीत कर अपनी सीमा को सुदृढ़ करने का निश्चय किया।

आर्थिक कारण: मार्च, १९४९ में जब पश्चिमी जर्मनी ने अपना अलग मार्क (मुद्रा) प्रचलित किया तो पश्चिमी और पूर्वी जर्मनी के बीच १ पश्चिमी मार्क के लिए ३ से ५ पूर्वी मार्क तक की दर पर मुद्रा विनिमय का व्यापार तेज़ी से चला (अन्तर जर्मन व्यापार में १ पूर्वी मार्क के लिये १ पश्चिमी मार्क ही वैध रहा है)। विनिमय केन्द्र खुल गये अपनी मुद्रा के उचित मूल्य से जो भी चाहता था वह पूर्वी बर्लिन में आकर ३ से ५ गुनी सस्ती चीजें खरीद कर चला जाता था। करीब ७० हज़ार लोग रोज़ पूर्वी बर्लिन में आकर वहां से खाने-पीने की वस्तुएँ पश्चिमी बर्लिन ले जाते थे और इसके बदले पूर्वी बर्लिन को भारी क्षति होती। उदाहरण के लिए एक ही वर्ष में पूर्वी बर्लिन के ७२ करोड़ ९८ लाख मार्क के बदले केवल १५ करोड़ ८३ लाख पश्चिमी मार्क मिले। इसके कारण खुद पूर्वी जर्मनी की जनता के लिए खाद्यान्नों और वस्तुओं की कमी हो गयी।

पूर्वी जर्मनी की दूसरी भारी क्षति यह हुई कि पश्चिमी बर्लिन में ठेकेदारों की लालच पर पूर्वी बर्लिन के ५० हज़ार मज़दूर 'उत्पादन' तो करते थे पश्चिमी बर्लिन में, लेकिन 'खपत' करते थे पूर्वी बर्लिन में। प्रतिदिन करीब १५ हजार राजगीर पश्चिमी बर्लिन जाते थे और वहां के पुनर्मिाण को तेज करने में मदद देते थे और पूर्वी बर्लिन में पुनर्मिण का काम पिछड़ जाता था। टेक्नीशियन और इंजीनियर सरकारी खर्च पर ज.ज.ग. में अपनी शिक्षा तो पूरी करते थे, लेकिन अपनी सेवाएँ अर्पित करते थे पश्चिमी बर्लिन की पूंजीपति फर्मों को जिससे पश्चिमी जर्मनी की औद्योगिक क्षमता तो बढ़ी, लेकिन ज. ज. ग. को क्षति हुई। इस तरह पूर्वी जर्मनी को कुल २ करोड़ ७० लाख से लेकर ३ करोड़ मार्क तक की क्षति हुई।

ये कुछ कारण थे जिनसे जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने १५ अगस्त १९६१ को पश्चिमी बर्लिन से लगी अपनी सीमा बन्द कर दी। और वह अब फिर आज़ादी की सांस ले रहा है।

भारतीय कलाकारों का एक दल बर्लिन के ब्राण्डेनबुर्ग द्वार से राज्य-सीमा को देख रहा है

पश्चिमी बर्लिन में इसके विरुद्ध जोरदार प्रतिक्रिया हुई और उसने प्रोपेगैंडा से जर्मन जनवादी गणतन्त्र द्वारा अपनी प्रभुसत्ता को सुरक्षित रखने के प्रयत्नों को विफल करने की कोशिश की। अमेरिकन सेक्टर में पश्चिमी जर्मनी के शक्तिशाली रेडियो स्टेशन ने जर्मन जनवादी गणतन्त्र के विरुद्ध जबरदस्त प्रचार शुरू किया। हर ऊँची इमारत पर बिजली के चमकीले शब्दों में जर्मन जनवादी गणतन्त्र को बदनाम करनेवाली खबरें इस तरह प्रदर्शित की जातीं कि पूर्वी बर्लिन में भी लोग उन्हें देख सकें। इसके बारे में पूर्वी बर्लिन वालों की उत्सुकता जानने के लिए मैं दो बार शाम को सीमा के निकट गया। लेकिन सच बात तो यह है कि उन खबरों में किसी को भी दिलचस्पी लेते मैंने नहीं देखा। उधर से गुजरने वाले उन खबरों की ओर देखते भी नहीं थे। और अधिक जानने के लिए मैं एक अंधेरे कोने में खड़ा हो गया ताकि मैं सबको देख सकूं और कोई मुझे न देखे। उसके बाद मैं सीधे सीमा के ब्राण्डेनबुर्ग गेट पर तैनात सीमा के पास जा खड़ा हुआ। दो पुलिस के सिपाही मेरी बगल से गुजर गये। वे मुझे हंस कर 'गुडनाइट' कहने के सिवा रुके भी नहीं।

(शेष पृष्ठ २९ पर)

फिल्म के कुछ दृश्य
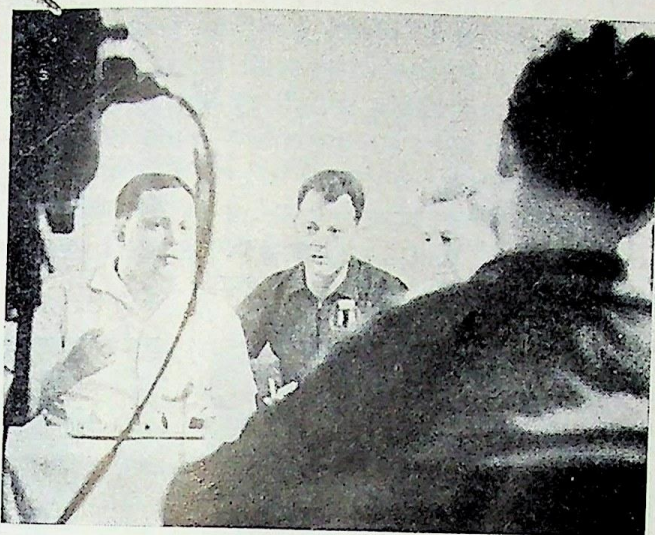
ब्येन्स : क्या आप अपने आपको स्वतन्त्र महसूस करते हैं ?

मजदूर : इस प्रश्न का उत्तर केवल हां ही सकता है। हम हर विषय पर अपने विचार प्रकट करते हैं। पश्चिमी प्रेस की उड़ाई हुई यह अफवाहें निराधार हैं कि हमें अपने दिल की बात कहने की आज़ादी नहीं है। हम राजनीति के संबध में जी खोलकर हास्य-विनोद की बातें करते हैं। व्यंग्य कसते हैं। हम पूरी आज़ादी से अपने दिल की बात कहते हैं।

आपको हमारी किसी मीटिंग में आकर हमारी बहस देखनी चाहिए। जब हम किसी अधिकारी की किसी बात से सहमत नहीं होते तो हम बिना संकोच के बात कहते हैं। हम उसकी कड़ी आलोचना भी करते हैं।

बुयेन्स : बर्लिन की 'दीवार' के संबंधों में आपकी क्या राय है ?

गृहणी : देखिए, मेरा निजी विचार यह है कि इस दीवार के लिए लोग स्वयं ज़िम्मेदार हैं। सच बात तो यह है कि अगर सब कुछ वैसे ही चलता रहता जैसे पहले चला करता था तो लोगों के लिए काम करना असंभव हो जाता। भला

(शेष अगले पृष्ठ पर)

"ज.ज.ग. : एक विदेशी की नज़र में"--यह बेल्जियम के फिल्म निर्देशक फ्रेन्स बुयेन्स के बनाये हुए 1½ घंटे के वृत्त-चित्र का पहला शीर्षक था। यह चित्र उन्होंने अप्रैल से अगस्त १९६४ के बीच ज.ज.ग. के विभिन्न भागों में तैयार किया था। प्रस्तुत लेख में श्री बुयेन्स ने इस फिल्म को बनाने के कारणों पर प्रकाश डाला है। अब इस फिल्म का शीर्षक रखा गया है : जर्मनी--पूर्व का सीमान्त !

जर्मनी —पूर्व का सीमान्त

मुझसे कई बार पूछा गया कि मैंने सभी देशों में से जर्मन जनवादी गणतन्त्र को ही इस वृत्त-चित्र के लिए क्यों चुना। इस का बहुत सीधा सा उत्तर है--"सच्चाई की खातिर।"

सन् १९६१ में, मैं पहली बार जर्मन जनवादी गणतन्त्र गया था। मुझे किसी व्यावसायिक कारणवश पूर्व बर्लिन जाना पड़ा था। उन दिनों बर्लिन में आश्चर्यजनक विरोधाभासपूर्ण स्थिति देखकर मैं इस विषय पर फिल्म बनाने के लिए प्रेरित हुआ। संयोगवश उस १३ अगस्त (१९६१) को भी मैं वहीं था जब एक दीवार खड़ी करके सीमा-बन्दी की गई थी।

कुछ महीने बाद मुझे वहां एकदम भिन्न वातावरण देखने को मिला। कलाकारों, ट्रेड यूनियनों के नेताओं, और सार्वजनिक स्थानों व जलपान गृहों में सामान्य जनों एंव विदेशी विद्यार्थियों तथा अन्य लोगों से बातचीत के फलस्वरूप मुझे ज.ज.ग. का प्रत्यक्ष आन्तरिक चित्र देखने का अवसर मिला। जर्मनी के इस भाग का यह चित्र उस चित्र से सर्वथा भिन्न था जो पश्चिमी संसार के प्रचार ने हमारे सामने पेश किया है।

इस प्रकार सम्पूर्ण बर्लिन पर एक फिल्म बनाने के अपने विचार को मुझे बदलना पड़ा और मैंने एक वृत्त-चित्र द्वारा ज.ज.ग. की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करने का निश्चय किया।

दो मास की अपनी जर्मन यात्रा के दौरान, मैं ज.ज.ग. के कोने कोने में गया। इस यात्रा के पश्चात फिल्म की जो पट-कथा मैंने तैयार की वह मेरे अनुभवों का सार है।

मुख्यतः मेरे अनुभवों ने मुझे दिखाया कि :

--नव-निर्माण के दौरान यहाँ अनेक भौतिक एवं आध्यात्मिक कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की गई है;

--आश्चर्यजनक औद्योगिक प्रगति ने कुछ ही वर्षों में ज.ज.ग. को एक साधारण कृषक देश से एक शक्तिशाली औद्योगिक राज्य बना दिया है;

—जनता की विचारधारा में, नाज़ीवाद उन्मूलन अभियान और मानवतावादी शिक्षा के द्वारा आमूल परिवर्तन हुआ है;

—सामाजिक एवं शिक्षा के क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। (स्त्रियों को समानता और कारखानों में मज़दूरों को फ़ैसले लेने का अधिकार मिला है। समाज कल्याण और सभी के लिए शिक्षा की सुविधाएँ हैं);

—जनता में जागरूकता की महान भावना के अन्तर्गत हर अनुचित और काम में बाधा डालने वाली नौकरशाही आदि जैसी बातों की आलोचना करने की प्रवृत्ति है;

—नवोदित अफ़्रीकी राज्यों के प्रति सुदृढ़ समन्वय और शांति के लिए सतत संघर्ष जारी है।

सत्य की खोज करके उसका प्रचार तथा उसकी रक्षा करना हर व्यक्ति का कर्तव्य है। मैंने एक लेखक तथा फिल्म निर्माता की हैसियत से सदैव यही मार्ग अपनाया है। और इस बार भी मेरे निश्चय का आधार यही विचार था कि यदि जर्मन जनवादी गणतन्त्र के प्रति अपनी खोजबीन की सच्ची तस्वीर मैंने पेश न की तो यह भीरुता और गैरजिम्मेदारी का सबूत होगा।

अन्ततः यह फिल्म मेरी मूल योजना से बहुत भिन्न बनी। इसका कारण वे लोग थे जिनसे प्रश्नोत्तर के आधार पर मैंने इसको तैयार किया। मुझे अपने चलचित्र में सतही बातों को नहीं, बल्कि इन लोगों की वास्तविक भावनाओं को चित्रित करना था। ये सतही बातें एक दिखावा ही होती हैं सार नहीं, तकनीकी पहलू चाहे कितना ही श्रेष्ठ क्यों न हो।

मैंने गली बाज़ारों में, आने-जाने वाले लोगों को 'दीवार' से संबंधित उनके विचार जानने के लिए कुरेदा। उनके अनुकूल तथा प्रतिकूल उत्तरों की स्पष्टता से मैं दंग रह गया। ८२ बर्लिन निवासियों में से केवल दो ने इस विषय पर बातचीत करने से इन्कार किया। शेष सभी लोगों ने मेरे सवालों का जवाब दिया। यह जानते हुए कि उस बातचीत की फिल्म बनाई जा रही है, उनकी स्पष्टवादिता में कोई अन्तर नहीं आया। कैमरे को जनता से बिल्कुल नहीं छुपाया गया था।

इसके बाद यही स्पष्टता मैंने लाइपज़िग तथा माग्देबुर्ग के विद्यार्थियों में अनुभव की, एर्ज़गेबरजे के पहाड़ी किसानों एवं वार्नेमुन्दे पोत-निर्माण कारखानों में काम करने वाली स्त्रियों में देखी, रोस्टाक, आइज़ेनहुएवेन स्टेट, माग्देबुर्ग, ड्रेस्डन तथा लाइपज़िग के कामगारों में देखी और कार्ल-मार्क्स स्टाड्ट के व्यापारी वर्ग तथा ज.ज.ग. के अन्य कई भागों के अनेक लोगों में भी देखने को मिली।

सत्य के प्रसारण का अर्थ है किंवदन्तियों को खत्म करना। इसका अर्थ है असत्य को नष्ट करना। मैं अपने विषय में पूर्णतः शुद्ध अन्तःकरण के साथ कह सकता हूं कि मैंने अपनी सभी पुस्तकों तथा फिल्मों में यही नियम अपनाया है। और **जर्मनी—पूर्व का सीमान्त** में भी इसी उसूल को अपनाया है। इसीलिए मुझे पूरा सन्तोष है कि मेरी यह फिल्म जर्मन जनवादी गणतन्त्र की सच्ची तस्वीर पेश करने में एक योगदान है।

(पिछले पृष्ठ से आगे)

कौन राज्य यह सहन कर सकता है कि लोग रहें तो यहां, आयें भी यहां, परन्तु उनकी परिश्रम तथा सेवाएं किसी अन्य राज्य को प्राप्त हों। क्या आप का देश इसकी अनुमति दे सकता है? कभी नहीं। आप सोचिए, अन्न तो वह यहां का खायें लेकिन कमायें पश्चिमी बर्लिन में। मान लीजिए वे प्रति घंटा दो मार्क कमाते थे लेकिन यहां वे दो मार्क विनिमय में नौ या दस मार्क प्रति घंटा मूल्य में तबदील किये जाते थे। और यहां वे एक बड़ी डबल रोटी केवल ९० फ़ेनिक में प्राप्त करते थे। यह सब कुछ कितने समय तक बर्दाश्त किया जाता?

बूयेन्स : क्या सहकारी खेती के प्रारम्भ में आपको किन्हीं विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था?

किसान : आरम्भ में कठिनाइयां सामने आयीं, क्योंकि हमारे पास पर्याप्त मात्रा में विशेषज्ञ न थे, जो हमारे सहकारी अथवा राजकीय फार्मों की व्यवस्था का कार्यभार उठा सकते। पहले पहल हम सब को सीखना पड़ा, क्योंकि इससे पहले एक साधारण किसान अथवा खेतमजदूर को कभी भी अपने आपको शिक्षित करने का अवसर न मिला था। उसे सिर्फ एक बैलों की जोड़ी या घोड़े के पीछे चलते रहने का आदेश दिया जाता था और इससे अधिक वह कुछ न कर सकता था।

चिट्ठी-पत्री

नेपाल से दो पत्र

महाशय,

सेवा में सविनय निवेदन यह है कि आपके व्यापार-दूतावास से हमें **सूचना पत्रिका** बराबर प्राप्त हो रही है। इसके लिए यहां की जनता एवं पुस्तकालय विशेष अनुग्रहीत हैं। आप भी कम धन्यवाद के पात्र नहीं। हम नेपाली इस 'पत्रिका' में विशेष आनन्द एवं रुचि लेते हैं। इसके साथ ही हमें आपके देश के कुछ महान लेखकों, महापुरषों की जीवनी भेजने का कष्ट करें। कृपया पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ विशेष रूप से हिन्दी में ही भेज दीजिए।

हरिशंकर चौगाई
सचिव
गांधी पुस्तकालय
कलैया (**नेपाल**)

प्रिय महोदय,

आपने कृपा कर भेज दिया जुलाई का **सूचना पत्रिका** मुझे प्राप्त हुआ है। जब इसको पढ़ना आरम्भ किया, इसका तमाम पेज को समाप्त किये बिना छोड़ने का मन ही नहीं लगा। इसमें छपी हुई हरेक लेख बहुत किसम का ज्ञानप्रद है, और साथ साथ मनोरंजक भी। मेरे दोस्त लोग, एक के बाद एक, इस 'पत्रिका' को देख रहे हैं और जिस जिसने देखा, सभी ने ही इस 'पत्रिका' प्रशंसा की।

प्रेम बहादुर श्रेष्ठा
काठमाण्डू (**नेपाल**)

आदरणीय महोदय,

आपकी **सूचना पत्रिका** का नियमित पाठक हूं। यद्यपि मुझे अधिक समय नहीं हुआ है, तथापि इस अल्पावधि में ही 'पत्रिका' के माध्यम से महान देश जर्मन जनवादी गणतंत्र की रीति-नीति, कार्यप्रणाली, जर्मन जनता की सृजनात्मक तथा संगठनात्मक शक्तियों का जनवादी गणतन्त्र समाज की स्थापना में वृहद योग एवं आधुनिक विज्ञान व संस्कृति की नवीनतम उपलब्धियों के संबंध में मैंने व्यापक ज्ञान अर्जित किया है। वहाँ की जा रही नवीनतम खोजों के संबंध में 'पत्रिका' मूल्यवान सामग्री दे रही है। 'सूचना पत्रिका' के लिए मेरी शुभाकामनाएँ स्वीकार करें।

तरसेम कुमार गर्ग
टोहाना (**पंजाब**)

सम्पादक जी,

सादर जय भारत!

सितम्बर माह की **सूचना पत्रिका** प्राप्त हुई। पढ़कर इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि 'पत्रिका' में कम पृष्ठ होते हुए भी बहुत ज्यादा हर विषय की सामग्री का समावेष है, अर्थात् 'पत्रिका' "गागर में सागर है।"

'सूचना पत्रिका' को बालक संघ के सदस्य-बच्चे बड़ी लगन व चाव से पढ़ते हैं। सभी बच्चों ने यह प्रस्ताव रखा है कि वे जर्मन भाषा सीखना चाहते हैं, एवं जर्मन के बालकों से पत्र-मैत्री करना चाहते हैं।

अतः मेरा अनुरोध है कि आप जर्मन भाषा को सीखने हेतु बच्चों के लिए उपयुक्त सामग्री एवं पत्र-मित्र बनाने के लिए जर्मन के व्यस्क बच्चों के पते भिजवाने का प्रयत्न करें। साथ ही 'सूचना पत्रिका' नियमित रूप से भेजते रहें।

भारत-जर्मन मैत्री बनी रहे।

अचल वर्मा शैशव
अखिल भारतीय बालक संघ
नीमच (**म. प्र.**)

संपादक महोदय,

आपकी **सूचना पत्रिका** यथासमय प्राप्त हो जाती है। तदर्थ धन्यवाद। मैं आपकी पत्रिका देखकर अत्यन्त हर्षित हूं। 'पत्रिका' में बहुत ही उपयोगी एवं पठनीय सामग्री रहती है। तत्परता एवं सहृदयता के लिए आभारी हूं। आशा है आप अन्य सामग्री (ब्लाक वगैरह) भेजने का भी कष्ट करेंगे।

लीलाशंकर महाजन
संपादक 'देवास टाइम्स'
देवास (**म. प्र.**)

सम्पादक महोदय,

सितम्बर ६५ की **सूचना पत्रिका** मिली। प्रसन्नता हुई।

'पत्रिका' के पहले ही पृष्ठ पर नये प्रमुख **श्रीयुत हरबर्ट फिशर** का सचित्र परिचय पढ़ा। अपार हर्ष हुआ।

श्री फिशर को भारतीय स्वाधीनता संग्राम में दिलचस्पी रही और अपना भरपूर सहयोग दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और अन्य प्रमुख भारतीय नेताओं के साहचर्य में वे रहे, इससे भारतीयता का प्रभाव एक सीमा तक उन पर रहा होगा। वे भारत को और अधिक समीप से देख पाये हैं, इसलिए भारत जर्मन मैत्री को सुदृढ़ एवं चिरंजीवी बनाने में वे एक महत्वपूर्ण योग दे सकेंगे, ऐसी आस्था है।

अपनी शुभकामनायें और बधाई उनको भेजता हूं कृपया स्वीकार करें।

बी. एन. शर्मा
रोहतक (**पंजाब**)

मान्यवर महोदय,

मुझे माह सितंबर १९६५ की **सूचना पत्रिका** दिनांक ४.१०.६५ को मिली। आपका बहुत बहुत धन्यवाद। मैंने आपकी 'पत्रिका' पढ़ी। पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। 'पत्रिका' के सचित्र समाचार, आदि बहुत पसंद आए। रैणावारी-श्रीनगर (काश्मीर), फतेहपुर सीकरी (आगरा) और अजन्ता की गुफाएँ आदि चित्र बहुत ही पसन्द आए। आप ने जो पत्रिका की चन्दे की दरें लिखी हैं उसे शुल्क के रूप में मैं आपके पास मनिआर्डर द्वारा भेज रहा हूं। अतः आप से सादर निवेदन है कि उक्त पते पर आप 'सूचना पत्रिका' नियमित रूप से भिजवाते रहें। आपकी कृपा होगी।

आपका
एम. के. खान
उज्जैन (**म. प्र.**)

श्रीनगर में कुछ दिन . . .

डा. हाइंज़ लांगर

सूचना पत्रिका के पिछले दो अंकों में हम डा. हाइंज लांगर तथा इंजीनियर श्रेडर, दो जर्मन पर्यटकों के, यात्रा-विवरण प्रकाशित कर चुके हैं। अब हम इस लेख-माला का तीसरा और अंतिम लेख प्रस्तुत कर रहे हैं। डा. लांगर, जो एक अच्छे रेखा-चित्रकार भी हैं, के दो रेखा-चित्र भी लेख के साथ ही छापे गये हैं। इनके अन्य पांच रेखा-चित्र भी चित्रकार के परिचय सहित हम 'पत्रिका' के गतांक में छाप चुके हैं।
—संपादक

जब हम श्रीनगर पहुंचे, उस समय संध्या का झुटपुटा नगर पर धीरे-धीरे उतर रहा था। यहां पहुंचते ही जब हमने अपने स्कूटर लिये, मांझियों की एक भीड़ ने हमें घेर लिया।

"साहब मेरे साथ आइये। मेरा बजरा (हाउस बोट) बहुत आरामदेह और सस्ता है।..." एक हाउस बोट वाला बोला। दूसरे ने तुरन्त कहा : "साहब, मेरा हाउस बोट तो इससे भी सस्ता और अच्छा है। मेरे साथ आइये।...." इस प्रकार हाउसबोट मांझी एक दूसरे के दाम काट कर कम करते जा रहे थे।

खैर, हमने एक सस्ता सा हाउस बोट लिया रहने के लिए। इस हाउस बोट का नाम था **ब्ल्यू बर्ड**, और यह झेलम नदी की ओर बहने वाली एक कुल्या के किनारे खड़ा था। 'ब्ल्यू बर्ड' के आगोश में पहुंचकर हमारी सफर की थकान जाती रही।...

यहां हमें पता चला कि श्रीनगर में सांय ८ बजे से कर्फ्यू लगता है। इसका कारण पूछने पर पता चला कि पिछले कुछ दिनों में काश्मीर का झगड़ा फिर से भड़क उठा है। अखबार देखने से पता चला कि पाकिस्तान से, सशस्त्र व्यक्तियों ने काश्मीर में घुसपैठ की है, और भारत की सुरक्षा सेना, युद्ध विराम रेखा के आस पास उन से भिड़ गई है। लेकिन श्रीनगर का जीवन पूरी तरह शान्त और सामान्य दिखाई दे रहा था।

दूसरे दिन सुबह हम श्रीनगर घूमने निकले। एक राज्यकीय कुटीर उद्योग एम्पोरियम में हमारी मुलाकात एक जिन्दा दिल नौजवान से हुई, और काश्मीरी हस्तकला से संबंधित उनके ज्ञान से हम काफी प्रभावित हुए। इस नौजवान का नाम है **श्री पृथ्वीनाथ काचरू**। **श्री काचरू** एक जाने-माने आधुनिक भारतीय चित्रकार हैं, जिन्होंने कई अखिल भारतीय चित्र प्रदर्शनियों में पुरस्कार प्राप्त किये हैं। आजकल आप उक्त एम्पोरियम के **स्कूल आफ डिजाइन्स** में काम

रैणावारी, श्रीनगर
(काश्मीर)

करते हैं। एक डिज़ाइनर की हैसियत से उन्होंने अपना उद्देश्य बनाया है परम्परागत काश्मीरी लोक कला के डिज़ाइनों को नये और आधुनिक कलारूपों में समन्वित करके उसको विकसित करना।

श्री पी. एन. काचरू, निरंकुश राजसत्ता के विरुद्ध मुक्ति आंदोलन में काफी सक्रिय रहे हैं। इस मुक्ति आन्दोलन की सफलता के बाद वह सन् १९४७ से काश्मीर के शक्तिशाली सांस्कृतिक आंदोलन के अभिन्न अंग रहे हैं। इस आन्दोलन के विभिन्न संगठनों—अर्थात् "राष्ट्रीय सांस्कृतिक मोर्चा" (नेशनल कलचुरल फ्रंट), "प्रगतिशील चित्रकार संघ" (प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट एसोसिएशन) "काश्मीर कला सोसायटी" (काश्मीर आर्ट सोसायटी) और "राष्ट्रीय सांस्कृतिक कांग्रेस" (नेशनल कलचुरल कांग्रेस) में **श्री काचरू** ने सक्रिय योगदान दिया है। ...काश्मीरी लोक-कला को निकट से देखने और समझने में उन्होंने हमको अमूल्य सहायता प्रदान की।

प्रकृति के अतुल्य सौन्दर्य ने काश्मीरी लोगों को, रंग और रूप का ज्ञान प्रदान किया है, और लोक-कला यहां के जन-जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। हम यह देखकर चकित रह गये कि यहां के दस्तकार, अत्यन्त साधारण औज़ारों से—एक हथौड़े और छेनी से—चांदी और तांबें की बहुत सुन्दर और कलापूर्ण वस्तुएं तैयार करते हैं।

काश्मीरी दस्तकारों का, रूप और परम्परा का सहज ज्ञान, सर्वत्र देखने को मिलता है। हमारे देश, जर्मनी में, काश्मीरी ऊन एवं रेशम की वस्तुएँ काफी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं, लेकिन लकड़ी और पेपर-मैशे की कलापूर्ण वस्तूएँ भी हमें कम सुन्दर नहीं लगीं।

चित्रकार काचरू ने हमें यहां के सुप्रसिद्ध झीलों—डल और नगीन—और नहरों में नाव-विहार का निमंत्रण दिया, जो हमने सहर्ष स्वीकार किया। ये रमणीय झील और नहरें, श्रीनगर के आसपास ही फैले हुए हैं, और इनके कारण श्रीनगर "पूर्व का वेनिस" के नाम से भी विख्यात है।

झेलम नदी (इसका काश्मीरी नाम "व्यथ" अर्थात् वितस्ता है——सं) पर बने हुए विश्वप्रसिद्ध सात पुलों को हमने नाव में बैठकर देखा। यहां की नावें —शिकारे— वेनिस के गण्डोला जैसी ही लगती हैं। वितस्ता के तटों पर काम करती हुई धोबिनें और तटवर्ती दुकानों में काम करते हुए दस्तकार, एक अनोखा ही दृश्य उपस्थिति करते हैं।

एक कुल्या ने हमें **डल झील** तक पहुंचा दिया। हमारे गाइड (श्री काचरू—सं.) ने हमें बताया कि यह झील श्रीनगर की सबसे बड़ी झील है जो एक अन्य छोटी लेकिन अत्यन्त रूमानी **नगीन झील** से दूसरी नहर के द्वारा मिली हुई है। नगीन झील हमको बहुत पसन्द आई। खासकर इस पर तैरते हुए छोटे-छोटे "द्वीप" (स्थानीय भाषा में इनको "राद" कहते हैं—सं.) एक अनोखी चीज़ है। इन तैरते "रादों" पर यहां के मांझी हर प्रकार की शाक-सब्जी उगाते हैं। झील

श्रीनगर (काश्मीर)

के कम गहरे भागों में खिले कमलों के शगोफे झील के सौन्दर्य को द्विगुणित करते हैं।... डल झील में खड़े, नहाने के भारी बजरों पर अनेक सैलानी तैरने का, स्वच्छ शीतल जल में आनन्द ले रहे हैं थे।

श्रीनगर में हमको काश्मीर के झगड़े से संबंधित किसी भी नये संकट या विद्रोह का चिन्ह नहीं मिला। इस बारे में अखबारों और अपने दोस्तों के माध्यम से ही हमें जानकारी मिली। जो कुछ भी हो, हमारी तो हार्दिक कामना यही है कि हमारी धरती के इस एक अत्यन्त रमणीय स्थान से संबंधित झगड़ा, जल्द से जल्द, शांतिपूर्ण बातचीत द्वारा निपटा दिया जाये। काश्मीर को देखकर हमारा यह विश्वास दृढ़ हो गया है कि धरती का स्वर्ग—अर्थात् काश्मीर-घाटी—लोगों के शांतिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण सहजीवन के लिए, एक अनुकरणीय आदर्श उपस्थित कर सकता है।

* * * *

ज.ज.ग.—एक आधुनिक औद्योगिक राज्य

(पृष्ठ ६ का शेष)

हर १०० व्यक्तियों में ७४ व्यक्ति एसे हैं जो काम नहीं कर सकते (वृद्ध तथा १६ वर्ष से नीचे के बच्चे) । सन १९३९ में, अर्थात् दूसरे महायुद्ध के पहले यह अनुपात ४९ : १०० था; लेकिन महायुद्ध में जो नरसंहार हुआ उसी का यह नतीजा है कि काम करने वाले आयु समूहों में बहुत बड़ा व्यवधान पड़ा । इसी संहार के परिणाम स्वरूप युद्ध के बाद के कई वर्षों में जन्म-दर भी बहुत कम रहा ।

सामान्य उत्पादिता एवं श्रम-उत्पादिता को बढ़ाने के सिलसिले में दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है राष्ट्रीय अर्थतंत्र के अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अधिक से अधिक धनराशि लगा देना । ....इस सिलसिले में, अनुसंधान और प्रशिक्षण पर हर साल बहुत धन खर्च करके नौजवान लोगों को प्रशिक्षित किया जा रहा है । उदाहरण के लिए जर्मन विज्ञान अकादमी के अधीन, सन् १९६२ में, तीन गुणा अधिक शिक्षार्थी और विशेषज्ञ प्रशिक्षण पा रहे थे, सन् १९५८ की तुलना में ।

अन्त में, ज.ज.ग. के निरन्तर औद्योगिक विकास एवं प्रगति के संबंध में निम्न तालिका दृष्टव्य है :

ट्राटेनडार्फ में ज.ज.ग. का एक सब से बड़ा बिजली-घर है । इसमें ६० प्रतिशत मज़दूर नवयुवक हैं
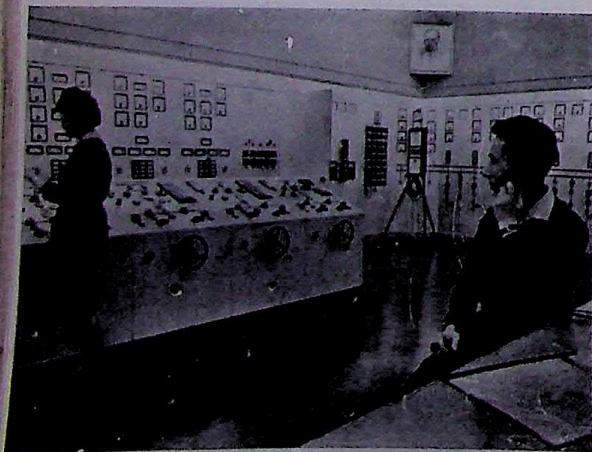
इन बच्चों के माता पिता काम पर गये हैं । उनकी अनुपस्थिति में शिशुपालन-गृह इनकी देखभाल करते हैं । चित्र में बर्लिन के एक टेलिविजन कारखाने के शिशु-गृह के बच्चे विशिष्ट "नन्हीं बसों" में सैर करने जा रहे हैं

औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक
(१९५०--१००)

	१९५५	१९६०	१९६३	१९६४
उद्योग (कुल)	१९०	२९३	३४५	३६८
बुनियादी उद्योग	१७९	२६६	३१४	३३९
शक्ति	१३२	२१२	२५१	२७३
धातु उद्योग	२४५	३७९	४२०	४४७
रासायनिक उद्योग	१९२	२९३	३६३	३९३
धातु-शोधक उद्योग	२१५	३८३	४८६	५२३
इंजीनियरिंग	२०९	३५७	४४७	४७८
विद्युत इंजीनियरिंग	२४३	५०६	६६८	७३०
सूक्ष्म एवं प्रकाशीय उपकरण ...	१९१	३२५	४१०	४४३
हल्का उद्योग	१६५	२३८	२६१	२७१
वस्त्र उद्योग	१७७	२४७	२६३	२६८
खाद्य एवं तत्संबंधी उत्पादन ...	२१६	२३८	३२४	३४०
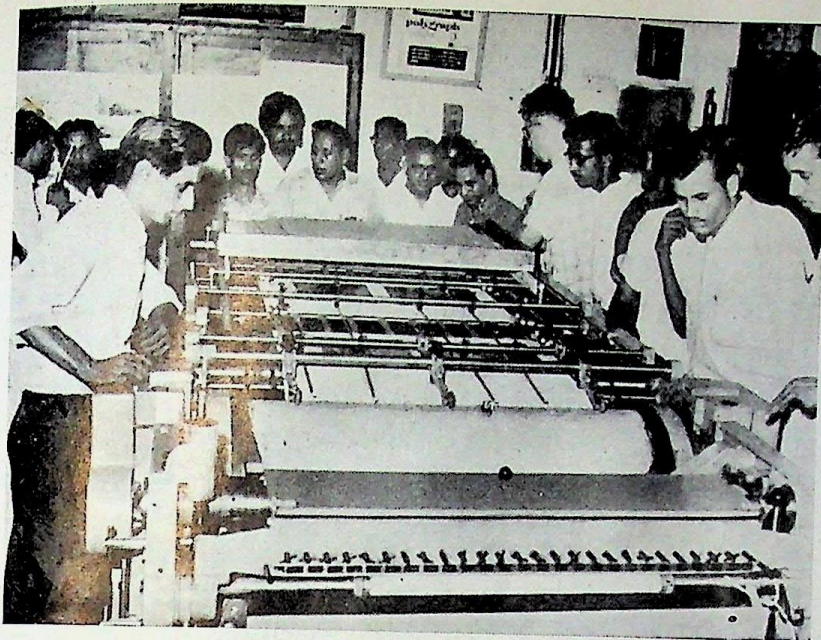
दिल्ली के एक प्रेस में लगी हुई ज. ज. ग. की एक मशीन

विश्वस्त सहयोगी . . .

(पृष्ठ ११ का शेष)

कुल व्यापार परिमाण को, सन् १९६० तक, तीन गुणा बढ़ाया जा सकता है।

ज. ज. ग. एक काफी विकसित औद्योगिक राज्य है, और वह इन विकासशील देशों को आधुनिक यंत्र, उच्च कोटि के रसायन और अन्य ऐसे ही अनेक बुनियादी उत्पादन निर्यात कर सकने की क्षमता रखता है जो इनके राष्ट्रीय नवनिर्माण और औद्योगिक विकास के लिये अत्यन्त आवश्यक एवं अनिवार्य हैं। बदले में ये देश ज. ज. ग. को, अपनी पारंपरिक वस्तुएं जैसे कपास, रबड़, काफी, चमड़े, फल, कच्चे धातु, मसाले, मछली और अन्य खाद्यान्न निर्यात कर सकते हैं।

अन्त में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार से संबन्धित निम्न तालिका दृष्टव्य है। इस तालिका में इसके निरन्तर बढ़ते हुये व्यापार के मुंह बोलते आंकड़े दर्ज हैं :

जर्मन जनवादी गणतंत्र का विदेश-व्यापार (मिलियन मार्कों की रक़म में)

वर्ष	कुल	१९५५-१००	निर्यात	१९५५-१००	आयात	१९५५-१००
१९५०	३,६८०	३६	१,७०६	३२	१,९७४	४०
१९५५	१०,३०१	१००	५,३७२	१००	४,९२९	१००
१९६०	१८,३२६	१७८	९,२०७	१७१	९,११९	१८५
१९६१	१८,८२०	१८३	९,५०५	१७७	९,३१५	१८९
१९६२	१९,८९७	१९३	९,९२३	१८५	९,९७४	२०२
१९६३	२०,९६५	२०३	११,३१५	२११	९,६५०	१९६
१९६४	२३,२०३	२२५	१२,२५२	२२८	१०,९५१	२२२

वह दीवार

(पृष्ठ २२ का शेष)

दीवार बनने के पहले लोगों के निष्क्रमण ने जर्मन जनवादी गणतन्त्र के लिए गंभीर समस्याएँ पैदा कर दीं। पश्चिमी जर्मनी का दावा था कि जिन लोगों ने ज. ज. ग. छोड़ा उन्होंने 'अपने पैरों से आत्मनिर्णयाधिकार के पक्ष में मत दिया', यानी वे राजनीतिक शरणार्थी बन कर पश्चिमी जर्मनी गये। किन्तु जर्मन जनवादी गणतन्त्र के अनुसार इसके कारण बिलकुल दूसरे थे जैसे, युद्ध के कारण दोनों तरफ विभाजित परिवार, या पारिवारिक झगड़े जो किसी एक व्यक्ति के चले जाने से सुलझ गये, ऊपर से आसान और आरामदेह ज़िन्दगी का आकर्षण, विशेषरूप से नौजवानों के लिए, सैनिक सेवा की अनिच्छा, पुराने नाज़ियों तथा अपराधियों और रुपया बनाने के चक्कर में रहने वालों का पलायन, पुराने दरजे के कुछ लोगों का खासतौर से बड़ी और मध्यम सम्पत्तियों के स्वामी और व्यापारी आदि। लेकिन अब बहुत से लोग जर्मन जनवादी गणतन्त्र लौट रहे हैं।

आखिर इस दीवार का भविष्य में क्या हल है?

मैंने जिन लोगों से बातचीत की उन्होंने कहा कि बर्लिन, समस्या के हल के लिए जर्मन जनवादी गणतन्त्र इस शर्त पर वार्ता के लिए तैयार है कि पश्चिमी बर्लिन जर्मन जनवादी गणतन्त्र के खिलाफ हमलावर कार्रवाइयों का अड्डा न बने। एक व्यक्ति ने तो यहां तक कहा कि यदि वे आंधी रात को भी यह आश्वासन दें कि पश्चिमी बर्लिन शांतिपूर्ण नगर हो गया है और जर्मन जनवादी गणतन्त्र के खिलाफ हमलावर कार्रवाइयां वहां से संचालित नहीं होंगी, तो हम उसके पन्द्रह मिनट बाद ही दीवार गिराना शुरू कर देंगे।

वे अविस्मरणीय दिन. . .

(पृष्ठ २० का शेष)

"सातवाँ क्रास" ने हम भारतीय प्रगतिशील लेखकों को कितना प्रभावित तथा प्रेरित किया था। माक्स सिम्मरिंग और उसकी सुन्दर बीवी ने, एल्बे नदी पर स्थित अपने घर में हमारा इतना स्वागत-सत्कार किया कि हमें वह घर अपना घर जैसा ही लगा। एलेक्ज़ांडर आबुश, जो ज. ज. ग. के मंत्रिपरिषद के उपाध्यक्ष होने के अलावा एक सुप्रसिद्ध लेखक भी हैं, से भी हम मिले। इन जर्मन लेखकों के अतिरिक्त हम "मुजाहिदीन" (दि क्रूसेडर्स) के प्रख्यात लेखक ज़ेफान सेम और क्रिस्टा वोल्फ आदि से भी मिले।

लेखक सम्मेलन के जर्मन आयोजकों ने अन्तर्राष्ट्रीय लेखक सम्मेलन को एक नये ढंग पर आयोजित करने का प्रयत्न किया था। सम्मेलन के ६ दिवसीय कार्यक्रम में लम्बे चौड़े और उबा देने वाले भाषणों की भरमार की प्रथा को लगभग समाप्त ही किया गया था। सम्मेलन के अन्तिम सत्र में इस तरह के कुछ भाषण अवश्य हुए। इसकी बजाय लेखकों को छोटे-छोटे समूहों में बांटा गया, और उनमें बहसें हुयीं। कई अनौपचारिक पार्टियां हुयीं, पर्यटन हुए। इनमें लेखक एक दूसरे से अच्छी तरह मिल सके और बातचीत की। इस तरह का कार्यक्रम मुझे बहुत पसन्द आया। काश यह कार्यक्रम कुछ दिन और चलता। ५२देशों से आये हुए लेखकों से मिलने, परिचित होने और बातचीत करने के लिये छः दिन का समय वैसे बहुत कम था। इसके बावजूद यह सम्मेलन बहुत अच्छा रहा। अन्त में हम सब लेखकों ने घोषित किया :

"अपने मन, वचन और कर्म से एक होकर हम फासिस्तवाद के प्रत्येक प्रत्यक्ष अथवा प्रच्छन्न रूप का, हर प्रकार के साम्राज्यवादी आक्रमण का और समस्त मानवता के जीवन के लिये नये, भयंकर खतरे, अर्थात् अणु-युद्ध का डट कर विरोध करेंगे। प्रत्येक युग की तरह हमारे युग का साहित्य भी––जो जीवन का समर्थक है (मृत्यु का नहीं)––सुखद भविष्य का समर्थन करेगा! . . "

(वाइमर का आवाहन)

भूमि-सुधारों के २० वर्ष...

(पृष्ठ १३ का शेष)

से बढ़कर २.६ मीट्रिक टन हो गयी। (खास कर गेहूं की उपज २.६ मीट्रिक टन प्रति हेक्टर बढ़कर ३.११ मीट्रिक टन हो गयी) मवेशियों की संख्या ३६ लाख ५० हज़ार से बढ़कर ४७ लाख हो गयी। प्रति हेक्टर मवेशियों की औसत संख्या ५५ से बढ़कर ७४ हो गयी। खेती में लगे ट्रैक्टरों की संख्या १९६०–६४ में ४३ हज़ार से बढ़कर १ लाख २ हज़ार और फसल काटने वाले यंत्रों की संख्या ३२०० से बढ़कर ११२०० हो गयी।

आंकड़े बोलते हैं

जर्मन जनवादी गणतन्त्र के सांख्यकी संस्थान ने हाल ही में, आर्थिक प्रगति के कुछ दिलचस्प आंकड़े प्रकाशित किये। उनमें से कुछ ये हैं :

सन् १९६४ में, ज.ज.ग. में ५१,०३२ मिलियन वाट घंटे की शक्ति; २५६.१ मिलियन टन भूरा कोयला; २.३ मिलियन टन कच्चा लोहा; ३.८५ मिलियन टन इस्पात, और ५.७६ मिलियन टन सीमेंट का उत्पादन हुआ। (१ मिलियन =१० लाख)

रेफ्रिजेरेटरों और टेलिविजनों का क्रमशः उत्पादन ३२३,९१८ तथा ५९२,१५४ था।

कृषि में : सन् १९५५–५८ की तुलना में सन् १९६४ में फसल का प्रति हेक्टर उत्पादन २४,००० कि.ग्रा. से बढ़कर २७,००० कि. ग्रा. प्रति हेक्टर हो गया।

इसी अवधि में आलुओं की पैदावार १५८,००० कि.ग्रा. प्रति हेक्क्टर से बढ़ कर १७२,००० कि. ग्रा. और अलसी की पैदावार १२,२०० कि. ग्रा. से १५,००० कि. ग्रा. तक पहुंच गई।

कृषि यंत्रीकरण की दर सन् १९५८ में ६ प्रतिशत से बढ़कर सन् १९६४ में २९ प्रतिशत तक पहुंच गई।

बापू की समाधि पर श्रद्धा के फूल
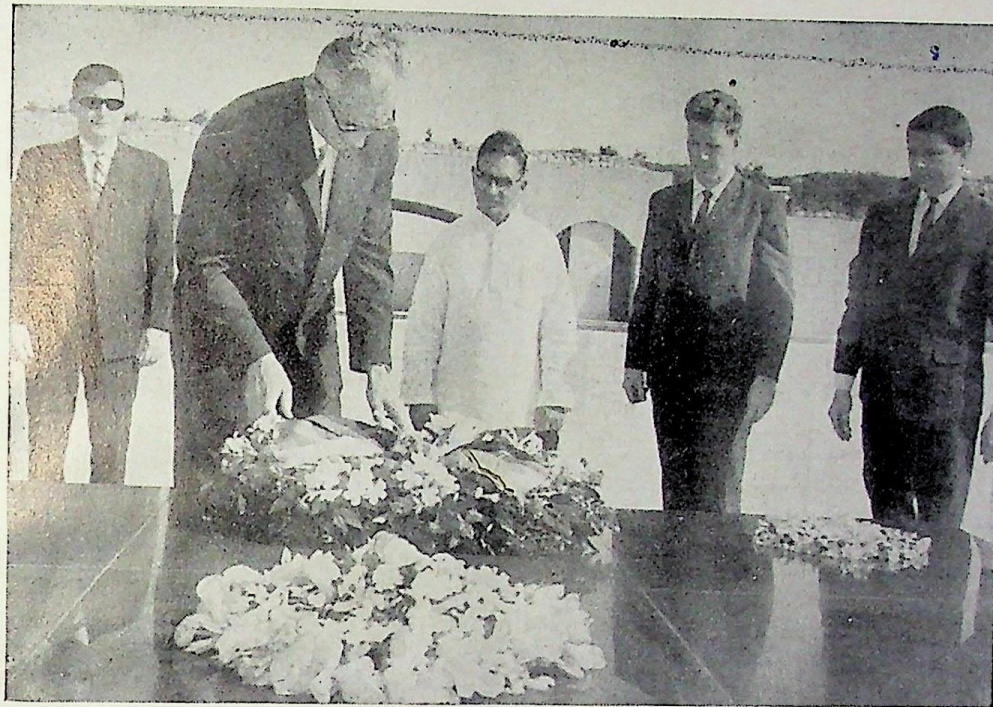
भारत में आकर, और जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार-दूतावास में प्रमुखके पद का कार्यभार संभालने के तुरन्त बाद, श्री हरबर्ट फिशर राजघाट गये बापू की समाधि पर अपनी श्रद्धा के फूल चढ़ाने। श्री फिशर, भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान, कई वर्षों तक महात्मा गांधी के साथ रहे हैं, उनके वर्धा आश्रम में . . .

◂ श्री फिशर, राजघाट पर रखी हुई यात्री-पुस्तक पर अपने हस्ताक्षर कर रहे है

ज.ज.ग. में एक चुनाव पोस्टर--"हम सही नाव पर सवार हैं। संयुक्त मोर्चा के उम्मीदवारों को वोट दीजिए"--

सन् १९६५ के लाइपजिग व्यापार मेले में भारतीय चाय --"हर एक समय चाय का समय है", ज. ज. ग. में यह उक्ति बहुत लोकप्रिय होती जा रही है।

रजि० नं० डी-१३३०

बाल्टिक सागर

बाल्टिक सागर

रोस्टोक

जर्मन
जनवादी
गणतंत्र

जर्मन
फेडरल
गणराज्य

बर्लिन

ज. ज. ग.
की
राजधानी

पश्चिम बर्लिन

पोलैण्ड

मागदेबुर्ग

फ्रांकफूर्ट

हाल्ले

लाइपज़िग

ड्रेस्डेन

येना

चेकोस्लोवाकिया

कि. मीटर 0 15 30 45 60 75

पश्चिम बर्लिन, पश्चिमी जर्मनी की सीमा से १६० कि. मीटर दूर, ज.ज.ग. की सीमाओं में स्थित है

रासायनिक उद्योग

बिजली घर

इलेक्ट्रानिक उद्योग

लोहे तथा इस्पात के कारखाने

खदानें (लिगनाइट)

फोटो एवं प्रकाशीय उद्योग

पोत-निर्माण

यंत्र इंजीनियरिंग

वस्त्र उद्योग
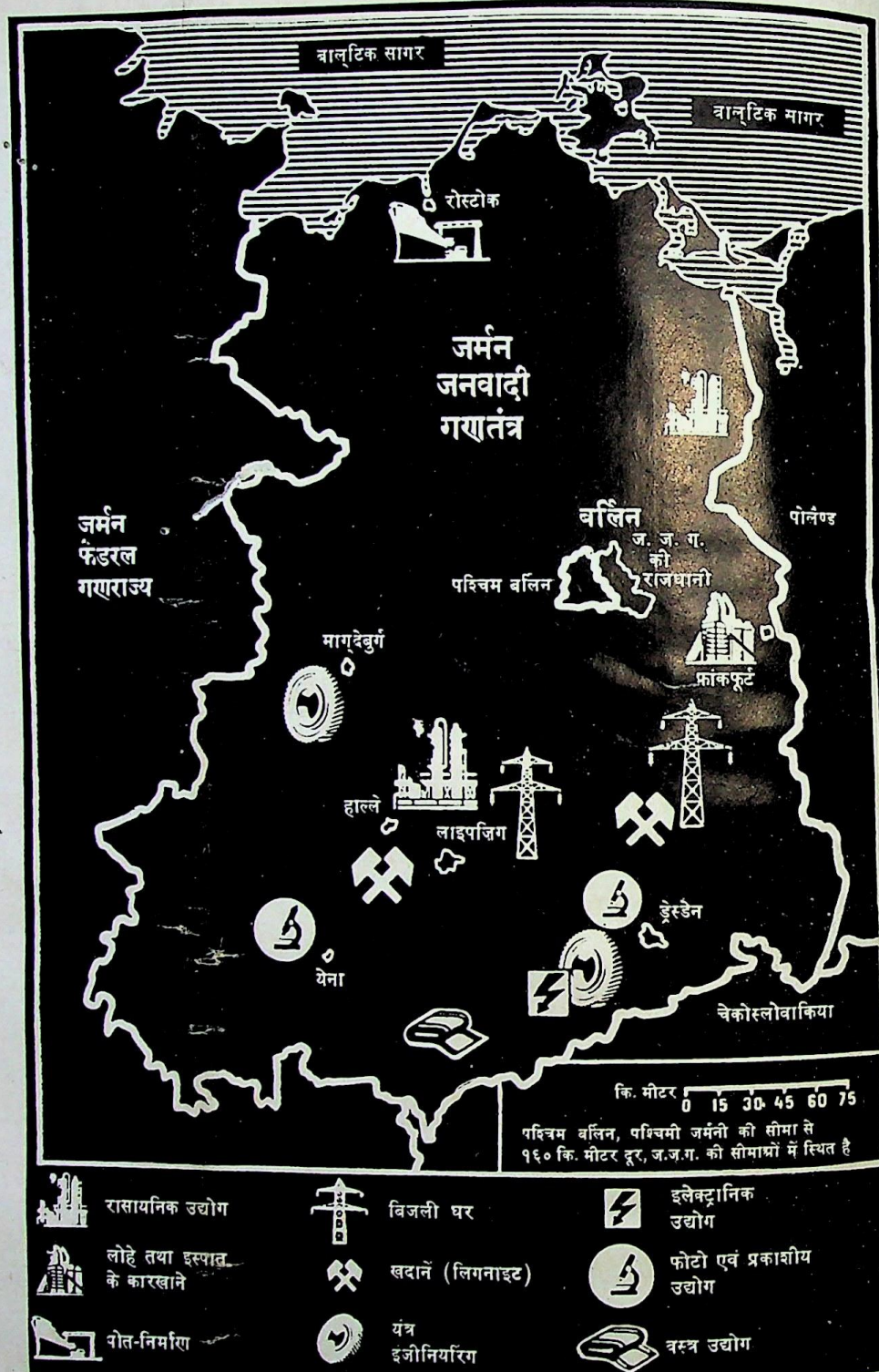
सूचना पत्रिका

जर्मन
जनवादी
गणतंत्र
के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष १०
अंक १२

२० दिसम्बर, १९६५

संकेत

मुख पृष्ठ : श्प्री वन में हिम की छटा

अंतिम पृष्ठ : नये वर्ष के स्वागत में सन्नद

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये मति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित। **संपादक : ब्रूनो मे**

नाभिकीय शस्त्रास्त्रों की संवृद्धि और प्रसार पर रोक

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने, संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के २० वें अधिवेशन की कार्यसूची में सम्मिलित "नाभिकीय शस्त्रास्त्रों की संवृद्धि पर रोक" नामक मद्द पर अपना वक्तव्य पेश किया है। वक्तव्य, इस प्रकार है :

"अपनी विदेश नीति के सिद्धान्तों के अनुसार, एवं विश्वशांति को बचाये रखने के उद्देश्य से, और नाभिकीय शस्त्रास्त्रों के और अधिक प्रसार के जबरदस्त खतरे से विश्व की समस्त जनता को सुरक्षित रखने की कामना से प्रेरित होकर, जर्मन जनवादी गणतंत्रकी सरकार संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के २० वें अधिवशन के सामने यह दृढ़ इरादा प्रकट करने आई है कि ज. ज. ग. युद्ध के खतरे को कम करने और आम तथा पूर्ण निरस्त्रीकरण करने की बातचीत में अपना पूरा पूरा योगदान करने के लिये हर समय तैयार है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, राष्ट्र संघ की महासभा के इस २० वें अधिवेशन के सामने फिर एक बार यह तथ्य रखना चाहती है कि यूरोप के बीच में युद्ध का एक खतरनाक अड्डा वजूद में आया है जो जर्मनी और सारे यूरोप की शान्ति के लिये एक जबरदस्त खतरा बनता जा रहा है।

पश्चिमी जर्मनी को, वर्षों से, यूरोप में अमरीका का सबसे बड़ा और खतरनाक नाभिकीय शस्त्रागार बनाया जा रहा है। आज स्थिति यह है कि पश्चिमी जर्मनी में रखे गये अमरीका के प्रक्षेपास्त्र (राकेट) और नाभिकीय हथियार किसी भी सैनिक झगड़े में, जर्मनी और यूरोप की समस्त जनता को नाभिकीय युद्ध की धधकती भट्टी में झोंक सकते हैं। यह खतरा इस तथ्य के कारण और भी भयंकर स्वरूप धारण कर रहा है कि पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य की सरकार, खुले तौर पर, न केवल वहां रखे हुये अमरीकी नाभिकीय शस्त्रास्त्रों को अपने नियन्त्रण में लेना चाहती है, बल्कि वह इन शस्त्रास्त्रों का स्वयं भी उत्पादन करना चाहती है।

पश्चिम जर्मनी, रूढ़ हथियारों की दृष्टि से पश्चिमी यूरोप की सब से मजबूत सामरिक शक्ति है, और कई वर्षों से पश्चिम जर्मन सेना का न केवल शस्त्रीकरण ही किया जा रहा है बल्कि उसको नाभिकीय एवं राकेट शस्त्रास्त्रों के युद्ध के तरीकों में भी ट्रेनिंग दी जा रही है। इतना ही नहीं। सन् १९६० से सन् १९६४ तक प. जर्मनी ने, नाभिकीय तथा राकेट हथियारों की वाहक-सामग्री में (अर्थात् प्रक्षेपास्त्रों, बम वाहक यानों इत्यादि में-सं.) २८३ प्रतिशत की वृद्धि की। यह आंकड़े, पश्चिमी जर्मनी में रखे गये अमरीकी नाभिकीय हथियारों के कुल वाहक-साधनों का तीन चौथाई भाग है। इस स्थिति से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पश्चिमी जर्मनी को नाभिकीय हथियारों के इस्तेमाल की इजाजत अथवा किसी भी बहुदेशीय नाभिकीय सेना में हिस्सा देना, या नाभिकीय हथियारों के उत्पादन की अनुमति देना, यूरोप और सारी दुनिया में नाभिकीय युद्ध की संभावना तथा खतरे को तुरन्त बढ़ा देंगे। इन तथ्यों को देखकर यह खतरा और भी विकट बन जाता है कि पश्चिम जर्मन सरकार यूरोप की एकमात्र ऐसी सरकार है जो दूसरे महायुद्ध के असंख्य बलिदानों तथा मुसीबतों के फलस्वरूप प्राप्त परिणामों को मान्यता नहीं देती, जो आक्रामक जर्मन सैन्यावाद की पराजय को अस्वीकार करती है, जो कई यूरोपीय राज्यों के क्षेत्रों को अवैध रूप से अपनी सीमा जताती है, और जो प्रतिशोधवादी जर्मन दलों को सक्रिय सहायता देकर अन्य देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करती है।

अपनी आन्तरिक और पर-राष्ट्रीय नीति में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार हमेशा दो महायुद्धों के परिणामों से परिचालित हुई है—अर्थात ज. ज. ग. की यह दृढ़ मान्यता है कि जर्मन जनता के सामने जो राष्ट्रीय समस्यायें मौजूद हैं उनके हल के लिये शांति को सुदृढ़ करना और सुरक्षित रखना सब से अधिक जरूरी है। इसलिए इसके तमाम प्रयत्न इस ओर लगे हैं कि जर्मन भूमि से फिर कभी युद्ध जन्म न ले। इन प्रयत्नों के ही फलस्वरूप ज. ज. ग. की सरकार ने प. जर्मन फेडरल गणराज्य की सरकार को निम्न सुझाव पेश किये :

–दोनों जर्मन राज्य नाभिकीय हथियारों का उत्पादन, परीक्षण, प्राप्ति और किसी भी रूप में उनपर नियन्त्रण हासिल करने के प्रयत्नों का परित्याग करें, और

–दोनों जर्मन राज्यों में शस्त्रीकरण पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाये।

अगस्त, सन् १९६५ में, ज. ज. ग. की सरकार ने, जनेवा में आयोजित 'संयुक्त राष्ट्र संघ की १८ देशीय निरस्त्रीकरण समिति' की बैठक में दिये गये अपने स्मृति-पत्र में उक्त सुझावों को फिर दोहराया।

इसके बावजूद, पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य की सरकार ने, इन सुझावों के प्रति अवहेलना ही दिखाई—ऐसे सुझावों के प्रति

जो जर्मन जनता और यूरोप की सुरक्षा के हित में हैं। इसके विपरित इसने नाटो सैन्य गुट और अमरीका में, नाटो की 'बहुदेशीय नाभिकीय सेना' अथवा किसी अन्य रूप में या माध्यम द्वारा, नाभिकीय शस्त्रास्त्रों को हासिल करने के अपने प्रयत्न और तेज कर दिये।

इसी तथ्य को ध्यान में रखकर ही, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के इस फैसले का स्वागत करती है कि वह अपने २०वें अधिवेशन में नाभिकीय शस्त्रास्त्रों के प्रसार और संवृद्धि को रोकने के सवाल पर अपना सुदृढ़ मत व्यक्त करेगी। इस सिलसिले में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार राष्ट्रसंघ की महा सभा का ध्यान परमाणु शस्त्रों के फैलाव को रोकने की एक ऐसी अंतर्राष्ट्रीय संधि करने की अनिवार्य आवश्यकता की ओर आकर्षित करना चाहती है जो यूरोप में परमाणु युद्ध के खतरे को समाप्त करदे और जो पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य के परमाणु शस्त्रास्त्रों को हासिल करने एवं उनका उत्पादन तथा प्रयोग करने के सभी प्रयत्नों को रोक दे।

परमाणु शस्त्रास्त्रों की संवृद्धि, तथा फैलाव को रोकने की ऐसी संधि, जर्मन जनता के राष्ट्रीय हितों के अनुकूल भी है। जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने बार बार इस तथ्य का उल्लेख किया है कि पश्चिम जर्मनी की सेना को नाभिकीय शस्त्रास्त्रों से लैस करना, या इसको इन परमाणु हथियारों के इस्तेमाल करने के फैसले में साझीदार बनाना, पोट्स्डम संधि के कथ्य एवं तथ्य का घोर उल्लंघन होगा, और इससे जर्मनी का पुर्नएकीकरण असंभव बन जायेगा। परमाणु हथियारों की संवृद्धि तथा प्रसार को रोकने से संबन्धित अन्तर्राष्ट्रीय संधि, पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य द्वारा परमाणु हथियारों पर नियन्त्र हासिल करने को काफी कठिन बना देगी, और विभाजित जर्मनी के पुनर्एकीकरण में सहायक सिद्ध होगी। इसके अलावा इस प्रकार की संधि दोनों जर्मन राज्यों के बीच सद्भावना और शांति का रास्ता हमवार करके एक दूसरे के निकट ला देगी।

इसलिये जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, जर्मनी और यूरोप में शांति को सुरक्षित करने के लिये, संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य-देशों से यह प्रार्थना करती है कि वे, नाभिकीय शस्त्रास्त्रों की संवृदिध एवं फैलाव से संबन्धित सोवियत संघ द्वारा पेश किये गये संधि के मसौदे का समर्थन करके जल्दी से जल्दी इसको एक सुदृढ़ संधि का रूप प्रदान करें।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार के विचार में परमाणु शस्त्रास्त्रों की संवृद्धि एवं प्रसार को रोकने के संबन्ध में, सोवियत संघ द्वारा, संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के २० वें अधिवेशन में बहस करने के लिये पेश किया गया यह मसौदा उक्त आवश्यकताओं को हर तरह से पूरा करता है। इसलिये जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार इस मसौदे के सुझावों का समर्थन करती है। यदि सोवियत संघ के इस मसौदे के आधार पर, परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने के लिये एक संधि वजूद में आ जाये तो यह दुनिया की दो सब से मज़बूत सैन्य शक्तियों– नाटो और वार्सा संधि संगठनों के आपसी टकराव को रोकने में सहायक सिद्ध होगी, उस टकराव को जिसका अवश्ययम्भावी परिणाम होगा महानाशकारी परमाणु युद्ध, । लेकिन ऐसी संधि इस महानाश को रोक लेगी और यह यूरोप की सुरक्षा की गारंटी भी होगी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार उस प्रत्येक क़दम का समर्थन करेगी जो राष्ट्र संघ की २०वीं महासभा में यूरोप की सुरक्षा और विश्व की शान्ति को मज़बूत बनाने की दिशा में उठाया जायेगा। हमारी सरकार, संयुक्त राष्ट्र संघ की निरस्त्रीकरण समिति के डी सी.–२२४ प्रस्ताव का भी समर्थन करती है जिसके अनुसार एक ऐसे विश्व निरस्त्रीकरण सम्मेलन बुलाने की मांग की गई है जिसमें दुनिया के सभी देश, समान अधिकारों और कर्तव्यों के आधार पर, भाग लें। इस सम्मेलन की तैयारी और सफलता के लिये हमारी सरकार, यथा शक्ति, हर प्रकार का सहयोग देने के लिये तैयार है। यह सम्मेलन समस्त दुनिया के लोगों की शांति संबन्धी आकांक्षाओं को प्रोत्साहन और प्रेरणा प्रदान करेगा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, भूमिगत परमाणविक परीक्षणों को खत्म करने के प्रस्तावों का भी स्वागत करती है। अन्य देशों से सभी सैनिक अड्डे हटाने की मांग का भी हमारी सरकार, प्रबल समर्थन करती है।

नाभिकीय शस्त्रास्त्रों के प्रसार को रोकने के लिये संधि का, जर्मन राष्ट्र के भविष्य और यूरोप की सुरक्षा के साथ गहरा तथा विशेष संबन्ध है। इसलिये, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के २० वें अधिवेशन में इस मद्द को विचाराधीन लाने के पक्ष में है, और इस विषय में हमारे विचार महासभा के सामने रखने के लिये हमारी सरकार एक आधिकारिक प्रतिनिधि भेजने के लिये तैयार है।"

सुबह के भूले घर लौट रहे हैं

अक्तूबर मास के, केवल पहले ६ दिनों में पश्चिमी जर्मनी और पश्चिमी बर्लिन के १८८ व्यक्तियों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली है। इनमें से १०० शरणार्थी ऐसे हैं जो सुबह के भूले कहे जा सकते हैं—अर्थात् यह व्यक्ति पहले जर्मन जनवादी गणतंत्र के ही नागरिक थे जो पश्चिमी जर्मनी के झूठे प्रचार का शिकार होकर, अधिक अच्छे जीवन की तलाश में वहां गये थे। अब निभ्रम होकर ये स्वदेश लौटे हैं।

व्यक्तित्व की झांकी

प्रोफेसर लीज़ेलोट हरफोर्थ

विश्वविद्यालय की पहली जर्मन महिला रेक्टर

भौतिकी की अन्तर्रष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान, प्रोफेसर लीज़ेलोट हरफोर्थ ड्रेस्डेन टेकनिकल विश्वविद्यालय की रेक्टर (उप-कुलपति) बन गई हैं। श्रीमती (प्रो.) लीज़ेलोट हरफोर्थ, प्रथम जर्मन महिला हैं जो रेक्टर बनी हैं। इस प्रकार इस पद पर इनकी नियुक्ति एक ऐतिहासिक महत्व रखती है।

इस विश्वविद्यालय के साथ लगभग १५० संस्थान बावस्ता हैं जिनमें लगभग १८,००० विद्यार्थी पढ़ते हैं। यह तकनीकी विश्व-विद्यालय, यूरोप के सब से बड़े पोलिटेकनीकी शिक्षा केंद्रों में से एक है। और इस विश्वविद्यालय में अनेक देशों के विद्यार्थी भी पढ़ते हैं जिन में भारत के छात्र भी शामिल हैं। पिछले कुछ वर्षों में ५० भारतीय शोधार्थी ड्रेस्डेन टेकनिकल विश्वविद्यालय से डाक्टर की उपाधि लेकर भारत लौटे हैं।

प्रो० हरफोर्थ का जन्म सन १९१६ में हुआ। सन् १९३६ से १९४० तक इन्होंने भौतिकी का गंभीर अध्ययन किया। ४९ वर्षीया प्रोफेसर हरफोर्थ, विश्व प्रसिद्ध जर्मन वैज्ञानिक, प्रोफेसर गाइगर की शिष्या रही हैं। भौतिकी में शोध-कार्य समाप्त करने और सन १९४८ में डाक्टर की उपाधि प्राप्त करने के बाद वह, ल्यूना-मेर्सेबुर्ग के रसायन कालेज में कई वर्षों तक अध्यापन कार्य करती रहीं। सन १९६० में उनको ड्रेस्डेन तकनीकी विश्वविद्यालय का रेक्टर पद संभालने के लिए बुलाया गया। . . .डा. लीज़ेलोट हरफोर्थ कई वर्षों तक, तेजसक्रिय समस्थानिक (रेडियोएक्टिव आइसोटोप्स) संस्थान में प्रोफेसर के पद पर आसीन रहीं हैं।

प्रोफेसर लीज़ेलोट हरफोर्थ जर्मन जनवादी गणतन्त्र की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) तथा राज्य परिषद की सदस्य भी हैं।

इसके अलावा यह जर्मन विदुषी ज. ज. ग. के 'भौतिकी, रसायनिक एवं जीव-भौतिक संघ' और कोमेकोन (COMECON) देशों के 'परमाणु शक्ति के शांतिप्रिय प्रयोगों के स्थाई आयोग' की सदस्य भी हैं।

ड्रस्डन टकनिक्ल विश्वविद्यालय

ज. ज. ग. द्वारा रोडेशिया में स्वाधीनता की एक पक्षीय घोषणा की कड़ी निन्दा

गोरे नस्लवादियों द्वारा रोडेशिया की सरकार हथियाने पर—इयान स्मिथ द्वारा रोडेशिया की स्वतन्त्रता की एक पक्षीय घोषणा पर—जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार से निम्न बयान दिया है :

"रोडेशिया में वहां की नस्लवादी गोरी सरकार ने जिस तथाकथित "स्वतन्त्रता" की एकतर्फा घोषणा की है, वह वहां के केवल २०७,००० गोरी चमड़ी वाले लोगों के हित में है, और शेष ४० लाख अफ्रीकी बहुसंख्यक जनता की आशाओं एवं आकांक्षाओं का हनन है। इस तथाकथित स्वतन्त्रता की इस एकपक्षीय घोषणा से रोडेशिया की अफ्रीकी जनता अपने देश के निर्माण कार्य में सक्रिय सहयोग प्रदान करने से वंचित रहेगी और अल्पसंख्यक गोरे नस्लवादियों की गुलाम बन जायेगी। इस प्रकार, इन गोरे नस्लवादियों ने एक अवैध सत्ता कायम करके न्याय को कुचल दिया है। राजसत्ता हथिया कर ये नस्लवादी, वहां की अफ्रीकी जनता को दमन और शोषण की चक्की में अधिक मात्रा में पीसा जायेगा।

"जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार रोडेशिया के नस्लवादियों की इस उत्तेजनात्मक कार्रवाई की ज़बरदस्त निन्दा करती है। यह उत्तेजनात्मक कार्रवाई क़ानून और संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रपत्र के खिलाफ है, और इससे अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा भी खतरे में पड़ जाती है। हमारी सरकार इस सत्ता को कभी मान्यता नहीं देगी।

"इसके साथ ही साथ, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, अपनी आज़ादी और आत्मनिर्णय के अधिकार के लिये संघर्षरत रोडेशिया की अफ्रीकी जनता को अपनी और ज. ज. ग. की जनता की ओर से पूरी सहानुभूति और सहायता का विश्वास दिलाती है।

"जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ग्रेट-ब्रिटेन के ढुलमुल रवैये की भी निन्दा करती है जिसने रोडेशिया के नस्लवादियों को सत्ता हथियाने से रोकने के लिये सभी साधनों के अपनाने में टालमटोल किया। उपनिवेशवादी शिकंजे और शासन को बरक़रार रखने के लिये, रोडेशिया के नस्लवादी राजनीतिज्ञों द्वारा आज़ादी की एकतर्फा घोषणा करना, अफ्रीका के दक्षिण में एक "नस्लवादी–गुट" क़ायम करने की दिशा में पहला क़दम है। इस "गुट" में दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य, गोरे नस्लवादियों द्वारा शासित रोडेशिया और पुर्तगाल के उपनिवेश, मोज़ाम्बीक तथा अंगोला शामिल होंगे। इसलिये यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य, (रोडेशिया में) 'स्मिथ' की नस्लवादी सरकार को, बहुत समय से, बहुत बड़ी मात्रा में आर्थिक, सैनिक एवं राजनीतिक सहायता देता रहा है।

बर्लिन स्थित 'जर्मन-अफ्रीकी संगठन' ने रोडेशिया की जनता को, जर्मन जनवादी गणतंत्र के पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया है। अपने एक बयान में रोडेशिया में गोरे नस्लवादियों द्वारा सत्ता हथियाने पर 'संगठन' ने ज़बरदस्त विरोध प्रकट किया है। बयान में कहा गया है: ". . . स्वाधीनता और मानवता के नाम पर, हम इस नस्लवादी विद्रोह की ज़बरदस्त निन्दा करते हैं। नस्लवादियों द्वारा रोडेशिया में शासन-सत्ता हथियाना, तमाम अन्तर्राष्ट्रीय एवं नागरिक अधिकारों का उल्लंघन है, और इसका मात्र उद्देश्य है बहुसंख्यक अफ्रीकी जनता पर मुट्ठी भर गोरी चमड़ी वाले लोगों का शासन थोप देना। . . ." जर्मन अफ्रीकी संघ, अफ्रीकी राज्यों द्वारा इस गोरी तानाशाही के खिलाफ उठाये गये सभी क़दमों का समर्थन करता है।

"जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, संयुक्त राष्ट्र संघ और अफ्रीकी एकता-संघठन के उन फैसलों का यथावत समर्थन करती रहेगी जो फैसले रोडेशिया की बहु-संख्यक अफ्रीकी जनता की आज़ादी और रोडेशिया की समस्या को हल करने के पक्ष में लिये जायेंगे। जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार का यह पूरा विश्वास है कि रोडेशिया की अफ्रीकी जनता को समस्त अफ्रीकी जनता और दुनिया भर की प्रगतिशील शक्तियों का सहयोग एवं समर्थन प्राप्त होगा, और वह अपने न्यायपूर्ण संघर्ष में विजयी होगी। . . ."

ऊ थाँत को ज. ज. ग. के विदेश मंत्री का तार

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्री श्री ओटो विनज़र ने, संयुक्त राष्ट्र संघ के महा मंत्री ऊ थांत को एक तार भेज दिया है जिसमें रोडेशिया के नस्लवादियों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून की अवहेलना करके वहां की सत्ता हथियाने का कड़ा विरोध प्रकट किया गया है। इसके अलावा तार में यह भी कहा गया है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार रोडेशिया की उक्त नस्लवादी सरकार को मान्यता नहीं देगी।

महा-मंत्री ऊथांत को तार द्वारा यह भी विश्वास दिलाया गया है कि ज. ज. ग. संयक्त राष्ट्र संघ और 'अफ्रीकी एकता संगठन' द्वारा पास किये गये उन सभी प्रस्तावों का समर्थन करती है जो रोडेशिया की समस्या को प्रजातान्त्रिक आधार पर—अर्थात् रोडेशिया की जनता के आत्म-निर्णय के आधार पर, हल करने से संबंध रखते हैं।

पश्चिमी जर्मनी: नस्लवादियों का समर्थक

पश्चिमी जर्मन की सरकार, संयुक्त राष्ट्र द्वारा पास किये गये उस फैसले का उल्लंघन करेगी जिसके अनुसार दुनिया के सभी राज्यों से, रोडेशिया की नस्लवादी स्मिथ सरकार से आर्थिक अ-सहयोग करने की अपील की गई है। बोन सरकार के इस नस्लवाद-समर्थक रवैये पर, बोन सरकार के प्रेस-प्रमुख वान हासे और पश्चिम जर्मन विदेश मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने अपने बयानों में प्रकाश डाला।

प. जर्मन धन्ना सेठ नस्लवादी-सरकार का समर्थक

राजनीति के जानकार सूत्रों का कहना है कि पश्चिमी जर्मनी के बड़े इजारेदार एलफ्रेड क्रुप्प ने हाल ही में दक्षिण अफ्रीका और अंगोला का जो दौरा किया, उसका एक मुख्य उद्देश्य रोडेशियाकी गोरी, नस्लवादी स्मिथ सत्ता को मजबूत बनाना भी था। पश्चिमी जर्मनी के इस धन्ना सेठ के इस दौरे को उस आक्रामक सैनिक संगठन की पृष्ठभूमि में भी देखना चाहिये जो रोडेशिया, दक्षिण अफ्रीका और पुर्तगाल के नस्लवादी, संगठित करने की गुप्त योजनाओं के आधार पर तैयार किया जा रहा है। इस संदर्भ में इस सर्वविधित तथ्य को भी ध्यान में रखना चाहिये कि दक्षिण अफ्रीका में क्रुप्प, बोन और प्रेटोरिया की उस साज़िश का अभिन्न अंग है जिसका एक मुख्य उद्देश्य है नाभिकीय शस्त्रास्त्रों और ऐसे ही महानाशकारी हथियारों का उत्पादन।

प. जर्मन अखबार द्वारा नस्लवादी सत्ता का स्वागत

पश्चिमी जर्मनी के अखबार, "इण्डस्ट्री कूरियर" ने नस्लवादी स्मिथ द्वारा रोडेशिया की राज्य सत्ता हथियाने का स्वागत किया है, और इयान स्मिथ की प्रशंसा की है। अखबार ने लिखा है:

"रोडेशिया के गोरे लोगों का यह साहसिक विद्रोह, २० वर्षों के उस इतिहास में पहला निर्णायक मोड़ बन जायेगा जिसमें जल्द-बाज़ी के कारण, श्वेत चामवासी, अफ्रीका में अपनी ज़िम्मेदारी से भागता रहा है। . ."

प. जर्मनी तथा दक्षिण अफ्रीका में राकेट बनाने की सांठ-गाँठ

"दक्षिण - पश्चिम अफ्रीकी जनता संगठन" के उप-प्रधान, श्री लुई नेलेनगानी ने, हाल ही में एक पत्रकार-सम्मेलन में कहा कि उक्त 'संकठन' ने, संयुक्त राष्ट्र संघ की उपनिवेशवाद समाप्त करने वाली कमेटी को जो स्मृति-पत्र पेश किया है, वह ठोस तथ्यों पर आधारित है इस समृति-पत्र में इस रहस्य का उद्घाटन किया गया है कि दक्षिण पश्चिम अफ्रीका में सूमेब नामक स्थान के निकट जो राकेट वैधशाला बनाई गई है वह सैनिक उद्देश्यों के लिये बनाई गई है, वैज्ञानिक उदेद्श्यों के लिये नहीं। इस रहस्योद्घाटन से पश्चिम जर्मन सरकार के झूठ की कलई खल गई है।

श्री नेलेगानी के इस बयान से पश्चिमी जर्मनी की सरकार के इनकारों का असली रूप भी सामने आया है। इसके अतिरिक्त, इस बयान ने बोन सरकार द्वारा राष्ट्र संघ के प्रपत्र एवं बुनियादी प्रस्तावों के उल्लंघन की नीति को भी नंगा किया है।
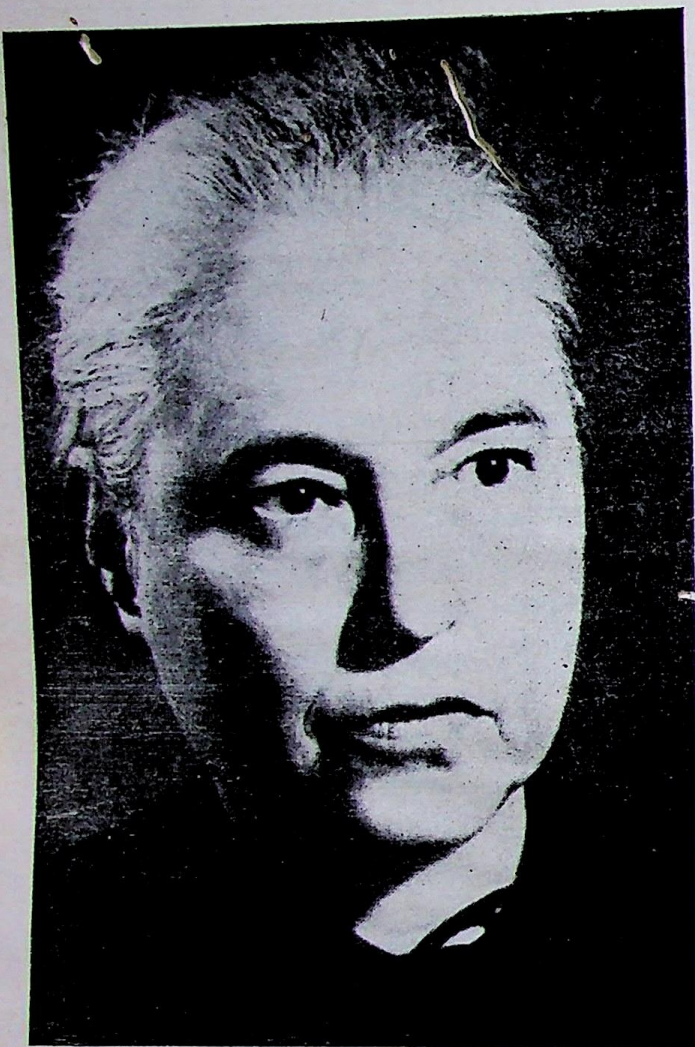
आन्ना सेगर्स

साहित्य की साधिका

डा. वोल्फगांग योहो

श्रीमती अन्ना सेगर्स का जन्म, १९ नवम्बर, सन् १९०० में मेन्ज़ में हुआ। कोलोन और नाइडेलबर्ग में उन्होंने इतिहास तथा दर्शन का अध्ययन किया, और इन स्थानों में वह उन देशों के देशभक्तों के सम्पर्क में आईं जिनमें प्रतिक्रियावादियों का आतंकपूर्ण एवं क्रूर शासन चल रहा था। श्रीमती अन्ना सेगर्स के राजनीतिक विचारों पर इस सम्पर्क का स्थायी प्रभाव पड़ा। क्रांतिकारी विद्यार्थी क्लबों और संस्थानों में उन्होंने भाग लिया। इसके परिणामस्वरूप उनको समाज में मौजूद राजनीतिक एवं सामाजिक अन्तर्विरोधी का ज्ञान प्राप्त हुआ। सन १९२८ में वह जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य बन गयीं।

सन् १९३३ में, हिटलरी फासिस्तों ने श्रीमती अन्ना सेगर्स को गिरफ्तार किया, लेकिन वह फांसिस्त शासकों की आंखों में धूल झोंककर फ्रांस पहुंचने में सफल हुयीं। सन् १९४० से १९४७ तक उन्होंने मैक्सिको में देश-निर्वासिता का जीवन बिताया। हिटलर के बर्बर फासिस्तवाद की पराजय के बाद, सन् १९४७ में वह जर्मनी लौट आयीं। यहां श्रीमती सेगर्स साहित्य के क्षेत्र में प्रवर्तक का कार्य करने में संलग्न हुयीं। विश्व शांति आन्दोलन में भी वह सक्रिय रहीं। सन १९५१ और १९५९ में जर्मन जनवादी गणतन्त्र की सरकार ने श्रीमती सेगर्स को, उनकी साहित्य साधना के लिए, राष्ट्रीय पुरस्कार (प्रथम श्रेणी)

प्रदान किया। सन् १९५१ में ही उनको "अन्तर्राष्ट्रीय लेनिन शांति पुरस्कार" से भी सम्मानित किया गया था।

३० वर्ष पूर्व, जब अन्ना सेगर्स नाम की एक अज्ञात लेखिका को, उनके प्रथम लघु उपन्यास 'सेन्ट बारबरा के मछेरों का विद्रोह' पर वाइमर गणराज्य में, सुप्रसिद्ध 'क्लाइस्ट पुरस्कार' प्रदान किया गया, तो उस समय के साहित्य के आलोचक पंडितों के कान खड़े हो गये। खड़े होते भी क्यों नहीं? अन्ना सेगर्स की इस कृति ने, उस युग के समर्थ लेखकों की कृतियों को पीछे छोड़ दिया था। आश्चर्य की बात तो यह थी कि उनकी यह कृति कलात्मक दृष्टि से भी पूर्ण थी। इसमें विषय की नवीनता, सुगठित शिल्प, भाषा का बहाव और मौलिक शैली का समिश्रण था। इतना ही नहीं; इस कलात्मक कृति में सामाजिक यथार्थ के बीज भी छुपे थे।

इस वर्ष के विगत मास, अर्थात् नवम्बर में, श्रीमती अन्ना सेगर्स ६५ वर्ष की हुयीं। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के 'राष्ट्रीय पुरस्कार' और अन्तर्राष्ट्रीय 'लेनिन शांति पुरस्कार' की विजेता, श्रीमती सेगर्स, जर्मन लेखक संघ की प्रधान हैं। 'सेन्ट बारबरा के मछेरों का विद्रोह' के सृजन के बाद, साहित्य की इस साधिका ने साहित्य का अनवरत सृजन किया है। उन्होंने आज तक दर्जनों उपन्यास कहानियां और लघु-उपन्यास लिखे हैं। साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण करते समय उन्होंने अपने सामने दो उद्देश्य रखे थे: एक, सृजनात्मक साहित्य की रचना करना, और दूसरा, साहित्य के महान अस्त्र को समाजवाद के लिए प्रयुक्त करना। कहने की आवश्यकता नहीं कि लेखिका अपने इस दोहरे उद्देश्य में पूर्ण रूप से सफल रहीं। उनका बड़ा से बड़ा उपन्यास, और छोटी से छोटी कहानी उनके आदर्शों और विचारों की मूर्तिमान, कलात्मक अभिव्यक्ति है। ...**साथी** उपन्यास में श्रीमती अन्ना

सेगर्स ने विश्वव्यापी फासिस्त-विरोधी लड़ाई को चित्रित करके अमर कर दिया है। **फरवरी मास से गुज़रता रास्ता** में लेखिका ने वियाना के क्रांतिकारी श्रमिकों को वर्ण्य विषय बनाया है। इसी प्रकार अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास **सातवां क्रास** में उन्होंने अपने देश जर्मनी के फासिस्त-विरोधी योद्धाओं की अमर गाथा चित्रित की है। उपन्यासों की श्रृंखला में **निणय** लेखिका का (आज तक) अन्तिम उपन्यास है जिस में जर्मनी के पूर्वी भाग (अर्थात् जर्मन जनवादी अगणतंत्र–सं) में श्रमिक जनता की जीवन-गाथा का सजीव चित्रण हुआ है।

अपनी अन्य रचनाओं में––कहानियों, लघु उपन्यासों आदि में––श्रीमती अन्ना सेगर्स ने फासिस्तवाद की काल-रात्रि में जर्मन जनता की दयनीय एवं दरिद्रतापूर्ण स्थिति का चित्रण किया है। इस तरह जर्मनी के, निकटतम अतीत के इतिहास को, लेखिका ने साहित्य का परिधान पहना दिया है। इस संदर्भ में उनके निम्न उपन्यास उल्लेखनीय हैं: **मुक्ति, उसके सिर की कीमत** (उपन्यास) और **जीवित शव** संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि जर्मनी की यह साहित्य साधिका, समय के विशाल मार्ग की सही दिशा से अर्थात् सामाजिक यथार्थ के चित्रण से कभी विचलित नहीं हुई।

पिछले वर्षों में, जर्मनी तथा अन्य देशों में, समाजवादी दृष्टिकोण से सामयिक विषयों पर कई रचनायें लिखी गई हैं। फिर कौन-सी ऐसी खास बात है जो श्रीमती अन्ना सेगर्स की कृतियों को, उक्त रचनाओं में एक विशिष्ट और उच्च स्थान देती है? मेरे विचार में लेखिका की कृतियों में सामाजिक और राजनीतिक विषयों को, थोथे नारेबाज़ी के अवगुण से दूर रखकर, एक उच्च कलात्मक रूप में प्रस्तुत करना इसका प्रमुख कारण है। उनका सृजनात्मक साहित्य मानवता की सूक्ष्म भावनाओं से ओत-प्रोत है, इसलिए वह हृदय की तारों को छूता तथा झंकृत करता है, और पाठकों को कर्मण्य बना देता है। जर्मनी के समकालीन साहित्य की अधिकांश कृतियों के बारे में भी ऐसा नहीं कहा जा सकता।

श्रीमती अन्ना सेगर्स की रचनाओं में पूरे एक युग के सहस्त्रों वीरतापूर्ण संघर्ष और दुख-दर्द चित्रित हुए हैं और इन संघर्षों एवं दुखों के नायक हैं हाड़-मांस के बने हुए साधारण लोग। इस सब के चित्रण में लेखिका ने कला का उच्च स्तर अपना कर अपने समकालीन लेखकों के लिए उन्होंने एक आदर्श स्थापित कर दिया।

अपनी कृतियों में, पात्रों का निर्माण करते समय, श्रीमती सेगर्स ने तथाकथित 'शुद्ध नायक' अथवा 'शुद्ध खलनायक' का चयन नहीं किया, क्योंकि यथार्थ जीवन में उनका अस्तित्व नहीं के बराबर ही है। उन्होंने ऐसे पात्रों को चुना है जो यथार्थ जीवन के उतार-चढ़ाव में जी रहे हैं। ऐसे पात्रों का चयन और चित्रण करके, क्या लेखिका, कई पश्चिमी और ह्रासोन्मुख लेखकों की तरह 'मौलिक' होने का दावा करना चाहती हैं? नहीं, ऐसा नहीं है।.... वह अपने पात्रों के प्रति सहृदय है। वह उनसे प्यार करती हैं और उनका निर्माण करती हैं। ऐसे पात्रों को गढ़कर और विकसित करके श्रीमती सेगर्स, उनकी उच्चतर सामाजिक चेतना को अभिव्यक्त करती हैं। जीवन के उलझे हुए गलियारे से लेखिका, अपनी कथावस्तु को पकड़कर और अपने पात्रों का हाथ थाम कर उनको समाजवाद के राजमार्ग पर लाकर खड़ा कर देती है। यथार्थ जीवन से लिए गये मानसिक अन्तरद्वंद्व और कई अन्तविरोधों से युक्त पात्रों का चरित्र-चित्रण करके, श्रीमती सेगर्स, पाठकों का तादातम्य अपने पात्रों से जोड़ देती हैं, और ज्यों-ज्यों पात्र विकसित होते हैं, पाठकों की चेतना भी उनके साथ-साथ विकसित होती जाती है। इस प्रक्रिया में वह छिद्रान्वेषी के रूप में कहीं भी नहीं आतीं। वह अपनी रचनाओं में अपने अनुभूत अनुभवों को आकार देती हैं, और इस तरह वह इस बात का प्रयास करती हैं कि उनके पाठक भी उनके अनुभूत यथार्थों के साझीदार बन जायें।

श्रीमती अन्ना सेगर्स कला को एक निरुद्देश्य न मानकर इसको संघर्ष का एक सशक्त अस्त्र और साधन मानती हैं। अतिरंजना और पिष्टपेषण को वह एक दोष मानती हैं। उनके विचार में लोगों को वे चीजें जान लेनी चाहिये जो ज्ञातव्य और आवश्यक हैं। सामाजिक मानवतावाद में लेखिका की अपार आस्था है, लेकिन इसकी अभिव्यक्ति में वह भाषावावेष और सस्ती भावुकता का आश्रय नहीं लेतीं, बल्कि वह पाठक को यथार्थ का साक्षात्कार करा के उसको सोचने पर विवश करती हैं। सत्य को कलात्मक परिधान में सीधे सादे ढंग से चित्रित करना––यही इस जर्मन साहित्य साधिका के सृजन की महानता है।

रोस्टोक में श्रीमती अन्ना सेगर्स अपने प्रशंसकों के बीच

ज. ज. ग. की अर्थव्यवस्था की झलक

एस. पी. चोपड़ा
(ईस्टर्न इकानामिस्ट के वरिष्ठ सहायक-सम्पादक)

इस वर्ष अक्तूबर में मुझे जर्मन जनवादी गणतन्त्र में एक हफ्ते से अधिक रहने का अवसर मिला। 'जर्मन-दक्षिण पूर्व एशियाई मैत्री संघ' के मेहमान की हैसियत से मैंने ज.ज.ग. के उत्तर में रोस्टाक से लेकर दक्षिण में ड्रेसडेन तक भ्रमण किया। ज.ज.ग. की यह मेरी पहली यात्रा नहीं थी। पिछले वर्ष भी मैंने लाइपज़िग में १० दिन बिताये थे। मैं वहां लाइपज़िग मेले की लोकप्रियता का अध्ययन करने के सिलसिले में गया था। इस वर्ष उस मेले के बाद मैंने स्वयं ही पूर्वी जर्मनी की यात्रा करने की इच्छा व्यक्त की, क्योंकि मैं यह देखना चाहता था कि द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद इस देश ने कितनी प्रगति की है।

मैंने एक पूरा दिन रोस्टोक के जहाज़ कारखाने को देखने में लगा दिया जिसकी उत्पादन क्षमता प्रति वर्ष १२ से १४ जहाज बनाने तक पहुंच चुकी है। कुछ वर्षों में यह क्षमता २० जहाज प्रति वर्ष हो जायगी। यह जहाज कारखाना दुनिया के दूसरे जहाज कारखानों की ही तरह है। फर्क यही है कि इसमें स्वचालित यंत्रों का स्तर बहुत ऊंचा है और इसमें भारी संख्या में स्त्रियां भी काम करती हैं, जिनमें से कई तो बड़े-बड़े क्रेनों का संचालन करती हैं। इस शहर के सारे कार्यकलाप जहाज़ कारखाने और जहाज़रानी से संबंधित हैं, इसलिए कोई भी यहां मछुवों को बड़ी तादाद में देखेगा जो भारी जाल लेकर समुद्र में, बड़े शिकार की खोज में जाते हैं और इस तरह खाद्य सामग्री को सुलभ बनाने में सहयोग देते हैं।

ड्रेसडेन की यात्रा दो कारणों से मेरी स्मृति में सदा वसी रहेगी। पहली बात तो है वहां की आर्ट गैलरी--जिसे भारत में हम आमतौर पर संग्रहालय कहते हैं। वहां एक ऐसे दिन भी जब छुट्टी नहीं थी दर्शकों की बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठा थी। मेरे लिए विशेष दर्शनीय वस्तु थी औरंगज़ेब के दरबार की एक अनुकृति--जिसे एक कलाकार ने ढाई सौ वर्ष पूर्व बनाया था। मुगल काल की शान-शौकत और वैभव का पूरा प्रभाव डालने के लिए वह अनुकृति हाथी आदि के साथ अत्यन्त सजीवता के साथ प्रदर्शित की गयी है। आर्ट गैलरी में संसार भर से एकत्र की गयी कलात्मक वस्तुओं का अत्यन्त सुन्दर संग्रह भी है, जिसे देखना चित्रकला, मूर्तिकला आदि के बारे में अपने अनुभवों को समृद्ध करना है। इससे भी कहीं अधिक ब्राके वेब म्यूहलेनबाउ ड्रेसडेन में जानने को मिलीं। यह एक कारखाना है जिसने भारत को अनेक आरा-मिलें दी हैं। कारखाने के मैनेजर ने खुद मुझे कारखाने में घुमाया और सारी चीजें दिखायीं। यह कारखाना मजदूरों और तकनीकी कर्मचारियों की मेहनत और उच्च स्तर की तकनीकी दक्षता का जीता-जागता प्रमाण था। हर विभाग में काम के प्रति मैंने जो लगन देखी वह मेरे लिए एक शिक्षाप्रद अनुभव था। मैं विशेषरूप से स्कूल में पढ़ने वाली एक १५ वर्ष की लड़की से प्रभावित हुआ जो वहां कुछ प्रारम्भिक काम सीखने और यह देखने आयी थी कि वह वहां पूरे समय तक काम करने लायक है या नहीं। जीवन के प्रारम्भिक दौर में छात्र-छात्राओं को फैक्टरी की ज़िन्दगी का कुछ अनुभव प्राप्त करने का अवसर दिया जाता है ताकि वे अपने मन मुताबिक अपने भावी पेशे का चुनाव कर सकें।

जब मैं 'ओरवो' फैक्टरी में गया तब मुझे पहले-पहल अंग्रेजी के चार अक्षरों (ORWO)
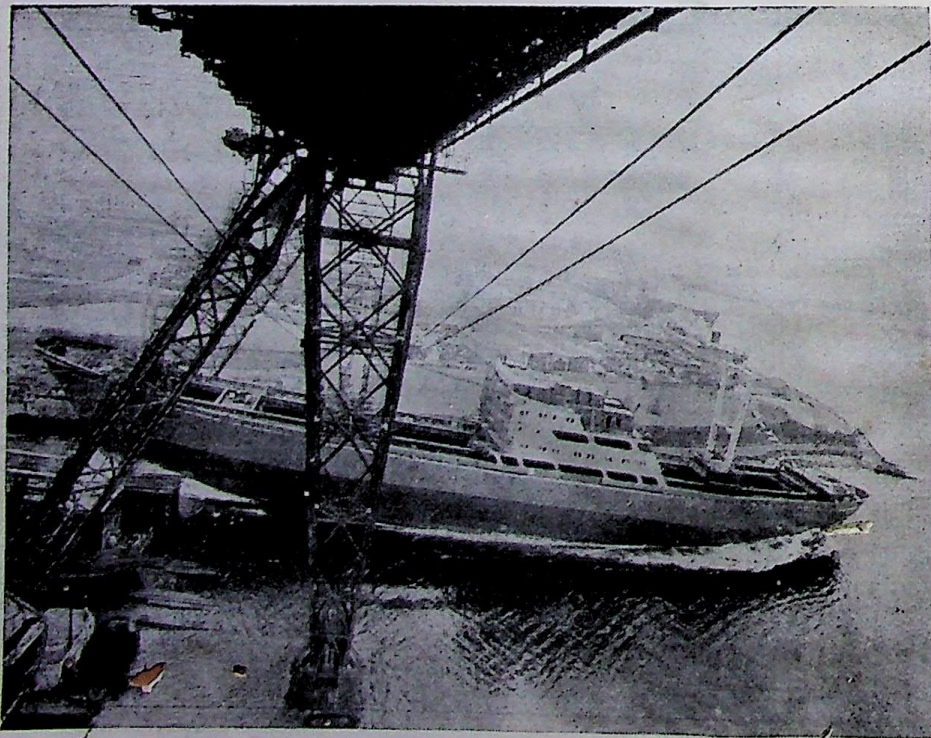
रोस्टोक का पोत निर्माण कारखाना छोड़ता हुआ १०,३०० टन वजन वाला लिज़िलोट हरमान्न नामक जहाज़

. . . . का अर्थ और महत्व समझ में आया। यह शब्द 'ओरिजिनल वोल्फेन' में दोनों शब्दों के प्रथम दो अक्षरों को लेकर बना है। वोल्फेन कारखाना बहुत पहले से कैमरे की फिल्में बनाता रहा है। इसकी फिल्में पहले 'आगफा' के नाम से बिकती थीं जो अब भी पश्चिमी जर्मनी की उसी नाम की कम्पनी द्वारा बनायी जाती हैं। एक काफी दिलचस्प बात यह है कि मैंने 'ओरवो' फिल्में पूरे यूरोप में, यहां तक कि पश्चिमी जर्मनी में भी बिकते हुए देखा। 'ओरवो' फिल्म दुनिया की अच्छी से अच्छी फिल्मों के बराबर है और उसकी कीमत में भी कोई खास अन्तर नहीं है। भारत में 'ओरवो' फिल्में का बड़ी मात्रा में आयात हो रहा है, क्योंकि हम उसे रुपये की अदायगी पर पाते हैं और उसके लिए हमें अपनी बहुमूल्य विदेशी मुद्रा खर्च नहीं करना पड़ती। भारत और दूसरे ४५ देशों में 'ओरवो' फिल्मों का आयात गत १० वर्षों में तेजी से बढ़ा है। 'ओरवो' के प्रतिनिधि ३१ गैर-समाजवादी देशों में भी हैं और इसके अलावा १५ दूसरे देशों में भी जहां उसके प्रतिनिधि नहीं हैं इसका आयात किया जाता है। यह कारखाना १९४५ में पूर्ण ध्वस्त हो गया था और जनता की मेहनत और लगन से पुनर्निर्माण के बाद तेज़ी से इसका विस्तार हो रहा है। इस बात पर आसानी से विश्वास नहीं होता कि यह कारखाना, जो आज दुनिया के सबसे फिल्म-उत्पादकों में है, १९४५ में ध्वस्त हो जाने के कारण इसका उत्पादन एकदम ठप पड़ गया था। यह कारखाना अपने वर्तमान रूप में मजदूरों की बहादुराना कोशिशों का नतीजा है जिसकी बदौलत दुनिया के नक्शे में यह फिर अपनी जगह बना सका।

'ओरवो' में करीब १५ हज़ार मजदूर काम करते हैं जिनमें से आधी स्त्रियां हैं। स्त्रियों के इस भारी अनुपात का एक कारण यह भी है कि ज.ज.ग. की अर्थव्यवस्था इस समय मानव-शक्ति की कमी के दौर से गुज़र रही है। परोक्ष रूप से यह परिवारों को बहुत सहायक सिद्ध हो रही है, क्योंकि इससे परिवारों में कमाई करने वालों की वृद्धि होने से उनके जीवन स्तर में भी काफी वृद्धि

ड्रेस्डेन की 'सफेद गली' और 'बत्तख चोर फव्वारा

हो गई है। 'ओरवो' कारखाने के वरिष्ट अधिकारियों से बातचीत के बाद मालूम हुआ कि इसके कर्मचारियों की आर्थिक स्थिति बहुत ही अच्छी है। इस कारखाने के १२३० मजदूर, मोटर कार खरीदने की 'प्रतीक्षा सूची' में हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के बाद यहां के कर्मचारियों के पास आराम के साधनों पर खर्च करने के लिए काफी पैसा बचता है। महिला कर्मचारियों की बढ़ती हुई संख्या की सुविधा के लिए किंडरगार्टन स्कूल खोले गये हैं, जिनमें १२०० सीटें हैं। उनमें दिन के समय हर बच्चे की अच्छी तरह देखभाल की जाती है और उसके लिए बहुत कम शुल्क—४ मार्क प्रति सप्ताह लिया जाता है। मुझे बताया गया कि इस कारखाने में दो कारणों से महिलाएं अच्छी कार्यकर्ता साबित हुई हैं। पहली बात तो यह कि इसमें काम बहुत हल्का है और कोई भारी वजन नहीं उठाना पड़ता। दूसरी यह कि स्त्रियों की संवेदनशीलता फिल्म जैसी सूक्ष्म वस्तु के उत्पादन में अत्यन्त उपयोगी होती है।

'ओरवो' में प्रतिवर्ष ५२ करोड़ मार्क की फिल्मों का उत्पादन होता है जिसमें से ३० प्रतिशत का देश में उपयोग होता है और ७० प्रतिशत का निर्यात किया जाता है। इन फिल्मों का सबसे बड़ा खरीदार सोवियत संघ है। इस निर्यात में ४० प्रतिशत समाजवादी देशों को किया जाता है और बाकी ६० प्रतिशत गैर समाजवादी मुल्कों जैसे—भारत, ब्राजील, डेनमार्क, स्वीडेन, आस्ट्रेलिया मिस्र, हालैण्ड आदि को।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में 'कोडक' फिल्मों का पहला स्थान है, लेकिन दूसरे दर्जे पर निश्चय ही 'ओरवो' और 'अगफा' फिल्मों का बराबर स्थान है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिद्वंद्विता बहुत बढ़ गयी है और 'आरो' फिल्मों ने उसमें अपनी जगह बना ली है। इसके दो बुनियादी कारण हैं—इसकी अच्छी किस्म और प्रतिस्पर्धात्मक मूल्य। सन् १९६३ के मुकाबले १९६४ में गैर-समाजवादी देशों में इसके निर्यात में २९ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह निर्यात बढ़ता ही जा रहा है। वसन्त मेले के समय ग्राहकों को १९६६ के लिए अभी से अग्रिम आर्डर बुक करा लेने की सलाह दी गयी क्योंकि जबर्दस्त मांग के कारण देर करने से उन्हें निराशा हो सकती थी।

इस समय 'ओरवो' फिल्मों की कई किस्मों का निर्माण हो रहा है। हमारे देश में काफी समय तक अस्पतालों के लिए 'एक्स-रे' फिल्मों की जरूरत होगी। भारत आज विदेशी मुद्रा की जिन कठिनाइयों के दौर से गुजर रहा है, उसे देखते हुए रुपय की अदायगी पर इन 'एक्स-रे' फिल्मों का मिलना हमारे लिए एक वरदान है।

भारत, औद्योगिक विस

भारत और ज. ज. ग. के ... की

श्री ...
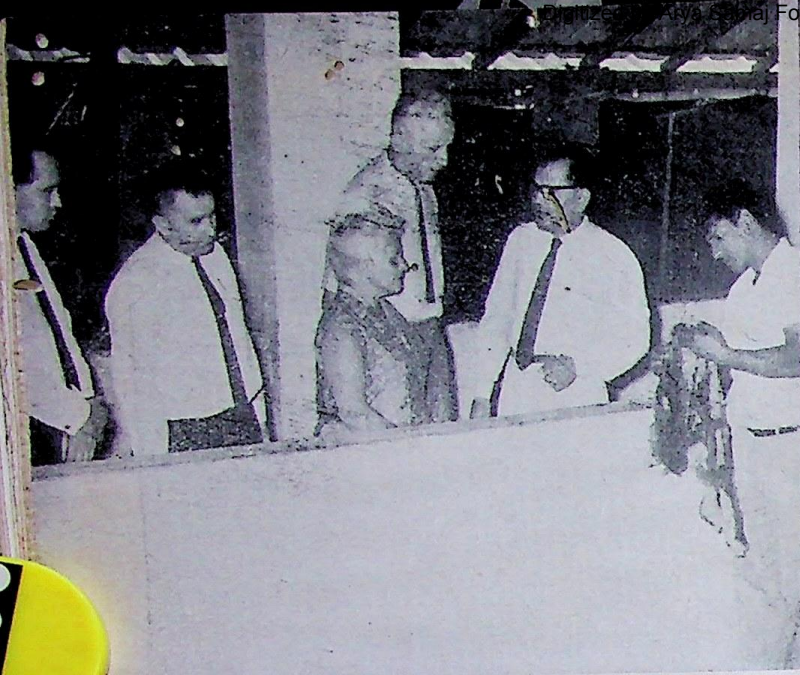
बम्बई, मद्रास, कलकत्ता तथा भारत के अन्य नगरों में स्थित निजी और सरकारी उद्यमों में एक नया वातावरण छाया हुआ है जो भविष्य की एक झांकी प्रदान करता है। मजदूर, तकनीकी दृष्टि से बड़े कठिन और विशिष्ट कामों को कड़े परिश्रम एवं उत्साह से करते हैं। यह तथ्य इस बात को दर्शाता है कि वे बहुत विकसित तकनीकों को सीखने की क्षमता रखते हैं। तकनीशियन तथा इंजीनियर अपनी नई जिम्मेदारियों को समझते हैं, और व्यावस्थापक राष्ट्र के भावी विकास को ध्यान में रखते हुए इन उद्यमों का समुचित संचालन करते हैं।...वह समय अब सदा के लिए बीत गया है जबकि विदेशी अफसर और विशेषज्ञ अपना हुकुम चलाते थे। अनुसंधान केंद्र पूरे देश में फैले हुए हैं और ये केन्द्र विकास की नई विधियों आदि के संबंध में बहुत ही अच्छा काम करते हैं।

ये विचार हैं भारत में जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के नये प्रमुख **श्री हरबर्ट फिशर** के जो उन्होंने इन नगरों का दौरा करने के बाद व्यक्त किये जहां कई वर्षों से ज.ज.ग. के व्यापार-दूतावास की शाखायें स्थित हैं।

जहां भी श्री फिशर गये उन्होंने ज.ज.ग. के विकास में लोगों की काफी दिलचस्पी देखी। ऐसा होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के बाद के वर्षों में जर्मन जनवादी गणतंत्र के सामने भी लगभग उसी प्रकार की कठिनाइयां थीं जिनका आज भारत सामना कर रहा है।

उक्त नगरों के दौरे में श्री फिशर से बार बार यही प्रश्न पूछा गया
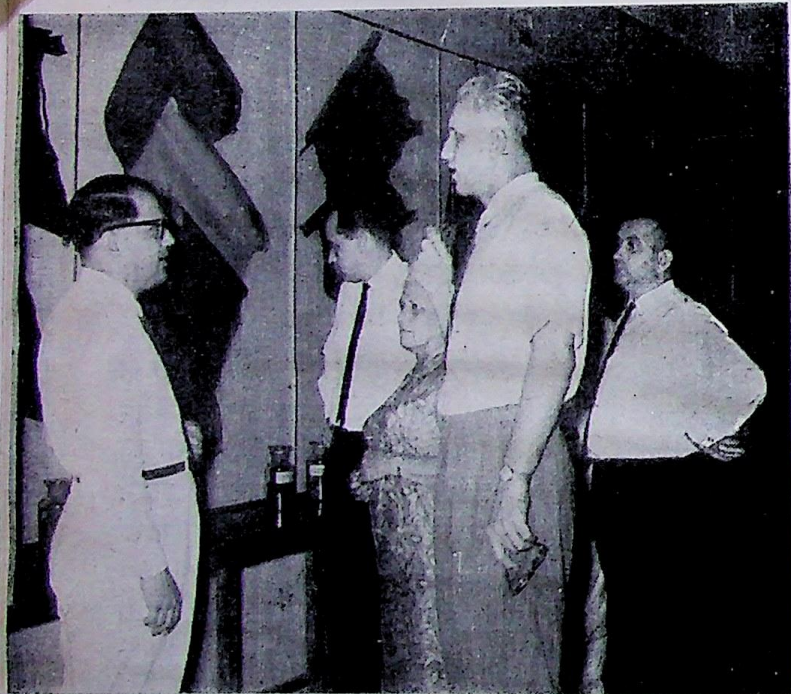
बायें के तीन चित्र :
श्री और श्रीमती फिशर मद्रास के लेदर इन्स्टिट्यूट में

श्री हरबर्ट फिशर बंगाल के गृह तथा वित्त मन्त्री से बातचीत कर रहे हैं ▸

...विकास के पथ पर...

...के ... की अपार संभावनायें

श्री हरबर्ट फिशर के प्रभाव

...कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र, भारत के विकास में किस तरह की सहायता प्रदान कर सकता है। दौरे के दौरान अनेक मंत्रियों, राजनीतिज्ञों, व्यापारियों और बुद्धिजीवियों ने बात-चीत में यह दृढ़ आशा व्यक्त की कि भारत द्वारा जर्मन जनवादी गणतन्त्र की पूर्ण राजनयिक मान्यता जल्द ही एक वास्तविकता बन जायेगी। इस संदर्भ में वे सभी इस बात पर सहमत थे कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र में भारतीय व्यापार-दूतावास की स्थापना इस दिशा में पहला आवश्यक कदम हो सकता है। भारत का यह व्यापार-दूतावास, जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारत के आर्थिक एवं राजनीतिक हितों की देखभाल और विस्तार कर सकेगा। ...यह कदम उठाना विशेष महत्व रखता है, क्योंकि दोनों देशों के बीच, एक-दूसरे के हितानुकूल दीर्घ अवधि के आर्थिक तथा अन्य सहयोग की अथाह संभावनायें मौजूद हैं।

श्री हरबर्ट फिशर जहां भी गये उन्होंने प्रश्नों के उत्तर में यही कहा कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र का समाजवादी अर्थतन्त्र, भारत जैसे विकासशील देशों के औद्योगिक विकास के महत्व को बहुत अच्छी तरह समझता है। इसलिए जर्मन जनवादी गणतन्त्र, भारत और इसी तरह के अन्य देशों के साथ अपना सहयोग बढ़ा रहा है, और दोस्ती के रिश्तों को गहरा एवं मजबूत बनाता जा रहा है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र, भारत के औद्योगीकरण में, और खाद्य समस्या के सुलझाने में काफी सहायता एवं सहयोग प्रदान कर सकता है। दोनों देशों के आपसी रिश्तों का मजबूत होना, हर दृष्टि से, दोनों देशों की भलाई के लिए अच्छा है।

▲ श्री दर्शन सिंह, जो ज.ज.ग. में पढ़ रहे हैं, फसल काटने के काम में हाथ बटा रहे हैं

▼ ज. ज. ग. में भारतीय विद्यार्थियों ने, फसल कटाई के महोत्सव में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया।
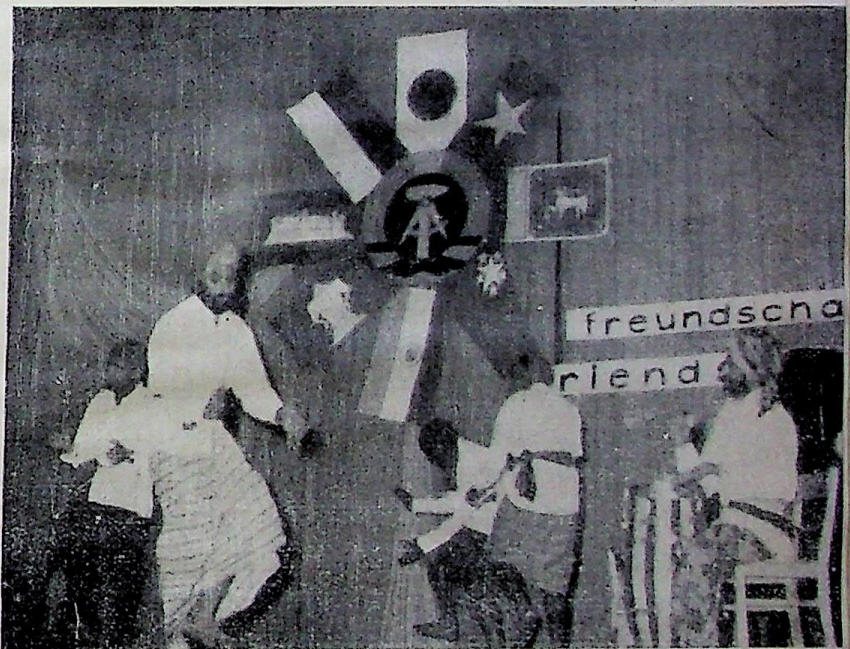
▼ भारत के प्रसिद्ध अभिनेता, सुनील दत्त, जापान के फिल्म निर्माता एम. किता मूरा से 'लाइपजिग दस्तावेजी फिल्म सप्ताह' के अवसर पर बातचीत कर रहे हैं

बर्लिन में दो सौ साठ घण्टे

| गोपाल हलदर

हमारी यात्रा बहुत छोटी थी, एक सप्ताह की भी नहीं। लेकिन हमने इस अवसर को हाथ से न जाने देना ही उचित समझा —मैंने और मेरी पत्नी प्रोफेसर अरुणा हलदर ने।... श्रीमती हलदर लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में अतिथि-प्रोफेसर की दो वर्षीय अवधि समाप्त कर चुकी थी। बर्लिन के हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय के **भारत विद्या संस्थान** और 'जर्मन विज्ञान अकादमी' के **ओरियण्टल शोध संस्थान** ने, हम दोनों को, फरवरी सन् १९६४ में भारत लौटने से पहले, अपने विद्यार्थियों एवं शोध-कर्ताओं के सम्मुख, दो दो व्याख्यान देने के लिये आमन्त्रित किया था। प्राग में भी हमारे लिये इसी प्रकार का कार्यक्रम निश्चित हुआ था। इसलिये जनवरी १९६४ के तीसरे हफ्ते में जर्मन जनवादी गणतंत्र की एक लघु यात्रा करने के सिवा हमारे पास कोई और रास्ता न था। हम वहां ५ दिन, बल्कि २६० घण्टे कहना अधिक अच्छा होगा, बिता सकते थे। ज. ज. ग की इस पांच दिवसीय यात्रा के निमन्त्रण को, यह जानते हुए हमने स्वीकार किया कि हमारी पीढ़ी और रुचि वाले भारतीयों को, इस प्रकार की यात्रा के लिये पांच महीने भी कम होंगे।

२० जनवरी को फ्रांकफूर्ट-आन-ओदर के आस पास सांझ उतर आई, और रात्रि ने मास्को से चली हुई हमारी रेलगाड़ी को अपने आंचल में ढ़क लिया। अन्त में, बर्लिन के फ्रीडरिख्स्ट्रास्से नामक रेल स्टेशन पर पहुंचकर हमने जर्मन जनवादी गणतंत्र का प्रथम परिचय प्राप्त किया। स्टेशन पर, 'भारतीय विद्या संस्थान' के जर्मन और भारतीय मित्र, हमारा स्वागत करने के लिये उपस्थित थे। मैं यह बात जानता था कि प्रोफेसर वाल्टर रूबेन अस्वस्थ रहने के कारण कुछ सप्ताह पहले अस्पताल में भरती हुये थे। लेकिन उन्होंने वहीं से हमें अपना सलाम भेजा था। हमें 'भारतीय विद्या संस्थान' का अतिथि बनकर वहां रहना था। 'संस्थान' के नवजवान विद्यार्थियों से परिचय प्राप्त करके हम विभोर हो गये। यही तरुण पीढ़ी जर्मनी का भविष्य है, और जर्मनी विश्व के भविष्य के लिये बहुत कुछ अर्थ रखता है।...

इस प्रकार जर्मनी में, उन सुहृदयों के स्नेहासिक्त वातावरण में हमारी पहली रात शुरू हुई।...**इल्से** नाम की **हिन्दी** पढ़ने वाली एक जर्मन छात्रा ने हमें मोटर में बिठाया, और हमारी मोटर तमसाच्छन्न सड़कों और भरे हुये घावों वाले इस विशाल नगर के भूरे मकानों से गुजरती हुई अन्त में, 'होस्पिटज़ा' होटल के सामने रुक गई। इस होटल के स्वागत एवं सेवा से हम बहुत सन्तुष्ट हुये। बहुत अच्छा रात्रि-भोज खाकर हमें एक स्वच्छ और सुसज्जित कमरे में पहुंचाया गया और नर्म तथा गर्म बिस्तरों पर लेटते ही निद्रा ने हमें अपनी अहलादमयी गोद में सुला दिया।

ज. ज. ग. में हमारा पहला प्रभात नाश्ते से शुरू ही होने वाला था कि हमारी दुभाषिया गाइड 'इल्से' अपनी मोहक मुस्कान और विनम्र नमस्कार लिये हुये नमूदार हो गई। 'इल्से' एक सुन्दर और बुद्धिमान लड़की थी जो बर्लिन में हमारी "रखवाली" नियुक्त हुई थी। मेरी पत्नी मजाक में उसको यह कहकर छेड़ा करती थी कि हिन्दी में "रखवाली," गडेरिन को कहते हैं। नाश्ते के बाद हमें 'संस्थान' जाना था, जहां बर्लिन में हमारा कार्यक्रम निश्चित होना था।

...'होस्पिटज़ा' होटल से 'संस्थान' तक लगभग २० मिनट का रास्ता था। हमने श्प्री नदी पार की, और रहायशी मकानों की वस्ती से होते हुये अकादमी क्षेत्रों में पहुंचे। ऐसा हमारा खयाल है। सड़कें बहुत साफ थीं। कहीं कहीं मरम्मत की भी जरूरत थी। लेकिन युद्ध के सभी घाव और गड्ढे भर गये थे। दुकानें ग्राहकों से भरी हुई थीं, और काफी अच्छा क्रय-विक्रय हो रहा था। कई दुकानों के सुसज्जित

बंगला भाषा के सुप्रसिद्ध मासिक साहित्य-पत्र **परिचय** के संपादक **श्री गोपाल हलदर,** बंगला और अंग्रेजी के एक ख्याति प्राप्त लेखक हैं। उन्होंने अब तक लगभग दो दर्जन कृतियों की रचना की है, जिनमें उपन्यास, आलोचना, सांस्कृतिक अध्ययन इत्यादि सम्मिलित हैं।

श्री गोपाल हलदर, अपने यौवन काल से ही भारतीय मुक्ति आन्दोलन के सेनानी रहे हैं। इसके अलावा देश में जितने भी प्रगतिशील और सामाजिक प्रगति के आन्दोलन चले, श्री हलदर अनिवार्य रूप से उनके साथ सम्बन्धित रहे हैं। सन् १९५८ से वह पश्चिम बंगाल विधान परिषद के सदस्य हैं। उनकी पत्नी, **श्रीमती अरुणा हलदर,** दर्शन शास्त्र की डाक्टर हैं और वह पटना विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग में रीडर हैं। बौद्धिक तथा दार्शनिक विषयों पर वह प्रायः लिखती रहती हैं।

सन् १९६४ के आरम्भ में हलदर दम्पति 'जर्मन विज्ञान अकादमी' और 'हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय' के 'प्राच्यविद्या संस्थान' के निमंत्रण पर **जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा** पर गये। प्रस्तुत यात्रा-संस्मरण उसी यात्रा से सम्बन्ध रखता है।

—सम्पादक

प्रदर्शन-कक्ष, अनेक उपभोक्ता वस्तुओं से भरे हुये थे। इन वस्तुओं को देखकर मेरी पत्नी भी ललचा गई।

औद्योगिक दृष्टि से, जर्मन जनवादी गणतंत्र, जन्म लेने के अवसर पर काफी निर्धन और पिछड़ा हुआ राज्य था। लेकिन आज यह एकदम बदल गया है। ज. ज. ग. आज विकास के पथ पर छलांगें लगाता हुआ बढ़ रहा है।... कहीं कहीं खण्डहर बने ऊंचे ऊंचे खड़े मकान, आज भी युद्ध की विभीषिका की याद दिला रहे थे। प्रत्येक सड़क, नगर और कस्बा आज लगभग बीस साल बाद भी उस तबाही और बरबादी की गवाही देता है जो क्रूर हिटलर ने उनपर लाई थी ——हालांकि निर्माण के हाथों की मलहम ने उन भयंकर घावों को भर दिया है। बर्लिन की प्रथम झलक (यात्रा) से हमें ऐसा महसूस हुआ कि युद्ध के वर्षों की काली छाया से अभी बर्लिन पूरी तौर पर मुक्त नहीं हुआ है, फिर भी इस कालिमा की छाती चीर कर एक नये प्रकाश की किरण फूट रही है।

'संस्थान' पहुंचकर हमारा कार्यक्रम निश्चित हुआ। हमने 'संस्थान' और इसका पुस्तकालय देखा। यहां होते हुये प्राच्य-शास्त्र सम्बंधी विभिन्न विषयों के अनुसंधान कार्य को देखा। समाजवादी देशों में इस प्रकार के शोधकार्य से हम अच्छी तरह परिचित थे, क्योंकि मेरी पत्नी को, लेनिनग्राद में इसका व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त हुआ था। मेरे विचार में, भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ब्रिटेन, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी इत्यादि देशों में, भारतीय विद्या के अध्ययन की ओर कम ध्यान दिया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में वैचारिक दृष्टिकोण पर आग्रह के कारण इसके आधुनिक तथा समसामयिक काल के अध्ययन पर ही ज़ोर दिया जा रहा है। वैसे समाजवादी देशों में भी वर्तमान काल के अध्ययन पर बहुत ध्यान दिया जाता है, लेकिन ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धान्त, आधुनिक काल से सम्बंधित किसी भी विषय या भाषा को इसके मूलस्रोत से——अर्थात प्राचीन काल के इतिहास से अलग करके, देखने और अध्ययन करने की इजाज़त नहीं देते।

'भारतीय विद्या संस्थान' को इस बात का गर्व था कि प्रोफेसर रूबेन इसके प्रमुख हैं, और हमारे मित्र स्वर्गीय **डा. अशरफ** इसके एक मुख्य निदेशक थे। इन दोनों में अलोकिक प्रतिभा तथा विद्वता, और भूत का ज्ञान एवं वर्तमान की समझ का समन्वय था।... इस 'संस्थान' के सामने, एक अलग ही प्रकार की समस्या थी। ज. ज. ग. में विद्यार्थियों को श्रमिकों की तरह ही पैसा दिया जाता है। और शिक्षा या प्रशिक्षण समाप्त करने के बाद उनको यथोचित क्षेत्र में नौकरी दी जाती है। इसके लिये सरकार बाध्य तथा जिम्मेदार है। ज.ज.ग. एक छोटा राज्य है——अर्थात पूरी जर्मनी का एक तिहाई भाग। इसलिये, ऐसे विद्यार्थियों के लिये जो 'संस्थान' से भारतीय भाषाओं को पढ़कर निकलते हैं, नौकरी देने की सम्भावनायें बहुत ही सीमित हैं। इसका अनिवार्य परिणाम यह निकलता है कि राज्य, अपनी इच्छा के विरुद्ध, भारतीय विद्या से सम्बंधित विषयों के अध्ययन के लिये विद्यार्थियों को अधिक प्रोत्साहन न देने पर मजबूर है।

उस दिन दोपहर के बाद जब हम बर्लिन बूख अस्पताल में प्रोफेसर रूबेन को देखने गये तो हम 'संस्थान' के कार्य और इसकी समस्याओं से अवगत हो गये। लेकिन गम्भीर बातचीत के लिये वह उचित अवसर नहीं था, और हमने तय किया था कि अस्पताल छोड़कर जब वह घर जायेंगे तब उन समस्याओं पर गम्भीरता से विचार विनिमय किया जायेगा। प्रोफेसर रूबेन मेरे पुराने मित्र हैं और हमने उनके सुखद साहचर्य में एक घण्टा बिताया। हमारी मित्रता मास्को में आयोजित **अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्यविद् सम्मलन** (१९६०) में हुई। दिल्ली में सन् १९६४ के जनवरी मास में आयोजित 'प्राच्यविद् सम्मेलन' में वह भाग न ले सके थे। लेकिन ज. ज. ग. के अन्य विद्वान, बर्लिन के होरुस्ट क्रूगर और हाल्ले के डा. मोडे यहां आये थे।... मेरी पत्नी पहली बार यहां प्रो. रूबेन से मिलीं, और श्रीमती रूबेन से भी हमारी मुलाकात यहां हुई, जिनके घर पर हमें उनका स्नेहपूर्ण आतिथ्य पाने का सुअवसर बाद में प्राप्त हुआ।

बर्लिन का हुमबोल्ट विश्वविद्यालय

बर्लिन-बूख अस्पताल वास्तव में कई नये अस्पतालों का एक समूह है जो बर्लिन नगर से दूर इसके उत्तर-पश्चिम आंचल पर स्थित है और खेतों और जंगलों से घिरा है। यह अस्पताल समूह नवीनतम मेडिकल सामान

(शेष २२ पृष्ठ पर)

दिल्ली से नेपाल . . .
और फिर कलकत्ता

सूचना पत्रिका के पाठक जर्मन जनवादी गणतंत्र के उन दो यात्रियों-डा. लागर और इंजीनियर श्रेडर को और उनके यात्रा-विवरणों को भूले नहीं होंगे। अपने मोपेड-स्कूटरों पर भारत यात्रा करते हुहे वे नेपाल की यात्रा पर गये थे। इस लेख में उन्होंने नेपाल-यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया है। . . . डा. लांगर---जैसा कि पाठक जानते हो हैं---रेखा-चित्रों के एक सिद्ध-हस्त कलाकार भी हैं। लेख के साथ हम उनके यात्रा में बनाये गये कुछ रेखा चित्र भी प्रस्तुत कर रहे हैं। **--सम्पादक**

नई दिल्ली से हमें कलकत्ता जाना था, लेकिन नेपाल से होकर। इस पूरी यात्रा के लिए हमने १० दिन निश्चित किए थे। लेकिन हम हुगली नदी पर बसे हुए नगर (कलकत्ता) में लगभग ७ हफ्तों की यात्रा के बाद पहुंचे। इस देरी के लिए हमें बिलकुल अफसोस नहीं हुआ, क्योंकि दिल्ली से नेपाल तक की यात्रा में हमें कुछ ऐसे बहुत ही दिलचस्प अनुभव और मुलाकातें हुई जो हमें अपनी सम्पूर्ण यात्रा में नहीं हुए थे।

खजुराहो का अनुभव तो अनुपम ही था। यहां हम दो दिन रहे और चण्डोला सम्राटों के काल में विनिर्मित, भव्य मन्दिरों के सौंदर्य का पान करते रहे। यहां से हम **इलाहाबाद** गये जहां हमने नेहरू-परिवार के आवास **आनन्द भवन** के दर्शन कये। **वाराणसी** के प्राचीन नगर का तो कहना ही क्या। यहां कुछ स्थानीय पत्रकारों से हमारी मुलाकात हुई और उन्होंने हमें इस नगरी के प्रसिद्ध घाट और संकरी गलियां दिखाई। सारनाथ के दर्शन ने हमें बुद्ध की शिक्षाओं से अवगत किया।

पटना पहुंचने से पहले, सड़क की खराबी के कारण, हम में से एक साथी दुर्घटना ग्रस्त हुआ। पटना पहुंचकर, हमने नाव से गंगा को पार किया (अपने मोपेड स्कूटरों के समेत) डेढ़ दिन के सफर के बाद हम नेपाल राज की सीमा पर स्थित रक्सौल नामक स्थान पर पहुंचे।

नेपाल में प्रवेश

नेपाल में प्रविष्ट होने के बाद, पहले कतिपय किलोमीटरों की यात्रा काफी आसान थी। लेकिन मेनसे के बाद, भारतीय इंजीनियरों द्वारा निर्मित "त्रिभुवन राजपथ" पर आने के बाद हमारे स्कूटर इस सर्पिल राजमार्ग पर घंटों तक दौड़ते और चढ़ते चले गए।

वाराणसी का एक घाट

इस मार्ग का दर्रा समुद्रतल से २,५०० मीटर की ऊँचाई को छूता है। इस दर्रे से गुजर कर, हमारे स्कूटर, बिना किसी प्रयास के नीचे उतरते चले गये। हम दामन में पहुंचे जहां से हमने पहली बार, धरती के सब से ऊँचे पर्वतों के हिमाच्छादित शिखरों के दर्शन किये। इन हिम-शिखरों के दृश्य ने हमें इतना मंत्र-मुग्ध किया कि उन तक पहुंचे बिना नेपाल से न जाने का हमने फैसला किया।

हम नेपाल की राजधानी **काठमांडू** पहुंचे। प्राचीन और नवीन वास्तुकला के मिश्रित मकानों एवं भवनों और जिन्दादिल तथा रंगारंग लोगों ने हमारा स्वागत किया। यहां कुछ दिन हम पाटन के 'अन्तर्राष्ट्रीय युवक छात्रावास' में ठहरे। इसके बाद 'कमल पहाड़ी'—स्वयंभूनाथ के बुद्धविहार में चले गये जहाँ, **ज.ज.ग.–नेपाल मैत्रि संघ** के सदस्यों ने हमारे ठहरने का प्रबन्ध किया था। बुद्ध विहार द्वारा संचालित एक स्कूल के एक अध्यापक हमारे बहुत अच्छे दोस्त बन गये, जिन्होंने नेपाल के जन-जीवन को निकट से देखने और समझने में हमारी अमूल्य सहायता की। उनके साथ हमने **मुक्तिनाथ** की अविस्मरणीय एवं उल्लासभरी यात्रा की। २३० किलो मीटर की इस पैदल यात्रा में ११ दिन लगे, और इसमें हमें नेपाल के पहाड़ी लोगों के जीवन की झांकी प्राप्त हुई।

इस यात्रा से लौटकर काठमाण्डू में हमने कुछ और दिन बिताए, और हम यहां के कई व्यापारियों, राजनीतिज्ञों, डाक्टरों आदि से मिले। हमने यहां लोकनृत्य देखे, धार्मिक रीति-रिवाजों पर बातचीत की और नेपाल के विकास कार्यों की चर्चा की। हमने यहां एक स्कूल भी देखा जहां भौतिकी पढ़ाने में हमारे देश (जर्मन जनवादी गणतंत्र–सं.) के सामान का प्रयोग किया जा रहा है।

काशी के मंदिर

काठमाण्डू से कलकत्ता की ओर

तीन दिन की स्कूटर यात्रा के बाद हम काठमाण्डू से कलकत्ता पहुंचे। इस यात्रा के अन्तिम दिन (अर्थात् तीसरे दिन) में हमने ४७० किलो मीटरों का फासला तय किया। अपनी सम्पूर्ण यात्रा में यह फासला, हमारी सम्पूर्ण यात्रा का, एक दिन में सब से लम्बा तय किया गया फासला था।...इस सब का श्रेय हमारे मोपेड स्कूटरों को जाना चाहिये जो पूरी यात्रा में हमारे वफादार साथी रहे और जिन्होंने एक बार भी थकने या खराब होने की शिकायत नहीं की।
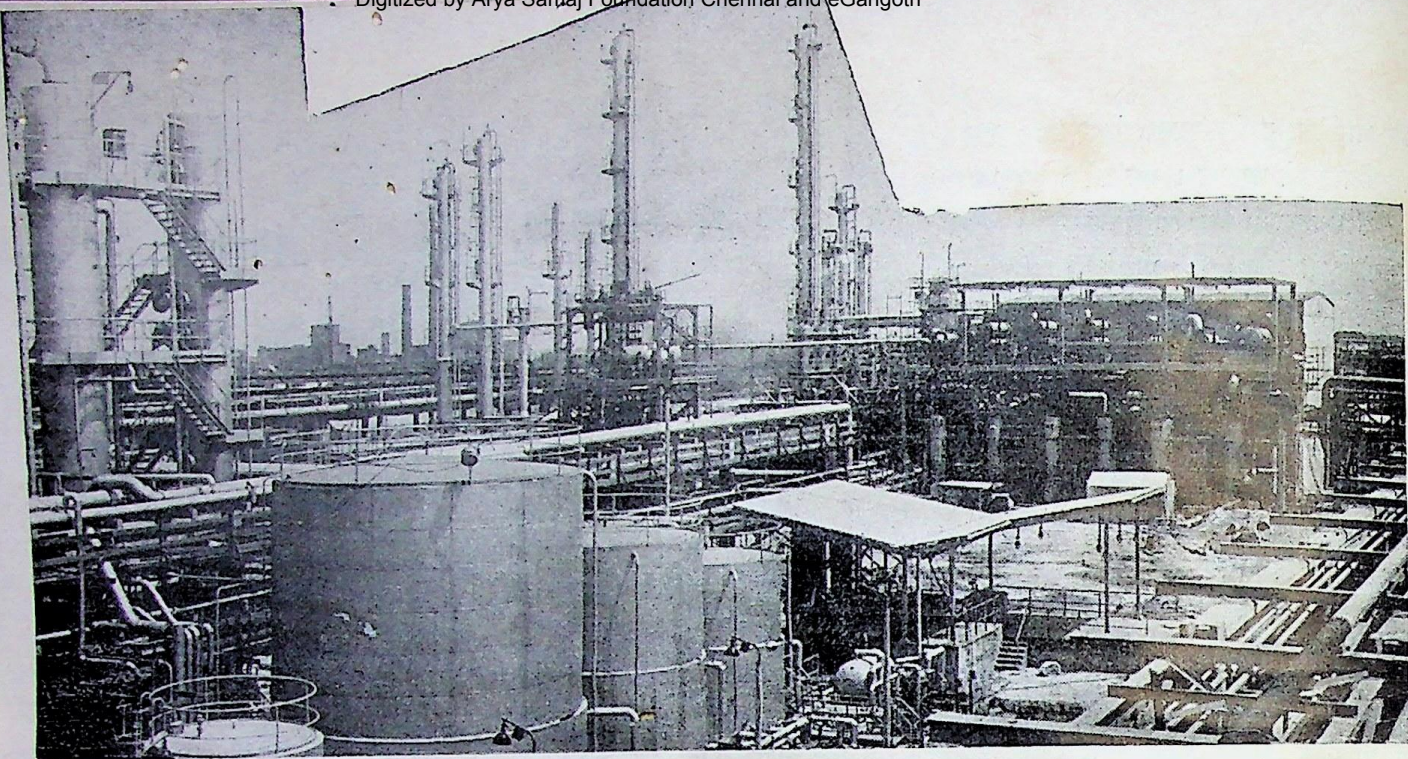
रसायन की एक नवीन भीमकाय रचना

एडगर मेनर्ट

पोलैण्ड की एक संयोजन-संस्था के मज़दूर आजकल श्वेड्ट (जर्मन-पोलैण्ड सीमा पर स्थित) से ल्यूना तक एक नल-पंक्ति (पाइप लाइन) के निर्माण में जुटे हुए हैं। यह कार्य बर्लिन के दक्षिण में हाल्ले तथा यूटेरबोग के बीचों बीच चल रहा है। ३२० किलोमीटर लम्बी इस पंक्ति की पूर्ति पर यह पाइप लाईन प्रति वर्ष ४० लाख टन तेल श्वेड्ट के तेल शोधक कारखाने से हाल्ले प्रांत में स्थित, जर्मन जनवादी गणतंत्र के रसायन उद्योग केन्द्र में पहुंचायेगा।

श्वेड्ट का संशिल्ष्ट संयंत्र, चार हज़ार किलोमीटर से भी अधिक लम्बे नल-तंत्र द्वारा क्यूबिशेव के निकट स्थित सोवियत तेल क्षेत्रों से कच्चा तेल प्राप्त करता है। श्वेड्ट के तेल शोधक कारखाने का निर्माण-कार्य अभी पूर्ण नहीं हुआ है। फिर भी ओडर नदी के किनारे बसे हुए कृषि-क्षेत्र की काया पलट हो गई है और यह क्षेत्र अब एक औद्योगिक क्षेत्र बन गया है।

हमारे रसायन उद्योग का सब से पुराना एवं महत्वपूर्ण संयंत्र है ल्यूना। इसका निर्माण दूसरे महायुद्ध ... दिनों में हुआ था। बाद में यह आइ. जी.–फारबेन ट्रस्ट के अधिकार में रहा, और १९४५ के पश्चात पूर्वी जर्मनी के अन्य मुख्य उद्योगों की तरह इसका भी राष्ट्रीय-करण हो गया। आजकल ल्यूना संयंत्र में काम करने वाले विशेषज्ञों में से अधिक संख्या ऐसे उद्यमी नवयुवकों की है जो हालही के वर्षों में ज. ज. ग. के विश्वविद्यालयों तथा कालिजों से शिक्षा प्राप्त कर के निकले हैं। संयंत्र में ये नवयुवक तीस हज़ार कुशल श्रमिकों के साथ काम कर रहे हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की लगभग एक हज़ार रसायन-फर्मों में से ल्यूना का रासायनिक कारखाना सबसे बड़ा है। ज. ज. ग. की इन फर्मों में दो लाख सत्तर हज़ार श्रमिक एवं तकनीशियन काम करते हैं। ल्यूना संयंत्र ६ वर्ग किलोमीटर (लगभग २.५ वर्गमील) के क्षेत्र में फैला हुआ है। प्रोटीन से लेकर रसायनिक खाद तथा प्लास्टिक के कच्चे माल तक –लगभग ४०० प्रकार के पदार्थों का उत्पादन यहां होता है। उत्पादन का एक बड़ा भाग पचास देशों को निर्यात किया जाता है। पिछले युद्ध में इस संयंत्र का ८० प्रतिशत भाग नष्ट हो गया था, और आज कल यहां १,५०० मिलियन मार्क (१ मिलियन = १० लाख) का माल प्रति वर्ष तैयार होता है। बूना रसायन-संयंत्र (जहां कार्बाइड का उत्पादन योरुप में सब से अधिक होता है) और बिटर-फैल्ड विद्युत-रसायन संयंत्र भी ल्यूना के निकट ही स्थित हैं। इन दोनों संयंत्रों को भी युद्ध में भारी क्षति पहुंची थी।

१९१७ में ल्यूना संयंत्र में पहली बार हाबर-बोश औद्योगिकी के आधार पर कृत्रिम एमोनिया तैयार किया गया था। उस समय वार्षिक उत्पादन का अधिकतम भाग (१९१८ में २ लाख टन) शस्त्रीकरण उद्योग में विस्फोटक पदार्थों के उत्पादन के लिए भेज दिया जाता था। आज इसी संयंत्र में प्रति दिन १,००० टन से अधिक एमोनिया तैयार हो रहा है। परन्तु इसका प्रयोग रासायनिक खाद तथा आर्गेनिक प्लास्टिक तैयार करने में किया जाता है। १९२७ में पहली बार ल्यूना में बर्जियस-विधि को बड़े पैमाने पर अपनाया गया था। आज यह विधि रासायनिक संश्लेषण का उदाहरण है।

ल्यूना संयंत्र लगभग एकमात्र रूप से कोयला रसायन के आधार पर ही चलाया जाता है। निकटवर्ती क्षेत्रों से लिग्नाइट (भूरा कोयला)

के भारी संग्रह संयंत्र में पहुंचाये जाते हैं । जर्मन जनवादी गणतंत्र में लिग्नाइट का उत्पादन २५६ मिलियन टन प्रति वर्ष है, और इस प्रकार जर्मन जनवादी गणतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा लिग्नाइट उत्पादक देश है । कई वर्ष पहले बर्लिन के अर्थ-विशेषज्ञों ने, पैट्रोलियम-रसायन उद्योग की बुनियाद डालने के लिये ल्यूना संयंत्र को एक तकनीकी भीमकाय स्वरूप देने का निर्णय किया था ।

ल्यूना द्वितीय–करोड़ों की लागत की प्रायोजना

उसी समय से यहाँ हज़ारों मज़दूर और विशेषज्ञ ल्यूना द्वितीय के प्रायोजन के निर्माण में जुटे हुए हैं । १९६५ के शरद्काल से इसमें आंशिक उत्पादन आरम्भ हो गया है । अगले पांच वर्षों में इस भीमकाय कारखाने पर ८३५ मिलियन मार्कस (१ मार्क = १.१२ रुपये) की रकम लगा दी जाएगी । इस नए संयंत्र की उत्पादन शक्ति अपने "पुराने भाई" की अपेक्षा लगभग छः गुना अधिक होगी । नये संयंत्र के दो हज़ार भावी कर्मचारी आजकल पुराने कारखाने में प्रशिक्षित किए जा रहे हैं ।

ल्यूना द्वितीय के अन्तिम उत्पादन परिणाम के आंकड़ों का अनुमान लगाना संभव नहीं । वैसे संयंत्र के भंजन-संस्थापन एवं अन्य विभागों का निर्माण किया गया है । एक कैप्रोलैक्टम संयंत्र भी तैयार किया जा रहा है जिससे उत्पादित पादर्थों की सहायता से डैडेरोन (पेरलान रेशा)- तैयार किया जायेगा । शीघ्र ही एथिल एवं उच्च-दाब पोलिथिल का उत्पादन भी आरम्भ हो जायेगा । उत्पादन कार्यक्रम में पोलिएस्टर, पोलिविनाइलैसेटेट, पोलिस्टाइरोल इत्यादि भी सम्मिलित हैं । पैट्रोल के उत्पादन में भारी वृद्धि होगी । पुराने ल्यूना-संयंत्र में प्रतिदिन तैयार होने वाला पैट्रोल मध्यम आकार की ११५,००० कारें, १०० किलोमीटर तक चलाने के लिए पर्याप्त था । दोनों ल्यूना संयंत्र गुबेन के संश्लिष्ट रेशा तैयार करने वाले कारखाने के महत्वपूर्ण संभारक हैं । गुबेन, जर्मन जनवादी गणतंत्र तथा पौलैण्ड की सीमा पर स्थित है । गुबेन के कारखाने में
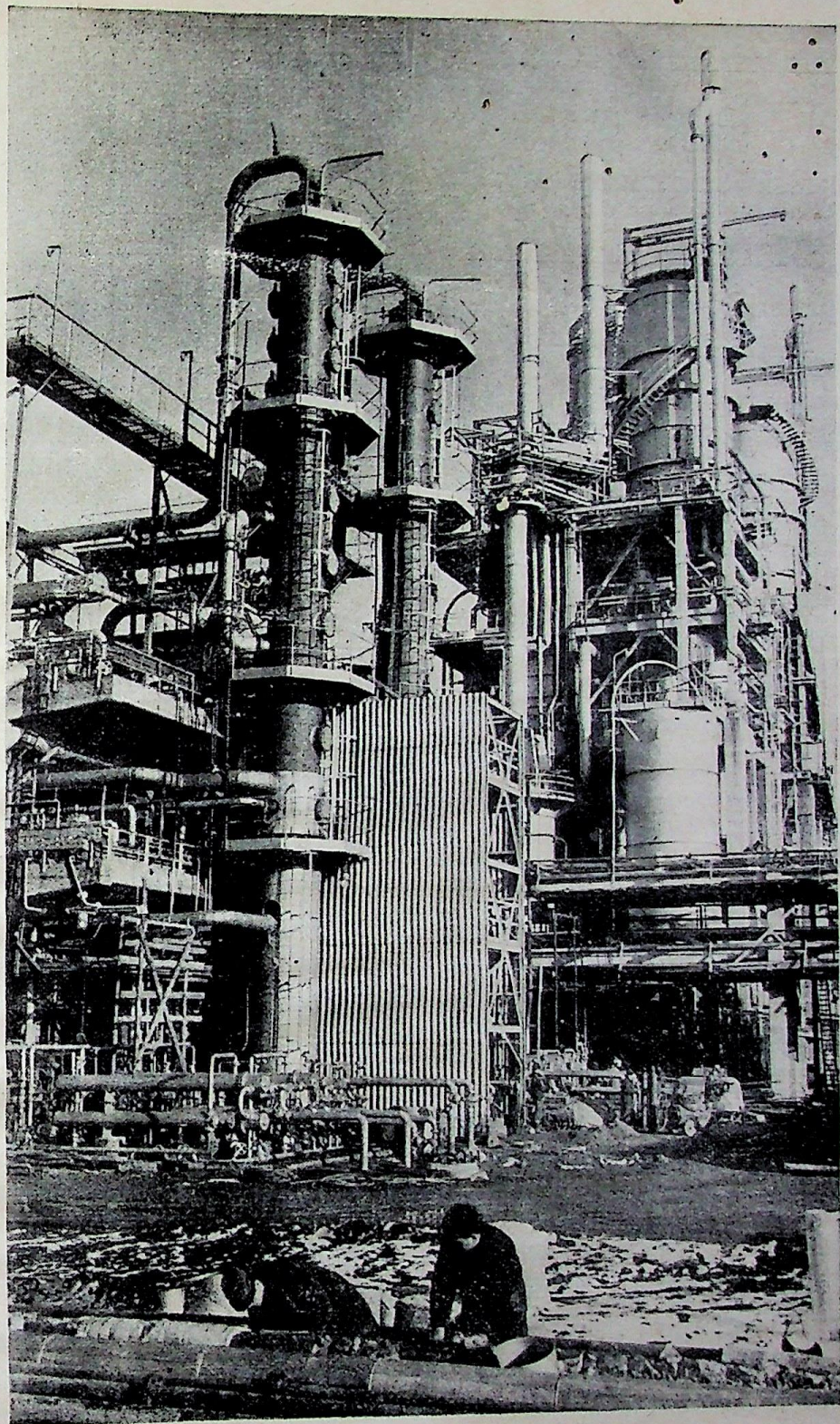
ल्यूना २ का पैट्रोल प्रभंजक संयन्त्र

प्रति वर्ष १५,००० टन डैडेरोन, परिष्कृत रेशम, मोटी धारी तथा रेशे तैयार होते हैं ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र का रसायन-उद्योग इंजीनियरिंग उद्योग के बाद दूसरे नम्बर पर आता है । हमारे कुल निर्यात में १५ प्रतिशत रसायन पदार्थ होते हैं । प्रति १५ संयंत्रों में एक रसायन- संयंत्र है । जर्मन जनवादी गणतंत्र के रसायन-उद्योग में जनसंख्या के आधार पर प्रति व्यक्ति उत्पादन अमेरिका के बाद दूसरे नम्बर पर है । डैडेरोन के उत्पादन का अनुमान इस उदाहरण से लगाया जा सकता है कि एक मीटर चौड़ी पट्टी भूमंडल के गिर्द दो बार लपेटी जा सकती है ।

चिट्ठी पत्री

नेपाल की चिट्ठी

सम्पादक महोदय,

अपार हर्ष के साथ लिखना पड़ रहा है कि **सूचना पत्रिका** की हर प्रति हमें नियमित रूप से मिल रही है। निस्संदेह यह अच्छी पत्रिका है। मानवता के हितों को ध्यान में रखकर इसका प्रकाशन किया जा रहा है। प्रत्येक संस्थाओं के लिए इसकी आवश्यकता अपेक्षित है।

अखिलेश्वर प्रसाद सिंह
श्री दरबार पुस्तकालय
नेपाल

श्रीमान्,

मैं हिन्दी में आपकी **सूचना पत्रिका** प्राप्त कर रहा हूं, और आशा है कि हमारा रीडिंग रूम हमेशा आपकी 'सूचना पत्रिका' प्राप्त करता रहेगा। आपके यहां और पत्र-पत्रिकाएँ भी छपते होंगे, कृपा करके वह भी अगर भेजते रहें तो हमारा रीडिंग रूम आपके देश के और भी अधिक हालात मालूम कर सकेगा।

मेरा एक सुझाव था जो मैं अपने सदस्यों की ओर से लिख रहा हूं। हमने यह महसूस किया कि 'पत्रिका' में अगर आप अपने देश के लेखकों की कहानियां भी शामिल करें तो बहुत ही अच्छा होगा। आशा है आप इसकी ओर ध्यान देंगे।

अगर आप दिसंबर के अंक में अपने मुल्क की शासन प्रणाली के बारे में कुछ लिखें तो यह और भी दिलचस्प बनेगी।

मैनेजर
कौल रीडिंग रूम
श्रीनगर **(काश्मीर)**

प्रिय महोदय,

हमारे विशेष निवेदन पर आपके द्वारा भेजी गया अक्टूबर ६५ की **सूचना पत्रिका** मिली। निश्चय ही यह उपयोगी पत्रिका है जो हरएक बुद्धिजीवी के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। खासकर संसद-सदस्य श्री आर. पी. सिन्हा द्वारा 'भारत और ज.ज.ग. के बीच अधिक सहयोग की संभावनाएं' काफी उत्साही एवं प्रेरक लेख है। श्री सज्जाद ज़हीर 'वे अविस्मरणीय दिन' भी ६ मिनटों के लिए खो देता है। और निश्चय ही भारत व जर्मनी के पारस्परिक सहयोग के लिए यह 'पत्रिका' बहुत अच्छी है। मुझे भरोसा है कि यह पत्रिका मुझे नियमित रूप से मिला करेगी। अगर आप और ठोस साहित्य से हमें सेवा प्रदान करें तो हम आपके आभारी रहेंगे।

सूर्यनारायण प्रकाश (पत्रकार)
मधुबनी **(बिहार)**

प्रिय महोदय,

बहुत समय बाद जर्मन जनवादी गणतंत्र का पत्र (२० नवंबर, १९६५) मिला। मैं दिल्ली से अब कांशी पूरी तरह आ गया हूं। आज दिल्ली से (१५ कैनिंग लेन से) रिडायरेक्ट होकर आपकी पत्रिका मिली। अच्छा हो, आप मेरा पता बदल दें।

इस अंक में 'जवाहर लाल नेहरू और जर्मनी' लेख ऐतिहासिक महत्व का है। और 'पशुओं का स्वर्ग : फ्रीडरिख्सफेल्डे' ज्ञानवर्द्धक है। मेरे लिए विशेष रुचि के २ लेख हैं एक श्रीमती हेलेन वाइगल का इन्टरव्यू जिसमें स्वर्गीय 'बर्टोल्ट ब्रेख्त' के नाटकों और रंगमंच की गहरी सूझ-बूझ का विवरण है। श्री यूएरगेन व्ही बोयस्की (चित्रकार) के संस्मरण में भारत को रचनात्मक दृष्टि से खोजने की अदम्य प्रेरणा है।

मैं साहित्य और संस्कृति में रुचि रखता हूं। और मैं नये जर्मन जनवादी गणतन्त्र के कलाकारों कवियों और लेखकों की (आप के) देश में गतिविधि से परिचित होना चाहता हूं। आप हिन्दी या अंग्रेजी में नए जर्मन जनवादी गणतन्त्र के कलाकारों, लेखकों से परिचित होने की मेरी अभिलाषा को पुस्तकों तथा पत्रिकाओं से सहयोग पहुंचा सकते हैं। आप की पत्रिका भारत और ज.ज.ग के सहयोग का एक सांस्कृतिक सेतु है।

विष्णुचन्द्र शर्मा
वाराणसी **(उ. प्र.)**

मान्यवर,

आप की भेजी **पत्रिका** हमारे पुस्तकालय में बराबर प्राप्त हो रही है। हमारे सभी पाठकगण 'पत्रिका' को खूब मन लगाकर पढ़कर ज.ज.ग. की जानकारी प्राप्त करते हैं। यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि **श्री हरबर्ट फिशर** साहब हमारे राष्ट्रपिता पूज्य **गांधीजी** के सहयोगी रहे हैं। इस समय ऐसे महानुभाव का हमारे देश में आना अत्यन्त अच्छा ही रहा। इससे हमारे आपके देश की मित्रता और बढ़कर फले-फूलेगी। आप के यहां के यात्री महानुभाव डा. लांगर साहब तथा श्री श्रेडर साहब का अगर उत्तर भारत में हमारे उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ आने का कार्यक्रम हो तो कृपया **सूचना पत्रिका** में उनका विवरण अवश्य दें जिससे उनको नज़दीक से दर्शन किए जा सकें। ज्यादा न लिख पत्र समाप्त कर रहा हूं। ज.ज.ग.-भारत की मित्रता अमर रहे। कृपया हमारे पते में थोड़ा सा संशोधन कर दीजिएगा। पत्रिका की छपाई लेख अत्यन्त रोचक व ज्ञानवर्द्धक होते हैं। पुनः पत्रिका भविष्य में मिलते रहने की आशा है।

जयपाल सिंह
रमीदपुर (उ. प्र.)

प्रिय सम्पादक,

मैं आपको धन्यवाद देता हूं, क्योंकि मुझे हर महीने नियमित रूप से **सूचना पत्रिका** मिल रही है। मेरे परिवार के सब सदस्य बड़े चाव से इसे पढ़ते हैं। कृपया मुझे लिखें कि जर्मन भाषा का जर्मन हिन्दी शब्दकोष उपलब्ध है या नहीं। मैं जर्मन भाषा सीखना चाहता हूं। सुना है कि बड़ी कठिन भाषा है। आप मुझे जर्मन भाषा सीखने की सरल सुविधा बताने की मेहरबानी करें। आशा है कि आप मुझे निराश नहीं करेंगे।

मैं फिर आपको धन्यवाद देता हूं क्योंकि मेरे मित्रों को भी **सूचना पत्रिका** आता है। इस से तो मेरे मित्रगण भी पढ़ गए हैं।

टी. ए. सैयद मुहम्मद
तोप्पिल हाउस
केरल

मैड्रिड का ओलम्पिक सन्देश

--गुण्टेर कोप्टे

८ अक्तूबर १९६५ को मैड्रिड में अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के अध्यक्ष आवेरी ब्रण्डेन ने घोषणा की थी कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र की राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति को सम्पूर्ण सदस्य के रूप में मान्यता दे दी गई है और इस प्रकार १९६८ में ग्रेनोबल तथा मैक्सिको में होनेवाली आगामी ओलम्पिक खेलों में दो अलग-अलग जर्मन टीमें भाग लेंगी। अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के ६३वें अधिवेशन के अवसर पर सम्पूर्ण बहुमत से लिए गए इस निर्णय की गूंज शीघ्र ही संसार में फैल गई। पश्चिमी जर्मनी की तुरन्त प्रतिक्रिया व्याकुलता तथा आश्चर्ययुक्त थी। तत्पश्चात उन्होंने इस स्पष्ट निर्णय को महत्वरहित सिद्ध करने की चेष्टा की और इसे 'अधूरी सफलता' का नाम देना चाहा। इन चालों के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति में 'राजनीतिक भावना का अभाव' के विरुद्ध दूषित वक्रोक्तियां भी प्रयोग में लाई गयीं।

अब प्रश्न यह उठता है कि मैड्रिड में कौन जीता और कौन हारा। इसकी जांच के लिए यह आवश्यक है कि दो बातों का विश्लेषण किया जाए। एक तो यह कि मैड्रिड अधिवेशन के सम्मुख विषय क्या था और दूसरे यह कि दोनों जर्मन ओलम्पिक समितियों के प्रतिनिधि-मंडल अपने साथ किस प्रकार की आशायें लेकर गये थे। अधिवेशन के सम्मुख जर्मन जनवादी गणतन्त्र की राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति द्वारा रखा गया यह प्रस्ताव था कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र की ओलम्पिक समिति को समान अधिकार प्रदान किये जायें और तदनुसार समिति की अपनी ओलम्पिक टीम हो। इन्हीं शब्दों में यह प्रस्ताव १९६४ के शरदकाल में टोकियो में रखा गया था। उस समय इसे अस्वीकृत नहीं किया गया था अपितु मैड्रिड अधिवेशन तक के लिए स्थगित कर दिया गया था। इस बीच सम्पूर्ण जर्मन टीम के ढकोसले का विभ्रम बराबर स्पष्ट होता चला गया और यह तथ्य छुपा न रह सका कि यह एक चाल है जो जर्मनी के वास्तविक वातावरण पर परदा डालने के लिए चली जा रही है। इस तथ्य की पुष्टि मैड्रिड निर्णय से भी हो जाती है कि मैड्रिड अधिवेशन का यह निर्णय जर्मन जनवादी गणतन्त्र के प्रस्ताव के सर्वथा अनुकूल है। पश्चिम जर्मनी द्वारा भरपूर राजनैतिक दबाव के बावजूद जर्मन जनवादी गणतन्त्र की राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के पक्ष में निर्णय लिया गया। जर्मन जनवादी गणतन्त्र की समिति के विश्वास का आधार अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के अधिनियमत था खेल जगत की तर्कपूर्ण विचारधारा थी।

इन तथ्यों से इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है कि मैड्रिड में विजयी कौन रहा। प्रथमतः मैड्रिड में विजय, खेल संसार तथा ओलम्पिक विचार की हुई है। दोनों जर्मन राज्यों के खिलाड़ी भी मैड्रिड के मूल विजेता हैं। भविष्य में दोनों ओर के खिलाड़ियों को संयुक्त जर्मन ओलम्पिक टीम में सम्मिलित होने के लिए किसी प्रकार की प्रतियोगिताओं से नहीं गुजरना पड़ेगा। ये प्रतियोगिताएं न केवल जर्मन खिलाड़ियों के लिए अतिरिक्त बोझ उत्पन्न करती थीं बल्कि इन अवसरों पर कई अप्रिय घटनाएं हो जाती थीं। अब जर्मन जनवादी गणतन्त्र तथा पश्चिम जर्मनी के खिलाड़ी ओलम्पिक खेलों के लिए क्रमानुसार तथा एरफूर्ट और म्यूनिख तथा हैम्बुर्ग में तैयारी कर सकते हैं। अब यह तैयारी अन्य देशों की भांति एक स्पष्ट लक्ष्य सामने रख कर सामान्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुसार की जा सकती है। प्रतिष्ठा की उत्कण्ठा के अन्तर्गत चलाई जानेवाली कपटता-पूर्ण चालें अब नहीं दोहराई जा सकेंगी। ऐसी चालों के शिकार ज.ज.ग. के पनसुइये बेरन्ड डेमेल टोकियो में हो चुके हैं। श्री डेहमल आजकल योरोप के चैम्पियन हैं। मैड्रिड में अन्तिम परन्तु सब से महत्वपूर्ण विजय स्वयं अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति की रही जो उसने अपने अधिनियमों के आधार पर विश्व विख्यात ज.ज.ग. खेलों की प्रभुसत्ता को मान्यता प्रदान की। मैड्रिड सैद्धांतिक दृष्टि से जर्मन खेलों की वास्तविक स्थिति को प्रमाणित करता है--अर्थात् दो जर्मन राज्यों का अस्तित्व।

कोई यह नहीं कह सकता कि अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति ने यह निर्णय लेते समय लापरवाही बरती है। इस कठिन जर्मन समस्या पर पांच घंटे से अधिक समय तक बहस होती रही और लगभग तीस प्रतिनिधि इस अवसर पर उपस्थित थे। इसी से यह सिद्ध हो जाता है कि संसार के कोने-कोने से आये हुए अन्तर्राष्ट्रीय समिति के सदस्य निर्णय लेने से पूर्व जर्मन समस्या से भली भांति परिचित हो चुके थे। इस तथ्य से परिणाम का महत्व और भी बढ़ जाता है।

"हमारे कई व्यक्तिगत मित्र हैं, परन्तु जब इस प्रकार के निर्णय लेने का अवसर आता है तो हमें एक हारी हुई लड़ाई लड़नी पड़ती है। मैड्रिड का यह निर्णय हमारे लिए एक अत्यन्त कड़वी गोली है जो हमें निगलनी पड़ रही है।" ये शब्द हैं पश्चिमी जर्मनी की राष्ट्रीय ओलम्पिक टीम के अध्यक्ष तथा अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के सदस्य विल्ली डाउमे के। विल्ली डाउमे ने अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के ६३वें अधिवेशन के अवसर पर बोन के हालस्टाइन सिद्धान्त का जबरदस्त समर्थन किया। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के सदस्यों का बहुमत प्राप्त करने के लिए भयादोहन तक के हथियार प्रयोग किए और कोई कसर न उठा रखी परन्तु अन्त में उन्हें अपनी हार माननी पड़ी क्योंकि खेलकूद के क्षेत्र से संबंधित वह एक भी दलील पेश न कर सके थे।

समाचार

बढ़ती हुई राष्ट्रीय आय

जर्मन जनवादी गणतन्त्र की लोक-सभा (पीपुल्स चैम्बर) में सरकार ने, १९६४ के वर्ष में आय-व्यय का जो विवरण हाल में प्रस्तुत किया, उससे पता चलता है कि उक्त वर्ष में, ज.ज.ग. की राष्ट्रीय आय में ३ अरब, ७० करोड़ मार्क (३,७००,०००) की वृद्धि हुई है। इससे पहले, सन १९६० से लेकर सन १९६३ तक, राष्ट्रीय आय में २ अरब, ३० करोड़ मार्क (२,३००,०००,०००) की औसत वृद्धि हुई थी।

बजट समिति के एक प्रवक्ता ने सदन में इस तथ्य का भी उद्घाटन किया कि ज.ज.ग. के निजी अर्ध-राजकीय फैक्ट्रियों और राष्ट्रीय स्वामित्व वाले उद्योग धंधों के मुनाफों में भी काफी वृद्धि हुई।

जर्मन पशु-चिकित्सक भारत से स्वदेश लौटा

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र के एक पशु-चिकित्सक, डा. विलहेल्म बाउर, भारत में एक वर्ष की अध्ययन-यात्रा समाप्त करके स्वदेश लौटे। डा. बाउर, लाइपज़िग के कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय के 'पशु-विज्ञान संस्थान' में वैज्ञानिक सहायक के रूप में काम करते हैं। वह ज.ज.ग. और भारत के बीच हुए सांस्कृतिक समझौते के आधीन भारत की अध्ययन-यात्रा पर आये हुये थे।

भारत में डा० विलहेल्म बाउर, इज्जत-नगर-मुक्तेश्वर में स्थित "केन्द्रीय भारतीय पशु-चिकित्सा शोध संस्थान" में अधिकतर रहे। लेकिन अपने अध्ययन केसिलसिले में उन्होंने दो बार सारे भारत का दौरा किया। . . . स्वदेश लौटने पर, ज.ज.ग. के उक्त पशु-चिकित्सक ने कहा : "मेरी भारतीय यात्रा से इस क्षेत्र में पशु-रोगों और उनके निदान से संबंधित हमारे ज्ञान में काफी वृद्धि हुई।" डा. बाउर ने भारत सरकार को हर प्रकार की सहायता देने के लिए अपना आभार प्रदर्शन किया, और कहा : "भारत में जहां भी मैं गया, लोगों का सहयोग और आतिथ्य मुझे मिला।" . . .

वाराणसी . . . चित्रकार : डा. लांगर

यात्रा संस्मरण . . .

(पृष्ठ १५ का शेष)

और सुविधाओं से सुसज्जित है। बूख के इस विशाल अस्पताल-समूह से वापस आने पर बड़ी दूर तक हम पीछे मुड़ मुड़ कर इसको आश्चर्य से देखते रहे। समाजवादी व्यवस्था में जनता के स्वास्थ्य-कल्याण की ओर कितना ध्यान दिया जाता है यह एक देखने की चीज है।

बर्लिन में, अपने पहले दिन की यात्रा में हम ज्यादा घूम फिर नहीं सके। लेकिन फिर भी जितना पैदल भ्रमण हमने किया उसमें हमने, बार-बार युद्ध द्वारा लगाये गये बर्लिन के ज़ख्मों को देखा। लेकिन इसके साथ ही साथ हमने उस अपराजेय एवं अक्षय जर्मन सृजन शक्ति के भी दर्शन किये जिसको दानव हिटलर और उसका दानवीय नात्सीवाद भी खत्म न कर सका। . . .

(अगले अंक में समाप्य)
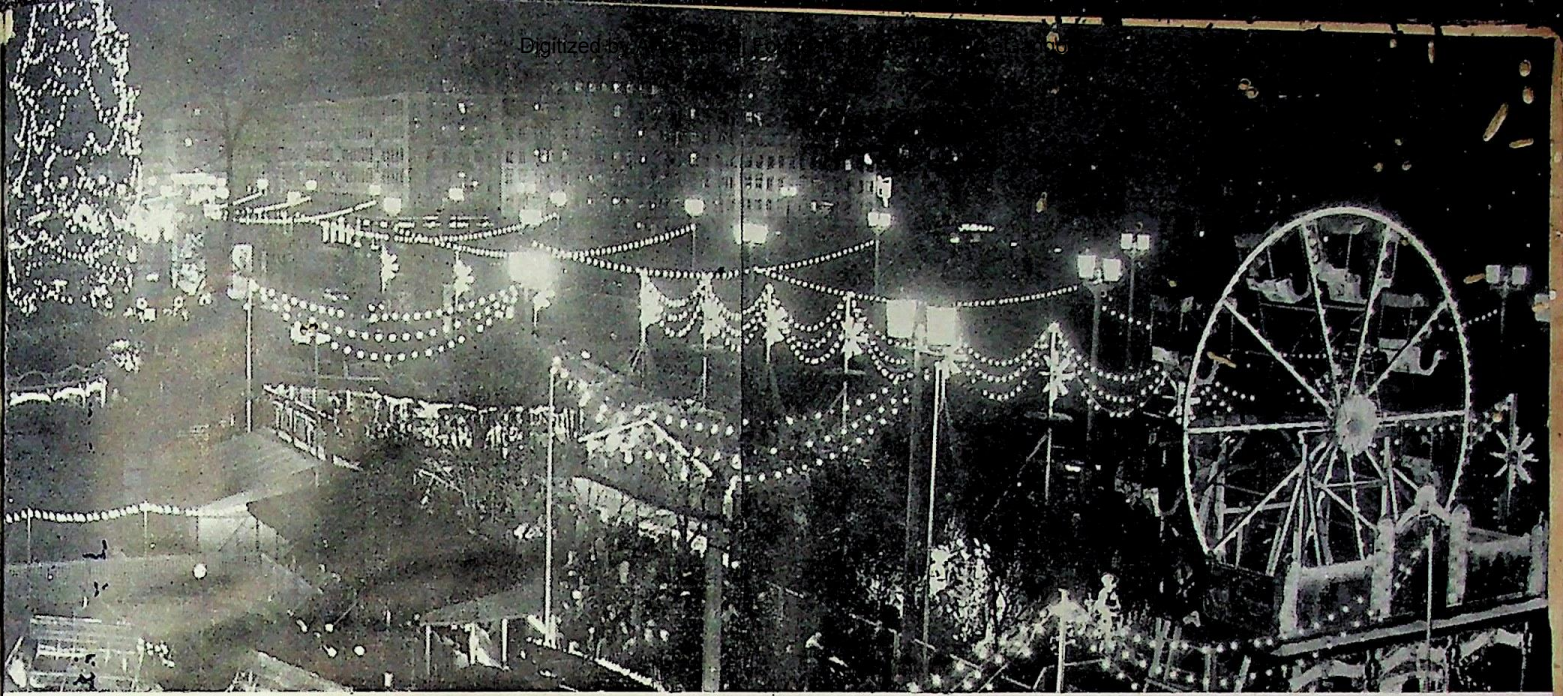
बर्लिन में पिछले ५०० वर्षों से एक क्रिस्मस-बाज़ार लगता आया है। यह बाज़ार क्रिस्मस के दिनों में एक मेले का रूप धारण करता है जहां हर तरह की वस्तुएँ मिलती हैं

क्रिस्मस के सान्ता क्लास की प्रतीक्षा में . . .

'इन खिलौनों में कौन हमें, क्रिस्मस के उपहार में मिलेगा?...'

क्रिस्मस के दिन सान्ता क्लास ने नन्हे मुन्नों की मुरादें पूरी कीं और अच्छे बच्चे बनने की नसीहत भी की

रजि० नं० डी-१३३०